लण्डन-रहस्य

-: अर्थात् :-

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन

दूसरा भाग

...... अकस्मात उसे लकवेको सख्त बोमारी हो गई, जिससे उसकी जबान बन्द और बुद्धि लोप हो गई। कण्टरबरीके अच्छे अच्छे नामी डाक्टरोंकी दवा दारूकी गई, पर फल कुछ भी न हुआ। तब डाक्टरोंने दोनों बहिनोंको इतना भरोसा अवश्य दिया, कि अभी मिस टैनलीकी मौत नहीं होगी। लाचार जिन्दा रहने पर भी वह मुर्देकी तरह गुमसुम और बुद्धिविहीन होकर अपने दिन काटने लगी।

इस तरह कुछ महीने बीत गये। जबतक फूफीके घरमें मिला हुआ धन पास रहा तबतक दोनों बहिनोंको खर्चकी कोई चिन्ता नहीं व्यापी। हीरा आलसिन थी, इसलिये गृहस्थीके प्रबन्धका सारा भार लुइसाके सिर आ पड़ा। वह बहुत किफायतसे चलती थी, इस लिये उस थोड़ेसे धनसे जहांतक बना उसने अच्छी तरह निर्वाह किया, पर जब एक दिन उसने दाईको आखिरी गिनी भँजानेको दी, तो भविष्यत्की चिन्तासे घबरा उठी। लाचार उसने यह बात

अपनी बडो बहिन लौरासे कही। इसपर उसने कहा,—कि आओ फूफोके खानगो कागज-पत्रोंको देखें, तो आप ही पता लग जायगा, कि उनको आमदनीका जरिया क्या था। यह सलाहकर दोनों बहिनें डेस्कके कागजोंको उलट-पलटकार देखने लगीं, पर उनके कामका कोई कागज न मिला। अब लुइसाको खयाल हुआ, कि फूफी अक्सर यहांके एक बैङ्कमें जाया करती थीं। इस खयालके उठते ही चट टोपी पहन और दुपट्टा ओढ उसने वह-बात दरियाफ्त करनेके लिये बैङ्ककी राह ली। बैङ्कवालेने लुइसाका सादर स्वागतकार यह कहा, कि मिसेस ष्टैनली हर छठें महीने मिष्टर बेकफोर्डके नाम नौसौ रुपयेकी हुण्डी करती थीं और वह उसे सकार रुपये भर देता था, पर वह है कौन और क्यों मिसेस ष्टैनलीको रुपये देता था सो मुझे कुछ भी नहीं मालूम। खैर, मैं उसके पास यह बात लिखूंगा, कि मिसेस ष्टैनली हठात् बडी भारी—विपदमें पड़कर एक दम लाचार हो गई हैं।

कुछ दिनोंके बाद लुइसा फिर उस बैङ्कमें गई और वहां लण्डनसे शुभ-समाचारकी चिट्ठी आनेकी खबर पाकर बहुत खुश हुई। मिष्टर बेकफोर्डने मिसेस ष्टैनलीके दुःखपर शोक प्रकाश करते हुए यह लिखा था, कि अबसे उनकी दोनों भतीजियोंकी उतनी ही रकमकी लिखी हुई हुण्डी खुशीसे सकार भुगतान दे दिया जाया करेगा।

इसके बाद अठारह महीने गुजर गये, पर इस बीचमें लिखने लायक कोई बात नहीं हुई। उसके बाद एक दिन दोनों बहिनोंकी बेकफोर्डके नाम लिखी हुई हुण्डी लण्डनसे कार्टर-बरीवाले बैङ्कमें लौट गई। उसपर "भुगतान देनेका हुक्म नहीं" लिखा देख यह खयाल किया गया, कि शायद मिष्टर बेकफोर्डसे भूल हो गई है, इसलिये लुइसाने उनके पास चिट्ठी लिखी, पर उसका कोई जवाब न आया। इसके बाद और भी तीन खत भेजे

गये, पर कोई नतीजा न निकला। तब कापटरबरीके बैङ्क वालेने अपने लण्डनके एजेण्टको मिष्टर वेकफोर्डसे मुलाकात करनेकी लिये लिखनेका वादा किया, पर लण्डनके कोठीवालने उनकी बातका कुछ भी खयाल न किया। इस तरह काई हफ्ते और बीत गये, पर दोनों बहिनोंको उस बातका कोई सन्तोषजनक समाचार न मिला। अगर लुइसा किफायतसे न चलती होती, तो अबतक उसे बहुत दुःख भोगना पडता। जो हो, पर अब जल्दी ही मिष्टर वेकफोर्डको पुप्पोका पता लगाना बहुत जरूरी जान पडा, इसलिये दोनों बहिनोंने आपसमें सलाह कर यह स्थिर किया, कि दोमेंसे एकका लण्डन जाना बहुत ही जरूरी है।

इस बातके तय होते ही क्लैरा कुर्सीपरसे उछल पडी और बोल उठी, कि मैं ही जाऊंगी, क्योंकि, मैं बडी हूं और इस बारेमें जो कुछ दुःख उठाना पडे, उसे मुझे ही उठाना उचित है। उसने लुइसासे यह भी कहा, कि चूंकि गृहस्थीका सारा प्रबन्ध तुम्हारे हाथमें है और फूफोकी सेवा-शुश्रुषा भी तुम्हीं अधिक करती हो, इसलिये तुम्हारा ही घर रहना अच्छा है। लुइसाने कोई उज्र न किया, इस लिये दूसरे दिन छूटनेवाली डाकगाडीका एक टिकट खरीद लिया गया और क्लैरा लण्डन जानेकी तय्यारी करनेमें लग गई।

अब क्लैराकी सब सुस्ती भाग गई, देहमें फुर्ती आगई। असल बात यह थी, कि जिस लण्डनकी बडाई वह प्रायः अपनी फूफोके मुँहसे सुना करती थी और जिसका चुहचुहाता हुआ बयान उपन्यासों तथा प्रेमकी कहानियोंमें पढा करती थी, अब उसी लण्डनके देखनेकी आशासे वह मन ही मन बहुत खुश हो रही थी। पर ऐसा भी न था, कि इस असीम आनन्दके लिये उसके मनमें लज्जा न उत्पन्न होती हो और वह अपनेको धिक्कारती न हो, क्योंकि जब वह अपनी विपदकी मारी फूफीको देखती और अपनी कमसिन

बहिनको ओर निहारती—फ्फोको शून्यदृष्टिसे चुपचाप अपनी ओर देखते देखते और लुइसाके मखमली मुलायम गालोंपरसे आंसुओंकी धारा बहते देखती, तो अपने प्रेम-भाजनोंकी जुदाईके खयालसे उसका मन भीतर ही भीतर मसोसकर रह जाता ।

१८१४ ई० के जुलाई महीनेमें लौरा-ष्टेनलीको कार्य्यवश लण्डन जाना पड़ा । अब उसकी उम्र इक्कीस वर्षकी थी और सचमुच ही वह बहुत ही खूबसूरत दिखाई देती थी । लुइसाकी उम्र उन्नीस वर्षसे कुछ अधिक थी । उसकी मनमोहिनी सुन्दरतामें कुछ ऐसा असर था, कि निठुरसे निठुर बदमाशभी कभी उसके बदनमें हाथ लगानेका साहस न कर सकता था । बड़ी बहिनकी सुन्दरता इन्द्रियोंको आनन्ददेने और कामी पुरुषोंको वशमें करनेवाली थी, पर छोटीकी खूबसूरती मनको अपना लेती थी । लौराके चेहरेसे आशिक-मिजाजी और नाजुकपन जाहिर होता था, पर लुइसाका मुख—भोला-भाला तथा निर्दोष दिखाई देता था । उसकी दृष्टिसे भी यही भाव प्रकाश होता था । बड़ी बहिन मानो मनको बहका देनेवाला जादू जानती थी, पर छोटी खरेपन और साधुताका अवतार थी ।

जुलाई महीनेमें एक दिन सुबहके वक्त येही दोनों बहिनें अपने मकानके दरवाजे पर विदाईकी दो दो बातें करने और एक दूसरीको चूमनेके लिये खड़ी थीं, समय सुहावना था धूप चारों ओर फैल रही थी, बागमें फूल खिले हुए थे, लता गुल्म और बड़े बड़े पौधोंकी ओटमें पत्तोंपर पड़ी हुई ओसकी बूंदें मोतियों जैसी सुहावनी लगती थीं और फूलोंकी सुगन्धसे हवा भी सुगन्धित हो रही थी ।

जुदाईका समय आ गया था । गुलाब और मधुलतासे आच्छादित बरामदेके नीचे दोनों बहिनें खड़ी हुई थीं । लुइसाके मनमें न मालूम क्यों बुरे बुरे खयाल उठ रहे थे, इससे उसका चेहरा और भी उदास हो रहा था । उसे ऐसा मालूम हो रहा था, मानो

वह अपनी बहिनसे आखिरी बार जुदा हो रही हो। यह जुदाई सिर्फ कुछ दिनोंकी नहीं, बल्कि महीनों, वर्षों—शायद हमेशाकी थी। लुइसाकी ऐसी हालत देखकर क्लैराको बहुत ताज्जुब तथा दुःख हो रहा था, और जब लुइसाने अपने मनकी बात क्लैरासे कही, तो वह काप उठी, क्योंकि उसके मनमें भी ऐसा ही सन्देह हो रहा था।

जिस समय क्लैरा अपनी प्यारी बहिनसे विदा होनेके लिये बरामदेके नीचे दरवाजे पर खड़ी हुई थी, उसी वक्त दाई उसका बक्स लेकर डाकगाड़ीके अड्डेकी ओर रवाना हो गई थी। समय उपस्थित देख बहिनके आलिङ्गनसे अपनेको छुड़ाकर क्लैरा भी अड्डेकी ओर बढ़ी। उधर क्लैरा अड्डेकी ओर गई और इधर लुइसा अपने कमरेमें आ दोनों घुटनोंके बल बैठ बहिनके मङ्गल और रक्षाके लिये ईश्वरसे प्रार्थना करने लगी।

कुछ ही देरमें क्लैरा अड्डे पर जा पहुंची और बक्सको गाड़ीकी छतपर रखवा तथा खुद उसके अन्दर बैठकर दाईको विदा कर दिया। डाकगाड़ी भी तुरत ही चल पड़ी और देखते ही देखते कण्टरबरीकी सरहदपर पहुँच गई। क्लैरा डबडबाई हुई आखोंके साथ बराबर कण्टरबरीके गिर्जेके शिखरकी ओर देख रही थी और जब वह उसकी नजरसे गायब हो गया, तो उसे ऐसा मालूम हुआ मानो वह घरसे बहुत दूर जा पड़ी हो। इस खयालके उठते ही उसकी आंखोंसे झरझर आंसू गिरने लगे। उसकी यह दशा देखकर साथवाले मुसाफिरोंको दया आ गई। वे लोग उसे अनेक प्रकारसे समझाने और ढाढस बधाने लगे। आखिर उनमेंसे एक मुसाफिर लण्डनकी चहल-पहल, आमन्द-आमोद और अनोखी अनोखी चीजोंकी बातें ऐसे ढङ्गसे कहने लगा, कि क्लैरा अपना दुःख भूल गई और मन लगाकर उसकी बातें सुनने लगी।

आखिर बहुत रात बीते गाडी लण्डन पहुंची। जिस समयकी बात हम लिख रहे हैं, उस समय वहां सड़ककी लालटेनोंमें तेलकी रोशनी होती थी, इसलिये कोई चीज बहुत साफ न दिखाई देती थी। उसी धुन्धली रोशनीमें, जब कि गाड़ी ग्रेसचर्च-ष्ट्रीटकी ओर जा रही थी, लौराको एकसे एक बढ़े चढ़े आलीशान मकानोंको देख देखकर कभी ताज्जुब होता था और कभी आनन्द। कभी कभी वह घबरा सी उठती थी। आखिर लण्डनके पुराने पुलको पारकर गाडी क्रासकोज सरायमें जा ठहरी। उस बातूनी मुसाफिरकी सलाहसे लौराने उसी सरायमें रात गँवाना निश्चय किया।

दूसरे दिन सवेरे ही वह उठी और अच्छे अच्छे कपडे पहननेके बाद नाश्ता किया। उसके बाद वेष्ट एण्ड जानेके लिये भाडेकी गाडी मँगाई। गाडी आ जानेपर कोचवानको २० नं० हैनोवर-स्क्वायरमें मिष्टर वेकफोर्डके मकानपर जानेका हुक्म देकर वह अन्दर जा बैठी। राहमें कई सडकों और गलियोंको देखकर लौराने मनही मन कहा, कि लण्डनके बारेमें जो कुछ पढा और सुना है, वह सोलहो आने सच है, तो भी किसी बातमें उसकी आशा पूर्ण न हुई। जो कुछ हो, लण्डन आनेसे वह बहुत ही खुश थी। कभी कभी जब उसे अपनी दुःखिनी फूफी और प्यारी बहिनकी याद आ जाती, तो इसकी छाती धड़कने लगती पर तुरत ही जब अपने पाससे किसी अच्छी गाडीको सनसे निकल जाते या किसी खूबसूरत मकान अथवा सजी सजाई दुकानको देखती, तो उसका वह दुःख भूल जाता।

आखिर हैनोवर स्क्वायरमें पहुँचकर गाडी ठिकानेपर खडी होगई। कोचवान उतरकर २० नम्बरवाले मकानका दरवाजा खटखटाने लगा। अन्दरसे एक नौकर निकल आया। लौराने उससे मिष्टर वेकफोर्डकी बात पूछी। उसने जवाबमें कहा, कि वेकफोर्डको तो

यहां कोई जानता भी नहीं। यह तो सर आरचिबोल्डका मालबर्नका मकान है। इस तरहका कोरा जवाब पाकर लौरा घबरा उठी। उसने मन ही मन सोचा, कि हैनोवर-स्क्वेयरका यही २० नं० मकान है और आज डेढ़ वर्षसे हम दोनों बहिनोंकी दस्तखती हुण्डियां इसी पतेसे आती तथा सकारी जाती हैं, तो भी मिष्टर बेकफोर्डको यहां कोई नहीं जानता। कैसे आश्चर्यकी बात है। लौराकी घबराहटको देख जलेपर निमक छिड़कनेकी तरह नौकरने यह भी कहा, कि इस महल्लेके सब आदमियोंको मैं जानता हूं। मि० बेकफोर्ड नामका कोई आदमी यहां नहीं रहता। इसपर लौराने फिर पूछा, कि मि० बेकफोर्डके नामकी कोई चिट्ठी कभी २० नं० के पतेसे आई है? इस बातका भी उसने यही जवाब दिया, कि नहीं—कभी नहीं आई।

यह सुन बेचारी लौराके होश उड़ गये। उसे कुछ न सूझता था, कि अब क्या करना चाहिये। आखिर साहस बांधकर उसने सोचा, कि जो कुछ हो, इस बातका अन्ततक पता लगा लेना चाहिये। इसलिये उसने नौकरसे कहा,—"अच्छा, एकबार सर आरचिबोल्ड-मालबर्नसे ही मुलाकात करा दो।" इसपर उसने कहा, कि वे तो आज कई हफ्तेसे बाहर गये हुए हैं और न मालूम कब आवेंगे, पर उनके लड़के मिष्टर-क्लेपटाइन-मालबर्न मकान ही पर हैं। उनसे चाहो तो मुलाकात हो सकती है। अब और कोई उपाय न देख लौराने कहा,—"अच्छा, उन्हींसे मुलाकात करा दो।" इसके बाद नौकरने उसे ले जाकर बैठकखानेमें बैठा दिया और आप मालिकको खबर देने चला गया।

अभी लौराको बैठे मिनट दो मिनट ही बीते होंगे, कि एक लम्बा, दुबला पतला, खूबसूरत जवान, जिसकी उम्र कोई बाईस वर्षकी होगी, उस कमरेमें आ दाखिल हुआ। उसके चेहरेपर

गम छाया हुआ था और जबानसे भी गमगीन आवाज हो निकल रही थी। असल बात यह थी, कि उसका चेहरा और रङ्ग-ढङ्ग देखनेसे आप ही आप उसकी ओर सहानुभूति जाग उठती थी।

वह जवान वलेण्टाइन-मालबर्न ही था। जिस कामके लिये क्लैरा गई थी, उसका हाल उसे नौकरसे पहले ही मालूम हो गया था, पर वह उसकी इच्छा पूर्ण न कर सकता था। क्योंकि मि० वेकफोर्ड-को वह भी नहीं जानता था, यद्यपि उसने खूब सभ्यता और नम्रतासे क्लैराके साथ व्यवहार किया, तथापि वह अपने ही दुःखोंमें ऐसा निमग्न था, कि अधिक देरतक क्लैराके पास न ठहर सका, आखिर क्लैराने भी अपनी राह ली। वलेण्टाइन आग्रह पूर्वक दरवाजे तक आकर उसे गाड़ीपर चढ़ा गया और जब क्लैराने खिड़कीसे उसके सलामका जवाब दिया, तो उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो वह उसे दयाकी दृष्टिसे देख रहा हो।

अब क्या करना चाहिये? अब तो सिर्फ एक उपाय बाकी है। और वह यह है, कि जिस कोठीके जरिये हुण्डी सकारकर मिष्टर वेकफोर्ड कारबरोके एजेण्टके पास भुगतान भेजते थे, उस कोठी-के मालिकसे मिलना चाहिये। यह सोचकर क्लैराने कोचवानको उस कोठीमें जानेका हुक्म दिया। पन्द्रह मिनटमें गाड़ी वहां जा पहुंची। गाड़ीसे उतरकर क्लैरा कोठीमें गई और मिष्टर वेकफोर्ड-का हाल दरियाफ्त किया, जिसपर कोठीवालने कहा, कि मिष्टर वेकफोर्डके हर छठें महीने रुपये भेजनेकी बात सच है, पर खुद मि० वेकफोर्डको यहां कोई नहीं जानता, और न उनका हमारे यहां कोई खाता ही है, क्योंकि वे आप खुद यहां कभी नहीं आये। एक अजनबी शख्सकी मारफत वे हमेशा रुपया भेज दिया करते थे क्लर्कलोग उस शख्सका कुछ खयाल न करते थे।

इस जगह यह कहना फजूल है, कि क्लेरा निराश होकर कोठी से निकल पड़ी। उसकी रही सही आशा भी मिट्टीमें मिलगई। अब उसे साफ मालूम हो गया, कि मि॰बेकफोर्ड का रहस्य घोर अन्धकारमें छिपा हुआ है। अब उसे इसके सिवाय और कोई उपाय न सूझ पड़ा, कि चटपट कण्टरबरीको लौट जावे और लुइसाको यात्रा निष्फल होनेका दुःखद समाचार सुना दे। हाय! दरिद्रतासे बचनेकी जो एकमात्र आशा थी, वह भी धूलमें मिल गई।

वेष्टएण्डसे डेरेपर लौटनेके समय गाड़ीमें यही हृदयविदारिणी चिन्ता क्लेराके हृदयको मथ रही थी। क्रासकीज सरायमें पहुंच और गाड़ीका भाड़ा चुकाकर वह दरियाफ्त करने लगी, कि कण्टरबरीकी गाड़ी कब छूटती है। इसपर उसे यह जवाब मिला, कि वह देखिये टिकट-घर है, वहां जाकर दरियाफ्त कीजिये। यद्यपि टिकट-घर पास ही था, पर इतनी ही दूर जाते जाते एक मैला-कुचैला विकट चेहरेवाला बदमाश दोतीन बार उसे धक्के देकर निकल गया,; इसलिये जब वह बेचारी टिकट-घरके अन्दर पहुंची, तो उसकी जानमें जान आई। कण्टरबरीका एक टिकट खरीदकर जब उसने रुपया देनेके लिये पाकेटमें हाथ डाला, तो मनीबेग गायब और पाकेट खाली पाया। यह माजरा देख वह अवाक रह गई और सोचने लगी कि यह उसी बदमाशका काम है।

इस नई आफतकी मारी पगली सी होकर वह उस बदमाशको पकड़नेके लिये दौड़ चली, पर उसे लण्डनका हाल तो कुछ मालूम ही न था। उसने सोचा, कि दुष्ट अभी गया ही कितनी दूर होगा, चट उसे पकड़ लूंगी, पर थोड़ी दूर जानेपर जब वह अपने होशमें आई, तो समझी, कि लण्डन जैसे भारी और भूलभुलैया वाले शहरमें किसी पाकेटमारको पकड़ लेना सहज नहीं है। यह खयालकर बेचारी उसी जगह खड़ी हो गई और सोचने लगी, कि अब क्या करना चाहिये?

उसी समय एक अधेड़ उम्रकी औरतने उसे आ टोका। उसकी भड़कीली पोशाक, अच्छे रङ्ग-ढङ्ग और मिलनसार बातोंको देख बेचारी क्लौरा-ष्टेनलीने उसे भले घरकी स्त्री समझकर अपने दुःखकी सारी कहानी सुना दी।

पर इस विश्वासका क्या फल हुआ? वह औरत दोस्त थी, जिसे ईश्वरने उसकी रक्षाके लिये भेज दिया था, या दुश्मन थी, जिसे शैतानने उसका सर्वनाश करनेके लिये भेजा था? इसका हाल आप ही आगे चलकर मालूम हो जायगा।

(२)

पाठकोंको याद रखना चाहिये, कि क्लौरा-ष्टेनली १८१४ ई० की जुलाई महीनेके मध्यमें लण्डन गई थी, और इस परिच्छेदमें हम जिस घटनाका बयान करेंगे, वह उससे कुछ हफ्ते पहले यानी उसी वर्षके जून महीनेके आरम्भमें घटी थी।

रातके ग्यारह बज चुके थे। इसी समय एक रमणी लण्डनसे कुछ दूर ब्रैकहीथ नामक स्थानके समीप एक खूबसूरत मकानमें अपने सोनेके कमरेमें अकेली बैठी हुई थी।

रमणीकी उम्र कोई-चौबीस पचीस वर्षकी थी और वह बहुत ही सुन्दर थी। वह सोनेके कपड़े पहन चुकी थी। उसके शिरपर लैसकी टोपी, देहपर सफेद दुपट्टा और पैरमें मोरक्कोकी स्लीपर जूती पड़ी हुई थी। यद्यपि वह सोनेके लिये तय्यार थी और दाईको बिदाकर कमरेका दरवाजा भी बन्द कर चुकी थी, तो भी न जाने क्यों वह कुर्सीपर बैठी हुई थी और कमरेके बीचो बीच टेबिल पर लम्प जल रहा था।

यह कमरा बहुत बड़ा और खूबसूरतीके साथ सजा हुआ था। यह पहली मञ्जिल पर था और इसमें एक अर्द्धचन्द्राकार खिड़की भी थी। इसी कमरेसे सटा हुआ हम्माम-घर था जो मकान मा-

लिकके कपड़े बदलने और शृङ्गार करनेके काममें भी आता था, क्योंकि उसमें हजामत बनानेके औजार तथा शृङ्गार करनेकी और और चीजें करीनेसे रखी हुई थीं। नहानेका हौज जमीनके अन्दर नहीं बल्कि ऊपर बना हुआ था और उसके ढकनेके लिये एक बड़ा सा ढकना भी पास ही रखा था।

इन बातोंका जिक्रकर अब हम उस रमणीके पास चलते हैं, जो अभीतक अपने शयनगृहमें मानो कुछ सुननेके लिये ध्यान लगाये बैठी हुई थी। आखिर खिड़की पर कुछ छोटे छोटे कंकड़ोंके फेंकनेकी आवाज हुई। इस आवाजके सुनते ही उसका चेहरा खिल उठा, मुख गर्दन और छाती लाल हो गई और आंखोंसे एक तरहकी अपूर्व ज्योति निकलने लगी। अब उसने फुरतीसे उठकर खिड़की खोल दिया। फिर पेटीसे रेशमी कमन्द निकाल और उसके एक सिरेको लोहेके छड़में मजबूतीसे बांधकर दूसरे सिरेको बड़ी होशियारीके साथ धीरे धीरे खिड़कीके बाहर लटका दिया। यह सब काम पलक मारते बड़ी सफाईके साथ हो गया।

चन्द्रमा अपनी पूरी रोशनीसे चमक रहा था। रात साफ, सुन्दर और शान्तिमयी दिखाई देती थी। यह मकान राज-पथसे इतनी दूरपर बना हुआ था, कि कोई भी पथिक यह न देख सकता था, कि खुली हुई खिड़कीमें क्या हो रहा है, क्योंकि कमरेकी रोशनी गुल कर दी गई थी।

उसकी उम्र लगभग तेंतालीस चौवालीस वर्षकी थी, पर वास्तवमें वह उससे कई वर्ष कमका ही मालूम होता था, क्योंकि अभी उसके सब बाल भंवरे जैसे काले बने हुए थे, एक भी सफेद न हुआ था और न चेहरेपर सिकुड़न ही पड़ी थी, दांत भी खूबसूरत और मजबूत दिखाई पड़ते थे। उसकी बोली ऐसी मीठी और मनोहारिणी थी, कि जब वह प्रेम-प्रीतिकी बातें करता, तो किसी औरत की मजाल न थी, कि अपने मनको वशमें रख सकती। सारांश यह, कि स्त्रियोंका मन मोहनेमें वह पक्का उस्ताद था।

ऐसी हालतमें यह कोई ताज्जुबकी बात नहीं है, कि ऐसे खूबसूरत और अक्लमन्द आदमीने ऐसी कमसिन और भोली औरतका मन अपना लिया हो। वह रमणी भी अपने नायकको हृदयसे चाहती थी, इस बातका सबूत उसका गाढ़ आलिङ्गन और आदर-सत्कार ही दे रहा था।

नायक,—(बड़े ही प्यारके साथ) "आखिर हमलोगोंको फिर मुलाकात हुई। उस बार जब तुम्हें छातीसे लगाने और तुम्हारे मुख चूमनेका स्वर्ग-सुख अनुभव किया था, तबसे मानो एक युग बीत गया है।"

रमणी,—"इसमें क्या शक है। हम लोगोंको मिले लगभग दो महीने हुए। और ये दो महीने मुझे दो वर्ष जैसे भारी मालूम हुए। इन दिनों वह (अपने स्वामीको जताती हुई) घरमें इतना अधिक रहता था, कि मुझेतो यह डर हो रहा था, कि अब कभी मेरा पिण्ड हो न छोड़ेगा।"

नायक,—(स्नेहको दृष्टिसे देखता हुआ) "आखिर उसने फिर हम लोगोंके मिलने का अवसर दे ही दिया। आज सुबह जब तुम्हारी इस मजमूनकी चिट्ठी मिली, कि तुम्हारा स्वामी दो दिनके लिये बाहर जाता है, तो मुझे कैसा अकथनीय आनन्द प्राप्त हुआ। पर दिन भर मुझे यही चिन्ता सताती रही, कि कहीं ऐसा न हो कि उसका

मन पलट जाय और वह बाहर न जाय। अभी जब मैं बागकी चहार-दीवारीके पास पहुंचा और इस कमरेमें रोशनी जलती देखा, तो मेरी जानमें जान आई।"

इतना कहकर उसने ज्योंही अपनी प्राणप्यारीके लबोंसे लब मिलाये थे, कि इसी समय जोर जोरसे दरवाजा खटखटाने और घण्टा बजानेकी आवाज सुनाई दी, जिसे सुनकर दोनों आशिक-माशूक चौंक उठे और मारे डरके कांपने लगे।

रमणी,—(निराश होकर घबराहटके साथ) "वही मालूम होता है। अगर उसे सन्देह हो गया हो और उसने बाहर जानेका सिर्फ़ बहाना ही किया हो, तब तो वह मुझे मार ही डालेगा।"

नायक,—(हिम्मत बांधकर) "साहस करो, प्यारी! साहस करो। सम्भव नहीं, कि उसे कोई बात मालूम हो गई हो, क्योंकि कार्रवाई बड़ी ही होशियारी साथ की गई है।"

रमणी,—"अब तुम भाग जाओ, प्यारे! देर करना अच्छा नहीं। देखो घरभर जाग उठा है। नौकर सदर दरवाजा खोलनेके लिये नीचे जा रहा है। हाय! थोड़ी ही देरमें सब—"

नायक,—"फिलहाल तो मुझे कहीं छिपा दो, प्यारी! फिर जो कुछ होगा, देखा जायगा।"

रमणी,—"छिपा दूं! कहां छिपा दूं? अच्छा चलो हम्माममें।"

नायक,—"हां, हम्माममें छिपा दो और जब वह सो जाय, तो मुझे धीरेसे निकाल देना।"

इस सलाहके बाद दोनों आशिक माशूक़ हम्माम-घरमें घुस गये। एक बार दोनोंने एक दूसरेको चूम लिया। इसके बाद आशिक हौजमें बैठ गया और माशूक़ाने उसके ऊपर ढकना रख दिया।

यह काम अभी खतम हो हुआ था, कि किसीके जल्दी जल्दी सीढ़ीपर चढ़नेकी आवाज सुनाई दी। इसी समय रमणीने झट लम्प

जलाकर अपने कमरेका दरवाजा खोल दिया, पर शंका और डरसे वह कांप रही थी। स्वामीकी ओर देखनेकी उसे हिम्मत न पड़ती थी, पर जब उसने मुलायमियतके साथ दो, एक बातें कहीं, तो उसका डर-भय सब दूर हो गया, और उसने पूछा, कि इतना जल्द लौट आनेका कारण क्या है?

स्वामी,—(स्त्रीके पीछे पीछे अन्दर जा और दरवाजा बन्द करके) "डरनेकी वैसी कोई बात नहीं है, प्यारी! पर हम लोगोंका चटपट यहांसे रवाना हो जाना ही अच्छा है। मैंने गाड़ी तय्यार करनेका हुक्म दे दिया है। कल हमलोग डोवरमें नाश्ता करेंगे और फिर तुरत ही वहांसे फ्रान्स चले जायंगे। जबतक यह बात दब न जाय तबतक वहीं रहेंगे।"

स्त्री,—(आश्चर्य और भयसे स्वामीकी ओर देखकर) "तुम क्या कहते हो? कैसी आफत आई है?"

रमणीका स्वामी पचास वर्षका बूढ़ा, मानो उसका बाप था। उसके चेहरेसे ही मालूम होता था, कि वह बड़ा भारी शराबी है।

स्वामी,—"मैंने द्वन्द युद्धमें नौजवान सेफटनको मार डाला है। यह द्वन्द्वयुद्ध लार्ड हर्वटके मकानमें खाना खाते वक्त हुआ था।"

स्त्री,—(डरसे स्वामीके हाथकी ओर देखती हुई कि, कहीं उसमें खून तो नहीं लगा हुआ है) "द्वन्द्वयुद्ध।"

स्वामी,—"हां, पिस्तौलका द्वन्दयुद्ध। जो कुछ हो, अब जल्द तय्यार हो जाओ। जाओ कपड़े बदल डालो। तुम्हें इस वक्त तकलीफ देनेके लिये सचमुच ही मुझे बड़ा अफसोस हो रहा है।"

स्त्री,—(कुछ प्रार्थना और कुछ आपत्तिके तौरपर) "तो क्या तुम सचमुच ही मुझे भी ले जाया चाहते हो? क्या दो एक दिनके लिये मुझे यहां छोड़ नहीं जा सकते, कि मैं उन कामोंका अच्छी तरह बन्दोबस्त कर लूं जो जल्दबाजीमें अधूरे ही रह जायंगे?"

स्वामी,—"नहीं प्यारी। तुम्हें मेरे साथ ही चलना होगा।"

इस बातको उसने ऐसी कड़ाईके साथ कहा और फिर इस तरह अपनी स्त्रीकी ओर देखा, कि उसे फिर किसी तरहकी आपत्ति करनेका साहस न हुआ।

लाचार रमणीने अपनी दाईको बुलाया। शयनागार और हम्माम-घरमें धूम सी मच गई। ट्रङ्क, पेटी और कागजके बक्स वगैरह लाकर रख दिये गये। चारों ओर कपड़े फैला दिये गये। बरतन रखनेकी आलमारी और दराज खाली कर डाले गये। रमणीने जान बूझकर अपने बक्सकी चीजके ऊपर रखवा दिया, जिसमें जल्दबाजीमें कहीं उसका ढकना छूट कर भण्डा न फूट जाय।

जहांतक बना रमणीने जल्द ही सब तय्यारी कर ली और उसका स्वामी भी चटपट रवाना होनेके लिये तय्यार हो गया। इतनेमें गाड़ी भी आ गई। बक्स वगैरह गाड़ीकी छतपर रख दिये गये। दाई और नौकर भी तय्यार हो गये। इस तरह जल्द ही सब तय्यारी खतम हो गई। उधर रमणीका स्वामी ड्योढ़ीपर उसे नीचे ले जानेके लिये खड़ा था, पर वह अपने कमरेसे बाहर न निकलती थी। वह बरतन रखनेकी आलमारी और दराजमें न जाने क्या खोज रही थी? छितरे हुए कपड़ोंमें न जाने क्या ढूंढ रही है? और क्या ढूंढ रही है, वही रेशमी कमन्द जिसे जल्दबाजी और घबराहटमें अच्छी तरह सम्हाल कर रखना भूल गई थी।

रमणी उस रेशमी कमन्दको इस तरह छोड़ न जाना चाहती थी, क्योंकि उसके चले आनेके बाद यदि नौकर लोग उसे देख लेंगे, तो उसकी बड़ी बदनामी होगी। वे लोग अनेक तरहका सन्देह करेंगे और रङ्ग बिरङ्गकी बातें कहेंगे, पर वह कमन्द है कहां? उसे विश्वास था, कि वह कपड़ोंके साथ बक्समें नहीं रखी गई, तब जरूर ही कहीं कमरेमें ही होगी। इधर शङ्का और डरके साथ

रमणी कमन्दको खोज रही थी और उधर उसका स्वामी ब्योढ़ीपर खड़ा खड़ा ऊब रहा था। आखिर स्वामीसे न रहा गया। उसने पूछा,—"अब क्या खोज रही हो?"

स्त्री,—"वही अंगूठी जो तुमने दी थी, कहीं गिर गई है।"

स्वामी,—"गिर गई है तो गिर जाने दो। चलो मैं फ्रान्समें उससे भी अच्छी खरीद दूंगा।"

स्त्री,—"नहीं, बिना उसे ढूंढे तो मैं नहीं जाती। तबतक तुम नीचे चलो, मैं अभी आती हूं।"

स्वामी,—"नहीं, बिना तुम्हारे मैं नहीं जा सकता। स्त्रियोंका स्वभाव मैं अच्छी तरह जानता हूं। अगर मैं चला जाऊंगा, तो तुम घण्टों यहीं लगा दोगी।"

इसी समय दराजसे निकाली हुई चीजोंके बीचसे वह कमन्द मिल गई। उसे देख रमणीके मुंहसे खुशीकी आवाज निकल पड़ी, जिसे सुन उसके स्वामीने पूछा,—"अब क्या मिल गई?"

"हां, कपड़ा बदलनेके कमरेमें पड़ी चमक रही है।" इतना कहती हुई कूदकर वह वहां चली गई और चट स्नान करनेके हौज का ढकना उठाकर कमन्दको उसके अन्दर डाल दिया।

यह काम यथा सम्भव शीघ्रता और सफाईके साथ कर दिया गया। उसे हौजके अन्दर न तो देखनेका ही समय था, न अपने आशिकके लिये उसमें कुछ देर हाथ डाल रखनेकी ही हिम्मत थी और कुछ फुसफुसाकर कहनेकी ही। पलक जैसे तुरत उठती और गिरती हैं, ढकना भी उसी तरह तुरत उठा और गिर गया। अपने प्यारेके पास कमन्दको रख देनेसे रमणीकी छातीका बोझ हलका हो गया। उसने सोचा, कि वह अवश्य ही समझ गया होगा, कि कमन्द क्यों उसके पास रख दी गई है।

अब न तो रमणीको देर करनेकी ही इच्छा थी और न कोई

बरामदे हो था, इसलिये वह अपने स्वामीका हाथ पकड़कर नीचे उतरी। दोनों गाड़ीमें जा बैठे। गाड़ी भी खड़खड़ाकर चल पड़ी।

पर स्नान-गृहकी इस घटनाका अन्त कैसे हुआ? उस अपूर्व सुन्दरीका नायक कौन था? क्या उसका दुष्कर्म उसके स्वामीसे छिपा रहा? क्या उसके लिये उसे दण्ड नहीं मिला?

इन सब बातोंका जवाब आगे चलकर इस किस्सेमें आप ही मिल जायगा।

पहला परिच्छेद।

छः मित्रोंकी मण्डली।

१८१४ ई० के सितम्बर महीनेके मध्यमें एकदिन प्रिन्स आफ वेल्सने, (जो अब राज्यके राजप्रतिनिधि थे), अपने बहुत पुराने और दिलीदोस्त लेवेसनके मारक्विसके यहां खाना खानेका नेवता स्वीकार किया। लेकिन यह बात पहले ही तय कर ली गई थी, कि जलसा खास होगा, उसमें सिर्फ मर्द ही शामिल हो सकेंगे और उनकी संख्या प्रिन्स समेत छःसे अधिक न होगी। प्रिन्सको ऐसे ही चुने चुने थोड़ेसे दोस्तोंके साथ खाना-पीना अच्छा लगता था, क्योंकि ऐसे जलसेमें वे विना रोक-टोक दिल खोलकर फूहड़ हँसी दिल्लगी कर और अश्लील गीत गा सकते थे, मनमाना शराब पी सकते थे।

आखिर करारके मुताबिक अलबेमार्ल ष्ट्रीटमें लेवेसनके मारक्विसके आलीशान मकानमें छःओं मित्र इकट्ठा हुए। ये जवान रंडुए और साठ वर्षके बुड्ढे थे। उन्होंने अपनी सारी जिन्दगी ऐश आराम और भोग विलासमें ही बिता दी थी। अपनी बड़ी भारी आमदनीको वे निकम्मे कामोंमें ही सर्फ किया करते थे। उनका मकान राज भवनकी नाईं पूर्वी भोग-विलासकी वस्तुओंसे सजा हुआ था। लोग

कहते थे, कि उस मकानके दो कमरोंमें ऐसो ऐसो तस्वीरें और प्रति-मूर्त्तियां सजी हुई हैं, कि जिन्हें देखकर मुनियोंके मन भी डोल जाते और आलसे शान्त कुमारियोंके दिल भी फड़क उठते हैं।

मारक्विस दुबले पतले नाटे, पर सुडौल व्यक्ति थे। नकली बाल, नकली दांत, खिजाब लगी हुई मूछें, पाउडरसे रंगे हुए चेहरे और पैरिसके मशहूर दर्जियोंके बनाए हुए उम्दा कपड़ोंकी बदौलत वे उतने वृद्ध नहीं मालूम होते थे।

प्रिन्स-आफ-वेल्सकी उम्र अब बावनवें वर्षको पार कर चुकी थी, वे कुछ अधिक मोटे हो गये थे, और उनके गाल फूल उठे थे। उनके अङ्ग सुडौल, चेहरा रोबीला, ललाट उन्नत और रंग सुर्ख था। उनके अङ्ग अङ्गसे तन्दुरुस्तीकी झलक आती थी। वे नकली बालोंकी टोपी पहनते और अङ्गराग भी लगाते थे, पर उनके दांत अभी भी मजबूत और खूबसूरत दिखाई देते थे। चूंकि वे मूछें मुड़ाये रहते थे, इसलिये उनमें खिजाब लगानेकी जरूरत न पड़ती थी।

बाकी चार दोस्त जो प्रिन्सके साथ खाना खानेके लिये बुलाये गये थे, उनका हाल सिलसिलेवार नीचे लिखा जाता है।

उनमें पहले अर्ल-आफ-कर्जन थे। उनकी उम्र प्रायः तीस वर्षकी थी। वे एक लम्बे, गठीले और खूबसूरत जवान थे। उनके चेहरेकी बनावट यहूदियों जैसी थी, रंग सुर्खी मायल, बाल खूब काले और घुंघराले तथा दांत बहुत खूबसूरत थे। तीन चार वर्ष हुए एक आली खानदानकी खूबसूरत धनी औरतसे उनकी शादी हुई थी, पर वे घोर विलासी होनेके कारण घरमें न रहते थे।

दूसरे मेहमान कर्नल मलपास थे। इनकी उम्र प्रायः कर्जनके बराबर ही थी। ये लम्बे, पतले और नाजुक चेहरेके आदमी थे। इनके बाल लाल थे। मूछें भूरी और सिरोपर ऐंठी हुई थीं। ये हकलाकर बोलते थे। काममें सुस्त थे और चालचलन बनावटी

था। आर्थिक अवस्था खराब होने तथा और कारणोंसे इन्होंने कामसे किनारा पकड़े हुए एक कसाईकी लड़कीसे शादी कर ली थी। यद्यपि इनकी स्त्रीके पास खूब धन था, पर ऐसे व्याहसे लोग घृणा करते थे, खास करके यह शादी उन आली खानदान वालोंको, जिनके साथ कर्नल मलपास रिश्तेदारीका दावा करते थे, जरा भी पसन्द न थी।

तीसरे मेहमान सर डँगलास इथिङ्गडन थे। ये एक बैरोनेट और छब्बीस सत्ताईस वर्षकी अवस्थाके थे। बालिग होने पर इन्हें एक अच्छी आमदनीकी जायदाद मिल गई थी। ये अपने धनको हर तरहकी लम्पटतामें उड़ा रहे थे। इनका चेहरा खूबसूरत होने पर भी रोगियों जैसा दिखाई देता था। जो आदमी बहुत राततक जागता रहेगा, बेहद शराब पियेगा, खूब जुआ खेलेगा और रात दिन इश्कबाजी करेगा, उसका चेहरा रोगी जैसा दिखाई देना कोई ताज्जुब की बात नहीं है। सर डगलासने अब तक शादी नहीं की थी और न उनकी इच्छा ही शादी करनेकी थी।

इस मजेदार मण्डलीके चौथे मेम्बर, मिष्टर होरेस सेकविल थे। इनके नामके साथ कोई पदवीका पुछल्ला नहीं लगा हुआ था। ये मिस वेथर्ष्टके भतीजे थे, पर लोग कहते हैं, कि असलमें ये उसके लड़के थे। इस मिस वेथर्ष्टके बारेमें आगे बहुत कुछ लिखा जायगा, पर इस जगह इतना कह देना आवश्यक है, कि उसकी आर्थिक अवस्था कुछ अच्छी थी, उच्च श्रेणीके लोगोंमें आती जाती थी और किसी समय प्रिन्ससे उसकी खूब घनिष्ठता थी। जो हो, मिष्टर होरेस प्रिन्सके बहुत प्यारे दोस्त थे। प्रिन्स इनके साथ बहुत मेहर्बानीसे पेश आते थे और अक्सर इन्हें अच्छी अच्छी चीजें भेंट दिया करते थे पर ये प्रिन्सकी इस खास मेहर्बानीका कुछ भी गुमान न करते थे। इनकी उम्र अभी प्रायः चौबीस ही वर्षकी थी। ये

देखनेमें सुन्दर, स्वभाव गम्भीर तथा लजीले थे, पर गाते बहुत अच्छा थे। इस गाने और प्रिन्सके प्रेमपात्र होनेके कारण ही ये इस खास मित्र-मण्डलीमें शामिल किये गये थे।

मित्र-मण्डलीके छःओं मित्रोंका परिचय पाठकोंको दे दिया गया। खानेकी चीजें भी, जो टेबिलपर चुनी गई थीं, एकसे एक अच्छी थीं। उन्हें देखते ही मुंहसे पानी टपक पड़ता और भूख जाग उठती थी। ऐसा होना कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, क्योंकि लार्ड लेवेसनकी कमती ही किस बातकी थी? अच्छी अच्छी नायाब चीजें बनानेके लिये ही उन्होंने मोटी तनख्वाहपर फ्रान्सीसी और हिन्दुस्थानी बावर्ची मुकर्रर कर रखे थे। और एक उम्दा शराब चुननेवाला अलग ही नौकर था। उनके बाग-बगीचे और चमनमें जो साग-सब्जी न होती, वह बाजारसे खरीद ली जाती थी, इसलिये उमदासे उमदा शराब और खानेकी चीजें टेबिलपर चुनी गई थीं।

पाठक! समझ लीजिये, कि खाना खतम हो गया और टेबिल-पर मेवा, मिठाई, शराब वगैरह रखकर नौकर लोग चले गये। अब मजेमें शराब उड़ने और बातचीत होने लगी। पाठक! आइये अब हमलोग इन अन्तरङ्ग मित्रोंकी गपशप सुनें।

प्रिन्स,—(एकघूंट शराब पीकर) "लेवेसन! इस नायाब दावतके लिये मैं तुम्हारा बहुत एहसानमन्द हूं। हकीकतमें इधर कई महीनोंसे ऐसी लजीज चीजें खानेमें नहीं आई थीं। मैं अच्छी तरह समझता हूं, कि ऐसे ही एक रङ्ग-ढङ्गके दिनों और चीजोंसे ऊबकर ईरानके शाहने आनन्दकी कोई नई चीज ईजाद करनेके लिये इनामका इश्तिहार दिया होगा।"

मलपास,—"तो क्या आप यह कहना चाहते हैं, कि लण्डन एकदम बेरौनक और बेमजा हो गया है?"

प्रिन्स,—"बेशक। क्या दरबार, क्या जलसे क्या, दावत और क्या बाग-बगीचे—मैं तो जहां जाता हूं, वहां वहीं सूरतें दिखाई देती हैं। फिर कहो वैसा क्यों न समझूं?"

लेवेसन,—"असल बात यह है, कि आप बजहदार औरतोंको नाजनियोंका मजमा समझते हैं, जिनकी खूबसूरती बारबार देखने-से बेमजा हो जाती और फिर नहीं भाती। आप हमेशा एक न एक नये सितारेका देखना पसन्द करते हैं?"

कर्जन,—(जोशमें आकर) "अरेरेरे! नये सितारोंकी बात कहते हैं। अभी जो एक नया सितारा दिखाई दिया है, उससे बजहदार और कौन सितारा हो सकता है।"

डगलास,—"मैं समझ गया, तुम जिस सितारेका जिक्र करते हो, उसे आज हो मैंने गाड़ीमें जाते देखा है।"

मलपास,—"हां, गत रविवारको तीसरे पहर रमनेमें एक आद-मीने वह सितारा मुझे दिखा दिया था। वास्तवमें वह इन्सान नहीं परी है।"

डगलास,—"नहीं, नहीं, उसकी सुन्दरता स्वर्गीय सुन्दरता नहीं है। उसकी खूबसूरती तो उस यारबाश लौण्डोकी तरह है, जो किसी पूर्वी महल सरामें गद्दीपर सुस्तीसे पड़ी हो।"

कर्जन,—"वाह! वाह! यह तो उसकी खूबसूरतीका बहुत अच्छा बयान है। ऐसी हूर तो मैंने अपनी जिन्दगीमें कभी देखी ही नहीं।"

प्रिन्स,—"(उत्सुक होकर) पर खुदाके लिये यह तो बताओ, कि वह परी है कौन, जिसने तुमलोगोंको पागल बना डाला है?"

लेवेसन,—"वाह! आपने अब तक उस विनोप्रिया ट्रिम्लीगोकी बात ही सुनी नहीं?"

कर्जन,—"वह जैसी सुन्दरी है, वैसी ही गुण भी है।"

डगलास,—"और जैसो समझसे बाहर है, वैसो ही नेकचलन भी है।"

मलपास,—"पर उसको नेकचलनोका जामिन कौन हो सकता है? अभीतक उसकी जान-पहचान तो किसीसे हुई ही नहीं। जिसे देखता हूं वही उसकी बात करता है, पर ऐसा कोई भी नहीं दिखाई देता, जिससे वह कभी बोली हो।"

डगलास,—"वह किसीको जरा भी उत्साह नहीं होने देती, इसीसे मैं उसे नेकचलन कहता हूं। अभी हाल होमें एक डिउकने उसके पास एक सादा चिक भेजकर यह निवेदन किया, कि अगर मेरे ऊपर कृपादृष्टि हो, तो उसपर जितनी रकमको इच्छा हो लिख दो जाय, पर उसने उसके जवाबमें बिना एक सतर लिखे ही उस सादे चिकको ज्योंका त्यों लौटा दिया।"

प्रिन्स,—(मानो कुछ सोचते हुए दो तीन बार उसका नाम लेकर) "विनोशिया—ड्रिलोनी? विनोशिया—ड्रिलोनी? निश्चय ही मैंने उसका जिक्र पहले भी कभी सुना है। (कुछ सोचकर) हां, हौरेस। तुम्हींने मुझसे उसका जिक्र किया था न?"

हौरेस,—"मालूम होता है, इस बारेमें मैंने आपसे कुछ कहा था। हां, खूब याद आया, उस रमणी-रत्नका जिक्र मैंने आपसे दो एक बार किया था।"

प्रिन्स,—"आह। तब तो तुमने भी उसे देखा है। तुम्हें आग्रह करके मुझसे कहना था, कि राजधानीमें आजकल एक मनोहारिणी रमणी मौजूद है।"

हौरेस,—"जब मैंने उसका जिक्र आपसे किया था, तो आपने लापरवाही दिखाई थी, इसीसे फिर उसके बारेमें कुछ कहना मैंने मुनासिब न समझा।"

प्रिन्स,—उस समय मैंने यह खयाल किया होगा, कि तुम

किसी साधारण सुन्दरीकी बात कर रहे हो। पर अगर तुम जोर देकर उस वक्त यह कहते, कि यह कोई ऐसी वैसी रमणी नहीं, बल्कि रमणी-कुल-भूषण है, जैसी प्रायः देखनेमें नहीं आती, तो अवश्य ही मैं खयाल करता।"

लेवेसन,—"आह! वह तो ऐसी सुन्दरी है, यदि उसके अनुरागका आनन्द एक घण्टेके लिये भी मिले, तो आदमी उसपर अपना तन, मन, धन सभी न्योछावर कर सकता है।"

प्रिन्स,—(आश्चर्य सहित) "तोभी तुम कहते हो, कि उसे कोई नहीं जानता। यहां लण्डनमें एकसे एक भारी ऐय्याश मौजूद हैं, पर ताज्जुब की बात है, कि अबतक कोई भी दगा, फरेब या और किसी तरहसे उससे मुलाकात हासिल नहीं कर सका।"

डगलास,—"बात तो ऐसी ही है। मैंने अपने कई दोस्तोंसे उसके साथ अपनी जान-पहचान करा देनेके लिये कहा, पर सबने यही जवाब दिया, कि यार! मैं तो आप ही उससे जान-पहचान करनेके लिये दिनरात मगजपच्ची किया करता हूं।"

प्रिन्स,—"यह तो बड़े ही आश्चर्यकी बात है। तो क्या मैं यह समझलूं, कि सारे लण्डनमें उसका एक भी दोस्त या जान-पहचान का आदमी नहीं है, और इस राजधानीकी शोभा बढ़ानेके लिये वह आस्मानसे टपक पड़ी है?"

डगलास,—"सुनिये, कुछ हफ्ते हुए, वह अपूर्व सुन्दरी पहली बार रमनेमें दिखलाई पड़ी। वह गाड़ीपर सवार थी और उसके साथ एक अधेड़ उम्रकी औरत थी, जो उसकी गुवर्नेस जैसी मालूम होती थी। उस मनमोहिनीका अपूर्व रूप लावण्य देख सबका मन हाथसे निकल गया। सब कोई एक स्वरसे यही पूछने लगे,— 'यह नाजनी है कौन?' पर कोई कुछ भी बता न सका। आखिर कुछ दिनोंके बाद मालूम हुआ, कि उसका नाम मिलोसिया क्रिस्टोनी

है। अहा! कैसा प्यारा नाम है! फिर मैंने पूछा,—'वह रहती कहां है?' पर देखा, तो सब कोई यही पूछ रहे हैं। आखिर कुछ दिनोंके बाद इस सवालका जवाब भी मालूम हो गया, यानी विनीशिया-क्लिनी नाइट्स-ब्रिज महल्लेमें अकेशिया-काटेज नामक मनोहर स्थानकी शोभा बढ़ा रही है। और वह गुरुआनी सी स्त्री कौन है जो हमेशा उसके साथ रहती है? पहले तो इस सवालका जवाब कुछ कठिन जान पड़ा, पर पीछे यह भी हल हो गया, अर्थात् यह मालूम हो गया, कि वह उसकी कोई रिश्तेदारिन नहीं, बल्कि सखी है और उसका सम्बन्ध अच्छी अच्छी जगहोंमें है।"

प्रिन्स,—"सखीको छोड़ो, विनीशिया—हृदयहारिणी विनीशियाकी ही बात कहो।"

डगलास,—"अब और कुछ भी कहना नहीं है। उसके बारेमें जितना मैं जानता हूं, उतना ही अब आपको भी मालूम हो गया है।"

प्रिन्स,—"समझ रखो, कि वह कोई हौसलेवर रुपया कमानेवाली है, और इस तरह गुप्त रहकर नाम पैदा करना चाहती है।"

डगलास,—"नहीं, ऐसी बात नहीं है। सुननेमें आया है, कि वह बहुत धनी है। यद्यपि वह एकान्तमें रहती है, पर रहती है खूब ठाट बाटसे। अपने पावनेदारोंको भी फौरन रुपये दे देती है।"

प्रिन्स,—(हँसते हुए) "देखता हूं, तुम उसकी सब खबर रखते हो।"

डगलास,—"बेशक। पर उसके रुपया कमानेकी बात एकदम विश्वास करने लायक नहीं है, क्योंकि डिचकके चिकको बातसे यह साफ जाहिर होता है, कि उसको मंशा धन कमाना नहीं है। और उसकी खूबसूरती दौलतसे खरीदी भी नहीं जा सकती।"

प्रिन्स,—"तुम्हारी बात बहुत ठीक है। उसकी उम्र क्या है?"

प्रिन्स,—"और उन लोगोंके सफलमनोरथ न होनेके कारण हो शायद तुम खयाल करते हो, कि उसकी शादी करनेकी कोई खास इच्छा नहीं है ?"

हौरेस,—"उसके बारेमें हम लोगोंका जैसा खयाल हुआ है, वैसी ही अपनी अपनी राय भी हम लोगोंने जाहिर करदी है। और चूंकि हम लोग उसका बहुत कम हाल जानते हैं, इससे हमलोगोंका खयाल अनुमान मात्र ही हो सकता है। पर मेरा विश्वास है, कि जैसी अनूठी उसकी सुन्दरता है, वैसा ही अनूठा उसका मन भी है। चूंकि उसने बड़े बड़े आदमियोंके शादीके पैगाम नामंजूर कर दिये हैं, इससे साफ जाहिर होता है, कि यह उसकी सरासर गलती है, जो ऐसी अपूर्व सुन्दरी होने पर भी अब तक कुमारी है। इससे सिर्फ दो बातें मालूम होती हैं।"

प्रिन्स,—"और वे दो बातें क्या हैं ?"

हौरेस,—"एक तो यह, कि उसका दिल ऐसा साफ है, कि वह जिसे अपना दिल दे नहीं सकती, उसे अपना हाथ भी नहीं दिया चाहती। और दूसरी यह, कि उसकी अभिलाषा विवाहसे भी बहुत ऊँची है, यही सबब है, कि उसने डिउकके साथ रहनेकी बात नामंजूर कर दी है।"

प्रिन्स,—"तब फिर वह चाहती ही क्या है ?"

हौरेस,—"किसी महाराज व राजकुमारकी रखनी बनना।"

प्रिन्स,—(ठठाकर हँसते हुए हौरेसके कन्धेपर हाथ रखकर) "बदमाश। तूं साफ ही मुझे उस सुन्दरीको वशमें लानेके लिये [illegible] रहा है। निश्चय ही तेरी ऐसी ही इच्छा मालूम होती है। [illegible] है, कि इसमें बड़ा मजा होगा। क्यों यही बात है न ?"

[illegible],—(कुछ शर्मा और घबराकर) "जी हां, पर मैं आशा

प्रिन्स,—(कुछ मुस्कराकर) "किस बुनियादपर तुम यह राय जाहिर करते हो?"

हौरेस,—"इस बुनियादपर, कि जब उसने डिउकको धता बता दिया है, तब सिर्फ प्रिन्स ही उसे फंसा सकते हैं,—क्योंकि प्रिन्स एक न एक दिन राज-सिंहासनपर विराजेंगे।"

इतना कहकर हौरेस-सैकविल बड़े गौरसे प्रिन्सकी ओर देखने लगे, कि उनकी बातोंका असर प्रिन्सपर कैसा पड़ता है।

प्रिन्स,—"भाई! तुम तो मुझे उसपर फतह पाने के लिये भड़का रहे हो, पर अगर उसकी इच्छा किसी अच्छे आदमीसे विवाह करनेकी हो तब? यह स्वभाविक बात है और शायद इसीसे वह अपने चालचलनके बारेमें इतनी चौकसी रखती हो।"

हौरेस,—"अगर उसकी इच्छा शादी ही करनेकी होती तो अब तक कभीकी कर चुकती। उस जैसी असाधारण रूपवतीको वरके लाले नहीं पड़े। इसके अलावा मुझे यह अच्छी तरह मालूम है, कि उसने शादीके कितने ही अच्छेसे अच्छे पैगामोंको नामंजूर कर दिया है—"

डगलास,—"यह कैसे मालूम हो सकता है? और अगर ऐसी ही बात हो तो, तो वह उन बड़े या भले आदमियोंको जिनकी बात उसने अस्वीकार कर दी है, अवश्य जानती होगी।—और निश्चय ही उन निराश आदमियोंमेंसे कोई न कोई हम लोगोंको मण्डली-का होता, पर इस वक्त जितने आदमी यहां मौजूद हैं, उनमेंसे तो अभी तक कोई भी उसके पास नहीं पहुंच सका।"

हौरेस,—(लापरवाहीके साथ) "उसके बारेमें जो एक अफ़वाह उड़ रही है, उसीका जिक्र मैंने किया है, पर मैं समझता हूं, कि निस्सन्देह विनीशियाके पास कितने ही बड़े आदमियोंके पैगाम पहुंचे हैं, जिन्होंने उसकी अनुपम रूपराशिपर मुग्ध हो और अपने बड़प्पनपर भरोसाकर उसके पास प्रेम-पत्र लिखे हैं।"

तथा आपसमें एक दूसरेकी जड़ काटनेके लिये किसी तरहकी चाल-बाजी वा दगाबाजीसे काम न लेना होगा।"

सब मिल,—"मंजूर है।"

प्रिन्स,—"अगर सबको नहीं, तो हमलोगोंमेंसे कुछको तो अवश्य ही किसी न किसी उपायसे अकेशिया-काटेजमें जानेकी इजाजत मिल जायगी। ऐसी हालतमें क्या कोई ऐसा बन्दोबस्त कर लेना अच्छा नहीं, कि जिससे दो या तीन आदमी एक ही साथ और एक ही समय वहां न पहुंच जायं?"

कर्जन,—"इसका बन्दोबस्त कैसे किया जा सकता है?"

प्रिन्स,—"बड़ी आसानीके साथ। हमलोग छः आदमी हैं, और रविवारको छोड़ हफ्तेमें छः दिन होते हैं। बस एक एक आदमीके जाने और नजर वगैरह भेजनेके लिये एक एक दिन मुकर्रर कर दिया जाय, जैसे सोमवार एक आदमीके लिये, मङ्गलवार दूसरेके लिये—"

डगलास,—"यह बात तो बहुत अच्छी है। मैं इसे दिलसे पसन्द करता हूं।"

मलपास,—"प्रस्ताव तो अति उत्तम है, पर दिन कैसे नियत किया जायगा?"

डगलास,—"दर्जेके मुताबिक।"

प्रिन्स,—"नहीं। जब मैंने अपना कुल स्वार्थ त्याग दिया है, तब भला फिर ऐसी बातपर मैं कब राजी हो सकता हूं, जिसमें फिहरिस्तमें मेरा ही नाम पहले हो। नहीं, हमलोगोंको ईमान-दारीके साथ चिट्ठी डालनी होगी। होरेस! तुम एक एक टकड़े कागजपर हमलोगोंका नाम लिखकर किसी बरतनमें डाल तो दो।"

यह काम चटपट कर डाला गया। फिर इधर प्रिन्स एक एक कर दिन बोलने लगे और उधर बरतनसे एक एक नाम निकाला जाने लगा। नतीजा यह हुआ:——"

प्रिन्स,—"क्या आशा करते हो मेरे प्यारे दोस्त, कि तुमने मुझे नाराज नहीं कर दिया ? बेशक मैं तुम्हारे इस खयाल पर बहुत ही खुश हूं, कि अगर कोई मनुष्य उसका कृपापात्र हो सकता है, तो वह केवल मैं ही हूं। और यदि तुम्हारा विश्वास पक्का है, तो मैं अपने मित्रोंको निराश कर उसे पाने की कोशिश नहीं कर सकता।"

कर्जन,—"इस जगह पर ऐसा कोई भी नहीं है, जो विनोशियाके पाने की आशा न रखता हो। पर निश्चय ही आपको यह इच्छा नहीं है, कि हम लोग इस काममें आपके मुकाबले खड़े हों ?"

प्रिन्स,—"बल्कि मेरी ऐसी ही इच्छा है। हम लोगोंको तो मजा करना है, इसलिये जहां तक मजा हो, वही अच्छा है। प्यार और सुन्दरताको इनाम मानकर हम लोगोंको बराबरकी शर्त पर इस काममें हाथ लगा देना चाहिये। तुम क्या कहते हो, डगलास ?"

डगलास,—"वाह! क्या ही अच्छी बात है।"

मलपास,—(मूछोंपर ताव देते हुए) "यह बात तो किसी तरह बुरी नहीं है।"

मलपास,—"मुझे भी बहुत पसन्द है।"

लेवेसन,—"और मुझे भी। पर तुम क्या कहते हो, सैकविल ?"

प्रिन्स,—"इस प्रेमकी लड़ाईके मैदानमें वह भी तलवार लेकर उतर पड़ेगा।"

होरेस,—"बेशक, इसमें क्या पूछना है।"

प्रिन्स,—"अच्छा, तो अब हम लोगोंके सफाईसे काम करनेके लिये कुछ नियम बन जाने चाहियें, नहीं तो अगर हम लोग एक दूसरेके साथ टक्कर खा जायंगे, तो पीछे बड़ी हँसी होगी।"

मत्र मित्र,—"सुनो, सुनो।"

प्रिन्स,—"और हम लोगोंको यह काम एक दम गुप्त रखना होगा

विजयीको उसकी चालाकी, उस्तादी और साबित-कदमीके लिये सार्टिफिकेट न मिलना चाहिये ?"

कर्जन,—"विनीप्रिया-ट्रिनोली और छः हजार गिन्नियां किसीके परिश्रमका कम पुरस्कार नहीं है। इस बारेमें सबकी क्या राय है ? एक एक हजार गिन्नी देकर क्या हमलोग छः हजारकी बाजी नहीं लगा सकते ?"

प्रिन्स,—"खुशीसे लगा सकते हैं। मारक्विस लेवेसन कोषाध्यक्ष होंगे। कल दो पहरके वक्त हमलोगोंको उनके पास एक एक हजार-का चिक भेज देना चाहिये। सैकविलकी रकम मेरे पास जमा है, इसलिये अपने और उनके हिस्सेका दो हजारका चिक मैं भेज दूंगा।"

अगर सच पूछिये, तो होरेस—सैकविलकी एक फूटी कौड़ी भी प्रिन्सके यहां जमा न थी, इसलिये जब प्रिन्सने उनका हिस्सा भी भेज देनेकी बात कही, तो इस मेहर्बानीके लिये उन्होंने प्रिन्सकी ओर एकबार कृतज्ञता पूर्ण दृष्टिसे देख लिया।

डगलास,—"तो अब सब बातें तय हो गईं। जो आदमी विनीप्रिया-ट्रिलोनीको अपने वशमें कर लेगा, उसे छः हजार गिन्नियां इनाम दी जायगी। पर वशमें कर लेनेका प्रमाण ?"

प्रिन्स,—"अवश्य ही जीतनेवालेको कोई ऐसा प्रमाण देना पड़ेगा, जिसमें सबको सन्तोष हो जाय, पर वह अवस्था अनुसार होगा। इसलिये जब घिराव खतम हो जाय और दुर्ग आत्म-समर्पण कर दे, तो भाग्यवान जीतनेवालेको सबको खबर करदेनी होगी।"

कर्जन,—"उसे दावत देनी होगी। उसी समय चिट्ठी या और कोई चीज जीतके प्रमाणमें पेश करनी होगी। इसके बाद उसे छः हजार गिन्नियां फौरन दे दी जायगी।"

डगलास,—"बस अब कौल करार पूरा होगया, कुछ भी कसर न रही। लाओ बोतल, सैकविल।"

सोमवार,—"अर्ल कर्जन।"

मंगलवार,—"सर डगलास हण्टिङ्गडन।"

बुधवार,—"कर्नल मलपास।"

वृहस्पतिवार,—"प्रिन्स आफ-वेल्स।"

शुक्रवार,—"मारक्विस लेविसन।"

शनिवार,—"मिष्टर सैक्कविल।"

जैसे जैसे नाम निकलता गया, वैसे वैसे लोगोंको खुशी हासिल होती गई, और जिस सिलसिलेसे नाम उठे उससे तो खूबही हंसी दिल्लगी और हाजिरजवाबी हुई। शराबके गिलासपर गिलास उड़ रहे थे, बोतलपर बोतल खाली हो रही थी। इस तरह विनीग्रिया-ट्रिनीलीकी मङ्गल कामनामें कितनी ही बोतलें खाली कर डाली गईं।

प्रिन्स,—(कुछ सोचकर) "हां, अभी हमलोगोंका बन्दोबस्त जैसा चाहिये, वैसा पूरा नहीं हुआ, क्योंकि अगर किसी सौभाग्यवान पर वह मेहर्बान हो जाय, तो फिर और और लोगोंको जिद करके उसे सताना अच्छा नहीं। और वह सौभाग्यवान जितनी बार और जब चाहे उस कृपाका सुख भोग सकता है। उसके लिये हफ्तेमें एक दिनका बन्धन कायम न रहेगा। चूंकि हमलोग एक ही काममें हाथ डालनेवाले हैं, इसलिये यदि कोई विजय प्राप्त करे तो हमलोगोंको फौरन मालूम हो जाना चाहिये, कि कौन और कब विजयी हुआ है।"

डगलास,—"निश्चय ही, पर ताज्जुबकी बात है, कि यह बात पहले हमलोगोंमेंसे किसीके मनमें नहीं उठी। ऐसी ऐसी जरूरी बातोंके बिना तय हुए हमलोगोंका कौल करार अधूरा ही रह जायगा।"

मलपास,—(स्वयं विजयी होनेकी आशासे) "और क्या पहले

विजयीको उसकी चालाकी, उस्तादी और साबित-कदमीके लिये सार्टिफिकेट न मिलना चाहिये ?"

कर्जन,—"विनोग्रिया-ट्रिनौली और छः हजार गिन्निया किसीके परिश्रमका कम पुरस्कार नहीं है। इस बारेमें सबकी क्या राय है ? एक एक हजार गिन्नी देकर क्या हमलोग छः हजारकी बाजी नहीं लगा सकते ?"

प्रिन्स,—"खुशीसे लगा सकते हैं। मारक्विस लेवेसन कोषाध्यक्ष होंगे। कल दो पहरके वक्त हमलोगोंको उनके पास एक एक हजार-का चिक भेज देना चाहिये। सैकविलकी रकम मेरे पास जमा है, इसलिये अपने और उनके हिस्सेका दो हजारका चिक मैं भेज दूंगा।"

अगर सच पूछिये, तो होरेस—सैकविलकी एक फूटी कौड़ी भी प्रिन्सके यहां जमा न थी, इसलिये जब प्रिन्सने उनका हिस्सा भी भेज देनेकी बात कही, तो इस मेहर्बानीके लिये उन्होंने प्रिन्सकी ओर एकबार कृतज्ञता पूर्ण दृष्टिसे देख लिया।

डगलास,—"तो अब सब बातें तय हो गईं। जो आदमी विनोग्रिया-ट्रिनौनीको अपने वशमें कर लेगा, उसे छः हजार गिन्नियां इनाम दी जायंगी। पर वशमें कर लेनेका प्रमाण ?"

प्रिन्स,—"अवश्य ही जीतनेवालेको कोई ऐसा प्रमाण देना पड़ेगा, जिसमें सबको सन्तोष हो जाय, पर यह अवस्था अनुसार होगा। इसलिये जब विराव खतम हो जाय और दुर्ग आत्म समर्पण कर दे, तो भाग्यवान जीतनेवालेको सबको खबर करदेनी होगी।"

कर्जन,—"उसे दावत देनी होगी। उसी समय चिट्ठी या और कोई चीज जीतके प्रमाणमें पेश करनी होगी। इसके बाद उसे छः हजार गिन्नियां फौरन दे दी जायंगी।"

डगलास,—"बस अब कौन्ट करार पूरा होगया, कुछ भी कसर न रही। लाओ बोतल, मैकमिन।"

फिर चारों ओर इस तरह बोतल फिरी और डून-चौगूनसे शराब उड़ी, कि एक होरेसको छोड़कर अगर और सबसे यह पूछा जाता, कि वे लोग अपने पैरोंके बल खड़े हैं या सिरके बल, तो आसानीसे कोई भी इसका जवाब न दे सकता।

दूसरा परिच्छेद।

विनोप्रिया।

मारक्विस लेवेसनके यहां जिसदिन दावत थी, उसके बाद सोमवारको प्रायः नौ बजे सुबहके वक्त विनोप्रिया-क्लिलोनी अपने 'अर्केप्रिया' काटेजके एक बड़े ही सजे सजाये खूबसूरत कमरेमें बैठी नाश्ता कर रही थी।

वह अकेली थी और बहुत सुन्दर ढीला ढाला गाउन पहने हुई थी, अथवा यों कहिये, कि अभी वह बगलवाले शयन-गृहसे आई थी और अकेली रहनेके कारण बड़ी लापरवाहीसे कपड़ा पहने हुई थी।

मुलायम गद्दीदार कौंचपर ढासना लगाये वह बहुत ही खूबसूरत दिखाई देती थी। उसके दोनों चमकीले कन्धे प्रायः खुले हुए थे और जरा सा हिलने-डोलनेसे मलमली दुपट्टा अलग हो जाता, तो दोनों उन्नत उरोज साफ दिखाई दे जाते थे।

पलङ्गसे उठतेही उसने स्नान कर डाला था, इससे उसका शरीर सुहावना, तथा चमकीला और दोनों मुलायम गाल गुलाबी हो उठे थे। विनोप्रियाका मुख गोलमटोल और निष्कलङ्क चन्द्र जैसा था, आँखें बहुत बड़ी होनेपर भी रसीली थीं, भौंहें धनुषाकार, ललाट उन्नत और बदन संगमर्मर जैसा चिकना था। नाक पतली और नुकीली थी तथा मुंह छोटा और खूबसूरत था। ऊपरका ओठ पतला पर नीचेका कुछ मोटा और लटका हुआ था। इन बिम्बा-

घरोंके बोच कुन्दकलिका जैसी दन्त-पंक्ति बहुत ही सुन्दर दिखाई देती थी।

विनोभिया साधारण औरतोंसे कुछ लम्बी थी। उसके बाल भूरे थे, जो धूपमें पालिस किये हुए सोने जैसे चमकीले और छायामें मखमल जैसे मुलायम मालूम होते थे। उन घने बालोंको संवारकर उसने शिरके पीछे गुच्छेको शक्लमें बांध लिया था।

विनोभियाको सिर्फ यह कहना, कि वह अच्छी बनी हुई थी, मानो उसपर अन्यान्य करना है। जैसा सुन्दर उसका मुख था, वैसेही उन्नत उसके कुच थे, और जैसे गोल उसके कन्धे थे, वैसी ही कमल-नालसी बाहें थीं। ऊपरके अङ्ग जैसे सुडोल और सुहावने थे, नीचेके अङ्ग भी वैसे ही सुन्दर और मनोहर थे। सारांश यह है, कि उसके सब अङ्ग साचेमें ढलेसे मालूम होते थे और वह ऐसी अपूर्व लावण्यमयी अनुपम सुन्दरी थी, जैसी, कि प्राय: हर वक्त और हर जगह देखनेमें नहीं आती।

ऐसी ही वह विनोभिया-ट्रिनोली थी, जिसकी खूबसूरतीके बारेमें मारक्विस लेवेसनके मकानमें खूब वाद विवाद होनेके बाद एक अनूठे ढङ्गका कौल-करार भी हो गया था।

हम अभी ऊपर कह आये हैं, कि वह अपने खूब सजे हुए खास कमरेमें बैठी हुई थी। उसका मकान, जो अकेशिया काटेज जैसे सुन्दर नामसे मशहूर था, बड़ी सफाई और रुचिके साथ सजा हुआ था। नाइट्स-ब्रिज महल्लेमें यह बहुत अच्छी जगह पर बना हुआ था। उसके पिछवाड़े लण्डनकी मशहूर सैर करनेकी जगह 'हाइड-पार्क' नामक रमना था। इस रमने और उसके मकानके बीच एक बहुत ही खूबसूरत छोटा सा बाग भी था।

विनोभियाके पास सुख-चैन और ऐश-आरामके सभी सामान मौजूद थे। मकान, बगीचे, नौकर चाकर और गाड़ी घोड़ेकी कभी

न थी। धन भी इतना था, कि जब जो इच्छा होती, तुरत ही पूर्ण हो जाती थी। ईश्वरकी कृपासे उसने रूप भी ऐसा अनुपम पाया था, कि अगर चाहती, तो अच्छे आलादर्जे और इज्जतदार घरानेकी बहू बन जाती। पर इन सब सामानोंके रहते हुए भी वह पूर्ण रूपसे सुखी नहीं थी।

कमरेमें बैठी हुई वह रह रहकर लम्बी सांस ले लेती थी और एक सर्द आह उसके मुँहसे निकल जाती थी, पर जब वह मन ही मन यह कहती, कि सुखके जो सामान चाहियें, सभी मेरे पास मौजूद हैं, तो मानो उसी वक्त कोई उसके मनमें यह भी कह देता, कि नहीं, अभी कुछ कसर है। कभी कभी उसके मुखपर शोकके बादल छा जाते। उस वक्त उसका चेहरा उदास हो जाता और वह निराश सी हो जाती थी। पर कुछ देरमें वह इस निरर्थक चिन्ताको कोशिश करके दूर कर देती और जब सामनेके आइनेमें अपनी मनमोहनी रूपच्छटा देखती और उसके फलको सोचती, तो मुस्करा देती। उस वक्त उसके मनसे शोक, दुःख भाग जाता और चेहरा फिर खिल उठता था।

पर बीच बीचमें क्षण भरके लिये उसके इस तरह दुःखित हो जानेका कारण क्या था? क्या उसने अपना कोई फर्ज़ अदा नहीं किया था अथवा कोई कुसूर कर डाला था,—क्या उसने अपने अमूल्य निर्दोषितारत्नको खो दिया था? अथवा उसको इस बातका डर था, कि उसका सती-धर्म्म, जो अब तक बचा हुआ है, लालचमें पड़कर कहीं बरबाद न हो जाय? क्या उसने कहीं ठोकर खाई थी? अथवा उसे किसी बातका डर लगा हुआ था? क्या उसे अपने प्यारोंके वियोगका अनुताप होता था? अथवा प्रेमकी आशा और भयसे वह घबरा उठती थी?

जो हो, इस समय हम उसके दुःखके रहस्यको भेद करनेमें

असमर्थ हैं, पर अफसोस यही है, कि उसकी खूबसूरती जैसी नायाब थी, उसके खयाल हमेशा वैसे ही खुश और चमकीले न होते थे। और यह भी दुःखकी बात है, कि वह चिन्ता, जिसकी एक भी सिकुडन उसके चिकने ललाटपर न पडी थी, इस तरह जकड कर उसके दिलमें बैठ गई थी, कि कभी कभी उसके मनको डांवाडोल कर देती थी।

पाठक! जिस समय आप अकेशिया-काटेजमें पहुंचे हैं, समझ लीजिये, कि उसके बाद तीन चार घण्टे बीत गये हैं और एक बजनेका समय है। विनोशियाने भी कपडे बदल डाले हैं। उसकी दाई जेसिका, जो एक धीर, गम्भीर, शान्त, चालाक और ईमानदार औरत थी, अपनी मालिकिनका शृङ्गार ऐसा मन लगाकर करती थी, कि उसकी शोभा दुगुनी बढ जाती थी। सुन्दरताकी और सुन्दर करनेके लिये नकली चीजों या हिकमत की जरूरत नहीं पडती, पोशाकसे ही खूबसूरती बढती और बिगडती है। इसलिये जेसिका जब देखती, कि उसकी चातुरी और परिश्रम सुफल हुआ है, तो वह बहुत ही खुश होती। इस समय भी अपने हाथकी सफाई देखकर वह फूले अङ्ग न समाती थी। जब सुबहके ढीलेढाले गाउनमें विनोशियाकी सुन्दरता लोगोंका मन मोह लेती थी, तो इस समयके शृङ्गार की कौन कहे? इस समयतो उसकी अनोखी रूपच्छटा जबर्दस्ती लोगोंके मनको अपनी ओर खींच लेती थी। उसके गोरे गोरे सुडौल बदन पर चुस्त पोशाक क्या ही भली मालूम होती थी!

इस तरह सज धजकर विनोशिया अपने खास कमरेसे बैठकखानेमें गई। इस समय वह मन्द मन्द मुस्करा रही थी, पर उसके चेहरेसे नटखटेपनकी कुछ झलक आती थी, जिससे मालूम होता था, कि वह कोई बिना खराबीकी बुराई करनेके लिये तय्यार है।

यह बैठकखाना मकानकी पहली मञ्जिलमें था और मकान

जितना लम्बा था, यह भी उतना ही लम्बा था। इसमें सड़ककी ओर भी खिड़कियां थीं और रमनेकी ओर भी। समय सुहावना और हवा गर्म रहनेके कारण इस समय बाग और रमनेकी तरफ वाली खिड़कियां खुली हुई थीं, उससे फूलोंकी भीनी भीनी सुगन्ध हवाके साथ अन्दर आकर दिमागको तर कर देती थी।

जेसिका मालिकिनके पीछे बैठकखानेके दरवाजे तक आई। विनीफ्रियाने झांकनेपर बैठकको खाली पाया, तो घूमकर दाईसे पूछा,—"मिसेस आरबुथनाट कहां हैं?"

इसपर जेसिकाने कहा,—"मुझे तो विश्वास होता है, कि वे ब्रेटन ष्ट्रीट गई हैं। क्या नीचे जाकर देखूं?"

"नहीं, कोई जरूरत नहीं है,—" इतना कहकर उसने बहुत धीरेसे कहा, कि इसवक्त उन्हें मेरे पास रहना चाहिये था।"

इसके बाद जेसिका चली गई और विनीफ्रियाने अन्दर जाकर दरवाजा बन्द कर लिया। मिसेस आरबुथनाटकी गैरहाजिरीकी बात सुनकर उसकी मुस्कराहट, जो कुछ देरके लिये भाग गई थी, फिर लौट आई। अब कद-आदम आइनेके पास जाकर उसने एकबार खुशीके साथ अपनी सुन्दरताको नखसे सिख तक देखा। इसके बाद उसने रङ्ग बदला। पहले तो उसने अभिमानपूर्ण क्रोध का भाव धारण किया, फिर मगरूर धमकीका और उसके बाद घृणा का। इन सब भावोंका उसने बड़ी खूबीके साथ निर्वाह किया। चूंकि ये भाव दिली नहीं थे, इसलिये सहसा उसने एक कहकहा मारा, जिससे कमरा गूंज उठा। इसके बाद सोफापर बैठकर उसने आप ही आप कहा,—"अहा। मैं नाटककी कैसी अच्छी एक्ट्रेस या पाती होती!"

यह आनन्द कम हो जानेपर वह उठी और रास्ते या नाइट्स-ब्रिजकी ओर वाली खिड़कियोंमेंसे एक एकके पास जाकर पर्देकी आड़में

इस तरह खड़ी हो गई, कि वह तो सबको देखे, पर खुद किसी-को न दिखाई दे। इस तरह वह वहां थोड़ी देरतक खड़ी रही। फिर वह उस जगहसे चली और कमरेके दूसरी ओर रमने-की तरफ जो खुली हुई खिड़कियां थीं, उनमेंसे एकके पास आकर खड़ी हो गई। उस जगह पहुंचकर वह कभी अड्डे पर बैठे हुए तोतेको दुलारती और कभी चहकती हुई कनरियोंको छेड़ने लगती।

उसी समय विनोग्रियाकी नजर एक ऐसे आदमीपर पड़ी, जो बागकी दीवारके पास खड़ा हुआ बड़े गौरसे उसकी ओर देख रहा था। उस शख्सको देखते ही उसका चेहरा सुर्ख हो गया, पर वह उस जगहसे हटी नहीं, बल्कि इस ढङ्गसे खड़ी रही मानो उसे नहीं देखती, तोते तथा और कनरियोंके साथ मन बहला रही है।

तो भी कभी कभी निगाह बचाकर वह उस शख्सकी ओर देख लेती थी। इस नजर छिपाकर देखनेसे उसे मालूम हुआ, कि वह कोई तीस वर्षकी उम्र और सांवले रंगका खासा लम्बा, और खूबसूरत जवान है।

वह भला आदमी, जो उसकी खूबसूरतीकी मन ही मन तारीफ कर रहा था, इस समय उसके इतना निकट पहुंच गया था, कि उसकी मोहिनी मूर्त्ति, चेहरेकी सुर्खी तिरछी चितवन और छिपकर देखनेको अच्छी तरह देख रहा था। पर विनोग्रिया इस बातसे बिल्कुल बेखबर थी, इसलिये वह खिड़कीके पास खड़ी चिड़ियोंके साथ खेलती रही। उधर खुली हुई खिड़कीसे भीतरका सुन्दर दृश्य देख देखकर वह नौजवान मन ही मन परम आनन्द अनुभव करने लगा।

पर आह! यह क्या हुआ! तोता न मालूम किस तरह उड़ गया और विनोग्रियाके मुंहसे ताज्जुबकी आवाज निकल गई। पर खैरियत यही हुई, कि तोता जाकर बागकी दीवारपर बैठ गया।

वह अभी बैठा ही था, कि उस भले आदमीने, जो रमनेमें खड़ा खड़ा विनीफ्रियाका स्वर्गीय रूप-रस पान कर रहा था, उछलकर चट उसे पकड़ लिया । तोतेको पकड़कर उसने खिड़कीकी ओर देखा, तो विनीफ्रियाने सलामकर उसके प्रति कृतज्ञता प्रगट की ।

अकेफ्रिया-काटेजके सदर-दरवाजेकी ओर जाता जाता वह भला आदमी सोचने लगा, कि अवश्य यह किसी देवताकी कृपा है, जिससे इस सुन्दरीसे मिलनेकी राह इस तरह आसानीसे साफ हो गई है, नहीं तो इससे मुलाकात होना बहुत कठिन था ।

उस भले आदमीके पहुंचनेके पहलेसे ही दरवाजा खोलकर एक बदसूरत बुड्ढा आदमी तोता लेनेके लिये खड़ा था, पर वह भला आदमी उस परिस्तानके दरवाजेसे ही, जिसकी शोभा उसने अबतक दूर हीसे देखी थी, लौट जानेवाला न था । अब उसे उसके अन्दर जानेका पूरा हक हो गया था, इसलिये उसने उस बुड्ढे नौकरसे कहा,—"बड़े भाग्यसे यह तोता मेरे हाथ आगया है, इसलिये कहो, तो मैं अपने हाथसे इसे इसकी खूबसूरत मालिकिनके पास पहुंचा देनेकी खुशी हासिल करूं ?"

बात मुनासिब समझकर बुड्ढा भी राजी हो गया और उस भले आदमीको बैठकखानेकी ओर ले चला । जाता जाता वह भला आदमी सोचने लगा,—"विनीफ्रिया बड़ी चालाक औरत है । बदनामीसे बचनेके लिये ही वह खूबसूरत जवान नौकर नहीं रखती ।"

इतनेमें सीढ़ी तयकर दोनों ऊपर पहुंच गये । अब नौकरने पूछा,—"क्या नाम कहूं ?"

इसपर उस भले आदमीने अपना नाम बता दिया । तब नौकरने दरवाजा खोलकर जोरसे कहा,—"अर्ल कार्जेन ।"

तीसरा परिच्छेद ।

सोमवार या पहला आशिक ।

विनोप्रिया जब तोता लेनेके लिये उस भले आदमी की ओर बढ़ी, तो उसका चेहरा कुछ सुर्ख हो गया और शरीर भी काँप उठा। पर सुर्खी तुरत ही उड़ गई और कँपकँपी किसीको देख न पड़ी। इस भाव परिवर्त्तनका कोई खास कारण न था। अपने प्यारे तोतेके फिर पाने और उसके ला देने वालेकी ओर कृतज्ञता दिखानेके कारण ऐसा होना स्वाभाविक था।

विनोप्रिया,—(तोतेको लेती हुई) "मैं नहीं जानती, कि आपको इस मेहर्बानीके लिये किन शब्दोंमें धन्यवाद दूं।"

कर्जन,—"इसके जरिये आपसे जो मिलनेकी खुशी और इज्जत हासिल हुई, यही बहुत है। इस छोटेसे कामके लिये जितना चाहिये, उससे कहीं ज्यादा इनाम मुझे मिल गया।"

तोता देनेके समय विनोप्रियाके मुलायम हाथमें जो अर्लका हाथ छू गया, तो उनकी नसें झनझना उठी और हृदयमें अपूर्व आनन्द छागया।

विनोप्रिया,—(अर्लके इस जवाबको बजहदारोंकी मामूली लियाकतदारी समझ उसका कुछ भी खयाल न कर) "इस नटखट तोतेने आपको बहुत तकलीफ दी है, और इसलिये मैं इससे सख्त नाराज हूं। (तोतेसे) अच्छा साहब। अब आप अपने पिंजरेमें तशरीफ ले जाइये। अब पिंजरेकी खिड़की मजबूतीसे बन्द करदी जायगी, जिसमें फिर कभी आपको एसा खानेका मौका न मिले।"

कर्जन,—"विनोप्रियाके साथ साथ तोतेके पिंजरेके पास आकर) "यह बहुत खूबसूरत तोता है। इसके उड़ जानेसे आपको बहुत अफसोस होता। क्या चिड़ियोंका आपको बहुत शौक है?"

विनोप्रिया,—"जी हां, और फूलोंका भी ।"

कर्जन,—(बड़ी मुलायमियतसे) "चिड़ियां आपके इस प्यारको कद्र नहीं समझ सकतीं, और फूलोंकी तो कोई बात ही नहीं, क्योंकि वे बेजान चीज हैं।"

विनोप्रिया,—(सिर उठा एक बार अर्ल कर्जनकी ओर और फिर पिंजरेकी ओर देखती हुई) "असल बात यह है, कि तोते नमकहराम होते हैं । उन लोगोंका उड़ जानेकी कोशिश करना ही हमलोगोंकी उन्हें पिंजरेमें कैद कर रखनेकी क्रूरताका पुरस्कार है।"

कर्जन,—"तो क्या आप चिड़ियोंके पालनेको क्रूरता समझती हैं?"

विनोप्रिया,—"बेशक । तो भी मैं उन्हें छोड़ नहीं सकती, क्योंकि, अगर मैं उन्हें छोड़ दूं, तो शायद वे ऐसे आदमियोंके हाथ पड़ जायं, जो उनका मुझ जैसा प्यार और पालन पोषण न कर सकें।"

कर्जन,—(शुभ अभिप्रायकी दृष्टिसे देखते हुए) "अबसे मैं आपके तोतेसे नफरत करूंगा।"

विनोप्रिया,—(ताज्जुबसे) नफरत कीजियेगा। किस लिये?"

कर्जन,—"उसकी नमकहरामीके लिये । क्या ही अच्छा होता, कि मैं तोता और इतने स्नेहकी चिन्ताका कारण होता—"

यह सुन मिस ह्रिलोनी ठठाकर हँस पड़ी, जिससे अर्ल वबरा उठे । इस तारीफको उन्होंने बहुत अच्छा और अपने प्यार जतानेका उम्दा जरिया समझा था, पर विनोप्रियाने उसे दिल्लगी समझकर हँसीमें उड़ा दिया, जिससे उन्हें इस बात का बहुत रंज हुआ। यद्यपि वे संसारी आदमी थे, तो भी इस बातसे शर्मा गये।

विनोप्रिया,—"यह बात तो बहुत ही अनोखी है।"

आनन्दसे विनोप्रियाके मुंहपर जो लाली छा गई थी, उसमें

उसका चेहरा दमक उठा और मानो हँसनेकी थकावटसे चूर होकर वह सोफा पर बैठ गई।

कर्जन,—(बनावटी मुस्कराहटके साथ) "इजाजत मिले तो मैं अपना मतलब साफ साफ समझा दूं।"

विनोप्रिया,—"आपने तो खूब ही साफ साफ कहा और तोता होनेकी इच्छा प्रकट की है——————"

कर्जन,—(यह समझकर, कि बात बहुत देरतक होगी इस-लिये कुर्सीपर बैठकर) "आपका तोता बननेकी, मिस ह्लिलोनी!"

विनोप्रिया,—(मुस्कराती हुई) "अच्छा, तो आपने मेरा तोता होनेकी ख्वाहिश जाहिर की है! पर अगर आप यह खयाल करते हों कि मैं ऐसी तारीफसे खुश हो सकती हूं तो आप अवश्य ही मुझे मगरूर, बेवकूफ और नादान समझते होंगे।"

कर्जन,—"मैं किसी तरह आपको नाराज करना नहीं चाहता। बल्कि मैं यह देखकर बहुत ही खुश हूं, कि आपमें ओछापन और लम्पटताकी बू तक नहीं पाई जाती। वास्तवमें यदि ऐसे उम्दा डिब्बेमें नकली हीरा देखा जाता, तो बहुत ही बुरा होता।"

विनोप्रिया,—(हँसती हुई) "यह दूसरी तारीफ हुई। पर जबतक आप सच्चे दिल से न कहेंगे, मैं कभी विश्वास न करूंगी।"

कर्जन,—(अत्यन्त आदर और भक्तिके साथ) "मैं बहुत ही सच्चे दिलसे कहता हूं, कि आप ऐसी स्त्री-रत्न हैं, कि जिसके लिये जीना स्वर्गीय सुख और मरना पुण्य है।"

विनोप्रिया,—(आश्चर्य और रुखाईकी निगाहसे देखकर) "पर महाशय। मैं नहीं चाहती, कि मेरे लिये कोई प्राणत्याग करे।"

कर्जन,—(ऐसी हरकतके साथ, मानो उसके पैरोंपर गिरना हो चाहते हों) "तो आप मुझे अपने लिये जीता रहनेकी इजाजत देती हैं?"

विनोग्रिया,—(सोफासे उठ और तनकर खड़ी हो) "महाशय ! मैं आपका मतलब नहीं समझी।"

कर्जन,—(खड़े होकर दिली जोशके साथ) "यदि आप जानती हैं, कि आप सुन्दर हैं और सुन्दरता चित्तको आकर्षण कर लेती है, तो यह कोई बात नहीं, कि आप मेरा मतलब न समझी हों।"

अब धीरेसे आँख उठाकर विनोग्रिया उस अभिमानपूर्ण क्रोध-की दृष्टिसे अर्ल कर्जनकी ओर देखने लगी, जिसका अभ्यास उसने कुछ देर पहले आइनेके सामने किया था। पर वह यह सोचकर कुछ न बोली, कि जबतक अर्लका मतलब साफ साफ न मालूम होजाय, तबतक जबानसे नाराजी जाहिर करना अच्छा नहीं।

कर्जन,—(हाथ जोड़कर मिन्नतके साथ) "मैं विनती करता हूं, मेरी बात सुन लीजिये।"

विनोग्रिया,—(सोफापर बैठकर गम्भीरता पूर्वक) "कहिये।"

कर्जन,—(मानो किसी अपराधके लिये क्षमा प्रार्थनाकी नाईं) "तो आप सब्रके साथ बीच हीमें बिना काट-छांट किये आदिसे अन्ततक मेरी बात सुननेकी प्रतिज्ञा करती हैं न ?"

विनोग्रिया,—"मैं किसी बातकी प्रतिज्ञा नहीं कर सकती ; अब मुझे मालूम होता है, कि यह कैसी असंगत, अविश्वसनीय और अनोखी बात है, कि जिन आदमियोंको किसी घटनावश पहले-पहल मिले अभी बीस मिनट भी पूरे नहीं हुए, उनमें इसतरहकी गम्भीर बातचीत हो।"

कर्जन,—"निस्सन्देह यह अनोखी बात है और मेरा चरित्र भी आपको बहुत अनोखा मालूम होता होगा, पर तो भी मैं फिर एक बार अपनी बात सुनाने और कैफियत देनेके लिये आपसे मिन्नत करता हूं।"

विनोग्रिया,—"मगर अभी एक काम करदेनेका आपका यह-

सान मेरे ऊपर न होता, तो मैं फौरन आपकी दरख्वास्त नामंजूर कर देती, पर आपका एहसान मेरे ऊपर हो चुका है इसलिये आपकी बात सुननी ही पड़ेगी।"

कर्ज़न,—(मलामतसे नाराज होकर) "अगर आपका ऐसा खयाल है, तो मैं दब और नीचा देखकर फौरन यहांसे चला जा सकता हूं, पर मुझे विश्वास है, कि आप ऐसी अनुदार नहीं हैं, कि बातका कुछ भी खयाल न कर मुझे कैफियत देनेका हुक्म न देंगी। एहसानकी क्या बात है मिस ड्रिलौनी ?"

विनोमिया,—(रूखी नम्रताके साथ) "आप जो शर्त्त करते हैं, उसपर मैं सुननेके लिये तय्यार हूं। जो कुछ कहना चाहते हों, कह डालिये।"

कर्ज़न,—(उत्साहित होकर) "इस कृपाके लिये सहस्र बार धन्यवाद! मिस ड्रिलौनी। आप ऐसा न खयाल करें, कि आज पहली ही बार मैंने आपका दर्शन किया है। जबसे आप इस राजधानीमें पधारी हैं———"

विनोमिया,—(ताज्जुबसे) "राजधानीमें पधारी हूं! यह क्या, महाशय। मैं तो इस लण्डन हीमें जन्मी और पली हूं।"

कर्ज़न,—"इसमें कोई शक नहीं, पर दुनिया कुछ ही हफ्तोंसे आपको जानती है ———"

विनोमिया,—(मनोमुग्धकर सरल स्वभावसे) "आप किस दुनियाकी बात कहते हैं ?"

कर्ज़न,—"वजहदार दुनियाकी मिस ड्रिलौनी। जिसमें आदमी शायद मामूली आदमियोंसे बिना मिले रह सकता है।"

विनोमिया,—(कुछ घृणा और व्यङ्गके साथ) "ओह! तो यह दुनिया खास आपकी रची हुई है ?"

कर्ज़न,—"खास मेरी रची हुई नहीं, मिस ड्रिलौनी! लेकिन दुनिया—मुख्तसर वजहदारोंका अखाड़ा———"

विनोप्रिया,—"एक अजीब दुनिया जिसका बयान करना बहुत मुश्किल है। चूंकि जिस कैदमें बचपन से सिखाई पढ़ाई गई थी, उस कैदसे निकल आई हूं और अपने बाप-माकी मौत होनेके सबब अपनी मालिकिन खुद होकर मशहूर रमनेके बगलमें आ बसी हूं तो क्या इससे मेरी जिन्दगीकी हालत ऐसी पलट गई है, जिससे कि मैं यह समझ लूं, कि मैं एक ऐसी दुनियामें आ पड़ी हूं, जिसे आप मुझे नई दुनिया कहकर विश्वास कराना चाहते हैं ?"

वार्जन,—"मिस ट्रिलौनी। मैं आपको यह समझाना चाहता था, आप अपनी सुन्दरता, वजहदारी, गुण, चरित्र और धनके कारण समाजके उस उत्तमांशमें रहनेयोग्य हैं, जिसमें हम लोग रहते हैं। और जबसे आप अपने योग्य समाज-मण्डलमें आगई हैं, तभीसे वजहदार दुनियाने आपको जाना है। जब पहलेपहल आप हम लोगोंमें दिखाई पड़ीं तभीसे मैं आपको चिन्ता किया करता-हूं। आपकी मोहिनी मूर्त्ति मेरे हृदयमें अङ्कित हो गई है। दिनके वक्त तो मैं आपकी बात सोचता ही रहता हूं, पर रातके वक्त भी आप होका स्वप्न देखता हूं। आपको अपनी गाड़ीपर जाते हुए देखनेकी लालसासे मैं घोड़ेपर सवार होकर इस रमनेका चक्कर लगाता रहा हूं। मैंने अपनी जान पहचानके सब आदमियों और दोस्तोंसे आपसे एक बार जान-पहचान करा देनेके लिये प्रार्थना की, पर कोई भी मेरी इच्छा पूर्ण न कर सका। हर एक आदमी आपकी तारीफ करता—दूरसे ही आपकी आराधना करता, और आपकी सुन्दरताकी बड़ाई करता, पर किसीको भी आपसे मिलनेका सौभाग्य नहीं प्राप्त हुआ था। लाचार निराश होकर मैं पागलसा हो गया और सिड़ी जैसा पांव पैदल टहलने लगा। आज भी इसी तरह रमनेसे जा रहा था, कि एकाएक खिड़कीके पास आपपर नजर पड़ गई। बस उसी जगह खड़ा होकर भक्तिपूर्ण दृष्टिसे आपको देखने लगा।

आपने मुझे देखा, कि नहीं, सो मैं नहीं जानता, पर आप खिड़कीके पास खड़ी रहीं—"

विनोप्रिया,—(अभिमान और रुखाईके साथ) "अगर मैं आपको देखती, तो उसी वक्त वहां से हट जाती। कैफियत देनेके बहाने आपने बहुत सी अटपटांग बातें कह डाली हैं, पर उनसे न तो आप हीका कोई काम निकल सकता है, न मेरा ही, इसलिये अब इस मुलाकातको यहीं खतम समझिये। इस बेअदबीके लिये मुझे माफ कीजियेगा।

इतना कह वह सुन्दरी घण्टा बजानेको रस्सीकी ओर बढ़ी।

कार्जन,—"नहीं, नहीं, मुझे अपने सामनेसे मत हटाइये। मेरी ऐसी बेइज्जती न कीजिये।"

विनोप्रिया,—(शान्ति पूर्वक) तो कृपाकर ऐसा काम कीजिये, जिसमें मुझे ऐसा काम न करना पड़े।"

कार्जन,—(अत्यन्त घबड़ाकर) "क्या आप और एक मिनट भी मेरी बात न सुनियेगा? (जवाबके लिये बिना ठहरे ही) आदमी हमेशा अपने मनको वशमें नहीं रख सकता। दोष देनेके बदले आपको मेरे ऊपर दया करनी चाहिये। जब शत्रु हार जाता है तब उदार विजेता उसके साथ दयासे व्यवहार करता है। अब आप समझ लीजिये, कि मैं आपकी खूबसूरतीकी चमक-दमकसे परास्त, अवाक हो गया हूं, ऐसी दशामें आप मुझे अपनी नजरसे बाहर न कीजिये?"

इतना कह लार्ड कार्जन उस अनुपम सुन्दरीके सामने बड़े विनीत भावसे घुटनोंके बल बैठ गये।

विनोप्रियाके खूबसूरत चेहरेपर विजयकी लालिमा छा गई, बिम्बाधरों पर अभिमानकी मुस्कराहट दिखाई दी और यही भाव रसीली आंखोंसे भी प्रकट हुआ, पर उस तुरत ही यह सब भामदूर

हो गये, तो अर्ल कार्जन इस सन्देहमें पड़ गये, कि विनोग्रियाका दिल सचमुचही पसीज उठा है, अथवा यह सिर्फ नखरा ही है।"

कार्जन,—(आन्तरिक भक्ति और पूर्ण आशासे विनोग्रियाकी ओर देखते हुए) "ऐ परी! मैं आपके पैरों पड़ता हूं।"

विनोग्रिया,—(आत्मसंयम् और शान्तिके साथ) "उठिये महाशय! आइये हम लोग इस बातका विचार बुद्धिमानीके साथ करें!"

अब क्षण ही भरमें हजारों खयाल अर्ल कार्जनके मनमें दौड़ गये। क्या सचमुच ही उसका दिल पसीज उठा है? क्या मेरे चेहरे, बात और चाल-चलनने उसके दिलपर असर पैदा कर दिया है? अथवा कुछ नखरा, क्रोध और पाखण्ड दिखानेके बाद उसका मन राजी होनेको ही था? क्या उसने यह समझा है, कि इस नाटकके रसका अंश बहुत दूर जा पहुंचा है? क्या यह कायदेके साथ मेरे ताबे रहनेकी शर्त्तोंको ठीक किया चाहती है? अथवा अचानक कमरेमें आकर कोई मुझे उसके सामने घुटनोंके बल बैठे देख न ले, इस डरसे उसने धोखा देकर मुझे उठा देनेके लिये चाल तो नहीं ही चली? या आत्मसमर्पणका मूल्य और मोहिनीशक्ति बढ़ानेके लिये ही तो कहीं यह सब नहीं करती? क्या यह सचमुच ही नेक-चलन और नेक-मिजाज औरत है?

यह सब खयाल पलक मारते ही कार्जनके मनमें दौड़ गये। उधर विनोग्रिया एक कुर्सीकी ओर चली, अर्ल कार्जन भी उसके पीछे पीछे उसकी मस्तानी चालको देखते और यह सोचते हुए चले, कि ऐसी सलोनी और मनमें कोमल भाव जगा देनेवाली रमणी क्या कभी प्रेमका आनन्द लूटने या उसके ढङ्गोंसे अनविज्ञ रह सकती है? बजहदार ऐय्याशों और धनियोंकी दुश्चरित्रताके बीचमें पले हुए अर्ल कार्जनके लिये नारी-धर्मके विषयमें ऊंचा खयाल न होना कोई आश्चर्यकी बात न थी। कामाग्निसे भड़के हुए दिल और

अभिमानके कारण उन्होंने यह समझा, कि मेरी ही तरह विनोप्रिया के दिलमें भी जोश उमड आया है।

कुर्सीपर बैठकर जब विनोप्रियाने कर्जनके ऊपर निगाह डाली, तो वे तीखी दृष्टिके साथ इस विचारसे उसकी ओर देखने लगे, कि देखूं इसके चरित्रमें छिपा हुआ ओछापन और इसके दिलमें दमनकी हुई मस्ती मौजूद है या नहीं। लेकिन उसने मानो उनका मतलब समझकर ऐसे अभिमान और घृणाकी दृष्टिसे उनकी ओर देखा जैसे, कि वह अभी कुछ ही देर पहले देख चुकी थी और जिसका अभ्यास उनके आनेके जरा देर पहले वह आइनेके सामने खडी होकर कर चुकी थी।"

विनोप्रिया,—(अपनेसे कुछ दूर रखी हुई एक कुर्सीकी ओर रानियों जैसे अभिमानके साथ इशारा करती हुई) "बैठ जाइये, महाशय।"

कर्जन,—(बैठकर) "आप इस वक्त मिसाल जजके हैं और अभी मेरे भाग्यका फैसला कर दगी। पर मैं आपसे उस आदमीपर रहम करनेके लिये मिन्नत करता हूं, जिसके मनको आपकी स्वर्गीय सुन्दरताने मुग्ध कर कैद कर लिया है, और जो आपके फैसलेसे या तो स्वर्ग-सुख भोगनेका आनन्द प्राप्त करेगा अथवा निराशा-रूपी घोर नरकमें जा पडेगा।"

विनोप्रिया,—(रुखाई और गम्भीरताके साथ) "बस खामोश। आप बेफायदे बहुतसी फजूल बातें और वाहियात तारीफें कर चुके हैं। वजहदार आदमियों और ऐय्याश औरतोंकी भाई में आपको जवाब देना पसन्द नहीं करती।"

कर्जन,—"आप जिस तरह सच्चे दिलसे बात करना चाहती हैं, कीजिये, मुझे कोई उज्र नहीं है, क्योंकि जब सच्चे दिलसे प्रेमकी बात छेडी जाती है, तब वजहदार प्रेमीके लिये अनुकूल आशा बनी रहती है।"

विनोग्रिया,—(शान्तिपूर्वक) "तो अब आप सच्चे दिलसे और कसम खाकर मुझे प्यार करनेकी बात स्वीकार करते हैं ?"

कर्जन,—(दाहिने हाथको छातीपर रख मानो फिर विनोग्रिया-के पैरोंपर गिरनेका भाव दिखाते हुए) "ईश्वरकी सौगन्ध, मैं आपको बेहद प्यार करता हूं।"

विनोग्रिया,—"मैं आपके उत्तरको गम्भीर-स्वीकार मानती हूं।"

इतना कहकर विनोग्रियाने ऐसे रोबके साथ कर्जनकी ओर देखा कि उन्हें अपनी जगहसे उठने तकका साहस न हुआ। फिर उसने अपनेको सम्हालकर कहा,—"मैं समझती हूं, कि दरवाजेपर मेरे नौकरको तोता न देकर आप मेरे पास विवाहका प्रस्ताव करनेकी इच्छासे ही अन्दर चले आये हैं।"

कर्जन,—(चौंककर) "विवाह।"

विनोग्रिया,—"हां, निश्चय ही विवाह। क्या आपने अभी स्वयं ही विवाहका प्रस्ताव नहीं किया ?"

कर्जन,—(घबराकर) "विवाह। सचमुच ही हम लोगोंकी समझमें भूल है, मेरी प्यारी विनोग्रिया। मुझे क्यों इस तरह निर्दयतासे तरसाती हो ? क्यों इतना सताती हो———"

इतना सुनतेही विनोग्रिया धीरेसे उठकर खड़ी हो गई। उसके मुखपर क्रोधके चिन्ह देखकर कर्जन चुप हो गये।

विनोग्रिया,—"अभी आपने जो मुझे प्यार करनेकी बात स्वीकार की है, उसके क्या मानी हैं, सच सच बताइये ?"

कर्जन,—(कुछ भय और कुछ आशाके साथ) "क्या यह सम्भव है, कि आपने मेरा मतलब नहीं समझा ?"

विनोग्रिया,—(गम्भीरतापूर्वक) "जब कोई माननीय पुरुष किसी निष्कलङ्क सचरित्राकुमारीको जी-जानसे प्यार करनेकी बात कहता है, तो फिर क्या उसकी बातका मतलब समझनेमें कभी भूल होसकती है ?"

कर्जन,—"आह! आप उस जञ्जालका जिक्र क्यों करती हैं, जिसे लोग विवाह कहते हैं ? क्यों————"

विनोप्रिया,—(अभिमान सहित) "ठहरिये,—आपने मुझसे विवाह करनेकी इच्छा प्रकट की है?—सिर्फ 'हां' या 'नहीं' जवाब दीजिये ? बहाना किनारे कीजिये—छल छोड़िये और एक शब्दमें उत्तर दीजिये ।"

कर्जन,—"विवाह! मेरी प्यारी विनोप्रिया—"

विनोप्रिया,—"जवाब दीजिये—हां या नहीं।"

कर्जन,—"मैं समझाये देता हूं——"

विनोप्रिया,—"मैं कहती हूं, कहिये—हां या नहीं ?"

कर्जन,—"विनोप्रिया! आपको तो मालूम ही होगा, कि मेरी शादी कभीकी हो चुकी है, पर हाय! एक ऐसी औरतके साथ जिसे मैं प्यार नहीं करता, लेकिन मैं आपकी आराधना—आपकी पूजा करता हूं, आह! मेरे ऊपर नाराज न होइये———"

विनोप्रिया,—(क्रोध और घृणाके साथ) "बस महाशय! बहुत हो चुका। मैं तो पहले ही जानती थी, कि आपका विवाह हो चुका है, पर आपकी गुस्ताखी छैलछबीलोंको ढिठाईको भी मात कर रही थी, इसलिये मैंने यह सोचा, कि आपको उचित शिक्षा दे देनी चाहिये, शायद वह आपके लिये हितकारिणी हो उठे। बस अब आप यहांसे तशरीफ ले जाइये, नहीं तो नौकरोंसे निकलवा दूंगी।"

यह सुनते ही क्रोध, घृणा और निराशासे अर्ल कर्जनका मुंह लाल हो गया, पर तो भी इस खामखयालीसे, कि कहीं यह हंसी तो नहीं करती, उन्होंने पूछा,—"क्या आप यह बात सच्चे दिलसे कहती हैं ?"

विनोप्रिया,—(दरवाजेकी ओर हाथ उठाकर) "बस अब फौरन

चले जाइये, ज्यादा बकवाद करनेकी कोई जरूरत नहीं।"

कर्जन,—(पैशाचिक द्रोहके साथ) "तो तुम पछताओगी विनी-थ्रिया। मैंने तुम्हें अपने वशमें लानेके लिये सौगन्द खाई है और चाहे जिस तरह हो, अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करूंगा। तुम कितनी ही होशियारीसे क्यों न रहो, पर एक न एक दिन मैं अपनी इच्छा अवश्य ही पूर्ण कर लूंगा।"

अर्ल कर्जन इतना बके-भके, पर विनीथ्रियाने उनकी धमकीका कुछ भी खयाल न किया। वह ऐसी शान्त और गम्भीर बनी रही, मानो उनकी धमकीकी कुछ भी परवाह न कर उनसे कहती हो, कि जाइये, आपसे जो बने कर लीजियेगा।

कर्जन,—(आगबबूला होकर) "परमेश्वरकी सौगन्द, अभि-मानिनी। तुम्हारा दर्प चूर्ण कर दिया जायगा।"

इस तरह डरा-धमकाकर अर्ल कर्जन जलते-भुनते वहाँसे चल पड़े।

उधर विनीथ्रियाने सदर दरवाजा खोल देनेके लिये घण्टा बजा-कर नौकरको बुलाया। घण्टेकी आवाज सुनते ही कर्जनने विचारा, कि इस तरह डरपोकोंकी भांति उतावलीके साथ किसी रमणीके यहाँसे जाना अच्छा नहीं। कोई नौकर देख लेगा, तो उसके मनमें सन्देह हो जायगा, इसलिये उन्होंने अपनी चाल ढीली कर दी और क्रोधको दबाकर चुपचाप अकेशिया-काटेजसे निकल गये।

अर्ल कर्जनके जानेबाद जब सदर-दरवाजेके बन्द होनेकी आवाज विनीथ्रियाके कानमें पड़ी, तो वह अपने मनको रोक न सकी। चट सोफापर लेटकर उसने ऐसा कहकहा मारा, कि कमरा गूंज उठा।

चौथा परिच्छेद।

कप्तान टेश और उसका आदमी राबिन।

इधर अर्ल कर्जन अकेशिया-काटेजसे निकले और उधर सामनेवाले शराबखानेसे एक दूसरी ही शक्लका आदमी बाहर आ खड़ा हुआ।

उसकी उम्र लगभग चालीस वर्षकी थी। वह मझोले कद और हट्टे-कट्टे गठीले बदनका आदमी था। उसके बाल काले, मूछें बड़ी और गलपट्टे घने थे तथा ठोढ़ीके नीचे जाकर आपसमें मिल गये थे। भौहें बड़ी, चौड़ी और घनी थीं। आँखें छोटी, काली और खूंखार मालूम होती थीं। बहुत शराब पीनेकी वजह उसका चेहरा बेतरह लाल हो गया था।

उसके कपड़े गरीब अमीराओं जैसे थे। वह नीले रंगका फ्राक-कोट पहने था, जिसका कालर काटेके सहारे खड़ा था। उसका पायजामा हलके भूरे रंगका था और बूटोंपर पट्टोंसे कसकर बांधा हुआ था। घोड़ेको एड़ मारनेके लिये, उसके बूटोंपर फौलादके दोहरे कांटे लगे हुए थे। उसकी टोपी लम्बी थी, जो चांदपर जाकर खूब फैल गई थी। उसके किनारे बड़े और उलटे हुए थे, तथा आगे और पीछेकी ओर वह टोपी खूब लटकी हुई थी। हरिनके चमड़ेका दस्ताना उसके हाथमें पड़ा था। दाहिने हाथमें एक छड़ी थी, जिसके सिरेपर सीसेका बड़ासा लट्टू लगा हुआ था।

उसके कपड़े मैले और जगह जगहसे फटे हुए थे, पर वह उन्हें नयेकी भांति बड़े आनन्दसे पहना करता था। शायद वह यह समझता था, कि असभ्य चाल-चलन, भूख तर धनने और घमण्डी

चेहरेसे कपडोंका ऐब छिप जायगा और लोग समझेंगे, कि कपड़े मैले हैं तो क्या हुआ, यह कोई अच्छा आदमी मालूम होता है। वह और और झगडालुओंकी तरह डरपोक न था, पर अपने बचने का उपाय करके तब किसीके साथ झगडा करता था। जवानीमें वह किसी फौजका छोटा अफसर था और अपने दुस्साहसके कामोंसे उसने कुछ नाम भी पैदा कर लिया था, पर जूए और फजूलखर्ची की बुरी आदतें लगी रहनेके कारण उसे एक बार ठगनेका इल्जाम लग गया था, इसीसे लाचार होकर उसे नौकरी छोडनी पडी थी। फौजसे अलग हो वह शहरमें आकर रहने लगा, पर अपना आधा जङ्गी-ढङ्ग बनाये हुआ था। वह अपनेको कप्तान कहता और अपनी बुद्धिके बलसे जीविका उपार्जन कर लेता था। वह वेष्ट एण्ड मुहल्लेके घण्टाघरों, तथा दिन और रात खुले रहने वाले शराबखानोंमें जाता और वहां कच्चे नौजवान रईसों तथा लम्पट बड़े आदमियोंसे मुला-कात पैदा कर लेता था। नौजवानोंको तो वेमुरव्वतीके साथ फांस लेता पर बड़े आदमियोंसे दोस्तीका दावा करता था। अगर वे लोग हिम्मत करके उसे दुतकार देते, तो वह उनसे लड़ बैठता था और अगर उससे आंख बचा-कर चले जाते, तो किसी न किसी तरह उन्हें दिक करता था। इससे अगर उन लोगोंसे किसी आम जगहमें उसकी भेंट हो जाती, तो लाचार होकर उन लोगोंको उसे सलाम करना पड़ता था। इस तरह कितने ही बड़े आदमियोंसे वह दोस्ती रखनेका घमण्ड किया करता था।

वह अपने दोस्तोंसे कुछ न कुछ एंठ लिया करता था, पर प्रायः थोड़ा ही मांगता था और कभी कभी तो इतना कम मांगता था, कि लोग खुशीसे दे देते थे। मसलन, किसीसे दुअन्नी, किसीसे चवन्नी, किसीसे अठन्नी और किसीसे रुपये का सवाल करता था। इसी तरह मांग जांच कर वह किसी तरह अपनी गुजर करता,

पर जब कभी बहुत तङ्ग हो जाता, तो उसकी मारी अक्ल गुम हो जाती थी।

उसका नाम कप्तान रोलैण्डो टैश था। लण्डन और उसके आस-पासके शराबखानों, कसबीखानों, जुआघरों, हाजत, अड्डे और आम जगहोंमें उसका नाम मशहूर था। किंग्सबेञ्च और फ्लीट जेलखानोंमें भी उसकी कीर्त्ति छाई हुई थी शराब पीकर सड़क पर गोल-माल मचानेके लिये राजधानीके कितने ही मजिष्ट्रेटोंने उस पर कई बार जुर्माना किया और शान्तिभङ्ग करनेके लिये मुचलका लिया था। वेष्ट एण्डके मकानोंके दरवाजोंकी ऐसी अच्छी एक भी मुंगरी न थी, जिसे उसने सब या थोड़ा-बहुत न नोच लिया हो, ऐसा एक भी जर्राह न था, जिसका घण्टा उसने शराबके नशेमें खूब जोरसे न बजा दिया हो और ऐसा एक भी हज्जाम न था, जिसका साइनबोर्ड उठाकर उसने दूसरी जगह न धर दिया हो। इसके अलावा सड़कों, गलियोंका ऐसा एक भी पहरेदार न था, जिसका सिर उसने कमसे कम एक बार न तोड़ दिया हो।

ऐसा ही वह आदमी था, जो नाइट्सब्रिज-रोड परके शराबखानेसे उसी समय निकला था, जिस समय लार्ड कर्जन अकेशिया-काटेजसे बाहर आये थे। इस वक्त कप्तान अकेला न था। अगर सच पूछिये तो वह अकेला कभी रहता ही न था। यानी हमेशा उसके साथ एक आदमी रहता था, जो उसके पीछे पीछे कुछ दूर पर चलता था। वह आदमी कप्तानके सुख-दुःख और हार-जीतका पक्का साथी था। किसी हालतमें वह कप्तानका साथ न छोड़ता था। जो कोई कप्तान टैशको झूमते हुए जाते देखता, तो वह यही समझता, कि उसका आदमी राबिन भी जरूर ही उसके पीछे होगा। इन दोनोंके चाल चलन रूप-रङ्ग और आचार-व्यवहारमें बहुत भेद था। कप्तान सड़कपर इस तरह झमता हुआ चलता था, मानो उसके चलनेके लिये

वह बहुत छोटी हो। वह चाहता था, कि सब आदमी उसे सलाम करें और उसको राह छोड़दें। पर राबिन किनारे किनारे अथवा बिल्ली की तरह छिपकर दीवारसे सटा हुआ चलता था। उसके पैर जमीनपर जमकर न पड़ते थे। वह लजीला, दब्बू, पाजी और कादर होनेपर भी खूब चुस्त चालाक था। मौका हाथ लग जायपर वह उससे बिना फायदा उठाये कभी रहता ही न था। और जब वह लापरवाहीसे ताकता था, तो यही मालूम होता था, कि किसी न किसी बातके गौरमें लगा हुआ है, काम करनेमें भी वह बड़ा फुर्तीला था। जिस कामको उसका मालिक सोचता, विचारता, उसे वह फौरन कर डालता था। राबिन सांपकी तरह चुपचाप डस लेता था, पर उसका मालिक सांढकी तरह कोई बुराई करनेके पहले ही गर्ज कर सबको होशियार कर देता था।

राबिनकी उम्र प्रायः मालिक की उम्रके बराबर ही थी। जिस समयकी बात हम लिख रहे हैं, उस समय राबिनको कप्तानके यहां नौकर हुए बारह वर्ष बीत चुके थे। उसे वह खूब मानता था। यद्यपि वे दोनों समयके अनुसार मालिक और नौकरकी हैसियतमें न रहकर दोस्तकी तरह रहते थे, तो भी राबिन कप्तानकी बहुत कद्र और इज्जत करता था। उधर कप्तान भी कभी उसपर नाराज न होता था, वरन् स्वभावके अनुसार उसके साथ बहुत अच्छा व्यवहार करता था। अगर कोई राबिनको चिढाता, तो कप्तान उसपर बहुत नाराज होता। राबिन अपनी जान खो देनेपर तय्यार हो जाता, पर मालिकके साथ कभी दगा न करता। अपने सगे भाईको वह खुशीसे सूलीपर चढवा देनेके लिये तय्यार हो जाता, फायदा देखता तो परियोंका पर भी नोच लेता, पर मालिकका कभी बाल भी बांका न होने देता था।

उस आदमीका चरित्र ही ऐसा अनोखा था। उसका असल नाम राबर्ट श्रेक्स था, पर वह राबिनके नामसे ही प्रसिद्ध था।

मकेग्रिया-काटेजसे निकलकर अर्ल-कर्जन घर या और कहीं जानेकी इच्छासे सड़कपर गाडीकी तलाश कर ही रहे थे, कि अकस्मात् कप्तान टैशने उन्हें आ टोका।

कप्तान,—(छडीसे अच्छी सलाम कर) "कैसी तबीयत है, महाशय आप कुछ दुःखित मालूम होते हैं——"

कर्जन,—(जल्दीसे) "जरा भी नहीं। अच्छा, सलाम कप्तान। मैं बडी जल्दीमें हूं।"

इतना कहकर कर्जनने वेष्टएण्डकी ओर पैर बढ़ाया।

कप्तान,—(कर्जनके पास पहुंच और उनका हाथ पकड़कर) "पर आप——"

कर्जन—(अधीरतासे) "क्यों, क्या है? मैंने कहा न, कि मैं जल्दीमें हूं——"

कप्तान,—"मैं एक क्षण भी आपको न रोकूंगा। (धीरेसे) सामने कोनेपर एक खटकिनकी दुकान है। कुछ बदमाश लडकोंने उसकी चीजें फेंक दी हैं। वह जार बेजार रो रही है। उसका दुःख देखकर मेरा दिल पसीज उठा है, पर अफसोसकी बात है, कि एक आदमीके साथ खाना खानेके लिये मैं इतना जल्द घरसे चला आया कि मनीबेग वहीं छूट गया। मैं सच कहता हूं, महाशय——"

कर्जन,—(क्रोधपूर्ण अधीरताके साथ) "तो तुम कुछ चाहते हो,—क्यों?"

कप्तान,—"बस एक पूरी अधेली, न उससे कम न ज्यादा। इतनेसे मैं उस इटालियन खिलौनेवाले लडकेको खुश कर दूंगा।"

कर्जन,—(कप्तानकी दुरङ्गी बातपर मुस्कराकर) "अभी तो तुमने खटकिन कहा था न?"

बातें मान लेगा। न तो वह झगड़ा-फसाद मचाकर इस बातको जाहिर करेगा और न पुलिसको ही हम लोगोंके पीछे लगावेगा, क्योंकि अगर वह ऐसा करेगा, तो उसे सब बातें खोलकर कहनी पड़ेंगी, मसलन छिपकर मिसेस उवेन और उसकी लड़कियोंसे मिलने आना वगैरह वगैरह। पर लड़कियोंके निर्मल चरित्रमें धब्बा लगनेके डरसे वह ऐसा कभी न कर सकेगा, मगर मार-क्विसकी बात जुदा है। वह बुड्ढा है। उसका मिसेस उवेनके यहां आना कोई अनोखी बात नहीं है। बिना लड़कियोंका नाम बदनाम किये ही वह आसानीसे पुलिसमें इत्तिला कर सकता है। समझते हो न?"

नौकर,—"पर मैं अभी तुम्हारी जवान बन्द किये देता हूं। तुम खुद कबूल करते हो, कि प्रिन्स चूं भी न करेगा। ऐसी हालतमें वह मारक्विसको भी चुप रहनेकी सलाह देगा, क्योंकि अगर मारक्विस इत्तिला करेगा, तो उसे यह कहना ही पड़ेगा, कि वह प्रिन्सके साथ आया था। क्यों, आया समझके बीचमें?"

बदमाश,—"मानता हूं, कि तुम्हारी बात ठीक है। तब मैं भी तय्यार हूं और काम भी हो जायगा। शायद वे लोग आधीरातको यहांसे निकलेंगे?"

नौकर,—"गाड़ीको तो बारह बजे लानेका हुक्म दे दिया गया है। खाना दस बजे शुरू होगा। पर इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वे लोग बारहके बाद रवाना हो जायगे।"

बदमाश,—(सौगन्ध खाकर) अच्छी बात है। देखो सूर्य्योदय होनेके पहले कैसा मजा होता है।"

नौकर,—"आशा तो ऐसी ही है। अच्छा अब मैं जाता हूं। शायद मेरी खोज होती होगी। सलाम डेनल। भगवान् तुम्हारा मनोरथपूर्ण करें।"



मगेया, एम्मा, जूलिया और मेरीके साथ प्रिंसका
आँखमिचौनी खेलना।

(पाँचवाँ खण्ड—पाँचवाँ परिच्छेद।)

Burman Press, Calcutta

बदमाश,—"अच्छा सलाम।"

इस तरह बातचीत करनेके बाद दोनो जुदा हुए। नौकर छिपकर पीछेवाले दरवाजेसे मकानके अन्दर घुसा और बदमाश झपटकर पासके मैदानमें चला गया।

इस अर्से में प्रिन्स और मारक्विस बैठकखानेमें मिसेस उवेनकी लडकियोंके पास जा पहुंचे। उन लोगोंके पहुचते ही दिल खुश करनेवाली बातचीत शुरू होगई।

प्रिन्स सोफापर अगेथा और एम्माके बीचमें बैठगये और मारक्विस जूलिया तथा मेरीसे घुलघुलकर बातें करने लगे। मिसेस उवेन अबतक वहा नही आई थी और उसकी गैरहाजिरीका किसीने कुछ खयाल भी नहीं किया।

प्रिन्स,—"मै समझता हूं कि, इधर तुम लोगोंका समय बडे आनन्दसे बीता है। अपने मकानमें बाल-नाच और दावत—दूसरी जगह नाच और चाय—रमनेमें जियाफत—और नदीकी सैर———"

अगेथा,—(मुस्कुराकर) "ओह! बडे ही आनन्दसे, मगर सच पूछिये, तो आपके बिना सब सूना मालूम होता था।"

प्रिन्स,—(उसके गलेमें हाथ डाल तथा गुलाबी गालों और अरुण अधरोंको चूमकर) "झूठी कही की। मुझे नहीं विश्वास होता, कि तुम सच बोल रही हो।"

एम्मा,—"मैं अगेथाकी बातकी पुष्ट करती हूं।"

एम्माके इतना कहते ही प्रिन्सने उसे पकडनेके लिये हाथ बढाया, पर वह उछलकर भाग गई और ऐसा खिलखिलाकर हँसी, कि कमरा गूंज उठा।

प्रिन्स उठकर उसे पकडने दौडे। वह देख एम्मा भागने लगी। कभी तो वह टेबिलका चक्कर लगाती और कभी कमरेके इस छोरसे उस छोरको और भाग जाती, इस तरह कुछ देरतक प्रिन्सको हैरान

करनेके बाद वह थककर एक कोनेमें खड़ी होगई और लाचार प्रिन्स को अधरामृत पान करनेका मौका दे दिया।

उधर मारक्विस लेवेसनने जूलियाको लाड़प्यार करना शुरू ही किया था, कि इसी समय उसने अपनी जगहसे उठकर हँसते हँसते कहा,—"अहा! इसवक्त आँखमिचौली हो तो बड़ा मजा आवे।"

इसपर मारक्विसके हाथसे निकलकर मेरीने कहा,—"कि प्रिन्सकी आँख मूंदो।" इसके बाद वह दौड़कर प्रिन्सके पास गई और उनके दोनों हाथ पकड़कर बोली,—"आप खेलियेगा तो?"

प्रिन्स,—"खुशीसे, पर पहले—"

इतना कहकर प्रिन्सने उसे पकड़ लिया और उसकी तीनों बहिनों की नाईं उसका भी अधरामृत पान करने लगे।

मेरी,—(मुस्कराती हुई प्रिन्सके हाथोंसे अपनेको छुड़ा और घुंघराले बालोंको सवारकर) "अच्छा, अब तो खुश होगये न? अब आइये चुपचाप आँखोंपर पट्टी बंधवा लीजिये।"

"अच्छा",—कहकर प्रिन्स कुर्सीपर बैठगये। जूलिया उनकी आँख पर पट्टी बांधने लगी। जब-जब उसका हाथ उनके चेहरेपर लग जाता, तभी तब वे आनन्दके साथ उसे चूम लेते थे।

"अच्छा, अब शुरू कीजिये" इतना कह थपोड़ी बजाकर वह भाग गई। चारों बहिनोंकी आनन्दकी हँसीसे कमरा गूंज उठा।

'मेरे सिरमें कुछ दर्द मालूम होता है, जरा हवा खालूं।" इतना कहकर मारक्विस वहांसे चले गये। बाहर जाकर नौकरसे पूछनेपर मालूम हुआ, कि मिसेस ओवेन खास दाईके कमरेमें हैं, इससे वे सीधे उसीके पास पहुंचे। उनके लिये कोई रोक-टोक न थी। उन्हें देखते ही मिसेस ओवेनने बड़ी खुशीसे उनका सादर-सत्कार किया।

मारक्विसको मिसेस ओवेनके पास छोड़कर हम फिर बैठकखानेमें

चलते हैं, जहां मजेमें आंखमिचौलीका खेल होरहा था। नौजवान स्कूली लौंडोंकी तरह प्रिंस बड़ी खुशीके साथ उन चञ्चल छोकरियोंके साथ खेलरहे थे। असल बात यह थी, कि जब कोई छोकरी उनके हाथ पड़ जाती, तो खेलका मजा बनाये रखनेके लिये वे उसे जान बूझकर छोड़ देते, पर छोड़नेके पहले उसका अधर-रस पान कर लेते थे।

सचमुच ही बड़ा मजा होरहा था। प्रिन्स भी बहुत ही खुश थे। कहीं कोई टेबिल न उलट जाय, कोई गमला न लुढ़क पड़े या चीन-का कोई बरतन न टूटजाय, इस खयाल से प्रिन्स सम्हल-सम्हलकर छोकरियोंको खोजते फिरते थे और उधर छोकरिया भी हँसती हुई चारों ओर उछलती फिरती थीं। कभी कोई उछलकर सोफापर चढ़ जाती थी और कोई कुर्सीपर। इस तरह खोजते-खोजते प्रिन्स कभी किसी छोकरीको पकड़कर उसका कुच स्पर्श कर लेते थे, कभी किसी-के गालोंको चूमकर लबोंका मजा चख लेते थे और कभी किसीकी बर्रैं जैसी पतली कमरको पकड़कर छातीसे लगा लेते थे। उधर चञ्चल छोकरियां भी छल-बलकर उनके हाथसे निकल जाती थीं। इसी तरह खेल आनन्दसे होरहा था।

आखिर दौड़ते दौड़ते प्रिन्स जब बहुत थकगये तो, तो उन्होंने पट्टीको नोचकर फेंक दिया और सोफापर बैठकर हँसने लगे। उधर चारों लड़कियां भी बैठकर हँसने लगीं। इसके बाद उन लोगोंने अपने बाल और कपड़े सम्हाल लिये।

पर अभी जो कुछ हुआ था, क्या वह चारों बहिनोंका निर्दोष खेल ही था? और क्या जो कुछ ज्यादती उनके साथ कीगई थी, उसमें कोई बुराई न थी? इस बारेमें पाठकोंकी तरह हमारी अक्ल भी हैरान है। कुछ भी समझमें नहीं आता, तो भी हमें यह कबूल करना ही पड़ता है, कि चाहे उन लड़कियोंके दिलमें कोई बुराई न

थी, तो भी प्रिन्सने उनके साथ जैसी छेड़छाड़ की थी और जिस तरह लाड़ प्यार किया था, उससे उन सबके मनमें कामाग्नि भड़क उठी थी और उसका पक्का प्रमाण उनकी मस्त आँखोंसे भलीभांति मिल रहा था।

बाल और कपड़े सम्हालनेके बाद लड़कियोंने यह खयाल किया, कि खानेका वक्त भी होगया होगा। यह खयालकर उन लोगोंने घड़ीकी ओर नजर उठाई ही थी, कि इसी समय नौकरने आकर खबर दी,—"खाना तय्यार है।" यह सुनकर प्रिन्स अपनी खूबसूरत सङ्गिनोंके साथ उठे और उस कमरेमें चले गये जहां भोजनकी अच्छी अच्छी लजीज चीजें चुनी गई थीं और मारकिस तथा मिसेस उवेन बैठी हुई उनकी राह देख रही थी।

मकानकी मालिकिन और प्रिन्स पुराने दोस्तकी तरह बड़ी मुहब्बतसे मिले। यहां और बैठकखानेकी कार्रवाई देखकर साफ मालूम होता था, कि प्रिन्स जब मिसेस उवेन और उसकी लड़कियोंसे मिलने आते थे, तो अपने शाही दर्जेका कुछ भी खयाल न रखते थे। बड़ी बेतकल्लुफीके साथ बैठकर उन्होंने सबके साथ खाना खाया और अपनायत दिखायी। उस समय उन्होंने न तो वेफायदेकी कोई बात ही की और न कोई काम ही।

इसवक्त सिर्फ हंसी-दिल्लगी और आनन्द-आमोद होरहा था। शम्पेन शराब दमपर दम उड़ रही थी।



छठवां परिच्छेद।

बदमाशोंका दल।

रातके ठीक बारह बजे प्रिन्सकी गाडी मिसेस उवेनके मकानके सामने श्रा लगी। प्रिन्स भी चटपट आकर गाडीमें बैठगये। उनके बाद मारकिस लेवेसन भी आबैठे। पावदान उठाकर दरवाजा बन्द करदिया गया, नोकर कोचवानके बगलमें जा बैठा और गाडी घड़घडाकर तेजीके साथ किसकी श्रोर चल पडी।

रात अँधेरी थी। आस्मानमें बादल छाये हुए थे। हवा खूब तेजीके साथ चलरही थी, इसीसे पानी नहीं बरसने पाता था। गाडीकी लालटेनोंकी रोशनीसे सडक साफ दिखाई देरही थी। घोडे मजेमें तेजीके साथ जारहे थे। गाडीके अन्दर प्रिन्स और मारकिस मिसेस उवेनके यहांकी दावत-सम्बन्धी बातचीत कर रहे थे। बात ही बातमें विनोभिया-ड्रिलीनोका जिक्र आगया, जिसके बारेमें अभी कुछ ही दिन हुए मारकिसके मकानमें छ मित्रोंने एक अनूठा कोल करार किया था। प्रिन्स कहही रहे थे, कि देखें अर्ल कार्जनने क्या किया, कि इसी समय सडकके पासवाली सुन्सान झाडियोंके बीचसे कुछ आदमियोंके दौड आनेकी आहट पाकर वे और मारकिस दोनों चौंक उठे।

प्रिन्स,—(अपनी ओर की खिडकी गिराकर) "सर्वनाश!"

इतना सुनते ही मारकिसने भी अपनी ओरकी खिडकी गिरा दी। अभी वे सिर निकालकर यह भी देखने न पाये थे, कि माजरा क्या है, कि इसी समय गाडी एकादम खडी होगई और घोडे उछलने लगे। इतने होमें एक आदमीने गर्जकर कहा,—"घोडोंको जोत फौरन काट दो।" इसके बादही कोचबक्सपर लडाई-दङ्गा होने लगा और

छुटे काटे दो नकाबपोश दोनों खिड़कियोंके पास आकर खड़े होगये।

प्रिन्स,—(मारे क्रोधके आगबबूला होकर) "बदमाशो! तुम्हें मालूम नहीं, कि मैं कौन हूं ?"

प्रिन्सकी खिड़कीके पासवाला नकाबपोश,—"खामोश! नहीं तो अभी गोली मार दूंगा।"

इतना कहकर उसने गाड़ीमें पिस्तौल घुसेड़ दिया।

प्रिन्स,—(बदमाशोंको डरानेकी नीयतसे) "पर मैं प्रिन्स रीजेण्ट हूं।"

वही नकाबपोश,—"सो मैं जानता हूं। अगर चुप रहियेगा, तो कोई डर नहीं है।"

लाचार प्रिन्स चुपचाप बैठे रहे, फिर उन्हें और कुछ कहने की हिम्मत न पड़ी। इतनेसे ही समझ गये, कि अब वे डाकुओंके पाले पड़ गये हैं। उधर मारक्विसकी भी वही दशा थी। उन्हें भी पिस्तौल की धमकी मिल चुकी थी, इसलिये उन्होंने भी चुप ही रहनेमें भलाई समझी।

जिस घटनाका हाल लिखनेमें कई मिनट लग गये हैं, वह कुछ ही सेकेण्डोंमें घटगई थी। इस बीचमें जोत काट दी गई, घोड़े चुपचाप खड़े होगये, बदमाशोंने कोचबक्सपर जाकर नौकर तथा कोचवानको गिरफ्तार कर लिया और इस तरह पलक मारते गाड़ी उनके कब्जेमें आगई।

यह जोत बातकी बातमें बड़ी आसानीसे होगई। काम इस तरह अकस्मात् और दृढ़ताके साथ कर लिया गया [illegible]
रोकने तकका मौका न मिला। [illegible] कौ [illegible]
मध्य और किउके बीच निम सुन [illegible] घ [illegible]
वहां ग़ोर-गुल मचानेसे भी कुछ न [illegible]

नौकर खाली हाथ थे, क्योंकि ऐसी दुर्घटनाकी सम्भावना ही नहीं थी। और उधर डाकू लोग भी गिनतीमें आठ थे।

किस्सेका सिलसिला जारी करनेके पहले हम यह कह देना चाहते हैं, कि आठ आदमियोंमेंसे चार सडककी ओरसे आये थे और चार दूसरी ओर से। आते ही उनमें से दो ने तो घोडों को पकड लिया, चार कोचबक्सपर चढ गये और बाकी दो गाडीकी दोनों खिडकियोंके पास जाकर खडे हो गये जैसा, कि ऊपर लिखा जा चुका है। काम इतना जल्द और ऐसी सफाईके साथ कर लिया गया, मानो इसका सब बन्दोबस्त पहले हीसे कर रखा गया हो। बदमाशोंने अपने चेहरोंपर काले पका नकाब लगा रखा था और वे हरबे-हथियारोंसे भी खूब लैस थे। जिस आदमीने गर्ज कर कोरमैन जोत काट देनेका हुक्म दिया था, वही सबका सरदार मालूम होता था।

पाठक! अब हम अपने किस्सेका सिलसिला फिर जारी करते हैं। गाडीको कब्जेमें लाते ही सरदारने कोचमान और नौकरके हाथ-पैर बंधवाकर उन्हें गाडीके अन्दर डलवा दिया, उसके बाद आप भी वहीं जा बैठा।

अन्दर जाकर उसने कहा,—"श्रीमान्! मैं खुद गाड़ीके अन्दर आने और इन नौकरोंको आपके पास रखनेके लिये क्षमा मांगता हूं। कुछ सावधानीकी बड़ी जरूरत है और जिस बातका जिक्र अभी मैंने किया है, यह भी उसीमें है। इसके बाद दूसरी सावधानी इन काठकी खिडकियोंका लगा देना है (इतना कहकर उसने झट खिडकियोंको चढा दिया) मेहरबानी करके मुझे रोकने या भगने जानेका खयाल भी न कीजियेगा, क्योंकि मेरे एक हाथमें पिस्तौल है और दूसरेमें कोचवानको खबर देनेवाली डोरी। अगर इस डोरीको मैं जरा सा भी खींच लूंगा, तो कोचबक्सपर बैठे हुए मेरे

आदमियोंको तुरत खबर हो जायगी। और अगर कोई बुरी नीयतसे मेरी देह भी छू लेगा, तो फौरन पिस्तौल चल जायगी। किसी तरहका सोच-विचार वा आगा-पीछा न किया जायगा।

यह बातें बदमाशोंके मुखियाने ऐसे ढङ्ग और दृढ़ताके साथ कहीं, जिससे साफ मालूम होता था, कि यह शेखीबाजोंकी कोरी शेखी ही नहीं है बल्कि वह जैसा कह रहा है, वैसा कर भी सकता है। इसके अलावा वह जैसी सफाईके साथ शुद्ध भाषामें बोल रहा था, उससे यह भी जाहिर होता था, कि उसने अच्छी शिक्षा पाई है। वह इस समय चाहे जो हो, पर पहले ऐसा नीच कभी न रहा होगा।

उसने खिड़कियोंको लगा दिया। गाड़ीके अन्दर घोर अन्धकार छा गया। इस लिये वह यह न देख सका, कि उसकी बातका प्रिन्स और मारक्विसपर कैसा असर हुआ। पर चूंकि उसकी बातका कुछ भी जवाब न मिला और किसीने टससे मस भी नहीं किया, इससे वह समझ गया, कि उसकी चेतावनी और धमकी व्यर्थ ही नहीं गई, उनका असर जरूर हुआ है।

उधर सरदारके आदमी हाथपर हाथ धरे बेकार नहीं बैठे थे। थोड़ी सी रस्सी लाकर उनलोगोंने साजको ठीक कर लिया और घोड़ोंको जोतकर लालटेनोंको बुझा दिया। इसके बाद दो आदमी कोचबक्स पर जा बैठे। और उनमेंसे एक कोचवानका काम करने लगा। गाड़ी फिर धड़धड़ाकर चल पड़ी।

अच्छा, बाकी और पाच बदमाश कहा चले गये? उन लोगोंने पासकी झाड़ीमें अपने घोड़े छिपा रखे थे। गाड़ीके रवाना होते ही वे लोग भी अपने अपने घोड़ेपर सवार होकर, गाड़ीके पीछे पीछे कुछ दूरपर चले जिसमें कोई मुसाफिर उन लोगोंको एक साथ जाते देख कुछ सन्देह न करे, इस खयालसे वे

लोग एक दूसरेसे कुछ दूर पीछे चले जाते थे। आखिर कुछ ही देरमें गाड़ी एक मशहूर सड़कपर घूम पड़ी, जहाँ उतनी सावधानी की कोई जरूरत न थी।

अगर गाड़ी किंग जाती, तो एकदम सीधी ही चली जाती, पर जब वह सीधी न जाकर दाहिनी ओर मुड़ गई, तो गाड़ीके अन्दर-वाले कैदियोंको मालूम हो गया, कि राज-पथ छूट गया और गाड़ी अब दूसरी ओर जा रही है।

अब प्रिन्सके जीमें डर पैदा हुआ। उनसे और न रहा गया, इस लिये उन्होंने दलपतिसे पूछा,—"क्या तुम इस अत्याचारका उद्देश्य बयान करोगे और यह बतलाओगे, कि इसकी हद कितनी है?"

इसपर दलपतिने कहा,—"श्रीमान् किसी बातका डर न करें। आपके साथ कोई बुराई न की जायगी। इसके सिवाय इस समय मैं और कुछ भी नहीं कह सकता।"

यह सुन प्रिन्स कुछ धमकी दिया ही चाहते थे, कि उन्हें खयाल हो गया, कि मैं एक दम लाचार हूं और ये बदमाश बड़े माहिर हैं। अगर मैं इन्हें उसकाऊंगा, तो ये साधारण मनुष्यकी भाईं मेरा भी गला काटनेसे बाज न आवेंगे, इस लिये क्रोधको दबाकर वे चुपचाप बैठे रहे।

गाड़ी सनासन दौड़ी जा रही थी, पर उसके भीतर सन्नाटा छाया हुआ था,—कोई चूं तक न करता था। गाड़ी किधर और कहां जा रही थी, यह अनुमान करना कठिन था। आखिर आध घण्टेके बाद वह खड़ी हो गई और एक बड़े भारी फाटकके खुलनेका शब्द सुनाई दिया। इसके बाद गाड़ी फिर चली, पर तुरत ही रुक गई और उससे जो आवाज हुई, उससे यही मालूम हुआ, कि यां तो फर्शबन्दी किया हुआ किसी आलीशान मकानका

दरवाजा है वा किसी महलका अस्तबल। गाड़ी जब घुड़सवार बदमाशोंके साथ ठिकानेपर पहुंच गई तो फाटक फिर बन्द कर दिया।

अब गाड़ीका दरवाजा खोल दिया गया। बदमाशोंके सरदारने अपनी जगह पर बैठे ही बैठे कैदियोंको उतरनेका हुक्म दिया। पहले प्रिन्स उतरे, फिर मारक्विस, उनके बाद कोचवान, तथा नौकर और सबसे पीछे बदमाशोंका सरदार। उस जगह घोर अन्धकार छाया हुआ था। जरा भी रोशनी कहीं न दिखाई देती थी, पर तुरत ही दो गजके फासले पर एक दरवाजा खुला। ड्योढ़ीके अन्दर जमीनपर एक लालटेन टिमटिमा रही थी, जिसकी मन्द रोशनीमें वह कमरा यमालय सा काला और भयानक दीखता था।

उस कमरे को देखते ही प्रिन्स और मारक्विस मारे डरके चिल्ला उठे। कोचवान और नौकर भी उन लोगोंसे कम भयभीत न हुआ। जो हो, सरदारने गर्जकर आगे बढ़नेका हुक्म दिया। उसके हुक्मका असर बहुत जल्द हुआ। कैदी लोग चट उस कमरेके अन्दर चले गये, पर उसकी काली सूरत देखकर उन लोगोंके मनमें डर समा गया। बात यह थी, कि उस कमरेमें चारों ओर काला कपड़ा लगा हुआ था और जमीन पर भी काला ही कपड़ा बिछा था। अगर कमरेमें कोई खिड़की ही भी, तो वह दिखाई न देती थी, क्योंकि फर्श और चारों ओरकी दीवार काले कपड़ेसे एक दम ढकी हुई थी। प्रिन्स, मारक्विस, दोनों नौकर और सरदारके अन्दर जाते ही दरवाजा भी गायब हो गया,—यानी बन्द होनेके बाद उसपर भी काले कपड़ेका पर्दा गिर गया। अब चारों ओर काला ही काला दिखाई देता था, सिर्फ भीतरकी छत सफेद थी।

काल-कोठरी जैसे भयानक कमरेमें अपनेको खड़े देखकर प्रिन्सको अक्ल चकरा गई और अभिमान टूट गया। लालटेनकी

धुंधली रोशनीमें सिर्फ कमरेका काला रङ्ग, एक काला टेबिल और छः काली कुर्सियां दिखाई देती थीं।

कमरेकी भयङ्करता देख मारक्विस प्रिन्ससे भी अधिक घबरा उठे थे। और कोचवान तथा नौकरको तो पूछिये ही मत, वे लोग तो मारे डरके मरे जाते थे। क्योंकि इस कार्रवाईका मतलब उनकी समझमें कुछ भी न आता था। अगर बदमाश लोग डाकू होते, तो सड़कपर (जहां गाड़ीको रोक लिया था) ही अपना काम खतम कर डालते और अगर डाकू नहीं हैं, तो फिर है कौन? ये लोग और हो ही क्या सकते है? ये लोग हम लोगों को कहा ले आये हैं? और इस यमालय जैसे काले कमरेका ही क्या मतलब है?

यह सब खयाल सिर्फ कोचवान और नौकरके मनमें ही नहीं बल्कि प्रिन्स और मारक्विसके दिलमें भी उठ रहे थे, पर जैसा, कि हम अभी कह आये हैं, वे लोग कुछ अनुमान न कर सके।

अब चारों कैदी बड़ी उत्सुकताके साथ सरदारकी ओर देखने लगे, जो नकाबके भीतरसे उनकी ओर ताक रहा था। वह लम्बा और गठीले बदन का मनुष्य था, और काली पोशाक पहने हुआ था। उसके सिर पर सफरी टोपी थी, जो इस तरह दबाकर पहनी थी, कि शिरका एक बाल भी दिखाई न देता था। नकाबसे चेहरा छिपा रहनेके कारण उसकी उम्रका कुछ भी अन्दाजा नहीं लगता था। उसके डोल-डौल रङ्ग-ढङ्ग और चाल ढालसे उस बातको पुष्टि होती थी, जो उसकी शुद्ध भाषा सुनकर ऊपर कही जा चुकी है, अर्थात् पहले उसकी अवस्था निश्चय ही अच्छी रही होगी, फिर चाहे पापसे वह नीचे गिर गया हो।

प्रिन्स,—(कड़ी आवाजमें) "अच्छा, अब क्या तुम यह बतला सकते हो, कि हम लोगोंके साथ ऐसा जुल्म क्यों किया जा रहा है?"

सरदार,—"कड़े शब्दोंसे बात नहीं बन सकती। आप उस आदमीके साथ, जो जेलरकी हैसियतसे आप लोगोंको कैदीकी तरह अपने कब्जेमें रखे हुआ है, अदबके साथ बोल सकते हैं। जो हो, मैं अभी आपको एक दूसरे कमरेमें ले चलूंगा, पर मारक्विस और दोनों नौकरोंको यहीं रहना होगा।"

प्रिन्स,—(अपने दोस्त और नौकरोंसे अलग होना नापसन्द करते हुए) "पर मुझे कैसे एतबार हो, कि वहां मेरे साथ किसी किस्मकी बुराई न की जायगी ?"

सरदार,—(शान्ति पूर्वक) "यदि मेरी ऐसी ही इच्छा होती, तो अभी न आपकी खोपड़ी उड़ा देता।" इसके बाद उसने अपने दोनों पाकेटोंसे पिस्तौल निकाल कर दिखाये और उन्हें रखकर फिर कहने लगा,—"अगर मैं आपको जानका ग्राहक होता, तो पहले ही न उस सड़कपर आपका काम तमाम कर देता ? यहां लानेकी जरूरत ही क्या थी।"

प्रिन्स,—(कुछ सोचकर धीरेसे) "ठीक है, अच्छा, तो मैं चलनेको तय्यार हूं।"

"तो अभी ले चलता हूं" इतना कह और मारक्विसकी ओर मुखातिब होकर उसने कहा,—"महाशय ! जब तक मैं लौट न आऊं, तबतक आप नौकरोंके साथ चुपचाप यहीं बैठे रहें। अगर कोई दरवाजा खोलनेकी चेष्टा करेगा, तो पहरेवालोंसे उसको सजा पायेगा।"

इतना कह सरदारने लालटेन उठा ली और कमरेकी एक ओरका पर्दा कुछ हटाकर प्रिन्ससे कहा,—"चलिये।"

उसकी बात सुनकर प्रिन्सने तुरत कदम बढ़ाया और पर्देको ठीक करके वह भी प्रिन्सके पीछे पीछे चला।

हुक्मके मुताबिक मारक्विस लेवेसन नौकरोंके साथ चुपचाप बैठे रहे। लालटेन न रहनेके कारण वहां फिर घोर अन्धकार छा गया।

कुछ देर तक तो उन लोगोंको मानो किसीके गलीचेपर चलने की धीमी आहट सुनाई देती रही, फिर उसके बाद एकदम सन्नाटा छा गया।

उधर काले कमरेसे निकलकर प्रिन्स एक चौड़ी सीढ़ीके पास जा पहुंचे। उस सीढ़ीपर भी काला ही कपड़ा बिछा हुआ था। सिर्फ सीढ़ी ही नहीं, रेलिङ्ग और दीवार वगैरह सबपर वैसा ही कपड़ा पड़ा हुआ था। इस तरह लगातार चारों ओर यमालयकासा दृश्य देखकर बड़ों बड़ों का खून सूख जाता है, प्रिन्सको तो बात ही क्या थी।

सरदार,—(लालटेन लिये सीढ़ीपर जाता हुआ) "जल्दी आइये, पैर बढ़ाइये।"

प्रिन्स,—(फिर डरको न रोक सकनेपर) "इसका मानी क्या है? क्या तुम मुझे यहां मुर्दोंमें शामिल होनेके लिये ले आये हो?"

सरदार,—"मुझसे सवाल करना बेफायदा है।"

इस बातको सरदारने ऐसे ढङ्गसे कहा और "मुझसे" शब्दपर ऐसा जोर दिया, कि जिससे प्रिन्सके मनमें यह खयाल उठ खड़ा हुआ, कि अब वे तुरत ही असली अत्याचारीके सामने, जो कि नकाबपोश सरदारका मालिक है, हाजिर किये जायंगे।

इस खयालके साथ साथ और भी हजारों तरहके खयाल उनके मनमें उठने लगे। इतनेमें वे सीढ़ीको तयकर ऊपर जा पहुंचे। वहां का दृश्य भी और स्थानोंकी नाईं भयानक ही था।

सरदार,—(काले पर्देको कुछ हटाकर) "इसके अन्दर चले आइये।

उससे और सवाल करना व्यर्थ समझ प्रिन्स सरदारके कहे मुताबिक पर्देकी ओटमें चले गये। अब वे यही चाहते थे, कि

जितना जल्द यह मामला खतम हो जाय, उतना ही अच्छा है। पर्देकी ओटमें जाकर उन्होंने अपनेको दरवाजेके सामनेवाली गलीमें पाया। इधर सरदारने पर्देको ठीक करके कहा,—"दरवाजा खोलकर अन्दर चले जाइये।

सरदारके कहने मुताबिक दरवाजा खोलकर प्रिन्स धड़धड़ाते हुए अन्दर चले गये। कमरा रोशनीसे जगमगा रहा था और एक अपूर्व लावण्यमयी सुन्दरी सुखसे सोफापर लेटी हुई थी।

सातवां परिच्छेद।

एक रहस्यमयी रमणी।

पाठक! जिस मनमोहिनी सुन्दरीके सामने प्रिन्स एकाएक पहुंच गये थे, और जिसकी अनुपम छटा देखकर पिछली सब बातें भूल गये थे, उसकी रूपमाधुरीका वर्णन कर देना अति आवश्यक है।

वह सुन्दरी पूर्वीय देशके ढङ्गकी पोशाक पहने थी। वह पोशाक ऐसी पतली थी, कि उसके आरपार साफ दिखाई देता था। यद्यपि वह पोशाक सफेद रेशमी कपड़ेकी थी। पर उसकी देहके गुलाबी रङ्गसे वह भी गुलाबी हो रही थी। यह रङ्ग कमरतक था। वह न तो अंगिया ही पहने थी और न कोई दूसरा कपड़ा ही, इससे उसकी कमरके ऊपरके सब अङ्ग साफ झलक रहे थे।

विधाताने उसे ऐसी अपूर्व सुन्दरता दी थी, कि अच्छे अच्छे चित्रकार न तो वैसा सुन्दर चित्र ही अङ्कित कर सकते थे और न अच्छे अच्छे कारीगर वैसी अनोखी मूर्त्ति ही बना सकते थे।

अहा! उसका मुख कैसा मनोहर था! उसकी मन लुभानेवाली सूरत कैसी सलोनी दिखाई देती थी! और उसकी बांकी अदा दिलको छेदकर पार कर जानेवाली थी!

हलके भूरे बाल उसके खूबसूरत कन्धोंपर लहरा रहे थे। चिकने कपालके ऊपर मोतियोंकी येमावन्दीकी अपूर्व शोभा दिखाई दे रही थी। उसकी आंखें काली, और बड़ी कटीली थीं। तोते जैसी नाक, बिम्बाफल जैसे अधर, अनारदाने जैसे दांत और गोरे गोरे गोल चिबुकसे उसके अनुरागी चित्त एवं जोशीले स्वभावका पूरा परिचय पाया जाता था। यदि कोई ऐसी वैसी मामूली घटना भी घट जाती, तो उसका खून रगोंमें दौड़ने लगता और बदनका गुलाबी रङ्ग सुर्ख हो जाता।

अभी हम ऊपर कह आये हैं, कि उसकी पोशाकपूर्व देशके ढांचे जैसी थी। मोतीकी बेंदीसे लगा हुआ एक खूबसूरत बुर्का पीछेकी ओर लटक रहा था, इसलिये उसका मस्त, कामातुर और रङ्गीला चेहरा साफ दिखाई देता था। पूर्वीय औरतोंकी तर्जपर उसकी पतली कमरसे एक बेशकीमत ढीला ढाला शाल बधा हुआ था। सुराहीदार गलेमें मोतियोंकी माला सुशोभित थी और गोरी गोरी गोल कलाइयोंकी शोभा बहुमूल्य जड़ाऊ पहुंची बढ़ा रही थी। कमरके नीचे उस जाल जैसी पोशाकके तले गुलाबी रङ्गकी साटनका लहङ्गा था जिसमें सलमें सितारेका बहुत ही बढ़िया काम किया हुआ था। छोटे छोटे नाजुक पैरोंमें जरीकी जूती पड़ी हुई थी।

जिस कमरेमें यह परी प्रिन्सकी आंखोंके सामने दिखाई दी, वह कमरा भी बड़ी खूबसूरतीके साथ सजा हुआ था और रोशनीसे हँस रहा था। खिड़कियोंपर पड़े हुए पर्दे, कुर्सियां, सोफा वगैरहकी गद्दियां, दीवारमें चिपके हुए कागज और फर्शपरका गलीचा, यह सभी सामान सुर्ख रङ्गका होनेके कारण कमरेकी रोशनी भी गुलाबी मालूम होती थी।

कुछ देर तक प्रिन्स खोलीके पास खड़े खड़े आश्चर्य और आनन्दके साथ उस परीका रूप रस पान करते रहे। पहले तो उस हूरने

उन्हें देखा ही नहीं, वा यों कहिये, कि देखकर भी नहीं देखा, चुपचाप चिन्तित सी सोफापर ओठकी रही ।—अहा ! उस समय वह कैसी हृदयहारिणी दिखाई देती थी ! पर कुछ मिनटोंके बाद उसने धीरेसे उस ओर नजर फेरी, जिधर प्रिन्स मट्टीकी मूर्त्तिके समान चुपचाप खड़े थे । उन्हें सामने देखकर न तो वह चौंकी, न डरी और न विस्मित ही हुई, बल्कि उसके मुखपर अपूर्व आनन्द छा गया, जिससे उसका चेहरा दमक उठा ।

उसकी दृष्टि प्रिन्सपर बहुत देरतक गड़ी रही । उसके कोरदार कजरारे नैनोंके तीक्ष्ण कटाक्षसे प्रिन्सके मनमें ऐसा आनन्द छा गया जैसा, कि स्वर्गमें पहुंच जानेसे होता है । उस कटाक्षके साथ साथ उसके ओठोंपर मधुर मुस्कराहट विराज रही थी, जो मानो उस आनन्दभवनमें प्रिन्सका स्वागत कर रही हो ।

सहसा पिछली सब बातोंका खयालकर प्रिन्सने चाहा, कि घूम-कर उस नकाबपोश सरदारसे पूछें, कि यह रमणी कौन है और इस गोरख धन्धेका मतलब ही क्या है ? पर उन्होंने घूमकर देखा तो दरवाजेको बन्द और अपनेको अकेले उस रमणीके पास खड़े पाया । यह देख उनके मनमें भयानक आतङ्क छा गया । इस सारी घटनाका रहस्य उन्हें बहुत ही मनहूस और अनोखा मालूम हुआ । उनके मनमें यह डर पैदा हो गया, कि दगा फरेब करके उनको फांसनेके लिये यह कोई इन्द्रजाल रचा गया है । यह खयाल उठते ही आशङ्का एवं घबराहटसे वे कांप उठे, पर जब उन्होंने फिर उस रमणीके कमलाननको ओर देखा, तो उनकी दृष्टि उसपर स्थिर हो गई । अब उन्हें यह जान पड़ा, कि उस मुखसे कोमल अभिलाषाका भाव तथा कटाक्षसे कामाग्निकी ज्वाला निकल रही है । यह देख उनकी रगोंमें बिजली सी दौड़ गई और वे विह्वल हो उठे ।

प्रिन्स,—(उत्तेजित हो उस सुन्दरीकी ओर बढ़कर) "पूजनीया देवी! तुम कौन हो ?"

अब यह रमणी सोफापरसे उठ खड़ी हुई और उसने प्रिंसको ऐसे अदब और नाजके साथ सलाम किया, कि उनका मन हाथसे निकल गया। अब उसके पास पहुंचकर उन्होंने देखा, कि जिस अपूर्व सुन्दरताने दूरसे देखनेपर स्वर्गीय आनन्द दिया था, निकट आनेपर भी वह उसी तरहकी आनन्ददायिनी है। जब उन्होंने एकबार नजर गड़ाकर उसे सिरसे पैरतक देखा, तो उन्हें मालूम हुआ मानो वह कोई खूबसूरत रोमवाली सुलताना हो। इस समय वे ऐसे पुलकित, ऐसे मोहित और ऐसे आत्मविस्मृत हो गये थे, कि उन्हें मालूम हुआ, मानो वे किसी ऐसे जीवके सामने खड़े हैं, जो मनुष्यसे कहीं ऊंचे दर्जेका है।

अब खुद सोफापर बैठकर उस रमणीने मृदुमन्द मुस्काराहटके साथ बड़े नाज-नखरेसे प्रिन्सको अपने पास बैठ जानेका इशारा किया। प्रिन्सके बैठ जानेपर उसने अपनी मारू आँखोंसे उनकी ओर देख मधुर, कम्पित स्वरसे कहा,—"श्रीमान् मेरा परिचय जानना चाहते हैं, पर यह एक ऐसी गुप्त बात है, जिसे मैं प्रकट नहीं कर सकती।"

प्रिन्स,—"मुझे पूर्ण विश्वास है, कि ऐसी स्वर्गीय सुन्दरीका बदमाशोंसे कोई सम्पर्क नहीं रह सकता, इसलिये मेरी अक्ल हैरान है, कि जो लोग मुझे यहां ले आये हैं, वे कौन और क्या हैं।"

रमणी,—(प्रार्थना-पूर्वक) "कृपाकर उस अत्याचारके लिये क्षमा कीजिये।"

प्रिन्स,—(मस्तानी निगाहसे देखते हुए) "तुम्हारे लिये मैं सब कुछ कर सकता हूं, पर मुझे तुम्हारे रूबरू हाजिर करनेके लिये ऐसी चाल क्यों चली गई ?"

इसपर रमणीने स्नेहपूर्ण दृष्टिसे एकबार प्रिन्सको ओर देखकर नजर नीची कर ली और लजाकर बहुत धीरेसे कहा,—"इसलिये, कि मैं आपको चाहती हूँ।"

यह सुन प्रिन्स पागलोंकी तरह जल्दीसे बोल उठे,—"आह! पूजनीया रमणी।" इसके बाद उन्होंने उसकी कमरमें हाथ डालकर बड़े प्यारके साथ अपनी छातीसे लगा लिया।

यह काम इतना जल्द हो गया, कि रमणी कुछ भी न कर सकी, कुछ देरतक वह प्रिन्सकी छातीसे सटी रही और अपने गुलाबी गालों और लाल लाल ओठोंका रस उन्हें सुखसे पान करने दिया। फिर अकस्मात् किसी बातके याद आ जानेपर वह चौंक सी उठी और प्रिन्सके आलिङ्गनसे निकलकर हांफती हुई सोफाके कोनेमें जा गिरी।

उस आलिङ्गनसे प्रिन्सका मन भड़क उठा। वे भूखे बाघकी तरह चुपचाप बैठकर उसे घूरने लगे। प्रिन्स चाहते थे, कि उसे पकड़कर फिर लिपटा लें, पर उसके नाराज हो जानेके डरसे हिम्मत न पड़ती थी। लाचार उन्होंने कहा,—"तुमने अभी मुझे प्यार करनेकी बात कही है न?"

इस बीचमें उस सुन्दरीका मन कुछ ठिकाने आ गया था, पर अभी भी उस जाल जैसी पोशाकमें उसकी छातीका उठना बैठना साफ दिखाई दे रहा था। उसी अवस्थामें रमणीने कहा,—"मैंने सच ही कहा है, श्रीमान्! थोड़ी देरतक मेरी बात सुन लीजिये,—फिर—"

प्रिन्स,—(अधीर होकर जल्दीसे, पर सन्देह सहित) "फिर तुम मेरी हो जाओगी?—एकदम मेरी?"

रमणी,—(लज्जासे सिर झुकाकर) "हां, एकदम आपकी।"

प्रिन्स,—"तो जल्द कहो, मैं सुननेको तय्यार हूँ। पर देखना, मेरे आनन्दकी भूमिकाको बेफायदे बहुत न बढ़ा देना।"

रमणी,—(धीमी आवाजमें) मैंने सच ही कहा है, कि मैं आपको प्यार करती हूं। मेरा जन्म अङ्गरेज पिता और ईरानी मातासे हुआ है। मेरा स्वभाव, समझ और भाषा आपके सर्द पश्चिम देश जैसी है, पर मेरे हृदयमें वह उत्साह और लालसा भरी हुई है, जो बहुत दूर, पूर्व-देशकी औरतोंमें पाई जाती है।"

प्रिन्स,—(और अधिक आनन्दसे देखते हुए) "रहस्यमयी मनमोहिनी।"

रमणी,—(कुछ लजाकर सकुचती हुई) "आपके प्रशंसनीय गुणोंकी बड़ाई सुनकर मेरे मनमें आपकी प्रीतिका अङ्कुर जम गया है। सुननेमें आया है, कि आपका चालचलन ऐसा सुन्दर है, कि दुर्भिक्षकालसे किसी अच्छे रईसका होगा,—आपके दिलमें सब इल्मोंका खजाना भरा हुआ है,—आपकी बातचीतमें मनमोहिनी शक्ति वर्त्तमान है,—और आपके स्नेह-सागरके प्रबल प्रवाहको रोकनेकी सामर्थ्य किसी रमणीमें नहीं है। मुख्तसर यह है, कि जब मैं पूर्व देशकी सैर कर रही थी, तभी आपके रूप-गुणकी बड़ाई, सुनकर मुग्ध हो गई थी। फिर मैंने इङ्गलैण्डसे आपका फोटो मंगाया और उसे देखते ही अपना तन मन न्योछावर कर दिया।"

प्रिन्स,—"यदि यह बात सच हो, तो इसमें किसीका ऐसा रङ्ग मिला है, जिससे यह बहुत ही मनोहर मालूम होती है।"

रमणी,—(मलामतके साथ देखती हुई) "सच! क्या आप यह समझते हैं, कि मैं आपको धोखा दे रही हूं? क्या मैं अपनी प्यारी जन्मभूमिसे इतनी दूर पश्चिम आपके देशमें अविश्वासिनी बननेके लिये ही आई हूं? अफसोस! मेरा अपने ही मुल्कमें रहकर इस प्रेमाग्निमें जलना अच्छा था, न कि इतनी दूर आकर इस तरह अपमानित होना।"

रमणी,—(सिसक सिसककर टूटी फूटी आवाजमें) अकस्मात् एक बात याद पड़ गई है, जिससे कलेजा फटा जाता है।"

प्रिन्स,—"वह बात कैसी है, प्यारी। जरा कहो तो? क्या मैं उसके लिये कुछ कर सकता हूं?———"

रमणी,—(बड़े नाज नखरेसे) "हां, आप सब कुछ कर सकते हैं।"

प्रिन्स,—"तो चटपट कह डालो,—सन्देहमें मत रखो।"

रमणी,—"एक आदमीपर, जो मेरा नजदीकी रिश्तेदार है, आप नाराज हो गये हैं———"

प्रिन्स,—"तो मैं उसे माफ कर दूंगा। बस यही न?"

रमणी,—(प्रिन्सकी देहमें और भी सट तथा दुलार करके) "ओह! यह तो उसकी आशासे बहुत बढ़कर है। परन्तु प्यारे! तुम्हें उसके क्षमा-पत्रपर दस्तखत कर देना पड़ेगा——"

प्रिन्स,—(उत्तेजनासे विह्वल होकर) "जब मैं तुम्हारे अधरों पर चुम्बनकी मुहर करनेका सुख भोग सकता हूं, तो उस पत्रपर जो कहोगी लिख दूंगा।" इतना कहकर प्रिन्स उन्मत्तकी नाईं उसका अधरामृत पान करने लगे।

रमणी,—(बड़ी कठिनतासे प्रिन्सको जरा ठेलकर) "तो इस कृपाकी अपना दस्तखत करके पक्का कर दीजिये, फिर मैं आप ही की हूं। यह तो क्षणभरका काम है। टेबिलपर कलम, दावात सब मौजूद है———"

इतना कह वह प्रिन्सके गलेमें हाथ डाले हुई उठी और उन्हें टेबिलके पास ले गई। वास्तवमें जैसा उसने कहा था, यह क्षण भरका ही काम था। इस बीचमें वह इस तरह प्रिन्सको दुलारती पुचकारती और उनकी छेड़खानी सहती रही, कि वे मारे आनन्दके धूमकर अन्धा ही गये।

टेबिलके पास ही एक खूबसूरत चौकी बिछी थी। उसीपर प्रिन्स उस सुन्दरीके साथ बैठ गये। सामने टेबिलपर एक लिखा हुआ कागज धरा था। प्रिन्सने उसे पढ़ना चाहा, पर, उस रमणीने उसी वक्त उनके शिरको अपनी छातीमें सटा लिया। अब आनन्दमें प्रिन्स ऐसे निमग्न हो गये, कि उन्हें कुछ भी सुधि-बुधि न रही, झट कलम उठाकर उस कागज पर दस्तखत कर दिया।

इसके बाद प्रिन्सने बड़े चावसे फिर उसे छातीसे सटा लिया। उसने उसी वक्त धीरेसे कहा,—"अब मैं बिल्कुल आपकी हूं, प्यारे!"

आठवां परिच्छेद।

रातकी घटनाका परिणाम।

आइये पाठक! अब फिर हम लोग उस काले कमरेमें चलें, जिसमें मारकिस लेवेसन प्रिन्सके दोनों नौकरोंके साथ घोर अन्धकारमें बैठे हुए थे।

उनकी अवस्था अति शोचनीय थी, पर उपाय कुछ भी न था। सरदारने जानेके समय जो धमकी दी थी, वह उस वक्त, भी उनके कानोंमें गूञ्ज रही थी। एक अनजान, खतरेसे घिरी हुई, अन्धेरी जगहमें मुंह बन्द किये बैठे रहना उन लोगोंको जरा भी पसन्द न था। पर कर ही क्या सकते थे। न तो वे लोग उठ ही सकते थे और न फुसफुसाकर कुछ बातचीत ही कर सकते थे।

इस तरह अन्धकारमें चुपचाप बैठे बैठे जब बीस मिनटसे अधिक हो गया, तब सीढ़ीसे किसीके उतरनेकी आहट सुनाई दी। इसके बाद लालटेन हाथमें लिये बड़ो सरदार काले पर्देकी ओटसे निकल आया।

अब लालटेनकी रोशनीमें उन लोगोंको सरदारके साथ और एक नकाबपोश आदमी दिखाई दिया। वह दरवाजेके काले पर्देके पास मट्टीकी मूर्त्तिकी नाईं अचल अटल खड़ा था। उसके चेहरेपर काला नकाब लगा हुआ था और दोनों हाथोंमें एकएक पिस्तौल थी।

वह किसी तरह चुपकेसे धीरे-धीरे अन्दर आ गया। अथवा वह कमरेसे बाहर गया ही नहीं? जबसे सबके साथ आया तबसे दरवाजेके काले पर्देके पीछे छिपा खड़ा हो रहा, और जब सरदार लालटेन लेकर चला गया, तो वह पर्देके पीछेसे निकल आया और अन्धकारमय काले कमरेमें मारक्विस तथा दोनो नौकरोंकी कार्रवाई देखने और उनकी बातचीत सुननेके लिये चुपचाप खड़ा हो गया। पर मारक्विस और दोनो नौकर न तो अपनी जगहसे उठे ही थे। न कुछ बोले ही थे इससे इतनी चौकसी जो की गई थी, सब निष्फल हो गई। तो भी उस आदमीको देखकर वे लोग समझ गये, कि सरदारने झूठी धमकी नहीं दी थी। उन लोगोंने अच्छा ही किया, जो चुपचाप अपनी अपनी जगहपर बैठे रहे।

सरदारको अकेला ही लौट आया देख मारक्विस तथा प्रिन्सके दोनों नौकर अत्यन्त विस्मित और भयभीत हो उठे। आखिर मारक्विसने हिम्मत बांधकर कहा,—"श्रीमान् प्रिन्स कहां हैं? समझ रखना, कि वे तुम्हारे बादशाहके लड़के हैं——"

सरदार,—"इसकी मुझे कोई परवाह नहीं है, पर आप निश्चिन्त रहिये, प्रिन्स अच्छी जगह और बड़े आनन्दमें हैं।"

मारक्विस,—"तो वे कब हम लोगोंके पास लौट आयेंगे? और इस फंदेसे हम लोगोंको कब रिहाई मिलेगी?"

सरदार,—(लालटेन उठाकर) 'जेब-ज़मीन देखिये तो, मैं जाता हूँ।"

मारक्विस,—(जवाहिरातसे जडी हुई प्रायः एक सौ गिनी मूल्यकी घडीको पाकेटसे निकाल और देखकर) "दो बजनेमें दस मिनट बाकी हैं।"

सरदार—(लापरवाहीके साथ) "लाइये, इस खिलौनेके लिये आपको धन्यवाद दूंगा।"

मारक्विस,—(खड़े होकर) "क्या अन्तमें तुम डाकू ही निकले? तुम्हारी ओरसे तो मेरा बड़ा ऊंचा खयाल था——"

सरदार,—"तो आपने मुझे क्या समझ रखा था? आजकलके घुड-सवार बहादुर जो अपनी वीरता दिखानेके लिये योंही इधर उधर घूमते फिरते रहते हैं?"

मारक्विस,—"मैं नहीं समझ सकता, कि किस उद्देश्यसे तुम हमलोगोंको यहां ले आये हो? जब तुमने उस जगह, जहां हमलोगोंपर चढ़ाई की, लूट-तराज नहीं की, तो मैंने समझा था, कि तुम्हारा उद्देश्य कुछ और ही है।"

सरदार,—"सो ठीक ही है, पर हम लोग दो तीन प्रिय वस्तुओंको एक साथ मिलाकर फिर अपने कामोंमें गोलमाल मचा देते हैं। क्यों डेनल यही बात है न?"

डेनल,—"इसमें क्या सन्देह है।"

सरदार,—"इसलिये, मारक्विस महाशय! कृपाकर जेब-घडी, हीरेकी अंगूठिया और मनीबेगको चुपचाप मेरे हवाले कर दीजिये।"

अब मारक्विसने देखा, कि इस समय मैं बिल्कुल इनके हाथमें हूं। ईश्वरकी कृपासे मुझे धनकी कमी नहीं, फिर ये सब चीजें मेरे लिये क्या हैं। यह खयालकर उन्होंने तुरत ही वे चीजें सरदारके हवाले कर दीं।

सरदार,—(मनीबेगको रकमको हाथमें उछालकर) "राम—

राम, छिः छिः। इतने बड़े आदमी होकर पासमें सिर्फ तिरपन गिन्नियां ही रखते हैं!, ऐसा तो विश्वास नहीं होता। अवश्य ही आपके पास पाकेट-बुक भी होगी?"

मारक्विस,—(अनिच्छापूर्वक पाकेट-बुक निकालकर) "यह लो, इसमें दो एक बैङ्कनोट होंगे, उन्हें तुम ले लो, पर मेरे खानगी कागज हों तो——"

सरदार,—"सो तो होहींगे। (पाकेट-बुक लेकर) अगर इसे बिना खोले ही लौटा दूं, तो क्या दीजियेगा?"

मारक्विस,—"अगर अभी लौटा दो, तो कल जिसे कहो, हजार गिन्नियां दे दूंगा।"

सरदार,—(अपनी चालाकीपर खुश होकर) "तो कमसे कम इस पाकेट-बुकमें हजार गिन्नीका माल है। अच्छा, इससे दूना दे दीजिये——"

मारक्विस,—"दूना! क्या एक पाकेट बुकके लिये दो हजार गिन्निया? अच्छा तो लाओ, अभी लौटा दो। मुझे मञ्जूर है।"

सरदार,—"तो ये दो हजार गिन्निया आप अपने छुटकारेके लिये देते हैं? ऐसा न समझिये, कि बिना नकद रकम लिये मैं पाकेट-बुक लौटा दूंगा।"

मारक्विस,—"एक रईस और असराफ आदमीकी तरह मैं प्रतिज्ञा करता हूं, कि रकम अवश्य भेज दी जायगी——"

सरदार,—"और उसके साथ जो आदमी रकम लेने जायगा, उसे गिरफ्तार करनेके लिये बो-ष्ट्रीटकी पुलिसका आदमी भी, क्यों? नहीं महाशय। मैं ऐसा काम नहीं करता। (पहरेदारकी ओर फिरकर) डेनल! एक ताव कागज और मुहर करनेको लाख तो ले आओ।"

इतना सुनते ही वह आदमी पर्देकी ओटमें जाकर गायब हो

गया । उसके जानेके बाद कमरेमें सन्नाटा छा गया । मारकिस कुछ सोचते हुए बड़ी बेचेनीसे कमरेमें टहलने लगे । उनको पाकेट-बुक एक अजनबी और बदनीयत आदमीके हाथमें पड़ गई थी, उधर नौकरोंने एक दूसरेको मतलब भरी निगाहसे देखा, मानों दोनों यह बातचीत कर रहे हों, कि देखें यह माजरा कब, कहां और किस तरह खतम होता है । इस बीचमें सरदार हीरेकी अंगूठियोंको बड़ी खुशीके साथ गौरसे देखने लगा ।

तीन मिनटमें वह आदमी कागज और लाख लेकर लौट आया । उसे देखकर सरदारने कहा,—"महाशय । अब पाकेट-बुकको इस कागजमें पैक करके उसपर अपनी मुहर लगा दीजिये ।"

मारकिस,—"पर मेरी सब अगूंठियां तो तुमने ले ली हैं ।"

सरदार,—"अच्छा, मैं उस अंगूठीको लौटा देता हूं, जिसपर आपका मुकुट खुदा हुआ है । उसीसे आप पैकेट पर मुहर कर दीजिये । अगर यह आपके पास ज्योंका त्यों लौटा दिया जायगा, तब तो आप सन्तुष्ट हो जायगे न ?"

मारकिस,—"निश्चय ही ।"

इसके बाद पाकेट-बुकको कागजमें बन्दकर उसपर मुहर कर दी गई । पैटकेको सरदारने उठा लिया और अंगूठी मारकिसने अपनी उंगलीमें पहन ली । इसके बाद उन्होंने पूछा,—"अच्छा, अब यह बताओ, कि कब और कैसे पाकेट-बुक मुझे मिलेगी ? और किस तरह अपने छुटकारेका दाम चुकाना होगा ?"

सरदार,—"बुधवारको आप दिन भर मकान ही पर रहियेगा और रकम भी अपने पास तय्यार रखियेगा । इतना आप कीजियेगा, बाकीका बन्दोबस्त मैं कर लूंगा ।"

मारकिस,—(मन ही मन सोचते हुए) "बुधवारका दिन भर ! बहुत ही अच्छा हुआ । अगर वह शुक्रवार कहता, तो मैं अवश्य

ही अस्वीकार कर देता, फिर चाहे जो होता। उस दिन तो मेरी मनमोहिनी विनोप्रियाके यहां जानेकी बारी है।"

अब बातचीत खतम हो गई। यह देख नौकरोंको विश्वास होगया, कि उन लोगोंकी रकम और घड़िया न छीनी जायंगी। शायद नकाबपोश-सरदारने समझा हो, कि उनके पास कोई वैसी बेशकीमत चीज नहीं है, अथवा नौकरोंकी चीजको लेना ही उसे पसन्द न हो।

इस तरह एक घण्टा बीत जानेपर मकानके अन्दर घण्टा बजा। "अब आप लोग जल्द ही यहासे रवाना हो जाइयेगा।" इतना कह और लालटेन उठाकर सरदार भीतर चला गया और प्राय' पाच मिनटबाद प्रिन्सको साथ लिये लौट आया। उन्हें देख मारक्विस और दोनों नौकर आनन्दसे चिल्ला उठे। लालटेनकी धीमी रोशनीमें भी प्रिन्सका हँसता हुआ चेहरा साफ दिखाई पड़ गया। वे मनके आनन्दको दबा रखना चाहते थे, पर किसी तरह दबा न सके। मारक्विस और दोनों नौकरोंको यह अनुमान करनेका, समय ही न मिला; कि प्रिन्सकी कैसी बाटी है, क्योंकि डेनलने तुरत ही दर्वाजेका पर्दा उठा दिया, और सरदार लालटेन बुझाकर प्रिन्स, मारक्विस दोनों नौकरोंको बाहर ले गया। वहा उन लोगोंको गाड़ीपर चढ़ाकर आप भी पहले ही की तरह उसके अन्दर जा बैठा।

गाड़ीकी खिड़किया बन्द हो गईं, मकानका फाटक खोल दिया गया और गाड़ी धड़धड़ाती हुई जैसे पहले आई थी, उसी तरह चल पड़ी, यानी दो बदमाश कोचबक्सपर जा बैठे, पाच जवान अपने अपने घोड़ेपर सवार होकर गाड़ीके पीछे पीछे चले और जैसा कि हम ऊपर कह आये हैं, नकाबपोश-सरदार रखवालीके लिये गाड़ीके अन्दर जा बैठा।

गाड़ी मजेमें तेजीके साथ जा रही थी, पर कोई कुछ बोलता न

था। आध घण्टेके बाद गाड़ी खड़ी हो गई। सरदार खिड़कियोंको गिरा और दरवाजेको खोलकर बाहर कूद पड़ा; इस वक्त चन्द्रमा आसमानमें बहुत ऊँचे पर चढ़ गया था। अब खिड़कीसे झांककर प्रिंस वगैरहने देखा, तो उन्हें मालूम हुआ, कि गाड़ी उसी जगह पहुंच गई है, जहां लगभग तीन घण्टे पहले बदमाशों ने उसे रोका था।

कोचबक्सके दोनों बदमाश पहले ही उतर आये थे। अब हुक्म पाकर प्रिन्सके दोनों नौकर उसपर जा बैठे।

सरदार,—"सलाम, महाशय।"

मारक्विस,—"सलाम।"

इसके बाद गाड़ी एक ओर रवाना हुई और दूसरी ओर बदमाश-मण्डली॥

जबतक बदमाशोंका सरदार गाड़ीके अन्दर बैठा रहा, तबतक लालसा रहनेपर भी प्रिन्स और मारक्विस अपनी अपनी राम-कहानी कहने-सुननेमें असमर्थ थे, पर अब निश्चिन्त होकर वे लोग आपसमें बात-चीत करने लगे। यद्यपि मारक्विसका किस्सा बहुत छोटा था, तो भी लूट-तराजकी बात सुनकर, जिसका उन्हें कुछ सान-गुमान भी न था, वे बहुत ही विस्मित हुए। उनका आनन्द दूर भाग गया और अब वे सोचने लगे, कि मैं किसी बदनीयत दिखावर औरतके धोखेमें आ गया हूं। सचमुच ही जैसा उसने कहा, वह इतनी दूरसे अपने दिलकी आग बुझाने नहीं आई, बल्कि चालबाजी करके अपना कोई खास मतलब गाठनेके इरादेसे ही आई है।

जो हो, अब प्रिन्सने भी अपनी प्रेम-कहानी कह सुनाई। मारक्विस मन लगाकर सुनते रहे,—खास करके उस हिस्सेको, जिसमें प्रिन्सने उस सुन्दरीकी खूबसूरती, दिलचस्पी और मन लुभानेवाली शक्तिका बयान किया।

मारक्विस,—"चलनेके वक्त क्या कौल-करार हुआ?"

प्रिन्स,—"जब मैं उससे लिपटा हुआ पड़ा था,—समय बड़ी तेजीके साथ बीत गया। उस अपूर्व आनन्दमें मैं ऐसा निमग्न था, कि बहुत सी जरूरी बातोंका पूछना एकदम भूल गया। पर मैं समझता हूं, कि यदि मैं पूछता भी, तो वह ठीक ठीक कभी न बताती और न मुझे यही मालूम होता, कि वह कौन है, उसका क्या नाम है, वह कहां रहती है और गुप्त रहनेके लिये उसने ऐसी अनोखी कार्रवाई क्यों की है; आह! जाने दो, वह चाहे जो हो, पर वह काम खूब सूरत नहीं है। अगर वह मेरे ताबेमें रहना चाहे, तो जो वह मांगे, मैं देनेको तैय्यार हूं।"

मारकिस,—"पर किस हालतमें आप उससे जुदा हुए?"

प्रिन्स,—"घड़ीमें तीन बजते ही मेरे आलिङ्गनसे निकलकर उसने कहा, कि 'अब जुदाईका समय आ गया।' मैंने कुछ देर और रहनेके लिये बहुत आर्जू-मिन्नत की, पर उसने एक भी न सुनी, तब मैंने उससे फिर मिलनेका वादा करनेको कहा। इस प्रस्तावको उसने बड़ी खुशीके साथ मञ्जूर कर लिया, पर कहा, कि मिलनेका दिन वही नियत करेगी। दो ही चार दिनमें चिट्ठी लिखनेका करार करके उसने घण्टा बजा दिया। फिर मुझे एकबार जोरसे छातीमें लगाकर कमरेसे बाहर कर दिया। वहां वही नकाबपोश लालटेन लिये खड़ा था। फिर वह मुझे तुम्हारे पास ले आया।"

मारकिस,—"और जिस कागजपर आपने दस्तखत किया, वह?"

प्रिन्स,—"उस बातका तो मुझे बड़ा रञ्ज है, पर वह काम ऐसे समयमें हुआ है, जब मैं अपने आपेमें न था। वह कागज चाहे जैसा हो, पर कुछ ही दिनोंमें उसकी बात जाहिर हो जायगी, और तब यह रहस्य भी प्रकट हो जायगा। मगर मुझे यह नहीं मालूम होता, कि वह शख्स कौन है, जिसपर मैं बेहद नाराज हूं, और जो मेरी माफी पानेके लिये इतना ख्वाहिशमन्द है———"

छः हजार गिन्नियोंका इनाम मिल जाय, तो मैं वह छःओं हजार गिन्निया आपके हवाले कर दूं।"

प्रिन्स,—"मान लो, मै अपनी पारीके मुताबिक विनोम्रिया ड्रिलौनी के पास जाऊं और उसकी कृपादृष्टि भी मेरे ऊपर हो जाय, तो मैं तुम्हें अपनी जगहमें कैसे खड़ा कर दूंगा ?"

मारक्विस,—"इसका भार मेरे ऊपर छोड़ दीजिये, सिर्फ यह वादा कीजिये, कि आप और विनोम्रियामें जो कुछ बातचीत हो, वह सब मुझसे कह दें। और अगर आप उसके दिलपर असर पैदा कर सकें और उसे अपने तावेमें रखनेकी शर्तोंका विचार करनेके लिये उसे राजी कर सकें——"

प्रिन्स,—"मैं कसम खाकर कहता हूं, कि विनोम्रिया और मुझमें जो बातचीत होगी, रत्ती रत्ती तुमसे कह दूंगा। इसके सिवाय, यदि उससे मुझे जरा भी साहस मिलेगा, तो उसे वशमें लानेके लिये मैं यथाशक्ति आपकी सहायता भी करूंगा।"

मारक्विस,—"अच्छी बात है। इसके बदले मैं आपको एकबार फिर उस रहस्यमयी रमणीसे मिला देनेके लिये जी-जानसे कोशिश करूंगा।"

प्रिन्स,—"अच्छा, खबरदार जिसमें इस बातको कोई न जाने।"

मारक्विस,—"इससे आप निश्चिन्त रहें।"

इधर प्रिन्स और मारक्विस अपना अपना मनसूबा बांध रहे थे, और उधर गाड़ी सनासन लण्डनकी ओर दौड़ी जा रही थी।

॥ २४ वीं संख्या समाप्त ॥



इसके आगेका हाल जाननेके लिये २५ संख्या मगा देखिये।

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इस उपन्यासमें भारत-सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही मनोरञ्जक घटनाओंका सचित्र बयान किया गया है। सम्राट अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इसकन्दर" का गुप्त भावसे "ईदलगढ़-दुर्ग" पर चढ़ाई करना, भयानक अंधेरी रातके समय चुपचाप दुर्गपर अधिकार जमा कर दुर्गाधिपति 'सोहानी' को कैद करनेकी चेष्टा करना, सोहानीकी वीर-पत्नी "गुलशन" की अपूर्व रूप लावण्यपर मुग्ध हो कार्त्तव्य-विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इसकन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इसकन्दरका पीछा करना, सोहानीका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना, गुलशनको फरियाद पर अकबरके दरबारसे इसकन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, गुलशनकी सहायतासे इसकन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति "बाजबहादुर" को गुप्त घातकके आक्रमणसे बचाना, बाज बहादुरका इसकन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इसकन्दरका मोहित होना, बहुत मुसीबतोंके बाद दोनोंमें विवाह होना आदि बहुतसी अपूर्व घटनायें दी गयी है। सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ २) रुपया।



राजसिंह सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इसमें वीर-शिरोमणि महाराणा राजसिंह और सम्राट औरङ्गजेबके उस भीषण युद्धका वर्णन है, जिसमें लक्ष्याधिक वीरोंकी प्राणाहुति हुई थी। इस महायुद्धमें राजसिंहने दुर्दान्त औरङ्गजेबको बड़ी बहादुरीसे परास्त कर 'रूप नगर' की राज कन्या "चञ्चल-कुमारी" की धर्म रक्षा की थी। दाम १॥)

आर० एल० धर्म्मन एण्ड कों०, २७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

❋ जासूसी कुत्ता ❋

सचित्र जासूसी उपन्यास।



पाठक! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। इसमें ग्राडी नामक एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदेपर पहुंचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही इस उपन्यासते यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य नेकचलनी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। हमारा एकान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी शौक न हो, तो भी आप इसे अवश्य पढ़ें, आपको पछताना न पड़ेगा, क्योंकि इसमें भाग्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि उसे पढ़कर निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें हाफटोन फोटोके सुन्दर २ चित्र भी दिये हैं। मूल्य सिर्फ १॥)

❈ गुलबदन ❧ रजिया बेगम ❈

बड़ाही अनूठा थियेट्रिकल उपन्यास।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नव्वाब सफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइयां, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका बीच बीचमें बाधा देना। ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको बागसे उड़ा लेजाना। एकाएक पुलका टूट जाना और गुलबदनका नदीमें गिर पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम सिर्फ १) रु०

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

'बर्म्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

कोहेनूर

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आपको राजपूतों और मुसलमानोंकी भयानक लड़ाइयोंका आनन्द लेना हो, यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेब" के इतिहास-प्रसिद्ध भीषण संग्रामका रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप उदयपुरके युवराज "अमरसिंह" की वीरता, धीरता और बुद्धिमत्ताका पूर्णपरिचय पाया चाहते हों, यदि आप "अरावली-उपत्यका" में होने वाले लक्षाधिक क्षत्रिय वीरों और दुर्दान्त मुसलमानोंका घोर संग्राम देखा चाहते हों, यदि आप वीर-शिरोमणि "काला पहाड़" राजकुमार "केशरीसिंह" आदि मुट्ठीभर क्षत्रिय वीरोंका असंख्य मुसलमानोंके साथ आश्चर्यजनक युद्ध



दृष्टिगोचर किया चाहते हों, यदि आप वीर-कन्या और वीर-पत्नी "विलासकुमारी" की आदर्श पति-भक्तिका ज्वलन्त प्रमाण पाया चाहते हों, यदि आप अम्बरकी राजकुमारी स्वर्गीय सुन्दरी "अम्बालिका" का प्रकृतप्रेम हृदयङ्गम किया चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर पांच चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल १॥) सजिल्द २) रुपया।

नकली रानी–इसमें एक डाकू-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी ही बारीकीसे किया गया है। साथही बहुतसे गुप्त रहस्य खोले गये हैं, दाम सिर्फ १)

जासूसी कहानियां–यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) साढ़े आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नीलाम घरका रहस्य, (४) घुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर चोर चतुर। दाम सिर्फ ॥) आना।

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

घटना चक्र

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिको पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमब्रोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे सताये जाकर अपनी अद्वितीय सुन्दरी स्त्री "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके शत्रु-दलने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार भारतके सरकारी जासूस "कृष्णजी रघुपन्त" ने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षा की, किस प्रकार शत्रुओंके जासूस लार्ड पेमब्रोकके दाई नौकरों तकमें घुस गये, किस प्रकार दुष्टोंके षड्यन्त्रसे लार्ड पेमब्रोकको भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो इङ्गलैंड



जाना पड़ा, किस प्रकार रास्तेमें शत्रुओंके जहाजने उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी स्त्री "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार जासूस रघुपन्तने समुद्रमें कूदकर उनकी स्त्रीका उद्धार किया, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे "लार्ड पेमब्रोक" को अदालतसे रिहाई मिली, किस प्रकार उनके खूनके प्यासे शत्रु गिरफ्तार किये गये, आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। पुस्तक बड़ी और सचित्र है। दाम बेजिल्द २।) रुपया, जिल्द बंधीका २॥।) रुपया।

शोणित-चक्र

—ः जासूसी उपन्यास ः—

इस उपन्यासमें "शोणित-चक्र" नामक एक अद्भुत रहस्यका ऐसा अनूठा भेद खोला गया है, कि पढ़कर आप दङ्ग हो जायगे और बार बार ऐसे ही उपन्यास पढ़नेकी इच्छा प्रकट करेंगे। यह जासूसी ढङ्गका अनूठा उपन्यास है, २।)

अमीरअली ठग

सचित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक महोदयो! आपने शायद पुराने जमानेके भयानक ठगोंका हाल



सुना होगा। 'इष्ट इण्डिया कम्पनी' के शासनकालमें इन ठगोंका बड़ा ही दौर-दौरा था। ठगोंके जोर-जुल्मसे उस समय सर्कार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थीं! ठगोंके बड़े बड़े दल राजसी ठाठ-बाटसे दौरा करते फिरते थे और उनके गोइन्दे मुसाफिरोंको बर्गला (बहका) कर अपने गरोहमें ले आते थे। फिर ठग लोग विचित्र ढङ्गसे रुमालके झटकेसे बातकी बातमें उन्हें फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे।

मुसाफिरोंके लिये वह समय बड़ा ही भयानक था। डाकुओंके हाथसे मुसाफिर लोग बच भी जाते थे, मगर ठगोंके चंगुलसे निकल भागना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव था। इन्हीं ठगोंके "अमीरअली" नामक सर्दारने कम्पनी बहादुरसे मिलकर हजारों ठगोंको फांसी दिलवा दी और तभीसे ठगोंकी जड़ भारतसे एक प्रकारसे कट गयी। यह उपन्यास बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है और हाफटोन फोटोकी बड़ी बड़ी कई तस्वीरें लगाकर खूब ही सजा दिया गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

कैदीकी करामात

सचित्र जासूसी उपन्यास।

यह एक बड़ा ही वैचित्र्यपूर्ण खिटेकाटिभ उपन्यास है, लण्डनके मशहूर जासूस मि० राबर्ट ब्रुकने फ्रान्सके प्रसिद्ध विद्रोही और डाकू "हेनरी गेरक" को कितनी ही बार बड़ी बहादुरीके साथ गिरफ्तार किया था, पर फिर भी गेरक बराबर उनकी आखोंमें धूल झोंक भागता रहा। इस डाकूने सारे यूरोपमें हलचल मचा रखी थी। यहांतक कि स्वयम मिस्टर ब्रुकको भी कई बार इससे लाञ्छित होना पड़ा। अन्तमें ब्रुकने किस तरह इसे पकड़ कर सजा दिलवाई, यह पढ़कर आप दङ्ग हो जायेंगे—दाम १॥) रु०

आदर्श चाची

शिक्षाप्रद सचित्र गार्हस्थ उपन्यास।

हिन्दी-संसारमें यह पहला ही उपन्यास छपा है, जिससे समाज या देशका वास्तविक उपकार हो सकता है। यों तो सैकड़ों उपन्यास छप चुके हैं, जिनसे मनोरञ्जन या ऐतिहासिक बातें जाननेके सिवा विशेष कुछ लाभ नहीं हुआ, किन्तु हमें पूर्ण आशा है, कि इस उपन्यासमें हिन्दू-जातिका सच्चा उपकार होगा। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, सभी इस उपन्याससे मनोरञ्जनके साथ ही साथ आदर्श शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। प्राय देखा गया है, कि स्त्रियोंकी अनबनसे बड़े बड़े सुखी, समृद्धिशाली परिवार तहस-नहस हो गये हैं, बाप बेटेसे छूट गया है, भाई भाईसे विरक्त हो गयी है, चाचा भतीजेमें बैर छा गया है और बना बनाया लाखका घर खाकमें मिल गया है। यह उपन्यास इसी प्रकारकी घटनाओंको सामने रखकर लिखा गया है। एकबार इस उपन्यासको पढ लेनेसे आपसके वैर-भाव और दुराग्रह-द्वेषका सदाके लिये नाश हो जाता है। हाफटोन फोटोके छपे कई चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल १) है।



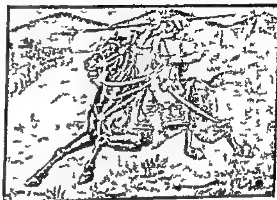
वीर-चरितावली

इसमें निम्नलिखित वीर-वीराङ्गनाओंकी १६ वीरकहानियां दी गयी हैं, (१) रानी दुर्गावती, (२) रानी लक्ष्मीबाई, (३) जवाहर बाई, (४) कर्मदेवी, (५) वीर-धात्री पन्ना, (६) वीर-बालक और वीर-नारी, (७) राजकुमार चण्ड, (८) पृथ्वीराज, (९) बादलचन्द, (१०) रायमल्ल (११) सिक्ख वीर रणजीतसिंह (१२) हम्मीर, (१३) महाराणा प्रतापसिंह, (१४) छत्रपति शिवाजी, (१५) राणा सग्रामसिंह, (१६) राजर्षि उम्मेदसिंह प्रभृति। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ ॥।) आना।

दुर्गादास

सचित्र ऐतिहासिक नाटक ।

बङ्ग-साहित्यमें जिस नाटककी धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें जिस नाटकके अनेकों संस्करण हाथों-हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकके खेलते समय दर्शकोंको स्थान मिलना कठिन हो जाता था, हिन्दीके बड़े बड़े पुस्तक-विक्रेता जिस नाटकका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करनेके लिये जी-जानसे कोशिश कर रहे थे, वही



सुप्रसिद्ध वीर-रस-प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें सबसे पहले प्रकाशित कर हम मारे आनन्दके फूले नहीं समाते। वास्तवमें यह नाटक नाटकोंका 'मुकुटमणि' है। जिसने इसे एकबार पढ़ा या देखा, वह और नाटकोंको भूल गया। इसमें मेवाड़के प्रसिद्ध वीर 'दुर्गादास' सम्राट "औरङ्गजेब" महाराणा राजसिंह, भीमसिंह, राणा उदयसिंह, शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, आजम तथा कामबख्श प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया है। मुगल-रमणियों और राजपूत-ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही बारीकीसे खींचा गया है। बीच बीचमें अच्छे अच्छे गाने देकर नाटककी शोभा और भी बढ़ा दी गयी है। हम दावेके साथ कहते हैं, कि ऐसा अनूठा नाटक हिन्दीमें अबतक नहीं था। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहली बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोके छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गीन चित्र भी दिये हैं। दाम सिर्फ १॥) रुपया।

डाकू भाई

यह उपन्यास इतना अद्भुत, आश्चर्य्यजनक और जटिल घटनाओंसे पूर्ण है, कि पढ़कर रोयें खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ।ं) आना

'वर्म्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

डबल जासूस

-: सचित्र जासूसी उपन्यास :-

इसमें नरेन्द्र और सुरेन्द्र नामक एक ही सूरत-शकलके दो नामी जासूसोंकी बड़ीही आश्चर्यजनक कार्रवाइयोंका वर्णन किया गया है, जिसके पढ़नेसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह उपन्यास घटनाका खजाना, कौतुकका आगार और जासूसी करामातोंका भण्डार है। दोनों जासूसोंने किस बहादुरीसे चोरों, दगाबाजों और खूनियोंको गिरफ्तार कर "सुशीला" और "मनोरमा" नाम्नी दो सम्भ्रान्त रमणियोंको बचाया है, कि मुंहसे 'वाह वाह' निकल पड़ती है। कलकतिया चोरोंके तिलस्मी अड्डेका अद्भुत रहस्य, नाव पर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, कम्पनीबागमें भीषण तमचेबाजी, एक वीरान खण्डहरमें दुष्टोंके दलकी विचित्र गिरफ्तारी, मुर्दाघरमें बेनामी लाशका अनूठे ढङ्गसे पहचाना जाना, नदीके किनारे दो असली और दो नकली जासूसोंका द्वन्द्व युद्ध,— आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग न रह जायं तो बात ही क्या है? इसमें 'सुशीला' नाम्नी सुन्दरीका एक तिनरङ्गा चित्र देखने ही योग्य है। इसके अलावा और भी सुन्दर सुन्दर १ चित्र दिये गये हैं। इतना कुछ होनेपर भी दाम १।)



शशिबाला

शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास।

इसमें एक सच्चरित्रा स्त्रीने किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूर-दर्शितासे अपने कुपथगामी स्वामी और कितने ही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, यह पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलस्मी मठ, जोगिनीकी अद्भुत चातुरी, वीरसेनकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय सुन्दरता आदिका हाल पढ़कर आप अवाक् रह जायंगे। यह स्त्री, पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ ।=) आना।

आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०, २७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

संख्या २५

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज आफ दी कोर्ट आफ लण्डन।

पांचवां खण्ड।

आर० एल० वर्म्मन द्वारा

कलकत्तासे प्रकाशित।



कलकत्ता ४०१।२ अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मन प्रेस" में

रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

सं० १९७२ वि[illegible]य।

प्रथम बार १०००]

[मूल्य प्रति संख्या ॥)

संख्या २५

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज आफ दी कोर्ट आफ लण्डन।

दूसरा भाग

पांचवां खण्ड

नवां परिच्छेद ।

सुइसा ।

अब हम एकबार फिर कण्टरबरीके पुराने शहरके पासवाले उस खूबसूरत मकानमें चलते हैं, जिसमें इस पुस्तकके प्रारम्भमें ष्टैनली परिवारका परिचय दिया जा चुका है।

हम पहले ही कह आये हैं, कि छोटी बहिन सुइसा एक ऐसी सुन्दरी थी, कि जिसकी मन मोहिनी छवि और भोलेपनको देख लोगोंके मनमें आनन्द उमड़ आता था, और साफ, पाक तथा पाक के खयालके सिवा मनमें और किसी तरहका विचार ही न उठता था। सुइसा जैसी सीधी सादी लड़कीको देखकर अगर किसीके

मनमें बुरा खयाल उठता हो, तो समझना चाहिये, कि उस आदमीका स्वभाव अतिशय भयानक तथा दुष्ट होगा। बड़े भारी कामी पुरुषके सिवा और कोई लुइसाको बुरी दृष्टिसे देख ही नहीं सकता था।

उसकी उम्र उन्नीस वर्षसे कुछ अधिक थी। ऐसी कमसिन भोलीभाली और नेक-मिजाज सुन्दरीके चिकने कपालपर दुःखकी एक रेखा भी देखना मानो परमेश्वरको पसन्द न था। उसके निर्दोष सुन्दर मुखपर कुमारपनका तेज एवं लज्जापूर्ण भीरुता विराजमान थी।

लुइसाका शरीर जैसा साचेढाल और सुन्दर था वैसा ही सराहनीय उसका स्वभाव भी था। वैसी अच्छी लड़की विरली ही देखनेमें आती है। वह लम्बी नहीं थी, पर परियों जैसी छरहरी देहके कारण वह अपने कदसे कुछ अधिक लम्बी दिखाई देती थी। छरहरा बदन रहने पर भी वह दुबली नहीं कही जा सकती थी। उसका शरीर गुदगुदा और मुलायम था। उसके मुखपर कामेच्छा वा कोमल अभिलाषाकी तनिक भी झलक न दिखाई देती थी। संक्षेपतः वह ऐसी लावण्यमयी सुन्दरी थी, कि उसके मुखपर कुमारपनकी निर्मलता और भोलापन देखनेकी इच्छा हमेशा बनी रहती थी।

कपालके ऊपर उसके सुनहरे भूरे बाल दो भागोंमें विभक्त हो गये थे। उसका रङ्ग गोरा था। गाल ठीक खिले हुए गुलाबके फूलकी नाईं गुलाबी न होने, पर भी पीले नहीं थे। उनका रङ्ग गुलाबकी नरम कलियों जैसा था जो उमङ्ग वा परिश्रमसे लाल हो उठते थे। उसके अरुण सरस अधर बहुत ही भले मालूम होते थे। धनुषाकार पतली भौंहें, गहरी नीली आखें, सुग्गोंकी ठोंठ जैसी नाक और गोल चिबुकसे उसका मुख बड़ा ही मनोहर दिखाई देता था।

उसके दाँत मोती जैसे चमकीले और खूबसूरत थे। गर्दन लम्बी और खूबसूरतीके साथ जरासी झुकी हुई थी। कन्धोंका चढाव उतार बहुत ही सजीला दिखाई देता था। हाथ भी बहुत सुडौल बने थे, जिनमें गावदुम उँगलियाँ और लाल नाखून बड़े ही सुहावने दीखते थे। और पाँव तथा गुल्फोंकी खूबसूरतीका तो कहना क्या है। कोई अच्छेसे अच्छा सङ्गतराश भी वैसे सुन्दर पाँव और गुल्फ नहीं गढ सकता।

ऐसी ही सुन्दरी लुद्रसा हैनली थी। ऐसी स्वर्गीय सुन्दरी तो नन्दन-काननमें रहनेके योग्य थी, न कि इस दुःखमय मर्त्यलोकमें वह दुनियाका छल कपट कुछ भी न जानती थी और भोग-विलासादिसे भी एकदम अनजान थी।

तो इस दुःखपूर्ण संसारमें उस खूबसूरत, भोलीभाली कमसिन लड़कीको रहनुमा करनेवाला कौन था? जीवनरूपी महासमुद्रमें, तिरती हुई उस कमजोर नौकाको उथले स्थान, जलमग्न पहाड़ और चोरबालूके खतरेसे सावधान कर देनेवाला कौन था? अफसोस। क्या खाड़ीके खतरनाक किनारेपर लगे फूलोंके बीचमें अबोध लड़का खुशीसे नहीं खेलता रहता? क्या चिड़िया उस फूलका रस नहीं चूस लेती, जिसकी डण्टीपर साँप आक्रमण करनेके लिये फन उठाये तय्यार रहता है?

* * * * *

लैरा और लुद्रसाको जुदा हुए लगभग दो महीने बीत गये थे। अपने दरवाजेपर गुलाब और मधुलतासे आच्छादित बरामदेके नीचे उन लोगोंके बिदाईका चुम्बन-आदान-प्रदान करनेके समयसे आठ लम्बे हफ्ते गुजर चुके थे। इस बीचमें लुद्रसापर कैसी बीती थी, इसका जिक्र हम आगे चलकर करेंगे।

पाठकोंको यह बात समझानेके लिये हमें उस समयका जिक्र

करना होगा, जिस समय दोनों बहिनोंकी जुदाई हुई थी, और जिसका हाल इस पुस्तकके प्रथम प्रारम्भिक परिच्छेदमें लिखा जा चुका है।

हीराके लण्डन जानेके दूसरे दिन सुबहके वक्त लुइसा बडी बेचैनीसे पोष्टमैनकी राह देख रही थी। वह जानती थी, कि हररोज दश बजे वह इस राहसे जाता है, पर उससे एक घण्टा पहले ही, यानी ठीक नौ बजे ही वह बागके फाटकपर आकर उस ओर देखने लगी, जिधरसे पोष्टमैन आता था। आखिर वह आया, पर क्या उसके पास लुइसाकी कोई चिट्ठी थी? ओह! उसे आते देख उस की छाती कैसी जोर जोरसे धडकने लगी। देखिये! वह सडकको पारकर अपने हाथकी चिट्ठियोंमेंसे एक चिट्ठी छाट लेता है और उसकी ओर आता है। और एक मिनट—सिर्फ एक मिनट—पर वह मिनट कैसी चिन्ता और कैसे सन्देहका हो उठा। अन्तमें उसे वह प्यारी—बहुत ही प्यारी चिट्ठी मिल गयी।

तुरत ही उसने अपनी प्यारी बहिनका अक्षर पहचान लिया और धडकती हुई छाती तथा कापते हुए हाथसे चिट्ठी खोल डाली। उसमें एक हुण्डी थी। हीराकी कामयाबीके इस पक्के सबूतका उसने कुछ भी खयाल न किया, उसे सिर्फ यह चिन्ता लगी थी, कि उसकी बहिन जल्द ही घर लौट आवेगी, या नहीं, इसीसे वह जल्दी जल्दी चिट्ठी पढने लगी। पाठकोंकी जानकारीके लिये नीचे हम उस चिट्ठीकी पूरी नकल लिखे देते हैं :—

"लण्डन, १७ वीं जुलाई, १८१४ ई०।

"मेरी अत्यन्त प्यारी लुइसा! मैं कुशलपूर्वक, अच्छी तरह और उतनी ही खुश हूं, जितना कि परदेशमें रहना सम्भव है। परमेश्वर करें, तुम इससे ज्यादा खुश रहो, मेरी यही इच्छा है और तुम इसके योग्य भी हो। आज बहुत कुछ लिखनेकी फुरसत नहीं है,

थोड़े हीमें मैं तुम्हारी चिन्ताको दूर कर दिया चाहती हूं, क्योंकि मैं जानती हूं, कि तुम मेरे लिये अवश्य ही चिन्तित होगो। वेकफोर्डसे मुलाकात हुई है। वे बड़े ही दयालु, मिलनसार और सज्जन पुरुष हैं, तथा हमलोगोंकी भलाई दिलसे चाहते हैं। भूलसे उन्होंने हमलोगोंको हुण्डी न सकारी थी, उससे हम लोगोंको जो तकलीफ और चिन्ता हुई थी, उसके लिये बहुत अफसोस जाहिर करके उन्होंने तुम्हारे पास भेज देनेके लिये मुझे सौ पाउण्डका एक बैङ्क नोट दिया है, जो इसी चिट्ठीके साथ जाता है। अभी वे मुझे घर भेजना नहीं चाहते। उनकी इच्छा है, कि मैं कुछ दिन उनके और उनकी स्त्रीके साथ रहूं। उनकी बात कैसे टालूं ? क्योंकि वे हमलोगोंके पूरे शुभचिन्तक और सच्चे सरपरस्त हैं। उनके ही धनसे हमलोगोंका गुजारा होता है। हम लोगोंके स्वर्गीय पिता माता एवं दुःखिनी फूफीकी पुरानी दोस्तीका खयाल करके ही वे हमलोगोंका उपकार कर रहे हैं। हम लोगोंका उनपर कोई वास्तविक दावा नहीं है, इसलिये मेरी प्यारी बहिन, मैं किस तरह उनकी बात टाल दूं ? तुम्हारी और अपनी भलाईके खयालसे ही उनकी बात मानकर कुछ दिनोंतक उनके यहां रहनेके लिये मैं लाचार हुई हूं।

"मुझे विश्वास है, मेरी प्यारी लुई, कि तुम विपदकी मारी फूफीकी सेवा-सुश्रूषा मन लगाकर करती रहोगी। अगर मैं उनसे अपना सलाम कहनेको कहूं, तो कैसे कहूं, क्योंकि उनकी बुद्धि तो लोप हो गई है, वे समझेंगी ही क्या, तौ भी उनके मङ्गलार्थ परमेश्वरसे प्रार्थना करती रहूंगी। मैं यह खयाल करके बहुत ही खुश हूं, कि तुम उनकी सेवा-टहल करनेमें कभी चूकोगी ही नहीं।

"हां, यह कहना तो भूल ही गई थी, कि मिष्टर वेकफोर्डने अपना पुराना मकान बदल दिया है। वे अब हैनोवर-स्क्वायरमें

उठकर नं० १२ ब्रैटन-ष्ट्रीटमें आ बसे हैं। अब इसी पतेसे मेरे पास चिट्ठी भेजना। तुम्हारी चिट्ठीके लिये मेरे दिलमें बड़ी ही उत्कण्ठा लगी हुई है। लौटती डाकसे तुम्हारी चिट्ठीको राह देखूंगी।

"तुम्हारी सदाकी प्यारी बहिन,
-क्लैरा ष्टैनली।"

इस चिट्ठीको पढ़कर लुइसाकी आँखसे मिश्रित आनन्द एवं शोकके आँसू टपक पड़े,—आनन्द क्लैराके सफलमनोरथ होने तथा लण्डनमें सुखसे रहनेका हुआ और शोक उससे और कुछ दिन मुलाकात न होनेका। जवानीका समय ऐसा नहीं है, जिसमें शोकका पलड़ा सहज ही आनन्दके पलड़ेसे भारी पड़ जाय, इसलिये चटपट आसू पोंछकर लुइसा बहिनकी चिट्ठीका जवाब लिखनेके लिये बैठ गई।

प्रायः दोपहरतक लुइसा बैठी चिट्ठी लिखती रही। उसमें उसने बहुत स्नेह और प्यारकी बातें लिखी। चिट्ठी खतम करके उसने मन ही मन कहा, कि शहरमें जाकर इसे अपने ही हाथसे डाकघरमें छोड़ भी आऊंगी और उधर होसे बैङ्क—नोट—का भुगतान भी लेती आऊंगी।

लुइसा बहुधा मकानसे बाहर नहीं जाती थी। उसे जब यह विश्वास हो जाता, कि मेरी नाम्नी-दाई फूफीको सम्हाल कर लेगी, तभी वह बाहर निकलती थी, नहीं तो नहीं। मेरी अच्छे स्वभावकी, ईमानदार, विश्वासनीया, भोलीभाली पर गँवार औरत थी। चार पाँच वर्षसे वह लुइसाके यहा नौकर थी और अपना काम खूब मन लगाकर करती थी। खासकर वह लुइसासे बहुत हिली हुई थी और उसे प्यार भी खूब करती थी।

सादे मगर खूबसूरत लिबासमें लुइसा घरसे बाहर हुई और प्राय' पन्द्रह मिनटमें कण्टरबरीके पुराने शहरमें पहुँच गई। पहले

तो वह सीधी पोष्टआफिसकी ओर गई। फिर वहा चिठ्ठी छोड़कर उस बङ्कमें गई, जिसका हवाला प्रथम प्रारम्भिक परिच्छेदमें दिया जा चुका है।

बैङ्कवालेसे उसने अपनी बहिनकी कामयाबीकी खुशखबरी सुनाई, जिसके लिये उसने उसे बधाई दी। इसके बाद भुगतान लेकर लुइसा वहासे चल पड़ी। उसी समय एक काला कपड़ा पहने हुआ पादड़ी भी चिक भुना रहा था। चटपट रुपये लेकर वह लुइसाके पीछे हो लिया। दो तीन सड़को गलियोंतक वह चुपचाप उसके पीछे पीछे चला गया। आखिर लुइसा एक पनसारीकी दूकानमें, जहा हमेशा सौदा खरीदती थी, घुस गई। कुछ देरके बाद जब वह सौदा खरीदकर दूकानसे निकली, तो सामने उसी पादड़ीको खड़े पाया, जो बैङ्कमें चिक भुना रहा था। उसने अदबके साथ लुइसाकी राह छोड़ दी, पर दुकानमें न जाकर उससे कहा,—"मेरा कुसूर माफ हो, मैं कुछ दोस्ताना सलाह दिया चाहता हूं। अभी बैङ्कमें मैंने तुम्हें अच्छी रकम लेते देखा है। तुमने कई छोटे छोटे बैङ्क-नोट लेकर हाथवाली पाकेट बुकमें रख लिये हैं। शायद यह कहीं गिर पड़े वा किसी दूकानमें छूट जाय, इस लिये क्या इसे सम्हालकर रख लेना अच्छा नहीं है?"

इस सलाहको दोस्ताना और निस्वार्थ समझकर लुइसाने उसे धन्यवाद दिया, फिर पाकेट-बुकको अच्छी तरह सम्हाल रखनेके बाद उसने सिर झुकाकर पादड़ीको सलाम किया और अपनी राह ली। पर कुछ ही देरमें वह आदमी फिर लुइसाके पास आ गया। अब उसने ऐसे शब्दोंमें और ऐसे ढङ्गसे, जिससे उदारता और नेकनीयतीका परिचय पाया जाता था, लुइसासे कहा, कि शायद हमलोग एक ही ओर जा रहे हैं। अगर तुम्हें कोई उज्र न हो, तो मैं तुम्हारे साथ वहातक चलूं जहातक, कि हमलोगोंकी राह एक है।

नातजुर्बेकार होनेपर भी फूफोकी शिक्षा, अपनी विद्वत्ता, योग्यता एवं बुद्धिमत्तासे लुइसा पहचान गयी, कि इस पादड़ीकी बात बत्तमीज और अनुचित न होनेपर भी अनोखी है; इसलिये उसने गौरवकी साथ कहा,—"इस कृपाके लिये धन्यवाद है, महाशय। पर अभी मुझे कई दूकानोंमें सौदा खरीदना है।" इतना कह वह चट एक दूकानमें चली गई।

दूकानमें जाकर लुइसा सौदा खरीदनेमें लग गई इससे अभी जो घटना घटी थी उसको बात एकदम भूल गई। पर वह पादड़ी कुछ दूरपर खड़ा होकर उसकी बाट जोहने लगा।

उस पादड़ीकी उम्र लगभग चालीस वर्षकी होगी। अगर उसके चेहरेपर लम्पटता, छिछोरेपन और कुटिलताकी रेखा न पड़ी होती, तो वह बहुत ही खूबसूरत दिखाई देता। उसका मुख मनोहर नहीं—अप्रिय था, पर लोग समझते थे, कि बहुत विद्याभ्यास एवं चिन्तासे उसका चेहरा ऐसा बुरा मालूम होता है। कण्टरबरीमें उसे आये अभी बहुत दिन नहीं हुए थे, पर चूंकि वह बड़े बड़े आदमियोंकी शिफारिशसे अपनी जगहपर बहाल हुआ था, इसलिये बिना उसकी सच्चरित्रताका प्रत्यक्ष प्रमाण पाये ही खुशामदियोंने उसकी विद्वत्ता, धर्मशीलता और सच्चरित्रताका ढिंढोरा पीट दिया था; यह बात तो बहुत जल्द फैल गई थी, कि वह बहुत अच्छा बोलनेवाला उपदेशक है। बहुत अच्छा उपदेश करना प्रायः साधुताका प्रमाण माना जाता है। चूंकि वह गुफाओं, तहखानों, और पुराने गिर्जोंके मठोंकी अनोखी अनोखी चीजोंकी अक्सर जाच किया करता था, इससे यह बात मशहूर हो गई थी, कि वह विद्याव्यसनी और खोज करनेवाला मनुष्य है। इसलिये कण्टरबरीमें अच्छी तरह उसकी श्रद्धा-भक्ति और आदर-सम्मान होने लगा था।

वह अविवाहित था और गिर्जेके पास एक बड़े मकानमें रहता

था। वह मकान गिर्जेवालोंके ही अधिकारमें था और एक तरहके आँगनमें बना हुआ था। उसमें जाने आनेके दो रास्ते थे, एक मेहराबदार दरवाजा और दूसरा फाटक। आँगन और मकान दोनों ही मनहूस दिखाई देते थे। लोग कहते थे, कि उसमें भूत रहते हैं। अगर यह बात सच हो, कि मरे हुए आदमी फिर दुनियामें आते हैं, तो उस मकानमें भूतोंका रहना कोई आश्चर्यकी बात नहीं थी।

हम ऊपर कह आये हैं, कि उस पादड़ीका चेहरा खूबसूरत और शरीर लम्बा तथा गठीला था। उसकी आवाज बहुत अच्छी थी, इसलिये वह जिसतरह चाहता उसे काममें ला सकता था। धर्म्मोपदेश वा वार्त्तालापके गम्भीर विषयमें वह उसे बुलन्द और गहरी,—श्रोताओंके दिलपर असर पैदा करते समय मुलायम और रसीली,—धमकी देते वक्त खूब भारी और कड़कदार,—और दयालु गुरुकी नाईं शिक्षा देते समय उदार तथा कोमल बना लेता था।

वह आदमी, जिसने लुइसाको टोका था, ऐसा ही अनूठा था। वह एक जगह खड़ा होकर उसके दूसरी दूकानसे निकलनेकी राह देख रहा था। पाठक जानते हैं, कि लुइसा उसे बिल्कुल ही नहीं जानती थी, पर अगर वह अपना नाम बता देता, तो वह तुरत ही समझ जाती, कि वह हालहीका आया हुआ कण्टरबरीका एक नामी धर्म्मोपदेशक है, क्योंकि वह अपने कई मैली मुलाकातियोंसे उसका जिक्र सुन चुकी थी।

दूकानसे निकलनेपर जब लुइसाने उस पादड़ीको कुछ दूरपर खड़े देखा, तो उसे बहुत ताज्जुब और क्रोध हुआ। पहले तो वह इस विचारमें खड़ी हो गई, कि घर चलूं, या दूकानमें लौट आऊं? फिर उसने विचारा, कि यदि दूकानमें लौटकर असल हाल कहती

हूं, तो लोग अनेक तरहकी बातें कहेंगी, इसलिये घर चलना ही अच्छा है। यह सोचते ही वह चट सड़क पारकर दूसरी ओर चली गई। वह पादड़ी जिस जगह खड़ा था, उसी जगह एक दूकानकी खिड़कीमें रखी हुई धर्म्म पुस्तकके देखनेके मिससे खड़ा ही रह गया। इधर लुइसाने कदम बढ़ाया और सड़कको तयकर डेन जान नामक आनन्द बागमें जा पहुँची।

यह आनन्द-बाग एक घेरेके अन्दर बना हुआ था। उसमें घासके मैदान, सायेदार रास्ते बने थे और खूबसूरत फुलवारी लगी हुई थी। बीचमें एक ऊंचा टीला था, जिसपर चढ़नेके लिये घुमघुमौवा राह बनी हुई थी। इस राहके किनारे किनारे मेंहदीकी झाड़ी लगी हुई थी। टीलेकी चोटीपर सङ्गमर्मरका एक खूबसूरत स्तम्भ था, जिसके नीचे बैठनेके लिये कई बेञ्च रखे हुए थे। जो लोग हवा खाने वा वहांका सुन्दर दृश्य देखकर दिल बहलाने जाते थे, वे लोग उन्हीं बेंचोंपर बैठते थे।

इस बागके अन्दरसे होकर लुइसाका मकान नजदीक पड़ता था। वह वृक्षोंके बीचवाले सुहावने पथसे जा रही थी, कि पीछेसे किसीके झपटकर आनेकी आवाज सुनाई दी। उसे ऐसा मालूम हुआ, मानो कोई मुझे छूनेके लिये तेजीसे पैर बढ़ाये चला आ रहा है। अतएव उसने घूमकर देखा, तो उसी पादड़ीको अपने बगलमें पाया।

लुइसाके पास आकर उस पादड़ीने खुशामद भरी मीठी आवाजमें कहा,—"कुछ देर हुई मैंने कहा था न, कि हमलोगोंकी राह शायद एक ही है; मेरा कहना ठीक ही था। अब इजाजत दो, तो हिफाजतके लिये तुम्हारे साथ साथ चलूं—"

लुइसा,—(डरकर कांपती हुई आवाजमें) "माफ कीजिये। मैं अदबके साथ आपकी बात नामञ्जूर करती हूं——"

पादड़ी,—(गम्भीरता पूर्वक) "मैं धर्म्मयाजक हूं। तुम्हारे साथ

मेरा जाना अनुचित न दिखाई देगा। जब मैं दयावश यह बात कहता हूं, तो फिर तुम इसके माननेमें आगा-पीछा क्यों करती हो? मैं तुम जैसी कमसिन रमणीको अकेली जाते नहीं देख सकता।"

लुइसा,—(पादड़ीकी बात सुनकर ताज्जुबसे) "अकेली जानेमें डर ही क्या है, महाशय?"

पादड़ी,—"डर बहुत है। इस संसारमें पग पगपर लालच और खतरा है। भोलेभाले जीवोंको सावधान कर देना और अरक्षितोंकी रक्षा करना ही मेरा धर्म है।"

लुइसा,—(एक उदार और धार्म्मिक आदमीकी बात न मानने और खतरेकी बात सुननेसे डरकर) "महाशय! मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देती हूं।"

पादड़ी,—"तुम कमसिन और खूबसूरत हो। कमसिन और खूबसूरत औरतोंके साथ हमेशा छिपा हुआ खतरा लगा रहता है। तुम क्या समझती हो, कि धर्म्मोपदेशके आसनपर खड़े होकर ही शिक्षा देना मेरा काम है? नहीं,—अवस्थानुसार जब चेतावनी देनेकी आवश्यकता हो, तब मैं जोरसे भी सावधान कर सकता हूं और धीरेसे भी, इसीसे मैंने तुम्हें छेड़ा है। तुम्हारे चेहरेमें कुछ ऐसी बात पाई जाती है, कि तुम्हें अपनी लड़कीके समान माननेकी इच्छा होती है।"

यह सुन लुइसा बड़े पशोपेशमें पड़ गई। उसे कुछ भी न सूझता था, कि क्या कहे और क्या करे। वह बहुत बेचैन और घबराई हुई मालूम पड़ती थी। उसके मनमें दो तरहकी बातें उठ रही थीं,—एक तो यह कि ऐसे आदमीकी बात, जो आप ही आ गिरा है, कभी न सुनना,—और दूसरी यह कि उसकी सब बातें सच और निस्वार्थ हैं। जो हो, लुइसाने एकबार निगाह बचाकर उसकी ओर देखा, तो उसके चेहरेपर कुछ ऐसे निशानात पाये,

जिससे उसका डर और भी बढ़ गया। पर उस पादड़ीकी उदार और पितृवत दयालुताकीसी बात लूइसाके कानमें अबतक गूञ्ज रही थी। जो हो, उसके दिलमें एक तरहका अनिश्चित डर पैदा हो गया था, जिसे भ्रम समझनेपर भी वह दूर न कर सकती थी।

आखिर इस कठिनाईसे छुटकारा पानेके लिये कोई उपाय करना चाहिये, यह विचारकर उसने अपनी बुद्धिको स्थिर किया और कहा,—"अच्छा, क्या आप यह बतावेंगे, कि मेरे साथ किस तरहके खतरे लगे हुए हैं ?"

पादड़ी,—"पहले तुम यह बताओ, कि क्या तुम जानती हो, कि मैं कौन हूं ?"

लुइसा,—"नहीं, मैं नहीं जानती, कि आप कौन हैं, पर अनुमानसे मालूम होता है, कि पादड़ी हैं।"

पादड़ी,—"तुमने कण्टरबरी-गिर्जेके माननीय एवं पूजनीय पादड़ी बर्नर्ड आडलीका नाम सुना होगा ?"

लुइसा,—"जी हां, सुना है।"

पादड़ी,—"तो क्या अब तुम्हें विश्वास होगा, कि मैं सदअभिप्रायसे ही तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा हूं ?"

लुइसा,—"मैंने दूसरी बात नहीं समझी थी, पर आपने जो खतरेकी बात कही—"

पादड़ी,—"पहले मुझे यह बताओ, कि तुम कौन हो ? क्या तुम अपने पिता माताके साथ कहीं इसी जगह रहती हो ?—"

लुइसा,—(कांपती हुई आवाजसे) "दुःखकी बात है, कि मेरे पिता-माता जीवित नहीं हैं। मैं यहांसे थोड़ी ही दूरपर अपनी एक रिश्तेदारिनके साथ, जिसकी बुद्धि लोप और जबान बन्द हो गई है, रहती हूं। मेरी एक बहिन भी है, जिसे मैं बहुत प्यार करती हूं, वह आजकल लण्डनमें अपनी दोस्तोंसे मिलने गई है—"

पादडी,—(मरभूखे कौवेकी तरह निर्दोष लुइसाके सुन्दर मुख-को और लालचसे देखकर) "तो तुम अपनी दुःखित रिश्तेदारिनके साथ अकेली ही रहती हो ?"

लुइसा,—(शिर नीचाकर कांपती हुई आवाजसे) "हां, मैं फूफीके साथ अकेली ही रहती हूं ।"

पादडी,—"अच्छा, अब अपना नाम और स्थान बताओ, मित्रकी नाईं मैं तुम्हारी भलाई करूंगा ।"

इतना कहकर उसने सायेदार रास्तेमें इधर उधर देखा, जब वाहो कोई भी न दिखाई पडा, तो उसने चट लुइसाका हाथ पकड लिया। ठीक इसी समय पास हीके लतामण्डपसे एक खूबसूरत नौजवान निकल आया और लाल लाल आंखोंसे पाद-डीकी ओर देखने लगा ।

उसे देखते ही लुइसाके मुंहसे डर और ताज्जुबकी एक धीमी चीख निकल गई। उधर उस नौजवानको पहचानकर पादडी भी बेचैनीसे चिल्ला उठा ।

नौजवान,—(क्रोधसे पादडीकी ओर देखता हुआ) "मिष्टर आडलो। तुम्हारी मित्रतासे इस रमणीको कोई भलाई नहीं हो सकती। मेरी बात समझते हो न ?"

पादडी,—(मिन्नतके तौरपर) "मेरे प्यारे मिष्टर लौफटस ! आप मेरे साथ गैर-इन्साफी कर रहे हैं ।"

नौजवान,—(अभिमानपूर्ण क्रोधसे) "बस बस। मैं तुम्हें अच्छी तरह जानता हूं। मठकी घटनाको याद करो और यहांसे दूर हो !"

इतना सुनते ही पादडीके मुखपर काले बादल जैसी उदासी छा गई। फिर घोर घृणासे उस नौजवानकी ओर देखता हुआ वह वहांसे फौरन गायब होगया ।

दशवां परिच्छेद ।

जोसीलिन ।

जिस छोटीसी घटनासे बर्नर्ड आडली लुइसाको छोडकर भाग गया और मिष्टर लौफटस उसके पास रह गये, उसके घटनेमें मुश्किलसे एक मिनट लगा होगा, पर इस कार्रवाईको देखकर लुइसाको बहुत ही ताज्जुब हुआ। यद्यपि उसने मिष्टर लौफटसकी मठवाली बात अच्छी तरह नहीं सुनी थी, तौ भी उसे यह साफ मालूम हो गया, कि बर्नर्ड आडलीपर मि० लौफटसका पूरा रोब छाया हुआ है।

पादड़ीसे बहुत देरतक सताई जानेके कारण लुइसा कांप रही थी। उसका चेहरा मुर्दे जैसा पीला पड गया, ऐसा जान पड़ता था, कि वह मूर्छित होकर गिरा ही चाहती है, इतनेमें मिष्टर लौफटसने झपटकर उसे पकड लिया और धीरे धीरे लेजाकर उसी बेञ्चपर बैठा दिया, जिसपर पहले वे खुद बैठे हुए थे। इसके बाद वे उसके सामने खडे खडे मन स्थिर करनेका अनुरोध करने लगे।

उनके हावभाव और बोलीमें कुछ ऐसा असर करनेवाली—ऐसी गम्भीर सहानुभूति सूचक—ऐसी विश्वास दिलानेवाली बात थी, कि लुइसाको मालूम हुआ, मानो वे उसके बहुत दिनोंके अच्छी तरह जाने-पहचाने पुराने दोस्त हों। उनकी बात सुन उसने एक बार आंख उठाकर उनकी ओर कृतज्ञताकी दृष्टिसे देखा। यद्यपि अभी उसका मन गोलमालमें ही था, अच्छी तरह ठिकानेपर न आया था, तौ भी उसने समझा, कि बर्नर्ड आडलीसे पिण्ड छुडाकर मिष्टर लौफटसने उसका बड़ा उपकार किया है।

मिष्टर लौफटसकी उम्र प्रायः बाईस तेईस वर्षकी होगी। वे बहुत खूबसूरत थे। उनका रंग खूब गोरा था और गालोंपर तन्दुरुस्तोकी सुर्खी छाई हुई थी। उनके औरतों जैसे काले, चिकने, लम्बे और रेशम जैसे घुंघराले बाल बड़े ही भले मालूम पड़ते थे। आंखे बड़ी, काली और चमकीली थी। उनका उन्नत ललाट उत्तम विचारोंका सुन्दर स्थान मालूम होता था। मुँह यहूदियों जैसा सुन्दर बना हुआ था। नाक सीधी और सुडौल थी। ऊपरका ओठ छोटा और झुका हुआ था। उनका मुख देखनेसे ऐसा प्रतीत होता था, मानो वे विद्या, बुद्धि, सचाई एवं खरेपनके अवतार हैं। वास्तवमें उनका मुँह बहुत ही सलोना और मनोहर था।"

वे बहुत लम्बे न थे। उनका छरहरा शरीर तीर जैसा सीधा था। यद्यपि उनके कपड़े कीमती थे, पर न तो उनमें चमक दमक थी और न ठाटबाट ही। उनका चरित्र उत्तम एवं मुग्ध करनेवाला था, जिसमें अभिमान, रुखाई, जाहिरदारी और बेतकल्लुफी छू तक नहीं गई थी।

ऐसे ही पुरुष जौसोलिन लौफटस थे। लुइसाके साथ उनकी जान-पहचानका जरिया अभी ऊपर कहा जा चुका है। कप्टरबरी गिर्जेके छोटे पादड़ीको उसके साथ जाते और उसका हाथ पकड़ते देख किस तरह वे उसकी मददपर आ पहुंचे थे? इसका हाल जैसा उन्होंने खुद लुइसासे बयान किया था, वैसा ही हम यहां लिखते हैं —

"जब मैं लतामण्डपमें बैठा हुआ था, तो सहसा मेरे कानमें यह बात पड़ी,—'अब अपना नाम और स्थान बताओ, मित्रकी नाईं मैं तुम्हारी भलाई करूंगा।' यह बोली मुझे पहचानी हुई सी मालूम हुई, इसलिये मैंने झुककर देखा, तो तुम्हारे पास पादड़ीको खड़े पाया। चूंकि उसके चालचलन और कार्रवाईका कुछ हाल मुझे

मालूम था, इसलिये मैंने समझा, कि उससे तुम्हारी कुछ भी भलाई नहीं हो सकती। सच पूछो तो वह बुरी नीयतसे ही तुम्हारी भलाई करनेकी बात कह रहा था। तुम्हारा भोलापन, निर्मलता एवं मनोहरता देखकर मुझे पूरा विश्वास हो गया, कि तुम जैसी दिखाई देती हो, वास्तवमें वैसी ही हो भी। बस इसी विश्वासपर उस अधम ठगसे तुम्हें बचानेके लिये मैं एकदम तुम्हारी मददपर आ पहुंचा।"

जौसीलिनने अपनी कार्रवाईका ऐसा ही बयान लुइसाको सुनाया था। उस दुष्ट पादड़ीसे बहुत देरतक सताई जाने और सहसा इस विचित्र घटनाके घट जानेसे उसकी तबीयत ऐसी खराब हो गई थी, कि जब जौसीलिनने उसे घरतक पहुचा देनेकी बात कही, तो वह चट राजी हो गई। जब लुइसा अपने बागके फाटकपर पहुच गई, तो जौसीलिन उसी जगह खड़े हो गये और बड़ी नम्रताके साथ उससे बिदा हुए, पर चलते वक्त उन्होंने लुइसासे दूसरे दिन आकर उसका कुशल-मङ्गल पूछनेकी आज्ञा माग ली।

दूसरे दिन मिष्टर लौफटस फिर आये, इसलिये उनकी जान पहचानकी मात्रा कुछ और बढ़ गई। उन्होंने लुइसाकी बनिस्बत दुनियाको कहीं ज्यादा देखा था, पर उस जानकारीसे उनकी कुछ खराबी न हुई थी। अभी वे वैसे ही कोरे और बेदाग बने हुए थे। ऐसे एकान्त नन्दन काननमें एक अप्सराका रहना देखकर उन्हें जितना आश्चर्य्य हुआ, उतना ही आनन्द भी हुआ। अभीतक उनकी मुलाकात अमीर और वज़हदार औरतोंसे ही हुई थी। बड़े बड़े अमीर-उमरावोंके आलीशान मकानोंमें ऐय्याश स्त्रियोंका रङ्गढङ्ग देखनेसे ही स्त्रियोंके चरित्रके बारेमें उनके जीमें सन्देह, और अविश्वास पैदा हो गया था, पर अब उन्हें मालूम हुआ, कि कवियोंके खयाल वा औपन्यासियोंकी रचनाकी नाई देवियो जैसी सुन्दर, सुशीला, बुद्धि-

मत्तो एव भोली-भाली निर्दोष रमणियां भी इस संसारकी शोभा बढ़ाती हैं।

लुइसाकाका कुशल-मङ्गल पूछनेके लिये जो जोसोलिन लोफटस आये थे, वह उनकी आखिरी मुलाकात नहीं थी। उन्होंने फिर दूसरे दिन आनेकी आज्ञा मांगी और वह उन्हें मिल गई, क्योंकि लुइसाको आपत्ति करनेका कोई कारण नहीं दिखाई दिया। अतएव दूसरी मुलाकात भी हुई। दूसरीसे तीसरी,—तीसरीसे चौथी—इसी तरह मुलाकात बढ़ती गई। इसी तरह धीरे धीरे उन लोगोंमें खूब मेल-जोल होगया और एक दूसरेसे अच्छी तरह परिचित हो गये। अब दोनों बागमें एक साथ टहलने लगे। कुछ ही दिनोंमें जौसो-लिन लुइसाके बागमें लगी छोटे छोटे पौधोंकी देखभाल करने और फूलोंके बांधनेमें लुइसाको मदद देने लगे। फिर पास होके जखोरेसे वे कुछ नये नये पौधे ले आये और उन्हें अपने ही हाथसे लगा भी दिया। यह काम उन्होंने अपनी जिन्दगीमें पहले ही पहल किया था।

जौसोलिन गाने बजाने में बड़े निपुण थे, इसलिये लुइसा और वे दोनों एक साथ गाते बजाते भी थे। मकानमें एक पियानो बाजा था। हम पहले ही कह आये हैं, कि लुइसाकी फूफीने अपनी दोनों भतीजियोंको अच्छी शिक्षा देने एवं सर्वगुण सम्पन्न बनानेमें कोई बात उठा न रखी थी। गाने बजानेके सिवाय जौसोलिन अच्छे चित्रकार भी थे, इसीलिये नकशा खींचनेमें वे लुइसाको खासी मदद दिया करते थे। इस तरह जब उनकी मित्रता बढ़ रही थी, तब जौसोलिन उसके लिये गाने बजाने की नई नई किताबें और नकशे खरीद लाते और साफ दिलसे उसको नजर करते, ऐसे आदरकी चीज लेनेमें वह भी कुछ आपत्ति न करती थी। असल बात यह है, कि उन दोनोंमें भाई बहिन जैसा पवित्र स्नेह हो गया था।

इसी तरह कई हफ्ते गुजर गये। इस बीचमें क्लैरा और लुइसामें

बराबर खत-किताबत होती रही। लुइसाने साफ दिलसे अपनी बडी बहिनके पास मिष्टर जोसेलिन लौफटससे जानपहचान होनेकी सब बातें सच सच लिख दीं। उत्तरमें क्लेराने बडी मुलायमियतके साथ उसे सावधानीसे चलनेका उपदेश दिया। इस विषयकी चिट्ठीका एक अंश हम यहां पाठकोंके देखनेके लिये उद्धृत किये देते हैं:—

"मेरी प्यारी लुइसा। तुम्हारी तारीफके मुताबिक मिष्टर लौफटस नेकचलन, नेकमिजाज और इज्जतदार आदमी मालूम होते हैं, इसलिये तुमसे उनके मुलाकात करने के लिये आनेमें मैं कोई हानि नहीं देखती। उनकी मुलाकात और बातचीत वगैरहके बारेमें तुमने जिसतरह लिखा है, उससे मैं उनके बारेमें वैसा ही विचार कर सकती हूं, जैसे कि मैंने उस जगह रहकर खुद सब देखा सुना हो। मिष्टर लौफटसके चालचलनमें बहुत सी ऐसी बातें हैं, जिनसे मैं उनकी तारीफ करती और उनसे परिचित होना चाहती हूं। उनका बराबर दोपहरके वक्त आना, जिस समय तुम्हें भी फुरसत रहती है, उनकी भलमन्सी जाहिर करता है। अगर वे शामके वक्त, जिस समय तुम अपनी फूफीकी सेवा-शुश्रूषामें लगी रहती हो, आते, तो मैं उनसे उतना प्रसन्न न होती। यह बात सुनकर मैं और भी खुश हूं, कि उन्होंने तुम्हारे साथ टहलने जानेके लिये कभी नहीं कहा। इसके अलावा कण्टरबरीकी सडकोंपर जब तुमसे उनसे दो एकबार मुलाकात हो गई, तो उन्होंने खडे होकर तुमसे सिर्फ दो चार बातें कर लेनेके सिवा कभी तुम्हारे साथ जानेका आग्रह नहीं किया इससे मालूम होता है, कि उनको इस बातका पूरा खयाल है, कि अविवाहित पुरुषको कुमारीके साथ कैसा वर्त्ताव करना चाहिये। तुम्हारा उन्हें नाश्ता करनेके लिये कहना और उनका इनकार कर देना उनकी अच्छी शिक्षा और उत्तम चरित्रका दूसरा प्रमाण है। संक्षेपतः यह साफ मालूम होता है, कि तुम्हारे अरक्षित और

अकेली होनेके कारण वे बड़ी बुद्धिमानीसे तुम्हारे साथ व्यवहार करते हैं। वे यथार्थमें भाई वा सच्चे दोस्तकी तरह ही काम करते हैं। जिसमें उनकी ओर तुम्हारा अच्छा खयाल हो इसीलिये वे ऐसी कार्रवाई करते हैं। मुझे विश्वास है, कि तुम भी उनके साथ ऐसाही वर्त्ताव करोगी, जिसमें कि तुम्हारी ओरसे भी उनका अच्छा खयाल हो जाय।"

जिस चिट्ठीका एक अंश ऊपर उद्धृत किया गया है, उस चिट्ठीके बाद लौराने अपनी बहिनके पास और एक चिट्ठी भेजी थी जिसका अभिप्राय यों है :—

"लण्डन, १० वीं सितम्बर १८१४ ई०।

"मेरी प्यारी लुइ, तुमने ७वीं तारीखकी भेजी हुई अपनी चिट्ठीमें लिखा है, कि मिष्टर लौफटसने तुमसे मेरा लण्डनका पता पूछा है और इसपर तुम्हें ताज्जुब हुआ है, कि वे मेरा पता क्यों पूछते हैं। पर जिस डाकसे तुम्हारी चिट्ठी आई है, उसी डाकसे उनकी चिट्ठी भी मिली है। उन्होंने मेरे पास क्या लिखा है, उसके कहनेके पहले मैं तुम्हें ऐसे अच्छे आदमीसे मुलाक़ात पैदा करनेके लिये बड़े स्नेह, उत्साह और सच्चे दिलसे बधाई देती हूं। वे इज्जत, उदारता और पुरुष—योग्य नम्रताके अवतार हैं। तुमको उन्हें प्यार करना चाहिये, बल्कि मुझे निश्चय है, कि तुम उन्हें प्यार करती होगी, चाहे इस बातका तुम्हे अभी कुछ भी गुमान न हो।

"अच्छा, अब जौसोलिन लौफटसकी चिट्ठीकी बात सुनो। वे आरम्भमें ही लिखते हैं, कि चूंकि हमलोगोंकी फूफी बीमारीकी वजह उनकी बात सुननेके अयोग्य हैं और मैं तुम्हारी बड़ी बहिन हूं, इसलिये तुमसे कोई बात कहनेके पहले वे मेरा हुक्म ले लेना मुनासिब समझते हैं। वे लिखते हैं, कि उनके पिता माताको स्वर्ग-वास किये बहुत दिन हो गये—वे अच्छे खानदानके लड़के हैं—आप ही अपने मालिक हैं—और उनको सालाना आमदनी प्राय

एक लाख रुपया है। उन्होंने अपनी आर्थिक अवस्थाका हाल अपने महाजनसे दरियाफ़ करनेके लिये मुझे लिखा है। दरियाफ़ करने पर उनकी बात सोलहो आने सच ठहरी है। इसके अलावा महाजनने उनकी बड़ी तारीफ की है। अबतक तो सब बातें उनके पक्षमें हैं। अब तुम्हें यह विचार लेना चाहिये, कि उनका चरित्र, शील स्वभाव और रूप रङ्ग तुम्हारे मन लायक है, या नहीं। मुझे विश्वास है, कि इस बातके जवाबमें तुम अवश्य हामी भरोगी। साफ बात यह है, कि मिष्टर लोफटस तुमसे विवाहका प्रस्ताव करना चाहते हैं। उनका कहना है, कि वे दो महीनेसे तुम्हें देख रहे हैं, यद्यपि इतना समय बहुत थोड़ा है, तो भी इतने हीमें उन्हें तुम्हारे सब गुण मालूम हो गये हैं। मुझे वे इस बातका विश्वास दिलाते हैं, कि तुम्हारे बिना उनका जीवन आनन्दसे नहीं बीत सकता। इसी डाकसे मैंने उनकी चिट्ठीका जवाब भी भेज दिया है। जवाबमें मैंने यह लिखा है, कि 'अपनी अवस्थाका ब्योरा लिख और मेरी बहिन-के साथ विवाह करनेके लिये मुझसे हुक्म मागकर आपने मेरा जो सम्मान बढ़ाया है, उससे मैं बहुत खुश हूं। मुझे इस सम्बन्धके बारेमें कुछ भी उज्र नहीं है। अपनी बहिनको आपकी अर्द्धाङ्गिनी होते देख मैं फूले अङ्ग न समाऊंगी।' इतना तो मैंने लिख दिया है, प्यारी लुइसा पर अब बाकी काम तुम्हारे हाथ है। मैं समझती हूं, कि अब बहुत जल्द मिष्टर लोफटस तुमसे अपने दिलकी बात कहेंगे।

"यहां मैं बड़े आराममें हूं। मिष्टर और मिसेस वेकफोर्ड मुझे छोड़ना नहीं चाहते। अभी तो ऐसा कोई रंग नहीं दिखाई देता, कि वे मुझे घर जाने देंगे। वे दोनो आदमी मुझे गोद बैठाना चाहते हैं। मेरी प्यारी लुइसा, चूंकि थोड़े ही दिनोंमें तुम्हारी अवस्था पलट जायगी और तुम्हारे दिन बड़े सुख-चैनसे कटने लगेंगे, इसलिये

अब मुझे अपनी फिक्र भी करनी चाहिये। जीसीलिन यह भी लिखते हैं, कि यदि उन्हें तुम्हारे पाणिग्रहण करनेका सौभाग्य प्राप्त हो, तो वे तुम्हें और फूफीको लेजाकर उत्तरप्रान्तके किसी ऐसे स्थानमें रखेंगे, जहां उनका अपना एक बहुत खूबसूरत मकान है और जिसमें तुम सुखसे फूफीकी सेवा भी कर सकोगी। वास्तवमें उनकी यह दूरदर्शिता बहुत उदार—बहुत आदरणीय एवं बहुत ही प्रिय है।

"परमेश्वर तुम्हारा भला करें, प्यारी लू, एक बार फिर तुम्हारी प्यारी बहिन तुम्हें बधाई देती है।

—लौरा टैनली।"

पाठकोंसे पहले ही कह दिया गया है, कि पोष्टमैन प्रति दिन प्रायः दश बजे लुइसाके मकानके पाससे चिट्ठी बांटता हुआ निकलता था, इसलिये ११वीं सितम्बरके प्रात काल उसी समय उसे उसकी बहिनकी लम्बी और प्यारी चिट्ठी मिली। जीसीलिन लौफटसके बारेमें जो भाव अबतक उसके मनमें छिपा हुआ था, वह उस चिट्ठीसे प्रकट हो गया। हां—अब उसे मालूम हो गया, कि वह उन्हें प्यार करती है। उसके मनके गुप्त रहस्यको भेद करनेकी कुञ्जी उसे मिल गई। अब उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसके हृदयमें अकस्मात एक ज्योति जाग उठी है, जिससे उसका आन्तरिक स्थान, जहां उसकी मानसिक दृष्टि पहले नहीं पहुंच सकी थी सहसा प्रकाशित हो गया है।

हम अभी कह चुके हैं, कि दश बजे लुइसाको उसकी बहिनकी चिट्ठी मिली—इसके दो घण्टे बाद जीसीलिन पधारेंगे अथवा आज शायद वे कुछ पहले ही आजाय। उसने सोचा—उसने आशा की, कि हां, आज कुछ सवेरे आ सकते हैं। इस आशाके साथ साथ उसके मुखपर स्त्री-सुलभ लज्जा छा गई। अब जो वह कुछ काम

करती, तो यही होनहार प्रेम प्रबल हो उठता और कोई बात विचारती, तो उसके हृदयमें यही प्रेम नृत्य करने लगता। हँसती तो यही प्रेम दृष्टिगोचर होता और अफ़सोस करती, तो यही प्रेम उमग उठता।

कमसिन, खूबसूरत, लुइसाने सोचा और आशा की थी, कि आज जीसोलिन अपने मामूली वक्तसे कुछ पहले आ सकते हैं। वास्तवमें हुआ भी ऐसा ही, क्योंकि उन्हें लौराकी चिट्ठी मिल गई थी। उसमें लौराने लुइसासे विवाहका प्रस्ताव करनेकी आज्ञा उन्हें दे दी थी, इससे उन्हें पक्का विश्वास हो गया था, कि उनका प्रस्ताव निष्फल न होगा।

ग्यारह बजनेके कुछ ही देर बाद जीसोलिन लुइसाके मकानपर जा पहुंचे। उस समय वह बागमें टहल रही थी। उन्हें देखते ही, वह फाटक खोलनेके लिये लपकी। फाटक खोलनेके समय उसके हाथ कैसे काप रहे थे? वह कैसी घबराई हुई दिखाई दे रही थी? यह उसका दिल ही जानता था। उधर आशा, प्रेम और विजयसे जीसोलिनका सुन्दर मुख लाल हो रहा था। लुइसाका रंग-ढंग देखते ही उन्हें मालूम हो गया, कि लौराने उसको चिट्ठीमें उस नाजुक मामलेकी बात लिखी है। चूंकि मिष्टर जीसोलिन लौफ-टसका यह प्रथम प्रेम था, इसलिये लुइसाके मुलायम, चिकने, गुलाबी गालोंपर लज्जाकी छाया देखकर उनके मनमें अपार आनन्द छा गया।

अब धीरे धीरे आकर दोनों प्रेमिक एक सायेदार स्थानमें बैठ गये और बातचीत करने लगे, पर हम उस वार्त्तालापका पूर्ण विवरण इस स्थानपर नहीं दे सकते। इस स्थानपर इतना ही कह देना काफी होगा, कि जीसोलिनने बड़ी खूबीके साथ अपनी प्रेम-कहानी कही और लुइसाने बड़े आनन्दसे उसे सुना। फिर जब

उसके प्रेमीने अपने हृदयकी आशाको पक्का करनेके विचारसे उसे हामी भरनेके लिये आग्रह किया, तो लज्जित होकर उसने सिर झुका लिया और धीरेसे वह 'हां' उसके मुंहसे निकल गई, जो कानों को बहुत प्यारी और हृदयको अतीव आनन्द देनेवाली होती है।

हां! वह शब्द कह दिया गया—और फिर फेरा नहीं गया। अब पहले पहल जौसोलिनको लुइसाकी कमरमें हाथ डालने और उस पवित्र मुखचन्द्रका चूमनेका साहस हुआ, जिसे अभीतक किसीको चूमनेका सौभाग्य प्राप्त न हुआ था। लुइसा लजाई और कांपती हुई उस दुलारको इस तरह सहती रही, मानो अपने स्वीकारपर मुहर देती हो। उधर मिष्टर लोफटस भी इस अभिमानसे फूले नहीं समाते थे, कि उन्होंने उस प्यार और उस दिलको पाया है, जिसका पवित्र भाव उनके मुँहपर विराज रहा था।

फिर बहुत देरतक दोनों बागमें टहलते रहे। वह समय मानो पलक मारते बीत गया। आखिर दोनो जुदा हुए, पर मुस्कराते हुए—इस विश्वासपर, कि फिर भी मुलाकात होगी। और दूसरे दिन मुलाकात हुई भी। इसी तरह और भी दो तीन दिन भेंट होती रही। चौथे दिन जब लुइसाने अपने साथ खाना खानेका अनुरोध किया, तो लोफटसने खुशीसे मञ्जूर कर लिया। खाना खानेके बाद वे चायके वक्त तक ठहरे रहे और शामके वक्त बागमें बैठकर दोनो बड़े आनन्दसे उस विषयकी बातचीत करते रहे, जो अब उन लोगोंको बहुत प्रिय था।

लुइसाके लम्बे लम्बे बाल उसके सुडौल कन्धोंपर लहरा रहे थे,—मिष्टर लोफटसका हाथ उसकी कमरमें पड़ा हुआथा। इस समय वे दोनों जो स्वर्गीय सुख अनुभव कर रहे थे, उसमें न तो किसी तरहके गन्दे खयालने ही दखल जमाया और न किसी

अपवित्र इच्छाने ही विघ्न डाला। दोनोंकी आंखोंमें निर्दोष आनन्दकी ज्योति झलक रही थी।

जिस समय उपरोक्त भावी पति-पत्नी ठीक निश्चिन्त मनसे एक सूनसान-कुञ्जमें बैठे सुखसे बातचीत कर रहे थे, ठीक उसी समय एक आदमी पेड़ोंकी आड़में छिपा हुआ घोर घृणा और भयानक डाहसे उन लोगोंकी ओर एकटक देख रहा था।

वह आदमी और कोई नहीं,—कण्टरबरी गिर्जेका वही पादड़ी बर्नर्ड आडली था। कुछ देरके बाद जब वह जिस तरह चुपचाप छिपकर आया था, उसी तरह जाने लगा, तो उसने दृढ़ प्रतिज्ञा और भयानक शब्दोंमें धीरे धीरे कहा,—"ईश्वरकी सौगन्ध! वह अब भी मेरी होगी—जरूर ही मेरी होगी।"

ग्यारहवां परिच्छेद।

चार बहिन।

जिन दो गत परिच्छेदोंमें लुइसाके विषयकी घटनाओंका वर्णन किया है, वे अगस्त महीनेके मध्यमें दोनों बहिनोंकी जुदाईके समय से सितम्बर महीनेके मध्यतक घटी थी।

उसी समय यानी सितम्बरके मध्यमें कण्टरबरीके पासवाले मकानको छोड़कर हम अपने पाठकोंको रिचमण्डकी मिस उवेनके मकानपर ले चलते हैं।

जिस दिन प्रिन्स रीजेण्ट और मारक्विस लेवेसन मिसेस उवेनके यहां दावतमें आये थे, उसके दूसरे दिन सुबहके नौ बजे अगैथा, एम्मा और जूलिया उसकी तीन लड़कियां मकानके पिछवाड़ेवाले बैठकखानेमें मौजूद थीं। समय सुहावना था—खिड़कियां खुली

हुई थीं—एम्मा और जूलिया खिड़कीसे बाहरका सुन्दर दृश्य देख रही थी, पर अगैथा सोफापर आरामके साथ पड़ी हुई एक अलबम (तस्वीर रखनेकी किताब) के पन्नोंको उलट रही थी। उसमें खुद मिस्सके हाथकी लिखी हुई कविताकी कुछ पंक्तियां और बहुतसी तस्वीरें थीं, इसके अलावा उसमें और भी कई बड़े बड़े आदमियोंकी रचनाएं थी, जो विद्याकी बनिस्बत अपने नामके लिये ज्यादा मशहूर थे।

अच्छा, सबसे छोटी बहिन मेरी कहां थी? वह अपनी माके खास कमरेमें उसके पास बैठी हुई थी। बैठकखानेमें तीनों लड़कियां आपसमें जो बातचीत कर रही थी, उससे साफ मालूम होता था, कि वह बात उन लोगोंके विशेष ध्यान एवं विचारकी थी। उन लोगोंको यही खटका लगा हुआ था, कि देखें मेरीसे कैसी पटती है।

एम्मा,—(नटखटेपनसे मुस्कराकर) "शायद मा मेरीको भी वही शिक्षा दे रही है, जो बारी बारीसे हमलोगोंको दी गई है।"

जूलिया,—(हँसती हुई) "मैं समझती हूं, कि वे मेरीको सिखा रही हैं, कि क्या करना और क्या नहीं करना।"

अगैथा,—(अपनी दोनों बहिनोंसे भी अधिक नटखटेपनसे मुस्कराती हुई सिर उठाकर) "ऐसी आशा की जाती है, कि हमलोगोंकी नाईं वह भी उनकी शिक्षाके अनुसार ही चलेगी।"

एम्मा,—'चुप ! कोई आता है !"

इतना कहते ही मेरी अन्दर आ गई। उसे देखते ही एम्मा और जूलिया उसके पास पहुंच गईं और अगैथा भी उठकर उन्हींमें जा मिली।

मेरी घबराई हुई थी। उसका चेहरा जर्द हो गया था और वह कुछ भयभीत भी दिखाई देती थी, क्योंकि उसकी छाती जोर जोरसे धड़क रही थी। पाठकोंको शायद याद होगा, कि अभी वह केवल

अपवित्र इच्छाने ही विघ्न डाला । दोनोंकी आंखोंमें निर्दोष आनन्दकी ज्योति झलक रही थी ।

जिस समय उपरोक्त भावी पति-पत्नी ठीक निश्चिन्त मनसे एक सूनसान-कुञ्जमें बैठे सुखसे बातचीत कर रहे थे, ठीक उसी समय एक आदमी पेड़ोंकी आड़में छिपा हुआ घोर घृणा और भयानक डाहसे उन लोगोंकी ओर एकटक देख रहा था ।

वह आदमी और कोई नहीं,—कण्टरबरी गिर्जेका वही पादड़ी बर्नर्ड आडली था । कुछ देरके बाद जब वह जिस तरह चुपचाप छिपकर आया था, उसी तरह जाने लगा, तो उसने दृढ़ प्रतिज्ञा और भयानक शब्दोंमें धीरे धीरे कहा,—"ईश्वरकी सौगन्ध ! वह अब भी मेरी होगी—जरूर ही मेरी होगी ।"

ग्यारहवां परिच्छेद ।

चार बहिन ।

जिन दो गत परिच्छेदोंमें लुइसाके विषयकी घटनाओंका वर्णन किया है, वे अगस्त महीनेके मध्यमें दोनों बहिनोंकी जुदाईके समय से सितम्बर महीनेके मध्यतक घटी थीं ।

उसी समय यानी सितम्बरके मध्यमें कण्टरबरीके पासवाले मकानको छोड़कर हम अपने पाठकोंको रिचमण्डकी मिस उवेनके मकानपर ले चलते हैं ।

जिस दिन प्रिन्स रीजेण्ट और मारक्विस लेवेसन मिसेस उवेनके यहां दावतमें आये थे, उसके दूसरे दिन सुबहको नौ बजे अगैथा, एम्मा और जूलिया उसकी तीन लड़कियां मकानके पिछवाड़ेवाले बैठकखानेमें मौजूद थीं । समय सुहावना था—खिड़कियां खुली

हुई थीं—एम्मा और जूलिया खिड़कीसे बाहरका सुन्दर दृश्य देख रही थी, पर अगेथा सोफापर आरामके साथ पड़ी हुई एक अलबम (तस्वीर रखनेकी किताब) के पन्नोंको उलट रही थी। उसमें खुद प्रिन्सके हाथकी लिखी हुई कविताकी कुछ पंक्तियां और बहुतसी तस्वीरें थीं, इसके अलावा उसमें और भी कई बड़े बड़े आदमियोंकी रचनायें थीं, जो विद्याकी बनिस्बत अपने नामके लिये ज्यादा मशहूर थे।

अच्छा, सबसे छोटी बहिनमेरी कहाँ थी? वह अपनी माके खास कमरेमें उसके पास बैठी हुई थी। बैठकखानेमें तीनों लड़कियां आपसमें जो बातचीत कर रही थीं, उससे साफ मालूम होता था, कि वह बात उन लोगोंके विशेष ध्यान एवं विचारकी थी। उन लोगोंको यही खटका लगा हुआ था, कि देखें मेरीसे कैसी पटती है।

एम्मा,—(नटखटेपनसे मुस्कराकर) "शायद मा मेरीको भी वही शिक्षा दे रही है, जो बारी बारीसे हमलोगोंको दी गई है।"

जूलिया,—(हँसती हुई) "मैं समझती हूं, कि वे मेरीको सिखा रही हैं, कि क्या करना और क्या नहीं करना।"

अगेथा,—(अपनी दोनों बहिनोंसे भी अधिक नटखटेपनसे मुस्कराती हुई सिर उठाकर) "ऐसी आशा की जाती है, कि हमलोगोंकी नाईं वह भी उनकी शिक्षाके अनुसार ही चलेगी।"

एम्मा,—"चुप! कोई आता है!"

इतना कहते ही मेरी अन्दर आ गई। उसे देखते ही एम्मा और जूलिया उसके पास पहुंच गईं और अगेथा भी उठकर उन्हींमें जा मिली।

मेरी घबराई हुई थी। उसका चेहरा जर्द हो गया था और वह कुछ भयभीत भी दिखाई देती थी, क्योंकि उसकी छाती जोर जोरसे धड़क रही थी। पाठकोंको शायद याद होगा, कि अभी यह केवल

सोलह ही वर्षकी थी, और सबसे बड़ी अगैथाकी उम्र बाईस वर्ष एम्माकी बीस वर्ष एवं जूलियाकी अठारह वर्षकी थी।

तीनों बहिनें,—(एक साथ ही) "अच्छा प्यारी मेरी! मा तुमसे क्या कह रही थीं? आओ, बैठकर जरा बताओ तो।"

मेरीकी आंखोंमें आंसू भरे हुए थे और गाल सुर्ख हो रहे थे। जब बहिनोंने उसे मेजाकार सोफापर बैठा दिया और आप सब उसे घेरकर बैठ गईं, तब उसने कहा,—"तुम लोगोंको तो सब मालूम ही है।"

अगैथा,—(दिलासा देती हुई) "शान्त हो बहिन! घबराओ मत। हम लोग अच्छी तरह जानती हैं, कि माने तुमसे क्या कहा है। भरोसा रखो, कि उनकी सलाह बुरी नहीं है।"

मेरी,—(कांपती हुई जबान और टूटी हुई आवाजमें) "मुझे तो सुनकर बड़ा ताज्जुब मालूम हुआ। दिलमें एक प्रकारकी दहशत सी समा गई है।"

अगैथा,—"यह दहशत बहुत जल्द दूर हो जायगी मेरी प्यारी।"

मेरी,—(मलामतकी नजरसे तीनों बहिनोंकी ओर देखती हुई) "जब तुम लोगोंको यह बात मालूम थी, तो मुझे पहले ही क्यों नहीं बता दिया था। जरासा इशारा भी नहीं कर दिया, कि मैं इस विचित्र शिक्षाके लिये, जो खुद मेरी माने दी है, तय्यार हो जाती।"

अगैथा,—"मा दुनियादार औरत हैं। उनकी मनशा है, कि लड़कियां भी दुनियादार हों। और जो इशारा न कर देनेके लिये हमलोगोंको बदनाम करती हो, वह हमलोगोंका काम न था। अगर हमलोग कह देती, तो याद रखो, कि माकी एक खास सीखका, जो तुम्हें भी अभी मिली होगी, अपमान करना होता।"

मेरी,—(उत्तेजनाके साथ तीखी जबानसे) "हा—छल-कपट! अब मुझे यह समझ रखना चाहिये, कि वे सब मुस्कराहट और चुहल

जो स्वभावसे प्रसन्नचित्त और मधुर स्वभावके उबाल थे, अबसे उनको स्वार्थ, छल-कपट और दगा-फरेबको ढाकनेके पर्देकी तरह वर्त्तना चाहिये। ओह! अब मुझे जिन्दा झूठ—चालाक चुस्त ठग—और झुठाईका अवतार बनकर रहना होगा—"

अगैथा,—"दुनियामें इस सचाई, सफाई और भोलेपनसे क्या लाभ उठाओगी? क्या तुम समझती हो, कि धर्म बचाकर दुःखके आसुओंसे तर रोटी खानेमें बहुत मजा है? क्या तुम हमलोगोंकी तरह यह माननेके लिये तय्यार हो, कि अगर धर्मका नाश करके ऐश और आरामसे रहना मिले, तो वह लाख गुना अच्छा है?"

अब मेरीको घबराहट दूर हो गई। वह सोचमें पड गई। आखिर कुछ देरके बाद उसने कहा,—"शायद हो। इसमें कुछ भी सन्देह नही, कि बहुत ही जल्द मेरा खयाल भी तुमलोगों जैसा ही हो जायगा। पर ऐसी शिक्षा पाना और ऐसे पथपर चलनेके लिये मजबूर किये जाना, पहले बहुत दुखद जान पडता है। यह तो वैसा ही है, जैसे कोई अच्छी तस्वीर, जिसे आदमी बडी खुशीके साथ देख रहा हो अकस्मात् बदलकर घिनौने कीडोंकी जमात हो जाय।"

अगैथा,—"क्या तुम सचमुच ही संसारको ऐसा सुन्दर दृश्य समझती हो?"

मेरी,—(लम्बी सांस लेकर) "और नहीं समझती कैसे? आजतक तो माने इस विषयमें कभी अपना मुँहतक नही खोला था—और तुम लोगोंने भी नही कहा था——।"

अगैथा,—"और तुम्हें तो शायद कुछ सूझता ही न था।"

मेरी,—(अफसोसके साथ) "हां, पर अब मेरी आखें खुल गई हैं। अब मैं बखूबी समझ रही हूं, कि कुछ दिनोंसे मुझे तय्यार करनेकी शिक्षा दी जा रही थी। यास्तवमें वे सब खेल कूद और चुहल वगैरह—जिन्हें मैं बिल्कुल निर्दोष और तबीयत बहलानेका

जरिया समझती थी, मनके अच्छे खयाल और सचाईकी जड खोद नेके लिये ही किये जाते थे—"

एम्मा,—(कडाईके साथ) "अब फिर तुम स्कूली लडकियोंकी नाईं रोने और ठनकने लगी।"

जूलिया,—(और भी क्रोधके साथ) "नादान कहींकी।"

अगैथा,—(दोनों बहिनोंको झिडकती हुई) "यह तुम लोगोंकी सरासर गलती है, जो बेचारी मेरीको इस तरह जलील कर रही हो। हमलोगोंको उसके साथ बहस करनी चाहिये, नकि उसको दोष देना। जरा खयाल करो मिस एम्मा। तुम भी तो पहले इसी तरह डर गई थीं। और मिस जूलिया। क्या मेरीकी तरह तुम्हें ताज्जुब नहीं हुआ था?———"

एम्मा, जूलिया,—(मेरीको बड़े प्यारसे गले लगाकर) "इस निर्दयताके लिये क्षमा करो, बहिन!"

इसके बाद उनके गलेमें हाथ डाल मेरी उन्हें चूमने और सिसक सिसककर रोने लगी।

अगैथा,—"अच्छा मेरी। अब माने तुमसे जो कुछ कहा है, सब कह जाओ, जिसमें हमलोगोंको मालूम हो जाय, कि उन्होंने तुमको कहांतक शिक्षा दी है।"

मेरी,—(मनको यथाशक्ति स्थिरकर) "माने जो कुछ कहा है, उसे सिलसिलेवार तो मैं बयान नहीं कर सकती, पर उसके अभिप्रायका मेरे दिलपर ऐसा असर हुआ है, कि उसे कभी भूल ही नही सकती। पहली बात तो यह है, कि आज सुबहतक मुझे यह मालूम न था, कि राजकुमारोंमें और इस परिवारमें जो घनिष्ठता है, उसमें कोई खास वा अनोखी बात थी। इस बातको मैंने कभी सोचा भी नहीं था। तीन चार वर्षसे मैं उन लोगोंको अपने यहां आते और हमलोगोंके साथ मित्र जैसा वर्त्ताव करते देख रही

हूं, पर मेरे मनमें कभी यह प्रश्न नहीं उठा, कि इस घनिष्ठताका अर्थ क्या है? आंख मिचौली वगैरह खेल और घनिष्ठता—संक्षेपतः———"

अगेथा,—"तुम उन सबको निर्दोष और व्यर्थ समझती थी।"

मेरी,—"हां। वे सब काम हमलोगोंके मनमें हलकेपनकी आदत डालनेके लिये ही किये जाते थे।"

यह सुन तीनों बहिनोंने एक दूसरेको मतलबभरी निगाहसे देखा। उसके बाद अगेथाने फिर मेरीसे कहा,—"जो हो, मासे और तुमसे जो जो बातें हुई हैं, उन्हें कह डालो।"

मेरी,—"अबतक मैं राजकुमारों और उनके खेल कूद वगैरह करनेको बिल्कुल निर्दोष समझती थी, पर अभी जब मैंने अपनी माके मुँहसे सुना, कि वे सब काम हम लोगोंको खास एक राहपर लानेके लिये जानबूझकर किये जाते थे, तो मुझे बहुत ताज्जुब हुआ। मुझे यह सुनकर और भी आश्चर्य एवं दुःख हुआ, जब खास मेरी माने कहा, कि धनकी राह दगा और फरेबके मुल्क होकर गई है, नकि सचाई और खरेपनके देशसे। यह बात मुझे बहुत ही बुरी और घिनौनी मालूम हुई, खासकर अपनी माके मुँहसे निकलनेकी वजहसे। फिर उन्होंने मुझसे कहा, कि मैं खुद दुनिया-दार औरत हूं। अगर मैं अपने अन्तःकरणके कहे मुताबिक चलती, तो मुझे कङ्गाल खानेमें सड़ना या गली गली भीख मांगना पड़ता और मेरी लड़कियां भी भूखों मर जातीं। यह सब सोच-विचारकर मैंने दूसरी ही राह पकड़ी,—धर्मका कुछ भी खयाल न किया। मैंने अवस्थाके अनुसार व्यवस्था की,—फल यह हुआ, कि मैं भी ऐश-आराम और सुख चैनसे रहने लगी और लड़कियां भी आनन्दसे पलने लगीं। आज जो सबक उन्होंने मुझे पढ़ाया है, उसका मतलब यही है, कि हमलोगोंका मुख्य उद्देश्य धन कमाना होना चाहिये,

और उसके लिये नीचता, स्वार्थपरता, छल-कपट और झुठाईका कुछ भी खयाल न करना चाहिये। मुझे यह भी याद रखनेको सलाह दी गई है, कि गरीब आदमीकी जोरू होनेके बनिस्बत अमीरकी रखनी होना कहीं अच्छा है। वह पाप—पाप नहीं है, पर दरिद्रता पूर्ण धर्म महा पाप है। अपने मनको वशमें रखनेके लिये मुझे राजकुमारोंकी छेड़छाड़, चुहल और बेतकल्लुफीके सहनेकी आदत लगानी चाहिये,—इसलिये, कि जब मैं इस तरह दिलको भड़काने और जोश दिलानेवाले कामोंमें अभ्यस्त हो जाऊंगी, तब यदि मेरी इच्छा आत्म-समर्पण न करनेकी होगी, तो सहज ही मनको रोक सकूंगी। हर एक बातमें मुझे पूरी दगाबाज होना चाहिये—अपना मतलब साधनेके लिये हर एक तरहकी चालबाजी करनेके लिये हमेशा तय्यार रहना चाहिये—अगर जरूरत आ पड़े, तो दुश्मनको भी देखकर मुस्करा देना चाहिये—और जिसका सर्वनाश करनेकी इच्छा हो, उसे बनावटी लाड़-प्यार और दुलारसे पानी पानी कर देना चाहिये। संक्षेपमें, अपने मन, अपने खयाल और अपने दिलकी उमङ्गोंको मुझे इस तरह कायदेमें रखना चाहिये, कि वे मेरे गुलाम बने रहें, न कि मालिक—वे मेरी इच्छाके आधीन रहें, न कि मेरे ऊपर अपने प्रभावका विस्तार करें,—इसलिये यदि मैं कभी चूक भी जाऊं, तो वह मेरी कमजोरीका कारण न हो, बल्कि जान बूझकर हो,—और जब मैं स्त्रियोंकी स्वाभाविक नम्रताके वशमें होती दिखाई दूं, तो समझ लेना चाहिये, कि उसमें मेरे मनको कुछ भी सहानुभूति नहीं है। सारांश यह, कि मुझे नाटककी एक निपुण अभिनेत्रीकी तरह हो जाना चाहिये, जो समय आ पड़नेपर सहज ही रो सकती है, मुस्करा सकती है, पुचकार और करा सकती है, क्रोध कर या करा सकती है, मोहनेवाली नम्रता दिखा सकती है, मूर्छित हो सकती है और हँस तथा विनय कर सकती है!"

तीनों बहिन बड़े गौरसे मेरीकी बातें सुन रही थी। उसके चुप हो जानेपर अगेथाने कहा,—"बस इतना ही माकी सीखका मतलब है ? और तुम इसके अनुसार चलोगी भी न ? निस्सन्देह यह भी कहनेमें वे कभी न चूकी होगी कि सिर्फ वही एक माता नही है, जो अपनी लड़कियोंको ऐसी शिक्षा देती है, बल्कि ऐसी बहुत सी मातायें है, जो अपनी बेटियोंको मुँह खोलकर ऐसी सीख देती है। जिस तरहकी शिक्षा हमलोगोंको दी जा रही है, वैसी ही शिक्षा इसवक्त तमाम दुनियामें छाई हुई है, जिसमें हरएक बात झूठ—बेदिल—सार शून्य और स्वार्थपर है। साधारणतः बड़े बड़े अमीर-उमरावो और उपाधीधारी रईसोंके घरकी स्त्रिया भी अपनी लड़कियोंको इसी तरहकी शिक्षा देती है, पर इस प्रकारकी अस्वाभाविक शिक्षाके अभिप्रायको खोलकर साफ साफ समझा देनेकी हिम्मत उन्हें नही पड़ती। उनका कहना है,—'ऐसी ही शिक्षा हमलोगोंको दी गई है, और उसीके अनुसार तुम्हें भी चलना होगा।' इस नकली शिक्षाके मतलबको हम लोगोंके खुद ढूंढनेके लिये उन्होंने कुछ भी नही छोड़ा। दुनियाकी नजरमें वे चाहे जैसी हों, पर अपनी लड़कियोंके लिये दगाबाज नही हैं। उन्होंने हमलोगोंके लिये रास्ता ठीक कर दिया है, उसपर हम-लोगोंको जल्द ही चलना पड़ेगा———"

मेरी,—"और जो राजकुमारोंकी मुलाकात और घनिष्ठताका कारण प्रकट कर देता है मा मुझसे इतना कहनेमें भी नहीं चूकीं।"

अगेथा,—"तो तुम उस कामको भी जानती हो, जो हम-लोगोंके लिये ठीक किया गया है ? मैं तो समझती हूं, कि तुम अवश्य जानती हो———"

मेरी,—"हां, मैं एक ऐसी खबर सुना सकती हूं, जिसे मा जल्द

ही तुम लोगोंसे कहेंगी। अभी जब मैं उनके पास बैठी थी, तो एक चिट्ठी आई———"

तीनो बहिन,—(बड़ी चाहके साथसे) "बहुत जरूरी चिट्ठी। विण्डसरसे आई है न?

मेरी,—"हां, महारानीने भेजी है।"

अगैथा,—(आनन्द पूर्वक) "यह तो बड़ी खुशीकी बात है।"

जूलिया,—"और मेरी। क्या तुम्हें मालूम है, कि सब ठीक ठाक हो गया है?"

मेरी,—"मुझे तो ऐसा ही विश्वास होता है। मा इसीवह प्रिन्स रीजेण्टसे मिलने लण्डन जायगी और जब तीसरे पहर वहांसे लौटेंगी, तो हमलोगोंको चटपट रवाना हो जानेकी खबर सुनायेंगी।"

एम्मा,—"अफसोस। महारानीकी चिट्ठी कल नहीं आई। अगर कल आई होती, तो मा उसका जिक्र प्रिन्ससे यहीं न कर देती———"

अगैथा,—"अच्छा, कुछ हर्ज नहीं है, कुछ घण्टे इधर या उधर। पर तीन चार वर्षसे जो पाठ हमलोगोंको पढ़ाया जा रहा था, अब उसके अनुसार काम करनेका समय आ गया है।"

एम्मा,—(खुशीसे ताली पीटकर) "अहा। कैसा मजा होगा। हमलोगोंके दिन कैसे सुख चैनसे कटेंगे। एकदम नहींसे तो यह देर अच्छी है?"

जूलिया,—"और कैसे नये नये दृश्य देखनेमें आवेंगे।"

अगैथा,—"और काम हो जानेपर इनाम मिलनेमें कैसी खुशी हासिल होगी।"

मेरी—(डरसे कांपती हुई तीनों बहिनोंकी ओर देखकर) "पर ओह। कैसा भयानक काम है। जो लोग हमलोगोंको

भेजते है, क्या उनके लिये वहा चार जहरीले साप भेज देना अच्छा न होता—"

अगैथा,—(कड़ाई और रुखाईके साथ) "चुप। अभी जब तुम्हारी दोनो बहिनोंने तुम्हें आडे हाथो लिया था, तब मैंने तुम्हारा पक्ष ग्रहण किया था न ? पर तुम्हारी यह बात मुझे जरा भी नहीं सुहाई। जब धन मिलनेको है तब अफ़सोस कैसा ?"

मेरी,—(लाचार निराश सी होकर) "ठीक है,—ऐसा ही मुझे भी खयाल करना चाहिये।"

जब तीनों बहिनोने देखा, कि मेरीको 'कमजोरो' के लिये उसे धमकाना अच्छा नहो है, तब वे सब उसे उत्साहित करनेके लिये ढ़ाढस और दिलासा देने लगी।

बारहवां परिच्छेद।

मङ्गलवार या दूसरा आशिक।

तीसरे पहर—प्राय: तीन बजनेका समय था। पाठकोंको पूर्व परिचिता विनोशिया-ड्रिलोनी अकेशिया-काटेजके बैठकखानेमें बैठी हुई थी।

वह अकेली थी—बहुत अच्छे कपडे पहने थी—और किसी मुलाकातीकी राह देख रही थी, क्योंकि इस समय न तो वह पढ़ रही थी, न किसी काममें लगी थी और न चिडियोंके साथ ही मन बहला रही थी—बल्कि जब कोई गाडी उस जगहकी सड़कसे जाती, तो वह कान लगाकर सुनने लगती, कि वह उसके दरवाजेपर ठहरी, या आगे बढ गई।

उस तरफकी खिडकिया खुली हुई थी, पर रमनेकी ओरकी

बन्द थी। पर्देसे छन छनकर जो सूर्यकी किरणें अन्दर आतीं और उसके भूरे बालांपर पड़ती थीं, उससे उसके भूरे बाल सोनेकी तरह चमकीले मालूम होते थे। इसवक्त उसके गोरे गोरे गालोंपर आशाकी मामूली सुर्खी दिखाई दे रही थी, पर उसके ढङ्गसे यह न जाहिर होता था, कि होनेवाली मुलाकातसे वह सुख वा दुःखका खयाल करती हो। यह सिर्फ एक खास तरहका स्वाग करनेके इरादेकी घबराहट और उसे अच्छी तरह अदा करनेकी चिन्ता मात्र थी।

अब उसने चिमनीके ऊपरवाली अलमारीपरकी घडीको देखा, उसके बाद अपनी जेबघडी देखी, तो दोनोंमें ही तीन बजनेका समय पाया। इसके बाद उठकर उसने खुशबूसे बसी हुई एक चिट्ठी निकाली और उसे पढने लगी। उसका मजमून यों था :—

"मउण्ट ष्ट्रीट, बर्कली स्क्वेयर,
११ वीं सितम्बर, १८१४ ई०

"सलाम करनेके बाद सर डगलास् हण्टिङ्गडन मिस ड्रिलोनीसे यह अर्ज करते हैं, कि कल उन्होंने नाइट्स-ब्रिजमें एक छोटीसी रियासत खरीदी है, जिसमें कुछ मकान हैं। उन्हींमें अकेशिया काटेज भी शामिल है। उनकी इच्छा उसमें कुछ रद्दोबदल करनेकी है, पर वे ऐसी कोई रद्दोबदल नहीं करना चाहते, जो मिस ड्रिलोनीको, जिन्हें अपनी रैयतोंमें गिननेका उन्हें बड़ा गुमान है, नापसन्द हो। इसलिये अगर आज दो तीन बजेके बीचमें मिस ड्रिलोनी मुलाकात करनेकी इजाजत दें, तो वे बहुत एहसानमन्द होंगे।"

अब चिट्ठीको रद्दीकी टोकरीमें फेंककर उसने धीरेसे कहा,— "उनके आनेका समय बहुत ठीक है। जरासी भी देर करना रीति और रुचिके अनुसार नहीं समझते।"

मिस ड्रिलोनीने इतना कहा ही था, कि इसी समय एक खू

सूरत गाडी उसके दरवाजेपर आ लगी। उसकी बाद तुरत ही नौकर सर डगलासको बैठकखानेमें पहुंचा गया।

हम पहले ही कह चुके हैं, कि बैरोनेट, जिनकी उम्र छब्बीस सत्ताईस वर्षकी होगी, बड़े ही खूबसूरत थे, पर लम्पटताके कारण उनका सुन्दर चेहरा रोगियों जैसा उदास दिखाई देता था। वे बड़ी रुचि और नफासतके साथ कपड़ा पहने थे। उनका चाल चलन मनोहर था और वे विद्वान भी अच्छे थे।

जिस समय वे बैठकखानेमें पहुंचे, उस समय विनीशिया उनके स्वागतके लिये उठ खड़ी हुई, फिर उन्हें नजाकतके साथ कुर्सीपर बैठनेका इशारा करके आप भी कुछ दूर एक सोफापर बैठ गई।

बैठनेके साथ ही उसने एकबार सर डगलासको शिरसे पैरतक अच्छी तरह देख लिया और मनही मन कहा, कि जैसा सुना था, ठीक वैसे ही हैं। उधर सर डगलासने भी विनीशियाको अच्छी तरह देखकर मनमें कहा, कि दूरसे देखकर मैंने इसे जैसा खूब सूरत समझा था, उससे तो यह कहीं ज्यादा खूबसूरत है।

पाठकोंको याद होगा, कि कुछ दिन हुए मारक्विस लैवेसनके यहां दावत खानेके वक्त सर डगलासने ही विनीशियाके पास एक डिउकके सादा चिक भेजने और उसके उसे वैसा ही लौटा देनेकी बात कही थी। कुछ देर पहले वे विनीशियाको धार्म्मिक और समझसे बाहर कह चुके थे, उसीके सुबूतमें उन्होंने चिकवाली बातका जिक्र किया था। सिर्फ यह दिखानेके अभिप्रायसे ही हम पाठकोंको उस घटनाका स्मरण कराते हैं, कि सर डगलासकी राय उस कमसिन रमणीके बारेमें कैसी थी, जिसके ऊपर वे लट्टू हो रहे थे और जिसके पास पहुंचनेका एक अच्छा जरिया भी उनके हाथ लग गया था।

डगलास,—(कुछ मुस्कराकर) "सुन्दरीके मन्दिरका पुजारी

बननेकी जगह मैं मालिककी हैसियतसे रैयतके पास आया हूं, इस ढिठाईको क्षमा कीजियेगा——"

विनोभिया,—(ठठोली और तानेके साथ) "अगर आप मेरे नाम अकेशिया-काटेजके किरायेका सरखत वा बिक्रीका किवाला लिखते, तो क्या उसमें भी मुबारकवादी और खुशामदकी बात दर्ज करते?"

डगला,—"वैसी हालतमें बखशीशनामा लिख देना ही मुनासिब खुशामद होगी।"

विनोभिया,—"अगर आप अपने नये खरीदे हुए हर एक मकानमें जाकर हर एक रैयतके साथ ऐसी ही उदारता दिखावें, तो शायद आपका दिवाला निकल जाय!"

डगलास,—"पर यदि मेरा यह प्रस्ताव खास आपके लिये हो, मिस ग्रिलीनी?"

विनोभिया,—"तो मैं नामञ्जूर कर दूंगी, क्योंकि मैं अपने पडोसियोंका डाह भड़काना नहीं चाहती।"

डगलास,—(मुस्कराकर) "उनके जाननेकी जरूरत ही क्या है?"

विनोभिया,—"उदारताका काम छिपा नहीं रहता। अच्छा, दिल्लगीको दूर कर काम-काजकी बातें शुरू कीजिये। जिस रियासतके तालुक यह मकान है, उसे आपने खरीदा है, और आप इसमें कुछ रद्दोबदल करना चाहते हैं, क्यों, यही बात है न?"

डगलास,—"हां, यही बात है, पर इस बारेमें मैं आपकी राय लेना चाहता हूं।"

विनोभिया,—(मुस्कराकर व्यङ्गसे) "पर न तो मैं राजमिस्त्रीका ही काम जानती हूं और न बागवान ही का।"

डगलास,—(उसके सजे हुए कमरेकी ओर देखकर) "तौ भी आपकी रुचि तो बहुत अच्छी मालूम होती है।"

। आप सत् स्वभाव और सदुभिप्रायके मनुष्य है। मैं आपसे नहीं हूं, पर——"

ालास,—(उठकर निराशासे) "पर क्या आप ऐसा विश्वास ारती, कि मैं सच कहता हूं ?"

नोप्रिया,—(गौरवके साथ) "यदि ऐसा न समझती, तो साथ नौकरसे निकलवा देती। मुझे विश्वास है, कि आपने हजसे विवाहको बात कही है, इसीसे सभ्यताके साथ उसे ार करती हूं। कहते अफसोस होता है, कि अभी हम- जान पहचान हुए पूरा आध घण्टा भी नहीं बीता, ालतमें शादीको बात छेड़ना कैसी मूर्खता एवं उपहास है।"

ाना कहकर विनोप्रियाने अलमारीकी घडीकी ओर देखा।

ालास,—(दुःख और निराशाके साथ) "मिस ड्रिलोनी! आप समझती हैं, मैं आपसे वैसा अनजान नहीं हूं। यह सच आजतक हमलोगोंमें कभी बातचीत नहीं हुई, पर मैंने दूर ाईबार आपको देखा है—आपको तारीफ की है—और— आपको प्यार भी करता हूं।"

नोप्रिया,—"पर प्रिय महाशय! दुःखकी बात है, कि मैं

डगलास,—(नाजुक मतलबकी नजरसे देखते हुए) "मैं स्वीकार करता हूं, कि मेरा मतलब दोस्तीसे नहीं—प्रेमसे है।"

विनीफ्रिया,—(तानेके साथ) "वाह! हमलोगोंकी बात भी कैसा अनोखा चक्कर लगा रही है। जमीन्दारका अपनी रैयतसे मकान और बागके बारेमें बातचीत करने आना और फिर वार्तालाप करते करते दोस्ती और प्रेमका दम भरना।"

डगलास,—"इसलिये, कि खूबसूरत रैयत खुद उस विषयको उभाडती है। मिस फ्लिनी। मैं आपसे साफ साफ कह देना मुनासिब समझता हूं, पर क्या आप उस सचाईके लिये मुझे क्षमा करेंगी?"

विनीफ्रिया,—"मकान और बागके बारेमें कुछ कहना चाहते है?"

डगलास,—"कृपाकर अब कामकाजकी वाहियात बातोंका जिक्र न कीजिये। अगर मेरी रियासत और जायदादका ही जिक्र करना है, तो समझ लीजिये, कि मैं अपनी सारी रियासत और जायदाद आपको नजर करनेके लिये तय्यार हूं।"

विनीफ्रिया,—(शर्मा और मुस्कराकर) "आप अकेशिया काटेज तो मुझे दे ही चुके है, और अब अपनी सारी रियासत और जायदाद भी नजर करनेके लिये तय्यार है। वाह! कैसी असाधारण उदारता है—और वह भी एक बिल्कुल अनजान आदमीके——"

डगलास,—(बड़े प्यारसे) "मिन्नत करता हूं, मेरी बातको गलत न समझिये। मै एक शर्त पर सब नजर करनेको तय्यार हूं—"

विनीफ्रिया,—(आश्चर्य्य और अविश्वासके साथ) "अच्छा, वह शर्त क्या है?"

डगलास,—(घुटनोंके बल बैठकर) "विवाह।"

विनीफ्रिया,—(गौरव एवं धिक्कारके साथ) "उठिये, महाशय!

उठिये। आप सत् स्वभाव और सदभिप्रायके मनुष्य हैं। मैं आपसे नाराज नहीं हूं, पर——"

डगलास,—(उठकर निराशासे) "पर क्या आप ऐसा विश्वास नहीं करती, कि मैं सच कहता हूं?"

विनोप्रिया,—(गौरवके साथ) "यदि ऐसा न समझती, तो घृणाके साथ नौकरसे निकलवा देती। मुझे विश्वास है, कि आपने सच्चे दिलसे विवाहकी बात कही है, इसीसे सभ्यताके साथ उसे अस्वीकार करती हूं। कहते अफसोस होता है, कि अभी हमलोगोंमें जान-पहचान हुए पूरा आध घण्टा भी नहीं बीता, ऐसी हालतमें शादीकी बात छेड़ना कैसी मूर्खता एवं उपहास योग्य है।"

इतना कहकर विनोप्रियाने अलमारीकी घड़ीकी ओर देखा।

डगलास,—(दुःख और निराशाके साथ) "मिस ट्रिलोनी! आप जैसा समझती हैं, मैं आपसे वैसा अनजान नहीं हूं। यह सच है, कि आजतक हमलोगोंमें कभी बातचीत नहीं हुई, पर मैंने दूर दूरसे कईबार आपको देखा है—आपकी तारीफ की है—और—और—आपको प्यार भी करता हूं।"

विनोप्रिया,—"पर प्रिय महाशय! दुःखकी बात है, कि मैं आपको प्यार नहीं करती, इसलिये अब इस बातको यहीं खतम समझना चाहिये। मैं आपसे नाराज नहीं हूं—और आपकी हंसी उड़ानेके लिये यह बात किसीसे कहूंगी भी नहीं—"

डगलास,—(कुछ नाराजीके साथ) "इस कृपाके लिये धन्यवाद है। (फिर अचानक क्रोधके लिये पछताकर) पर वास्तवमें मुझे हृदयसे आपको धन्यवाद देना चाहिये, मिस ट्रिलोनी——"

विनोप्रिया,—"आप विवेकी पुरुष हैं, सर डगलास! और उचित रूपसे इस बातका विचार भी कीजियेगा। आप ही सोचिये, यह

बात कैसा रूप धारण करती है? एक अशराफ आदमी, जिनके बारेमें मैं कुछ भी नही जानती, मेरे पास कामकाजके विषयमें लिखते है। वास्तवमें वे कहते हैं, कि वे मेरे उमीन्दार हुए हैं। मैं ऐसो हालतमें उनसे मुलाकात करनेको बात नामञ्जूर भी नहीं कर सकती। फिर वे मेरे पास आते है और पैरों पड़कर विवाहकी बात कहते है। अब उनके साथ पेश आनेके सिर्फ दो राहें हैं—एक तो क्रोधसे और दूसरा दयासे। मुझे पिछली राह पसन्द है और उसीको मैं पकड़ती हूं,—इस आशासे, कि वे दोस्ताना तौरपर यहासे चले जायं और फिर कभी मेरे पास आनेकी हिम्मत न करें। अब सर डगलास। आप समझ गये न?"

डगलास,—"हा, मिस ड्रिलौनी। अच्छी तरह समझ गया। पर क्या आप कभी भी मुझसे मुलाकात करना नहीं चाहतीं?"

विनीग्रिया,—"अभी जो कुछ हो गया है, उससे आपका आना मुझे जरा भी न सुहावेगा। मैं तो यह समझती हूं, कि फिर कभी आपका दिल हो यहा आनेका न होगा।"

डगलास,—"पर क्या यह गैरमुमकिन है, कि मैं कभी आपके दिलपर अच्छा असर पैदा नही कर सकता?"

विनीग्रिया,—"विश्वास रखिये, बिल्कुल गैरमुमकिन है।"

जिस समय सर डगलास विनीग्रियाके सामने घुटनोंके बल बैठ गये थे, उसी समय वह सोफासे उठकर अलमारीके सहारे खडी हो गई थी—जिसमें कि यह मुलाकात जल्द ही खतम हो जाय, इसी इरादेसे उसने हंसकर ऊपर वाली बात कही थी।

यह सुन सर डगलास क पाच करने लगे। वास्तवमें उनकी घबराहट अतिशय दुःखदायिनी हो उठी। अब कांपते हुए ओठोंके साथ उन्होंने कहा,—"तो मेरे लिये आप अपनी ड्योढी बन्द कर देनेका हुक्म दे देंगी?"

विनोथिया,—(गौरवके साथ) "मुझे तो आशा है, कि आप ऐसा काम करनेकी नौबत ही न आने देंगे।"

डगलास,—(दुःख और घबराहट छिपानेके लिये हसते हुए) "वास्तवमें आप बड़ी दयालु—बड़ी सहनशील—और बहुत ही अच्छे स्वभावकी स्त्री हैं। इसलिये मुझे ऐसा कोई काम ही न करना चाहिये, जिससे कि आप नाराज हों। अच्छा, तो अब मैं जाता हूं।"

इतना कह और विनोथियाको सलाम करके सर डगलास हण्टिङ्गडन वहांसे चल पड़े।

अब गाड़ीके पास जाते समय उन्होंने मन ही मन कहा,—"मैं इसे इससे ज्यादा चाहता हूं, पर सवाल यह है, कि इसे विवाहिता स्त्रीकी तरह हाथमें लाऊं या रखनी तरह?"

सर डगलासकी गाड़ी चलने ही को थी, कि किसीने बड़े जोरसे ललकार कर कोचवानको गाड़ी खड़ी रखनेका हुक्म दिया। इसके बाद तुरत ही बहादुर कप्तान टैशने आकर गाड़ीकी खिड़कीमें सिर डालदिया और कहा,—"आपका मिजाज कैसा है, मेरे प्यारे हण्टिङ्ग-डन? आप अकेथिया-काटेजसे आ रहे हैं—और—"

डगलास,—"बस-बस, मैं समझ गया। तुम अठारह पेन्स या आधा क्राउन चाहते हो,—यह लो।"

टैश,—(मानो बहुत नाराज होकर) "कसम खुदाकी, मैं कुछ भी नहीं चाहता।"

डगलास,—(तानेके साथ) "यह तो आज पहली ही बार मैंने देखा, कि तुम कुछ भी नही चाहते।"

इतना कहकर सर डगलासने जो सड़ककी ओर देखा, तो लालटेनके खम्भेसे सटा, सीधा और खम्भे जैसा ही अटल अचल खड़ा हुआ कप्तानका आदमी दिखाई पड़ा। उसे देखते ही उनका चेहरा खिल उठा। उन्होंने कहा,—"मुझे एक बात याद आ गई है।"

सान—छुरी कैंचीमें सान।" इसीतरह जोर जोरसे बोलता हुआ वह गली गली घूम रहा था।

इसी तरह चिल्लाता हुआ वह आधा गांव घूम आया, पर उसे एक भी काम न मिला। आखिर जब वह मिसेस उवेनके मकानके पास पहुंचा, तो उसी जगह बैठ गया, जहां एक दिन पहले डेनल टी हैड्मैन नामक बदमाश पेड़ोंके झुरमुटमें छिपकर बैठा था।

रोजगार ढीला रहनेपर भी वह पाइप सुलगाकर तम्बाकू पीने लगा। जमीनपर लेटा हुआ वह सुखसे तम्बाकू पी और मिसेस उवेनके खूबसूरत मकानको देख देखकर खुश हो रहा था।

अभी उसने एक पाइप तम्बाकू भी न पी थी, कि किसीने ललकार कर कहा,—"ऐ सानवाले। तुम यहां पड़े हो। तुम तो बड़े ही सुस्त मालूम होते हो।"

सानवाला,—(उठकर) "कभी नहीं। जब काम रहता है, तब मैं कभी सुस्ती नहीं करता। मुझे कौन खोजता है ?"

आदमी,—"मैं।"

इतना कहकर एक नौकर अच्छी वर्दी पहिने पेड़ोंके झुरमुटमेंसे निकल आया।

सानवाला,—"सेवामें हाजिर हूं। कहो, क्या काम है ? ऐसा तो कोई काम ही नहीं है, जिसे मैं बड़ी खूबीके साथ न कर दिखाऊं।"

नौकर,—"और बातचीत भी।"

सानवाला,—"जब मेरा मुँह बन्द करनेके लिये कुछ मिल जाता है, तब मैं चुप हो जाता हूं।"

अब वर्दीवाला नौकर यह जाननेके इरादेसे सानवालेको तीखी निगाहसे देखने लगा, कि उसकी बातका असलमें कुछ मतलब भी है, कि नहीं, पर उसका चेहरा तो एकदम कालिखसे पुत

हुआ था, इसलिये नौकरको कुछ भी मालूम न हुआ। लाचार उसने कहा,—"जब तुम्हारा मुँह बन्द करनेके लिये कुछ मिल जाता है, तब तुम चुप हो जाते हो, इसका क्या मतलब है?"

सानवाला,—"जो मैं कहता हूं, वही मतलब है। शायद तुम्हारे दिल दुखानेकी कोई बात मैंने नही कही।"

नौकर,—"नहीं, नही। अगर यहा या इसके आस पास तुमसे कोई काम लिया जाय, तो मैं समझता हूं, कि आज रातको तुम शराबखानेमें ढिंढोरा न पीटोगे।"

सानवाला,—"मैं ऐसे काममें पक्का उस्ताद हूं।"

नौकर,—"कैसे काममें? अभी तो मैंने किसी खास कामका जिक्र भी नही किया——"

सानवाला,—"हा, नहीं किया; पर मेरे कहनेका यह मतलब है, कि मैं कभी कभी बडे आदमियोंके नौकरोंका ऐसा काम कर देता हूं, जिसका फिर कही चर्चा करना अच्छा नही—जैसे एक चाभीको ऐसा बना देना, जो मजेमें दूसरे तालेमें लग जाय——"

नौकर,—(सिर घुमा और मकानकी ओर देखकर) "बस, बस—हो गया। इतनी जोरसे न बोलो। तुम बडे अच्छे आदमी हो, आज कहासे आते हो?"

सानवाला,—"लण्डनसे, और जहातक हो सकेगा, आगे जाऊंगा, क्योंकि—पर कुछ परवाह नही।"

इतना कहकर वह अकस्मात् चुप हो गया।

नौकर,—"मालूम होता है, सामने तुमने कुछ किया है, इसीसे इतनी गर्मी मालूम होती है?"

सानवाला—"तुमने ठीक समझा है। एक गिलास लो न?"

नौकर,—"पहले मेरा काम कर दो, फिर गिलास भी लूंगा और एक गिनी बख्शीश भी दूंगा।"

सानवाला,—(खुशी और सन्देहके साथ) "एक गिन्नी! भाई! मुझ जैसे गरीबसे, जिसने दिनभर बीत जानेपर एक अधेला भी नहीं कमाया, ठट्ठा करनेसे क्या फायदा है?"

नौकर,—(अपने वेष्टकोटके पाकेटसे गिन्नी निकाल और उसे दिखा कर) "तुम्हें अभी मालूम हो जायगा, कि मैं ठट्ठा करता हूं या सच कहता हूं। साफ बात यह है, कि क्या तुम सचमुच ही किसी चाभीको ऐसा बना देते हो, जो दूसरे तालेमें भलीमें लग जाती है?"

सानवाला,—(धीरेसे) "बड़े आदमियोंके नौकरोंका ऐसा काम मैं प्रायः किया करता हूं, पर ताज्जुबकी बात है, कि जहां मैंने ऐसी चाभी बना दी है, वहीं ही कुछ दिनों वा हफ्तोंके बाद चोरी हो गई है और मजा यह, कि चोर पकड़े नहीं गये।"

नौकर,—(कुछ मुस्कराकर) "अच्छा, कितनी देरमें तुम ऐसी चाभी तय्यार कर देते हो?"

सानवाला,—"इस सवालके दो जवाब हैं। एक तो यह, कि जब मुझे कोई मामूली चाभी सब मामूली तालोंके खोलनेके लिये दी जाती है, तब मैं उसे काट और रेतकर तुरत ही दुरुस्त कर देता हूं, इसे स्केलिटन कहते हैं।"

नौकर,—"अच्छा, यह तो एक जवाब हुआ। दूसरा क्या है?"

सानवाला,—"मान लो, कि तुमने दो चाभियां दीं और एकको दूसरीकी तरह बना देनेका हुक्म दिया। इसमें कुछ ज्यादा देर लगती है, पर मैं दोनो तरहका काम एक घण्टेमें कर सकता हूं।"

नौकर,—"समझ गया। अच्छा, अब अपनी इस चरचरानेवाली कलको सड़कसे किनारे उन पेड़ोंकी आड़में ले जाओ और मेरी राह देखो। मैं अभी आता हूं।"

इतना कहकर जौन नामका नौकर चला गया और कुछ ही देर

बाद एक छाता और दो कैंचियां लेकर लौट आया। आकर उसने कहा,—"यह लो, यह छाता बावर्चीका है। इसे मरम्मत कर दो। और यह दो कैंचियां लो। इनमें एक तो मालिकिनकी खास दाईकी है और दूसरी झाड़ू देनेवाली की। इनमें अच्छी तरह सान रख दो। (फिर दो चाभियां निकाल कर धीरेसे) यह दो चाभियां मेरी हैं। इनमें जो जंग लगी हुई पुरानी चाभी है, उसे ठीक इस नई चमकीली चाभीके समान बना दो।"

सानवाला,—"बहुत अच्छा। जाओ, पौन घण्टेमें आकर ले जाना।"

यह सुन जौन चला गया। उधर सानवाला अपने काममें लगा। कैंचियोंको ठीक करके उसने छातेकी मरम्मत की। फिर दोनों चाभियोंको उठाया। दोनों छोटी, पर नापकी थीं। बनावटमें अवश्य ही भेद था। चमकीली चाभीको अच्छी तरह देखकर सानवालेने कहा,—"यह पेटेण्ट तालेकी है। इस जैसी बनाना कठिन है, पर कुछ परवाह नहीं, मैं अभी ठीक किये देता हूं।"

इतना कहकर सानवालेने उस दराजको खोला, जो उसकी सानवाली कलके साथ अटी हुई थी। उसमें सब साइज और सब ढांचेकी चाभियां थीं। ऐसा कोई ताला ही न था, जिसकी एक न एक चाभी उसमें न हो। खोज ढूंढकर सानवालेने नौकरकी दी हुई चमकीली चाभी जैसी एक चाभी निकाली और मुर्चेवाली चाभीको उसी दराजमें डाल दिया।

इस तरह आसानीसे अपना काम खतमकर सानवाला तम्बाकू पीने लगा। इतनेमें पौन घण्टा बीत गया और ठीक समयपर नौकर भी पहुंच गया।

नौकर,—"क्यों, सब चीजें तय्यार हैं?"

सानवाला,—"अगर तय्यार न हो जातीं, तो मैं बैठा क्यों रहता? यह लो कैंचो और छाता।"

नौकर,—(बेचैनीसे) "और चाभो?"

सानवाला,—"लो चाभिया भी तय्यार है। अब तुम यह नहीं बता सकते, कि कौन नई है और कौन पुरानी?"

नौकर,—(ताज्जुबसे दोनो चाभियोंका मिलान करता हुआ) "नहीं, मैं तो नहीं पहचान सकता। तुम बड़े उस्ताद और तेज कारीगर हो। मैं तो समझता था, कि पौन घण्टा तो इसको जंग छुड़ानेमें ही लग जायगा।"

सानवाला,—(लापरवाहीसे) "मेरा हाथ मँजा हुआ है।"

नौकर,—"मैं समझता हूं, कि अब जंगवाली चाभोको तुम भी नहीं पहचान सकते।"

सानवाला,—"अगर अपने हाथके कामको भी न पहचान सकूं, तो मुझ जैसा बेवकूफ और कौन होगा? अच्छा, अब इस शराबको चढ़ा लो, क्योंकि मैं एक गिलास 'एल शराब' लाना चाहता हूं।"

नौकर,—"मैं तुम्हें रोकना भी नहीं चाहता। यह लो, करार के मुताबिक अपनी गिन्नी। और दूसरी चीजोंकी मजदूरी तथा एल शराबके लिये यह लो आधा क्राउन।"

सानवाला,—"अनेकानेक धन्यवाद है। अब कृपाकर यह बता दो, कि अच्छी बियर-शराब कहां मिलेगी?"

नौकर,—"सामने 'किंग्स आर्म्स' नामक शराबखानेमें। सलाम

सलामका जवाब देकर सानवाला भी अपने औजार वगैर सम्हाल खुशीसे सीटी बजाता हुआ रवाना हो गया।

चौदहवां परिच्छेद ।

शराबखानेका एक कमरा ।

और एक घण्टे बाद यानी रातके ठीक नौ बजे नोकर जोन 'किंग्स आर्म्स' नामक शराबखानेमें गया। शराबकी दुकानके पास जा और इशारा करके उसने उसके मालिकको बुलाया। वह एक कमरेके अन्दर जाना ही चाहता था, कि उसे कोई बात याद आ गई, और वह उसी जगह खडा हो गया।

शराबखानेका मालिक मजबूत, खुशदिल और इमानदार आदमी था। उसका चेहरा लाल था। उसी आदमीसे जोनने पूछा,—"कोई सामान धरनेवाला आज शामको यहा आया था?"

मालिक,—"हा, कोई दो घण्टे हुए आया तो था। एक गिलास शराब पीकर वह तुरत ही चला भी गया। क्यों—उसकी बात क्या पूछते हो?"

जोन,—"उससे कुछ काम लेना था। अभी जब वह आ रहा था, तो मैंने उससे पूछा था, कि कहा जाते हो? उसपर उसने कहा था, कि 'किंग्स आर्म्स' में। पर कुछ चिन्ता नही, गया तो जाने दो। कमरेमें कोई है?"

मालिक,—"हा, दो आदमी हैं। उनमेंसे एकने तुम्हारे आनेकी बात भी पूछी थी। शायद वह वही आदमी है, जिसे पहले भी तुम्हारे साथ यहा देखा है।"

जोन,—"देखा होगा। मेरी जान पहचानका एक आदमी आनेवाला था। दूसरा कौन है?'

मालिक,—"मै नही जानता, कि वह कौन है, पर शक्ल-सूरतसे तो देहाती मालूम होता है। तुम्हारे लिये क्या ले आऊ?"

जौन,—"एक पाइण्ट एल।"

इतना कहकर जौन कमरेके अन्दर चला गया। मकान मालिकके कहे मुताबिक उसने वहां दो आदमियोंको बैठे पाया। उनमें एक तो उसका दोस्त डेनल दी हैंगमैन था और दूसरा कोई किसान मालूम होता था। उसके बाल रूखे और रङ्ग सुर्ख था। उम्र कोई पैंतीस छत्तीस वर्षकी होगी। रूपरंग देखनेसे वह मजदूर और अहमक मालूम होता था। एक कोनेमें बैठकर वह रोटी, पनीर और कच्चा पियाज खा और शराब पीरहा था।

हैंगमैनकी पोशाकका जैसा बयान पांचवें परिच्छेदमें किया गया है, इस वक्त भी वह वैसी ही पोशाक पहने हुए था। मैला छोटा कोट सूती पायजामा—घुटने तक चमड़ेका गेटर—भारी बूट, गलेमें सूती नीला रूमाल—ऐसी पोशाकमें वह पूरा बदमाश मालूम होता था। भयानक गढ़न और चमकीली आंखोंसे उसका चेहरा ऐसा विकट दिखाई देता था, मानो वह मनुष्योंकी लाश खानेवाला कोई राक्षस हो, जिसका बयान अक्सर पूर्वी किस्से कहानियोंमें पाया जाता है।

जौनके अन्दर जाते ही उसने कहा,—"देखो, मैं ठीक वक्त पर यहां पहुँच गया हूं। मुझे आये कोई पन्द्रह मिनट हुए होंगे।"

जौन,—"और मैं भी यथा सम्भव ठीक समय पर ही आगया हूं। कहो, खबर क्या है?"

हैंगमैन,—"खबर अच्छी है"

इतना कह कर उसने उस देहाती गवारकी तरफ इस मतलबसे इशारा किया, कि एक तीसरे आदमीके सामने हम लोगोंको जोर जोरसे और खुलकर बातचीत करना मुनासिब नहीं है।

जौन,—"तो वह काम कल रातमें हो गया?"

हैंगमैन,—"हां, हो गया।"

जौन,—"तुम्हारे मनके मुताबिक हो ?"

हैगमैन,—"हां, ठीक वैसाही।"

इतनी बातचीतके बाद दोनोंने एक दूसरेको ओर मतलब भरी जरसे देखा।

उधर तब तक खा पीकर वह देहाती एक झपको लेनेके लिये ारामसे बैठ गया। अब हैगमैन और जौनने तम्बाकू पीनेके लिये पना अपना पाइप सुलगाया।

जौन,—(कुछ देर चुप रहनेके बाद) "कल सब लड़किया ली जायंगी। सिर्फ मैं, लौंडिया और मालिकिन रह जायगी।"

हैगमैन,—(तम्बाकू पीता हुआ) "कल चली जाएंगी ?"

जौन,—"हां, कल सुबह ही।"

इसके बाद जौनने उस देहातीको ओर देखा और जब उसको ाख मुंदी पाई, तो एक चाभी निकालकर अपने साथीको दिखादी।

हैगमैन,—(सन्तुष्ट होकर) "अच्छी बात है।"

जौन,—(चाभीको पाकेटमें रखता हुआ धीरेसे) "यह एक नवालेसे मिली है। वह अपने फनमें पूरा उस्ताद है———"

अब वह देहाती खुर्राटे लेने लगा। उधर जौन और हैंगमैन छ देरतक चुपचाप तम्बाकू पीते रहे। आखिर हैगमैनने धीरेसे हा,—"वह गाढी नीदमें सो रहा है।"

जौन,—"हा, मानो घोड़ा तबेला बेचकर सोया हो। लाओ, मेरा स्सा दे दो। तुम्हारा पाकेट भारी मालूम होता है।"

हैगमैन,—(सिक्कोंको गिनकर) "यह लो दश गिन्निया। दश न कल पा चुके हो। सब मिलाकर बीस हुई न ? यह कलके मका हिस्सा है।"

जौन,—(गिन्नियोंको पाकेटमें रखता हुआ) "धन्यवाद। तो ाम मजेमें हो गया, क्यों ?"

हैगमैन,—"ऐसे मजेमें, कि कुछ कह नहीं सकता। प्रिंस और मारक्विसने चूंतक नहीं किया। और मजा तो यह है, कि उन लोगोंको कुछ भी नहीं मालूम हुआ, कि कहां आये और क्या बात है। क्या यह अनोखी बात नहीं है?"

जौन,—"जैसा तुमने कहा था, उससे तो यह बहुत ही अनोखी बात मालूम होती है। अच्छा, अब पूरा पूरा हाल तो बयान करो, डेनल।"

हैगमैन,—"अभी नहीं, फिर कभी कहूंगा। अभी तो दूसरे कामकी बातचीत करनी है। (देहातीको ओर देखकर) मालूम होता है, सचमुच ही वह सो गया है।"

जौन,—"अगर नहीं सोया, तो बहाना करता होगा, पर नहीं, हकीकतमें सो गया है।"

हैगमैन,—"अच्छा, तो इस कामके बारेमें क्या कहते हो? अभी तुमने कहा है, कि लडकियां कल चली जायंगी और तुम्हारे पास दो चाभियां हैं?"

जौन,—"हां, है तो। मेरे ही भाग्यसे आज सान धरने वाला रिचमण्डमें आ गया था। मैं यह सोच ही रहा था, कि क्या बन्दो बस्त करूं, इसी समय उसकी ताला मरम्मत करने और चाभी बनानेकी आवाज कानमें पड़ी।"

हैगमैन,—"और तुमने चट चाभी बनवा ली?"

जौन,—"हां, फिर क्या देर थी। तुम्हें याद होगा, मैं तुमसे पहले ही कह चुका हूं, कि कभी कभी लोहेके सन्दूकसे सब रकाबियां निकालकर साफ की जाती हैं। साफ करने और गिननेके समय चाभी मेरे ही हाथमें रहती है, पर जब साफ करके रकाबियां गिन गिनकर सन्दूकमें रख दी जाती हैं, तो मैं चाभी मालिकिनको दे देता हूं। क्या करूं, वह बड़ी ही चौकसी रखती है।"

कुछ परवाह नहीं, वह बडी बेफिक्रीसे सो रहा है। अच्छा, अब समय ठीक हो जाय, तो चला जाऊं।"

जौन,—"क्या अभी लण्डन लौट जाओगे?"

हैगमैन,—"निश्चय ही। अगर न जाऊं तो कल सबेरे सात बजे अपने कामपर कैसे हाजिर हूंगा?"

जौन,—"वाह! तुम्हारा हजामत बनानेका काम भी कैसा अच्छा है। और तुम्हारा चेहरा भी ऐसा खूबसूरत है, कि मुझे ताज्जब मालूम होता है, कि कैसे तुम्हारे ग्राहक तुमपर विश्वास करके अपनेको तुम्हारे छुरेके हवाले कर देते हैं। ठुड्डी और गलेमें तो फर्क इतना थोडा है—"

हैगमैन,—(मुंह फुला कर) "बस——बस——दिल्लगी रहने दो। हम लोगोंने खुद तो अपनेको गढाही नहीं। अगर ऐसी बात होती, तो मैं अपना चेहरा खूबसूरत बना लेता।"

जौन,—(नशेके झोंकमें) "तब तो तुम जैक केचके आफिसके काम लायक न रहते। पर यार! जल्लाद और सस्ते हज्जामका काम करनेवाला कौफिन लण्डन—फेरिङ्गडन ष्ट्रीट—फ्लीट लेनका मशहूर आदमी है।"

हैगमैन,—(आखें चढा और मुँह लाल करके) "आज तुम्हें क्या हो गया है? अगर तुम न मानोगे, मुझे चिढाते ही जाओगे, तो इस कांसेके बरतनको तुम्हारी खोपडी पर पटक दूंगा।"

जौन,—"दिल्लगीमें बुरा मानते हो? निश्चय ही मेरा मतलब तुम्हें नाराज करनेका नहीं है———"

हैगमैन,—(कुछ शान्त होकर हंसनेकी कोशिश करता हुआ) "अच्छा—अच्छा! पर मेरा स्वभाव अच्छा नहीं है। दिल्लगी मुझे अच्छी नहीं लगती। अच्छा, अब यह बताओ, कि किस दिन काम होना चाहिये?"

जौन,—(कुछ सोच विचार कर) "आगामी रविवारको रातको। उस दिन न तो दावत-जियाफत होती है और न कोई आता जाता ही है। इसके अलावा मालिकिन सवेरे ही सो भी जाती है।"

हैंगमैन,—"बस, तो यही ठीक है। इस बीचमें जर्मीसे भी मिल कर सब ठीक-ठाक कर लूंगा।"

जौन,—"अच्छी बात है। देखो, ठीक आधी रातके समय तुम "

बाकी बात हैंगमैनके कानमें धीरे धीरे कहदी गई।

हैंगमैन,—" अच्छा, मैं ठीक वक्तपर आजाऊंगा।"

इतना कह और बाकी शराब पीकर वह जानेके लिये उठ खड़ा हुआ।

उधर जौन भी गिलासको खालीकर उठ खड़ा हुआ। अब उस देहातीको उसी जगह खुर्राटा लेते छोड़ दोनो दोस्तोंने अपनी अपनी राह पकड़ी।

पन्द्रहवां परिच्छेद।

अत्याचार और रहस्य।

इसी मङ्गलवारकी रातमें, जिसका बयान हम ऊपर कर चुके हैं, कण्टरबरीके पड़ोसमें एक घटना घटी, जिसका वर्णन आगे किया जाता है।

सूर्य्य अस्त हो गये थे। गोधूलीका सुहावना समय उपस्थित था। चारों ओर शान्ति विराज रही थी। क्लान्त हवाको सुगन्धित करते करते थक कर मानो फूलोंकी कलियां अपना मुंह बन्द कर रही थीं और पेड़ोंपर चिड़ियोंका कलरव भी कम पड़ गया था।

ऐसे ही सुहावने समयमें सुन्दरी लुइसा उसी सायेदार कुञ्जमें बैठी हुई थी, जिसमें इससे पहले वह अपने प्यारे जोसिलिनके साथ

बैठ चुकी थी। उस वक्त वह अकेली और चिन्तित थी, पर उसकी इस चिन्तामें दुःख वा उदासीनताका लेशमात्र भी न था। बल्कि यह चिन्ता प्यारकी थी, क्योंकि वह उस नौजवानकी मूर्त्तिका, जिसे अपना दिल दे चुकी थी, दिनभर खयाल करती रही और इस समय भी उसी खयालमें मग्न थी।

गत रात्रिमें जौसिलिनने उससे काण्टरबरीसे कुछ दिनों—कमसे कम तीन दिनोंके लिये बाहर जानेकी बात कही थी। उसी समय उन्होंने उसे यह भी भरोसा दे दिया था, कि ज्यादासे ज्यादा एक हफ्ते में मैं चला आऊंगा। सुन्दरी लुइसासे विवाह करनेपर उनकी अवस्था पलट जायगी, इसलिये एकबार काम-काजकी जांच करनेके लिये उनका लण्डन जाना बहुत जरूरी था। इसके अलावा लुइसाने उन्हें अपनी बहिनके लिये एक चिट्ठी दी थी, जिसे ईटन प्लेट जाकर उन्होंने खुद अपने हाथसे क्लेराको देनेका वचन दिया था। वे खुद ही अपनी प्राण प्यारीकी बहिनसे मिलनेके लिये लालायित थे। पाठक विश्वास रखें, कि उसने सिर्फ अपनी बहिनको पास लम्बी चौड़ी चिट्ठी ही नहीं लिखी थी, बल्कि जौसिलिनकी जबानी भी बहुतसा सन्देसा कहला भेजा था।

जौसिलिन लौफटस, जो कई हफ्तेसे काण्टरबरीके एक होटलमें टिके हुये थे, मङ्गलवारके सवेरेकी डाक गाड़ीसे लण्डनके लिये रवाना हो गये। उनकी इच्छा थी, कि सवेरे ही लण्डन पहुंच जायं और उसी दिन उन आदमियोंके पास चिट्ठियां भेज दी जाय, जिनसे दूसरे दिन मुलाकात करनेकी जरूरत थी। वे चाहते थे, कि जल्द ही काम खतम करके काण्टरबरीमें प्यारी लुइसासे आ मिलें, जिसे वे बहुत दिनसे चाहते थे।

यही कारण था, कि सन्ध्याके सुहावने समयमें लुइसा अकेली इस सायेदार कुञ्जमें बैठी हुई थी। गत रात्रिमें जौसिलिन लौफटस

ने जो जो बातें उससे कही थीं, वह उन्हीं सब बातोंको सोच रही —किस तरह उन्होंने अपनी क्षणिक अनुपस्थितिमें उसे प्रसन्न ानेके लिये प्रार्थना की थी—किस तरह प्रतिज्ञा और कौल-करार रते करते उन्होंसे बड़े प्यारसे उसे चूमकर उसके आसू पोछ दिये । क्योंकि लण्डन जानेसे जौसिलिन और लौरामें जान-पहचान हो ायगी और वे उसके कुशल मङ्गल तथा सुख-चैनकी बात भी दरि ाफ़ कर लेंगे, इसलिये लुइसाने सोचा, कि मुझे इस यात्राके लिये ानन्दित होना चाहिये नकि दुखित। इसके अलावा, यह सफर िवाहके पहले सब काम काज ठीक करनेके लिये होता है,—वह िवाह, जिससे वे बिल्कुल मेरे ही हो जायगें। इसलिये लुइसाने ब इन सब बातोंका विचार किया, तो उसे दुःखित होनेका कोई ारण न दिखाई दिया।

यद्यपि सूर्य्यास्त हुए बहुत देर हो गई थी, अन्धकारका ाम्राज्य चारो ओर फैल गया था, तो भी लुइसा कुञ्जमें ही बैठी ई थी। चारों ओर जो शान्ति विराज रही थी, वह उसके मन ायक ही थी। वह बैठी मानो स्वप्नमें उस बातको सोच रही थी, ो सचमुच ही दिलसे प्यार करनेवाली औरतोंको बहुत ही प्यारी गती है।

लुइसा अपनी सोती हुई फूफीको मेरी (दाई) की हिफाजतमें ोड आई थी। उसे विश्वास था, कि 'अगर मिसेस ष्टेनलीकी ींद टूट जायगी, तो दाई अच्छी तरह उनकी सेवा करने लगेगी, सलिये वह शान्तिमय घने कुञ्जको, जहां बैठकर वह निश्चिन्ताईसे ेम प्रीतिकी बात सोच सकती थी, जल्दी ही छोड़ना न चाहती थी।

इस तरह प्राय दश बजनेका समय हो गया। लुइसा अब घर ानेका विचार कर ही रही थी, कि इसी समय सहसा उसे ऐसा ाब्द सुनाई दिया, जैसे कोई बागके चारों ओरकी झाड़ियोंको अगह

जगहसे चीरकर बागके अन्दर आनेकी राह बना रहा हो। यह आवाज सुनकर वह चौंक पड़ी और दम रोककर सुनने लगी, पर तुरत ही सन्नाटा छा गया। आखिर जब उसका डर दूर होगया, तो वह उठी और घरकी ओर पैर बढ़ाया ही चाहती थी, कि सहसा करोटनके पेड़ोंकी ओटसे निकलकर दो बदमाश उसपर टूट पड़े! एकने तो चट उसका मुंह बन्द कर दिया और दूसरा उसे थाम कने लगा।

पर उसकी यह धमकी निष्फल थी, क्योंकि लुइसा तुरत ही बेहोश हो गई थी, और अगर वे लोग उसे पकड़े न होते, तो वह धड़ामसे जमीनपर गिर पड़ी होती। इसी हालतमें बदमाश लोग उसे भाड़ीकी उस राहके पास ले गये, जिस राहसे वे लोग बागके अन्दर आये थे। वहा जाकर उन लोगोंने उसे उस कब्रों जैसी भद्दी गाड़ीमें बैठा दिया, जो पहले ही से बागके बाहर कुछ दूरपर खड़ी थी। उसे गाड़ीमें बैठाकर उन लोगोंने दरवाजा बन्द कर दिया।

गाड़ीमें बैठ जानेके बाद किसीने उससे कहा,—"उदास क्यों होती हो, बेटी। धीरज धरो, तुम्हें किसी बातका डर नहीं है।" बोलीसे ऐसा मालूम हुआ, मानो यह किसी बुढ़ीकी आवाज हो।

इस बीचमें लुइसाका मन कुछ ठिकानेपर आ गया था। जो कुछ हो रहा था, उसे स्वप्न जैसा समझकर उसने कहा,—"तुम कौन हो? और इसका मतलब क्या है?"

इसपर उस बुढ़ीने कर्कश आवाजमें कहा,—"मैं तुम्हारे सवालोंका जवाब नहीं दे सकती, पर इतना विश्वास रखो, कि तुम कत्ल न की जाओगी, इसलिये डरका कोई कारण नहीं है।"

अब लुइसाने अपने, घूमते हुए सिरको ठीक करनेके लिये कपालपर हाथ रखा। वह गाड़ीके अन्दर घोर अन्धकारमें बेंचपर एक बुढ़ीके पास बैठी हुई थी। गाड़ी सनासन दौड़ी जा रही थी।

पर वह कहां जा रही थी ? उसको क्या गति होनेवाली थी ? निश्चय ही उसके बारेमें उसे भयानक भूल मालूम होती थी, क्योंकि किसीका उसके ऊपर ऐसे अत्याचार करनेका मतलब ही क्या था ?

लुइसा,—(अत्यन्त दुखके साथ) "निश्चय ही तुमने भूलसे मुझे पकड़ लिया है ? बताओ तो सही, तुम्हें किसे गिरफ्तार करनेका हुक्म दिया गया था ?"

बुड्ढी,—"मेरे लड़कोंने यह काम किया है और वही लोग इसका सब हाल भी जानते हैं, पर अगर तुम्हारा ही नाम लुइसा-ड्रेनली है, तो समझ लो, कि हमलोगोंसे भूल नहीं हुई।"

यह बात सुनते ही निराशाकी एक दर्दनाक चीख उसके मुंहसे निकल गई। एकदम लाचारीके खयालसे वह पगलीसी हो उठी। हाय। उसकी फूफीकी क्या दशा होगी ? उसकी दाई ही क्या खयाल करेगी ? यह खयाल ही उसका पागलपन बढ़ा रहा था! अगर कुछ दिन वह कैदमें रह गई—अगर जोसिलिनने लौटनेपर उसे गैरहाजिर पाया—वा उनकी चिट्ठीका जवाब ही न दिया गया, तो वे क्या खयाल करेंगे ?—ओह! जब यह सब खयाल उसके दिलमें उठते, तो उसे सैकड़ों बिच्छुओंके एक साथ काटनेकी तकलीफ होती।

प्राय. बीस मिनट चलनेके बाद गाड़ी पक्की सड़कपर जा पहुँची। उस वक्त लुइसाको मालूम हुआ, कि गाड़ी अब कण्टरबरी शहरमें आ गई है। यह घूमघुमौआ रास्ता निश्चय ही भुलावा देनेके लिये पकड़ा गया है। आखिर कुछ देर और चलनेके बाद गाड़ी खड़ी हो गई। अब उस बुड्ढीने कड़ी आवाजमें कहा,—"अच्छा अब जरा अपनी आखोंपर पट्टी तो बांधने दो—"

इतना कहनेके बाद ही बुड्ढीने लुइसाके मुंहकी ओर अपने हाथोंको बढ़ा दिया। लुइसाके मुंहमें बुड्ढीका हाथ लगते ही उसे ऐसा

मालूम हुआ, मानो वे हाथ किसी खूंखार जानवरके पञ्जे हों। अब तुरत ही उसके जीमें यह खयाल उठा, कि वह गाडीमें किसी बहुत ही भयानक—शायद किसी आसमानी जीवके साथ बैठी हुई है। इस खयालके उठते ही एक चीख उसके मुंहसे निकल गई और उसीके साथ वह बेहोश होकर गाडीमें गिर पडी।

जब लुइसाकी आंख खुली, तो उसने अपनेको एक चारपाईपर पड़े पाया, जिसके पास ही एक गम्भीर मुख वाली अधेड औरत खडी थी।

इसवक्त लुइसाके मनमें कितनी ही तरहकी दुःखद खयाल उठ रहे थे, इसलिये उसने घबराकर पूछा,—"मैं कहां हूं ?" अभी इस सवालका जवाब मिला भी न था, कि इसी बीचमें एक बार उसकी नजर बिजलीकी तरह कमरेमें चारो ओर दौड गई।

कमरा छोटा, पर खूब सजा हुआ था। बीचमें एक टेबिलपर मोमबत्ती जल रही थी। दीवारोंपर तख्ते वा कागजकी जगह मोटी बनात लगी हुई थी। जिस चारपाईपर लुइसा सोई हुई थी, उसपर मोटी मसहरी पडी हुई थी, पर उस समय उसके शरीरमें हवा लगनेके लिये वह एक तरफ समेट दी गई थी। उसी तरह खिडकीपरका मोटा पर्दा भी हटा दिया गया था, इसलिये सामनेकी खिडकी साफ दिखाई दे रही थी।

जब कमरेको चारों ओर देखनेके बाद उसे यह विश्वास हो गया, कि वह स्वप्नसे नहीं उठी, बल्कि सचमुच ही घरसे पकड लाई जाकर एक अनजान जगहमें रख दी गई है, तब उसने चौंककर पूछा,—"मैं कहां हूं ?"

इसपर उस औरतने, जो चारपाईके पास खडी थी, बडी मुलायमियतके साथ कहा,—"मनको स्थिर करो, बेटी।"

लुइसा,—(चारपाईसे उठकर) "पर मैं हूं कहां ? किसके हुक्मसे मैं यहां लाई गई हूं ?"

औरत,—"तुम्हारी इन बातोंका जवाब मैं नहीं दे सकती, पर इतना अवश्य कह सकती हूं, कि न तो तुम्हें ही किसी बातका डर है, और न उन्हींको, जिन्हें तुम घरमें छोड़ आई हो।"

लुइसा,—(बड़ी बेचैनीके साथ) "तुम्हारी पिछली बातका मतलब क्या है?"

औरत,—"तुम्हारी गैरहाजिरीका माकूल बहाना कर दिया गया है। एक विश्वासी आदमी तुम्हारी दाईसे कह आया है।"

लुइसा,—"हे परमेश्वर। तब क्या मैं बहुत दिनोंतक यहां कैद रहूंगी? कई हफ्ते—कई महीनों—वा—"

इतना कहकर वह डरके मारे बीच हीमें चुप हो गई और फूट फूटकर रोने लगी।

औरत,—"मैं फिर भी कहती हूं, कि मुझे तुम्हारे किसी सवालके जवाब देनेका हुक्म नहीं है, पर मैं आर्जू करती हूं, कि मनको स्थिर करो—शान्त हो—"

लुइसा,—(सुबक सुबक और हाथ मल मलकर) "हाय! मेरी क्या दशा होगी? मेरे भाग्यमें क्या लिखा है?"

इन बातोंका कुछ भी जवाब न दे वह औरत दो चार कदम पीछे हटकर खड़ी हो गई और ऐसी बेरहमीसे उस दुःखद दृश्यको देखने लगी, कि जिसे देखकर उस आदमीके सिवाय, जिसे वैसा दृश्य देखनेकी आदत पड़ी हुई हो, सबका मन पिघल उठता। शायद उसने यह सोचा हो, कि कुछ देर रो लेनेसे उसकी तकलीफ कम पड़ जायगी। अगर वह यही सोचकर चुप हो रही हो, तो उसका सोचना गलत नहीं था, क्योंकि कुछ देर तक रो लेनेके बाद जब लुइसाका मन कुछ स्थिर हुआ, तो वह फिर उस औरतसे सवालपर सवाल करने लगी।

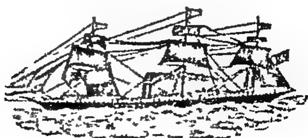
अब उस औरतने कहा,—"मिस। मैं तुम्हारे साथ गप लड़ाने

या बातचीत करनेके लिये यहाँ नहीं आई, बल्कि लौण्डीकी तरह, तुम्हारा हुक्म बजानेके लिये आई हूं। अगर तुम्हें नाश्तेकी जरूरत हो, तो मैं अभी ले आऊं। अच्छीसे अच्छी खाने पीनेकी चीजें तुम्हारे लिये हाजिर हैं। अगर तुम आराम करना चाहो, तो देखो, बिस्तरा तय्यार है और मैं सोनेका कपड़ा पहनानेके लिये मुस्तैद हूं। चूंकि बहुत देर हो रही है, इसलिये मैं उम्मीद करती हूं, कि तुम मेरा कहना मान लोगी। जैसी तुम्हारी इच्छा हो, आज्ञा करो, बन्दी सेवामें हाजिर है। और अगर तुम अकेली रहना चाहती हो, तो हुक्म दो, मैं अभी चली जाऊं?"

लुइसा,—(भाग जानेकी अनिश्चित आशा और खयालके वशीभूत होकर) "अच्छा, तो तुम जाओ, मैं अकेली ही रहूंगी।"

वह खुर्राट औरत लुइसाके मनकी बात ताड़ गई, इसलिये उसकी निष्फल आशापर उसके ओठोंपर मन्द मुस्कराहट दिखाई पड़ने लगी। उसने ठण्ढी सलाम करके अपनी राह ली।

जानेके समय वह दोनों दरवाजोंको बन्द करती गई। लुइसाने भी ताला और बेवड़ा लगानेकी आवाज सुनी। उस मनहूस आवाजको सुनकर लुइसा चिल्ला उठी,—"हाय! मेरी क्या दशा होगी?" फिर निराशाके साथ घुटनोंके बल बैठकर वह मनसे उस जगत्पिता परमेश्वरसे प्रार्थना करने लगी, जो स्वर्गमें बैठा हुआ संसारकी सब बातें देखता रहता है।



सोलहवां परिच्छेद।

मारक्विस लेवेसन।

गत परिच्छेदमें जिस घटनाका वर्णन किया गया है, उसके दूसरे दिन बुधवार था। अब दृश्य बदलता है और हम अपने पाठकोंको साथ लिये कण्टरबरीसे फिर लण्डन आते हैं।

उस दिन मारक्विस लेवेसन मामूली वक्तसे कुछ सवेरे ही उठ बैठे थे। उनके प्रिय नौकर स्टिफेन ब्रौकमैनने देखा, कि मारक्विसका मन चञ्चल हो रहा है, पर वह बड़ा ही चालाक था, इसलिये कुछ भी न बोला। उसने सोचा, कि यदि वैसी कोई बात हो गई हो, या होनेवाली हो, तो अगर उनकी इच्छा होगी, तो वे आप ही कह देंगे और यदि उनका मन न होगा, तो पूछने पर भी न कहेंगे।

आखिर मारक्विस कपड़ा पहनकर तय्यार हो गये। फिर उन्होंने मूछोंमें खिजाब और मुँहमें नकली दांत, जो रातभर गुलाबजलमें भींगते रहे थे, लगा लिये। इसके बाद सिरमें बेशकीमत नकली बाल लगाये, जो असलीकी तरह मालूम होते थे। उनके कपड़ोंमें जरा भी सिकुड़न न दिखाई देती थी। कमीजकी किमरिखी झालरमें सोनेकी पिन चमकने लगी। वेष्टकोटमें अनूठे कामकी सुनहरी चेन सुशोभित हो गई। दाहिने हाथकी उंगलियोंमें दो बहुत ही बढ़िया और बेशक़ीमत अँगूठिया, जिनका दाम पाकर कोई भी कारीगर बेफिक्रीसे अपनी जिन्दगी बिता सकता है, शोभा देने लगीं।

अब कदआदम आइनेमें गौरसे अपनी सूरत देखकर मारक्विसने नौकरसे कहा,—"ब्रौकमैन। आज तुम्हें कुछ खास हुक्म देना है।"

ब्रौकमैन,—(बात सुननेकी आशासे खुश होकर) "जो आज्ञा।"

मारक्विस,—"आज मैं दिनभर मकान ही पर रहूंगा, और लाल कमरेमें बैठूंगा। आज जो मुलाकाती आवे, वह चाहे जैसी सूरतका हो, मर्द हो वा औरत, तुरत ही उसे मेरे पास भेज देना।"

ब्रीकमैन,—"बहुत अच्छा।"

मारक्विस,—"आतशदानके दोनो ओर जो दो फूलदान रखे हुए हैं, सो तो तुम जानते हो न? अच्छा, दोनोमें एक एक भरी हुई पिस्तौल रख देना, उनका कुन्दा ऊपर रहे, जिससे तुरत ही हाथमें आ जाय।"

ब्रीकमैन,—(आश्चर्य और भयसे) "दो भरी हुई पिस्तौलें!"

मारक्विस,—(हुक्मके तौरपर) "हां, दो भरी हुई पिस्तौलें, भूलना मत,—भरकर रखना। मेरे लिये कोई चिन्ता न करो। मैं द्वन्द्वयुद्ध नहीं करूंगा। यह सावधानी सिर्फ इसलिये की जाती है, कि अगर कोई मुलाकाती बदमाशी करे, तो वे वक्तपर काम आवें।"

ब्रीकमैन,—"बहुत अच्छा, सरकारके हुक्म-मुताबिक ही सब काम किया जायगा।"

मारक्विस,—"पिस्तौलोंको छिपा रखनेके लिये दोनों फूलदानोंमें एक एक गुलदस्ता भी रख देना। और सुनो, लाल कमरेमें आज इसलिये बैठूंगा, कि उसमें दो घण्टे लगे हुए हैं। उनमेंसे एक घण्टेका सम्बन्ध नौकरोंके कमरेसे है और दूसरेका उस राहसे, जो तुम्हारे कमरेको जाती है।"

ब्रीकमैन,—"जी हां, सरकार!"

मारक्विस,—"अच्छा, अब जो मैं कहता हूं, उसपर खूब खयाल रखना। जिस समय कोई मुलाकाती आवे, उसी समय तुम अपने कमरेमें चले जाना और खिडकीका परदा गिरा देना। फिर जब-तक मैं हुक्म न दूं, तबतक वहीं बैठना और घण्टा बजनेकी राह देखते रहना। जब घण्टा एक बार बजे, तो पर्देको उठा देना। समझते हो न?"

औकमैन,—"जोहा, सरकार।"

मारक्विस,—"और जब घण्टा दो बार बजे, तो फौरन लाल कमरेमें चले आना। उस वक्त वहा तुम्हारी बहुत जरूरत रहेगी।"

औकमैन,—(इस आशासे, कि शायद इन सब बातोंका भेद मालूम हो जाय) "बहुत अच्छा, धर्मावतार! और कुछ हुक्म है?"

मारक्विस,—"नहीं, अब मैं सोधा लाल कमरेमें जाता हूं, वहीं नाश्ता भिजवा देना।"

मारक्विसको इस अनूठो कार्रवाईका कुछ भी मतलब न समझ औकमैन निराशाके साथ सलाम करके चला गया। उसके जानेके बाद मारक्विसने दराज खोलकर दो हजार पाउण्डके कई बैङ्क नोट निकाले और एक टुकड़े कागजपर उन नोटोंके नम्बर लिखकर उसे दराजमें बन्द कर दिया। फिर उन नोटोंको वेष्टकोटके पाकेटमें रखकर नोचे—लाल कमरेमें चले आये।

पर्दे, सोफा और कुर्सी वगैरहको गद्दियोंके रंगसे उस कमरेका नाम जो असलमें बैठकखाना था, लाल कमरा पड़ गया था। वह बहुत अच्छी अच्छो भड़कीलो चीजोंसे सजा हुआ था। कमरा बहुत ऊंचा था। उसको छतका रंग वैसा ही था, जैसा सूर्य्योदयके समय आकाशका होता है। कारीगरने उसमें गुलाबी रंग इसी लिये दिया था, कि जिसमें दीवारपरके लाल कागजों और कुर्सी वगैरहके साजके साथ वह रंग मुकाबिला कर सके। उस रौनकदार कमरेमें चारों ओर चार कदआदम आइने कार्नीसे लगे हुए थे। चीनीके सुन्दर सुन्दर फूलदान फूलोंसे भरे हुए रखे थे, जिनकी सुगन्धसे कमरा सुगन्धमय हो रहा था। खिड़कियोंके पर्दों से छन छनकर आती कोमल रोशनीका रंग ठीक वैसा ही था, जैसा सुबहके वक्त एकदम खिले हुए लाल गुलाबके कुञ्जके बीचमें जाती हुई सूर्य्यकी किरणका होता है।

लाल कमरेमें दो दरवाजे थे। एक तो सीढ़ीसे उतरनेकी जगहके पास ही था, जो आने-जानेका सदर-दरवाजा कहलाता था, और दूसरा ठीक उसके सामने दूसरी ओर था। वह उन दो कमरोंमें जानेका रास्ता था, जिनमें सब नौकरोंको जाने-आनेका हुक्म न था। उन गुप्त कमरोंके दरवाजोंकी कुञ्जी हमेशा मारक्विसके पास रहती थी। जब सफाईकी जरूरत होती, तो घरका इन्तिज़ाम करने वाली दाई और ग्रीकमैनको वह काम सौंपा जाता था। इन्हीं कमरोंके बारेमें लोग वैसा खयाल करते थे, जिसका ज़िक्र इस किस्से के शुरूमें किया जा चुका है। यानी उनमें ऐसे ऐसे चित्र और प्रति मूर्त्तियां सजी हुई थी, जिन्हें देखकर मुनियोंके मनमें भी डोल जाते और सरलसे सरल कुमारियोंके दिल भी फडक उठते थे।

अच्छा, अब किस्से का सिलसिला शुरू किया जाता है। मारक्विस लाल कमरेमें नाश्ता करनेके लिये बैठ गये और नारियलकी शराब पीने-लगे। नाश्ता करते समय उन्होंने मन ही मन अपनी सब सावधानीको दुहरा डाला। नियमके विरुद्ध बिस्तरेपरसे उठनेके बाद ही उन्होंने दिनके कपडे पहन लिये थे, क्योंकि न मालूम कब मुलाकाती आ-जाय वा कबतक उसकी राह देखनी पडे। जरूरतके वक्त काम आनेके लिये उन्होंने दो भरी हुई पिस्तौलें पास ही रखवा ली थीं और यदि नौकरकी आवश्यकता हो, तो उसके बुलानेका भी उपाय कर लिया था। बैङ्क-नोटोंके नम्बर उतार लिये गये थे। ग्रीकमैनके कमरेकी खिडकीका पर्दा उठाना भी उन्हींमें एक था।

अपने बन्दोबस्तसे खुश होकर मारक्विसने नाश्ता खतम किया और बरतन उठा ले जानेके लिये घण्टा बजा दिया। घण्टेकी आवाज सुनकर जो नौकर आया, वह उस वक्तकी डाकसे आई हुई चिट्ठिया भी लेता आया था। मारक्विस बड़े आरामसे लापरवाहीके साथ उन चिट्ठियोंको देखने लगे।

उनमेंकी पहली चिट्ठीमें यह लिखा हुआ था :—

"मङ्गलवार-सन्ध्या, १७ वीं सितम्बर, १८१४ ई०

"मेरे प्यारे चाचा। मेरे अक्षर पहचान और यह जानकर, कि मैं फिर लण्डन आ गई हूं, आप चौंकियेगा मत। रविवारको सन्ध्याको मैं यहां आई और बहुत छिप-लुककर रही हूं, इसका कारण आप खुद सोच सकते हैं। कल बुधवारको ठीक बारह बजे दोपहरके समय मैं आपसे मुलाकात करना चाहती हूं, कृपाकर घर ही पर रहियेगा और अकेले ही, क्योंकि आपसे बड़े कामकी बातें करनी है।

"आपकी प्यारी भतीजी—

"अरनेष्टिना डाइसर्ट।"

चिट्ठी रखकर मारक्विसने कहा,—"कमबख्त अरनेष्टिना। घर भरमें सिर्फ यही एक लड़की थी, जिसे मैं प्यार करता था। इसने लड़कपनमें—लालचमें पड़कर शादीके जञ्जालमें फंसनेसे पहले—मेरी सख़ बीमारीमें बड़ी सेवा-शुश्रुषा की थी। कमबख्त अरनेष्टिना! अच्छा, तुमसे मुलाकात करूंगा—जरूर करूंगा।"

इतना कहकर मारक्विस घण्टा बजा और नौकरको बुलाकर यह कहना ही चाहते थे, कि दोपहरके समय जब मेरी भतीजी अरनेष्टिना डाइसर्ट आवे, तो फौरन मेरे पास ले आना, इतनेमें उन्हें याद हो आया, कि मैंने तो जो कोई आवे, उसे भेज देनेका हुक्म दे ही दिया है, फिर अब क्या जरूरत है? यह सोचकर वे बैठ गये और दूसरी चिट्ठी उठाकर पढ़ने लगे, जिसका मजमून यों था :—

"मङ्गलवार-सन्ध्या, १७वीं सितम्बर १८१४ ई०

"माई लार्ड,

मैं जितना ही चाहता हूं, कि आपसे खुद बातचीत करनेका मौका न मिले, कार्य्यवश आपसे मिलनेके लिये उतना ही लाचार

होता हूं, इसलिये कल दिनको एक बजे आपसे अवश्य मिलने आऊंगा। कृपाकर मकान ही पर रहियेगा।

"आपका आज्ञाकारी नौकर और भतीजा—
"अलजर्नन कवेंडिश।"

चिट्ठीको गुस्से से टेबिलपर फेंककर मारक्विसने कहा,—"पाजी लड़का। वह अपने रिश्तेदारको मानता भी नहीं और मुलाकात करनेकी भी दरख्वास्त करता है। अगर दुनिया उसका सब हाल जानती, तो अवश्य उसे तेज-मिजाज वगैरह वगैरह कहती। पर मैं उससे मिलूंगा—हां—मिलूंगा। क्योंकि मैं यह जानना चाहता हूं, कि अब वह मुझसे क्या चाहता है। अहा। कैसा अनोखा संयोग है। भाई और बहिन दोनों एक ही दिन मुझसे मिलने आवेंगे। दोनोंने एक ही समयमें चिट्ठी भी लिखी है, पर तो भी मजमूनमें बहुत फर्क है। मैं साहस पूर्वक कह सकता हूं, कि दोनो भाई बहिनोंमें कुछ दिनोंसे मुलाकात नहीं हुई।"

इस तरह कहते हुए मारक्विसने तीसरी चिट्ठी उठाली और अक्षर पहचानकर चट उसे खोल डाला। उसमें यह लिखा हुआ था:—

"१२ ब्रूटन ष्ट्रीट, पिकाडिली,
१७ वीं सितम्बर, १८१४ ई०।

"प्यारे लार्ड लेवेसन!

आपसे एक खास कृपा-भिक्षा मांगनेकी जरूरत आ पड़ी है, मुझे निश्चय है, कि आप कभी उसे अस्वीकार न करेंगे। पर मैं उसे कागजपर लिखना नहीं चाहती, इसलिये खुद ही आकर आपसे मिलनेका आनन्द अनुभव करूंगी। कल (बुधवार १८वीं सितम्बरको) आप तीन बजे मकान ही पर रहियेगा। एक नाजनी है।

"आपकी कृपा भिक्षापिनी—
"एलिजैबेथ मेथर्ट।"

इस खतको पढ़कर मारक्विसने कहा,—"अपने सिरकी कसम, आज घर रहकर मैंने अच्छा ही किया है। ओह! आज कितने मुलाकाती मिलने आवेंगे। अनुमानसे मालूम होता है, कि मिस बेथर्ष्ट फिर कुछ कर्ज लेना चाहती है। हां, निश्चय ही कर्ज। मानो चुका ही तो देगी! अभी डेढ़ दो महीने हुए, एक हजार पाउण्ड ले गई है न, यह तो साफ ही दिखाई देता है, कि वह उसे चुकाने नहीं आती, अगर ऐसा होता, तो कृपा-भिक्षाकी बात क्यों लिखती। मिस बेथर्ष्ट जैसी रमणियोंके लिये यह परम सौभाग्यकी बात है, कि इस संसारमें मारक्विस लेवेसन जैसे मनुष्य वर्त्तमान हैं।"

जब मारक्विसने चौथी चिट्ठी उठाई, तो मिसेस इवेनके तो अक्षर पहचानकर उनका विचार-स्रोत पलट गया। उस चिट्ठीमें यह लिखा था :——

"रिचमण्ड, मङ्गलवार-सन्ध्या, १७ वीं सितम्बर, १८१४ ई०।

"मेरे प्यारे लेवेसन!

कल सवेरे मैं चारों लड़कियोंको लेकर लण्डन आऊंगी। सब काम ठीक है। वे सब तुरत ही रवाना हो जायंगी। इसी मतलबकी एक चिट्ठी दयामयी महारानीने भी लिखी है। मैंने चारों लड़कियोंको सिखा पढ़ाकर खूब पक्का कर दिया है। मुझे विश्वास है, कि न तो पेरिसकी मशहूर खुफिया पुलिस और न जेजूइट-धर्म्म-सम्प्रदाय * का कोई चालाकसे चालाक आदमी मेरी लड़कियोंसे बढ़कर काम कर सकेगा। मैं उनके साथ ग्रीनविच तक जाऊंगी। जब वे सब जहाजपर चढ़कर चली जायगी, तो मैं भी वहांसे लौटकर लण्डन होती हुई घर चली जाऊंगी। चूंकि आपसे खानगी

* जेजूइट—एक धर्म्म सम्प्रदायका नाम है, जो जीसस क्राइष्टके नामपर सन् १५३४ ई०में इगनेशिस लायला नामक व्यक्ति द्वारा स्थापित हुई थी। इस संस्थाका मुख्य उद्देश्य प्रोटेष्टेण्ट धर्मकी उन्नति करना और उसकी बुराइयोंको दूर करना है।

तौरपर दो-चार बातें करनी हैं, इसलिये कल शामको चार पांच बजेके बीचमें जरूर मिलूंगी। "आपकी सखी—

"एन उवेन।"

इस चिट्ठीको पढ़कर मारक्विसने जोरसे कहा,—"कैसे ताज्जुबकी बात है। आज चार आदमी मुझसे मुलाकात करने आवेंगे, और उसकी तो कोई बात ही नहीं, जिसके लिये आज खासकर मैं मकान ही पर रहा हूं। कैसी कठिन समस्या है। अगर किसी उपन्यास वा प्रेमके किस्से कहानीमें पाठक ऐसे सयोगकी बात पढ़ें, तो वे निश्चय ही असम्भवताका दोष लगावें। जो कुछ हो, आज मुझे दिन भर फुरसत न मिलेगी। पर यदि वह मुलाकाती—मुलाकातीका मुलाकाती—चाहे वह मर्द हो या औरत—जो पाकेट-बुक देकर दो हजार गिन्नी लेने आवेगा—उसी समय आ पड़े, जिस समय और कोई मुलाकाती मेरे पास बैठा हो, तो मैं उसके लिये दूसरेको, चाहे वह भतीजा हो वा भतीजी, मिस वैयट हो वा मिसेस उवेन, कोई भी हो, उसे मैं जरूर विदा कर दूंगा।"

इस तरहका पक्का इरादा करके मारक्विस अन्यान्य चिट्ठियोंको देखने लगे, पर उनमें पाठकोंके कामकी कोई चिट्ठी नहीं थी, इसलिये उनका वर्णन करना व्यर्थ है।

बारी बारीसे सब चिट्ठियोंको पढ़कर मारक्विस एक खिड़कीके पास गये। सड़ककी दूसरी तरफ उन्हें एक भिखमङ्गा दिखाई पड़ा। उसके कपड़े फटे हुए थे, सिरमें एक सफेद रूमाल बंधा हुआ था और एक आंखपर काली पट्टी चढ़ी हुई थी। वास्तवमें वह बड़ा ही दुःखित दिखाई देता था।

उस भिखारीको देखकर मारक्विसके मुखपर मुस्कराहटकी झलक दिखाई दी। आखिर वे उस जगहसे हट गये।

सत्रहवां परिच्छेद।

अरनेष्टिना और अलजर्नन।

जिस समय अलमारीपरकी घडीमें बारह बजा, ठीक उसी समय लेविसन हाउसके फाटकपर एक ठीका गाडी आ खडी हुई। भडकोली पोशाक पहने और मुँहपर बुर्का डाले हुई एक औरत गाडीसे उतरी। मकानके दालानमें आकर उसने बुर्केको उलट दिया, जिससे एक बहुत ही खूबसूरत चेहरा निकल आया। इस वक्त उसपर कुछ गम छाया हुआ था, पर उससे वह चेहरा और भी भला मालूम होता था।

दरबानने उसे पहचानकर बड़े अदबके साथ सलाम किया। उस रमणीके पूछनेपर एक नौकरने कहा, कि मारक्विस अन्दर ही हैं। इतना कहकर वह उसे लाल कमरेके दरवाजेपर लेगया और दरवाजा खोलकर बोला,— "लेडी अरनेष्टिना डाइसर्ट।"

उसका स्वागत करनेके लिये कुछ आगे बढकर मारक्विसने कहा,—"अहा! मेरी प्यारी भतीजी! तुम्हें देखकर बडी खुशी हासिल हुई।" इतना कहकर उन्होने बडे प्यारसे उसका माथा चूम लिया और आदर सहित लाकर एक कुर्सीपर बैठा दिया, फिर आप भी उसके पास ही एक कुर्सीपर बैठ गये।

स्वभावतः मनुष्य किसी न किसी चीज वा जीवको प्यार करता ही है। घोर परनिन्दक और परम स्वार्थिन वृद्धा स्त्री भी अपनी बिल्लीको प्यार करती है—अति लोभी कृपण मनुष्य भी अपने किसीको जी-जानसे चाहता है—और बड़ा भारी कट्टर बदमाश भी अपनी प्रेमिकाके सामने सीधा और नरम हो जाता है। यही हाल मारक्विस लेवेसनका था। जिस तरह सम्राट, सेटिम और

बदनीयत—अपने भोग विलासके विषयमें अत्यन्त स्वार्थी और आ-त्माभिमानी—और कामलिप्सा तृप्त करनेके लिये किसी पदार्थ या मनुष्यका सर्वनाश करनेमें तत्पर रहता है, ये घृणायोग्य उमराव भी उसी तरह अपनी भतीजी अरनेष्टिनाको प्रशान्त पैतृक स्नेहकी दृष्टिसे देखते थे।

उसकी चिट्ठीको पढ़कर जब वे सोचमें डूब गये थे। तब उन्होंने सच ही कहा था, कि "वही एक लड़की है, जिसे मैं प्यार करता हूं।" अपनी स्त्रीको वे हमेशा नाचीज समझते रहे और उसके जनाजेके साथ बिना एक बूंद आंसू गिराये ही कब्रस्थान तक गये थे। उनके कोई सन्तान न थी। अपने भतीजे अलजर्नन कवेण्डिशसे, जो उनका सच्चा वारिस था, वे दिलसे नफरत करते थे तथा और और रिश्तेदारोंका भी वे घृणाकी दृष्टिसे देखते या उनसे उदासीन रहते थे, पर चाहते थे, केवल अपने भतीजे अल-जर्ननकी सगी बहिन अरनेष्टिना को। उसे वे बचपनसे ही प्यार करते थे, और जब उसने उनको सख्त बीमारीमें खूब सेवा टहल की तो उनके प्यारकी माता और भी बढ़ गई।

पर तो भी उनका प्रेम खास तौरका था। अरनेष्टिनाने उनकी इच्छाके विरुद्ध एक मनुष्यसे शादी कर ली थी। असलमें जिस आदमीसे उसका विवाह हुआ था, उसके साथ वह भाग गई थी। इससे मारक्विसने इस शादीको नाकबूल करते हुए मिष्टर डाइसर्टसे बोलने और उनका उपकार करनेके लिये बुरी सौगन्द खाली थी। अरनेष्टिनाका स्नेह भी उनका मन पलट न सका, इसलिये गत कई वर्षों (उस मनहूस शादी और भाग जानेके समय) से अरने-ष्टिना अपने चाचाकी कृपासे वञ्चित रही।

किन्तु अब फिर भतीजी और चाचाके एक होनेका समय आ गया था। चाचाने भतीजीका सादर स्वागत किया था। उसने

माथेको स्नेहसे चूमा था—उसे प्यारसे बैठाकर आप भी उसके पास बैठ गये थे—और बड़े गौर तथा चावसे उसकी ओर देख रहे थे, इस बीचमें दोनों एक दो बार मिले थे। आखिरी मुलाकात हुए भी छः महीने गुजर गये थे। वह अब भी ऐसी सुन्दरी थी, कि उसकी सुन्दरता मनको अपनाये लेती थी, इसीलिये मारक्विस मन ही मन अफसोस करते रहते थे, कि हाय! ऐसी अनुपम सुन्दरी "पाल डाइसर्ट" जैसे आदमीके पल्ले पड़ गई!

तोभी यह बात नहीं थी, कि अरनेष्टिनाका स्वामी लम्पट, निर्लज्ज, कुरूप, जुआरी, फजूल-खर्च या अपनी स्त्रीसे उम्रमें बहुत बड़ा हो। असलमें इन सब कारणोंसे मारक्विसको वह सम्बन्ध नापसन्द नहीं था, बल्कि इन सब वजहोंसे नापसन्द था, कि वह गरीब था—किसी अमीर-उमरावसे उसकी रिश्तेदारी नहीं थी। यथार्थमें वह नसीब आजमाने वाला एक गरीब युवक था। इसीसे मारक्विस यह खयाल करते थे, कि अरनेष्टिनाने ऐसे आदमीसे शादी करके अपनी इज्जत खुद ऐसी खराब करली है, कि अब वह किसी तरह सुधर नहीं सकती। यद्यपि उन्होंने अरनेष्टिनाका सादर स्वागत किया था, तो भी वह जानती थी, कि अगर स्वामीका नाम भूलसे भी मुंहसे निकल जायगा, तो चाचा साहब सख्त नाराज हो जायंगे और बेहद बकने-झकने लगेंगे।

मारक्विस,—"तुम्हें देखकर मुझे बड़ी खुशी हासिल हुई है।"

अरनेष्टिना,—(लम्बी सांस लेकर) "मैं भी आपको देखकर बहुत खुश हुई हूं। आप तन्दुरुस्त—भले चङ्गे—और खुश हैं तो?"

मारक्विस,—"हां, परमेश्वर करें, तुम भी खुश हो। अगर मेरे जरिये तुम्हारा दुःख घट सके—केवल तुम्हारा ही, देखना——"

अरनेष्टिना,—(एक अजीब उत्तेजनाके साथ) "धन्यवाद है,

मेरे प्यारे चाचा, धन्यवाद है। मैं अपनी चिट्ठीमें लिख ही चुकी हूं, कि आपसे एक कामकी बात करनी है। वह बात और कुछ नहीं, आपसे एक कृपा-भिक्षा मागनी है।"

मारक्विस,—(जल्दीसे) "हां, हां, कहो—कह डालो, पर एक खास विषय वा खास आदमीके बारेमें कोई बात न कहना।"

अरनेष्टिना,—(चञ्चलता और उत्तेजनाके साथ, शङ्का सहित) "नहीं, मेरे प्यारे चाचा। मैं केवल अपने लिये कहूंगी। मैं आपसे धनकी भिक्षा मागती हूं।"

मारक्विस,—"मैंने यही समझा भी था, पर कहीं तुम वह धन उस आदमीको न दे दो, जो सब जुएमें उड़ा डाले और फिर तुम वैसी ही तकलीफमें बनी रहो——"

अरनेष्टिना,—(शीघ्रता पूर्वक) "नहीं चाचा। ऐसा कभी न होगा। मैं आपको विश्वास दिलाती हूं, कि मैं इसे सिर्फ अपने काममें लाऊंगी—अपना दुःख दूर करनेमें——"

मारक्विस,—(पिताकी तरह प्यारसे उसका हाथ पकड़कर) "अच्छा अच्छा, अरनेष्टिना। तुम्हारी इच्छा पूर्ण कर दी जायगी, पर तुम कितने दिन लण्डनमें रहोगी?"

अरनेष्टिना,—"अगर आप कृपाकर दें, तो फिर मैं घण्टे ही भरमें लण्डन छोड़ दूं, जरा भी देर न करूं। शायद बहुत दिनोंके बाद फिर कभी मुलाकात हो।"

मारक्विस,—(रुपयेकी तायदादका खयाल और उसकी बातका विचार करते हुए) "बहुत दिनोंके बाद। अच्छा, जब तुम बहुत दिनोंके लिये लण्डन छोड़ती हो, तो मुझे ऐसा बन्दोबस्त कर देना चाहिये, जिसमें तुम्हारा दुःख, दरिद्र दूर हो जाय। कुछ देर यहां ठहरो, मैं अभी आता हूं।"

इतना कहकर मारक्विस वहांसे सीधे अपने खास कमरेमें चले

ये। वहां जाकर उन्होंने उसी दराजको खोला, जिसका जिक्र ंत परिच्छेदमें किया जा चुका है। उसमेंसे दो हजार गिन्नियोंके क-नोट लेकर वे फिर लाल कमरेमें लौट आये।

क्यों उन्होंने दो हजार गिन्नियोंके नोट निकाले, यह कहना हज नहीं है। उस दिन पाकेट-बुक वापिस पानेके लिये उन्हें तनी ही रकम देनी थी, इसलिये शायद वही तायदाद उनके दिलपर लगी हुई हो, अथवा यह भी हो सकता है, कि विवाहके बाद उन्होंने एकबार अरनेष्टिनाको दो हजार गिन्नियां दी थीं, इसीसे इस समय उससे कम देना मुनासिब न समझा हो।

चाहे जिस खयालसे हो, मारक्विसने लौटकर इतनी ही रकम अपनी भतीजी अरनेष्टिनाके हाथमें रखदी।

मारक्विस,—"यह लो, दो हजार गिन्नियां। परमेश्वर करे, इनसे तुम्हारा उपकार और भला हो——"

मारक्विस अभी इतना ही कहने पाये थे, कि अरनेष्टिना उनसे लिपट गई और उनके कन्धेपर अपना सिर रख सुसुक सुसुककर रोने लगी।

यह देख मारक्विसका मन विचल उठा। उन्होंने कहा,—"शान्त हो, मेरी प्यारी बेटी। प्रसन्न हो। 'मैं तुम्हारे दु:खको अच्छी तरह समझता हूं, पर उसका जिक्र करना नहीं चाहता। मनको खुश करो, मैं कहता हूं'——"

इसपर कांपती हुई आवाजमें अरनेष्टिनाने कहा,—"मेरे प्यारे चाचा! इस दु:खके उबालको माफ कीजिये।" इसके बाद सिर उठाकर उसने आंसुओंको पोंछ डाला और बड़ी मुश्किलसे मनको स्थिर कर पूछा,—"अच्छा चाचा! इधर अलजर्ननको कुछ खबर मिली है?"

मारक्विस,—(अलजर्ननकी चिट्ठी उसके हाथमें रखकर) "हां इसे पढ़लो।"

अरनेष्टिना,—"आह! वह लण्डनही में है? और आज आपके पास आवेगा भी? (अत्यन्त दुःखके साथ) मुझसे तो वर्ष भरसे ऊपर हुआ मुलाकात ही नहीं हुई। आखिरी बार जब भेंट हुई थी, तो—"

मारक्विस,—(बीच ही में बात काटकर) "तो तुम लोगों झगड़ा हो गया था और तुम लोग जुदा हो गये थे। तुम्हारी बात मुझे याद है। यह ठीक उसीके बाद हुआ था, जब उसने अनोखा —अनूठा—पागलों जैसा—मेरी बेइज्जतीका इरादा कर लिया था, जिससे उसकी तरफसे मेरा मन खट्टा हो गया है।"

अरनेष्टिना,—(रोकर) "अफसोस! कमबख्त भाई! तुमसे मिलनेके लिये यहां ठहरनेकी हिम्मत नहीं होती।"

मारक्विस,—"क्यों, हिम्मत क्यों नहीं होती? क्या इतनी भारी लड़ाई हो गई थी? मुझे तो कुछ मालूम ही नहीं।"

अरनेष्टिना,—(मिन्नतके तौरपर) "इस बातको दूर कीजिये। अच्छा, अब मैं बिदा होती हूं। सलाम, चाचाजी।"

इतना कहकर अरनेष्टिना खड़ी हो गई।

मारक्विस,—(फिर उसका माथा चूमकर) "सलाम, बेटी, सलाम। मेरी प्यारी अरनेष्टिना। तुम जानती हो, कि मैं तुम्हारा परम हितेच्छुक हूं और तुम्हें हमेशा सुखी देखना चाहता हूं, यदि कभी कभी मेरे पास दो एक सतर——"

अरनेष्टिना,—(मारक्विसकी बातसे खुश होकर) "हां, लिखूंगी, अवश्य लिखूंगी चाचा। अच्छा सलाम।"

इसके बाद मारक्विससे बिदा होकर वह चली गई।

अरनेष्टिनासे मुलाकात होनेके कारण मारक्विसका चित्त चञ्चल हो उठा, वे अभी स्थिर हुए ही थे, कि उनका भतीजा और वारिस अलजर्नन कवेण्डिश आ पहुंचा। उसकी ठण्ढी सलामका जवाब मारक्विसने भी ठण्ढी तरहसे ही जरा सा सिर झुकाकर दिया।

अलजर्नन अपनी बहिन अरनेष्टिनासे उम्रमें कुछ छोटा, पर वैसा ही खूबसूरत था। दोनोंकी खूबसूरतीमें सिर्फ भेद इतना ही था, कि एक तरहको न होकर दोनोंको सुन्दरता दो तरहकी थी, पर थे दोनो ही खूबसूरत। लेडी अरनेष्टिना डाइसर्टको अपेक्षा अलजर्ननके मुखमण्डलसे अधिक बुद्धिमत्ता—उत्तम विचार—एवं उच्च चरित्र प्रकट होता था।

कमरेके अन्दर पैर रखते ही उसने कहा,—"माई लार्ड। लाचार आपसे मुलाकात करनेके जिस अफसोसका जिक्र अपनी चिट्ठीमें मैंने किया था, उसे अब फिर जबानसे कहता हूं।"

मारक्किस,—(घृणासे नाक भौं चढ़ाकर) "क्या इसमें कोई झूठ है, घमण्डी लड़का?"

अलजर्नन,—(गौरव पूर्ण दृढ़ताके साथ) "देखिये, अगर आपसे कहीं तकरार हो जाय, तो उसमें आपका ही दोष होगा। यद्यपि मैं कभी आपको स्नेह वा आदरकी दृष्टिसे नहीं देख सकता, तथापि आपका अनादर भी नहीं करना चाहता।"

मारक्किस,—(क्रोध सहित) "लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश! क्या तुम्हारे चरित्रका यथार्थ स्वरूप अत्याचार नहीं है? मैंने तुम्हारा पूरा नाम कहा है। फिर तुम उसे सुनकर शर्माते क्यों हो?"

अलजर्नन,—(उत्तेजित स्वरमें सचाईके साथ) "ओह! शर्माने की बात! शर्माऊं गा क्यों? पर मैं आपसे मिन्नत करता हूं, कि मुझे वादाविवाद करनेके लिये लाचार न कीजिये, नहीं तो कितने ही पुराने जख्म ताजे हो जायगें। हुक्म हो, तो मैं अपने आनेका मतलब आप सुनाऊं?"

मारक्किस,—"बयान करो, लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश।"

मारक्किस लिवेमनको तानेजनीके तौरपर अपने भतीजेका पूरा नाम लेनेमें बड़ी खुशी मालूम होती थी, इसीसे उन्होंने उसका पूरा

नाम लेकर मतलब बयान करनेकी आज्ञा दी और जिसमें उसे बैठनेके लिये कहना न पड़े, आप भी खड़े ही खड़े बातचीत करते रहे।

अलजर्नन,—(साफ दिलसे) "मुझे इस वक्त कुछ रकमकी जरूरत है। मैं समझता हूं, कि आप खुशीसे दे देंगे, महाजनोंको मदद लेनेके लिये लाचार न करेंगे।"

मारक्विस,—(रुखाईकी हंसी हंसकर) "वाह, बड़ी सफाईके साथ मतलब बयान किया। क्यों लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश। तुम इतने सभ्य—इतने दृढमति—और इतने सकोची होकर भी महाजनों और सूदखोरोंके यहा जानेकी बात कहते हो।"

अलजर्नन,—(शान्त और स्थिर चित्तसे) "क्यों न कहूं, माई लार्ड। बात तो साफ और सरल है। कोई ऐसा काम आ पड़ा है, कि इस वक्त मुझे दो तीन हजार गिन्नियोंकी बहुत ही जरूरत हो उठी है। और———"

मारक्विस,—"और तुम दावेके साथ मेरे पास आये हो? पर मान लो, कि यदि मैं तुम्हे सूदखोर यहूदियोंके पास भेज दूं———"

अलजर्नन,—"नहीं, माई लार्ड। मैं किसी भले वकील या अटर्नीके पास चला जाऊंगा और उससे अपनी, जरूरत कह सुनाऊंगा।"

मारक्विस,—(क्रोध सहित) "तो वे लोग यही समझेंगे, कि मेरा सर्वनाश हो गया और मैं तगहाल हूं, इसीसे तुम्हें मदद नहीं दे सकता, पर उन्हें मेरे बारेमें झूठ बातके सोचनेका मौका ही न मिलेगा। यद्यपि मेरा भतीजा लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश कहता है, कि मैं अपनी कुल आमदनी शौकीनी और ऐश आराममें बरबाद कर देता हूं, तो भी मैं यह दिखा दूंगा, कि उसकी जरूरतके लिये चाहे वह जैसी हो क्यों न हो, दो तीन हजार गिन्निया दे सकता हूं। हां, और उससे रुपये लेनेका कारण न पूछकर और भी अधिक

उदारता दिखाऊ गा। अच्छा, लार्ड अलजर्नन कवेंण्डिश। अब तुम साफ साफ कहदो, कि तुम्हें कितनी रकमकी जरूरत है।"

अलजर्नन,—(चाचाके व्यङ्ग वचनका कुछ भी खयाल न कर) "दो हजार गिन्नियोंसे काम चल जायगा।"

मारक्विस,—"ओह। दो हजार गिन्निया। आज दो हजार गिन्नियोंका हो दिन है। ऐसे अनोखे सयोगका दिन और कभो नहीं देखा। अच्छा जरा ठहरो, मैं अपनो चेक-बुक ले आऊं।"

इतना कहकर मारक्विस लेवेसन वहासे चले गये और प्राय पाच मिनट बाद जब वे लौटे, तो फूलदानमें रखो और गुलदस्ते से छिपाई हुई पिस्तौलको अलजर्ननके हाथमें देखकर ताज्जुबमें आ गये।

मारक्विस,—(क्रोध सहित) "पाजो कहींका, यह क्या करता है?"

अलजर्नन,—(दृढता सहित) "कृपाकर क्षमा कीजिये। (गुलदस्ते की ओर, जिसे उसने टेबिलपर रख दिया था, बताकर) फूलोंका बेहद शौक होनेके कारण मैंने जो उस गुलदस्ते को उठाया, तो उसके अन्दर पिस्तौल दिखाई दो। मैंने समझा, कि यह कोई अजीब तरहका फूलदान है, इसलिये इसे देखने लगा। इसे असलो पिस्तौल देख मैं ताज्जुब कर हो रहा था, कि इतनेमें आप आ गये। अगर मुझसे कोई कुसूर हो गया हो, तो इसके लिये मैं बहुत दुःखित हू, और इसोसे साफ साफ बात भो कह दी है।"

जिस समय अलजर्नन यह बात कह रहा था, उस समय मारक्विस लेवेसन लाल लाल आखें किये उसको ओर देख रहे थे, पर उससे वह जरा भी न डरा, इससे मारक्विसको पूरा विश्वास हो गया, कि वह जैसा कहता है, बात भो वसी हो है, यथार्थमें उसका और कोई मतलब न था।

इसके बाद लार्ड अलजर्नन ने चुपचाप पिस्तौल को ठिकाने रख

कर गुलदस्ते से उसी तरह छिपा दिया। मारक्विस बैठकर अपने बैंक वाले के नाम दो हजार गिन्नीका चेक लिखने लगे।

मारक्विस,—(चेक देते हुए व्यङ्गसे) "लो लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश। अब तुम्हें सूदखोरों या वकीलों के पास जाने का कष्ट न उठाना पड़ेगा।"

अलजर्नन,—"अनेकानेक धन्यवाद। अच्छा, क्या इधर मेरी बहिन से आपकी मुलाकात हुई है, अथवा उसकी कोई चिट्ठी आई है?"

मारक्विस,—"लेडीअरनेष्टिना आज ही मेरे पास आई थी।"

अलजर्नन —(आश्चर्य से) "आज ही। तो वह लण्डन ही में है? पर उसका स्वामी—"

मारक्विस,—(बीच ही में बात काटकर गुस्से से) "बस, उसका नाम न लेना और न उसकी कोई बात ही कहना। तुम्हें और कुछ कहना है?"

अलजर्नन,—(पिछली बातोंको याद कर कांपती हुई जबानसे) "और कुछ नही सिर्फ उसका पता पूछना चाहता हूं। जब वह यहां मौजूद ही है, तो इच्छा होती है, कि हम लोग भाई बहिनकी तरह एकबार गले गले मिल लें।"

मारक्विस,—"मैंने उसका पता नहीं पूछा। वह छिपकर कुछ ही देरके लिये लण्डन आई थी। मेरे पास भी पौन घण्टे से ज्यादा नही ठहरी। बस, इसके सिवा तुम्हारी बहिनके बारेमें मै और कुछ भी नहीं जानता।"

अलजर्नन,—(बड़े अफसोसके साथ) "उसके सुखी रहनेकी बात न पूछूंगा, क्योंकि वह सुखी हो नहीं सकती। अच्छा, माई लार्ड। अब मैं आपको भी और ज्यादा तकलीफ देना नहीं चाहता। सलाम।"

मारक्विस,—(तानेके साथ) "सलाम, लार्ड अलजर्नन कवेण्डिश। सलाम।"

अठारहवां परिच्छेद ।

मिस वेयर्ष्ट, मिसेस उवेन और पाकेट-बुक ।

दिनके ठीक तीन बजे अलवेमार्ल ष्ट्रीटमें लेवेसन-हाउसके फाटक-पर एक बढ़िया गाडी आ खडी हुई और उसमेंसे भडकोली पोशाक पहने एक रमणी नीचे उतरी ।

उसकी उम्र कोई पैंतालीस वर्षकी थी । उसका चेहरा अब भी ऐसा सुहावना था, कि जिसे देखकर अनुमान होता था, कि अपनी जवानीमें वह स्त्री बहुत ही खूबसूरत रही होगी । उसके बाल अभी वैसे ही काले बने हुए थे, एक भी सफेद नहीं हुआ था—आंखें बडी और कटीली थी—दांत भी अभी बिलकुल मौजूद थे । गाल भी लाल दिखाई देते थे, पर वह उनका असली रंग न था । कुछ पतली होने पर भी उसका शरीर सुडौल बना हुआ था ।

उसे लाल कमरेमें ले जाकर नौकरने कहा,—"मिस वेयर्ष्ट ।"

मारक्विस,—(स्वागत करनेके लिये आगे बढकर) "मेरी प्यारी संगिनी ! तुम ठीक समय पर ही आ गई हो । (कुर्सीपर बैठाकर) परमेश्वरकी कसम, हमेशा की तरह कमसिन और खबसूरत भी दिखाई देती हो ।"

वेयर्ष्ट,—(मुस्कराकर)"धन्यवाद ! पर तुम तो ऐसी ऐसी बातें करनेमें खूब मशहूर हो————"

मारक्विस,—"वाह ! वाह ! तुम्हें यह विश्वास दिलानेके लिये, कि अपनी जिन्दगीमें तुम इससे अच्छी कभी नहीं दिखलाई पड़ीं, क्या यह कोई निरर्थक बात कही गई है ? अस्सीस तेंतीस वर्षकी रमणी तो अपनी चढ़ती जवानी————"

वेयर्ष्ट,—"और पैंतालीस वर्षकी उम्रमें तुम भी तो आसे पड़े

दिखाई देते हो। हम दोनों पुराने दोस्त हैं न, इस लिये अपनी अपनी उम्रके बारेमें ऐसी ही बातें कर सकते हैं।"

मारक्विस,—(अलमारीपरके आइनेमें अपना चेहरा देखते हुए) "निस्सन्देह।"

मारक्विस लेवेसन अच्छी तरह जानते थे, कि मिस वेथर्ष्ट कम कम पैंतालीस वर्षकी है। और मिस वेथर्ष्टको भी अच्छी तर मालूम था, कि मारक्विस साठसे एक दिन भी कमके नहीं है। पर वे दोनो ही भोंदू और मगरूर थे, इसीसे इस तरह एक दूसरेकी खुशामद करना पसन्द करते थे, तिसपर मजा यह था, कि दोनों दोनोंकी बात सच ही समझते थे।

वेथर्ष्ट,—(कुछ देर चुप रहनेके बाद) "अच्छा मेरे प्यारे मारक्विस! हम लोगोंमें जान पहचान हुए कितने दिन हुए? बीस वर्षसे कम तो न हुए होंगे?"

मारक्विस,—"हां, मैं भी यही खयाल करता हूं।"

वेथर्ष्ट,—"उस वक्त तो हम लोग बहुत ही कमसिन थे।"

मारक्विस,—(अफसोसके साथ।) "इसमें क्या शक है, एकदम बच्चे। तुम्हें वह समय याद है, जब प्रिन्सको पहले पहल देखा था?"

वेथर्ष्ट,—(शोखीके साथ) "मुझसे प्रिन्सका जिक्र न करो। मैं उससे नफरत करती हूं। मेरे प्यारे मारक्विस! तुम तो हम लोगोंकी सब बात जानते ही हो, फिर तुम्हीं कहो, कि क्या मेरे साथ अच्छा व्यवहार किया गया है?"

मारक्विस,—(मुलायमियतके साथ) "मेरी प्यारी संगिनी। शि कायत क्यों करती हो? दूसरोंकी बनिस्बत तुमसे बुरा व्यवहार नहीं किया गया। मिसेस फिजहर्बर्ट—लेडी जर्सी—डेवनशायरकी डचेज —तथा और भी कितनी ही मरी तथा जीती सुन्दरियोंको देखो।"

वैथर्ट,—(रुखाईसे) "अच्छा, हम लोगोंको प्रिन्सके आधीन हनेकी इज्जत मिली थी, पर वह न तो उन सबकी कोई परवाह रता है जो मर गई है, और न हम लोगोंकी ही भलाईका खयाल रता है, जो अब तक जिन्दा हैं।"

मारक्विस,—"तुम्हें ऐसा न कहना चाहिये ? श्रीमान् प्रिन्स तो मेशा तुम्हारी तारीफ ही किया करते हैं। पर चूंकि दुनिया नहीं ानती, कि तुम लोगोंकी दोस्ती कैसी नाजुक थी, इसीसे आम तौर र वे तुम्हारा ऐसा आदर—सम्मान नहीं करते थे, जिसमें लोगोंको ुम्हें बदनाम करनेको जगह मिले।"

वैथर्ट,—"तुमको तो मालूम ही हैं, कि इधर कुछ दिनोंसे हम ोगोंका सम्बन्ध एक दम टूट गया है। पर कुछ परवाह नहीं। ेरा दु,ख असली हो वा खयाली, उसके लिये मैं किसीको मलामत ारना नहीं चाहती। मैं आपसे कुछ मदद मांगने आई हूं।"

मारक्विस,—(जो पहले ही अनुमान कर चुके थे) "किस किस्मकी ?"

वैथर्ट,— (मलामतके साथ) "किस किस्मकी कहनेके बदले ुम्हे यह कहना चाहिये था, कि मदद मिली ही समझो।"

मारक्विस,—(हँसते हुए) "अच्छा, मदद मिली ही समझो। (मन ही मन) इसने तो मुझे पूरी तौरसे गिरफ्तार कर लिया है, अब इसकी दरखास्त मंजूर ही करनी पड़ेगी।"

वैथर्ट,—"तुम्हारी दोस्तीका मुझे पूरा भरोसा है। साफ बात यह है, कि कुछ हफ्तोंके लिये मैं तुमसे दो हजार गिन्नी कर्ज लेना चाहती हूं, फिर जोकुछ तुम्हारा होगा, सब कौडी कौडी चुकादूंगी।"

मारक्विस,—(चौंकाकर) "दो हजार गिन्नी।"

वैथर्ट,—(दु खित सी होकर) "अगर तुम्हें कुछ तकलीफ हो तो माफ करना।"

मारक्विस,—"नहीं, कुछ भी नहीं, सिर्फ तुम्हारी समझमें भूल है। मैं तुम्हें यकीन दिला सकता हूं, कि मेरी बात खाली नहीं जाती। तुमने दो हजार गिन्नी कही, यह एक ऐसा अनोखा संयोग है—पर कुछ परवाह नहीं। मैं खुशीसे उतनी रकम दूंगा।"

वेथर्ष्ट,—"मेरे प्यारे मारक्विस! मुझे तुम्हारी कृपाका बड़ा भरोसा है। तुम जानते हो, कि गुजारे लायक मेरी आमदनी अच्छी है, पर इधर कुछ अधिक खर्चमें पड़ गई हूं——खैर, तफसील बयान करनेकी कोई जरूरत नहीं है।"

मारक्विस,—"होरेस सैकविल तो फजूल खर्च नहीं है न?"

वेथर्ष्ट,—"नहीं, फजूल खर्च तो नहीं, पर खर्चीला बहुत है, क्योंकि अच्छेसे अच्छे आदमियोंमें उसकी आमदरफ्त है। वह बड़ा अच्छा लड़का है——"

मारक्विस,—"और हम लोगोंका भी प्यारा है। अच्छा तो तुम्हें दो हजार गिन्नियोंका चेक लिख दूं——"

वेथर्ष्ट,—"तुम्हारे पास बैंक-नोट मौजूद नहीं हैं क्या? मैं यहांसे सीधी घर लौट जाना चाहती हूं क्योंकि वहां जाकर तुरत ही सबको कुछ कुछ देना पड़ेगा।"

मारक्विस,—"कुछ नोट और कुछ गिन्नियां दे सकता हूं। थोड़ी देरके लिये मेरी गैरहाजिरी माफ करना।"

इतना कहकर मारक्विस लेवेसन अपने खास कमरे में चले गये। थोड़ी देरमें उन्होंने लौटकर देखा, कि मिस वेथर्ष्ट बड़े गौरसे लाल कमरेकी चीजोंको देख रही है।

वेथर्ष्ट,—(मारक्विसको देखकर) "मेरे प्यारे मारक्विस! सच-सुच ही यह कमरा बहुत अच्छा है। मैं कई बार तुम्हारे यहां आई हूं, पर इस कमरेको कभी नहीं देखा था। कैसे अच्छे पर्दे लगे हैं! कैसी खूबसूरत छत है!-और कैसे उम्दा फूलदान हैं!

ऐसे सुन्दर कमरेकी तारीफ करनेका मौका मुझे और कभी नहीं मिला।"

मारक्विस,—"तुम्हारे मुंहसे इस कमरेकी तारीफ सुनकर मैं बहुत खुश हुआ हूं। तुम पहले भी इसमें आ चुकी हो। उस समय इसकी सजावट कुछ और ही थी—सब सफेद रेशम और साटन—"

वेथर्ट,—(लज्जित होकर) "आह! अब याद हो आया। तो वह दरवाजा—"

मारक्विस,—"वह दरवाजा उन कमरोंका है, जिनमें प्रिन्स तुम्हें तुम्हारे लड़कपनमें भुलावा देकर ले गये थे।"

वेथर्ट,—(मनही मन) "यह तो कई वर्षकी बात है।" (फिर मानो चौंककर) "मैं यहां बेफायदे अपना वक्त भी बरबाद कर रही हूं और तुम्हारा भी। रकम कहां है?"

मारक्विस,—"पांच सौ की गिन्नी और नोट तो मौजूद है, बाकी का चेक लिख देता हूं।"

वेथर्ट,—"इतनेसे बिलकुल मेरा काम मजेमें चल जायगा।"

इतना कह और नोट वगैरह ले मारक्विसको सलाम करनेके बाद वह चली गई।

उस समय साढे चार बजे थे। अब मारक्विस इस सोचमें पड़ गये, कि देखूं पाकेट—बुक देकर रुपया लेने आज कोई आता है या नहीं। आखिर वे खिड़कीके पास गये और उस भिखमङ्गे को, जिसका जिक्र पहले किया जा चुका है, उसी जगह ऊपर शिर उठाये अचल-अटल खड़े देखा। मारक्विस चट समझ गये, कि यद्यपि उसका शिर आसमानकी ओर उठा हुआ है, तथापि उसकी नजर लाल कमरेके ऊपर स्टिफेन औकमैनके कमरेकी खिड़कीपर डटी हुई है।

ज्योंही मारक्विस लेवेसन खिड़कीके पाससे लौटे, त्योंही एक दो

घोड़ेकी गाड़ी उनके दरवाजेपर आ लगी। उसके बाद तुरत ही नौकर मिसेस उवेनको उनके कमरेमें पहुंचा गया।

उसके कमरेके अन्दर पैर रखतेही मारक्विसने मिसेस उवेनके दुःखित और चिन्तित मुखको देखा। उस मुखसे कष्ट एवं क्रोधकी झलक साफ दिखाई दे रही थी।

मारक्विस,—(स्वागत करनेके लिये आगे बढ़कर) "माजरा क्या है, मिसेस उवेन?"

उवेन,—"ओह! मेरे प्यारे लेवेसन! ऐसी विपद! ऐसा—दुःख!"

इतना कहकर थकावटके कारण वह सोफापर बैठ गई।

मारक्विस,—"कहो तो सही, क्या हुआ है?"

उवेन,—(हांफती और रूमालसे पखा करती हुई) "वह नमकहराम, दगाबाज लड़की 'मेरी'———"

मारक्विस,—(अधीरतासे) "तुम्हारी सबसे छोटी लड़की? अच्छा कहो।"

उवेन,—"वह भाग गई—लापता हो गई है!"

इतना कहकर वह बहुत अफसोस करने लगी। आखिर मारक्विसने उससे सारा हाल बयान करनेके लिये कहा। मिसेस उवेन बहुत ही क्रुद्ध एवं दुखित थी, इससे मारक्विस को कुछ कठिनाईके बाद नीचे लिखा हाल मालूम हुआ।

मारक्विसके पास मिसेस उवेनने जो चिट्ठी लिखी थी, उसमें जैसा समाचार लिखा था, उसीके अनुसार वह अपनी चारों लड़कियोंको लेकर चालविच गई। वहांसे सब लड़कियां उस कामके लिये महाद्वीप जानेवाली थीं, जिसके लिये उन्हें इतने दिनोंसे शिक्षा दी गई थी और जिसकी भयानकताका हाल पाठकोंको आगे चलकर मालूम हो जायगा। अगेथा, एमा और जूलिया तो भविष्यतकी आशासे परम प्रसन्न दिखाई देती थी, पर मेरी की कुछ और ही बात थी।

वह ऊपरसे तो खुश मालूम होती थी, पर भीतरसे एक दम नाखुश थी। जलविच पहुंचने पर मिसेस ठवेनने कोचवानको किसी अच्छे होटलमें ले चलनेके लिये कहा, जहा लडकियोंके जानेसे पहले कुछ खा-पी लेनेकी इच्छा थी। होटेलमें पहुच जाने पर, मेरी बहाना करके कमरेसे बाहर निकली, पर जब वह लौटकर न आई, तो उसकी मा और बहिनोंको चिन्ता हुई। एक घण्टा हो गया, पर मेरी नही लौटी। अब तो वे लोग बहुत बेचैन हो उठी, पर जब होटलकी दाईने मिसेस ठवेनको नीचे लिखी हुई चिट्ठी दी तो सब बात साफ साफ मालूम हो गई:—

"मा और बहिनो! मै तुम लोगोंसे बिदा होती हू'। मैंने उस राहको पकडनेके लिये, जिस पर चलनेके लिये मुझे शिक्षा दी गई थी—बहुत चेष्टाकी—ईश्वर जानता है, कि मैंने कितनी चेष्टाकी है—पर फल कुछ भी न हुआ। मेरे न चाहने पर भी उसकी ओर मेरे मनमें घृणा पैदा होगई। ऐसे भयंकर छल कपट, ऐसे नटखटपन और ऐसी क्रूरताकी अपेक्षा बुरी मौत मरना मुझे लाख दर्जे पसन्द है। ईश्वर मुझे ऐसे पापोंसे बचाये। मुझे अपनी प्यारी बहिनोंसे जुदा होनेका बहुत ही रज है; पर मा। तुम जल्दी हो वा कुछ दिनोंके बाद अवश्य पछताओगी———"

"मैं इससे अधिक और कुछ नही लिख सकती। ईश्वर तुम्हें दुआ दे और माफ करे, शायदही तुम लोगोंका मन भी पलट टे। मैं तुम लोगोका भेद न खोलूंगी, पर ऐसे घोर पापकी सगिनी भी न हो सकूंगी।

"दुखित हृदया—

"मेरी।"

यही चिट्ठी, जिसपर जगह जगह आसूके दाग पडे थे, उस कमरेमें मिली, जिसमेंसे मेरी बाहर गई थी। दाईने उसे टेबिलपर पडे पाया और मिसेस ठवेनको दे दिया। पर मेरी—बदनसीब मेरी—चम्पत

हो गई—जिसका रंज और गुस्सा उसकी मा और बहिनोंको बहुत था। उधर जहाज लङ्गर उठानेको तय्यार था—इस लिये अगैथा, एम्मा और जूलिया तीनों बहिनें अपनी मासे विदा होकर जहाज पर चढ़ गईं। और मिसेस उवेन मानो अपनी चारों लड़कियोंको खोकर करारके मुताबिक मारक्विस लेवेसनसे मुलाकात करनेके लिये लण्डनकी ओर रवाना हो गईं।

मारक्विसने मिसेस उवेनसे यही सब समाचार सुना, जो ऊपर लिखा गया है। उसने मारक्विसको मेरीकी चिट्ठी भी पढ़ सुनाई।

मारक्विस,—"यह बुरा—बहुत ही बुरा हुआ—, पर वह उस भेदको न खोलनेका वादा करती है। उसकी लिखावटसे ऐसा मालूम होता है, कि उसके दिलपर तुम्हारे और तुम्हारी लड़कियोंके प्यारका बहुत असर हुआ है, इससे वह भेद भी न खोलेगी और जल्द ही लौट भी आवेगी।"

उवेन,—"अगर मैं ऐसा खयाल करती तो इतनी बेचैन न होती। वह कमसिन, सीधी और—खूबसूरत लड़की है। अगर किसी दुष्टसे उसकी मुलाकात हो जायगी, तो वह फुसलाकर सब भेद पूछ लेगा——————"

मारक्विस,—"ऐसा कभी न खयाल करो। मनको स्थिर करो, मेरी प्यारी उवेन! शान्त हो। तुमने चिट्ठीमें किसी बातके कहनेका जिक्र किया था, क्या अब वह बात बताओगी?"

उवेन,—"इस दुःखसे सब बातें भूल गई हूं। वह बात कुछ रकमके बारेमें है। तुम्हें मालूम ही है, कि लड़कियोंके लिये तय्यारी करनेमें मेरा कितना रुपया खर्च हो गया है। उनके जेवर कपड़े————"

मारक्विस,—"हां, मुझे अच्छी तरह मालूम है, पर मैंने तो समझा था, कि महारानीने सब खर्च देनेका वादा किया है।"

उवेन,—"कुल दो हजार पाच सौ गिन्नियां खर्च हुई है। महारानीने सब रकम देनेका करार किया है। पाच सौ दे भी चुकी हैं। बाकीके लिये उन्होंने कलको चिट्ठीमें कुछ दिन सब्र करनेके लिये लिखा है। इस वक्त उनका हाथ कुछ तंग है। मेरे प्यारे डेविसन! तुम्हें और मुझे दोनोंहो को महारानीका स्वभाव मालूम है। जब तक इच्छा हो, तब तक वे टालमटोल कर सकती हैं। उनका अभाव मुझे बहुत सता रहा है। आठ हजार तो जौहरीको देना है और चार हजार कपड़े वालोंको———"

मारक्विस,—मैं तुमसे तफसील नहीं पूछता। मैं समझता हूं, कि दाम बाकी है और उन्हें चुका देना बहुत जरूरी है। अगर तुम दो हजार गिन्नीकी रसीद मेरे नाम लिख दो, तो मैं अभी रकम दे दूं। रसीद दिखाकर मैं महारानीसे सब वसूल कर लूंगा। वे मुझे बहुत बहाली भी नहीं दे सकती।"

उवेन,—"बस, यही कृपा भिक्षा मागनी थी, मेरे प्यारे मारक्विस। मैं बहुत परेशान—बहुत थकी हुई हूं—कृपा कर एक गिलास शराब मगा दो———"

मारक्विस,—"अथवा थोड़ा सा वह शर्बत मगा दूं, जिसे कई वर्ष हुए, प्रिन्सने मुझे दिया था और तुमने कभी कभी चखा भी है। उसको एक बोतल अभी मेरे पास मौजूद है, पर वह मेरे खास कमरे में है। ब्रोकमैन ले आवेगा।"

इतना कहकर मारक्विस घण्टा बजाना ही चाहते थे, कि उन्हें याद हो आया, कि ब्रोकमैन तो मेरे हुक्मके मुताबिक ऊपर अपने कमरेमें होगा, इसलिये उसके फंसे रहनेका कुछ बहाना बता उन्होंने आप ही जाकर शर्बत ले आनेकी बात कही। मिसेस उवेनने इस कृपाके लिये मारक्विसको धन्यवाद दिया। इसके बाद वे शर्बत लाने चले गये।

कुछ ही मिनटोंमें लौटकर उन्होंने मिसेस उवेनको थकावटके मारे सोफापर लेटे पाया, लेकिन मारक्विसके लाये हुए मजेदार शर्बतके पीनेपर उसकी थकावट एकदम दूर हो गई और देहमें ऐसी फुर्ती आ गई, मानो उसने "जीवनदाता" पी लिया हो।

मारक्विस,—(मुस्कराते हुए) "इस शर्बतमें ताजादम करनेकी शक्ति अनोखी है। अब तो तबियत अच्छी मालूम होती है न?"

उवेन,—"अब तो ऐसा मालूम होता है, मानो मेरे बदनमें नई जान आ गई है। इस कृपाके लिये सहस्रों धन्यवाद हैं। सफरकी हरारत—रकमके बारेमें महारानीका टालमटोल और मेरीके भाग जानेका गम—सबने मिलकर मुझे चूरकर डाला था, पर अब फिर मैं तरोताजी हो गई हूं और फौरन रिचमण्ड लौट जाना चाहती हूं।"

इसके बाद मिसेस उवेनने दो हजार गिन्नीकी रसीद लिख दी। उधर मारक्विस भी चेक लिखने बैठ गये। पर उन्हें जब उस संयोगकी बात याद आई, कि फिर चौथीबार दो हजार गिन्नी दे रहा हूं, तो उनके मुंहसे यह आवाज निकल आई, "पर तो भी अभी वह दो हजार गिन्नी देनी ही है।" उनके मुंहसे वह बात निकलते ही मिसेस उवेन ताज्जुबसे उनकी ओर देखने लगी, पर बात बनाकर मारक्विस चेक लिखने लगे। इस तरह काम खतम हो जानेपर मिसेस उवेन चली गई।

उस वक्त शाम हो गई थी। प्रायः छः बजनेका समय था। अब मारक्विस इस चिन्तामें पड़ गये, कि क्या वह आदमी पाकेट-बुक लेकर रकम अदा करने न आवेगा? इस चिन्तासे वे बहुत ही दुःखित हो उठे, क्योंकि उस पाकेट-बुकमें उनके कई प्रेम-पत्र थे, जिनके जाहिर हो जानेसे बड़े घरानेकी दो तीन रमणियोंकी पूरी बदनामी होनेकी सम्भावना थी। इसके अलावा उसमें उस भयानक कामकी

ो कागजात थे, जिसके लिये मिसेस उवेनको लड़कियां भेजी गई थीं। इन सबके सिवा प्रिन्सको भेजी हुई कई गुप्त चिट्ठियां भी थीं। ताराश यह, कि उस पाकेट-बुकको हाथमें कर लेना मारक्विसके लिये बहुत जरूरी था। वादेके मुताबिक पाकेट-बुक लौटा देनेका अभी बहुत समय बाकी है। अभी तो छ' ही बजे हैं। उस बदमाशका आदमी पाकेट-बुक लेकर आठ बजे आवे, नौ बजे आवे—दश बजे भी आ सकता है। जो हो, आधीरात तक आशा है, क्योंकि सरदारने कहा था,—"बुधवारको दिनभर मकान ही पर रहियेगा और दो हजार गिन्नियां अपने पास मौजूद रखियेगा, बाकी बन्दोबस्त मैं कर लूंगा।"

अब मारक्विसने सोचा, कि बारह बजेतक जो बुधवार ही है, तब तक निराश होनेका कोई कारण नहीं है।

इस तरह मनको समझा बुझाकर उन्होंने खाना परोसनेके लिये घण्टा बजाया। प्रायः आध घण्टेमें लाल कमरेके टेबिलपर खानेकी अच्छी अच्छी चीजें चुन दी गईं। मारक्विस खाना खानेके लिये बैठ गये। आठ बजे खाना खतम हो जानेपर फल और शराब उनके सामने रखा गया। दो घण्टे तक वे फल और शराबसे दिलको खुश करते रहे।

तब तक दश बज गये। अब मारक्विस उठ खड़े हुए और बड़ी घबराहटके साथ कमरेमें टहलने लगे। क्या वादा पूरा न करनेका इरादा पहलेहीसे कर लिया गया था? क्या लिफाफेकी मुहर तोड़कर उसके भीतरकी सब चीजें देखली गई हैं? क्या और भी कुछ ज्यादा रकम लेनेके लिये पाकेट—बुक नहीं भेजी गई? टहलनेके समय इसी तरहके सैकड़ों प्रश्न मारक्विसके मनमें उठ रहे थे।

इतनेमें घड़ीमें टनाटन ग्यारह बजे। अब खिड़कीके पास

जाकर मारक्विसने पर्दा हटाया, तो भिखमङ्गेको उसी जगह खड़े पाया।

उसे देख मारक्विसने मनमें कहा,—"अभी तक वह निराश नहीं हुआ, फिर मैं ही क्यों नाउम्मीद होऊं। अभी तो और एक घण्टा बाकी है।"

पर यह घण्टा भी बीत गया और कोई नहीं आया। बारह बज गये—बुधवार खतम होगया।

अब मारक्विसने जोरसे कहा,—"सर्वनाश। मेरे साथ दगाबाजी की गई—मैं ठगा गया—मेरे साथ चालाकी खेली गई—मैं बेवकूफ बना दिया गया। उसका बुरा हो—सत्यानाश हो जाय। मेरी बिल कुल चतुराई धूलमें मिला दी गई। सच पूछो, तो इस समय मार क्विस लेवेसन बहुत अदने आदमी मालूम होते हैं।"

अत्यन्त दुःखके साथ इतना कहकर मारक्विसने शराबका एक भरा हुआ गिलास पीलिया।

उसके बाद उन्होंने कहा,—"अब और ठहरना बेफायदे है।" इतना कहकर वे कमरेसे जाना ही चाहते थे, कि उन्हें पिस्तौलोंकी बात याद आ गई। उन्होंने फिर कहा,—"उनको यहां छोड़ जाना अच्छा नहीं। शायद ब्लैकमैन उन्हें उठाना भूल जाय। कहीं और किसी नौकरने देख लिया, तो उसे बहुत ताज्जुब मालूम होगा। इसके अलावा दोनों पिस्तौलें भरी हुई हैं। शायद कोई दुर्घटना हो जाय!"

इस तरह सोचते हुए जब मारक्विस पास वाले फूलदानके पास गये, तो उन्हें याद हो आया, कि इसी फूलदानकी पिस्तौलको उठाकर उनका भतीजा देख रहा था।

इस बातको याद कर मारक्विसने सोचा,—"ऐसी जगहमें गुल-दस्तेमें छिपाई हुई पिस्तौल रखी देखकर उसे बहुत ताज्जुब हुआ

होगा। उसने क्या ख्याल किया होगा ? पर उसके अनुमान वा सन्देहकी मैं परवाह ही क्या करता हूं।"

पहले फूलदानसे पिस्तौल निकालकर मारक्विस लेवेमन दूसरे फूलदानके समीप गये। गुलदस्तेको हटाकर जब उन्होंने अन्दर हाथ डाला, तो एक पैकेट हाथ आगया। उसे पहचानतेही उनके मुंहसे ताज्जुबकी आवाज निकल गई।

हां—पैकेट ठीक वैसा ही था, जैसा उन्होंने सोमवारको रातको काले कमरेमें देखा था। मुहर भी दुरुस्त थी। अब क्या था, उन्होंने चट लिफाफेको फाड डाला और पाकेट-बुकको निकालकर क्षण भरमें उसके भीतरकी सब चीजोंका मुलाहिजा कर लिया, तो उन्हें सन्तोष हुआ।

बडे आश्चर्यकी बात है। कैसे क्या हो गया ?

अब वेष्टकोटके पाकेटमें हाथ डालकर उन्होंने देखा, तो नोटोंको ज्योंका त्यों पाया। तो क्या बिना रकम लिये ही पाकेट-बुक लौटा दी गई है। पर इसे रख कौन गया ?

आखिर सोच-विचारकर मारक्विसने फिर फूलदानको देखा और उसमेंसे पिस्तौलको निकाल लिया। उसके अन्दर और कुछ भी न मिला। न कोई चिट्ठी मिली, न कोई पुर्जा ही मिला, जिससे उस रहस्यका भेद मालूम होता।

लाचार उन्होंने घण्टा बजाकर ब्रौकमैनको बुलाया। उसके आनेपर मारक्विसने पूछा,—"आज सवेरे उस फूलदानमें पिस्तौल रखनेके समय तुमने उसमें और कुछ देखा था ?"

ब्रौकमैन,—"जी नहीं, दोनोंमें कुछ भी नहीं था। मैंने उन्हें अच्छी तरह झाड पोंछकर पिस्तौल और गुलदस्ते रखे थे।"

मारक्विस,—(अत्यन्त आश्चर्यके साथ) "कैसे ताज्जुबकी बात है !"

अब खिड़कीके पास जाकर उन्होंने देखा, तो उस भिखमङ्गेको न पाया!

मारक्विस,—(आप ही आप धीरेसे) "उसके तो आधी रात तक ठहरनेकी बात ही थी।" (ब्रौकमैनकी तरफ फिरकर) "जिस कामके लिये मैंने तुम्हें अपने कमरेमें कहनेकी आज्ञा दी थी, अब तो निकल ही गया। असल बात यह है, कि सोमवारको रातमें मेरी पाकेट-बुक छीन ली गई थी। डाकूने आज कुछ रुपया लेकर उसे लौटा देनेका वादा किया था। मेरा एक आदमी भेष बदले सड़कपर खड़ा था। वह आदमी तुरत ही उस मनुष्यका पीछा करता, जो तुम्हारी खिड़कीका पर्दा उठानेके बाद यहांसे बाहर जाता, पर पाकेट-बुक एक अजीब तरहसे लौटाई गई है। अब तुम जाओ। अभी मैं प्रायः आध घण्टे तक यहीं बैठूंगा।"

मालिकके मुख्तसर और बेमेल बयानसे परेशान होकर ब्रौकमैन चला गया। उधर मारक्विस बैठकर पाकेट बुक मिलनेकी अद्भुत घटनाकी बात इस तरह सोचने लगे '—

"पिस्तौल रखनेके समय फूलदानोंमें पाकेट-बुक नहीं थी, ब्रौकमैन तो ऐसा ही कहता है, पर क्या उसका विश्वास किया जा सकता है? नहीं, उसका बदमाशोंकी साजिशमें मिले रहना गैर मुमकिन है। अगर ऐसा होता, तो बिना दो हजार गिन्नी लिये पाकेट-बुक कैसे यहां रख देता? इसलिये उसपर जरा भी सन्देह नहीं किया जा सकता। हे ईश्वर, मैं कैसे संशयमें पड़ा हुआ हूं! दिन भर मैं खुद इस कमरेमें मौजूद रहा हूं, और जब कुछ देरके लिये बाहर गया हूं, तो एक न एक आदमी यहां मौजूद ही रहा है। आज चार आदमी मुझसे मुलाकात करने आये थे। पहले तो आई मेरी भतीजी लेडी अरनेष्टिना डाइसर्ट। उसके लिये रुपया लानेके समय मुझे कमरा छोड़ना पड़ा था। अवश्य ही फूल

मिमें उसने पाकेट-बुक नहीं रखी होगी। बल्कि ऐसा खयाल
रना महज बेवकूफी है। उसके बाद मेरा भतीजा लार्ड
लजर्नन कवेण्डिश आया। उस समय चेक-बुक लानेके लिये मुझे
मरा छोड़ना पड़ा था। यद्यपि मेरा दिल उससे फिरा हुआ
, तो भी मैं यह कभी नहीं खयाल कर सकता, कि वह आले
दिलका आदमी नहीं है और डाकू तथा बदमाशोंके मेलमें
। उसके बाद मिस वेथर्ष्ट आई। अब तय्यारी रोकड़ लानेके
लिये तीसरी बार मुझे कमरेसे बाहर जाना पड़ा। पर पाकेट-
बुकके लुटेरोंके साथ मिस वेथर्ष्टका कोई सम्बन्ध नहीं हो
सकता। सबसे पीछे मिसेस डवेन आई। उसके लिये अर्क लानेके
वास्ते मुझे चौथी बार कमरेसे बाहर होना पड़ा। इस माजरेको
मैं स्वप्न वा खाम खयाल समझ सकता हूं, पर ऐसा कभी नहीं
समझ सकता, कि बदमाशोंके साथ मिसेस डवेनका वास्ता है। तो
परनेष्टिना—अलजर्नन—मिस वेथर्ष्ट—मिसेस डवेन—इनमेंसे कि-
सीने पाकेट-बुकको फूलदानमें नहीं रखा और इनके अलावा और
कोई आदमी मेरे पास आया भी नहीं। पर ताज्जुबकी बात तो
यह है, कि चारों आदमियोंने वही दो हजार गिन्नियां मांगी, जितने-
पर उस नकाबपोश बदमाशने पाकेट-बुक लौटा देनेका वादा किया
था, किन्तु पाकेट-बुक बिना रकम लिये ही लौटा दी गई। इससे
मैं क्या सोचूं?—क्या अनुमान करूं? मुझे तो सब गोलमाल और
अन्धकार मालूम होता है। तो भी मैं दिन भर जागता रहा हूं,
जरा झपकी भी नहीं लगी। कोई आता, तो मैं उसे जरूर ही
देखता। उस बदमाशको रुपया भी नहीं मिला, कि किसी तरह
छिपकर वही पाकेट-बुकको रख जाता, अगर बिना रकम लिये ही
उसकी इच्छा पाकेट-बुक लौटा देनेकी होती, तो वह मुझे अपने
किसी आदमीके हाथ भेज देता और नहीं तो खुदही आकर दरवान

को दे जाता। सो तो कुछ हुआ नहीं। यह उस कमरेके फूलदान में रखी हुई पाई गई, जिसमें मैं अपने मुलाकातियोंसे मिलनेके लिये दिन भर मौजूद रहा। अब भला मैं क्या खयाल करूं? किसपर सन्देह करूं?"

मारक्विस एक घण्टे तक इसी उधेड़बुनमें लगे रहे। उसके बाद अपने खास कमरे में जाकर सो रहे, पर नीदमें भी उन्हें वही चिन्ता सताती रही।

॥ २५ वीं संख्या समाप्त* ॥



*इसकि आगेका हाल जाननेके लिये २६ वीं संख्या मगा देखो।

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन।

दूसरा भाग।

छठवां खण्ड।

आर० एल० वर्म्मन द्वारा

कलकत्तासे प्रकाशित।



कलकत्ता २७१ अपर चीतपुरकी मछली।

गामला

(छठां खण्ड—५६ वां ५७ वां परिच्छेद)।

, Calcutta

प्रथम वा



मिस विनोशिया ट्रिलौनी, कप्तान टैश और वाचिन।

(छटा खण्ड— ५७ वां परिच्छेद)

[illegible] Press Calcutta.

संख्या ३१

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज आफ दी कोर्ट आफ लण्डन।

छठवां खण्ड।

पचपनवां परिच्छेद।

सजहदारोंके अधःपतनका दूसरा दृश्य।

आज रविवार है, दिन बड़ा स्वच्छ और सुहावना दीखता है। आज सवेरे ही मिष्टर जैसिलिन म्यूरिस होटलसे, चैम्पस इलिसीस उपवनकी ओर चले। यह रम्य स्थान उस होटलसे लगभग दस मिनटकी दूरी पर था। जैसे ही मिष्टर जैसिलिन वहां पहुंचे, वैसेही एम्मा उनसे आ मिली।

जैसिलिन,—(गम्भीरतापूर्वक) "तुम्हारी बहिन कहां हैं?"

उसको वहां अकेली देख और गत रात्रिकी बात याद आजानेसे उसके मनमें तरह तरहके सन्देह पैदा होने लगे।

एम्मा,—(सफाईके साथ) "उसे कपड़ा पहननेमें अधिक विलम्ब होता देख मैं डर गई, कि शायद बहुत देर होजायगी, और फिर

आप तो जानते ही हैं, कि नौ बजे हमलोग जलपान करती हैं, इस लिये देर करनेका समय ही कहाँ था ?"

जेसिलिन,—(एम्माके हाथमें हाथ डाल और उपवनके बीचमें जाकर) "अच्छा, तो अब हमलोग मतलबकी बातें करें।"

पाठक ! उन दिनों रविवारके दिन प्रातःकाल ही पेरिसमें श्रम जीवी समुदायके लोग दलकेदल पेरिसके गांवोंमें चले जाते और राग रंग, नाच-गान तथा आखेट इत्यादि नाना प्रकारके मनोरञ्जन करते थे। शायद ही कोई ऐसा रविवार होता हो, जिसदिन इन गांवों मेला न लगता हो। चैम्पस इलिसीसमें भी हजारों आदमियोंकी भीड़ सुबहसे ही लगने लगती थी। आज भी वैसा ही हुआ, इसलिये ऐसे गम्भीर विषयपर वैसी जगहमें बातें करना असम्भव देखकर मिष्टर जेसिलिन सुन्दरी एम्मा उवेनको एक निर्जन स्थानमें ले गये और वहां एक रमणीक जगहमें बैठकर बातें करने लगे।

आज एम्मा खूब सजधजकर आई थी और सचमुच बड़ी ही खूबसूरत दीखती थी। सुबहकी मन्द मन्द शीतल समीरके साथ आन्तरिक भावोंने मिलकर उसकी शोभा और भी बढ़ा दी थी। उसके गालोंपर लाली छाई हुई थी और आंखे चञ्चल होरही थीं। ऐसे समय शायद ही कोई ऐसा मनुष्य होगा, जो इस प्रकारकी कामानके सामने खड़ा रह सके। पर इससे क्या, जेसिलिन तो अपनी अनुपस्थिता हृदयेश्वरी लुइसाके शुद्ध, पवित्र और प्रगाढ़ प्रेममें ही मस्त थे। ऐसे लोगोंके लिये एम्माका नयन-बाण किसी कामका नहीं था।

जेसिलिन,—(इस आशासे, कि जैसा इसने उस पत्रमें लिखा, है वैसाही करेगी) "मिस उवेन। मैंने तुम्हारा पत्र बड़े गौरसे बार-म्बार पढ़ा और प्रत्येक बार उसके पढ़नेसे मुझे बड़ा ही आनन्द हुआ। उसमें तुमने उस दूषित कार्य्यको त्याग देनेका दृढ़ विचार

कट किया है। तुमने लिखा है, कि तुम्हारी बड़ी बहिन भी वैसा ही करनेके लिये तैयार है—पर केवल मिस जूलिया ही उस राहसे हटना नहीं चाहतीं, कारण कि उन्हें विश्वास है, कि यह बड़े सम्मानका पद है, और मिसेस रेंजर भी मेरे बतलाये हुए उपायका विरोध करती हैं, साथही उन्होंने मिस जूलियापर भी अच्छा प्रभाव जमा रखा है। क्यों यही बात है न ?"

एमा,—"जी हां, यही है।" इतना कहकर वह उनकी ओर बड़े स्नेह और प्रीतिके साथ देखकर बोली,—"मिष्टर लौफटस! सचमुच जिस दिन आपने पहले पहल इस बातका जिक्र किया था, चाहे इससे आपकी उदारता और सहृदयताका भलेही पता लगता हो, परन्तु वह दिन हमलोगोंके लिये बड़ा ही कष्टकर था।"

जैसिलिन,—(आश्चर्यसे उसकी ओर देखकर) "तुम्हारे कहने का क्या तात्पर्य्य है, मिस ब्वेन ?"

एमा,—(एक चीख मार और उनका हाथ जोरसे पकड़ कर, मानो वे उसे छोड़कर भागना चाहते हों) "मिष्टर लौफटस! मेरे कथनका तात्पर्य्य यह है, कि आपने मेरी मानसिक शान्तिको नष्टकर दिया है—मेरे सारे सुख-स्वप्नोंपर पानी फेर दिया है। परन्तु यद्यपि आपने मेरे हृदयसे एक भावका नाशकर दिया है, पर साथ ही आप दूसरे भावके कारण बन गये हैं। वह भाव किसी प्रकार दूर नहीं किया जा सकता। आपने प्रिंसेस महोदयाके सहवासका भविष्यत् सुख मिट्टीमें मिला दिया है सही, पर उसकी जगह अपनी तस्वीर खड़ी कर दी है। ओह! आप चौंकते क्यों हैं ? ईश्वरके लिये ऐसा न करें—हाथ छुड़ानेकी चेष्टा न करें—मेरी बात धीरज धर कर सुनलें।" इतना कहकर उसने और जोरसे उनका हाथ पकड़ लिया और बोली,—"अब मेरा अपने आपपर कोई अधिकार नहीं है—मैं अपने भावोंके दबानेमें असमर्थ हूं—मैं अपने कार्यों को भी नहीं

रोक सकती। मैं आपके प्रेम—आपकी प्रीतिमें पगली हो गई हूं—मैं—"

जेसिलिन,—(बड़ी दृढ़ता और रूखेपनसे) "मिस उवेन! जरा सावधान होकर बोलो। मैं इस प्रकारकी बातें नहीं सुन सकता। बस, तुम्हारे जाननेके लिये इतनाही काफी है, कि मैं किसी दूसरी स्त्रीको अपना दिल—"

एम्मा,—(रोकर) "हा ईश्वर! मैं कैसी अभागी हूं। अब मैं जिन्दा नहीं रह सकती। मैं कसम खाती हूं, कि—"

जेसिलिन,—(इस दृश्यको देख और उससे मिलने आने पर पश्चात्ताप करते हुए उसकी अवस्थापर पूरा विश्वास करके)—"आह! ऐसी कसम न खाओ—शान्त होओ—अपने भावोंको दमन करो। जरा खयाल तो करो, कि यह कैसी लज्जाकी—कैसी शर्मकी बात है।—तुम्हारे लिये यह कैसा अपवित्र भाव है। एक नौजवान और अजनबी आदमीसे ऐसी बातें कहना, कितना अनुचित और मर्यादाके प्रतिकूल है।"

एम्मा,—(पागलोंकी तरह उनसे लिपटकर) "ऐं, अजनबी! नहीं, नहीं, नहीं, मैं तुमसे इस प्रकार परिचित हो गई हूं, मानो मैं जन्मजन्मान्तरसे तुम्हें पहचानती हूं। तुममें ऐसा अद्भुत गुण है, कि तुम्हें सहसा देखकर लोग अवाक हो जाते हैं और उनका दिल खामखाह तुम्हारी ओर खिंच जाता है। तुम मुझे मेरे कार्योंके लिये बदनाम न करो। तुम्हीं कहो, कि तुम क्यों मेरी राहमें पड़ गये?—तुम क्यों हमारी मण्डलीमें आ मिले? मैं तुम्हें ढूंढने तो नहीं गई थी? यदि तुम अन्जानकी तरह रास्तेपर चले जा रहे होते और मैं तुम्हें बुलाती तो मुझे इस प्रकार दुत्कारना तुम्हारे लिये न्याय था, पर यहां ऐसा नहीं हुआ। ... बात ही दूसरी

प्रिय हो आकर हमलोगोंका चित्त चुरा लिया। तुमने धीरे धीरे केवल हमलोगोंका दिल ही नहीं चुराया, बल्कि एकबारगी ही लूट लिया। अब क्या मैं इस प्रेम इस-अनुपम सम्मिलनको किसी प्रकार दूर कर सकती हूं? यह क्या मेरा ही दोष है, कि मैं तुम्हारी इस मनोहर मृदु मुसकान—इस सुमिष्ट सम्भाषण—इस तिरछी चितवन-पर जान वार चुकी हूं? निठुर, कठोर, वज्रहृदय जेफिलिन! और तुम्हीं मुझे ऐसी अवस्थामें प्राप्त होनेपर झिड़की सुनाते हो?"

इतना कहनेके बाद वह मानो थकसी गई और पासकी ही एक बेंचपर बैठ सुसक सुसककर रोने लगी।

यह तमाशा देख जेफिलिनने एक बार अपने चारों ओर नजर दौड़ाई, पर जब उन्होंने देखा, कि यहांपर इस घटनाको देखने वाला दूसरा कोई नहीं है, तब उनको जानमें जान आई। उस समय सचमुच वे बड़े ही सम्मोहित हो गये थे। उस सुन्दरीके ओजस्वी भाषण—उसके प्रीतिपूर्ण व्यवहार—उसकी कटीली चितवन और उसका प्रत्यक्ष शोकोद्गार—इन सभीने मिलकर उन्हें एकदम सम्मोहित कर दिया था। कारण कि वे स्वयं इस प्रकारके स्त्री-चरित्र, उनके नाज नखरे और उनकी बनावटी बातोंसे एकदम अनभिज्ञ थे, इसलिये उन्हें विश्वास नहीं हुआ, कि यह नाटकीय दृश्य एक बारगी ही झूठ और दगाबाजीसे भरा है। पर उन्हें यह भी विश्वास नहीं हुआ, कि यह एकदम सच्चा और निश्छल है। इस प्रकारकी अनिश्चित अवस्थामें न तो उनसे दया ही दिखाते बनी और न वे उसकी बात ही स्वीकार कर सके।

उन्होंने गम्भीर, पर मृदु स्वरसे कहा,—"मिस उवेन! मैं विनती करता हूं, कि अब तुम सीधी होटलमें चली चलो। तुम्हें अपने कर्त्तव्यका भी पालन करना मुनासिब है और मेरे प्रति भी तुम्हें उचित कर्त्तव्यका ध्यान रखना रे। मेरे कहनेका तात्पर्य्य यह है,

कि तुम अपने असंगत भावोंको दबा डालो, चाहे वे कैसे ही क्यों न हों और—"

एन्मा,—(दोनों हाथोंको निराशासे मलती हुई) "ओह! यह पागलपन है—सरासर पागलपन। यह कैसे मुनासिब है, कि तुम ऐसी अवस्थामें भी शान्ति, संतोष तथा कर्त्तव्यका पाठ पढ़ो और पढ़ाओ। तुम स्वयं ही कह रहे हो, कि तुम किसी दूसरी स्त्रीको आत्मसमर्पण कर चुके हो,—मैं नहीं चाहती, कि उस सौभाग्यवती को उसके सुखसे वञ्चित करूं। तुम तो समस्त जीवन ही उसकी मोहब्बतमें बिता सकते हो। इस हालतमें क्या यह सम्भव है, कि तुम एक दिन—नहीं नहीं, केवल एक घंटा, एक ऐसी अभागी स्त्रीको प्रदान नहीं करोगे, जो तुम्हारे प्रेममें उन्मत्त होरही है? आह! सचमुच यह याचना बड़ा ही आतङ्कपूर्ण और लज्जास्पद है, पर तब भी मैं बिना कहे नहीं रह सकती। मुझे लाचार ऐसा कहना पड़ा। मैं तुम्हें हृदयसे प्यार करती हूं, मैं तुम्हारी प्रीतिमें ही शरीर त्याग दूंगी। आह, प्यारे! इस ताप, इस ज्वालाको शान्त करो, मुझे जीवन दान दो। अवश्य इसके पहले किसी अबलाने इस प्रकार का प्रगाढ़ और उन्मत्त प्रेम कभी न किया होगा। मेरा भाग्य तुम्हारे हाथमें है—मेरा काल तुम्हारे वशमें है। एक दिनके लिये —सिर्फ एक घंटेके लिये मुझे वह प्रेम प्रदान करो और मेरी लालसा परितृप्त कर दो। सारा जीवन मैं उसी यादगारमें बिता दूंगी। नहीं, इतनेमें ही मैं सुखी—सन्तुष्ट और प्रसन्न हो जाऊंगी तथा इस स्वर्गीय सुखका स्मरण आजन्म अपने हृदय-मन्दिरमें छिपा रखूंगी। (आवाज गम्भीर और दीर्घ करके) यदि तुमने मेरी प्रार्थना अस्वीकार की, यदि मेरी बात पर ध्यान न दिया तो जान रखो, सीन नदी पास ही तरङ्गें ले रही है। बस फिर कुछ—"

सौफटस,—(एकदम भयभीत होकर) "हा, परमेश्वर! यह

सा पागलपन है। मिस उवेन ! मैं बहुत देरसे तुम्हारी बातें सुन
रहा हूं;—तुमने बहुत कुछ कहा है।"

एम्मा,—"अच्छा, तब विदा, सदाके लिये विदा !" इतना कहकर
वह बाजकी तरह अपनी जगहसे उठी और मीन नदीकी ओर झपटी,
जो पास ही बह रही थी।

जैसिलिनने मनही मन कहा,—"हा, ईश्वर ! यह सचमुच ही
उन्मत्ता हो रही है—इसमें जरा भी नकल नहीं जान पड़ती।"
इतना सोचकर वे उसकी ओर लपके और उपवनकी सीमाके निकट
ही उन्होंने उसे जा पकड़ा।

वह थकावटके मारे उनकी छातीसे चिपट गई। लीफटस तुरत
ही पास पड़ी हुई एक बेंच पर उसे लेगये। उन्होंने देखा, कि उसकी
आंखें मानो मूर्च्छाके कारण, बन्द होती जा रही हैं, परन्तु उसके
गालोंका रंग सुर्ख ही था।

एक साधारण बेंचपर, जिसमें ओढ़कन भी नहीं था, वे बैठ गये
और लाचार उन्हें उसको अपने हाथों पर अड़ाना पड़ा। एक बार
फिर भी उन्होंने नजर घुमाकर चारों ओर देख लिया, कि कहीं
कोई देख तो नहीं रहा है, पर वहां कोई भी नजर न आया। अब
कुछ निश्चिन्त होकर उन्होंने फिर एम्माके चेहरे पर नजर डाली।

अब जैसिलिनके चेहरेकी ओर देखकर एम्माने बड़े प्रेमके साथ
कहा,—"आह ! इस प्रकारका यत्न कैसा सुखकर, कैसा आनन्ददायक
है ! अच्छा कहो, तुम क्यों मुझे वहांसे पकड़ लाये ? क्यों मुझे रोक
लिया ? एक मिनट—केवल एक मिनटके बाद ही मेरे सारे दुःख
रोग, शोक और निराशाका अन्त हो जाता।"

जैसिलिन,—(धीरेसे उसे उठाकर) "मिस उवेन ! छोड़ो इन बातों
को ? इनमें क्या पड़ा है ? तुमने मुझे बहुत ही मर्माहत, बड़ा ही
भयभीत कर दिया है ! चलो, अब हम लोग होटलमें लौट चलें।"

एम्मा,—(आखें नीची करके) "अच्छा, तो तुम मुझसे घृणा करते हो? मेरी प्रार्थना अस्वीकार करते हो? एक घंटेके लिये भी मुझे अपनी अङ्कशायिनी नहीं बना सकते?" इतना कहते कहते उसकी आंखोंमें आंसू डबडबा आये, चेहरा तमतमा उठा और छाती जोरजोरसे धड़कने लगी।

जैसिलिन,—(जोर देकर) "मैं समझता हूं, कि तुम स्वयं अपने कथनका प्रकृत आशय नहीं समझ रही हो और ईश्वर न करे, कि तुम उसे समझो। यह कल्पना ही मेरे लिये कितनी कष्टकर है, यह तुम्हें—"

एम्मा,—(पागलोंकी तरह) "आह! आप सत्यताकी ही कल्पना करें; मैं इससे जरा भी लज्जित नहीं हूं। आपने मेरे हृदयमें भयानक प्रेमाग्नि जला दी है। मेरा सारा सुख—यहां तक कि मेरा जीवन भी उसी प्रेम-ज्वालाकी निवृत्ति पर निर्भर है। आप चाहे भले ही मुझे नीच, कुलटा, कुल-कलङ्किनी या भ्रष्टा वारा-ङ्गना समझें, आप चाहे भले ही मुझसे घृणा करें और मेरा मुंह देखना भी पाप समझें, पर मेरी अवस्था किसी तरह भी पलटने-वाली नहीं है,—मेरे हृदयकी ज्वाला बुझनेवाली नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है, कि जब एक अबला स्वयं बड़े स्नेह, प्रेम और प्रीतिके साथ अपने आपको अर्पणकर रही हो,—इसलिये नहीं, कि यह उसकी भक्ति, उसकी श्रद्धा और उसके अन्ध प्रेमका प्रमाणस्वरूप माना जाय, बल्कि इसलिये, कि एक—केवल एक घंटेके स्वर्गीय आनन्दका स्मरण कर वह अपने जीवनको सफल करे,—नहीं, नहीं—अपना जीवन धारण कर सके,—तब आप उसे दुत्कार कर अपने पाससे निकाल न देंगे। ऐसा समझना कभी सम्भव नहीं है।"

इस प्रकार बोलती बोलती एम्मा बड़े प्रेमके साथ मिष्टर जैसि-लिनको देखने लगी। पर वे उसके इस अधःपतनको देखकर एक

अवाक होगये। ऐसा अधःपतन, ऐसे अश्लील विचार—और शब्दोंमें! इन बातोंके सुनतेही उन की आत्मा सनका उठी और रोमें असंतोषकी भयानक ज्वाला निकलने लगी।

जरा ठहरकर जेसिलिनने कड़ी आवाजमें कहा,—"मिस उवेन! हाथ पकड़ो, घर चलनेका समय होगया है। चलो, अब न करो।"

एम्मा,—(मोहब्बतसे) "नहीं, मैं उस समय तक नहीं चल ती, जबतक तुम हामी न भरोगी।"

लौफटस,—"अच्छा, तब सुनो,—तुम्हारा सारा छल-कपट—हारा तमाम मोहिनी मन्त्र और तुम्हारी सारी चालाकी व्यर्थ हुई। मैं जिसे एकबार अपने आपको सौंप चुका हूं, उसके साथ विश्वासघात करनेकी अपेक्षा जीवन त्याग देना कहीं अच्छा समझता हूं। सुना? आओ, अब चलो, यहांसे तुरत विदा हों। अब मैं यहां जरा भी ठहर नहीं सकता।"

जब उस विफल-मनोरथा, निराश-हृदया, म्रतः प्राया एम्माने समझा, कि सचमुच उसकी एक भी चालाकी इस सदाचारी युवकको अपने धर्मसे जरा भी न डिगा सकी, तब स्वयं जेसिलिनका हाथ पकड़कर वह उस स्थानसे घरकी ओर चल पड़ी।

घर जाते समय रास्तेमें उन दोनोंमें एक भी बात न हुई। एम्माकी हिम्मत भी न पड़ी, कि वह फिर जेसिलिनसे आंख मिलावे। कारण, कि उसे अच्छी तरह मालूम होगया था, कि जेसिलिन इस घटनासे अत्यन्त रुष्ट होगये हैं, साथही उसे अपनी असफलतापर भी बड़ी लज्जा और ग्लानि हुई। यद्यपि उसने विशेष मतलब गांठनेके लिये ही इस प्रकारकी चालाकी खेली थी, तथापि स्वभावतः काम वासनामें गर्क रहनेके कारण वह कुछ उन्मत्ता भी अवश्य हो गई थी। यद्यपि उसकी ज्वलन्त आशा

एकदम बनावटी या नकली नहीं थी, पर उसको वैसी भावाका मूल कारण शुद्ध और पवित्र प्रेम भी न था।

रास्ते भर दोनों मौन धारण किये रहे और उसी अवस्थामें होटल तक आये, पर यहां आकर मिष्टर जैसिलिन एकाएक ठिठक गये और बोले,—"मिस उवेन! मैं आजकी घटनाका वर्णन किसी दूसरेके सामने न करूंगा। मैं इस लज्जाजनक बातको प्रकाशित कर तुम्हारी अधिक हँसी नहीं करवाना चाहता। यदि तुम्हारे देरीका कोई कारण पूछे, तो तुम्हारे मनमें जो आवे कह देना पर इस समयसे मैं तुम्हारी मण्डलीमें शामिल नहीं रह सकता— खानेके समय और न कहीं जानेके समय ही। यदि तुम या तुम्हारी बहिनें उस परमावश्यक कार्य्यके सम्बन्धमें कुछ निर्णय करना चाहो तो बड़ी खुशीके साथ लिखकर अपनी अपनी राय दे सकती हो पर यदि आज राततक तुम लोगोंसे उस सम्बन्धमें कुछ मालूम न हो सका, तो कल अवश्य मैं अकेला ही इटली रवाना हो जाऊंगा और अभागी प्रिंसेसको उसके दुराचारी स्वामीके रचे हुए षड़यन्त्र अवगत कर दूंगा।"

इतना कह जैसिलिनने झुककर एम्मासे विदाई ली और अपने कमरेकी ओर चले गये। एम्मा भी, जो इन बातोंको नीचे नजर किये बड़ी उत्कण्ठाके साथ सुन रही थी, बड़ी शीघ्रतासे अपने कमरेमें चली गई और रो रोकर अपनी छातीका बोझ उतारने लगी।

एम्मासे विदा होकर जैसिलिन होटलके सहनमें पहुंचे, कारण कि वे उस कमरेमें जाना चाहते थे, जहां उन्हें कहवा और अन्य पानकी सामग्री मिलती। परन्तु वहां पहुंचनेके पहले ही एक गम्भीराकृति बूढ़े फ्रान्सीसीने उन्हें अपनी ओर बुलाया, जो उन्हें बड़े गौरके साथ आंखें गड़ाकर देख रहा था।

फ्रान्सीसी,—(अपनी टोपी उतार कर)"महाशय! क्षमा कीजिये, आपसे एक बहुत जरूरी कामके लिये बातें करने आया हूं।"

जेसिलिन, जो उसका चेहरा देखकर ही अनुमान कर बैठे थे, शायद कुछ जालसाजी कीजा रही है, बोले,—"अच्छा तो किसी शान्त स्थानमें चले चलिये।"

फ्रान्सीसी,—"इसको कोई आवश्यकता नहीं है। मैं आपसे साफ कहे देता हूं, कि मैं पुलिसका आदमी हूं और वे लोग, जो दरवाजेपर खड़े हैं, मेरे ही आदमी हैं। मैं आशा करता हूं, कि आपको पुलिस-कमिश्नरके पास चलनेमें कोई उज्र न होगा।"

लौफटस,—(क्रोधसे) "क्यों? किस लिये? अथवा किस अपराधमें?"

फ्रान्सीसी,—"केवल कमिश्नर साहबके सामने कुछ बयान करनेके लिये। मैं आपको विश्वास दिलाता हूं, कि वहां विशेष कुछ सवाल न होगा, पर आपको अवश्य चलना पड़ेगा।"

लौफटस,—"अच्छा एकबार मैं अपने कमरेमें हो आऊं और कुछ आवश्यकीय कागजोंको साथ ले लूं, जिसमें कि अवसर पर काम दे सकें। सम्भव है, कि उसी सम्बन्धकी कोई बात हो!"

फ्रान्सीसी,—(रूखे स्वरसे) "आपके कागजात इस समय मेरे अधिकारमें हैं।"

जेसिलिन,—(अधिक क्रोधके साथ) "ऐं! तब क्या तुमने जबर्दस्ती मेरे डेस्कसे मेरी अनुपस्थितिमें कागजोंको निकाल लिया है?"

फ्रान्सीसी,—(संक्षेपमें) "हां, महाशय! मुझे अधिकार था।"

यह सुन जेसिलिन कुछ चिन्तामें पड़ गये, पर चूंकि फ्रान्सीसी पुलिसके विचित्र अधिकारके विषयमें उन्हें पहलेसे ही मालूम था, इसलिये बिना अधिक सोचविचारके ही वे बोल उठे,—"अच्छा, मैं तुम्हारे साथ चलता हूं।"

जेसिलिनकी बात सुनकर उस बूढ़े ने फिर एक बार टोपी उतार ली और उनके पीछे हो लिया। सड़क पर आकर वे एक भाड़ा गाड़ीमें जा बैठे, जो पहलेसे ही कुछ दूर पर खड़ी उनकी राह देख रही थी। इसके बाद उस बूढ़ेने अपने दोनों आदमियोंको इशारा किया, कि उनके गाड़ीपर सवार होनेकी अब कोई आवश्यकता नहीं है।

उनके सवार होते ही गाड़ी चल पड़ी। रास्तेमें जेसिलिनने उस बूढ़े से अपनी बुलाहटके सम्बन्धमें, विशेष पता लगानेकी चेष्टा की, पर वह इस तरह सम्हल सम्हलकर जवाब देने लगा, कि वे कुछ भी मतलब न निकाल सके। लाचार उन्हें अपनी कल्पनाओंसे ही असली कारणका पता लगाना पड़ा।

प्रायः बीस मिनटमें गाड़ी पुलिस-कमिश्नरके आफिसके सामने जा लगी। गाड़ीसे उतरकर उस बूढ़े ने जेसिलिनको एक खूब सजे सजाये कमरेमें, जहां एक दूसरा वृद्ध पुरुष बैठा हुआ था, ले जाकर खड़ा कर दिया। यही पुलिस-कमिश्नर थे।

पुलिस-कमिश्नर,—(सम्मानपूर्वक) "बैठ जाइये।"

यह सुन जेसिलिन एक कुरसी खींचकर बैठ गये। अब उन्हें मालूम हुआ, कि इसमें कुछ जालसाजी नहीं है।

इस बीचमें वह बूढ़ा पुलिस कर्मचारी वहांसे खिसक गया था, पर तुरत ही लौटकर वह कमिश्नर साहबके सामने कागजोंका एक पुलिन्दा रख गया। उस पुलिन्देको देखते ही जेसिलिनने पहचान लिया, कि यह उन्हींका पास पोर्ट है, जिसे वे नियमानुसार होटलवालेको सुपुर्द कर आये थे।

कमिश्नर,—(कागज दिखलाकर) "आप इसे पहचानते हैं?"

जेसिलिन,—"जी हां, पहचानता हूं। यह मेरा ही पास-पोर्ट है।"

कमिश्नर,—"क्यों महाशय ! यह तो नकली नामसे लिया गया है न ? आशा है आप इस बातको अस्वीकार न करेंगे ?"

जेसिलिन,—"मैं अस्वीकार नहीं करता, पर मैं अभी इसका अस्वीकार कारण हुजूरको बता सकता हूं, जिसमें कि—"

कमिश्नर,—(कुछ कड़ाईके साथ) "नहीं महाशय ! मैं आपसे इसका कारण नहीं पूछता । आपकी आन्तरिक इच्छासे मुझे कोई मतलब नहीं । मुझे सिर्फ इतनेसे ही मतलब है, कि आप अस्वीकार नहीं करते । अब मेरा यह कर्त्तव्य है, कि मैं आपको इस समय अपनी निगरानीमें रखूं । अच्छा, अब आप कृपाकर उस आदमीके साथ, जहां वह ले जाय—"

जेसिलिन,—"हुजूर ! इसका कारण— ?"

कमिश्नर,—(रुखाईके साथ) "बस, अधिक बकवादसे कोई लाभ नहीं, आप चुपचाप इसके साथ चले जायँ ।"

यह सुन लौफटसका चेहरा क्रोधसे तमतमा उठा और वे कड़ककर बोले,—"नहीं, मैं चुप नहीं रह सकता । ब्रुटिश प्रजाकी हैसियतसे मुझे अधिकार है, कि मैं अपने एलची (राजदूत) की शरण लूं और—"

परन्तु इसके पहले ही कमिश्नर अपनी जगहसे उठ कर चलता बना और उस पुलिसके सिपाहीने उनके कन्धेपर हाथ रखकर कहा, "महाशय ! कृपाकर मेरे पीछे चले आइये ।"

अब लौफटसने देखा, कि यह बिचारा तो केवल एक आज्ञाकारी दास है, इससे कहासुनी करनेसे क्या लाभ, तब वे चुपचाप उसके साथ हो लिये । अब वह उन्हें लिये हुआ एक महज मामूली कमरेके पास पहुंचा, जिसकी खिड़कियोंमें मोटे मोटे लोहेके छड़ लगे हुए थे ।

उनके उसके अन्दर प्रवेश करते ही दरवाजा बन्द कर दिया

गया। तब उनके कानोंमें ताली भरनेकी आवाज पड़ी, तो एकाएक उन्हें लुइसाका स्मरण हो आया और वे बड़े विकल, उदास और निराश हो गये।

छप्पनवां परिच्छेद।

छ मिलोंका दुबारा मेल।

हौरेस सेकविल और विनोशिया ट्रिलीनोकी शादी हुए प्रायः एक पखवाड़ा बीत गया है। इस हिसाबसे १०वीं अक्टूबरकी रात्रिको कर्नल मलपासके ग्रेट-मार्लबोरो वाले मकानमें बड़ी चहलपहल है।

भोज गृहमें खूब रोशनी की गई है, छओं मित्रोंके लिये भोजनका टेबिल सजाया गया है, रकाबियोंका ढेर लगा है। खानेकी तैयारी देखनेसे ही मालूम होता है, कि आज यहां एक शानदार भोज होनेवाला है।

प्रायः पौने छ बजे कर्नल मलपास खूब ठाटबाटसे अपने कमरेसे नीचे उतरे और नजर दौड़ाकर देखने लगे, कि क्या बन्दोबस्त किया गया है। बन्दोबस्त उनको इच्छानुसार ही किया गया था। सब सामान यथास्थान सजे हुए थे। इसकी शाबाशी खानसामाको दी गई और उसने बड़ी नम्रतासे उसे स्वीकार किया।

कर्नल,—"सचमुच तुमने प्रशंसा योग्य कार्य किया है। ग्रम्पस्टेड! तुम्हारी जितनी प्रशंसाकी जाय थोड़ी है। हां, खूब याद आया, मैं तुम्हारा कितनेका कर्जदार हूं?"

ग्रम्पस्टेड,—"हुजूर! केवल ढाई सालकी तनख्वाह बाकी है—चालीस गिन्नी सालके हिसाबसे।"

यद्यपि लोकाचारके खयालसे ग्रम्पस्टेडने 'केवल' कहा था, प

सकी आवाजसे मालूम हुआ, कि वह इस वकीयतसे संतुष्ट हीं था।

कर्नेल,—"आह! सो ही गिरो न ? अच्छा, कल मैं सका बन्दोबस्त कर दूंगा—भरोसा रखो, कल सब ठीक ो जायगा।"

झम्पस्टेड,—(झुककर सलाम करनेके बाद धीरेसे) "हुजूर! मेंे पूरी उम्मीद है, कि आप इसे भूलेंगे नहीं।" पर जब कर्नेल ाहब वहांसे चले गये, तो वह इस तरह बडबडाने लगा,—"ठग हीँका! मुझे पूरा विश्वास है, कि मैं उन रुपयोंको कभी आखसे भी न देखूंगा। मैं कसम खाकर कह सकता हूं, कि जल्द ही कोई आफत आनेवाली है। मैं उस आदमीको अच्छी तरह पहचानता हूं। निःसन्देह वह शरीफका ही अर्दली था, जो आज सवेरे पूछने आया था, कि कर्नेल यहां हैं या नहीं। पर मैं तो उनसे इस बातको कहना ही भूल गया। खैर, कोई हर्ज नहीं। कल जरूर कह दूंगा।"

इधर तो खानसामा झम्पस्टेड इस प्रकारकी चिन्तामें निमग्न था और उधर कर्नेल मलपास बैठकमें जाकर एक कद आदम आईनेके सामने अपनी छटा देखते हुए मूछों पर ताव देकर कह रहे थे,—"सचमुच मैं इतना सुन्दर तो अवश्य हूं, कि विनीग्रिया ट्रिलौनी जैसी सुन्दरताकी प्रतिमूर्ति भी मुझे दिलसे पसन्द करेगी।"

इतना होने पर भी कर्नेलके मनमें शान्ति नहीं थी। यदि साफ साफ कहा जाय, तो वे बड़े बेचैन और उन्मत्तसे हो रहे थे। यद्यपि यह सच है; कि उन्होंने अपनी स्त्रीको, जो एक कसाईकी लड़की थी, शहरमें जाकर अपने बन्धुबान्धवोंको बुलालानेकी आज्ञा दी थी—और आजके भोजके लिये किसी तरह रुपयेका

इन्तजाम भी कर लिया था, तदापि आनेवाली आफत और दुर्घटनाका खयाल आते ही उनका सब आनन्द ठंढा पड़ जाता था। सच पूछो तो कोई भी ऐसा कठिन काम नहीं था, जो उन्होंने किया हो, पर उनमें भविष्यापदके सहन करनेका साहस जरा भी नहीं था। इसलिये ज्यों ज्यों साहस दिखलानेका समय निकट आता गया, त्यों त्यों उनकी उन्मत्तता बढ़ती गयी।

इसके अतिरिक्त महाजन इमरसनने उन्हें जाली दस्तावेजके बदले असली दस्तावेज लिख देनेके लिये लाचार किया था। वह दस्तावेज मिसेस गेलके यहां लेडी कर्जनवाली घटनाके दूसरे दिन लिख दिया गया था, पर अभी तक रुपया नहीं दिया सका। आजसे दो तीन दिन पहले उन्हें मिष्टर इमरसनके यहांसे एक धमकीकी चिट्ठी मिली थी, जिसके उत्तरमें उन्होंने उसे एक सप्ताह और सब्र करनेके लिये लिखा था और उसके बाद रुपये दे देनेका भरोसा दिलाया था, पर इससे छुटकारा पानेकी, उनकी एक मात्र आशा, आजके इसी बन्दोबस्त पर निर्भर थी और इसी विचारसे यह भोज दिया जा रहा था। परन्तु यदि आजका उपाय भी व्यर्थ हो जाय, तो उनका सर्वनाश निश्चित है,—तब या तो उन्हें इङ्गलैण्डसे भागना होगा या जेलकी हवा खानी पड़ेगी।

यही तो कर्नल मलपासकी अवस्था हो रही थी। हम नहीं समझते, कि पाठक ऐसी अवस्थाके लिये कभी लालायित होंगे। असलमें कर्नल मलपासका आइनेके पास जाकर अपनी छटा निरखना और मूछों पर ताव देना इस बातका द्योतक था, कि प्रकृत मानसिक-शान्ति न रहने पर भी लोग अपने हृदयकी शान्ति दिखानेके लिये ऐसा किया करते हैं, बल्कि वे अपने इन कामोंसे हृदयको भी धोखा दिया चाहते हैं। सच तो यह है, कि इस समय

नकी अवस्था ठीक उसी अपराधीके समान हो रही थी, जो रवाजेकी खटखटाहट सुनते ही चौंक पड़ता है और फिर यह कार दिलको बहलाता है, कि किसीने मुझे ऐसा करते देखा ो, यह एकदम असम्भव है। प्राय: देखा जाता है, कि जो मनुष्य वमुच किसी बड़े संकटमें रहता है, वह इसी तरह मन-बुझौला रके बेचैनीको दूर करता है और समझाता है,—कि उसकी ाशङ्का केवल आशंका ही है—उसकी सत्यताकी कोई नियाद नहीं है।

खैर, पाठक! अब फिर हम अपनी कहानीका सिलसिला ारी करते हैं :—

शामके ठीक ६ बजे एक खूबसूरत जोड़ी-गाड़ी कर्नलके मकान- े दरवाजे पर आलगी और क्षण भरके बाद ही नौकरने बैठकका रवाजा खोलकर सर डगलास इविङ्गके आनेकी सूचना दी।

कर्नल बड़ी शीघ्रताके साथ उनका स्वागत करनेके लिये बाहर ाये,—दोनोंने हाथ मिलाया। यथायोग्य अभिवादनके बाद सर गलासने कहा,—"सचमुच कर्नल मलपास! आज तुम्हारा निमं- त्रणपत्र पाकर मुझे बड़ा ही ताज्जुब हुआ। आज जैसा ताज्जुब मुझे पहले कभी नहीं हुआ था।"

कर्नल मलपास,—(मन्द मुस्कराहटके साथ) "क्यों! मेरे यहां ाज कोई विशेष बात है क्या? मेरी समझमें तो आज यह पहला ी अवसर नहीं है, कि मैंने तुम्हें निमंत्रित किया हो, ौर मैं फिर भी आशा करता हूं, कि यह अन्तिम निमंत्रण नहीं है।"

सर डगलास,—(एक कुरसी पर बैठ कर) "मैं भी ऐसी ही आशा करता हूं। पर तुमने पत्रमें लिखा था, कि मुझे आज कहीं दूसरी जगह जाना उचित नहीं है, कारण कि तुमने लेवेसन-हाउसमें

की हुई प्रतिज्ञाके अनुसार आज भोज देना निश्चय किया है, तो क्या मैं समझ लूं, कि विनोशियाने तुमपर ही पहले अनुराग किया है।"

मलपास,—(प्रफुल्लित चित्तसे) "घबड़ाते क्यों हो, तुम्हें शीघ्र ही मालूम हो जायगा। पहले भोजकी बात करो, पीछे कामकी।"

सर डगलास,—(परस्पर विरोधी विचारोंके कारण अवाक होकर) "परन्तु फिर यह कैसे सम्भव हुआ, कि सेकविलसे उसकी शादी हो गई। अवश्य उसे यह मालूम नहीं होगा, कि पहले तुमने ही विनोशिया पर विजय प्राप्तकी थी। खैर, वह भी तो आज आवे, भाई देखें तब क्या गुल खिलता है? उसके मुँह पर ही कहा जायगा, कि उसने एक ऐसी रमणीसे शादीकी है, जिसका——"

इसी समय बैठकका दरवाजा खुल गया और नौकरने अर्ल कार्जनके आनेकी सूचना दी।

अर्ल कार्जन,—(आतेही) "मेरे प्यारे मलपास! क्या सच मुच यह ठीक है, अथवा दिल्लगी? पर अवश्य तुमने जो भोज देने के लिये लिखा है, उसमें मुझे कोई धोखा नहीं जान पड़ता, कारण कि यहां आते समय मैं भोज-गृहको देखता आया हूँ। अपना संदेह दूर करनेके लिये जब मैंने भोज-गृहकी टेबिल पर नजर डाली तो मालूम हुआ, कि छः रकाबियां सजी रक्खी हैं। यद्यपि यह मैंने अनुचित किया है, पर आशा करता हूं, कि तुम मुझे उस अनुचित कार्य्यके लिये क्षमा करोगे।...दोस्त! सचमुच मुझे बड़ा आश्चर्य्य हो रहा था, इसी लिये मैंने ऐसा किया है।"

सर डगलास हण्टिङ्गडन,—"मुझे भी बड़ा आश्चर्य हुआ है कर्जन!" इस समय कर्नल मलपास गम्भीर मगर प्रसन्न चित्तसे इन दोनोंकी बातें सुन रहे थे। सर डगलासने फिर कहना आरम्भ किया,—"तुम्हारे आनेके कुछ ही पहले मैं मलपाससे कह रहा था कि सेकविल आज ऐसा बेवकूफ बनाया जायगा कि——"

अर्ल कर्जन,—"पर मैं नहीं समझता, कि वह आवेगा। नहीं, कभी नहीं आसकता—वह हमलोगोंको अपना काला मुँह नहीं दिखला सकता। वह स्वयं ही अत्यन्त लज्जित होगा,—अब फिर हम लोगोंसे और बेवकूफ न बनेगा। मेरी समझमें मलपास-यत मिस्टर सैकविल उसे जितना शैतान समझेगा, वह उससे कई गुना अधिक है। (कर्नलसे) अच्छा, तुमने उसको कोई निमंत्रण पत्र भेजा है वा नहीं?"

मलपास,—"अवश्य भेजा है। क्या लेवेसन-हाउसकी प्रतिष्ठार मैं उसके पास पत्र भेजनेके लिये वाध्य नहीं था?"

ह्विटिङ्गटन,—"अवश्य" अर्ल कर्जनकी विनोप्रिया सम्बन्धी बात सुनकर,—"पर तुम्हारे यह कहनेका क्या तात्पर्य्य है, कर्जन! कि मलपास उसे जितना शैतान समझता है, वह उससे भी अधिक शैतान है।"

अर्ल कर्जन,—"मेरे कहने का मतलब यह है, कि मैं बड़े ही असमें हूँ, यदि—"

पर आगेकी बात कहते कहते वे ठमक गये, कारण कि इसी समय फिर बैठकका दरवाजा खुला और मार्क्विस आफ लेवेसन कमरेमें दाखिल हुए।

मलपासने झट आगे बढ़कर उनका स्वागत किया। उन्होंने बड़े तपाकसे मलपास, अर्ल कर्जन और सर हगलासे हाथ मिलाया और फिर कर्नलको एक किनारे लेजाकर कहा,—"मुझे भय है, कि कुछ रंगमें भंग होगा।"

मलपास,—(भयभीत स्वरसे) "यह क्यों?"

मार्क्विस,—"क्योंकि तुमसे और सैकविलसे झगड़ा होगा।"

मलपास,—"नहीं, ऐसा नहीं हो सकता, बशर्ते कि वह इतना मूर्ख न हो, कि एक ऐसी स्त्रीके साथ शादी करके, जो पहले मुझे आत्मसमर्पण कर चुकी है,——"

लेवेसन,—"तुम्हारे कथनमें तो अजब तरहकी दृढ़ता मालूम पड़ती है, पर देखो कहीं ऐसा न हो, कि सेकविलसे और तुम झगड़ा होकर वह बात फूट निकले, जो——"

कर्नल,—(इस तरहकी बातोंसे दूर रहनेकी इच्छासे) "आह! पर कमसे कम अपनी भलाईके लिये तो वह सबके सामने मूर्ख बनना न चाहेगा?"

लेवेसन,—(कर्नलको बैठकके एक कोनेमें लेजाकर) "परन्तु कर्नल! हम लोगोंको अपने लिये तो सचेत रहना उचित है। इस लिये पहलेसे ही सब बात ठीक करलेनी चाहिये।" इस प्रकार कहकर वे उनसे तर्क वितर्क करने लगे, पर उनके ऐसा करनेका असल मतलब यही था, कि किसी तरह जान लें, कि, मलपासने विनोग्रिया-विजयके विषयमें क्या कहना स्थिर किया है।

इस बीचमें सर डगलास हचिङ्गडन अर्ल कार्जनको बैठकके दूसरे कोनेमें ले गये और खूब गौरसे उनके चेहरेकी ओर देख कर बोले,—"तुम उस समय क्या कहना चाहते थे, जब लेवेसन आगये थे?"

अर्ल कार्जन,—"भाई! मेरी समझमें नहीं आता, कि मेरे मनमें जो संदेह पैदा हुआ है, उसे कहूं अथवा नहीं। पर जब तुम पूछते ही हो तो कहनेमें कोई हानि नहीं है। मेरे मनमें यह सन्देह उठा है, कि विनोग्रियाने या तो लेवेसनको और नहीं तो प्रिंसको आत्मसमर्पण किया है और——"

हचिङ्गडन,—(जल्दीसे) "मेरे मनमें भी यही संदेह हुआ था।"

अर्ल कार्जन,—"वाह वाह! यह तो बड़े ताज्जुबकी बात है कि दो——"

हचिङ्गडन,—(हँसकर और मतलबभरी निगाहसे उन्हें देखकर) "मैं समझ गया, कि तुम क्या कहना चाहते हो। तो क्या मैं नहीं

[न] सकता, कि तुम्हारे दिलमें भी ठीक वैसा ही सन्देह कैसे हुआ ? अच्छा आओ, अब हमलोग दिल खोलकर बातें करें।"

अर्ल कर्जन,—"खुशीसे। यदि सच पूछते हो, तो सुनो,—मैंने कमान टेश और राबिनको विनोग्रियाकी गतिविधिपर निगाह रखनेके लिये यूस—"

इपिङ्गडन,—(जल्दीसे बात काट कर) "मैंने भी तो वैसा ही किया था।"

अर्ल कर्जन,—"ओ हो ! तब तो बड़ा मजा हुआ। तो शायद उसीने तुमसे कहा होगा, कि विनोग्रिया उसी रातको पहले तो लेवेसनके यहां और फिर प्रिंसके यहां गई थी।"

इपिङ्गडन,—"हां भाई ! ठीक यही बात है और उसने मलपासके भी विनोग्रियासे मिलनेकी बात कही है, पर उसके कथनानुसार तो मलपासकी विनोग्रिया-विजयकी बात एकदम झूठी जान पड़ती है।"

अर्ल कर्जन,—"मुझसे भी उसने ऐसा ही कहा है। इसी कारण तो मैं अवाक् हो रहा हूं। मुझे कुछ समझ ही नहीं पड़ता। या तो टेश झूठा है या मलपास।"

इपिङ्गडन,—"मामला बड़ा विचित्र और खूब सङ्गीन भी है। मेरी समझमें तो मलपास इतना मूर्ख नहीं है, और न ऐसा फजूल खर्च ही है, कि———"

अर्ल कर्जन,—"पर मेरी धारणा उसके विषयमें उतनी अच्छी नहीं है। तिसपर छ हजार गिन्नियोंकी बाजी है। लेवेसन ही खजाञ्ची बनाया गया है। इस लिये हमलोग जबतक मलपाससे विनोग्रिया प्राप्तिका कोई अकाट्य प्रमाण न पालें, उसे रुपया न देने देंगे। मलपासके सफल मनोरथ होने पर मुझे इस लिये कुछ कुछ विश्वास आता है, कि विनोग्रियाने उसी रातको लेवेसन और प्रिंस

दोनोंसे मुलाकातकी थी, इससे वह पूरी कुलटा, और विलासिनी मालूम होती है। अतएव सम्भव है, कि मलपास—"

हरिंटङ्गडन,—"तब उसने हम दोनोंको क्यों अस्वीकार किया? यदि उसे पैसेका ही खयाल हो, तो तुम भी उसे उतना ही दे सकते थे, जितना कि मलपास। और यदि सुन्दरताकी बात कहो, तो भी मेरी समझमें—मैं झूठी प्रशंसा नहीं करता—तुम्हारा ही नम्बर पहला है।"

ठीक इसी समय दरवाजा खुला और नौकरने प्रिंसके आनेकी सूचना दी।

मलपास, मार्किस लेवेसनको छोड़कर झट प्रिंससे मिलनेके लिये आगे बढ़े। प्रिन्सने कार्लटन-प्रासादमें विनोशियासे मिलनेके समय इस बातकी प्रतिज्ञाकी थी, वे मलपासको अपने पास कभी न आने देंगे, परन्तु इस समय मलपाससे उन्होंने बड़ी खुशीके साथ हाथ मिलाया। इस प्रकार प्रिंस भी स्वय अपनी बात काटकर मलपासके यहां आ पहुंचे।

मलपाससे कुछ मामूली बातेंकर विनोशियाका जिक्र किये बिना ही प्रिंस एकाएक लेवेसनकी ओर बढ़े और बोले,—"खूब याद आया, भाई लेवेसन। तुमसे किसी राजनैतिक विषय पर राय लेनी है। इस लिये मैं आशा करता हूं, कि तुम्हें एकान्तमें ले जानेके लिये मिष्टर मलपास मुझे क्षमा करेंगे।"

कार्नेल,—"हुजूर। जैसे अपने घरके स्वामी हैं, वैसेही दूसरोंके भी। इसमें क्षमाकी कौनसी बात है?" इतना कहकर मूछोंपर ताव देते हुए वे अर्ल कार्जन और सर लगलास हरिंटङ्गडनकी ओर बढ़े।

इधर प्रिंस लेवेसनका हाथ पकड़कर उन्हें बैठकके एक किनारे ले गये और धीरेसे बोले,—"इस मूर्खताका क्या मतलब है?"

लेवेसन,—"मेरी समझमें भी नहीं आता। पर मालूम होता

है, कि मलपासने नि सन्देह विनोग्रियाको अपनाया है। मैं इसपर विश्वास भी करता हूं, कारण कि जब विनोग्रिया मेरे यहां आई थी तब उसने कहा था, कि कर्नलने उसे हमलोगोंकी बातें बतला दी हैं।"

प्रिंस,—"उसने मुझसे भी तो यही बात कही थी,पर उसके रंग-ढंग तथा बोलचालसे मालूम हुआ, कि शायद वह उसे घृणाकी दृष्टिसे देखती है।"

लेवेसन,—"सम्भव है, कि यह उसकी चालाकी हो, कारण, कि मलपासने हमलोगोंसे कहा है, कि वह हमलोगोंको अपनी सफलताके सम्बन्धमें एक अकाट्य प्रमाण देगा, पर वह इस समय उस प्रमाणके विषयमें कुछ कहना नहीं चाहता। इससे साफ मालूम होता है, कि विनोग्रिया जैसी सुन्दरी है, वैसी ही छिनाल भी है।"

प्रिंस,—"सचमुच मुझे भी ऐसा ही मालूम होता है। पहले मेरी इच्छा थी, कि मलपाससे अपना सम्बन्ध एकदम तोड़ दूं, पर जब मुझे उसका निमंत्रण पत्र मिला, और जब मैंने उस निमंत्रणका कारण समझा,तब मुझे बड़ा ही आश्चर्य हुआ। तब मैंने यही उचित समझा, कि आज यह निर्णय हो जाय तो विनोग्रियाके विषयमें मतामत दिया जाय। पर अब मुझे स्पष्ट मालूम होता है, कि मैकविलने अपनेको बड़ा ही मूर्ख बनाया और एक अस्थिरमना स्त्रीसे शादी कर ली। जान पड़ता है, वह एक बारगी ही ऋण-ग्रस्त हो रही है, और शायद इस प्रकार शादी करके उस ऋणका सारा बोझ अपने पतिपर डालकर स्वयं मुक्त होना चाहती है।"

मार्किस,—"हां, ढंग तो ऐसा ही मालूम पड़ता है।"

प्रिंस,—(मुस्कराकर) "अच्छा, यह तो कहो, कि विनोग्रियाकी कोई खबर तुम्हें मिली है?"

मार्किस,—(उदास होकर) "कुछ भी नहीं। क्या आपको

मालूम है, कि मेकविल और उसकी पत्नी शहरमें लौट आई ?"

प्रिंस,—"नहीं भाई! पर शायद मलपास बतला सकता है। मलपासके पास जाकर,—"कर्नेल! क्या तुम्हें मालूम है, कि मिष्टर मेकविल और उनकी पत्नी ब्रिगटनसे लौटीं या नहीं ?"

अर्ल वार्जन,—"वे कल रातको आये हैं और अकेथिया कोर्टमें ठहरे हैं।"

हरिटङ्गडन,—(शीघ्रतापूर्वक) "मालूम होता है, यह सुम तुम्हें टेयसे मिली है। उसने कल रातको यही खबर लेकर रातको मेरे पास भेजा था।"

प्रिंस,—"क्या तुम समझते हो, कि मेकविल इस मजलिसमें शामिल होगा ?"

कर्नेल मलपास,—"मुझे अपने निमंत्रण-पत्रका अभीतक कोई उत्तर नहीं मिला है।"

अर्ल वार्जन,—"मेरी समझमें तो शायद वह न आवेगा।"

हरिटङ्गडन,—"मैं भी ऐसा ही समझता हूं। वह निःसन्देह बड़ा ही लज्जित हुआ होगा।"

लेवेसन,—"इसी लिये शायद वह अपना मुँह हमलोगोंको नहीं दिखला सकता। क्यों यही बात है न ?"

प्रिंस,—"उसे शायद यह डर है, कि हमलोग उसको हूँसी उड़ावेंगे, क्यों ?"

कर्नेल,—(घड़ी देखकर प्रिन्ससे) "अब साढ़े छः बजा है, और मैंने अपने पत्रमें यही समय दिया था। तो क्या खाना लानेके लिये कह दूं ?"

पर प्रिंसके उत्तर देनेके पहले ही फिर दरवाजा खुला और मिष्टर और मेकविलके आनेको सूचना मिली।

सत्तावनवाँ परिच्छेद।

शानदार भोज।

विनीशियाके पति ऐसा शान्त भाव तथा इतना गम्भीर चेहरा बनाकर उस कमरेमें घुसे, मानो उनकी वर्त्तमान स्थिति तथा उपस्थित घटनाओंमें किसी प्रकारकी ऐसी विचित्रता नहीं है, जिसका असर उनपर पड़ा हो। कर्नल सलपासको, जो उन्हें अब अपनी मण्डलीमें न रखना चाहते थे, सलाम करनेके बाद होरेस प्रिन्सकी ओर घूमे और प्रिन्सने अपने स्वाभाविक अनुरागके साथ उनसे हाथ मिलाया। मार्क्विस-लेवेसन और डगलास हण्टिङ्गडनने भी उसी प्रकारसे उनका सम्मान किया, परन्तु अर्ल कर्जन केवल दुःखित और लज्जित ही नहीं हुए, बल्कि बोलते समय क्रोधसे उनके ओंठ भी काँपने लगे। ऐसा मालूम होता था, मानो सेकविलने उनको अवस्थापर ध्यान ही नहीं दिया, क्योंकि वह तुरत ही अन्य मनुष्योंकी ओर घूमकर, बिना किसी प्रकारकी घबराहट और चिन्ताके, आज दिनमें घटी हुई घटनाके सम्बन्धमें बातें करने लगे।

कुछ ही मिनिट बाद नौकरने आकर कहा, कि भोजन तय्यार है और साथही यह मण्डली उस कमरेसे उठकर, भोजवाले कमरेमें जा पहुँची।

भोजनके सभी सामान ठीक वैसे ही उत्तम, रुचिकर तथा स्वादिष्ट थे, जैसे इस मण्डलीने लार्ड लेवेसनके यहाँ खाये थे। शराब बहुत ही बढ़िया थी तथा भोजनके अन्तमें खानेवाले फल भी भोजनानुरागिणी इस मण्डलीकी रुचिके अनुकूल ही थे। भोजनके समय न तो किसीने उस भोजमें एकत्र होनेके विषयमें एक शब्द ही मुँहसे निकाला और न किसी प्रकारका ऐसा कार्य या

इशारा ही किया, जिससे कि इस मण्डलीके एकत्र होनेका कारण प्रकट होता, बल्कि अन्यान्य विषयों पर ही बातें होती रहीं। इस लिये सभी अपने अपने मनमें यही विचारते थे, कि जबतक बातों का रुख दूसरी ओर न बदलें, तबतक उनके हृदयपर एक प्रकारका बोझा ही बना रहेगा। कर्नल मलपासने अपनेको प्रसन्न दिखानेके लिये बहुत शराब पी ली परन्तु इतनेपर भी ज्यों ज्यों इस नाटकके अङ्कोंका पर्दा उठनेका समय निकट आता गया, त्यों त्यों वे वास्तवमें अधिकतर दुर्बल और चिन्तित होते गये।

अन्तमें भोजनसे बचा हुआ जूठा सामान उठा लिया गया और टेबिलपर फल चुन दिये गये तथा सब नौकर-चाकर उस कमरे से चले गये।

संध्याके आठ बजा ही चाहते थे। इसी समय उस मकानका खानसामा ग्रमष्टेड सदर दरवाजा खोल, हाथमें लालटेन ले, ग्रेट मार्लबोरो स्ट्रीट की ओर देखने लगा। इसके कुछ ही मिनट बाद उस मकानसे कुछ दूरीपर, तीन मनुष्य गाडीसे उतर पड़े और गाड़ीको ठहरानेकी आज्ञा दे, उसी मकानके दरवाजेपर जा पहुंचे; जहां हाथमें लालटेन लिये वह खानसामा खड़ा था।

ये तीनों मनुष्य विनीग्रिया, कप्तान टेग्र तथा उसका नौकर राबिन थे।

विनीग्रिया बहुतही भड़कीली पोशाक पहने हुई थी और बड़ी ही मनोहारिणी सुन्दरी दिखाई देती थी। मालूम होता था, कि विवाहने उसे और भी सुन्दर बना दिया है। कप्तान टेग्र सन्ध्याकी बढ़िया पोशाक पहने हुए था। कोट, सफेद जाकिट और बढ़िया नेकटाई, उसके शरीर पर शोभा दे रही थी। यद्यपि सदाकी तरह इस समय भी उसकी दृष्टि क्रोधसे भरी थी, तथापि उसके चेहरे पर अत्यन्त जल्दबाजी झलक रही थी। राबिन भी साफ सुथरी

पोशाक पहने हुए था और उसके बटनपर नेपोलियनके समान बैंगनी लबादा, पड़ा रहने पर भी, उसकी चमकती हुई चाल और चोरोंके समान तीव्र दृष्टि उसकी वास्तविक पदमर्य्यादा प्रकट कर रही थी।

विनोशिया और उसके साथियोंको सीढ़ी पर चढ़ते देख, अपने अभ्यासके अनुसार ओठोंपर उंगली रखकर, वह खानसामा मन ही मन बोला,—"हां हां, यह ठीक है। सेकविलने इन लोगोंके आनेकी सूचना मुझे पहले ही दे दी थी—वास्तवमें वह बड़ाही सज्जन है। वह उस तरह अपने खानसामाको अढ़ाई वर्षकी तनख्वाह नहीं दबाये बैठा है, जैसा कि मेरा मालिक।"

अपने मालिकपर इतना आक्षेप करने बाद कुछ शान्त होकर ग्रमष्टेडने उन तीनोंको मकानके भीतर पहुंचा, सदर दरवाजा बन्द कर दिया। इसके बाद विनोशियाकी ओर बढ़कर बोला,—"अब मुझे क्या आज्ञा होती है? मिष्टर सेकविलने मेरे लिये भी अच्छा समझा किया—"

विनोशिया,—"उन्होंने तुम्हें अपने यहां नौकर रखनेका वादा किया है न?"

ग्रमष्टेड बोला,—"हां उन्होंने यही कहा है, इसीलिये तो मैं भी आपको अपनी मालकिन समझता हूं।"

इतना सुनते ही विनोशियाने पूछा,—"अच्छा, क्या तुम भोजवाले कमरेका दरवाजा थोड़ा खुला छोड़ सकते हो, जिसमें कि मैं सुन सकूं, कि वहां क्या बातें हो रही हैं?"

ग्रमष्टेडने कहा,—"अवश्य! आप कृपाकर यहां चुपचाप खड़ी रहें। भोजवाले कमरेसे किसीके बाहर निकलनेका जरा भी डर नहीं है और यदि कोई दूसरा नौकर आपको इस कमरेमें देख लेगा, तो वह एक शब्द भी न बोलेगा। मैंने इस विषयमें उन्हें पहले ही समझा दिया है।"

इतना कहकर प्लमष्टेड उस बड़े कमरेमें रखे हुए टेबिलकी ओर इस विचारसे देखने लगा, कि भोजवाले कमरेमें घुसनेका कोई बहाना मिल जाय। इसके बाद उसने एक सुराहीमें ठण्ढा पानी भरा और खानसामोंकी तरह अपने गलेमें रूमाल बांध, उस सुराही को लेकर, भोजके कमरेमें चला गया। ज्योंही उसने वह सुराही टेबिलपर रखी; त्योंही कर्नल मलपास उसकी ओर देखते हुए बोले,—"जब तक मैं घण्टी न बजाऊं, तबतक तुम इस कमरेमें न आओ।"

"बहुत अच्छा, हुजूर!" कहकर, एक पर्दा गिरानेके बहाने प्लमष्टेड कुछ क्षण तक उस कमरेमें खड़ा रहा। इस समय उसने ऐसा भाव दिखाया, मानो वह दरवाजेमें पर्दा गिराया चाहता है, परन्तु वास्तवमें उसका उद्देश्य दरवाजेको वहां बैठे हुए मनुष्यों की दृष्टिसे छिपा देना था।

इसके बाद उसने कमरेसे बाहर निकल कर, किवाड़ोंसे ऐसी आवाज निकाली मानो दरवाजा बन्द ही हो गया हो, परन्तु वास्तव में उसने दरवाजा इस ढगसे बन्द किया, कि उसमें जरासी दरार रह गई और विनीफ्रिया कप्तान टैश तथा राबिन उस बड़े कमरेमें खड़े हो वे सभी बातें सुनने लगी जो भोजवाले कमरेमें हो रही थीं।

कर्नल मलपासके लिये अब वह कठिन समय आ पहुंचा, जब उन्हें अपनी कार्रवाईका वह विचित्र ढग सभों को कहना पड़ता, जो उन्होंने पहलेसे ही स्थिर कर रखा था और जब वहां बैठे हुए मनुष्यों को यह मालूम हुआ, कि वे अब उठकर कुछ कहना ही चाहते हैं, तब सभोंका ध्यान उनके चेहरे पर जा जमा।

शराबका एक गिलास खाली करते हुए कर्नल मलपास उठकर कहने लगे,—"राजकुमार, लार्ड तथा अन्य सज्जनगण! उस सभामें जिसका प्रधान कार्य्यकर्त्ता मैं ही हूं, मेरा सभापति बनना अच्छा

नहीं मालूम होता। इसलिये मेरा प्रस्ताव है, कि हमारे माननीय खजाञ्ची मार्क्विस आफ लेवेसन इस सभाके सभापति बनें।"

तुरतही प्रिन्सने कहा,—"बहुत ही सुन्दर प्रस्ताव है। मैं समझता हूँ, कि इस प्रस्तावमें सभी सहमत होंगे। बहुत ही अच्छी बात है। लेवेसन! आओ और यह कुर्सी ग्रहण करो।"

इतना सुनते ही कर्नल मलपासने अपनी वह कुर्सी, जो टेबिलके बीचोबीच रखी हुई थी, छोड दी और उस कुर्सी पर जा बैठे, जिस पर मार्क्विस लेवेसन पहले बैठे हुए थे और जो प्रिन्स की कुर्सीकी बगलमें रखी हुई थी।

अब लार्ड लेवेसनने अपनी जेबसे नोटबुक खींच, और उसमें रखे हुए हजार हजार रुपयोंके छः किता नोटोंको बाहर निकाल कर, उन्हें गिनते हुए, तथा फिर उनपर अशर्फियोंसे भरी थैली रखते हुए कहा,—"यह छः हजार अशर्फियाँ हैं, जिनका खजाञ्ची मैं बनाया गया था और जिन्हें मैं उस भाग्यवान पुरुषको देनेके लिये तय्यार हूँ, जो अपना अधिकार और वह पद बता देगा,—जिसके पानेके विषयमें यह इनाम स्थिर हुआ था। परन्तु इस सभाके सभापति की हैसियतसे मैं यह कह देना उचित समझता हूँ, और मुझे आशा है, कि इस सभाकी कार्रवाइयां बडी ही नम्रता और शिष्टतासे की जायँगी और चाहे कुछ भी कहा जाय, सभी शान्त भाव धारण करके सुनेंगे।"

इसपर भ्रष्टचरित्र सर डगलास हण्टिङ्गडनने कहा,—"इस न्यायपूर्ण आज्ञाके अनुमोदनके लिये एक एक भरपूर गिलास चाहिये।"

इसके बाद लगातार छः गिलास शराबसे भरे और खाली किये गये और जब यह काम समाप्त हो चुका,तब मार्क्विस लेवेसन फिर लगे,—"यह मेरे लिये बडा ही दुखदाई कार्य्य है, कि मुझे

माननीय नवयुवक मित्र मिष्टर सेकविलसे पूछना पड़ता है, कि उस नवयौवना सुन्दरी के पतिकी हैसियतसे, जिसका नाम लेना व्यर्थ है, और जिसकी मनोहर मूर्त्ति हमलोगोंके हृदयमें बसी हुई है, उन्हें कुछ कहना है या हमलोग अपना कार्य्य आरम्भ करें?"

इसपर होरेसने दृढ़स्वरमें कहा,—"इस समय मुझे एक ही प्रस्ताव करना है और वह प्रस्ताव यह है, कि आप सब नाम उसी क्रमसे बोलें; जिस क्रमसे कि दिन स्थिर किये गये थे और सभी हां या नहीं, इन्हीं दो शब्दोंमें उस स्त्रीके सम्मानार्थ उत्तर दें तथा विशेष बात न बढ़ायें।"

मार्क्विस लेवेसनने कहा—"ऐसा ही होगा। मैं समझता हूं, कि यह उत्तम प्रस्ताव है। क्रमके अनुसार ही नाम लिये जायँगे।—

सोमवार—अर्ल कर्जन।

मंगलवार—सर डगलास हण्टिङ्गडन।

बुधवार—कर्नल मलपास।

गुरुवार—प्रिन्स रीजेण्ट।

शुक्रवार—मार्क्विस लेवेसन।

शनिवार—मिष्टर सेकविल।

अब इसी क्रमके अनुसार मैं कहता हूं, कि अर्ल कर्जन पहले बोलें।"

अर्ल कर्जनने कहा,—"मैं सरल और अकपट भावसे कहता हूं, कि मैं इस कार्य्यमें सफल मनोरथ न हुआ।"

मार्क्विस लेवेसनने कहा,—"सर डगलास हण्टिङ्गडन?"

सर डगलास हण्टिङ्गडन बोले,—"मुझे भी वैसीही सरलता तथा अकपटतासे कहना पड़ता है, कि मैं भी लार्ड कर्जनके समान ही सफलता न प्राप्त कर सका।"

मार्क्विस लेवेसनने कहा,—"कर्नल मलपास।"

यह सुन कर्नल मलपास उठ खडे हुए और ऐसे स्वरमें कहने लगे जिससे मालूम होता था, कि निराशामें वे आशाका संचार कर रहे हैं,—"मेरे लार्ड। यद्यपि मेरा कथन यहां उपस्थित रहनेवाले मेरे किसी मित्रको मतविकार हो सकता है, तथापि उस कार्य्यकी विचित्रतापर ध्यान देकर, जिसका समय भोजनके बाद स्थिर हुआ था, मुझे कुछ कहना पड़ता है, परन्तु साथ ही मैं आशा करता हूं, कि इससे हम लोगोंकी उस मित्रतामें किसी प्रकारसे बट्टा न लगेगा, जो बहुत दिनोंसे चली आती है। मैं यह कहनेके लिये बाध्य हूं और मैं दावेके साथ कहता हूं, कि मेरे कार्य्यके परिणामने इस मण्डलीके सब मनुष्योंमें मुझे ही अधिक भाग्यशाली बनाया है।"

इतना कहकर कर्नल मलपास अपनी कुर्सीपर बैठ गये और तुरत ही एक गिलासमें शराब ढालकर चढा गये।

हौरेस सैकविल, जिनका चेहरा इस समय सङ्गमरमरकी भांति सफेद हो रहा था, परन्तु जिनकी आवाजमें दृढ़ता कूट कूटकर भरी हुई थी, बोले—"सब लोगोंका नाम पुकारा जाना चाहिये।"

मार्क्विस लेवेसन,—"हां हां, ऐसा ही होगा, प्रिन्स रीजेण्ट!"

प्रिन्स रीजेण्ट,—"इस समय मैं अपनी पद-मर्य्यादाका ध्यान छोड़, साधारण पुरुषोंकी भांति सत्यतापूर्वक कहता हूं, कि मैं उस स्त्रीके प्रेमपर विजय पानेका जरा भी गर्व्व नहीं कर सकता।"

इतना सुनते ही अर्ल कर्जन और सर डगलास हण्टिङ्गडनने तेजीसे आंखें मिलाईं और प्रिन्सकी इस बातपर उन्हें बड़ा ही आश्चर्य्य हुआ। साथही दोनोंने मन ही मन विचारा, कि कप्तान टेशने उन्हें धोखा दिया है और झूठ ही कह दिया है, कि विनी-शिया कार्लटन प्रासादमें गई थी।

मार्क्विस लेवेसनने फिर उठकर कहा,—"अब मेरी बारी है और मैं भी इसके अतिरिक्त और कुछ नहीं कह सकता, जो कि प्रिन्स

महोदयने कहा है। (कुछ क्षण ठहर कर मुस्कुराते हुए) मिष्टर सेकविल! अब मैं तुम्हारा नाम लेना चाहता हूं।"

होरेसने कहा,—"अवश्य, और मैं गर्वके साथ कहता हूं, कि मैंने विनोशियासे विवाह करके उसपर विजय प्राप्त की है। अब वह मेरी अर्धाङ्गिनी है, परन्तु यदि कर्नल मलपास यह प्रमाणित कर दें कि जिस स्त्रीसे मैंने विवाह किया है; उसका प्रेम, वे मुझसे विवाह होनेके पहले ही प्राप्त कर चुके हैं, तो कैसी भी विचित्र अवस्था क्यों न उत्पन्न हो जाय, मैं उनसे कभी अप्रसन्न न होऊँगा। आज जिस कार्य्यके लिये यह भोज हुआ है और इस प्रेम-रहस्यसे मेरा जो सम्बन्ध है, अथवा जिस तरह मैंने उस स्त्रीसे विवाह कर लिया है, जिसके लिये इतने काण्ड रचे गये थे, उससे सम्भव है, कि यहां मनोमालिन्य उपस्थित हो जाय। इसीलिये मैं अनुरोध करता हूं, कि कर्नल मलपास मेरी स्त्रीके सम्मानमें बट्टा लगानेके लिये तब तक न खड़े हों, जबतक कि अपनी बातोंका उनके पास कोई जबर्दस्त प्रमाण न हो और इसी तरह मैं यह भी आशा करता हूं, कि आप भी इस घटनाको पहले भोजवाली घटनाके समान, साधारण घटना न समझ लेंगे, बल्कि सब बातोंपर उसी तरह गम्भीरता और दृढ़तासे विचार करेंगे, जिस तरह कि एक विचारक या सम्माननीय पुरुष विचार करते हैं।"

होरेस सेकविलकी इस मर्मभरी तथा प्रभावशालिनी बातोंका उन सभोंपर गहरा प्रभाव पड़ा जो वहां उपस्थित थे। अर्ल कर्जनका हृदय अब शराबके नशेमें उन्मत्त हो उठा था। वे तुरत ही बोल उठे,—"सेकविल! तुम्हारे साथ पूरा न्याय किया जायगा।"

यही बात प्रिन्स रोजेगड, मार्क्विस लेवेसन और सर डगलास हण्टिङ्गडनने भी कही; परन्तु भग्न-हृदय कर्नल मलपास कुछ बोलनेके बदले तीन गिलास शराब और भी चढ़ा गये।

कभी कभी बुरी अवस्थामें पड़ कर जब मनुष्य देखता है, कि अब उसके सम्मानमें,बट्टा लगना चाहता है,तब एक प्रकारका साहस उसके हृदयमें उत्पन्न हो जाता है। इस बार उसी प्रकारके साहसके वशीभूत होकर, कर्नेल मलपास बड़ी गम्भीरतासे अपनी जगहसे उठ खड़े हुए और इस तरह कहने लगे:—

"अभीतक जो बातें मैंने कही हैं, वे बहुत समझ बूझकर और संक्षेपमें ही कही हैं, क्योंकि हमलोग यहां एक सुन्दरी स्त्रीके सम्मानके विषयमें बातें कर रहे हैं,और वह भी उस मनुष्यके सामने, जिसने कि थोड़े ही दिन हुए उससे विवाह किया है। अब फिर मैं जो कुछ कहना चाहता हूं, वह भी संक्षेपमें ही कहूंगा। मैं इस विषयको मिष्टर सेकविलके सामने विस्तार पूर्वक वर्णन नहीं किया चाहता, क्योंकि वे कुछ उत्तेजितसे मालूम होते हैं , परन्तु इतना कहे बिना भी मुझसे रहा नहीं जाता, कि मिष्टर सेकविल, इस समय यदि कुछ कलेजा हिलानेवालीबातें भी सुनें, तो उन्हें बुरा न मानना चाहिये।"

इतना कहकर वे कुछ देरके लिये चुप रह गये। इस समय उस भोजमें उपस्थित सभी पुरुषोंने एकबार फिर सेकविलके चेहरेकी ओर देखा और उन्हें स्पष्ट मालूम होगया, कि इस वक्त सेकविलके हृदयमें बड़ा कष्ट होरहा है और वे बड़ी कोशिशसे अपनेको शान्त बनाये बैठे हैं। उनका चेहरा ऐसा घबड़ाया हुआ था, जैसा कि ज्वरमें पड़े हुए रोगीका रहता है। वहां बैठे हुए मनुष्योंको वे घूर घूरकर उन आंखोंसे देख रहे थे, जिनमें अस्वाभाविक चमक मालूम होती थी और उनके ओठ बेतरह कांप रहे थे। उनका समूचा शरीर उस समय इस तरह हिल रहा था, जिस तरह वायुके झोंकेसे वृक्ष कांपने लगते हैं, और उनकी अवस्था ठीक उस ज्वालामुखी पर्वतके समान हो रही थी, जो फूटा नहीं हो , परन्तु जिसमें इतनी गर्मी भर गई हो,कि वह फूटनाही चाहता हो।

कुछ क्षण बाद सैकविलको इस अवस्थाको देखकर मनही मन प्रसन्न होते हुए कर्नेल मलपासने कहा,—"आपलोग जानते हैं, कि इस प्रेम-युद्धके लिये बुधवार ही मुझे दिया गया था। इसके एक दिन पहले ही मैं अचानक किउ नामक स्थानमें लेडी वेनलौकके यहां जा पहुंचा और बातों ही बातोंमें उन्होंने कहा, कि कल संध्या को मेरे यहां एक जलसा होनेवाला है, जिसमें वर्त्तमान समय की परमा सुन्दरी मिस विनीफ्रिया ट्रिलौनो (विवाहके पहले उसका यही नाम था) भी सम्मिलित होनेवाली हैं। मुझे भी पहलेसे ही निमन्त्रण मिला हुआ था और इसीलिये मैंने भी उस जलसेमें शरीक होना उचित समझा। बुधवारको सवेरे ही अचानक मिष्टर सैकविलसे भी मेरी भेंट होगई और उसी समय मैंने उनसे कह दिया, कि मिस ट्रिलौनोसे मिलनेके लिये मैं उस जलसेमें जाऊंगा। मैं समझता हूं, कि मिष्टर सैकविलको ये बातें स्मरण भी होंगी।"

इसपर उदासीन भावसे हौरेस सैकविलने कहा,—"हां, अच्छी तरह स्मरण हैं।"

कर्नेल मलपास फिर कहने लगे,—"मैं उस जलसेमें गया और मुझे अपनी इच्छानुसार मिस ट्रिलौनोसे परिचय करनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ, क्योंकि वे उस समय वहीं थीं। विशेष कहनेकी आवश्यकता नहीं है—इतना ही कह देना यथेष्ट है, कि हमलोग वहां बहुत देरतक एकान्त स्थानमें घूमते रहे, क्योंकि उस समय मिस ट्रिलौनीकी साथिनें, मिसेज और मिस आरबुथनाट उनसे बहुत दूर दूसरी ही ओर घूम रही थीं। बस इतनेसे ही मेरा मामला तय हो गया और मिस ट्रिलौनोने शुक्रवार—आगामी शुक्रवारको मेरे कहे हुए स्थानपर ही मुझसे मिलनेका वचन दिया।"

अब मिन्सससे सैजोके साथ आंखें मिलाते हुए मार्किस लेवेसन तुरत ही बोल उठे,—"शुक्रवारको सन्ध्याको ?"

मलपासने कहा,—"हां, शुक्रवारको संध्याको और मिष्टर सैक बसे विवाह होनेके पहले हो, क्योंकि यह विवाह उसके बादवाले बुधवारको हुआ है। बस, अब एक शब्द ही काफी होगा कि मिस ट्रिलीनो सोहोस्कोयरको रहनेवाली मिसेस गेलके मकान पर मुझसे मिलीं—"

मार्क्विस लेवेसनने बीचमें ही पूछा,—"के बजे तुमसे मिलीं ?"

मलपासने कहा,—"ठीक नौ बजे।"

अब एकबार फिर आश्चर्यसे मिन्सकी ओर देख कर लेवेसनने पूछा,—"और मिसेस गेलके मकान पर वे कितनी देर तक तुम्हारे साथ रहीं ? (अपनी पाकेटबुकमें लिखते हुए) हमलोगोंको सब बातें ठीक ठीक मालूम होनी चाहियें और उन्हें लिख रखना भी आवश्यक है।"

मलपासने कहा,—"मिस ट्रिलीनो रात नौ बजेसे ग्यारह बजे तक मेरे पास रही।"

मार्क्विस लेवेसनने पूछा,—"और इसका प्रमाण ?"

इसपर कर्नल मलपासने मार्क्विस लेवेसनके हाथमें एक लपेटा हुआ कागज देते हुए कहा,—"मिसेस गीलकी चिट्ठी तय्यार है, यह लीजिये। बस अब मुझे विशेष कुछ कहना नहीं है।" इतना कहकर वे अपनी कुर्सीपर बैठ गये।

मार्क्विस लेवेसनने वह कागज खोला और उस समय उनके आश्चर्यका वारापार न रहा, जब उन्होंने मिसेज गीलकी वह लिखावट देखी, जिससे कि वे भलीभांति परिचित थे। उन्होंने समझा था, कि यह पत्र जाली होगा, परन्तु अब उन्हें इस बातमें जरा भी सन्देह न रह गया, कि यह पत्र सच्चा है, सम्भव है, कि इसमें लिखी घटनाएं सत्य न हों।

इसीलिये उन्होंने कहा,—"मैं उसके अक्षर पहचानता हूं और

कह सकता हूं, कि यह पत्र मिसेज गेलके हाथका ही लिखा हुआ है।"

इसके बाद उन्होंने वह पत्र पढ़ा, जिसमें लिखा था,—"कर्नल मलपास और मिस विनीशिया ट्रिलोनो गत शुक्रवार, २० सितम्बर १८१४ ई० की रात्रिके नौ बजे से ग्यारह बजेतक मेरे ही मकानपर एक साथ रहे।"

कर्नल मलपासको अब विश्वास हो गया, कि उन्होंने बाजी मार ली, परन्तु होरेस सेकविल चुपचाप निश्चिन्त भावसे बैठे रहे। इस समय भी यही मालूम होता था, कि ज्वरके कारण उनका सारा शरीर कांप रहा है।

मार्किस लेविसन और प्रिन्सने एकबार फिर आश्चर्यसे आंखें मिलाईं। इस समय ऐसा मालूम होता था, मानों वे इस विषय पर विचार कर रहे हैं, कि अब क्या उपाय करना चाहिये और उनके पास ऐसा कोई सामान है या नहीं, जिससे वे सभीके विचारको आश्चर्यमें परिणत कर दे सकते हैं। कुछ क्षण बाद सर डगलास हण्टिङ्गडनने अर्ल कर्जनसे धीरेसे कहा,—"देखते हो, बदमाश टेंशने हमलोगोंको किस तरह धोखा दिया है।"

परन्तु इसी समय एकाएक कमरेका दरवाजा इतने जोरसे खुल गया, कि वहां बैठे हुए सब मनुष्य घबड़ा उठे और कप्तान टेंशको साथ लिये विनीशिया झपटती हुई, उस कमरेमें घुस आई। राबिन उसके साथ नहीं था, वह किसी ऐसे कामके लिये भेज दिया गया था, जिसका पता आगे चलकर लगेगा।

ओह! विनीशियाकी इस समयकी सुन्दरताके आगे संसारके यावत पदार्थ तुच्छ थे।

उस अलौकिक सुन्दरी को देखतेही सेकविलके अतिरिक्त सबलोग घबड़ा कर उठ खड़े हुए, परन्तु सेकविल धीरे धीरे बड़े शान्तभावसे

उठे, मानो उनके कार्य्यमें अब एक बड़ी सहायता पहुंच गई हो। अब उनके चेहरेका भाव भी बदल गया और उसपर पिलाईके बदले लाली मालूम होने लगी। परन्तु इसके विपरीत कर्नल मलपासके चेहरे पर पाप तथा कादरताके लक्षण इस तरह दिखाई देने लगे, जिस तरह सफ़ेद कागज पर छपे हुए काले अक्षर दिखाई देते हैं।

भीतर घुसतेही दृढ़ परन्तु उसी सुरीली, एक सुन्दरीके हृदयसे निकली हुई, मधुर आवाज में विनोशियाने कहा,—"मेरे राजकुमार, लार्ड तथा अन्य सज्जनगण! आपने मुझपर लगाये हुए झूठे दोष सुन लिये हैं, अब उनका उत्तर सुनकर न्याय कीजिये।"

प्रिन्स रीजेण्टने कहा,—"अवश्य (लेवेसन की ओर देखकर) मेरे लार्ड। इस सुन्दरीके विषयमें आपने चाहे जो कुछ सुना हो, परन्तु इसका न्याय अवश्य होना चाहिये। आप इस सभाके सभापति हैं और मैं समझता हूँ, कि आप अपना कर्त्तव्य अवश्य पालन करेंगे।"

विनोशियाकी रानियों जैसी सुन्दरता देखकर लेवेसन इतना भकभका गये थे, कि वे यह भी भूल गये, कि वे कहाँ बैठे हुए हैं और इस सभाके सभापति बने हुए हैं तथा इस स्त्रीके विषयमें बहुतसी बातें पहले कही जा चुकी हैं। बल्कि वे उस परमा सुन्दरीके लिये सब कुछ करनेको तय्यार हो गये। उन्होंने बड़ी तेजीसे कहा,—"बेशक, बेशक, अच्छा, अब आपलोग बैठ जायें। हौरेस! अपनी स्त्रीको बैठनेके लिये एक कुर्सी दो और कप्तान टेश—"

परन्तु वह बहादुर जवान पहलेसे ही एक कुर्सीपर बैठ गया था और मार्किसके कुछ कहनेके पहले ही उसने शराबके प्यालेकी ओर अपना हाथ बढ़ा दिया था। कप्तान टेशने धीरे धीरे रोटी और फलभरी कई तश्तरियां अपने पास खींच लीं और इस तरह स्वच्छन्दतासे खाने और शराब पीने लगा, मानो वह उसका अपना ही मकान हो, बल्कि उसने कहा,—"हां, मेरे लार्ड! अब आपलोग अपना

काम शुरू कीजिये। मैं जब किसी काममें लगा रहता हूं, तब और भी अच्छी तरह सब बातें सुन सकता हूं।"

मलपासने अपनेको शान्त दिखानेकी एक बार फिर असिम चेष्टा की और अपने शत्रु कप्तान टेमको सम्बोधन करते हुए कहा,—"इसे भी अपना ही घर समझो और शराबका भी आनन्द लूटो।"

मार्किस लेवेसनने कहा,—"मिसेस सेकविल, हमलोग तुम्हारी बातें सुननेके लिये तय्यार हैं।"

विनीशिया बोली,—"मुझे इसके अतिरिक्त और कुछ कहना नहीं है, कि कर्नल मलपासने जो जो झूठे दोष लगाकर मेरा अपमान किया है, उसकी अपराधिनी मैं नहीं हूं। मेरे पति भी मेरी बातोंका समर्थन करेंगे।"

हौरेस सेकविलने कहा,—"अब सबसे पहले मैं कप्तान टेमसे प्रार्थना करता हूं, कि लेडी वेनलौकके मकानपर, कर्नल मलपास और मेरी स्त्रीकी मुलाकात के सम्बन्धमें, वे जो कुछ जानते हैं, सब सच कह डालें।"

इसपर बहादुर टेमने एक बड़े गिलासमें शराब भरते हुए; क्योंकि प्यालोंसे उसकी तृप्ति नहीं होती थी, कहा,—"कर्नल मलपासकी कही हुई, बुधवारकी रातकी ही, क्योंकि मैं दरवाजेसे सट कर खड़ा सब बातें सुन रहा था, अपने स्वामिभक्त नौकर राबिनके साथ मैं लेडी वेनलौकके बागकी झाड़ियोंमें छिपा बैठा था। हमलोग वहां क्यों बैठे थे, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है। (लार्ड कर्जन और सर डगलास हपिटङ्गडनकी ओर देखते हुए) इतना ही कहना काफी है, कि हमलोग वहां छिपे थे। यह सत्य है, कि मिसेस आरबुथनाट और उनकी लड़की, दोनोंही मिस ट्रिलौनीसे, जो इस समय मिसेस सेकविल हैं, बहुत आगे टहल रही थीं। उस समय मिस ट्रिलौनीने कर्नल मलपासकी कही हुई गन्दी बातोंके लिये उनसे घृणा, अनादर

अपमान और अवज्ञापूर्ण व्यवहार किया था। कर्नल मलपासने उस समय इनसे उस षडयन्त्रके विषयमें भी कहा था, जो मिस ट्रिलोनीके लिये रचा गया था। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया था, कि उनके कई अन्तरङ्ग मित्र भी इसमें सम्मिलित हैं। बल्कि उन्होंने यहांतक कह दिया था, कि कुछ नीच और कामी मनुष्योंने तुम्हारे लिये बाजी लगाई है। इसी समय उन्हें भाड़ीमें कुछ खड़खड़ाहट मालूम हुई और वे चौंक उठे। आह ! वेउस समय नहीं जानते थे, कि कप्तान टेश (इतना कहकर उसने बड़ी ही भयानक दृष्टिसे पोले, काँपते हुए और वाक्यशून्य कर्नल मलपासकी ओर देखा) उल्लूकी भाँति भाड़ीमें छिपा बैठा है।"

इतना कहकर वह बहादुर चुप हो गया और फिर एक बड़े गिलासमें शराब भरकर चढा गया।

इसके बाद फिर मार्क्विसकी ओर देखकर बोला,—"अच्छा, मेरे लार्ड ! अब और भी सुनिये। कर्नलने मिस ट्रिलोनीको बहुत तरहसे डराया धमकाया। उनकी गन्दी बातें सुनकर, तेलसे तर और घुंघराले रहने पर भी मेरे बाल खड़े हो गये। उन्होंने यहांतक कह दिया, कि यदि तू मेरी बात न मानेगी तो सब तरहसे तुझे कष्ट पहुंचाऊँगा, तेरे मान सम्मानका नाश कर दूंगा, सभोंसे कह दूंगा, कि तू मेरी रखनी है और अपनी बातोंके प्रमाणमें आवश्यकता पड़नेपर जाली चिट्ठियां तक पेशकर दूँगा। इन बातोंपर विचार करनेके लिये कर्नल मलपासने उन्हें दो सप्ताहका समय—"

टेबिलके चारों ओर देखते हुए मार्क्विस लेवेसनने कहा,—"बस बस ! इतना ही बहुत है। मैं नहीं चाहता, कि इन बातोंका पुनरुल्लेख कर मिसेस सेकविलके कानोंको कष्ट पहुँचाया जावे।"

यह सुन क्रोधसे लाल होकर प्रिन्स रोजेण्टने कहा,—"कदापि

काम शुरू कीजिये। मैं जब किसी काममें लगा रहता हूं, तब और भी अच्छी तरह सब बातें सुन सकता हूं।"

मलपासने अपनेको शान्त दिखानेकी एक बार फिर चेष्टा की और अपने शत्रु कप्तान टेशको सम्बोधन करते हुए कहा,—"इसे भी अपना ही घर समझो और शराबका भी आनन्द लूटो।"

मार्किस लेवेसनने कहा,—"मिसेस सैकविल, हमलोग तुम्हारी बातें सुननेके लिये तय्यार हैं।"

विनोशिया बोली,—"मुझे इसके अतिरिक्त और कुछ कहना नहीं है, कि कर्नल मलपासने जो जो झूठे दोष लगाकर मेरा अपमान किया है, उसकी अपराधिनी मैं नहीं हूं। मेरे पति भी मेरी बातोंका समर्थन करेंगे।"

हौरेस सैकविलने कहा,—"अब सबसे पहले मैं कप्तान टेशसे प्रार्थना करता हूं, कि लेडी वेनलौकके मकानपर, कर्नल मलपास और मेरी स्त्रीकी मुलाक़ात के सम्बन्धमें, वे जो कुछ जानते हैं, सच सच कह डालें।"

इसपर बहादुर टेशने एक बड़े गिलासमें शराब भरते हुए, क्योंकि प्यालोंसे उसकी तृप्ति नहीं होती थी, कहा,—"कर्नल मलपासकी कही हुई, बुधवारकी रातकी हो, क्योंकि मैं दरवाजेसे सट कर खड़ा सब बातें सुन रहा था, अपने स्वामिभक्त नौकर राबिनके साथ मैं लेडी वेनलौकके बागकी झाड़ियोंमें छिपा बैठा था। हमलोग वहां क्यों बैठे थे, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है। (लार्ड कर्जन और सर डगलास ह्विटिङ्गडनकी ओर देखते हुए) इतना ही कहना काफी है, कि हमलोग वहां छिपे थे। यह सत्य है, कि मिसेस आरबुथनाट और उनकी लड़की, दोनोंही मिस ट्रिलौनीसे, जो इस समय मिसेस सैकविल हैं, बहुत आगे टहल रही थीं। उस समय मिस ट्रिलौनीने कर्नल मलपासकी कही हुई गन्दी बातोंके लिये उनसे घृणा, अनादर

अपमान और अवज्ञापूर्ण व्यवहार किया था। कर्नल मलपासने उस समय इनसे उस षड़यन्त्रके विषयमें भी कहा था,जो मिस ट्रिलोनीके लिये रचा गया था। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया था, कि उनके कई अन्तरङ्ग मित्र भी इसमें सम्मिलित हैं। बल्कि उन्होंने यहांतक कह दिया था, कि कुछ नीच और कामी मनुष्योंने तुम्हारे लिये बाजी लगाई है। इसी समय उन्हें झाड़ीमें कुछ खड़खड़ाहट मालूम हुई और वे चौंक उठे। आह! वेउस समय नहीं जानते थे, कि कप्तान टेम (इतना कहकर उसने बड़ी ही भयानक दृष्टिसे पीले, काँपते हुए और वाक्यशून्य कर्नल मलपासकी ओर देखा) उल्लूकी भाँति झाड़ीमें छिपा बैठा है।"

इतना कहकर वह बहादुर चुप हो गया और फिर एक बड़े गिलासमें शराब भरकर चढ़ा गया।

इसके बाद फिर मार्क्विसकी ओर देखकर बोला,—"अच्छा, मेरे लार्ड! अब और भी सुनिये। कर्नलने मिस ट्रिलोनीको बहुत तरहसे डराया धमकाया। उनकी गन्दी बातें सुनकर,तेलसे तर और घुंघराले रहने पर भी मेरे बाल खड़े हो गये। उन्होंने यहाँतक कह दिया, कि यदि तू मेरी बात न मानेगी तो सब तरहसे तुझे कष्ट पहुंचाऊँगा, तेरे मान सम्मानका नाश कर दूंगा, सभोंसे कह दूंगा, कि तू मेरी रखनी है और अपनी बातोंके प्रमाणमें आवश्यकता पड़नेपर जाली चिट्ठिया तक पेशकर दूंगा। इन बातोंपर विचार करनेके लिये कर्नल मलपासने उन्हें दो सप्ताहका समय—"

टेबिलके चारों ओर देखते हुए मार्क्विस लेवेसनने कहा,— "बस बस! इतना ही बहुत है। मैं नहीं चाहता, कि इन बातोंका पुनरुल्लेख कर मिसेस सेकविलके कानोंको कष्ट पहुँचाया जाये।"

यह सुन क्रोधसे लाल होकर प्रिन्स रीजेण्टने कहा,—"कदापि

काम शुरू कीजिये। मैं जब किसी काममें लगा रहता हूं, तब और भी अच्छी तरह सब बातें सुन सकता हूं।"

मलपासने अपनेको शान्त दिखानेकी एक बार फिर अन्तिम चेष्टा की और अपने शत्रु कप्तान टेम्पको सम्बोधन करते हुए कहा,—"इसे भी अपना ही घर समझो और शराबका भी आनन्द लूटो।"

मार्किस लेवेसनने कहा,—"मिसेस सैकविल, हमलोग तुम्हारी बातें सुननेके लिये तय्यार हैं।"

विनोश्रिया बोली,—"मुझे इसके अतिरिक्त और कुछ कहना नहीं है, कि कर्नल मलपासने जो जो झूठे दोष लगाकर मेरा अपमान किया है, उसकी अपराधिनी मैं नहीं हूं। मेरे पति भी मेरी बातोंका समर्थन करेंगे।"

हौरेस सैकविलने कहा,—"अब सबसे पहले मैं कप्तान टेम्पसे प्रार्थना करता हूं, कि लेडी बेनलीकके मकानपर, कर्नल मलपास और मेरी स्त्रीकी मुलाकात के सम्बन्धमें वे जो कुछ जानते हैं, सब सच कह डालें।"

इसपर बहादुर टेम्पने एक बड़े गिलासमें शराब भरते हुए, क्योंकि प्यालोंसे उसको तृप्ति नहीं होती थी, कहा,—"कर्नल मलपासकी कही हुई, बुधवारकी रातकी ही, क्योंकि मैं दरवाजेसे सट कर खड़ा सब बातें सुन रहा था, अपने स्वामिभक्त नौकर राबिनके साथ मैं लेडी बेनलीकके बागकी झाड़ियोंमें छिपा बैठा था। हमलोग वहां क्यों बैठे थे, यह बतानेकी आवश्यकता नहीं है। (लार्ड कर्जन और सर डगलास हपिटङ्गडनको ओर देखते हुए) इतना ही कहना काफी है, कि हमलोग वहां छिपे थे। यह सत्य है, कि मिसेस आरबुथनाट और उनकी लड़की, दोनोंही मिस ट्रिलौनीसे, जो इस समय मिसेस सैकविल हैं, बहुत आगे टहल रही थीं। उस समय मिस ट्रिलौनीने कर्नल मलपासकी कही हुई गन्दी बातोंके लिये उनसे घृणा, अनादर

अपमान और अवज्ञापूर्ण व्यवहार किया था। कर्नल मलपासने उस समय इनसे उस षड़यन्त्रके विषयमें भी कहा था, जो मिस ट्रिलो-नीके लिये रचा गया था। साथ ही उन्होंने यह भी कह दिया था, कि उनके कई अन्तरङ्ग मित्र भी इसमें सम्मिलित हैं। बल्कि उन्होंने यहांतक कह दिया था, कि कुछ नीच और कामी मनुष्योंने तुम्हारे लिये बाजी लगाई है। इसी समय उन्हें भाड़ीमें कुछ खड़खड़ाहट मालूम हुई और वे चौंक उठे। आह! वेउस समय नहीं जानते थे, कि कमान टेश (इतना कहकर उसने बड़ी ही भयानक दृष्टिसे पोले, कांपते हुए और वाक्यशून्य कर्नल मलपासकी ओर देखा) उल्लूकी भांति भाड़ीमें छिपा बैठा है।"

इतना कहकर वह बहादुर चुप हो गया और फिर एक बड़े गिलासमें शराब भरकर चढ़ा गया।

इसके बाद, फिर मार्क्विसकी ओर देखकर बोला,—"अच्छा, मेरे लार्ड! अब और भी सुनिये। कर्नलने मिस ट्रिलोनीको बहुत तरहसे डराया धमकाया। उनकी गन्दी बातें सुनकर, तेलसे तर और घुंघराले रहने पर भी मेरे बाल खड़े हो गये। उन्होंने यहांतक कह दिया, कि यदि तू मेरी बात न मानेगी तो सब तरहसे तुझे कष्ट पहुंचा-ऊंगा, तेरे मान सम्मानका नाश कर दूंगा, सभोंसे कह दूंगा, कि तू मेरी रखनी है और अपनी बातोंके प्रमाणमें आवश्यकता पड़नेपर जाली चिट्ठिया तक पेशकर दूंगा। इन बातोंपर विचार करनेके लिये कर्नल मलपासने उन्हें दो सप्ताहका समय—"

टेबिलके चारों ओर देखते हुए मार्क्विस लेवेसनने कहा,— "बस बस! इतना ही बहुत है। मैं नहीं चाहता, कि इन बातोंका पुनरुल्लेख कर मिसेस सेकविलके कानोंको कष्ट पहुंचाया जाये।"

यह सुन क्रोधसे लाल होकर प्रिन्स रीजेण्टने कहा,—"कदापि

नहीं, कदापि नहीं, कप्तान टेश। अब भले आदमियोंकी तरह बैठ जाओ, और खूब शराब उड़ाओ।"

गिलासमें शराब ढालकर पीते हुए टेशने कहा,—"हां हुजूर! यह तय्यार है; और क्योंकि मार्किस लेवेसन एक सुयोग्य सभापति है, अतः उनके स्वास्थ्यके लिये भी एक गिलास शराब पीता हूं (इतना कह, वह एक गिलास फिर चढ़ा गया) और चूँकि मेरे सामने एक मनोहारिणी स्त्री उपस्थित है, अतः उसके स्वास्थ्यके लिये भी एक गिलास पीना आवश्यक है, फिर चाहे जो हो। (फिर एक गिलासमें शराब ढालकर पीने बाद) और यह भी अच्छा नहीं होगा, कि आप सरीखे सज्जन पुरुषोंके स्वास्थ्यका प्याला मैं न पियूँ।" इतना कह वह एक गिलास और चढ़ा गया।

कब तक कप्तान टेश इसी तरह शराब पीता रहता, यह नहीं कहा जा सकता, परन्तु सोहोस्क्वेयरकी रहनेवाली मिसेस गीलके साथ राबिनके एकाएक आ जानेके कारण उसकी काममें बाधा पड़ी।

इस गुप्त मन्त्रणागृहमें आते ही मिसेस गील बहुत घबड़ा उठी। राबिनने भी तुरत ही आगे बढ़कर कप्तान टेशसे कहा, कि यदि मैं पुलिसकी तरह इसे पकड़ कर न ले आता तो यह कभी न आती। मिसेस गीलने बड़े संकोच और बहुत तरहसे क्षमा मांगते हुए कहा, कि कर्नल मलपासके बहुत कुछ अनुरोध करने और यह वादा करनेपर, कि आज ही मुझे वह रकम मिल जायगी, जो मैंने मलपासको उधार दी है, मैंने यह पत्र लिख दिया था। उसने यह भी कहा, कि यह पत्र उस तारीखका लिखा हुआ नहीं है, जो तारीख इसपर दी हुई है, बल्कि उसके कई दिन बाद यह पत्र लिखा गया है। साथ ही उसने यह भी कबूल किया, कि मिसेस मेकफिल आजतक उसके मकान पर कभी गई ही नहीं। इसके बाद उसे चले जानेकी आज्ञा मिली।

परन्तु अभी वह कमरेसे बाहर निकली ही थी, कि एकाएक दरबानने कमरेमें जाकर कर्नल मलपाससे कहा,—"एक बहुत जरूरी कामके लिये एक मनुष्य आपको बाहर बुला रहा है।"

यह सुन कर्नल मलपास उठ खड़े हुए। उन्हें उठते देख मार्किस मेसनने कहा,—"तुम जल्द ही लौट आना।"

कर्नलने बहुत ही धीमी आवाजमें कहा,—"अच्छा" और साथही ऐसी घबड़ाहटसे वे कमरेके बाहर निकल गये, मानो उन्हें फांसी चढ़नेकी ही आज्ञा मिली हो।

बड़े कमरेमें आते ही उन्हें दो ऐसे मनुष्य दिखाई दिये, जिनका चेहरा देखते ही वे पहचान गये, कि ये दोनों कौन हैं। उन दोनोंमेंसे एक हिब्रू जातिका मनुष्य था, जो एक छोटा कोट, घुटने तकका पायजामा और लम्बा बूट जूता पहने हुआ था। उसके गलेमें एक ऐसा रूमाल बंधा हुआ था, जिसमें कितनी ही आल्पीनें लगी हुई थीं और घड़ीकी जेबके ऊपर कई सुनहरे तमगे (पदक) झूल रहे थे! रेशमी रूमाल उसके कोटकी जेबसे आधा बाहर लटक रहा था। उसका साथी एक मजबूत, कद्दावर मगर अधिक उम्रका, फटे पुराने कपड़े पहने हुआ मनुष्य था। वह एक लम्बा और मोटा सफेद कोट, जिसके बड़े बड़े बटन ठीक सामनेकी ओर लगे हुए थे, तथा जिस पर शोकसूचक काली पट्टी लगी हुई थी, पहने हुए था। कर्नल मलपास उन मनुष्योंको देखते ही मारे क्रोधके अपने पैर पटकने लगे, परन्तु ज्योंही उन दोनोंमेंसे एकने आगे बढ़कर उनके हाथ पर एक अदालती परवाना रख दिया, त्यों ही वे घबड़ाकर पास ही रखी हुई एक कुर्सीपर ग्लानिमें भरकर बैठ गये।

अब उस मनुष्यने, जो वास्तव में अदालतका एक नाजिर था, उनकी यह अवस्था देखकर कहा,—"पाच हजार पाउण्डको

डिगरी है और ३ पाउण्ड खर्च। कुल पांच हजार तीन पाउण्ड हैं। मिष्टर इमरसनकी यह डिगरी है। मेरा नाम इकी—मोग्री इकी है और मेरा मकान फीटर लेनमें है। (अपने साथी प्यादे की ओर देखकर) दरवाजेपर होशियारीसे खड़े रहो।"

"नाजिरके प्यादेने कहा,—"बहुत अच्छा, हुजूर।" इतना कह वह दरवाजेके बीचमें जाकर खड़ा हो गया।

कप्तान टेशने, जो भोजनवाले कमरेसे झांककर बड़े कमरेमें होनेवाला काण्ड देख रहा था, मलपासकी दशा देख व्यङ्गसे कहा,—"बिजली और वज्रपात। कर्नल अब कैदखानेमें चले, परन्तु यहां भी उन्हें सजा दिये बिना न छोड़ देना चाहिये। (कर्नल मलपासपर झपट कर उनका गला पकड़ते हुए) ओ बदमाश। पाजी!! लुच्चे!!! मैं इस संसारके जितने पापी और चोरोंको जानता हूं, तू उन सबसे नीच है। इस लिये यह ले, वह ले, इधर ले।"

इस तरह अपने मुँहसे "यह ले, वह ले" कहता हुआ कप्तान टेश उन्हें लगातार घूँसे जमाता गया। इसके बाद उनको नाक पकड़ कमरेमें इधरसे उधर खींचते हुए, उसने उन्हें एक लात इतने जोरसे जमाई, कि वे दरवाजेके बाहर जा गिरे।

इस समय विनोशियाके अलावा और सभी मनुष्य उस बड़े कमरेमें निकल कर्नल मलपासकी यह दुर्दशा देख देख कर हँस रहे थे। जब मलपासकी दुर्दशा समाप्त हो गई और कप्तान टेशने उन्हें छोड़ दिया, तब वे सब फिर उसी भोजवाले कमरेमें अपने अपने स्थान पर जा बैठे। कप्तान टेश भी अपने स्थान पर जा बैठा और फल तथा शराब इस तरह आनन्दसे उड़ाने लगा, मानो कुछ हुआ ही नहीं है।

इसके बाद जब कर्नल मलपास, मोग्री इकी और उसके प्यादे टौमके साथ उस मकानके बाहर चले गये, तब मार्क्विस लेवेसनने

...हा,—"अब हमलोगों को शीघ्र ही अपना काम समाप्त कर इस ...ोच जुआचोरका मकान छोड़ देना चाहिये।"

इसी समय सैकविलने पूछा—"परन्तु राबिन कहा है?"

कप्तान टेशने कहा,—"वह क्या खड़ा है?" इतना सुनते ही ...भोंकी दृष्टि उधर ही घूम गई, जिधर उस बहादुर अफसरने ...शारा किया था और सभोंने देखा, कि खिड़कीके पर्देकी ओटसे राबिनकी नाक और उसके शरीरका कुछ अंश दिखाई दे रहा है।

बड़ी कठिनतासे उसने अपने स्थानको छोड़, बाहर निकल ...र थोड़ी शराब पीना स्वीकार किया और इतने पर भी जब सैकविलने एक गिलासमें शराब ढालकर उसे दी, तब तेजी से उसे गलेके नीचे उतार, वह फिर अपने स्थान पर जा छिपा और अब बिलकुल ही पर्देकी ओटमें हो गया।

मार्किस लेवेसनने कहा,—"हमलोगोंको मिसेस सैकविलके विषयमें जो कुछ सुनना था, सब सुन चुके और अब यदि किसी विशेष प्रमाणकी आवश्यकता है, तो वह मैं और स्वयं प्रिन्स भी ...े सकते हैं, क्योंकि शुक्रवारकी रातको, जिसके विषयमें उस जाल... ...ाज और धोखेबाजने अभी अभी कहा है,तथा जिसकी काफी सजा ...ी वह पा चुका है,रात नौ से ग्यारह बजे तक,हम दोनों ही मनुष्य ...ह सकते हैं, कि विनोश्रियासे हमलोगोंकी भेंट हुई थी। अत' ...र्नेल मलपासकी बातोंमें सत्यका लेश मात्र भी नहीं है।"

इसपर विनीश्रियाने बड़ी ही मीठी, पर मर्म भेदी आवाजमें ...हा,—"मेरे लार्ड! आपने जिस सज्जनता और न्यायसे मेरा विचार ...या है, उसके लिये मैं आपको धन्यवाद दिये बिना नहीं रह ...कती। (इसके बाद अपनी कुर्सी से उठकर कुछ गम्भीरता ...श्रित स्वरमें, जिससे उसके चेहरे पर लाली छा गई) मैं आशा ...रती हूँ, कि आप इतना कहनेकी मुझे और भी इजाजत देंगे कि

अब जब कभी आपलोग प्रेमका पासा फेंकनेके लिये बाजी लगावें तो उस समय अपने साथियोंको अच्छी तरह पहचान कर उनसे अपना गुप्त भेद कहें और उन्हें अपने दलमें मिलावें। नहीं तो फिर भी ऐसा अवसर आ सकता है, कि कार्नल मलपास सरीखे दूसरे मनुष्य द्वारा आप भी अपमानित हों और दूसरोंको भी अपमान सहना पड़े।"

इतना कहनेके बाद बड़े प्रेम तथा रस भरी दृष्टिसे सब की ओर देख कर सलाम करती हुई विनोफ़िया दरवाजेकी ओर बढ़ी। यह देखते ही प्रिन्स दरवाजा खोलनेके लिये आगे झपट पड़े और ज्यों ही विनोफ़िया दरवाजेसे जाने लगी, त्योंही प्रिन्सने कहा,—"मेरी परी। हमलोगोंकी चाल ठीक रहो न?"

विनोफ़ियाने बड़े मीठे और धीमे स्वरसे कहा,—"बहुत ठीक, आगामी सोमवारको रात्रिके नौ बजे—कार्लटन-राज-प्रासाद।"

इसके बाद प्रिन्स पर एक भेद भरी दृष्टि डाल, वह कमरेसे बाहर निकल गई। प्रिन्स बड़ी मुश्किलसे अपने हृदयमें उमड़ते हुए आनन्दको छिपानेका उद्योग करते हुए, अपने स्थान पर आ बैठे। बीचमें पर्दा पड़ा रहनेके कारण विनोफ़िया और प्रिन्समें क्या बातें हुईं, यह कोई भी न सुन सका और न कुछ देख ही सका।

प्रिन्सके बैठते ही मार्किस लेवेसनने कहा,—"अब हमलोगोंका केवल एक काम बाकी रह गया है। अर्थात इस बातका निर्णय करना, कि यह बाजी किसने जीती और दाँवका रुपया किसे दिया जाय। मैं समझता हूं, कि इस विषयमें भी अब सन्देहको कोई बात नहीं रह गई और यदि आपलोग अनुमति दें, तो मैं यह रुपया मिष्टर हौरेस सैकविलको दे दूँ।"

यह बात सबोंने स्वीकार कर ली और यह बैङ्कके नोट तथा अशर्फियोंको थैली सैकविलकी ओर सरका दी गई।



मार्केल मलपास और अदालतके प्यादे।

(छठाँ खण्ड—५७ वा परिच्छेद)

Burman Press, Calcutta



लेडी अर्नेष्टिना डारसर्ट ।

(छठाँ खण्ड—६० वाँ परिच्छेद)

I rr Fre t Calcutta

सैकविलने यह कहते हुए, कि स्त्रीके साथही साथ धनकी सहायता भी देनेके लिये मैं आपलोगोंको हृदयसे धन्यवाद देता हूँ, वे नोट अपनी जेबमें रख लिये और अशर्फियों को थैली कप्तान टेशको देते हुए कहा,—"मैं समझता हूं, कि कप्तान टेश इसे स्वीकार करने में किसी तरहका उज्र न करेंगे।"

"ऐसे इनामोंको मैं कभी अस्वीकार नहीं करता।"—उस बहादुर अफसरने कहा और फिर अपनी कुर्सीसे उठकर गिलासमें शराब भरता हुआ बोला,—"मुझे अपने मित्र सैकविलके स्वास्थ्य और जीवनका गिलास अवश्य पान करना चाहिये, परन्तु सर डगलास हरिटङ्गडनका सम्मान न करना भी उचित नहीं है। (गिलास भर कर पीते हुए) इसलिये मुझे उनके स्वास्थ्यका गिलास भी पीना चाहिये। (पीकर फिर गिलास भरते हुए) इसी तरह अर्ल कर्जनके स्वास्थ्यके लिये। (पीकर कुछ ठहरने बाद, फिर गिलास भरते हुए) और क्योंकि अभी यहां बहुत सी शराब रखी है, इसलिये सभोंके स्वास्थ्यके लिये मैं एक एक गिलास और पीता हूं।"

प्रिन्स, मार्क्विस लेवेसन, अर्ल कर्जन, सर डगलास, सभोंने भरपूर शराब पी थी, इसलिये वे कप्तान टेशकी यह हालत देख और जोरसे हँसने लगे। यद्यपि हौरेस बहुत शान्त था, परन्तु इस बार वह भी हँसनेसे अपनेको न रोक सका, परन्तु ज्योंही उस बहादुर अफसरने टेबिल पर रखी हुई शराब तथा शराब पीनेके भिन्न भिन्न कारणोंका कहना समाप्त किया, त्योंही मिष्टर सैकविल उठकर अपने दोस्तोंको सलाम करते हुए, उस कमरेसे बाहर निकल गये। खानसामाके बताये हुए कमरेमें बैठी विनोगिया उनकी राह देख रही थी। सैकविलके आतेही वह नवविवाहित जोड़ी उस मकानसे निकलकर, उस गाड़ीके पास पहुंची जो उनके लिये पहलेसे ही तय्यार खड़ी थी। इसी समय विनो

शियाने खानसामा प्लमष्टेडको दूसरे ही दिनसे अकेशिया-काटेज में आकर काम करनेकी आज्ञा देदी और फिर मेकविलके साथ अपने घरकी ओर चल पड़ी।

अन्य मेहमानोंकी गाड़ियां भी तुरतही दरवाजे पर आ लगीं। अब यह जलसा बर्खास्त हुआ और सबलोग अपने अपने घरकी ओर रवाना हो गये। जब मिसेस मलपास अपने सम्बन्धियोंके यहांसे घर लौटीं, तो उन्हें मालूम हुआ, कि पहले तो मलपास बेतरह पीटे गये हैं और फिर उन्हें पकड़कर दो मनुष्य कैदखानेकी ओर ले गये हैं।

अट्ठावनवां परिच्छेद ।

विचार।

गत परिच्छेदमें लिखी हुई घटनाओंके दूसरे ही दिवस, ओल्ड बेलीकी कचहरीमें, बड़ी भीड़ एकत्रित थी, क्योंकि आज ही मिष्टर पाल डाइसर्टका वह मुकद्दमा होनेवाला था, जिसमें उस पर आनरेबल जार्ज सेफटनको निर्दयतासे मारनेका दोष लगाया गया था। केवल इतनाही नहीं,इंग्लैंड युवक राजाकी शान्तिभङ्ग करनेका दोष भी उनपर एक कौन्सिलने लगाया था। परन्तु राजा उस समय स्वय पागलोंसे हो रहे थे और शान्ति-रक्षा करनेके बदले उनसे शान्ति भङ्गको ही विशेष सम्भावना थी। ऐसे ही वे कानूनी झगड़े और अपराध थे, जो डाइसर्ट पर लगाये गये थे।

उसकी स्त्री, लेडी अर्नेष्टिना, कचहरीमें नहीं थी। बल्कि वह न्यूगेटके गवर्नरके कमरेमें,जो कचहरीके पासही था,बैठ कर आराममे आग ताप रही थी। वह एक मान-मर्यादा वाली स्त्री थी और इसी लिये गवर्नर उसकी इतनी खातिरदारी कर रहा था। यदि

वह किसी गरीबकी लड़की होती, तो उसे दिन भर खुली सड़कमें खड़ी रहना पड़ता या सर्वसाधारणके लिये जो मकान कचहरीके सामने बना हुआ है, उसीमें खड़े हो दिन काटना पड़ता है, यदि वह इस मुकद्दमेमें हाजिर हुआ चाहती।

यद्यपि ब्रुटिश मन्त्रिमण्डलका नियम कहता है, कि कानूनी दृष्टिसे गरीब, अमीर सब समान हैं तथापि ये राज-कार्य्य परिचालक राज-कर्म्मचारी और कानूनके पाबन्द कहलानेवाले अफसर, इस बात पर पूरा पूरा ध्यान रखते हैं, कि ऐसा न होने पाये। इस तरह इस मुकद्दमेमें जितने सम्भ्रान्त श्रेणीके गवाह थे, उन्हें तो न्यायाधीशके बगलमें ही स्थान मिला था और प्रधान गवाह लार्ड हर्बर्ट, रेकर्डर*को बगलमें ही बैठे हुए थे तथा उस समय घुल घुल कर उनसे बातें कर रहे थे, जब कि लार्क जूरियोंके कसम खिला रहे थे। अब यदि वे गवाह कुम्हार, कसेरे या अन्य काम करनेवाली जातिके मनुष्य होते, तो उन्हें विचारकके बेञ्च तक पहुंचनेका साहस ही न होता।

इससे भी बढ़कर ध्यान देनेकी बात यह थी, कि सम्भ्रान्त परिवारमें विवाह होनेके कारण अपराधी मिष्टर डाइसर्ट, असामियोंके कटघरेमें एक कुर्सी पर बैठा हुआ था और उस कैदखानेके पहरेदारको,जिसपर उसकी रक्षाका भार था, उस"अभागी मनुष्य"के पास खड़े रहनेकी आज्ञा न थी। हमलोग और भी देख सकते हैं, कि समूचे मुकद्दमेमें, जज्ज, कौन्सली या गवाह, किसीने डाइसर्टके सम्मानके विरुद्ध उससे बातें न कीं। अब यदि मिष्टर डाइसर्ट श्रमजीवी होता तो वेही जज्ज, कौन्सली और गवाह उससे मुजरिमके

* रेकर्डर,—अदालतके कागज पत्र रखनेवाले एक प्रकारके जज्ज जो होम सिक्रेटरीकी ओरसे जज्जोंको सहायता देनेके लिये नियुक्त किये जाते हैं। ये कमसे कम पांच वर्ष तक बारिस्टरी किये हुए मनुष्य होते हैं।

अलावा दूसरी तरहसे कभी बातें न करते और न उसे कुर्सी ही मिलती। इस देशमें धनी होना या धनी-परिवारसे सम्बन्ध होना ऐसी ही भाग्यवानी की बात है।

आह! विचारे श्रमजीवी पुरुष! परिश्रमके पुत्र और कन्याएँ! सब चीजोंके पैदा करनेवाले,पर अपने पास कुछ न रखनेवाले! शायद तुम लोग नहीं जानते, कि तुम किस तरह निर्दयता पूर्वक सब तरहसे दवाये जाते हो, गुलाम बनाये जाते हो और अत्याभिमानी, आलसी तथा भयानक सम्भ्रान्त-समाजसे कुचले जाते हो।

मिष्टर डाइसर्टने कटघरेमें घुसते ही नम्रतासे जज्ज,और जूरियों को सलाम किया और शान्त तथा स्वस्थ्य चित्तसे कुर्सी पर बैठ गया, क्योंकि वह जानता था कि यदि जूरी उसे गुरुतर अपराधका अपराधी भी ठहरावेंगी और न्यायालय उसे मृत्युका भयानक दण्ड भी दे देगा तो प्रिन्स रीजेण्टके द्वारा उसे पूरी पूरी चमा मिल जायगी। इसलिये उसका चित्त शान्त था और वह वहां उपस्थित पुरुषोंको क्रोधसे देख रहा था, परन्तु यह नहीं मालूम होता था, कि किसी-भयके कारण वह ऐसा कर रहा है।

जूरियोंके कसम खाने और लार्ड हबर्टकी की हुई दिल्लगीके कारण रेकर्डरके हँस लेने बाद मुकद्दमा आरम्भ हुआ। मुजरिमके विपक्षमें खड़े होकर अटर्नी जेनरलने अपनी बहस शुरू कर दी। उन्होंने पहले तो मुकद्दमा क्या है—यह विचारकोंको समझाना शुरू किया, परन्तु जितनी मोकेंकी और ऐसी बातें थी, जिनसे डाइसर्टका अपराध प्रमाणित होता था, उन्हें बिना जोर दिये छोड़ते हुए और कमजोर तथा ऐसी घटनाओंको आगे रखते हुए, जिससे स्पष्ट मालूम होता था, मानो कैदी को छुड़ानेके लिये घुमा फिरा कर वे प्रार्थना कर रहे हैं, परन्तु इसके पहले दिन जब वे राजद्रोहके अपराध पर एक श्रमजीवीको फँसानेके लिये खड़े

हुए थे, उस समय मिनट मिनटकी घटनाओं पर और कमजोर-से कमजोर बातों पर भी इतना असीम जोर देदेकर बहस कर रहे थे, मानो अपराधीको कुचल ही डालना चाहते हों। मिष्टर डाइसटने मार्किस लेवेसनकी भतीजीसे व्याह किया था, इसीलिये अटर्नी जेनरल उसे जेलखाने नहीं भिजवाना चाहते थे।

कानूनी अफसरके मुकद्दमा खड़ा करने पर लार्ड हर्बर्टने हलफ उठाकर गवाही देनी शुरू की, परन्तु उन्होंने रेकार्डरके पास-वाली अपनी जगह नहीं छोड़ी और न उठकर खड़ेही हुए; बल्कि इस तरह आराम और निश्चिन्तीसे गवाही देने लगे, मानो वे अपने घरके खास कमरेमें दोस्तोंके बीच बैठे हों। वे एक लम्बे, दुबले और लगभग पचपन वर्षकी अवस्थाके मनुष्य थे। उनके केश भूरे और चेहरा बदसूरत तथा भयंकर था। वे बड़े ही अहङ्कारी, अत्यन्त उद्धत तथा अपनी प्रशंसा सुननेवाले जीव थे, परन्तु असलमें वे वैसेही विचारशून्य थे, जैसे कि साधारण लार्ड हुआ करते हैं। बात करते समय उन्हें तुतलानेका इतना अभ्यास पड़ गया था, मानो उनकी बातोंमें यह ईश्वरीय बाधा हो और इसीलिये उनकी बातें जल्दी समझमें नहीं आती थीं। वास्तवमें वे एक ज्ञानहीन मनुष्य थे और यदि वे सम्भ्रान्त कुलके न होते तो एकदम गधे कहलाते।

अटर्नी जेनरलने कहा,—"मेरे लार्ड! मैं समझता हूं, कि आप मिष्टर डाइसटको जानते हैं, जिनके मुकद्दमेका आज विचार हो रहा है।"

"हां, उसको, आह—आह! हां, ठीक ठीक, अच्छी तरह जानता हूँ।" लार्ड हर्बर्टने अपना एक पैर दूसरे पैर पर रखते हुए कहा।

अटर्नी,—"और मैं समझता हूँ, कि इसी वर्षके जून मासमें आप-ने ही एक बड़ा भोज दिया था, जिसमें बहुतसे शरीफ और सज्जन पुरुष सम्मिलित हुए थे।"

हर्बर्ट,—"हा, हा, हा, ओह, हा—एक भोज।"

अटर्नी,—"जिसमें मिष्टर डाइसर्ट भी सम्मिलित हुए थे?"

हर्बर्ट,—"हा-ऐं-हा, हा—मिष्टर डाइसर्ट आये थे, वह—हा"

अटर्नी,—"और मृत आनृरेब्ल जार्ज सेफ्टन भी, उसमें शरीक हुए थे?"

हर्बर्ट,—"ओह-हा—हेम—ओह! हा—जार्ज सेफ्टन—हा हेम वे भी थे।"

अटर्नी,—"और जब भोजनके बाद सामान हटाकर फलकी रकाबिया टेबिल पर सजा दी गईं, तब बात ही बातमें आपसमें झगड़ा भी हो गया था?"

हर्बर्ट,—"ओह—आह—हेम—झगड़ा—बाजीके——विषयमें, घुड़दौड़के जीतनेवाले—हा—केविषय-हेम-हा—हा—दूसरे खिलाड़ी ओल्ड फोगीके विषयमें।"

अटर्नी,—"और मिष्टर डाइसर्टने आनृरेब्ल जार्ज सेफटनको झूठा ठहराया था?"

हर्बर्ट,—"हेम-आह हा—मुझे भय है, उसने ठहराया। तब आप जानते हैं, कि कठोर शब्द हेम-हा-निकाले और मिष्टर डाइसर्ट ने शराबका एक गिलास उनके मुँहपर फेंक मारा। हा-हा सेफटन बड़ेही क्रोधित हुए। हा—और मैं नहीं समझता कि कैसे—हा—या ठीक ठीक क्या हुआ—हेम-हेम-लेकिन पिस्तौलें दगीं और और और और—पिस्तौलें दगीं—हा-हा-और फिर—हा—तब—"

जज्ज,—"मेरे लार्ड! जल्दी न कीजिये। बहुत समय है, दिन भर पड़ा है।"

अटर्नी,—"हाँ, ठीक ठीक। आप अपनी सज्जनता और महानताके अनुकूलही कह रहे थे, कि पिस्तौलें दगीं॰————"

हर्बर्ट,—"आह हा-सचही (अपनी उंगली उन केशोंमें घुसेड़ते

हुए, जो इस समय भयानकरूपसे खड़े हो गये थे) पच्छा, मैं कह रहा था, तब—हां-वह—हां-यह निश्चित हुआ कि, झगड़ा हो, हेम-हा—टेबिलके पासही—ओह—मुझे विश्वास है, मुझे भय है, मिष्टर डाइसर्टने पिस्तौल दागी—हेम हा—उसके पहले हो, कि इशारा होता—सेफ्टन मर गये—हा—यह खराब काम हुआ—हा—बस इतनाही—हेम—इस विषयमें—हेम—मै जानता हूं।"

इतना कह लार्ड हर्वर्टने जंभाई लेते हुए अपने हाथ पैर इतने फैला दिये, कि एकबार उनकी सब हड्डियां बोल उठीं।

अब डाइसर्टका वकील उस शरीफ मनुष्यसे जिरह करनेके लिये उठ खड़ा हुआ। परन्तु अटर्नी जेनरलने एक ऐसी तीव्र दृष्टि उसपर डाली, कि वह वकील इतने बड़े कानून जाननेवाले और जजके अप्रसन्न हो जानेके भयसे केवल दो चार साधारण प्रश्न पूछ करही चुप रह गया और अपनी कुर्सी पर जा बैठा।

अब आनरेब्ल जार्ज मेकानभरा, जो लार्ड हर्वर्टके बगलमें बैठे हुए थे, अपना इजहार इस तरह देने लगेः—

"मुझे लार्ड हर्वर्टके यहांका भोज स्मरण है। वह जून मासके आरम्भमें हुआ था। लगभग बारह या चौदह मनुष्य उस भोजमें सम्मिलित हुए थे। मैं भी एक मेहमान था और मेरेही समान डाइसर्ट भी आये थे तथा आनरेब्ल जार्ज सेफ्टन भी उसी तरह वहां निमन्त्रित होकर गये थे। वहा ओल्ड फोगोके सम्बन्धमें कुछ झगड़ा खड़ा हो गया। वे दोनों ही घोड़े मिष्टर सेफ्टनके थे और मालूम होता है, मिष्टर डाइसर्टने एक बड़ी रकम बाजीमें लगाई थी। वहा मिष्टर सेफ्टनके मुंहसे कुछ ऐसे शब्द निकले जिसका अर्थ मिष्टर डाइसर्टने यह लगाया, कि वे अपने घोड़े घोड़दौड़में नहीं भेजना चाहते। इसीलिये उन्होंने सेफ्टनको धोखेबाज और चोर कहा। मिष्टर सेफ्टनने उन्हें झूठा बताया। हमलोग उस

समय शराब पीकर, आनन्द कर रहे थे। हां, सभी नशेमें थे। मिष्टर डाइसर्टने उन्हें द्वन्द्वयुद्धके लिये ललकारा और लार्ड हर्बर्टने उन दोनोंको पिस्तौलें दीं। पिस्तौल दागनेका समय नियत कर दिया गया और यह स्थिर हुआ, कि स्थिर सङ्केत पर दोनों पिस्तौलें एक साथही दागी जायें। यह घटना लार्ड हर्बर्टके भोजनालयकी है। मिष्टर डाइसर्ट और मिष्टर सेफ्टनने एक साथही पिस्तौलें लीं परन्तु बिना संकेतके ही मिष्टर डाइसर्टने सेफ्टनकी ओर निशाना साध पिस्तौल दाग दी। मिष्टर सेफ्टन चिल्लाकर जमीनसे लगभग एक फुट ऊँचे उछल पड़े और फिर सरकर जमीन पर गिर पड़े। मुझे कहनाही पड़ता है, कि पिस्तौल दागते समय मिष्टर डाइसर्टने कहा,—'ले बदमाश! यह ले।' या इसी ढगके कुछ दूसरे शब्द उन्होंने कहे।"

आनरेबल जार्ज मेकानमरा पियर खानदानके नहीं थे, इसलिये उनसे अच्छी तरह जिरह की गई, पर जिरहमें वे कहीं भी टससे मस न हुए।

इसके बाद लेफ्टनेण्ट ऐप्सली नामके एक मनुष्य, जो उस दिन लार्ड हर्बर्टके भोजमें सम्मिलित थे, गवाहीके लिये बुलाये गये। उन्होंने केवल मेकनमराकी गवाही की पुष्टि ही नहीं की, बल्कि अपनी बातोंसे और भी साबित कर दिया, कि संकेतके धोखेमें मिष्टर डाइसर्टने पिस्तौल नहीं दागी, बल्कि जानबूझकर संकेतके पहले ही उन्होंने पिस्तौल दाग दी; क्योंकि इशारेसे एक, दो, तीन की गिनती समाप्त होने पर पिस्तौल दागना स्थिर हुआ था प्र मिष्टर डाइसर्टने पहला अङ्क मुँहसे निकालनेके पहले ही पिस्तौल दागदी थी।"

कुछ दूसरी गवाहियां भी हुईं और इसके बाद अपराधीकी ओरके वकीलने मुकदमेका रंगढंग देखते हुए तथा इस बातको

ध्यान रखते हुए, कि जज्ज तथा अन्य मामूली अफसर अप्रसन्न न हो जायें, वक्तृता दी ; परन्तु उसने भी उस आवश्यक और मार्केके बातको छोड़ दिया जो मैकनमराके मुँहसे निकला था, अर्थात लार्ड हर्बर्टने ही दोनोंको पिस्तोलें दी थी। इससे यद्यपि डाइसर्ट-के मुकद्दमेमें किसी प्रकारकी सहायता नहीं पहुंचती थी तथापि कोई योग्य बारिष्टर या वकील द्वितीयपक्षको नीचा दिखानेके लिये यह बात उठा न रखता।

अपनी वक्तृता समाप्त कर, वकीलने अपने कई गवाहोंको यह इजहार देनेके लिये बुलाया, कि डाइसर्ट कैसा नम्र, सहन शील, सज्जन और अच्छी प्रकृतिका मनुष्य है। इन सब गवाहोंको दस दस पौण्ड फी आदमीके हिसाबसे देकर, गवाहीके लिये ठीक किया गया था, परन्तु उन्होंने वास्तवमें पहले कभी मिष्टर डाइसर्टका मुँह भी न देखा था।

इस वकील की बातोंका जवाब देनेके लिये फिर अटर्नी जेनरल उठे। उन्होंने कहा,—"अपने जीवनमें, जबसे मैंने यह कार्य्य करना आरम्भ किया है, मुझे आजके समान और कोई भी ऐसा अवसर नहीं मिला, जिसमें इतनी स्पष्ट,सच्ची और साफ साफ गवाही हुई हो, जैसी कि सम्भ्रान्त कुलके उज्वल भूषण लार्ड हर्बर्टने दी है। बड़ी प्रसन्नताकी बात तो यह है, कि लार्ड हर्बर्ट ऐसी उदार प्रकृतिके मनुष्य हैं, कि वेष्ट एण्डका अपना सजा संजाया सुखप्रद मकान छोड़, मामूली अदालतमें, न्यायकी सहायता देनेके लिये आये हैं।"

विद्वान रेकार्डर, जो अभी तक सो रहे थे, अटर्नीकी वक्तृता समाप्त होने पर जाग पड़े और उन्होंने कागज जूरियोंके सामने रख दिया। जज्ज तथा जूरियोंने भी अटर्नी और वकीलकी तरह ही लार्ड हर्बर्टके पिस्तौल देनेवाली बात तथा अपने घरमें भोजन के कमरेमें इतने उपद्रव होने देनेकी घटना पर, बिलकुल ही ध्यान

न दिया, जज्जने भी भटर्नी जेनरलके समान ही लार्ड हर्ट और सम्भ्रान्त कुलको प्रश्रय दिया, बल्कि उन्होंने भटर्नी जेनरल की किताबका एक पन्ना फाड़कर जूरियोंको यह इशारा किया, कि मिष्टर डाइसर्टको छोड़ देना ही अच्छा होगा।

परन्तु जूरियोंने इस बातका दूसराही अर्थ लगाया। अर्थात उन्होंने बिना किसी विशेष विचारके और बिना आपसमें सलाह किये ही, यह फैसला दे दिया, कि "पाल डाइसर्टने जान बूझकर हत्या की है"।

जूरियोंकी यह राय सुनते ही सबकी दृष्टि उस कैदीको और यह देखनेके लिये घूम गई, कि जूरियोंके फैसलेका उसपर क्या प्रभाव पड़ा। हां, एक आकस्मिक भयकी कालिमा पहले तो उसके चेहरे पर छा गई, मानो उसके शरीरकी सब पेशियां उस समय तड़तड़ा उठी हों, पर तुरत ही वह पहलेके समानही शान्त, गम्भीर तथा स्वस्थ दिखाई देने लगा। पहले तो हत्याके अपराधीके शब्दने उसके हृदय पर भयानक आघात पहुंचाया, मानो इस शब्दका केवल उच्चारण ही मृत्युकी भयानक विभीषिकाको सम्मुख उपस्थित कर देनेके लिये पर्य्याप्त है, परन्तु उसकी इस अवस्थाका तुरत ही परिवर्तन हो गया, क्यों कि उसे झट याद आ गया, कि उसकी स्त्रीके पास एक ऐसा पत्र है, जो कैदखानेका दरवाजा खुलवाकर उसे स्वतन्त्र कर देनेके लिये प्रिन्सको बाध्य कर सकता है। बस यह विचार मनमें उत्पन्न होतेही उसकी अवस्था पहलेके समान ही हो गई।

अब रेकर्डरने काली टोपी पहन ली और अपनी अभ्यस्त वाक-चातुरी तथा दृढतासे कहा,—"पाल डाइसर्ट जिस कैदखानेसे लाये गये हैं, इन्हें वहीं ले जाओ। वहांसे फिर इन्हें फांसी देने वाले स्थानपर ले जाना पड़ेगा—जहां इन्हें फांसी दी जायगी

समयमें रेकर्डरने इतना और भी कहा,—"ईश्वर इनकी आत्मापर दया करे।"

भयानक प्रतारणा! भीषण अत्याचार!—और पैशाचिक अन्याचरण!—मनुष्य बदला लेते समय तो एकदम निर्दय बन जाता है, और इतने पर भी यह इच्छा करता है, कि ईश्वर दया करे। क्या ऐसे समय मनुष्यको उस अनन्त शक्तिका अनुकरण न करना चाहिये जिसकी वह दुहाई देता है?

इस समय संध्याके चार बज चुके थे। मिष्टर डाइसर्ट न्यूगेट जेलखानेमें फिर पहुंचा दिये गये थे। रेकार्डर, लार्ड हर्बर्टके साथ भोजन करने चले गये थे और पुलिस-विभागके साधारण विचारक विचारकी कुर्सीपर बैठ, छोटे छोटे मुकद्दमे सुन रहे थे। भीड़ छंट गई थी और सब यही कहते कहते कचहरीसे चली जा रही थी कि,—"देखें, कब उसे फांसी होती है।"

इसी बीचमें न्यूगेटका गवर्नर अपने मुलाकातियोंके कमरेमें गया। वहां बैठकर अर्नेष्टिना अपने पतिके अपराध और दण्डके सम्बन्धमें विचार कर रही थी। वह इस समय ऐसा भाव दिखा रही थी, मानो अपने पतिके लिये बड़ी ही चिन्तित हो। गवर्नरने बड़े ही दुःख भरे शब्दोंमें धीरे धीरे उससे फैसलेका समाचार कह सुनाया जिसे सुनते ही वह बेहोश होकर गिर पड़ी। इसके कुछ देर बाद, जब वह अपनी धोखेबाजीकी एक भयानक चाल दिखा चुकी, तब घबड़ाकर उठी और अपने प्यारे पतिको देखनेके लिये गवर्नरसे प्रार्थना करने लगी।

गवर्नर अर्नेष्टिनाको उस कोठरीमें ले गया, जिसमें पाल डाइसर्ट कैद था। अर्नेष्टिना अपने पतिको देखते ही उससे लिपट गई और तरह तरहसे अपनी बनावटी प्रीति प्रकट करने लगी। इसके बाद जब गवर्नर वहांसे चला गया, तब वह शान्त हुई। इस बार

डाइसर्टने अर्नेष्टिनाकी चाल, बातें, दृष्टि और आसुओंको देखकर पूरा धोखा खाया। उसके मनमें रहरहकर यही विचार उत्पन्न होने लगा कि इस समय अर्नेष्टिनाके हृदयमें वही प्रेम फिर जागरित हो उठा है, जिसके कारण उसने उससे विवाह किया था।

डाइसर्ट बोला,—"मैं तुम्हारी इतनी कृपा और प्रेमके योग्य नहीं हूं, अर्नेष्टिना! परन्तु इस बार जब मैं छूटकर जेलसे बाहर निकलूंगा, तब तुम्हारे साथ जो कुछ अन्याय किया है, उन सबका बदला चुका दूंगा। प्यारी! रोओ मत, दुःख और शोक, ये सभी क्षणिक होते हैं।"

अर्नेष्टिना रोती रोती बोली,—"परन्तु हाय! क्या ऐसी भयानक आफतकी भी कभी आशा थी?"

डाइसर्ट,—"हमलोग भी तो इसके लिये तय्यार ही थे। और कमसे कम मैं तो अवश्य ही तय्यार था। परन्तु ईश्वरको धन्यवाद है कि तुम्हारे पास एक ऐसा जादू है, जो तुरत ही इस कैदखानेका दरवाजा खुलवा दे सकता है। आह! उस समय प्रिन्सको कितना आश्चर्य होगा, जब उन्हें यह मालूम होगा, कि बीचीमैनरकी वह अपूर्व लावण्यमयी सुन्दरी, उनके अन्तरङ्ग मित्र मार्किस आफ लेवेसनकी एकमात्र कन्या है।"

अर्नेष्टिना,—"परन्तु यह बात मैं प्रिन्ससे कैसे कहूंगी? जबसे मैं अपने चाचाके यहां रहने लगी हूं, तबसे तो उन्होंने मुझे कभी बुलाया ही नहीं।"

डाइसर्ट,—(व्यग्र होकर) "तुम्हें कल ही प्रिन्ससे भेंट करनी पड़ेगी। यह समय वृथा नष्ट करनेका नहीं है। मैं समझता हूं, कि रेयाल्डर एक सप्ताहके भीतर ही फैसला दे देगा।"

अर्नेष्टिना,—"यथासम्भव मैं कल प्रिन्ससे अवश्य मिलूंगी। अच्छा, मैं स्वयं कार्ल्टन-प्रासादमें जाऊं या पत्र लिखकर उन्हें बुला भेजूं?"

डाइसर्ट,—"तुम जैसा मुनासिब समझो करो। रेकार्डरकी रिपोर्ट निकलनेके पहले तो प्रिन्स कुछ कर भी नहीं सकते। मैं समझता हूं, कि उस रिपोर्टके पहले इस मुकद्दमेके सम्बन्धमें प्रिन्सको कुछ मालूम भी न होगा। परन्तु यह हमलोगोंका काम है, कि उन्हें पहलेसे इस कामके लिये केवल तय्यार हो न कर रखें, बल्कि उनसे यह भी कहला लें, कि जो पुर्जा उन्होंने लिख दिया है, उसकी शर्त्तोंके अनुसार काम करनेके लिये वे तय्यार हैं।"

अर्नेष्टिना,—अच्छा, पाल! मैं कल उनसे मिलूंगी और यदि देर न हो गई, तो हमलोगोंकी मुलाकातका क्या नतीजा निकला, यह बतानेके लिये तुम्हारे पास भी कल ही आऊंगी।"

डाइसर्ट,—"परन्तु यदि कल देर होजाये, तो क्या परसों सवेरे तुम अवश्य आओगी?"

अर्नेष्टिना,—(बड़े प्रेमसे) "प्यारे! यदि तुम्हें उत्तम खबर सुना सकी तो तुम जानते ही हो, कि मुझे कितनी प्रसन्नता होगी। मैं समझती हूं, कि काम हमलोगोंके मन-मुताबिक ही होगा, क्योंकि प्रिन्स रीजेण्ट अपने पुर्जेकी शर्त्तें अवश्य पालन करेंगे।"

डाइसर्ट,—"उन्हें दबाकर काम निकालनेका भार तुम पर है, (दुःख भरे स्वरमें) देखो, अर्नेष्टिना! खूब याद रखो, कि इस समय मेरा जीवन तुम्हारे—केवल तुम्हारे हाथमें है।"

अर्नेष्टिना,—"(डाइसर्टसे लिपटकर) "और मैं उस जीवनको बचाऊंगी—अवश्य बचाऊंगी।।"

इतना कह, डाइसर्टसे बिदाले, एक भाड़ेको गाड़ी पर सवार हो, अर्नेष्टिना जब अल्बेमार्ल ष्ट्रीटमें अपने चाचा लेवेसनके मकानकी ओर चली, तो मन ही मन बोली,—"उसका जो कुछ सन्देह मुझ पर था, वह दूर हो गया—वह मुझ पर अच्छी तरह विश्वास करता है और मैं भी अन्ततक यह विश्वास नष्ट न होने दूंगी।"

इसके बाद ही उसपर एक प्रकारकी दुर्बलता यह सोचकर छा गई, कि यदि उसकी चालें ठीक पडती गई, तो कुछ ही दिन बाद डाइसर्टका अन्तिम जीवन-दृश्य देखनेके लिये ओल्डवेलीमें भयानक भीड इकट्ठी होगी । परन्तु तुरत ही अपनी इस दुर्बलता पर क्रोधित होकर उसने अपनेको सम्हाला और बोली,—"हां, यह आवश्यक है। अब मुझे अवश्य ही इस भयानक पिशाचसे छुट्टी लेनी पडेगी, जिसे मैंने अपने हाथों अपने गलेका हार बनाया था। आह! यह अपूर्व प्रेम ही है, जो सहसा बदलकर भयानकसे भयानक बदला लेनेके लिये तय्यार हो जाता है।"

अर्नेष्टिना जब अल्बेमार्ल ष्ट्रीट वाले अपने चाचाके मकान पर पहुंची, तब उसे मालूम हुआ, कि मार्किस लेवेसन, रिचमण्ड की रहनेवाली मिसेस उवेनसे बातें कर रहे हैं। इसलिये उसे बाध्य हो, उसके चले जाने तक, बाहर ही ठहरना पडा। पाठकों को यह बात अच्छी तरह स्मरण रखनी चाहिये, कि वेल्सकी प्रिन्सेसके लिये जो षड्यंत्र रचे जा रहे थे, उनका हाल अर्नेष्टिना कुछ भी नहीं जानती थी और न उसको यही मालूम था, कि इसमें मिसेस उवेनकी तीनों लडकिया भी सम्मिलित हैं। इसलिये अपने चाचाको उन लडकियोंकी मातासे परिचित देख, उसके मनमें बडी प्रसन्नता हुई।

लगभग एक घण्टेतक मार्किस लेवेसन मिसेस उवेनसे एकान्तमें बातें करते रहे। इसके बाद जब वह स्त्री अर्नेष्टिनाके चाचाके पाससे चली गई, तब अर्नेष्टिनाको अपने चाचासे ओल्ड बेलीके मुकद्दमेका परिणाम कहनेका अवसर मिला।

मार्किस लेवेसनने अर्नेष्टिनाकी सब बातें सुन लेने पर बडीही तीक्ष्ण दृष्टिसे उसे देखते हुए कहा,—"तब अर्नेष्टिना! अब तुम्हारी यह इच्छा पूरी होगी, जिसके विषयमें [illegible] कहा था।"

अर्नेष्टिना,—"हां, अब पूरी होगी। परन्तु इसमें बड़ी साव-धानता और चतुरताकी आवश्यकता है। अभी भी डाइरटंके साथ बड़ी धूर्तताले वैसी ही चालें चलनी पड़ेंगी—"

लेवेसन,—(बड़ी उतावलीसे) "पर अब तुम क्या किया चाहती हो, अर्नेष्टिना! क्योंकि ये सब काम स्वयं तुम्हें ही करने पड़ेंगे, कारण कि मुझे अभी—इसी वक्त फ्रान्स जाना पड़ेगा।"

अर्नेष्टिना,—(आश्चर्य्यसे) "फ्रान्स। और अभी?"

लेवेसन,—"हां, फ्रान्स और अभी, क्योंकि एक बहुत ही आव-श्यक काम है। मैंने गाड़ी तय्यार करनेकी आज्ञा देदी है और एक घण्टेके बाद ही मै चला जाऊंगा। इस बीचमें मुझे कुछ जलपान भी कर लेना है।"

अर्नेष्टिना—"तब क्या तुम रात भर सफर करोगे? सात तो बज चुके है।"

लेवेसन,—"मैं डोवरमें * भी नहीं ठहरूँगा और बराबर चला जाऊंगा। मैं समझता हूं, कि रातके तीन बजे मैं डोवर जा पहुंचूंगा। वहां दो चार घण्टे आराम करूंगा और सबेरे दस या ग्यारह बजे जो जहाज डोवरसे खुलता है, उसीमें फ्रान्स चला जाऊंगा। अच्छा, अब हमलोगोंको भोजन कर लेना चाहिये। मैं समझता हूं, कि तुम्हें भी भूख लगी होगी, क्योंकि समूचा दिन तुमने बड़ी चिन्तामें बिताया है।"

अर्नेष्टिना,—"नहीं, उतनी चिन्तामें नहीं, जैसा कि फैसला हुआ है।"

इसके बाद चाचा और भतीजी दोनों भोजनके कमरेमें चले गये। यहां भोजन करते करते ही दोनोंकी सलाह होगई। अभी वे दोनों बातें कर ही रहे थे, कि एक नौकरने आकर खबर दी, कि

* 'डोवर' इङ्गलैण्डका वह बन्दर, जहांसे फ्रान्सके लिये जहाज छूटता है।

गाडी तय्यार है। मार्क्विसने अब बड़े प्रेमसे अपनी बेटीसे बिदाली, उसके खर्चके लिये एक चेक उसको दे दिया और तुरत ही चार घोड़ोंकी एक गाडी पर सवार हो, डोवरकी ओर रवाना हो गये।

गत सप्ताहमें घटी हुई घटनाओं और अपनी सोची हुई चालों पर विचार करती हुई अर्नेष्टिना अकेली ही भोजनवाले कमरेमें बैठी रह गई। इस तरह एक घण्टा और बीत गया और घड़ीमें नौ बजे। इसी समय एक मनुष्यने आकर उसे खबर दी, कि एक बहुत ही आवश्यक कार्य्यके लिये एक मनुष्य उससे भेंट किया चाहता है।

अर्नेष्टिना,—"वह मार्क्विसको खोजता होगा।"

नौकर,—"नहीं,मैंने अभी अभी उससे कह दिया, कि मार्क्विस घरमें नहीं है, इसपर उसने आपका नाम लेकर कहा, कि मैं उनसे मिलना चाहता हूं।"

अर्नेष्टिना,—"अच्छा उसे यहां भेज दो।"

नौकर सलाम कर चला गया और फिर तुरत ही एक ऐसे मनुष्यको साथ लिये आ पहुंचा, जो बड़े ही गन्दे कपड़े पहने हुए था। उसके बदन पर एक लम्बा कोट पड़ा हुआ था और उसके गलेका रूमाल मुँह तक उठा हुआ था तथा माथे पर एक मैली बड़ी टोपी रखी हुई थी। उस मनुष्यको पहुँचाकर नौकर चला गया। इसके बाद ज्योंही वह मनुष्य आगे बढा और ज्योंही उसके चेहरे पर रोशनीकी छाया पड़ी, त्योंही अर्नेष्टिनाने पहचान लिया, कि यह वही मनुष्य है, जिसने उसके प्रेमीके लिये कब्र खोदी थी।

उनसठवां परिच्छेद।

दुखद मुलाकाती।

उस मनुष्यको देखते ही अर्नेष्टिनाकी ऐसी भयानक अवस्था हो गई, जैसी कि उस मनुष्यकी हो जाती है, जिसका शरीर साँपसे छू जाता है। उसके गालोंका गुलाबी रंग गायब हो गया और उसके बदले जर्दी छा गई। उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसके कार्य्यमें यह पहला अपशकुन हुआ, क्योंकि उस मनुष्यका चेहरा देखते ही वह पहचान गई, कि इसका नाम जोन्स है, जो असली नहीं, बल्कि फर्जी नाम है और यह मनुष्य उसका गुप्त भेद अच्छी तरह जानता है। यही कारण था, कि उसे देखते ही वह भयसे व्याकुल हो गई।

इसके बाद बड़ी ही तेज और भावपूर्ण आवाजमें उसने कहा,—"तुम क्या चाहते हो ? यहां तुम्हारा क्या काम है ?"

उस मनुष्यने कहा,—"मैं आपसे कुछ बातें किया चाहता हूं, बस इतनाही काम है।" इतना कह और आगके पास जाकर वह आनन्दसे एक कुर्सी पर बैठ गया।

उस मनुष्यके आते ही अर्नेष्टिना घबड़ाकर अपनी कुर्सीसे उठ खड़ी हुई थी, परन्तु अब हताश होकर बैठ गई और बड़ी कठिनतासे अपनेको सम्हालकर बोली,—"अच्छा कहो, क्या कहना चाहते हो ?"

विचित्र चेहरा बनाते हुए उसने कहा,—"आपके पति एक भयानक सङ्कटमें जा पड़े हैं और यदि वे अपनी अवस्था पर ध्यान न देंगे, तो दस बारह दिनोंमें ही कालके गालमें चले जायेंगे।"

अर्नेष्टिना,—(बेसब्रोसे) "परन्तु तुम्हें इससे क्या मतलब है ?"

मनुष्य,—"मैं अभी थोड़ी ही देरमें सब बताटूंगा। आप उतावली हो रही हैं, पर मैं उतावला नहीं हूं, हम दोनोंमें यही अन्तर है। इसके अलावा इतने दिनोंके परिचित मनुष्यके साथ आपको इतना कठोर व्यवहार न करना चाहिये। मैं समझता हूं, कि आप जानती होंगी कि मैं वही मनुष्य हूं, जिसने उस दिन आपलोगोंको सहायता दी थी, जब प्रिन्स तथा मार्क्विस लेवेसन, बीचो मैनरमें जबर्दस्ती पहुंचाये गये थे, और शायद आप यह भी जानती हैं, कि मैं ही वह मनुष्य हूं, जिसने कब्र खोदी थी। जो हो, आपके पतिने मेरे साथ सरोफोंसा व्यवहार किया था। उन्होंने मुझे अच्छी रकम दी थी और इसी लिये अब मैं उनकी सेवा किया चाहता हूं। बस, मेरे यहां आनेका यही मतलब है।"

अर्नेष्टिना,—"परन्तु तुम हो कौन ?" क्योंकि कब्र खोदते समय उसने उसका पूरा परिचय नहीं पाया था।

उस मनुष्यने कहा,—"मुझे याद है, कि मिष्टर डाइसर्टने मुझसे कहा था, कि आप मुझे जोन्सके नामसे ही जानती हैं, परन्तु वास्तवमें मेरा नाम जोन्स नहीं है, और क्योंकि अब मुझे अपना नाम छिपानेकी कोई आवश्यकता नहीं है, इसलिये मैं यह कह देना भी उचित समझता हूं, कि मेरा असली नाम डेनल कौफिन है।"

"क्या! सरकारी जल्लाद!" अपनी कुर्सीसे घबड़ाई हुई उठकर और भयसे उस मनुष्यके भयानक चेहरेकी ओर देखती हुई अर्नेष्टिना चिल्ला उठी। इसके बाद मिसेस उवेनके यहांकी चोरीका जो समाचार उसने अखबारोंमें पढ़ा था, वह उसे स्मरण हो आया और वह तुरत ही समझ गई, कि डेनल कौफिन बीचोमैनरमें जोन्स नाम रखकर क्यों छिपा था।

बड़ी कठोरता और गम्भीरता भरे शब्दोंमें डेनलने कहा,—"डरो
त, मैं तुम्हें फांसी देनेके लिये यहां नहीं आया हूं। अच्छा, अब
पा कर बैठ जाओ। तुम देखती हो, कि मैं तुम्हारे साथ घरेलू व्यव-
ार कर रहा हूं, क्योंकि मुझे तुमसे जरूरी और कामकी बहुत
ी बातें करनी हैं, और जितनी ही देरतक तुम मेरी बातें न सुनोगी,
मझ रखो, कि उतनी ही देरतक मैं बैठा रहूंगा।"

उसकी बातोंको सत्य समझ, तथा शीघ्रही उससे छुटकारा
ानेकी आशामें अर्नेष्टिनाने फिर कुर्सी पर बैठ कर उससे बोलनेका
शारा किया।

कौफिन बोला,—"अच्छा, शरीफ लेडी! अभी अभी मैं कह चुका
हूं, कि मिष्टर डाइसर्ट बड़े सङ्कटमें जा पड़े हैं और जहां तक मैं
समझता हूं, रेकर्डरकी रिपोर्ट आगामी सप्ताहमें प्रकट हो
जायगी। यदि इन दस दिनोंमें कोई उपाय न किया गया, तो सच-
मुच आपके पतिके लिये बड़ी ही खराबी उपस्थित हो जायगी। बहुत
वर्षों तक ओल्डबेली अदालतके मुकद्दमें देखते रहनेके कारण, मैं बता
सकता हूं, कि उनपर दया होने या उन्हें माफी मिलनेकी अब कोई
भी आशा नहीं रह गई है, क्योंकि सब जूरी ही उनके विपक्षमें हैं।
इससे यह निश्चित है—और मैं झूठी बातें कहकर आपको धोखा
भी नहीं दिया चाहता, कि आगामी सोमवारतक वे अवश्य फांसी
पर लटका दिये जायँगे। मैं उनका बड़ा सम्मान करता हूं और इसी
लिये यह पूछने आया हूं, कि इस अवस्थामें यदि मैं न्यूगेट जेलसे
उनके भागनेमें सहायता करूं तो आप मुझे क्या देंगी?"

यह सोचकर, कि डाइसर्टके भागनेसे उसका बना बनाया खेल
अरमभङ्ग हो जायगा, वह बोली,—"भागनेमें!"

उसके आश्चर्यका कारण न समझ कर कौफिनने कहा,—"हां
भागनेमें। मैं समझता हूं, कि मेरा प्रस्ताव सुन कर आप आश्चर्यमें

आगई हैं ? परन्तु मैं नहीं समझता, कि यह बिल्कुल ही असम्भव है। यदि असम्भव भी हो, तो उद्योग करना हमलोगोंका कर्तव्य है। आप जानती हैं, कि आपके पति बड़े शरीफ आदमी हैं और एक सम्भ्रान्त घरानेसे उनका सम्बन्ध है। इसलिये उनके साथ कितनी ही ऐसी रियायतें हो सकती हैं, जो बिचारे दरिद्र मनुष्य धन खर्च करने पर भी नहीं पा सकते। और क्योंकि बिना खाना-तलाशी हुए आप आसानीसे उनके पास जा सकती हैं, अतः एक रेती और छेनी उन्हें दे आना आपके लिये कुछ भी कठिन नहीं है। छेनी बड़े कामकी चीज है और लोहार लोग ही इसका सच्चा गुण जानते हैं। किसी ऐसी भारी दूकानके खोलनेमें यह बड़ा काम देती है, जिसमें खूब माल भरा हो। अब यदि किसी तरह मिष्टर डार्सटं अपनी कोठरीसे निकल कर सामनेकी छत पर आ जायँ, तो उस समय मैं अपने दलके मनुष्योंको तय्यार रखूंगा और वे आसानीसे न्यूगेट कैदखानेसे बाहर आ जायँगे। फिर एक चार पहियोंकी गाड़ी उन्हें दूर पहुंचादेगी—"

अर्नेष्टिनाने बड़ी घबराहटसे उसकी बातें सुनीं और अन्तमें बोली,—"इसके लिये मैं तुम्हें हार्दिक धन्यवाद देती हूँ, परन्तु तुम्हारा यह प्रस्ताव नहीं मान सकती। मेरे चाचा मार्क्विस ग्रेवसनने मेरे अभागे पतिके सम्बन्धमें एक प्रार्थना-पत्र प्रिन्स रीजेण्टके पास भेजा है और इससे उनके छुटकारेकी मुझे पूरी आशा है। यदि मिष्टर डार्सटं कैदखानेसे भागे और फिर पकड़े गये, तो उनके छुटकारेकी सब आशा धूलमें मिल जायगी। अतः मैं तुम्हारा प्रस्ताव नहीं मान सकती और तुमने मेरे पास आनेका जो कष्ट उठाया है, उसके लिये पांच गिन्नियां इनाम देती हूं—"

इतना कह और उसे गिन्नियां निकाल कर देनेके लिये, अर्नेष्टिना अपनी थैली उठाना ही चाहती थी, कि इसी समय नौकर

,र उस कमरेमें आकर बोला,—"मिष्टर सैम्पसन आपसे कुछ बातें
,रना चाहते हैं।"

दरवाजा खुलनेका शब्द सुनतेही डेनल उठ खड़ा हुआ था, इसो
,ये वह नौकर यह न देख सका, कि परिचितोंकी भांति कौफिन
नें ष्टिनाके पास बैठा हुआ है। बो-ष्ट्रोटके अफसरका नाम
,नतेही हैङ्गमैन बेतरह घबड़ा उठा। अर्नेष्टिना तुरतही समझ
ई, कि इस नौकरके सामनेही अब गोलमाल मचेगा और हैङ्गमैन
हीं छिपानेके लिये उससे कहेगा। इसलिये उसने तुरतही उस
,करसे कहा,—"मिष्टर सैम्पसनको बगलवाले कमरेमें बैठाओ।"

ज्योंही नौकर चला गया त्योंही अर्नेष्टिनाने जल्दीसे घबड़ाई हुई
,वाजमें कहा,—"क्या तुम्हारा यह खयाल है, कि उस अफसरने
,म्हारा पता पा लिया है? या तुम्हें यहां आते देख लिया है?"

कौफिन,—"ऐसाही कुछ मालूम होता है, परन्तु यदि यही
,त होती तो वह तुमसे भेंट करनेके लिये इजाजत न लेता, बल्कि
,पने सिपाहियोंके साथ इस कमरेमें एकाएक घुस आता अथवा
,नोमें खड़ा होकर मेरे बाहर निकलनेकी राह देखता रहता।"

,हूँ कहीथ * वाले मकानमें घटी हुई भयानक घटनाके एकाएक
,रण हो आतेही अर्नेष्टिनाने भयसे कांपकर कहा,—"परन्तु, मैं
,हीं समझती, कि उसे मुझसे क्या बातें करनी है?"

कौफिन,—"वह किसी तरह तुम्हें कष्ट न दिया चाहता होगा,
,हीं तो यहां आकर तुम्हें गिरफतार ही कर लेता? मैं इन लोगोंकी
, चालोंसे परिचित हूं। बहुत करके तो उसे मेरी गन्ध मिल
, है, परन्तु ठीक ठीक पता न लगनेके कारण, यह तुमसे पूछने
,या है, कि क्या मैं यहां आया था। जो हो, अब तुम उसे अधिक
, तक बाहर खड़ा न रखो।"

* देखो—५ वां खण्ड,—३७ वां परिच्छेद।

अर्नेष्टिना,—"नहीं, यह अच्छा न होगा। (डेकमैनकी बातों कुछ आशान्वित होकर पाच गिन्नियां टेबिल पर रखती हुई) कुछ ही घण्टबाद चुपचाप इस मकानसे चले जाना।"

इतना कहकर, अपने चेहरेके भावोंको ठीक करती हुई वह उस कमरेमें चली आई, जिसमें बैठा हुआ लारेन्स सेम्पसन उसकी राह देख रहा था। उसे देखतेही वह अदबसे उठ खड़ा हुआ और बड़ी नम्रतासे सलाम करके बोला:—

"मैं आशा करता हूं, कि संध्याके समय और जब, कि आप अपने पतिके मुकद्दमेके कारण ऐसी दुःखित हो रही हैं, मेरे यहां आने और मिलनेका कष्ट देनेके लिये आप मुझे क्षमा करेंगी, परन्तु मुझे विश्वास है, कि अपने मिलनेका कारण जब मैं कहूंगा, तब—"

अर्नेष्टिना,—"क्षमा मांगनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, मिस्टर सेम्पसन। मैं निःसन्देह इस समय बड़ी ही दुःखित हो रही हूं, परन्तु इससे आपको यह न समझना चाहिये, कि आपकी ओरसे मेरा कोई बुरा विचार है। मैं जानती हूं, कि मेरे पतिको गिरफ्तार करा आपने अपने कर्त्तव्यकाही पालन किया है।"

सेम्पसन,—"इस कृपाके लिये आपको धन्यवाद है।"

अर्नेष्टिना,—(एक कुर्सीकी ओर इशारा करके परन्तु वास्तवमें डेनल कौफिनको भाग जानेका पूरा अवसर देनेके लिये कुछ देर लगानेकी इच्छासे) "बैठ जाइये, मिष्टर सेम्पसन! और फिर बताइये, कि आपके यहांतक आनेका क्या कारण है?"

जिस समय अर्नेष्टिना इस तरह बातें कर रही थी, उस समय वह अपना चेहरा अत्यन्त दुःखित बनाये हुई थी और अब उसने आंसू पोंछनेके बहाने अपना रूमाल अपने मुंह पर लगा लिया, परन्तु वास्तवमें उसने रूमाल इस भयसे अपने चेहरे पर लगा लिया था, कि जिसमें कोई बुरी बात कह देने पर भी उसके चेहरे

ार चढ़ावको सेम्पसन न देख सके। यह अच्छाही हुआ, जो
ने इस तरह अपना चेहरा छिपा लिया, क्योंकि पहली हो
त, जो मिष्टर सेम्पसनने कही, उसीसे अर्नेष्टिनाका खून ठण्ढा पड़
गा और भय तथा सन्देहसे समूचा शरीर कांप उठा।

मिष्टर सेम्पसनने कहा,—"आप अच्छी तरह जानती हैं, कि
त जून मासमें हनोवर स्क्वेयरकी रहनेवाले सर आर्चिबोल्ड माल-
र्न एकाएक ऐसे लापता हो गये, कि उनका कुछ पताही न लगा।
ब उनके लड़के मिष्टर वलेण्टाइन या सर वलेण्टाइनने, उनके पता
गानेका पूरा पूरा भार मुझे सौंपा है, परन्तु अभी तक उनका
ता लगानेमें मैंने जो कुछ उद्योग किया अथवा जो कुछ पता
गाया है, उससे किसी तरह मेरा काम नहीं निकलता। पर
ाज सन्ध्याके पहले ही एक ऐसी घटना घटी, जिसने कि इस गुप्त
षय पर कुछ थोड़ा प्रकाश डाल दिया है।"

इतना सुनते ही सन्देह तथा भयके भयानक फन्देसे छूटनेके लिये
र्नेष्टिनाने अपने चेहरे परसे रूमाल हटा लिया और यह
खती हुई, कि सेम्पसनके चेहरे या व्यवहारसे कुछ बुराई नहीं
ालूम होती, वह साहस करके बोली,—"परन्तु इससे मेरा क्या
म्बन्ध है, मिष्टर सेम्पसन।"

सेम्पसन,—"इस घटनाका सम्बन्ध आपसे नहीं, परन्तु मिष्टर
डाइसर्टसे हो सकता है।"

अर्नेष्टिना,—"हे ईश्वर! मैं नहीं समझती, कि आप उन
पर फिर ऐसा दोष क्यों लगाते हैं? मिष्टर सेम्पसन! क्या अभी
उनकी भरपूर दुर्दशा नहीं . . ."

सेम्पसन,—(बात काटकर) "आप मुझे क्षमा करें। आपके
पतिपर मुझे किसी प्रकारका सन्देह नहीं हुआ है। आप मुझे सिर्फ
कुछ मिनटोंका समय दीजिये, मैं सब बातें आपको समझा देता

हूं। मैं अब आपको स्पष्ट रूपसे यह बता देना चाहता हूं, कि मिष्टर डाइसर्टको गिरफ्तारी बड़े ही विचित्र रूपसे वोची मिनर्से हुई है। यह गिरफ्तारी खास उसी बेनामी पत्रके कारण हुई है, जो उस दिन सवेरे ही वो ष्ट्रीटके थानेमें, किसीने भेजा था और जिसे मेजिष्ट्रेटने तुरत ही मेरे पास भेज दिया था।"

अर्नेष्टिना—(बड़े ही आश्चर्यसे) "एक बेनामी पत्र!"

इसपर सेम्पसनने अर्नेष्टिनाके हाथका लिखा हुआ वही पत्र, जिसके विषयमें पाठक पहले पढ़ भी चुके हैं * अपनी जेबसे निकाल कर उसे देते हुए गम्भीर चेहरा बना कर कहा,—"देखिये, यही वह पत्र है।"

अर्नेष्टिनाने कांपते हुए हाथसे वह पत्र ले लिया। जिस समय वह अपने लिखे उस पत्रको पढ़नेका बहाना दिखाने लगी, उस समय वास्तवमें वह अपने हृदयमें साहस लानेकी बड़ी चेष्टा कर रही थी।

मिष्टर सेम्पसनने उसके भावोंके परिवर्त्तनके वास्तविक कारण पर ध्यान न देते हुए; क्योंकि वे अर्नेष्टिनाके बनावटी दुःखको ही उसके घबड़ानेका कारण समझ रहे थे, कहा,—"इस पत्रको पढ़कर आपको और भी दुःख हुआ होगा। आप इस बेनामी पत्र भेजनेवालेकी धोखेबाजी पर मनही मन घृणा करती होंगी और शायद आप यह भी देखती होंगी, कि यह पत्र किसी स्त्रीके हाथका लिखा हुआ है।"

अर्नेष्टिना,—(बड़ा ही शोकपूर्ण चेहरा बनाकर) "आह! डाइसर्टने मुझसे कुछ भी नहीं कहा। वास्तवमें उसकी किसी प्रणयिनीने ही उसे धोखा दिया है, परन्तु इससे और सर आर्चिबोल्ड मालवर्नके लापता हो जानसे तो कोई सम्बन्ध नहीं है। इस पत्रमें तो उनका कोई जिक्र भी नहीं है।"

* देखो,—१म खण्ड—४४वां परिच्छेद।

सैम्पसन,—"इसका कारण भी मैं आपको बताता हूँ। मिष्टर बलेष्टाइन मालवर्न बराबर ही मेरे पास आया करते हैं। आज संध्याको भी वे अचानक मेरे मकानपर आ पहुचे और पूछने लगे, कि मैंने अभीतक कोई पता पाया है या नहीं। मैंने उन्हें अपने उसी कमरेमें बैठाया, जिसमें बैठकर मैं लिखा-पढा करता हूँ। उस कमरेके टेबिलपर बहुतसे कागज पत्र बिखरे हुए थे और यह पत्र भी खुला हुआ उसी टेबिलपर पडा था। उनकी दृष्टि अचानक इस पत्र पर जा पडी। तुरत ही यह पत्र उन्होंने उठा लिया और इसमें लिखी बातें तेजीसे पढ गये। बडे ध्यानसे इसके अक्षरोंको उन्होंने परीक्षाकी और फिर बोल उठे,—"यह वही है?" खुलासा यह, कि उन्होंने कहा, कि उनके पिताके कागजोंमें उन्हें एक चिट्ठी और भी मिली है, जिसके अक्षर ठीक इस पत्रके अक्षर सरीखे हैं, परन्तु उस पत्रमें तारीख,पता या हस्ताक्षर कुछ भी नहीं है और उसमें जो बातें लिखी हैं, उनसे एक विचित्र प्रेम प्रकट होता है। इससे उन्होंने यही मत तय निकाला, कि पत्र लिखनेवाला मिष्टर डाइसर्टसे परिचित है। शायद वह कोई खूबसूरत लेडी है,जिससे उसको न पटती होगी और उसीने डाइसर्टसे बदला लिया है। इसलिये यदि यह मालूम हो जाय,कि इस पत्रको लिखनेवाली कौन है,तो साथही यह भी मालूम हो जायगा,कि सर आर्चिबोल्ड मालवर्नसे किस स्त्रीका सम्बन्ध था। केवल इतना ही नहीं,बल्कि इस बातका पता लगनेपर लार्ड आर्चिबोल्ड मालवर्नके गायब हो जानेका पता भी लग सकता है। मिष्टर बलेषटाइन इसीलिये बार बार मुझसे तकाजा करते हैं और वे नहीं चाहते, कि यह रहस्य बिना खुले योंही पडा रह जाये।"

अर्नेष्टिना,—"यह तो स्वाभाविक—बिलकुलही स्वाभाविक बात है, मिष्टर सैम्पसन।" इसके बाद इस भयसे, कि कहीं सैम्पसन डाइसर्टको यह पत्र ले जाकर दिखाये और,उससे सब बातें पूछे, ता

डाइसटं अवश्य ही उसके अक्षर पहचान जायेगा, सेम्पसनका मत जाननेके लिये वह बोली,—"परन्तु आप मेरे पास क्यों आये हैं?"

सेम्पसन,—"मिष्टर मालवर्नने मुझसे कहा है, कि मैं एक बार आपसे मिलकर इस विषयमें पूछताछ करू, क्योंकि यद्यपि वे जानते हैं, कि इस अवसरपर आपको या आपके पतिको कुछ कष्ट देना उचित नहीं है, तथापि उन्हें विश्वास है, कि ऐसी आवश्यकताके समय, ऐसे विचित्र भेदके विषयमें, यदि आपलोगोंसे कुछ पूछा जायगा तो आपलोग बुरा न मानेंगे।"

अर्नेष्टिना,—"मिष्टर सेम्पसन! मैं इस अक्षरको बिलकुल ही नहीं पहचानती, न मैं यही समझती हूं; कि मेरे पतिके, एक स्त्रीके बदला लेनेके विचारसे डरनेका ही कोई कारण है। परन्तु यदि आप यह पत्र मेरे पास छोड जायँ तो मैं कल उनसे इस विषयमें पूछ रखूंगी।"

सेम्पसन,—"यदि आप इतनी दया करें तो बडा काम हो। मैं जानता हूं, कि यह काम आपके लिये बडा ही कष्टकर है और इससे आपके हृदयमें और भी आघात पहुचेगा, परन्तु जब आप यह चाहती हैं, कि इस गुप्तभेदका पर्दा खुल जाय... ..."

अर्नेष्टिना,—"अपने एक स्वजातीयके उपकारके लिये मैं अपने हृदयको कष्ट देनेके लिये तय्यार हूं। मेरा सर आर्चिबोल्ड मालवर्न तथा उनके पुत्रसे भी थोडा परिचय है। इसलिये यदि मेरे द्वारा उनका कोई उपकार हो सके तो इस शोकपूर्ण समयमें भी मेरे हृदयको कुछ शान्ति मिल जायगी।"

सेम्पसन,—(अपनी कुर्सीसे उठते हुए)"मिष्टर वलेण्टाइन मालवर्न आपके बड़े ही कृतज्ञ होंगे और मैं कल शामको आपके पास इसका परिणाम जाननेके लिये फिर आऊंगा।"

इतना कह कर बो ष्ट्रीटके अफसरने अर्नेष्टिनासे विदा ली,

जिसने इस मुलाकातका समय बड़ी ही घबड़ाहट, विषम सन्देह और भयानक भयमें बिताया था।

परन्तु ज्योंही सैम्पसनके उस कमरेसे बाहर निकलने और कमरेका दरवाजा बन्द होनेकी आवाज अर्नेष्टिनाके कानोंमें पड़ी, त्यों ही उसने वह पत्र अग्निदानमें डाल दिया। पत्र जलकर खाक हो गया और अब अर्नेष्टिना मन ही मन बोली,—"इस तरह डाइसर्टकी ओर, मेरी चली हुई चालका, यह प्रमाण भी नष्ट हो गया।"

अब उसका ध्यान डेनल कोफिनकी ओर आकर्षित हुआ। वह तेजीसे उस कमरेमें गई, जहां उसे छोड़ आई थी, परन्तु इस समय वह कमरा बिल्कुल ही खाली दिखाई दिया। अतः उसने निश्चय कर लिया, कि हैङ्गमैन मौका पाकर भाग गया है। अब अपने विचारोंको एकत्रकर वह एक टेबिलके बगलमें रखी हुई कुर्सी पर बैठ गई और निम्नलिखित पत्र लिखने लगी :—

"लेवेसन-हाउस, ११ अक्टूबर, १८१४ ई०

"लेडी अर्नेष्टिना श्रीमान प्रिन्स रीजेण्टको सलाम करती हुई प्रार्थना करती है, कि कल ११ बजे दिनको श्रीमान एकबार मुझसे मिलनेका सम्मान प्रदान करें। यदि कोई अन्य साधारण अवसर होता तो मैं श्रीमानको इस तरह कष्ट देनेका कभी साहस न करती। परन्तु आजकी अवस्था विचित्र और असाधारण है। इस लिये मुझे पूर्ण आशा है, कि श्रीमान मेरी प्रार्थनापर अवश्य ध्यान देंगे और दयाकर एकान्तमें एकबार मुझसे अवश्य मिलेंगे।"

पत्र समाप्त कर उसने लिफाफेमें बन्दकर दिया और मुहर लगाकर पता लिखनेके बाद अपने नौकरको बुलाकर, उसे कार्लटन-प्रासादमें दे आनेके लिये दे दिया। इस समय रातके दस बज चुके थे, आजकी घटनाओंसे अर्नेष्टिना बड़ी ही परेशान हो रही थी, इसलिये वह सोनेके कमरेमें चली गई।

परन्तु इस बीचमें वास्तवमें हैनल कौफिन क्या हुआ ?

जब अर्नेष्टिना उसे भोजनवाले कमरेमें छोड़कर चली आई, तब वह बहुत ही घबड़ा उठा, कि अब उसे क्या करना चाहिये। मिष्टर सैम्पसनको उस मकानमें देख, वह बहुत ही डर गया था और यद्यपि उसके आनेके कितने ही कारण वह अपने मन ही मन विचार जाता था, परन्तु उसका पापोहृदय उसे इस बातपर विश्वास नहीं करने देता था, कि सैम्पसन उसे पकड़नेके अलावा किसी दूसरे कारणसे यहाँ आया है। वह मन ही मन विचारता था, कि सैम्पसन उसका पता लगानेके लिये कोई बहाना ढूँढता हुआ यहाँ आ पहुँचा है और अवश्य ही गलीमें उसने अपने आदमी छिपा रखे होंगे। इसलिये हैनल कौफिन नतो वहाँसे निकल कर गलीमें ही जानेका साहस कर सका और न वह उस भोजनके कमरेमें ही अकेल ठहर सका, जिसमें कि अर्नेष्टिना उसे छोड़ गई थी; क्यों कि उसे पूरा सन्देह था, कि कोई न कोई नौकर आ जायगा और उसे अकेला देखकर शोर गुल मचाने लगेगा।

हैनल इस समय किंकर्त्तव्य विमूढ़ हो रहा था। उसने किसी निश्चित विचारसे नहीं, बल्कि केवल उन अस्थिर और अमानुषिक विचारोंके कारण, जो अकसर निराश मनुष्योंके हृदयमें उत्पन्न हो जाया करते हैं, धीरेसे भोजनवाले कमरेका दरवाजा खोला और बगलवाले कमरेमें झाककर देखने लगा। खानसामा भोजनके लिये चला गया था, इसलिये उसे उस कमरेमें लटकते हुए लैम्पकी काफी रोशनी रहने पर भी कोई मनुष्य नहीं दिखाई दिया।

इसी समय उसके मनमें एक विचार उत्पन्न हुआ। नौकरने उससे कहा था, कि मार्किस लेवेसन घरमें नहीं है और अपने चाचाकी अनुपस्थितिमें अर्नेष्टिना ही इस मकानकी मालिकिन हो रही है। इसलिये वह मन ही मन विचारने लगा, कि कुछ

घण्टोंके लिये, जबतक दूसरी रात नहीं आती है, यदि इसी मकान-के किसी कमरेमें मैं छिपा रहूं तो कोई हर्ज नहीं। यदि मुझे छिपा देख भी लेगी तो मेरे साथ किसी प्रकारका कठोर व्यवहार न करेगी, इसके अतिरिक्त यहां मैं सुरक्षित अवस्थामें रह सकूंगा। परन्तु भोजन क्या करूंगा? खैर, कुछ चिन्ता नहीं, अपने जीवनकी रक्षाके लिये मैं चौबीस घण्टोंतक आनन्दसे भूखा रह सकता हूं। यहांसे बाहर निकलकर लारेन्स सैम्पसनसे पकड़े जानेकी अपेक्षा तो भूखे रहना कहीं उत्तम है।

डेनल कौफिन भोजनके कमरेमें खड़ा होकर, बगलवाले कमरेमें झांकता हुआ, उतनी शीघ्रतासे ये बातें विचार गया, जितनी शीघ्रता केवल विचारकी गतिमें ही होती है। इस बार एक बात उसके मनमें और भी आई, जिससे वह प्रसन्न हो उठा और उसने तुरतही अपना मत निश्चित कर लिया। अब तेजीसे उस कमरेसे निकल, संगमरमरकी बनी सीढ़ियोंपर चढ़ता हुआ, वह ऊपर पहुंच गया और दरवाजा खोल भीतर घुस गया। यह बैठकवाला वही लाल कमरा था, जिसका जिक्र पहले भी आ चुका है*। इस समय भी उस कमरेमें आग जल रही थी, जिससे वह कमरा गर्म हो रहा था। शमादानोंमें दो मोमबत्तियां जल रही थी और टेबिलपर शराबकी दो बोतलें और बिस्कुटसे भरी एक रकाबी रखी हुई थी। यह जलपानका सामान मिसेस रवेनके लिये उस समय लाया गया था, जब वह मार्किसमे मिलनेके लिये आई थी।

ये सामान देखकर हैंगसेन बड़ाही प्रसन्न हुआ। वह जल्दीसे बोतलमेंसे ढालकर एक गिलास शराब पी गया। यह शराब उसे इतनी स्वादिष्ट मालूम हुई, कि दूसरी बोतल भी वह आधी साफ कर गया और फिर कुछही देरमें दोनों बोतलें उसने एक दम खाली

* देखो,—५ वां खण्ड १६ वां परिच्छेद।

कर डालीं। इसके बाद उसने बिस्कुट अपने कोटकी जेबमें भर लिये और इस तरह भोजनका सामान एकत्र कर, वह अब कमरोंकी तलाशी लेनेके लिये उठ खड़ा हुआ।

इस स्थानपर छिपे रहना असम्भव था, क्योंकि नौकर सोनेसे पहले आग और बत्ती बुझानेके लिये अवश्यही आता। फिर कहां छिपना चाहिये? अभी उसने मन ही मन यह प्रश्न किया ही था कि तुरत ही उसकी दृष्टि उस दरवाजेके सामनेवाले एक दूसरे दरवाजे पर जा पड़ी, जिससे वह इस कमरेमें आया था। अब वह उस दरवाजेकी परीक्षा करनेके लिये आगे बढ़ा, परन्तु वह बन्द दिखाई दिया। डेनल कौफिनके लिये यह कोई रुकावटकी बात न थी, क्योंकि उसकी जेबमें चाभियोंका गुच्छा मौजूद था। उसने दरवाजा बन्द देखते ही अपनी जेबसे चाभियां निकालीं और दरवाजा खोल डाला। इसके बाद एक शमादान हाथमें उठा, वह उस कमरेमें घुस गया। हम समझते हैं, कि हमारे पाठक समझ गये होंगे, कि डेनल उसी रहस्यमय कमरेमें घुसा था, जिसमें विनीशिया ट्रिलौनी उस समय बैठाई गई थी, जब वह मार्क्विस आफ लेवेसनसे मिलनेके लिये आई थी।*

उस पूर्व कथित छोटे पर भड़कीले और विलासिताके बहुमूल्य सामानोंसे सजाये हुए कमरेमें एक बार चारों ओर दृष्टि फेरते ही रैंगमेनने देख लिया, कि यहां भी शमादान रखे हुए हैं, जिनमें मोमबत्तियां लगाई हुई हैं। उसने एक बत्ती तुरत ही जला दी और किसीके दिलमें चोरीका सन्देह न उत्पन्न होने देनेके लिये, वह शमादान उसी बैठकखानेवाले कमरेमें, उसी स्थानपर रख आया, जहांसे उठा लाया था। इसके बाद वह फिर उसी छोटे कमरेमें वापिस चला आया।

*देखो,—५ वां खण्ड २१ वां परिच्छेद।

अब वह बड़ी प्रसन्नता और लालच भरी दृष्टिसे यह विचारता था, कि ऐसे ही एक सजे सजाये मकानका वह भी मालिक होता, स कमरेको बड़े ध्यानसे देखने लगा। दीवारकी बगलमें रखे ए सोफे, फूलोंके गुलदस्ते तथा भिन्न भिन्न बहुमूल्य सामानों- ो देखती हुई, उसकी दृष्टि चाँदीके उस लैम्प पर जा पड़ी, जो तसे लटक रहा था और इस समय जलता नहीं था। कुछ समय क उसे देखने बाद वह एक कुर्सी पर चढ़ कर, उसे और भी ध्यानसे देखने लगा और जब उसे यह विश्वास हो गया, कि यह असली ादीका ही बना हुआ है, तब वह बोला,—"जर्मी, इसका भरपूर ाम देगा। मैं समझता हूँ, कि यहांसे जाते वक्त खाली हाथ ौट जानेकी मुझे कोई आवश्यकता नहीं है।"

अपने इस विचार पर मुस्कराता तथा उस लम्पको अब अपनी ही ोज़ समझता हुआ वह उस कुर्सीसे उतर पड़ा। फिर उसने एक ोटी मोमबत्ती उठा ली और उस कमरेसे सटे हुए दूसरे कमरेमें चला या। यह एक छोटा, परन्तु उससे भी शानदार और भड़कीले सामा- ोंसे सजा हुआ सुन्दर कमरा था परन्तु इसमें सोफोंके बदले उत्तमो- ाम बहुमूल्य आराम कुर्सियां रखी हुई थीं, जिन पर स्प्रिंगदार खमली गद्दियां बिछी थीं। परन्तु यहां इस समय स्वादिष्ट मिठाई ा शराब नहीं थी, न यहांका लटकता हुआ बड़े ग्लोबवाला वह ैम्प ही जल रहा था, जैसा कि विनोप्रियाके आगमनके समयमें।

यहां कुछ ठहरे बिना ही डेनल आगे बढ़ा। उसने अपने ामनेवाला दरवाजा खोला और मोमबत्ती लिये तस्वीर तथा ूर्त्तियोंवाली गैलरीमें चला गया। पहले तो कारीगरीके इन िचित्र सामानों पर उसका विशेष ध्यान न जमा, परन्तु फिर तुरत ी उन सभोंने उसका ध्यान आकर्षित कर लिया और वह बड़े ाश्चर्य, विस्मय तथा प्रसन्नतासे उन पदार्थोंको देखने लगा। अब

गत परिच्छेदोंमें इन मूर्त्तियों तथा तस्वीरोंका वर्णन कर आये हैं परन्तु पाठकोंको यह बात ध्यानमें रखनी चाहिये, कि वहां सुन्दर मूर्त्तियोंकी ऐसी कितनी ही जमातें थीं, जो देखनेवालोंका ध्यान अपनी ओर आकर्षित कर लेती थीं। इस गैलरीके प्रारम्भसे अन्त तक कारीगरीके कामोंका बहुत ही उत्तम संग्रह था, मानो सजावटका यह सिलसिला, देखनेवालोंके मनमें, नङ्गी तथा कामोद्दीपक मूर्त्तियां और तस्वीरें दिखाकर, कामोद्दीपन करनेके लिये ही सजाया गया था।

ज्यों ज्यों डेनल कौफिन उस गैलरीमें आगे बढता गया, त्यों त्यों वह मनही मन विचारने लगा,—वाह! ये भले आदमी तो बड़े विचित्र हैं, जो अपने मकानमें ऐसे दृश्य बना रखते हैं। हे ईश्वर! यह तो बडी ही खराब बात है। यदि इसके पहले मुझसे कोई कहता, कि मैंने किसी शरीफ आदमीके यहां ऐसे दृश्य देखे हैं तो मैं कदापि विश्वास नहीं करता। मैं सुनता हूँ, कि यहाँ मार्क्विस लेवेसन लार्डस—सभामें बैठकर निम्न-श्रेणीके मनुष्योंके चालचलनके विषयमें लम्बी लम्बी वक्तृताएं झाड़ा करता है। पर असलमें ये बड़े आदमी बडे ही कपटी होते हैं—बल्कि पद-मर्यादा वाले रहकर भी धोखेबाज रहते हैं। ओह! कैसी कैसी मूर्त्तियां हैं कैसी कैसी तस्वीरें हैं!! जितना ही मैं इस गैलरीमें आगे बढता हूँ उतनी ही अश्लीलताकी भरमार दिखाई देती है। मैं समझता हूँ कि मार्क्विस भोलीभाली लेडियोंको फुसलाकर यहां लाता होगा पर मुझे आश्चर्य है, कि क्या उसकी भतीजी अर्नेष्टिनाने भी कभी इस गैलरीमें पैर रखा होगा? यदि वह यहां आई है, तो वह भी वैसी ही खराब है, जैसी कि उसे होना चाहिये और मैं जोर देकर कह सकता हूँ, कि वह भी अच्छी नहीं है। मिन्स वीची सेनरमें उस दिन उसीकी सुन्दरता पर लट्टू हो गये थे*। परन्तु कुछ भी हो, डाइसर्टने अपनी

* देखो,—५ वां खण्ड, ७वा परिच्छेद।

यही विचार स्थिर कर हैंगमैनने मोमबत्ती टेबिल पर रखदी और एक आराम कुर्सी पर बैठ गया। परन्तु ज्योंही उसने उस कुर्सी पर अपना शरीर रखा, त्योंही घडीकी टनटनाहटके समान एक आवाज उसके कानोंमें पडी और दूसरेही क्षण उस दगाबाज कुर्सी से दो हथकडियां निकल कर उसकी दोनों कलाइयोंमें जकड गई और कुर्सीके पीछेसे दो फौलादकी पट्टियोंने उछलकर उसके दोनों कन्धोंको मजबूतीसे पकड लिया।

कुर्सीसे छुडानेके लिये वृथाही उद्योग करता हुआ हैंगमैन बोला,—"सर्व्वनाश!"।

यदि कोई बडा अजगर भी उसके शरीरसे लिपट गया होता, तो उसका परिश्रम इतना वृथा और निष्फल न जाता, जितना कि इस कुर्सीके साथ गया, क्योंकि वे हथकडियां किसी तरह छूट नहीं सकती थी, फौलादकी पट्टियां उसका कन्धा अच्छी तरह जकडे हुए थीं और उस कुर्सीके पाये इस तरह जमीनमें गड़े हुए थे, कि किसी तरह निकल नहीं सकते थे।

यह देख कर, कि अब परिश्रम करना वृथा है तथा अपने उद्योगसे थककर, हैंगमैनने उस धोखेबाज कुर्सी से अपने छुडानेका, उद्योग करना त्याग दिया और उसके मुंहसे एक चीख निकल पडी। साथ ही उसके समूचे शरीर पर भयका पसीना उमड आया, जिससे उसकी कमीज भींजकर इस तरह उसके शरीरसे सट गयी, जिस तरह कि मुर्दके शरीर पर कफन सटा रहता है।

साठवां परिच्छेद ।

अर्नेष्टिना और प्रिन्स ।

गत परिच्छेदमें कही हुई घटनाके दूसरे दिन, ग्यारह बजे दिनके समय, अर्नेष्टिना उसी लाल बैठकखानेवाले कमरेमें अकेली बैठी हुई थी ।

वह एक पियानो बाजेके पास बैठी हुई थी और उसके चेहरे तथा हावभावसे मालूम होता था,कि वह अपने उस पार्टका अभ्यास कर रही है, जो थोड़ीही देर बाद उसे खेलना पड़ेगा । यद्यपि बाजा उसके पास ही रखा हुआ था , परन्तु हमारे कथनका सम्बन्ध इस स्थान पर बाजेके साथ बिल्कुल ही नहीं है, बल्कि प्रणयकी छलना और कुपथ पर लेजानेवाले प्रलोभनोंसे है ।

उसके बड़े बड़े केश, संगमरमरके समान उज्वल मस्तकके ऊपर बड़ी सुन्दरतासे एकत्र कर बांधे हुए थे और इस तरह एकत्र किये गये थे, जिससे उसके छोटे छोटे पर सुन्दर कान स्पष्टरूपसे दिखाई देते थे । उसने इस समय ऐसी भड़कीली पोशाक पहनी थी, जिस से उसका मनोहर रूप और भी मनोमोहक होगया था। उसके दोनों सफेद कन्धे खुले हुए थे और उनके नीचे उसके उन्नत उरोजों-का उभार स्पष्ट दिखाई देता था। वह बाजेकी ओर मुँह किये बैठी थी , इससे उसकी चमकीली और सुडौल नाकका झुकाव इतना सुन्दर मालूम होता था, कि उसके झुकावकी सुन्दरता पर संसारके सब पदार्थ न्योछावर किये जा सकते थे और अपनी मोहनेवाली शक्ति तथा प्रणयकी छलनाका पूर्ण ज्ञान रहनेके कारण वह जानती

थी, कि इस ढंगसे बैठने पर, देखनेवालोंको आखोंमें उसकी सुराही दार गर्दन तथा छातीके ऊपरका भाग, बड़ाही सुन्दर दिखाई देता।

उसका विलासपरायण और भोगपूर्ण आधा शरीर उस समय ऊंचा उठा हुआ था, जब वह बड़ी शानसे बाजेकी ओर झुकी हुई थी। उसकी दृष्टिमें बड़ी ही कोमलता और सरलता भरी थी, जिससे उसका सौन्दर्य और भी बढ़ा हुआ मालूम होता था। साराश यह, कि उसका समूचा शरीर इस समय विलास वासना से आलस्यमय और भोगइच्छासे परिपूर्ण दिखाई देता था। बड़ी बड़ी पलकोंके नोचेसे उसकी मदोन्मत्त अधखुली आखें प्रेमबाण छोड़ रही थीं और उसके शरीरकी ऊंचाई और सुघड़ाई भी वैसी ही विलासपरायणता दिखा रही थी, जैसी कि उसकी आखें खजरका काम कर रही थीं।

अक्टूबरके महीनेका ठण्डा, शीतमय दिवस था, आकाश धुंधला हो रहा था और बर्फीली हवा बह रही थी, परन्तु ऐसे समयमें भी लाल बैठकखानेकी हवा गर्म और सुगन्धमय हो रही थी। आतिशदानमें आग जल रही थी और चीनी मिट्टीके गुलदस्तोंसे बड़ी ही मधुर सुगन्ध निकल कर चारों ओर फैल रही थी।

परन्तु ज्यों ही वहा रखी हुई टाइम्पीस घड़ीमें ग्यारह बजे, त्यों ही अर्नेष्टिनाने अपना चेहरा वैसा ही विषादमय तथा चिन्तापूर्ण बना लिया, जैसा कि पियानो बाजेके पास बैठकर बनानेका कुछ देरसे वह अभ्यास कर रही थी, क्योंकि इसी समय एक गाड़ी उसके दरवाजे पर आ लगी और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह जानती थी, कि इसमें कौन आया है। अस्तु,

इसके एक मिनट बाद ही एक नौकरने आकर प्रिंस रोजेण्डके आनेकी सूचना दी और फिर दरवाजा बन्द करता हुआ लौट गया परन्तु, अर्नेष्टिना ज्योंकी त्यों उसी विषादमय अवस्थामें बैठी रही।

मानो वह अपने विचारोंमें इतनी मग्न हो रही थी, कि न तो उसे प्रिन्सके आनेकी आहट ही मिली और न उस नौकरको उनका नाम लेतेही उसने सुना।

हम इस समय यह बता देना उचित समझते हैं, कि अर्नेष्टि-नाका पत्र पाकर ही प्रिन्स वहां आये थे। वे नहीं, जानते थे, कि उन्होंने उस स्त्रीको कभी देखा है या नहीं, परन्तु उन्होंने उसकी सुन्दरताकी बड़ी तारीफ सुनी थी, और प्रिन्स ऐसे आदमियोंमें थे, जो बिना ऐसे समाचारोंकी जाच किये, कभी छोड़ देना नहीं चाहते। इसके अलावा उन्होंने यह भी विचारा, कि सम्भव है, कि उस स्त्रीको अपने चाचा मार्किस लेवेसनके सम्बन्धमें, कोई आवश्यक बात उन से कहनी हो, जिनके फ्रांस जानेका समाचार उन्हें पहले ही मालूम हो चुका था। इसी प्रकारके कई ऐसे कारण थे, जिन्होंने अर्नेष्टिना-का पत्र मिलते ही प्रिन्सको उससे मिलनेके लिये बाध्य किया,परन्तु, अब ज्योंही प्रिन्स उस कमरेमें घुसे (जिसमें अर्नेष्टिना बैठी हुई थी,) त्योंही उसकी दुःखजनक अवस्था और शोकपूर्ण सूरत देखकर आश्चर्यसे चकित रह गये।

अभी भी अर्नेष्टिना बाजेकी ओर ही झुकी हुई थी, इससे उस-को पीठ दरवाजेकी ओर पड़ती थी। प्रिन्स उसकी गर्दन और कन्धोंकी गोराई, माथेकी सुघड़ाई और समूचे शरीरकी बनाई देखकर कुछ क्षण तथा आश्चर्यसे उसकी ओर देखते रहे। इसके बाद वे कई कदम और भी आगे बढ़ गये, जिससे अर्नेष्टिना के आधे शरीरकी वह विलासपरायणता उन्हें दिखाई देने लगी, जो बाजेका ओर झुके रहने पर भी उन्नत तथा मदोन्मत्त मालूम होता था। यह सब देखते देखते प्रिन्सकी दृष्टि अर्नेष्टिनाके उन्नत उरोजोंपर जाकर ठहर गई और इसी समय अर्नेष्टिनाने यह भाव दिखाते हुए, कि मानो अभी तक इसे प्रिन्सके आनेकी खबर ही

नहीं है, बाजेके पर्दों को अपनी नाजुक उँगलियोंसे दबाना आरम्भ कर दिया।

वह बाजा बजानेमें बड़ी चतुर थी, इसलिये बाजेके पर्दों पर उँगली पड़तेही बाजेने ऐसी मधुर और चित्ताकर्षक तान अलापी, कि प्रिन्स और भी मुग्ध हो गये। बाजेकी मधुर ध्वनिने प्रिन्सके हृदयमें और भी कुप्रवृत्ति जगा दी और इसके साथ ही साथ अर्नेष्टिनाके सुन्दर तथा सुघड़ शरीरने, जिसे इतने देरसे प्रिन्स एक टक देख रहे थे, उन्हें कामोन्मत्त कर दिया। कमरेकी गर्मी और गुलदस्तेमें रखे हुए फूलोंकी सुगन्धने कामका प्रभाव इतना बढ़ा दिया, कि जिससे प्रिन्सका समूचा शरीर कांप उठा। वह मन्त्र-मुग्धकी भांति खड़े रह गये, उनकी नसोंमें कँपकँपी पैदा हो गई, उनके चेहरेका रंग और भी गहरा हो गया और उनकी आंखोंसे कामाग्निकी तेज लपट निकलने लगी। उस समय ऐसा मालूम होता था, मानो किसी अदृश्य स्वर्गका दरवाजा उनके लिये खुल गया है, जब उन्होंने यह देखा, कि एक ऐसा रमणीय पदार्थ उनके खजानेमें आ पहुंचा है।

अब धीरे धीरे अर्नेष्टिनाने अपना चेहरा इस ढगसे बाजेकी ओर घुमाया, कि प्रिन्सने उसके मनोहर मुखमण्डलका आधा भाग देख लिया और कमरेमें लाल पर्दे लगे रहनेके कारण रोशनीकी जो लाल आभा झलक मार रही थी, वह इस ढगसे अर्नेष्टिनाके मनोहर चेहरे पर पड़ी, कि प्रिन्स उसकी झलक देखते ही किसी बातका स्मरण आ जानेके कारण, और भी चकित रह गये परन्तु अर्नेष्टिना अभीतक यही भाव दिखा रही थी, कि उसने प्रिन्सको नहीं देखा है। अब उसने ऐसी मधुरतासे बाजा बजाना आरम्भ कर दिया था, कि उसकी मधुर, मनमोहक तथा चित्ताकर्षक ध्वनि सुन प्रिन्स जहांके तहां ठिठककर खड़े रह गये थे।

अब वह मनोहर चेहरा उन्हें अच्छीतरह याद आगया, उन्होंने चमकीले सुनहरे केश भी पहचान लिये और ऊँची तथा कमान सी भौंहें भी उनसे छिपी न रहीं। उन्होंने रेशमसे चमकनेवाले केश-गुच्छ तथा बड़ी बड़ी काली आँखें देख लीं, उन्होंने उस खमदार नाकका भी पता पा लिया तथा पतले पतले ओठोंकी बात भी उन्हें स्मरण हो आई। इसके बाद फिर उनकी दृष्टि अर्नेष्टिनाके उन उभाड़दार पयोधरोंपर जा जमी जो इस समय धौंकनीकी तरह उठ बैठ रहे थे और बर्फसे सफेद रहने पर भी दृष्टिमें गर्म और उत्तेजक मालूम होते थे। अर्नेष्टिनाके चेहरेका प्राकृतिक हल्का गुलाबी रंग, धीरे धीरे लाल होता जाता था। उसकी गर्दनपर भी लालिमा आ गई थी और धीरे धीरे वह लालिमा उसके उभाड़दार कुचोंतक आ पहुँची थी। जितनाही ध्यान देकर प्रिन्स उसके बदनकी ओर देखते थे, उतना ही उन्हें विश्वास होता जाता था, कि उनके रसिक ओठोंने उन गुलाबी गालोंका अगणित चुम्बन किया है, उनके हाथोंने उन उभाड़दार जोबनोंका अच्छी तरह आनन्द लूटा है और एक समय वह समूचा शरीर प्रेमसे उनके शरीरसे लिपट चुका है।

अब बड़ी लापर्वाहीसे अर्नेष्टिनाने अपना माथा उठाया और प्रिन्सकी ओर अपनी चञ्चल आंखे फेरीं। ये वेही बड़ी बड़ी मारू आँखें थीं, जिन्होंने एकबार पहले भी काम-बाण छोड़ कर उन्हें कामोन्मत्त बना दिया था। हां, अब प्रिन्स इस सन्देहकी अवस्था में न थे, कि कब और कहा उन मदनोन्मत्त नयनोंने उनपर अपना तीर चलाया था। इसीलिये अब अर्नेष्टिनाके पास आ और घुटनेके बल बैठ कर प्रिन्सने कहा,—"हे ईश्वर! क्या तुम वही अपरिचित सुन्दरी हो, जो अब अपरिचित नहीं रहीं, अर्नेष्टिना!"

तुरतही प्रिन्सके गलेमें अपना गोरा गोरा मुलायम हाथ डालकर अर्नेष्टिना बोली,—"आह! तब आप मुझसे नाराज नहीं हैं, प्यारे प्रिन्स?"

"तुमसे नाराज!! असम्भव!!" प्रिन्सने बड़े प्रेम और तपाकसे उसे अपने शरीरसे लिपटाते तथा उसके कोमल कपोलोंका अगणित चुम्बन लेते हुए कहा,—"परन्तु इस रहस्यका क्या अर्थ है? (उठकर कुर्सी पर बैठते हुए) क्या तुम सचमुच ही लेडी अर्नेष्टिना डारसर्ट,—मेरे मित्र मार्किस लेवेसनकी भतीजी हो? यदि यही बात है, तो उस रातके उपद्रवोंके रहस्य और प्रेमका क्या मतलब था?"

यह सुन प्रिन्सपर बड़ी ही प्रेमपूर्ण दृष्टि डालती हुई, अर्नेष्टिना बोली,—"प्यारे प्रिन्स! जरा सब्र कीजिये, मैं आपको सब बताऊँगी। परन्तु क्या आप दयाकर मेरी बातें सुनेंगे।"

प्रिन्स,—(बीचोमेनरमें बीतनेवाली रातके समान ही इस समय भी उनका माथा घूम जानेके कारण) "मैं तुम सरीखी सुन्दरीके लिये सब कुछ करनेको तय्यार हूँ। आह! मुझे आज कितनी प्रसन्नता प्राप्त हुई है, कि हमलोग फिर इस तरह एकाएक मिले हैं, (उसके गाल, गर्दन तथा उरोजोंका चुम्बन लेते हुए) अच्छा, अब यह बताओ, कि तुम क्या कहना चाहती हो? इसके बाद फिर प्रेम—केवल प्रेमकी बातें होंगी।"

इसपर अर्नेष्टिनाने ऐसी मधुरता भरी दृष्टिसे देखते हुए कहा, कि प्रिन्सकी रग रगमें कामका रक्त खौलने लगा, क्योंकि इतना कहते कहते उसके ओठ बेतरह लाल हो गये, नाकसे नन्दनवनकी समान मनोहर सुगन्ध निकलने लगी और दृष्टि बिजलीके समान प्रिन्सके हृदय पर प्रभाव जमाने लगी,—"यदि आपकी इच्छा हो तो कुछ मिनटोंके लिये ध्यानसे मेरी बातें सुन लीजिये।"

उसके कन्धे पर माथा रखते हुए प्रिन्सने कहा,—"मुझे अपना

पर यहीं रखनेदो और अब कहो। मैं ध्यानसे तुम्हारी बातें सुनूंगा।"

अर्नेष्टिना—"अच्छा, सबसे पहले तो आपको यह जान लेना चाहिये, कि मैं वही अर्नेष्टिना हूं, जिसके विषयमें आप अभी कह चुके हैं, और मार्क्विस लेवेसन मेरे चाचा हैं। उस बदमाश डाइसर्टसे विवाह होनेके पहले, मेरे चाचाने मुझे कभी आपके सामने जाने नहीं दिया। वे मुझे आपके सामने न होने देनेके विषयमें बराबर सावधान रहते थे—"

प्रिन्स,—(दांत पीसकर) "आह! चालाक कुत्ते! वह खूब जानता है, कि तुम्हें देखना और प्यार करना बराबर है। अच्छा, आगे कहो अर्नेष्टिना! बोलो—"

अर्नेष्टिना—"इसके अतिरिक्त न तो वे कभी मुझे ऐसे नाच या जलसोंमें जाने देते, जहां आपसे भेंट होनेकी सम्भावना होती। वे मुझे राज दरबारमें न जाने देनेका एक न एक बहाना सदा ही निकाला करते थे। मेरे विवाह—अभागे, दुःखपूर्ण तथा घृणास्पद विवाहके बाद—"इतना कहते कहते अर्नेष्टिना चुप होगई।

प्रिन्स,—"आह, तब तुम अपने पतिको प्यार नहीं करतीं?"

अर्नेष्टिना,—(बेसब्रीसे) "मैं घृणा, उपेक्षा तथा नफरत करती हूं, (बहुत ही धीमी आवाजमें) बल्कि मैं आपको प्यार करती हूं।"

प्रिन्स,—(उसे कलेजेसे लगाकर तथा कुछ समयके लिये विनोशियाको भी भूलकर) "ऐ परी! इस कृपाके लिये धन्यवाद है। परन्तु तुम अभी क्या कह रही थी? हां हां, तुम्हारी शादीके बाद—"

अर्नेष्टिना,—"मैं उस समाजसे ही बाहर निकाल दी गई, जिसमें रहनेपर राजकुमारसे मिलनेकी सम्भावना थी।"

प्रिन्स,—"मुझे राजकुमार न कहो, प्रिये! मुझे केवल आर्थर या और जो चाहो कह सकती हो।"

अर्नेष्टिना,—(प्रिन्सके ओठसे आपने ओठ सटाकर) "प्यारे जार्ज! मैं बहुत बड़ी कहानी कह आपको कष्ट न दूंगी। आप जानते हैं, कि डाइसर्टने द्वन्दयुद्धमें सेफ्टनको मार डाला है।"

प्रिन्स,—"और इसीलिये काल उसे फांसीकी आज्ञा हुई है। परन्तु उस कागजमें क्या लिखा था, जिसपर मैंने दस्तखत किया था?"

अर्नेष्टिना,—(सोफाके नीचेसे एक पुर्जा निकालकर प्रिन्सके हाथमें देती हुई) "लीजिये, देखिये, प्यारे जार्ज!"

प्रिन्सने अपने भोग-सुखके विचारोंको कुछ क्षणके लिये मनसे हटाकर वह कागजका टुकड़ा ले लिया, परन्तु जब उन्होंने देखा कि वह उनकी ओरसे अर्नेष्टिना डाइसर्टके नाम लिखा हुआ एक एकरारनामा है, जिससे यह प्रतिज्ञा कराई गई है, कि कैसा भी अपराध उसके पतिका क्यों न हो, और कैसी भी सजा उसे क्यों न दी गई हो, वह बिल्कुल माफ कर दी जाय; तो वे घृणापूर्ण दृष्टिसे अपने पास बैठी हुई सुन्दरी अर्नेष्टिनाकी ओर देखने लगे, और बोले,—"इस एकरारनामेको लिखवानेवालोंके दलमें तुम भी तो सम्मिलित हो?

"सुनिये, सुनिये, मेरे प्यारे जार्ज!—मेरी बातें सुननेके पहले ही अपनी राय पक्की न कर लीजिये।" यह बात ऐसी चतुरता तथा अपने प्रेमके आवेगको इतना बढ़ाकर और काम उत्पन्न करनेवाले अपने जादूका प्रभाव प्रिन्स पर इतना अधिक डालते हुए अर्नेष्टिनाने कही, कि प्रिन्स एक बार फिर कांप उठे।

प्रिन्स,—"मेरी प्यारी! यदि तुम्हारा कुछ भी प्रेम या प्रीति मुझ पर है, तो इस पुर्जेको अभी फाड़ डालो।"

अर्नेष्टिना,—(बड़ा ही गम्भीर भाव धारण कर) "आप भले ही इसे फाड़ डालें, परन्तु इतना समझ लें, कि इस अवस्थामें

रा तो सर्वनाश हो हो जायगा, परन्तु आपका भेद भी खुल जायगा।"

प्रिन्स,—(जोरसे चिल्लाकर) "इसका क्या मतलब है?"

अर्नेष्टिना,—"इस कागजके नष्ट होते ही डाइरट बीचो मेनरका काण्ड सबसे कह देगा। इस तरह मेरे सम्मानमें तो बट्टा लगी होगा, परन्तु आप भी अछूते न बचेंगे।"

प्रिन्स,—(घबराहटसे) "परन्तु क्या तुम इस एकरारनामेके अनुसार ही मुझसे काम भी लिया चाहती हो? क्या तुम चाहती हो, कि मैं अपनी शक्तिका प्रयोग कर, तुम्हारे पतिको माफी दिला दूं? मुझे याद है, कि तुम अभी अभी कह चुकी हो, कि तुम उससे घृणा, उपेक्षा तथा नफरत करती हो।"

अर्नेष्टिना,—"हां, मैं वही बात फिर भी कहती हूं। मैं उससे, घृणा, उपेक्षा तथा नफरत करती हूं। यही कारण है, कि मैं उसे उसके भाग्यपर छोड़ देना चाहती हूं और इस कागजको न फाड़ डालनेके लिये आपसे कहती, बल्कि प्रार्थना करती हूं, कि मुझे अन्त तक उस बदमाशको धोखा देने और छलनेमें सहायता दीजिये। इस तरह वह हमलोगोंके भेद न जान सकेगा, वह इस रहस्यको गुप्त ही रखेगा, क्रोध या शोकके आवेशमें संसारमें यह भेद प्रकट न करेगा और आप अथवा मेरी इज्जतमें बट्टा भी न लगेगा।"

प्रिन्स,—"परन्तु प्यारी अर्नेष्टिना! इसके लिये तुमने कौन सा उपाय सोच रखा है? और किस तरह तुम अपना मतलब निकालना चाहती हो?"

"अच्छा ध्यानसे सुनिये।" इतना कह प्रिन्सके गलेमें हाथ डालकर अर्नेष्टिनाने प्रिन्सको इस तरह अपनी ओर खींच लिया, कि उनका कान अर्नेष्टिनाके मुंहके पास आ गया। अब उसने १५१ धीरे धीरे उनके कानमें कुछ कहा।

प्रिन्स,—(बड़ी ही मधुर तथा प्रसन्नता भरी आवाजमें) "हां, इस तरह यह काम हो सकता है, और इसी तरह होना भी चाहिये। परन्तु क्या तुममें इतनी शक्ति, साहस और आत्मबल है, कि इस तरकीबको आखीर तक निबाह ले जाओगी ?"

अर्नेष्टिना,—(रोनी सूरत बनाकर) "मैंने उसके हाथों बड़ा दुःख सहा है। मैं कसम खाकर कह सकती हूँ, कि मैं बदला लेनेमें भी उतनी ही जबर्दस्त हूँ, जितनी, कि प्रेम, प्रीति तथा भक्ति दिखानेमें।"

प्रिन्स,—(फिर प्रेमके आवेशमें आकर) "प्यारी अर्नेष्टिना! मैं तुम्हारा विश्वास करता हूँ और यह भी विश्वास दिलाता हूँ, कि मैं तुम पर पूरा भरोसा करता हूँ, मैं तुम पर ही निर्भर हूँ।"

अर्नेष्टिना,—(प्रिन्सकी ओर अपना दूना प्रेम दिखाती और प्रिन्सको अपने प्रेम-जालमें उलझाती हुई) "मेरा प्रेम ही मेरी अकपटताका पूरा प्रमाण है।"

प्रिन्स,—"अच्छा अब यह बताओ, कि इस एकरारनामे पर मैं और क्या लिख दूं और इसके बाद फिर हमलोग प्रेम—केवल प्रेमके विषयमें बातें करेंगे।"

इतना कह प्रिन्स अपने स्थानसे उठकर उस टेबिलके पास चले गये, जिस पर लिखनेका सब रखा हुआ था।

प्रिन्स,—(हाथमें कलम उठा, लिखनेके लिये तय्यार हो कर) "अब बताओ, मेरी उपदेशिका! कि मैं क्या लिखूँ ?"

अर्नेष्टिना,—(प्रिन्सके गलेमें एक हाथ डालकर, उसके ऊपर झुकती हुई) "अच्छा, इस तरह लिखिये—'मैंने यह कागज दुबारा देख लिया है और इसमें किये हुए एकरारको दुबारा स्वीकार करता हूँ।' अब तारीख देकर दस्तखत कर दीजिये, बस इतनेमें ही काम बन जायगा।"

प्रिन्स,—"अच्छा, यह लिख दिया और इतना लिखकर मैं अपना

हुए हुआ हूं। तुम नहीं जानतीं, कि मैं गोलमालसे कितना भागता हूं। मैंने आनन्दसे दिन बितानेके लियेही इस संसारमें जन्म लिया है, कामसे माथा पचानेके लिये नहीं। आओ, अब एक बार फिर अपने मुँहसे कहो, कि तुम वास्तवमें मुझे हृदयसे प्यार करती हो।"

अर्नेष्टिनाने वह कागज उठाकर एक आलमारीमें बन्द कर दिया, और फिर एक सोफा पर प्रिन्सके बगलमें बैठ गई। इसी समय प्रिंसकी दृष्टि उस रहस्यमय कमरेके दरवाजेपर जा पड़ी और साथ ही कोई बात स्मरण हो आनेके कारण उन्होंने कहा,—"मेरी प्यारी अर्नेष्टिना! क्या तुम कभी उन सामनेवाले कमरोंमें गई हो?"

अर्नेष्टिना,—"नहीं, कभी नहीं। ये मेरे चाचाके गुप्त कमरे हैं और वे अपने विश्वास पात्र खानसामा स्टीफेन ब्लौकमैन तथा मकान रक्षकके अतिरिक्त किसी दूसरेको उनमें जाने नहीं देते।"

प्रिंस,—(तस्वीरोंवाली गैलरीमें लेजाकर अर्नेष्टिनाकी कामाग्नि भड़कानेकी इच्छासे) "और क्या आश्चर्य अथवा कौतुहलवश भी कभी तुमने उन कमरोंमें जानेकी कोशिश नहीं की?"

अर्नेष्टिना,—"सच तो यह है, कि मैंने कई बार इच्छा की, परन्तु मौका ही न मिला, क्योंकि दरवाजेमें हमेशा ताला बन्द रहता है।"

प्रिंस,—(उसका कपाल चूम कर) "वाह, छलनामयी ललना! तब तुम दरवाजेकी परीक्षा कर चुकी हो।"

अर्नेष्टिना,—(हँसकर) "क्या आप नहीं जानते, कि स्त्रियोंका प्रेम जितना प्रबल होता है, उनका कौतुहल भी उतनाही जबदस्त होता है, परन्तु क्या आपने कभी वे कमरे देखे हैं?"

प्रिंस,—"हां, मैंने देखे हैं और मैं दावेके साथ कह सकता हूं, कि उनमें बहुमूल्य मूर्त्तियों और तस्वीरोंका बड़ा ही मनोमोहक संग्रह है। आह! मैं वहां तुम्हारे साथ जाकर कितना प्रसन्न होऊंगा।"

अर्नेष्टिना,—"यह असम्भव है, क्योंकि दरवाजेमें ताला बन्द है और ब्लौकमैनके पास चाभी रहने पर भी मैं उनमें जा नहीं सकती।"



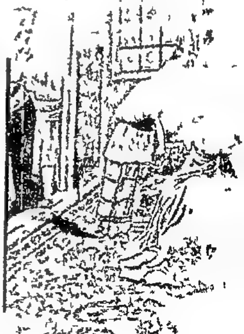
शीशमहल।

सम्राट-अकबरके सेनापति ... लगढ़-दुर्ग" पर चढ़ाई करना, गुलशनाकी फरियादपर दस्तन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, बाजबहादुरकी सुन्दरी "रूबिया" पर दस्तन्दरका मोहित होना, आदि अपूर्व घटनायें दी गयी हैं हाफटोनके कई सुन्दर चित्र भी हैं। दाम सिर्फ ॥)

पता—आर० एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड,

शोणित-तर्पण।

सन् १८५७ के जिस भयानक "गदर" (बलवे) ने सारे "भारतवर्ष" में प्रचण्ड विद्रोहाग्नि फैला—दिल्ली, कानपुर बिठूर मेरठ और लखनऊ आदि स्थानों को सजीव 'समरक्षेत्र' में परिणत कर दिया था और "इङ्गलैण्ड" में भी भयानक हलचल मचा दी थी, उसी 'गदर' या 'सिपाही-विद्रोह' का इसमें पूरा हाल दिया गया है साथ ही उत्तमोत्तम ७ चित्र भी लगाये गये हैं। दाम १॥) आ०



पता—आर० एल० बर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

लण्डन-रहस्य

छठवां खण्ड।



"मिस विनीफ्रिया ट्रिलोनी और होरेस सेकाविल।"

YSTERIES OF THE COURT OF LONDC

2nd Series.] 1917 [Volume VI

त संख्या ८)

संख्या ३२

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन ।

दूसरा भाग ।

छठवां खण्ड ।

एकसठवां परिच्छेद ।

कुर्सीका कैदी ।

यह चिल्लाहट सुनतेही प्रिंस कपड़ा पहननेवाले कमरेसे झपट कर अर्नेष्टिनाकी सहायता देनेके लिये उस कमरेमें जा पहुंचे। अर्नेष्टिना उस मनुष्यका ऐसा भयानक चेहरा देख कर, जिसे न तो वह देखना चाहती थी और न मृत्युके समय भी जिससे मिलना चाहती थी, भयानक आतङ्कसे घबरा उठी थी। वह उसे उस स्थान पर देखकर पीछे भागना चाहती थी, क्योंकि ब्लैकहीथवाली घटना उसके हृदय पर इस तरह जम गई थी, मानो तपाये हुए लोहेसे दाग दी गई हो।

ब्लैकमैनपर दृष्टि पड़तेही प्रिंस बोल उठे,—"यह कौन बदमाश

है ?" परन्तु दूसरे ही क्षण उन्हें इतनी हँसी आई, कि अनेंष्टिनाका सब भय दूर हो गया और वह अपने छपावाले पातकी ओर यह जाननेके लिये देखने लगी, कि प्रिन्सकी इस आकस्मिक प्रसन्नता और हँसीका क्या कारण है।

अब उसने देखा, कि कैसी विचित्र तथा धोखेभरी चालसे हैङ्गमैन कुर्सीका कैदी बन गया है और इसलिये उसके ओठोंपर भी घृणा तथा नफरतके बदले मुस्कराहटकी एक रेखा दिखाई देने लगी। असल बात वह तुरत ही समझ गई, क्यों कि वह ऐसी सुशीला और भोली नहीं थी, कि इतना देखकर भी यह न समझ जाती, कि ये धोखेबाज कुर्सियां किस कामके लिये वहां रखी गई हैं, तथा उसी समय यह बात भी उसके ध्यानमें आ गई, कि गत सन्ध्याके समय हैङ्गमैन इस मकानसे भाग जानेके बदले इस कमरेमें आ छिपा है और किसी तरह इस कुर्सीमें कैद हो गया है; जो उसकी चाचीने अपने खूब सूरत शिकारको फँसानेके लिये ही यहां रखी है।

उधर हैङ्गमैनने भी प्रिन्सको तुरत ही पहचान लिया और कुछ देरतक आश्चर्य्यमें डूबा रहकर वह प्रिन्सकी ओर टकटकी लगाये ही देखता रहा, परन्तु फिर तुरत ही अपनेको सम्हाल—खासकर जब उसने देखा, कि प्रिन्स उसकी दिल्लगी उड़ा रहे हैं, तब वह बोला, —"क्या आप एक गरीब पिशाचको छुड़ा नहीं सकते ? मैं कल दस बजे रातसे इस आफतमें फँसा हुआ हूं ?"

"ओह! हँसते हँसते तो मेरी जान निकल जायगी।" इतना कह प्रिंस मारे हँसीके दीवारसे उठंग गये और इसी हँसीके कारण उनके गालोंपर आंसुओंकी बूंदें ढलक पड़ीं। प्रिन्सने हँसते ही हँसते कहा,—"ओह! यह तो बड़ी ही मजेदार बात है, बताओ क्या तमाशा है ? अर्नेष्टिना! मेरे ही समान तुम भी इस दिल्लगीका आनन्द क्यों नहीं लूटतीं ?"

यह सुन हेङ्गमैनने कर्कश स्वरमें कहा,—"खूब प्रसन्न हो! मैं नहीं समझता हूं, कि इसमें प्रसन्न होनेका कोई कारण है। ऐसी धोखेबाज कुर्सीमें जकड़कर रात बिताना कोई हँसी खेल नहीं है, बल्कि यह उस स्थानपर बैठनेसे भी भयानक है, जहां बराबर सड़े मुर्दोंकी दुर्गन्ध आती रहती है।"

प्रिन्सने कहा,—"मैं अपने जीवनमें इतना कभी नहीं हँसा था।" क्यों कि अब उनको हँसीका वेग कम होता जाता था। इसके बाद उन्होंने ड्रेसिङ्गरूमवाला दरवाजा बन्द कर दिया और कहा,— मर्नेष्टिना! क्या तुम मेरे कैदी दोस्तको जानती हो? मैं उसके चेहरेकी मनोहरतापर उसे इनाम नहीं दे सकता और यदि जमानतमें मनुष्यका चेहरा भी लिया जाता, तो मैं समझता हूं, कि यह चेहरा कोई भी जमानतमें न लेता।"

हेमल कौफिनको ओर इस भेदको न खोलनेका इशारा करती हुई मर्नेष्टिना बोली,—"नहीं, मैं इसे बिल्कुल ही नहीं जानती, परन्तु मैं जोर देकर कह सकती हूं, कि इस मकानको किसी मज-दूरिनके प्रेममें उलझ कर ही यह यहां आ पहुंचा है।"

इसपर हैङ्गमैनने मुस्कराकर कहा,—"बेशक तुम्हारा कहना सच है, ठीक जैसा तुमने कहा है, उसी तरह एक मजदूरिन मुझे यहांतक लिवा लाई थी और फिर मुझे इस तरह इस कुर्सीमें कैदकर न जाने कहां चली गई। देखो न, मैं किस तरह फँस गया हूं, कि हाथ पैर भी नहीं हिला सकता। परन्तु जोड़ो, मैं फिर उसका पता लगाऊंगा। आपलोगोंसे मेरी इतनी ही प्रार्थना है, कि मेरे यहां आनेका हल्ला न मचाओ।"

मर्नेष्टिना,—(जल्दीसे) "अच्छी बात है, परन्तु इस शर्तपर, कि जो कुछ तुमने यहां देखा है, वह किसीसे न कहो।"

हेमल,—"मैं ऐसा बेवकूफ नहीं हूं कि एक स्त्रीके पीछे पीछे

आकर इस तरह फँसनेका समाचार सबसे कहता फिरूँगा। मैं अपनी जबानमें ताला बन्द कर रखूंगा। अच्छा, अब मुझे छोड़दो।"

प्रिन्स,—(मुस्कुराते हुए) "अभी एक क्षणमें तुम्हें छोड़े देता हूँ। परन्तु क्या यह सम्भव है, कि मार्क्विस लेवेसनके यहांकी कोई मजदूरिन ऐसी विचित्र सूरत-शक्लके आदमी पर मोहित हो जाये?"

डेनल,—"मालूम होता है, कि उसने मुझे धोखा दिया है, परन्तु क्या आप नहीं देखते, कि मुझे इस धोखेबाज कुर्सीमें बैठा कर तमाशा देखनेके लिये ही उसने यह चाल चली थी?"

प्रिन्स,—(दिल्लगी भरे स्वरमें) "और सचमुच ही उसने बड़ा मजा किया है, परन्तु यदि तुम्हारे विषयमें मुझसे कोई पूछे, कि बताओ यह कौन मनुष्य है? तो मैं तो इसके अतिरिक्त और कुछ न कहूंगा, कि इसका नाम जेक केच है।"

कौफिन,—(मुस्कराकर) "और मैं भी शैतानकी कसम खाकर कह सकता हूं, कि आप भी उससे कम नहीं हैं। बस, इतना ही कहना काफी है।"

अर्नेष्टिना,—(काँपकर) "हे ईश्वर! ऐसी बातें न करो।"

कौफिन,—"मैडम! प्रिन्स यह जानना चाहते हैं, कि मैं कौन हूं और यह अच्छी तरह जाननेके कारण, कि ये मुझे धोखा देंगे, मैं इनसे कह देना उचित समझता हूं, कि मैं जेक केच हूं या तबतक जेक केच ही था, जबतक, कि मिसेस उवेनके यहाँ वह भयानक काम—"

प्रिन्स,—"आह! क्या यह सम्भव है।" पहले यह सोचकर, कि अपनेको जल्लाद कहकर यह मनुष्य दिल्लगी कर रहा है, परन्तु फिर तुरत ही उनका ध्यान बदला और उनके चेहरेने कठोर और गंभीर भाव धारण कर लिया।

मर्नेष्टिना,—(प्रिन्सका हाथ पकड़ कर, उनके चेहरेको ओर र्थनासूचक दृष्टिसे देखती हुई) "अच्छा, अब हमलोगोंको इसे ोड़ देना चाहिये, यह जहां चाहे, चला जाये।"

प्रिन्स,—"हां हां, जितना ही जल्द यह मेरी आखोंकी ओट हो, तना ही अच्छा है। (कुछ सोचकर) परन्तु नहीं, इस मनुष्यसे मलोगोंका कुछ काम निकल सकता है। (इसके बाद मर्नेष्टिना- ो डैनल कौफिनसे कुछ दूर ले जाकर, बड़ी धीमी आवाजमें) इस ानके द्वारा, डाइसर्टके सम्बन्धमें विचारी हुई तरकीब, बिल्कुल ी ठीक उतर जायगी।"

मर्नेष्टिना,—(बहुत ही धीमे स्वरमें) "मैं आपका मतलब समझ ई, परन्तु क्या आप इसपर विश्वास करते हैं?"

प्रिन्स,—"क्यों न करूंगा। अब यह हमलोगोंके भेद खोलनेका हस न कर सकेगा, क्योंकि यह अच्छी तरह जानता है, कि ोई भी मनुष्य उसकी इस बातपर विश्वास न करेगा और सब इसे ामक समझने लगेंगे। इसके अलावा, ऐसे बदमाशोंको वशमें ानेका सबसे बड़ा साधन रुपया है——"

मर्नेष्टिना,—(बात काटकर) "सच है, परन्तु अब यह कानूनका ाम नहीं है, अब उसने अपना वह दूषित काम छोड़ दिया है, ोंकि यदि मैं भूलती नहीं, तो कह सकती हूं, कि इसीने मिसेस ेनके मनुष्यको मार डाला था और इसीलिये अब यह स्वयं कानून- पंजेसे भागता फिरता है।"

प्रिन्स,—"हां, यह बात तो पहले मैंने सोची ही न थी, परन्तु ाहे जो हो, हमलोगों को इस बदमाशसे यह तो पूछ लेना चाहिये, यह इस समय क्या करता है और इसकी कैसी अवस्था है। कोई नहीं जानता, कि इन बदमाशोंके पेटमें कितने छल छिद्र े रहते हैं। मैं समझता हूं, कि पूछनेमें सिवा इसके और कोई

नुकसान नहीं है, कि कुछ देर तक और भी इसको बहुमूल्य संगतिमें हमलोगोंको रहना पड़ेगा।"

इतना कह, प्रिन्स हैङ्गमेनको ओर फिरे, जो अर्नेस्टिना भी प्रिन्सको इस तरह चुपचाप बातें करते देख, सन्देहसे उनके लौटने की राह देख रहा था। अर्नेस्टिनाको उस बदमाशसे बात करनेकी बिल्कुल ही इच्छा न मालूम होती थी और न अब वह उसके हाथोंमें उससे अधिक फसनाही चाहती थी, जितना कि वह पहले ही फँस चुकी थी।

कपड़े पहननेवाले कमरेके दरवाजेमें उठंग कर हैंगमैन को टटोलनेवाली दृष्टिसे देखते हुए प्रिन्सने कहा,—"अच्छा, यह तो बताओ, कि जिस फन्देमें तुम फँसे हुए हो, उससे बचनेका तुमने कौन सा उपाय सोचा है?"

कौफिन,—"पहले यह बताइये, कि किस मतलबसे आप यह सवाल कर रहे हैं?"

प्रिन्स,—"कुछ दुश्मनी करनेकी इच्छासे नहीं। तुम यह अच्छी तरह जानते हो, कि तुम्हें न्यायालयके सुपुर्द करनेसे, मेरा कोई लाभ नहीं है, यह बात तुमने पहले ही विचार भी ली होगी। अतः अब मुझे तुम्हें दिलासा देनेकी कोई जरूरत नहीं है। परन्तु मुझे यह जानने की कुछ जरूरत आपड़ी है, कि क्या तुम फिर उस आनन्दमय पद पर बैठना चाहते हो, जो कुछ दिनोंसे तुम्हें छोड़ना पड़ा है?"

कौफिन,—(बातचीतका ढंग दूसरी ओर घूमता देख, आश्चर्य से) "क्या आपका मतलब जेक केचके पदसे है?"

प्रिन्स,—"हाँ, वही मतलब है। अच्छा अब साफ साफ बताओ—तुम जानते ही हो, कि मैं तुम्हें नुकसान नहीं पहुँचाया चाहता। (जरा हँस कर) बल्कि कुछ उपकार भी किया चाहता हूँ।

कौफिन,—(प्रसन्न होकर) "यह दूसरी ही बात है। अच्छा, मेरे प्रभु ! मैं अब स्पष्ट शब्दोंमें अपनी अवस्था बताता हूं । आप तो देखते ही हैं, कि मैं आजकल इधर उधर लुकाचोरी खेल रहा हूं और अपने मकानके पास तक जानेमें भी डरता हूं—"

प्रिन्स,—"और इसी लिये दूसरोंके मकानोंमें घुसते फिरते हो। मैं समझता हूं, कि तुम पकड़े जानेके भयसे ही ऐसा कर रहे हो ?"

कौफिन,—"हां, ऐसी ही बात है और मेरे आरामके अब सिर्फ दो ही उपाय हैं। एक तो मेरे जबर्दस्त शत्रु लेरी सैम्पसनको मृत्यु ..."

प्रिन्स,—"लेरी कौन,वही बो-स्ट्रीटका मशहूर पुलिस अफसर? "

कौफिन,—"आप सब बातें कैसे जानते हैं ? आपको यह हालत देख लोग सोच सकते हैं, कि आप भी पहले चोर या गिरह कट रहे होंगे और यदि राज घरानेमें जन्म न लेते तो हो भी जाते ।"

प्रिंस,—(उसकी बात सुनकर, हँसी न रोक सकनेके कारण) "अच्छा, तुमने अपनी प्रसन्नताका एक उपाय तो बता दिया है, अब दूसरा बताओ ।"

डेनल,—"दूसरा यह है, कि यदि किसी सोमवारके सबेरे, कोई मनुष्य फांसी पर चढ़े और कोई फांसी देनेवाला न मिले, तो शरीफको अवश्य ही यह घोषणा करनी पड़ेगी, कि जो मनुष्य इस कामको स्वीकार करेगा, उसके सब अपराध क्षमा कर दिये जायंगे ।"

प्रिन्स,—(अर्नेष्टिना की ओर तीव्र दृष्टिसे देखकर कौफिनसे) "आह ! तब तुम समझते हो, कि कभी न कभी तुम्हें तुम्हारा वह प्यारा पद मिलही जायगा ।"

हैक्समैन,—(अर्नेष्टिनाकी ओर मतलब भरी दृष्टिसे देखकर) "प्रिंस महोदय ! यदि यह दुःखदायी विषय न होता, तो हम विस्तारसे वे सब बातें, जो मेरे हृदयमें खेल रही हैं, आपको बता देता ।"

अर्नेष्टिना,—(गोघ्रतासे)"मेरा कुछ भी खयाल न करो। तुम्हें जो कुछ कहना हो, अकपट भावसे, प्रिन्ससे साफ़ साफ़ कह दो।" इतना कह वह उस लम्बे कमरेके एक कोनेमें चली गई, परन्तु उसका ध्यान हैड्रमैनकी बातोंकी ओर ही लगा रहा।

हैड्रमैन,—(यह सोच कर, कि ये केवल कोरी बातें ही नहीं हैं, बल्कि इनमें कुछ भेद भी भरा है और शायद इसी विषयपर प्रिंसने अर्नेष्टिनाके साथ गुप्त रूपसे अभी अभी सलाह भी की है)"अच्छा तो प्रिन्स महोदय! अब मैं खुलासा हाल बताता हूं। मेरा मतलब यह है, कि डाइसर्टको आगामी सोमवारके सबेरे फाँसी दी जायगी। और यदि ऐसा ही हुआ, तो आप उसे छुड़ा न दें। मगर कोई छोटी चिड़िया मेरे कानोंमें इस समय कह रही है, कि नहीं, आप उसे छुड़ा न देंगे।"

प्रिन्स,—(बहुत ही धीमी आवाजमें) "आह! यह तुमने कैसे समझ लिया?"

हैड्रमैन,—"इसी लिये कि मैं आपको तथा लेडी अर्नेष्टिनाको बहुत प्रसन्न देखता हूं। इसके अलावा आप दोनों एकसाथही इस मनोहर कमरेमें आये हैं और यदि मैं भूलता नहीं हूं, तो कह सकता हूं, कि आपलोग उस गलरीका मजा लूटना चाहते हैं। साथही आपलोग इस तरह धीरे २ प्रेमसे बातें कर रहे हैं, ऐसीतिरछी प्रेमभरी चितवनों से एक दूसरेको देख रहे हैं और इतने हिले-मिले मालूम होते हैं, कि ऐसी अवस्थामें अर्नेष्टिनाके पतिकादूर रहनाही उत्तम जान पड़ता है।"

ज्यों ही हैड्रमैनने ये उपर्युक्त बातें कहीं; त्योंही अर्नेष्टिनाने अपना वह चेहरा पीछेकी ओर घुमा लिया जो घृणा-मिश्रित क्रोध और शर्मसे लाल हो रहा था, परन्तु अब भी यह बात उसके ध्यानमें न आई, कि यह उसीका अपराध है, कि डेनस दुष्ट प्रिंससे इस ढंगकी बातें कर रहा है, और यद्यपि उसकी बातें सुनकर प्रिंसको भी कुछ क्रोध चढ़ आया था, परन्तु यह देखकर, कि यहां कोई

देखाना वृथा और असङ्गत होगा, प्रिंसने कुछ कहनेके बदले, केवल अपना ओठ जोरसे दांतोंके नीचे दबा लिया।

हैङ्गमैन फिर बोला,—"क्यों, आप देखते हैं न, कि इस ढंगसे रहने पर भी मैं एक दूरदर्शी मनुष्य हूं। अच्छा, अब कामकी बात सुनिये।,—यह तो निश्चित ही है, कि आगामी सप्ताहमें डाइसर्ट फांसीपर लटकाया जायगा, इसीलिये मेरे हृदयमें यह आशा जगमगा रही है, कि मुझे माफी मिल जायगी और मैं अपने फ़ौटलेनवाले आरामदायक मकानमें जा धमकूंगा, जहां जब कभी आप पधारनेका कष्ट उठावेंगे, तब बिना पैसा लिये ही आपकी हजामत बना दूंगा।"

प्रिंस,—(मधुर स्वरमें) "हां, यही तुम्हारी आशा है और तुम समझते हो, कि वह आशा सोमवारको अवश्य ही पूरी हो जायगी। अच्छा, अब क्या तुम एक भेदको गुप्त रख सकते हो, जिसके लिये तुम्हें दो सौ गिन्नियां इनाममें मिलेंगी?"

हैङ्गमैन,—(प्रसन्नतासे) "हां, मैं खुशीसे तय्यार हूं।"

प्रिंस,—"अर्नेष्टिना! तुम बगलवाले कमरेमें चली जाओ और भीतरसे दरवाजा बन्द कर लो। मैं इस मनुष्यसे एकान्तमें कुछ बातें किया चाहता हूं। (अर्नेष्टिना को अपने साथ बगलवाले उस सजेसजाये कमरेमें ले जाकर, जिसका वर्णन पहले ही किया जा चुका है) इन बातोंको सुनकर तुम्हारे हृदयमें चोट पहुँचेगी।"

प्रिंसके कथनानुसार ही अर्नेष्टिना अकेली उस बगलवाले कमरेमें जाकर बैठ गई और प्रिंस ऐनल कौफिनसे बातें करनेके लिये उस छोटे कमरेमें चले आये। फिर उन दोनोंमें क्या बातें हुईं, इसका पूरा पूरा हाल वर्णन करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है। इतना ही कह देना काफी होगा, कि लगभग दस मिनिट तक हैङ्गमैनसे एकान्तमें बातें कर, प्रिन्स अर्नेष्टिनाके पास उस कमरेमें लौट गये, जहां वे उसे बैठा आये थे।

प्रिंस,—(दरवाजा बन्द कर, बड़े ही मेद भरे स्वरमें) "मेरी प्यारी अर्नेष्टिना! सब काम ठीक हो गया। उस बद्माशने मेरी बातें मान ली हैं और मुझे इस बातको बड़ी प्रसन्नता है, कि ऐन मौकेपर यह विचार मेरे मस्तिष्कमें उत्पन्न हुआ।"

अर्नेष्टिना,—(इस समय को घटनाओंसे दुःखित और उत्तेजित होकर कांपती हुई आवाज़में) "परन्तु वह है कहां? क्या तुमने उसे छोड़ दिया? वह चला गया?"

प्रिंस,—"नहीं, वह बद्माश दिनके समय इस मकानसे बाहर नहीं निकल सकता। सम्भव है, कि उसे चोर समझ कर तुम्हारे नौकर पकड़ लें और शोरगुल मचावें अथवा गलीमें निकलते ही उसे कोई सिपाही गिरफ्तार कर ले। वह संध्यातक इसी मकानमें रहेगा। मैंने उसे कुर्सीसे छुड़ा दिया है और अब वह बड़े आरामसे बिस्कुट खा रहा है, जो उसकी जेबमें भरा था। परन्तु यह क्या! तुम इतनी पोली पड़ गई हो मानो बीमार… …"

अर्नेष्टिना,—(प्रिंसकी ओर प्रेम भरी दृष्टिसे देखकर) "मैं अभी अच्छी हो जाऊंगी, मेरे प्यारे जाएर्ज। परन्तु अब हमलोगों को जल्द ही यह कमरा छोड़ कर बैठकवाले कमरेमें चलना चाहिये। क्योंकि हम लोग बहुत देरसे यहां आये हुए हैं, इस बीचमें यदि कोई नौकर वहां आया होगा, तो अपने मनमें क्या कहता होगा?"

प्रिंस,—उसने मुझे बताया है, कि उसके पास चाभिया हैं और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह इस मकानमें चोरी किया चाहता था। परन्तु अब हमलोगोंको उसके लिये कष्ट करनेकी कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह हमलोगोंके बड़े कामका आदमी है। चलो अब बैठकमें चलें।"

इसके बाद प्रिंस अर्नेष्टिनाको साथ ले बगलवाले उस कमरेमें गये, जहां हैङ्गमैन घूम घूमकर अपने उन हाथ पैरोंको सीधा कर रहा था, जो उस धोखेबाज कुर्सीमें कैद रहनेके कारण जकड़ गये थे। यहां दीवारमें एक गुलाबका फूल बना हुआ था, जिसे दबाकर प्रिंसने एक गुप्त दरवाजा खोला और प्रिंस तथा अर्नेष्टिना कपड़ा पहननेवाले कमरेमें जा पहुंचे। वह गुप्त दरवाजा सावधानीसे बन्द कर दिया गया और अब वे लोग सोनेवाले कमरेमें चले गये।

"परन्तु सच तो यह है, कि वहां वे थोड़ी ही देर तक ठहरे और लगभग आधे घण्टेमें ही बैठकखानेवाले कमरेमें लौट आये। इस समय अर्नेष्टिनाके गाल लाल हो रहे थे और उसकी आंखें कामका झकोरा खा रही थीं तथा प्रिंसका चेहरा अपनी प्रेमिकापर विजय पानेकी खुशीमें शान्त और समुज्वल हो रहा था। अफसोस! शाही विलासपरायणतासे विमोगिया फिर भुला दीगई !!

प्रिन्स,—(अर्नेष्टिना को छातीसे लगा कर) "अच्छा, प्यारी! अब कुछ समयके लिये विदा दो, हमलोग फिर शीघ्रही मिलेंगे—जितना ही शीघ्र मिलें उतना ही अच्छा है।"

अर्नेष्टिना,—(मधुर तथा नम्र स्वरमें, और ऐसी कटीली दृष्टिसे देखकर जिसमें समस्त संसारका आदर भरा हुआ था) "प्यारे आर्थर! यह तो तुम्हारी इच्छा और कृपा पर निर्भर है।"

इसके बाद प्रिन्स चले गये और अर्नेष्टिना भी गाड़ी जोतनेकी आज्ञा देकर अपने कमरेमें पोशाक बदलनेके लिये जा पहुंची।

प्रिंस,—(दरवाजा बन्द कर, बड़े ही भेद भरे स्वरमें) "मेरी प्यारी अर्नेष्टिना! सब काम ठीक हो गये। उस बदमाशने मेरी बातें मान ली हैं और मुझे इस बातको बड़ी प्रसन्नता है, कि ऐन मौकेपर यह विचार मेरे मस्तिष्कमें उत्पन्न हुआ।"

अर्नेष्टिना,—(इस समय की घटनाओंसे दुःखित और उत्तेजित होकर कांपती हुई आवाज़में) "परन्तु वह है कहां? क्या तुमने उसे छोड़ दिया? वह चला गया?"

प्रिंस,—"नहीं, वह बदमाश दिनके समय इस मकानसे बाहर नहीं निकल सकता। सम्भव है, कि उसे चोर समझ कर तुम्हारे नौकर पकड़ लें और शोरगुल मचावें अथवा गलीमें निकलते ही उसे कोई सिपाही गिरफ्तार कर ले। वह संध्यातक इसी मकानमें रहेगा। मैंने उसे कुर्सीसे छुड़ा दिया है और अब वह बड़े आरामसे बिस्कुट खा रहा है, जो उसकी जेबमें भरा था। परन्तु यह क्या! तुम इतनी पीली पड़ गई हो मानो बीमार.... .."

अर्नेष्टिना,—(प्रिंसकी ओर प्रेम भरी दृष्टिसे देखकर) "मैं अभी अच्छी हो जाऊंगी, मेरे प्यारे जाउर्ज। परन्तु अब हमलोगोंको जल्द ही यह कमरा छोड़ कर बैठकवाले कमरेमें चलना चाहिये। क्योंकि हम लोग बहुत देरसे यहां आये हुए हैं, इस बीचमें यदि कोई नौकर वहां आया होगा, तो अपने मनमें क्या कहता होगा?"

प्रिंस,—(उसे आलिङ्गन कर) "स्त्रियोंकी सुन्दरताकी पूजा करना मैं अच्छी तरह जानता हूं। हमलोग शीघ्रही तुम्हारी इच्छानुसार बैठकखाने वाले कमरेमें चलेंगे, परन्तु हमलोगोंको तुम्हारे चाचाके कमरोंकी राहसे हो वहां चलना होगा।"

अर्नेष्टिना,—(कुछ विचार कर) "परन्तु वह बदमाश इन कमरोंमें घुस किस तरह आया, यह नहीं मालूम हुआ।"

प्रिंस,—उसने मुझे बताया है, कि उसके पास चाभियां है और इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह इस मकानमें चोरी किया चाहता था। परन्तु अब हमलोगोंको उसके लिये कष्ट करनेको कोई आवश्यकता नहीं है, क्योंकि वह हमलोगोंके बड़े कामका आदमी है। चलो, अब बैठकमें चलें।"

इसके बाद प्रिंस अर्नेष्टिनाको साथ ले बगलवाले उस कमरेमें गये, जहां हैङ्गमैन घूम घूमकर अपने उन हाथ पैरोंको सीधा कर रहा था, जो उस धोखे बाज कुर्सीमें कैद रहनेके कारण जकड़ गये थे। यहां दीवारमें एक गुलाबका फूल बना हुआ था, जिसे दबाकर प्रिंसने एक गुप्त दरवाजा खोला और प्रिंस तथा अर्नेष्टिना कपड़ा पहनने वाले कमरेमें जा पहुंचे। वह गुप्त दरवाजा सावधानीसे बन्द कर दिया गया और अब वे लोग सोनेवाले कमरेमें चले गये। परन्तु सच तो यह है, कि वहां वे थोड़ी ही देर तक ठहरे और लगभग आधे घण्टेमें ही बैठकखानेवाले कमरेमें लौट आये। इस समय अर्नेष्टिनाके गाल लाल हो रहे थे और उसकी आंखें कामका झंकोरा खा रही थीं तथा प्रिंसका चेहरा अपनी प्रेमिकापर विजय पानेकी खुशीमें शान्त और समुज्वल हो रहा था। अफसोस ! शाही विलासपरायणताके विनोदप्रिया फिर भुला दीगई !!

प्रिन्स,—(अर्नेष्टिना को छातीसे लगा कर) "अच्छा, प्यारी ! अब कुछ समयके लिये विदा दो, हमलोग फिर शीघ्रही मिलेंगे—जितना ही शीघ्र मिले उतना ही अच्छा है।"

अर्नेष्टिना,—(मधुर तथा नम्र स्वरमें, और ऐसी कटोली दृष्टिसे देखकर जिसमें समस्त संसारका आदर भरा हुआ था) "प्यारे आल्बर्ट ! यह तो तुम्हारी इच्छा और कृपा पर निर्भर है।"

इसके बाद प्रिन्स चले गये और अर्नेष्टिना भी गाड़ी जोतने की आज्ञा देकर अपने कमरेमें पोशाक बदलनेके लिये जा पहुंची।

बासठवां परिच्छेद ।

न्यू गेट जेल ।

दिनके तीसरे पहरके तीन बजनेके समय, सत्रह वर्षकी अवस्था वाली एक खूबसूरत लड़की, साफसुथरी पोशाक पहने, न्यू गेट-जेलके मुलाकातियोंवाले दरवाजे पर आ पहुंची। उसका चेहरा पीला होरहा था, रोते रोते आखें लाल हो गई थीं और उसके हृदयमें उठती हुई भयानक शोककी तरङ्गे, जिसे वह अपनी शक्ति भर दबा रही थी, उसके ओठोंकी कँपकँपी, अच्छी तरह बता रही थीं। उसके शरीरकी गठन बहुतही सुन्दर थी और उसके शोक-पूर्ण तथा दुख भरे चेहरे पर भी पवित्रता झलक रही थी और उसके सकोच, भय तथा लज्जाभरे हावभाव, उसके हृदयकी स्वच्छता निःसंकोचभावसे प्रकट कर रहे थे।

दरवाजेके पास लेजानेवाली सीढियोंका सिलसिला तय करती हुई, वह उस फाटक पर जा पहुंची, जिसमें लोहेके बड़े बड़े सीखचे लगे हुए थे, और उनकी राहसे वह, उस अन्धकारमय स्थानमें झाँकने लगी। इसी समय एक पहरेदार उस स्थान पर आ पहुंचा और सचिप्त तथा रूखे स्वरमें बोला,—"यह कौन है, एक युवती!"

हां, लार्ड मेयरने एक जवान आदमीको न्यायके लिये आज सवेरे यहां भेजा है—"

स्त्री,—(बड़ीही दर्दनाक आवाजमें, मानो वह आवाज ठीक उसके हृदयसे निकल रही हो) "क्या मैं उसे देख सकती हूं, वह मेरा भाई है।" इतना कह, वह फूट फूटकर रोने लगी।

पहरेदार,—(कुछ नम्र होकर) "मुझे दुःख है, कि मैं इसमें असमर्थ हूं। मुलाकातका समय बीत गया और अब किसीको भीतर जाने देना नियमके विरुद्ध है। मै बड़ाही दुःखित हूं। अच्छा, तुम कल ग्यारह बजे दिनके समय आओ।"

उस स्त्रीका नाम अर्योडिन बेरियन था। उसने बड़ीही करुणा तथा दुःख भरी आवाजमें कहा,—"क्या तुम एक क्षणके लिये भी मेरे गरीब भाईको नहीं दिखा सकते?"

पहरेदार,—"नहीं, यह मेरी सामर्थके बाहर है, परन्तु तुम गवर्नरसे पूछ सकती हो। जरा और आगे बढ़ जाओ। थोड़ी ही दूर पर तुम्हें फिर सीढ़ियां मिलेंगी, जिनको तय करते ही तुम उनके कमरेके दरवाजे पर जा पहुंचोगी।"

इसके बाद एक लम्बी चाभीसे, जो वह हाथमें लिये हुए था, अर्योडिनको राह बताकर, वह उस स्थानसे हट गया। बिचारी अर्योडिन कैदखानेके अगले भागमें होती हुई, रोती रोती, उसी ओर चली, जिस ओर जानेका इशारा उस पहरेदारने किया था। उसने बहुत धीरे धीरे डरते हुए दरवाजा खटखटाया, क्योंकि उसकी आत्मामें सन्देह और अपमानका विचार पहलेसे ही भरा हुआ था, जिससे उसे स्वय ही मालूम होता था, कि उसकी प्रार्थना स्वीकार न की जायगी, और यदि जोरसे भी वह दरवाजेमें धक्का देगी तो इन्कार-के अतिरिक्त कोई दूसरा फल न निकलेगा। अफसोस! बिचारी लड़की, इस छोटी अवस्थामें ही वह अपमान भोगनेके लिये

बासठवां परिच्छेद।

न्यूगेट जेल।

दिनके तीसरे पहरके तीन बजनेके समय, सत्रह वर्षकी अवस्था वाली एक खूबसूरत लड़की, साफसुथरी पोशाक पहने, न्यूगेट-जेलके मुलाकातियोंवाले दरवाजे पर आ पहुंची। उसका चेहरा पीला होरहा था, रोते रोते आखें लाल हो गई थीं और उसके हृदयमें उठती हुई भयानक शोककी तरङ्गे, जिसे वह अपनी शक्ति भर दबा रही थी, उसके ओठोंको कँपकँपी अच्छी तरह बता रही थीं। उसके शरीरकी गठन बहुतही सुन्दर थी और उसके शोकपूर्ण तथा दुख भरे चेहरे पर भी पवित्रता झलक रही थी और उसके सङ्कोच, भय तथा लज्जाभरे हावभाव, उसके हृदयकी स्वच्छता निःसंकोचभावसे प्रकट कर रहे थे।

दरवाजेके पास लेजानेवाली सीढ़ियोंका सिलसिला तय करती हुई, वह उस फाटक पर जा पहुंची, जिसमें लोहेके बड़े बड़े सीखचे लगे हुए थे, और उनकी राहसे वह उस अन्धकारमय स्थानमें झांकने लगी। इसी समय एक पहरेदार उस स्थान पर आ पहुंचा और संक्षिप्त तथा रूखे स्वरमें बोला,—"यह कौन है, एक युवती।"

इसपर उस स्त्रीने कांपती हुई आवाजमें कहा,—"मैं समझती हूं—मुझे भय है, कि बेरियन नामका एक युवक आज दो पहरके पहले गिरफ्तार कर यहां लाया गया है—"

पहरेदार,—(कर्कश स्वरमें) "यहां कोई नवयुवक नहीं है।

हां, लार्ड मेयरने एक जवान आदमीको न्यायके लिये आज सवेरे यहां भेजा है—"

स्त्री,—(बड़ीही दर्दनाक आवाजमें, मानो वह आवाज ठीक उसके हृदयसे निकल रही हो) "क्या मैं उसे देख सकती हूं, वह मेरा भाई है।" इतना कह, वह फूट फूटकर रोने लगी।

पहरेदार,—(कुछ नम्र होकर) "मुझे दुःख है, कि मैं इसमें असमर्थ हूं। मुलाकातका समय बीत गया और अब किसीको भीतर जाने देना नियमके विरुद्ध है। मैं बड़ाही दुःखित हूं। अच्छा, तुम कल ग्यारह बजे दिनके समय आओ।"

उस स्त्रीका नाम अर्योडिन वेरियन था। उसने बड़ीही यातना तथा दुःख भरी आवाजमें कहा,—"क्या तुम एक क्षणके लिये भी मेरे गरीब भाईको नहीं दिखा सकते ?"

पहरेदार,—"नहीं, यह मेरी सामर्थ्यके बाहर है, परन्तु तुम गवर्नरसे पूछ सकती हो। जरा और आगे बढ़ जाओ। थोड़ी ही दूर पर तुम्हें फिर सीढ़ियां मिलेंगी, जिनको तय करते ही तुम उनके कमरेके दरवाजे पर जा पहुंचोगी।"

इसके बाद एक लम्बी चाभीसे, जो वह हाथमें लिये हुए था, अर्योडिनको राह बताकर, वह उस स्थानसे हट गया। बिचारी अर्योडिन कैदखानेके अगले भागसे होती हुई, रोती रोती, उसी ओर चली, जिस ओर जानेका इशारा उस पहरेदारने किया था। उसने बहुत धीरे धीरे, डरते हुए दरवाजा खटखटाया, क्योंकि उसकी आशामें सन्देह और अपमानका विचार पहलेसे ही भरा हुआ था, जिससे उसे स्वयं ही मालूम होता था, कि उसकी प्रार्थना स्वीकार न की जायगी, और यदि जोरसे भी वह दरवाजेमें धक्का देगी तो इन्कार के अतिरिक्त कोई दूसरा फल न निकलेगा। अफसोस! बिचारी लड़की, इस छोटी अवस्थामें ही वह अपमान भोगनेके लिये

बाध्य हुई, जो निरपराध मनुष्योंको भी, उस समय भोगना पड़ता है, जब वे कैदखाना देखने जाते हैं।

कुछ ही क्षण बाद एक दाई भीतरसे निकली और जब अर्याडिन अपने आनेका कारण उससे कहने लगी, तब गवर्नर स्वयं ही वहां चला आया, जो फाटकके बगलमेंही अपने दफ्तरके कमरेमें बैठा पहरेदार तथा अर्याडिनकी बात सुन रहा था।

वह बोला,—"मुझे दुःख है, कि मै तुम्हारी सहायता नहीं कर सकता। निश्चित समयके बाद मुलाकातियोंको जेलके भीतर आने देना नियमके विपरीत है। तुम कल सवेरे ग्यारह बजे आओ; परन्तु यह तो बताओ, कि वह मुकद्दमा कैसा है?"

अर्याडिनने रोते रोते फाटकका सहारा लेकर कहा,—"महाशय। मैं थियोडोर बैरियनकी बहिन हूं।"

गवर्नर,—"आह! अब मुझे याद आया। मैनशन हाउससे यह मुकद्दमा आया है। धोखेबाजी और जाल करनेके अपराधमें मेरे दोस्त इमरसनने उसका चालान किया है। आह! युवती स्त्री! यह तो बड़ा ही संगीन मुकद्दमा है। तुम्हारा भाई क्या ये बातें पहलेसे नहीं जानता था? अच्छा, यहां खड़ी होकर न रोओ, नहीं तो लोग समझेंगे, कि मैंने तुम्हारे साथ कोई बुरा व्यवहार किया है। कल ग्यारह बजे दिनके समय आओ।"

इतना कहकर गवर्नरने दरवाजा बन्द कर लिया और अर्याडिन कैदखानेके दरवाजेसे इस तरह रोती हुई लौटी, मानो उसका हृदय किसीने चूर चूर कर दिया हो।

इसके कई मिनट बाद ही एक गाड़ी न्यूगेट जेलके गवर्नरके दरवाजे पर आ लगी और उसका साईस गाड़ीके पीछेसे कूद कर, इतने जोरसे दरवाजेमें धक्का देने लगा, कि समूचा ओल्ड बेली मुहल्ला गूंज उठा। इसके साथ ही गवर

सीढ़ियोंसे उतर, लेडी अर्नेष्टिना डाइसर्टको सहायता देनेके लिये आ पहुँचा। फिर वह लेडी अर्नेष्टिनाको सहारा दे, अपने सम्मानकी पराकाष्ठा दिखानेके लिये, उसे अपने खास कमरेमें लेगया।

दुःखपूर्ण चेहरा बनाकर अर्नेष्टिनाने कहा,—"मैं अपने अभागे पतिसे मिलना चाहती हूँ।"

गवर्नर,—(बड़ी ही नम्र तथा संकोच भरी आवाजमें) "लेडी महाशया! मुलाकात करनेका समय तो बीत गया, परन्तु आपके लिये मैं कैदखानेके नियमोंको काममें नहीं लाया चाहता। क्या आप मिष्टर डाइसर्टसे इसी कमरेमें मुलाकात करेंगी?"

अर्नेष्टिना,—"इस कृपाके लिये धन्यवाद है, परन्तु नहीं, उस अन्धकारमय तथा दुःखपूर्ण कमरेमें ही उन्हें शान्ति पहुंचाना उचित है, और वहीं पहुंचा देनेके लिये मैं आपको कष्ट दूंगी। (भेद-भरी दृष्टिसे उसे देखकर) परन्तु मैं आपको यह खबर दे देना उचित समझती हूँ, कि मुझे अपने पतिकी रिहाई और माफीकी पूरी पूरी उम्मीद है।"

गवर्नर,—"यह सुन कर, मैं बहुत प्रसन्न हुआ। वास्तवमें यह ऐसाही काम है, कि जिसके लिये शाही माफी की जरूरत है। (यह वाक्य उसी मनुष्यने कहा, जिसने कुछ क्षण पहले बेरियनके मामूली मुकद्दमेको इतना संगीन बताया था) क्या मेरे योग्य कोई ऐसा काम है, जिससे मैं मिष्टर डाइसर्टकी आत्माको प्रसन्न कर सकूँ? क्या आप ऐसा कोई काम बता सकती हैं?"

अर्नेष्टिना,—(ऐसी मधुर तथा प्रेम-भरी मुस्कराहटके साथ, कि जिससे उस गवर्नरका माथा खराब हो गया, जो उन मनुष्योंमें था, जो सम्भ्रान्त राज्य-शासनको बड़ा लाभदायक समझते हैं और जो इस प्रकारके शासनमें हस्तक्षेप करनेके बदले अपने आंख-कान बन्द रखना उचित समझते हैं) "मैं आपको हृदयसे धन्यवाद

देती हूँ। साथही मैं अपने चाचा मार्किस लेवेसनसे आपकी प्रशंसा करना भी न भूलूँगी।"

गवर्नर,—(प्रसन्नतासे स्वर्गकी सातवीं सीढी तक पहुँचकर) "बताइये मैं आपकी प्रसन्नताके लिये क्या कर सकता हूँ?"

अर्नेष्टिना—"केवल इतना ही, कि मेरे पति डाइसर्टसे यह कह कर, कि उनको रिहाई और माफीको पूरी पूरी आशा है, उनकी आत्माको शान्ति दिया करें। आपके मुँहसे ये बातें सुन कर उन्हें और भी शान्ति तथा सन्तोष प्राप्त होगा, और मुझसे यह बात सुन कर वे यही समझेंगे, कि मैं उन्हें झूठ ही आश्वासन दे रही हूँ, इसके विपरीत आपकी बातें सुन कर उन्हें पूरा विश्वास हो जायगा। आप मेरा मतलब समझ गये न?"

गवर्नर,—"अच्छी तरह, मेरी लेडी! मैं मौका मिलतेही कुछ आपके लिये मिष्टर डाइसर्टके पास पहुंच जाया करूंगा और अपनी बातोंसे उन्हें जता दूंगा, कि उन्हें निराश होनेका कोई कारण नहीं है, बल्कि उनको माफीकी पूरी पूरी आशा है।"

अर्नेष्टिना,—"आप गुप्तरूपसे ये बातें उनसे कहें। (इस बातसे मनही मन प्रसन्न होकर,कि कितनी आसानीसे इस मनुष्यको उसने अपना चेला बना लिया है। इसके बाद शान्त भाव धारण कर) मेरे प्रिय महाशय! इस कृपाके उत्तरमें मैं इतना ही कह सकती हूँ, कि लार्ड लेवेसन आपको अल्वेमार्ल ष्ट्रीटवाले अपने मकानमें देखकर बड़े ही प्रसन्न होंगे और अबसे आपसे बढकर आदरके साथ कोई दूसरा मेहमान उनके टेबिल पर स्थान न पायेगा।"

ये बातें सुन गवर्नर इतना प्रसन्न होउठा, कि वह यह भी भूल गया, कि वह पैरोंके बल खड़ा है या सिरके बल। वह जल्दी जल्दी अर्नेष्टिनाको सलाम कर उसकी प्रशंसा करने लगा। अब अर्नेष्टिना उस कुर्सीसे उठ खड़ी हुई, जिस पर उस खुशामदी

गवर्नरने उसे बैठाया था और गवर्नर उसे साथ ले, उस कोठरीकी ओर चला, जिसमें डाइसर्ट कैद था। अर्नेष्टिनाको वहां पहुंचाकर गवर्नर लौट आया और तब अर्नेष्टिना पाल डाइसर्टके पास अकेली ही रह गई।

बड़ी ही घबड़ाहटसे डाइसर्टने पूछा,—"क्या खबर लाई हो?"

अर्नेष्टिना,—"अच्छी खबर है।" इसके बाद उसने एक एकरारनामा अपने वस्त्रोंमेंसे निकाला, जिसे डाइसर्टने तुरतही पहचान लिया, कि यह वही है, और एक स्थानको दिखाती हुई बोली,—"इसे पढ़ो।"

डाइसर्टकी दृष्टि बड़े सन्देहके साथ तुरतही उस लिखावट पर जा जमी और जब उसने देखा, कि एकरारनामेकी शर्त दुहराई गई है और प्रिन्सने उस पर फिर अपना दस्तखत कर दिया है, तो वह बड़ी प्रसन्नतासे बोल उठा,—"ईश्वरको बहुत बहुत धन्यवाद है। अब मैं बच गया।"

अर्नेष्टिना,—(पाल डाइसर्टके समान ही प्रसन्नता दिखाती हुई) "अब तुम्हें शोक करनेका कोई कारण नहीं रह गया। आज सवेरे एक घण्टे तक प्रिंस मेरे पास थे और उन्होंने अपनी इच्छासे ये बातें इस एकरारनामेपर लिख दी हैं, परन्तु उनकी इच्छा है, कि यह काम इस रीतिसे किया जाय, कि किसीको न्यायमें सन्देह करनेकी जगह न मिले और सर्वसाधारण यह न कह सकें, कि इसमें उनकी कुछ साजिश है। ये प्रिंसके ही शब्द हैं और इस कामके लिये उन्होंने तरकीब भी बताई है।"

डाइसर्ट—(बेसब्रीके साथ) "और वह तरकीब?"

अर्नेष्टिना,—(बड़ाही विश्वासपूर्ण और प्रेममय भावधारण कर, तथा इस तरकीबसे काम निकलनेका अपना अटल विश्वास दिखाती हुई) "मैं वह भी तुम्हें बताऊंगी। प्रिन्स महोदयकी इच्छा है,

डाइसर्ट,—"हां हां, यही उचित है। उनका साथ न छोड़ो; जिसमें वे अपनी प्रतिज्ञासे हट न सकें।"

अर्नेष्टिना,—(जल्दीसे) "यदि उनकी ऐसी ही इच्छा होती, तो कभी उस पुर्जेपर अपना मत लिखकर दस्तखत न कर देते, परन्तु, प्यारे पाल! मैं तुमसे कुछ और भी कहना चाहती हूं ?"

डाइसर्ट,—(उत्सुकतासे) "क्या कहना चाहती हो ?"

अर्नेष्टिना,—"प्रिन्सने कहा है, कि मैं गुप्त रूपसे इस कैदखानेके गवर्नरसे कहला दूंगा, कि डाइसर्टको फांसी न दी जायगी। उनके इस कामका यह तात्पर्य है, कि गवर्नर स्वयं आकर चुपचाप तुम्हें माफी मिलनेका आश्वासन दे जायगा।"

डाइसर्ट,—(प्रसन्नतासे ताली बजाता हुआ) "बस, अब बचीखुची निराशा भी दूर हो गई। प्यारी अर्नेष्टिना! सचमुच तुमने यह काम बड़ी चतुरतासे किया है और इसके लिये भविष्यमें, मैं तुम्हारे साथ बड़ा ही उत्तम व्यवहार करूंगा।"

इसके बाद अर्नेष्टिना एक बार अपने पतिको आलिङ्गन कर वहांसे बिदा हुई। गवर्नरके कमरेमें आकर उसने एकबार फिर उसको कृपा और दया दिखानेके लिये धन्यवाद दिया तथा गाड़ीपर सवार हो, डाइसर्टकी बातें और अपनी धूर्त्ततापर प्रसन्न होती हुई, अपने चाचाके मकानपर लौट आई।

दिनके तीसरे पहर गवर्नर स्वयं कैदियोंकी कोठरी देखनेके लिये गया और बड़ी ही नम्रता तथा कृपा दिखाते हुए उसने डाइसर्टसे, उसका कुशल समाचार पूछते हुए कहा,—"मिष्टर डाइसर्ट! यदि मैं कुछ कहकर आपके मनको शान्ति पहुंचाऊं तो मैं समझता हूं, कि अपने कर्त्तव्यसे विमुख न होऊंगा ?"

डाइसर्ट,—"आप बड़े ही सज्जन पुरुष हैं और यह हमारा—"

गवर्नर,—(टटोलनेवाली दृष्टिसे उसे देखता हुआ)—"बताता

है, कि आपके ऊपर कानूनका कठोर प्रयोग न होगा। बात यह है, कि मुझे विश्वास है, कि कोई उच्च पदस्थ मनुष्य या अधिकारी——"

डाइसर्ट,—(गवर्नरकी बातोंसे अपनी स्त्रीकी बातें मिलती हुई देखकर) "आह ! मैं समझता हूं, कि आपको भी यह बात मालूम हो गई है, कि मुझे माफी मिल जायगी।"

गवर्नर,—(ओठोंपर उंगली रखकर चुप रहनेका इशारा करता हुआ) "चुप ! चुप !!"

डाइसर्ट,—(प्रसन्नतासे) "बस अब अधिक कहनेकी आवश्यकता नहीं है, मैं आपका मतलब समझ गया।"

गवर्नर,—"परन्तु पहरेदार या अपने मित्रोंको इस विषयमें एक शब्द भी न कहना। क्योंकि यह एक कानूनी गुप्त भेद है और मैंने आपसे यह भेद इशारे इशारेमें इसीलिये कह दिया है, कि जिसमें आप सन्देहसे दुःखित न रहें।"

इतना कह, गवर्नर वहांसे चला गया और पाल डाइसर्ट इतनी प्रसन्नता तथा आरामसे भोजन करने लगा मानो उसकी माफीकी आज्ञा अभीसे ही जगत्में विख्यात हो गई हो।

इधर अर्नेष्टिना भी अपने चाचाके अल्बे मार्ले ष्ट्रीटवाले मकानपर लौटकर उसी तरह प्रसन्नतासे भोजन करने बैठी, जिस तरह कि न्यूगेट जेलमें उसका पति। रात्रिके लगभग नौ बजनेके समय उसे मिष्टर लारेन्स सेम्पसनके आनेकी सूचना मिली और उसने बड़े ही चाव भगतके साथ उन्हें अपने कमरेमें बुला भेजा।

लारेन्स सेम्पसनको सामने देखते ही उसने बड़े आदरसे कहा,—"बैठ जाइये, मिष्टर सेम्पसन ! और एक गिलास शराब पीजिये। मैंने आज अपने पतिसे वे बातें कही थीं, जिनका जिक्र आप उस दिन कर गये थे। मैंने उनसे यह भी कहा था, कि यदि आप

मुझसे छिपाकर किसी रमणीके प्रेम पाशमें मुग्ध हो गये हों तो अब मुझे बता दीजिये, मैं आपको हृदयसे क्षमा कर दूंगी। साथ ही मैंने उनसे बहुत तरहसे अनुरोध किया, कि अब कृपाकर यह भेद न छिपा रखें, क्योंकि अपने पिताके इस तरह एकाएक लापता हो जानेके कारण मिष्टर मालवर्न बड़े ही दुःखित हो रहे हैं; परन्तु दुःखकी बात है, कि मेरे पतिने बहुत तरहसे मुझे विश्वास दिलाया, कि तुम्हें इस बातका सन्देह भी न करना चाहिये, कि मैं किसी स्त्रीके प्रेममें मुग्ध हुआ था। उनके हाव भावसे भी उनकी बातोंकी सत्यता प्रमाणित हो रही थी। इसलिये मिष्टर सेम्पसन! आपकी आज्ञा तो मैं पालन कर चुकी; परन्तु मुझे दुःख है, कि मिष्टर मालवर्नके पिताका पता लगनेका कोई साधन नहीं मिला, साथ ही मुझे इस बातकी प्रसन्नता भी है, कि मेरे पति किसी ऐसे अपराधके अपराधी नहीं प्रमाणित हुए, जिससे कि स्त्रियोंके हृदयमें बदला लेनेका विचार उत्पन्न हो जाता है।"

सेम्पसन,—"इस कामके लिये आपने जो कष्ट उठाया है, उसके लिये मैं आपको हृदयसे धन्यवाद देता हूं। क्या आप कृपा कर मुझे वह चिट्ठी लौटा देंगी, जो मैंने उस दिन आपको दी थी? सम्भव है, कि भविष्यमें उससे कोई काम निकल आवे।"

अर्नेष्टिना,—(यद्यपि उसने वह पत्र आगमें जला दिया था, तथापि निर्भीक और शान्त भाव बनाकर) "मिष्टर सेम्पसन! मैंने वह पत्र अपने लिखनेवाले डेस्कमें बन्दकरके रख दिया है; और वह डेस्क ऊपर बैठकखानेवाले कमरेमें रखा हुआ है। (अपने स्थानसे उठकर) मैं अभी आपको वह पत्र ला देती हूं।"

सेम्पसन,—"नहीं, मैं आपको इतना कष्ट नहीं दिया चाहता। जब समय मिले, तब वह पत्र डाक द्वारा मेरे पास भेज दीजियेगा।"

अर्नेष्टिना,—"धन्यवाद है। अवश्य भेज दूंगी। (इसके बाद ज्यों

ही सेम्पसन उससे विदा हो चले गये, त्योंही वह बोली) अहा! दुष्ट ने प्लौटके अफसरको भी कैसा उल्लू बनाया है।"

भोजनवाले कमरेमें जलती हुई आगके पास आराम कुर्सी खींच, उसपर बैठकर, अर्नेष्टिना रात ग्यारह बजेतक अपनी चालों तथा तरकीबोंपर विचार करती रही और जब सब नौकर सोने चले गये तब वह डेनल कौफिनको वहाँसे भागनेमें सहायता देनेके लिये उठ खड़ी हुई। फिर अपने चाचाके कपड़े पहननेवाले कमरेमें जा, गुप्त खटकेको दबाकर उसने दरवाजा खोला, जिसके साथ ही डैङ्गमैन उस कमरेसे घबराता हुआ बाहर निकल आया, जिसमें सोफे रखे हुए थे, क्योंकि उस धोखेबाज कुर्सीमें फंस जानेके कारण, वह फिर उस कुर्सीवाले कमरेमें जानेका साहस न कर सका था।

अर्नेष्टिना उसे अपने साथ दरवाजेतक ले गई और अब दोनों चोरोंकी भांति पैर रखते हुए, सीढ़ियोंसे नीचे उतर गये। यहां आकर डैङ्गमैनने बड़ी धीमी तथा मधुर आवाजमें कहा,—"लेडी! तुम्हारा दोस्त प्रिन्स एक विचित्र खिलाड़ी है। उसने बड़ी गहरी चालाकी खेली है।"

अर्नेष्टिना—(एक मतलब भरी दृष्टिसे उसे देख कर) "परन्तु वे उन्हें देते भी खूब हैं, जो उनकी आज्ञा पालन करते हैं। साथ ही उनसे बदला लेनेमें भी बड़े बहादुर हैं, जो उन्हें धोखा देते हैं।"

कौफिन,—"मैं उनमेंसे ही हूं, जिन्हें वे खूब देते हैं।"

इतना कह, डैङ्गमैन उस मकानसे बाहर निकल गया और अर्नेष्टिना उस मनुष्यके चले जानेपर, जिसकी सूरत देखनेसे ही उसे एक गुप्त बात स्मरण हो आती थी, प्रसन्न होती हुई, अपने कमरेकी ओर लौट पड़ी।

परन्तु ज्योंही वह अपनी चाचाके गुप्त कमरोंके सामनेसे आगे बढ़ी, त्योंही उसको इच्छा हुई, कि एकबार उन गुप्त कमरोंमें

घुसकर वहांका तमाशा अच्छी तरह देख लेना चाहिये। परन्तु इस समय उस मकानमें घोर सन्नाटा छाया हुआ था, इसलिये वह डर गई और अपने आश्चर्यकी पूर्त्तिका यह काम, किसी दूसरे दिनके लिये छोड़, वह अपने कमरेमें लौट आई।

तिरसठवां परिच्छेद।

विनोश्रियाका अधःपतन।

उसी सोमवारको रातके नौ बज चुके थे, जो विनोश्रियाने प्रिन्स रीजेण्टसे मिलनेके लिये स्थिर की थी। इस समय प्रिन्स कार्लटन प्रासादके एक छोटे, पर सजे सजाये कमरेमें चुपचाप बैठे हुए थे। इस कमरेके बगलमें प्रिन्सके सोनेका कमरा था, जो बड़ी ही सुन्दरतासे सजा हुआ था और जिसका दरवाजा इसी छोटे कमरेमें पड़ता था; परन्तु वह इस समय बन्द था।

उस छोटे कमरेमें प्रिंस एक सोफा पर लेटे हुए थे और उन्हीं कामोन्मत्त करनेवाले विचारोंमें उलझे हुए थे, जो विनोश्रियाकी मनोहर मूर्त्ति देखते ही उनके विलास-परायण हृदयमें उत्पन्न हो सकते थे। उनके पास ही टेबिल रखा हुआ था, जिसपर तरह तरहकी बढ़िया शराबोंकी बोतलें और फल भरी रकाबियां रखी हुई थीं। आतिशदानमें आग जल रही थी, खिड़कियों पर मोटे पर्दे झूल रहे थे और कमरेमें सुगन्धित तथा गर्म हवा भरी हुई थी। छतसे लटकता हुआ एक लैम्प कमरेमें मनोहर रोशनी फैला रहा था और दरवाजे पर लटकता हुआ मखमली पर्दा, उस कमरेकी शोभा और भी बढ़ा रहा था। मानो उस कमरेमें बाहरी हवा घुसनेकी बिल्कुल ही मनाही थी।

"हम ऊपर कह चुके हैं, कि प्रिन्स विचारोंमें उलझे हुए थे, मानो

वास्तविक प्रसन्नताको आलिङ्गन करनेके लिये, वे पहलेसे ही तय्यार हो रहे थे। उन्हें विनोप्रियाके आगमनमें किसी प्रकारका सन्देह नहीं था; क्योंकि कर्नल मलपासके यहां भोजके समय उसने उनको जो वचन दिया था, उसकी पुष्टि, उसने अपने सुन्दर अक्षरोंमें, आज सबेरे ही पत्र भेजकर कर दी थी।

जिस समय प्रिन्स सोफापर लेटकर इस तरह अपनी आगन्तुका मनोहारिणी सुन्दरीका ध्यानकर रहे थे, उसी समय एकाएक उनका ध्यान बदल गया और वे विनोप्रियाकी सुन्दरतासे उन स्त्रियोंकी सुन्दरताकी तुलना करने लगे, जिनका कि अभीतक उन्होंने उपभोग किया था। इसमें कोई सन्देह नहीं, कि उनकी सख्या अनगिनत थी, परन्तु सरसरी दृष्टिसे वे उन सबकी सुन्दरता पर विचार कर गये। हां, इस समय वे अक्टेभिया क्लेरेण्डन, मिसेज फिज़हर्बर्ट, लेडी लिटोप्रिया लेड, कपड़ा बेचनेवाली मिसेज ब्रेस, कौण्टेस जर्सी, और डेवनशायरकी डचेस—सभीकी सुन्दरता विचार गये और अन्तमें उन्होंने अपना यही सिद्धान्त स्थिर किया, कि इन सबमें विनोप्रिया जैसी सुन्दरी कोई भी नहीं थी। हां, इस मानसिक आलोचनामें उन्होंने डचेजसे लेकर पोशाक बेचनेवाली, कौण्टेससे लेकर नाचनेवाली, और बड़ीसे बड़ी लेडीसे लेकर मामूलीसे मामूली उन नौकरोंकी लड़कियों तकको न छोड़ा, जिनका मजा वे लूट चुके थे। न इस आलोचनामें वे मिस वेथर्स्ट, अगेथा उवेन, और लेडी अर्नेष्टिना डाइसर्टको ही भूल गये। उन्हें अच्छी तरह स्मरण था, कि प्रथमोक्त सुन्दरी बड़ी ही रूपवती थी, अगेथाके लिये अब भी उनके विचार अच्छे थे, परन्तु इस तुलनामें सबसे अधिक गोलमाल काममयी अर्नेष्टिनाकी उन्मादिनी सुन्दरता और विलासपरायणताने मचा दिया था। इसीलिये अर्नेष्टिना और विनोप्रियाकी सुन्दरताकी तुलनामें प्रिन्सको कई मिनट लग गये।

उनकी स्मरण-शक्ति कुछ देर तक दोनोंकी सुन्दरता,—मर्नेष्टिनाकी आँखें, केश, चेहरा, और कुचोंके उभारसे; विनोफ्रियाकी आँखें, केश, मुखमण्डल तथा उन्नत उरोजोंकी तुलना करती रही, परन्तु, अन्तमें इसबार भी विनोफ्रियाकी ही जय हुई; क्योंकि विनोफ्रियाकी जवानी अभी अभी फूटी थी। वह अभी उसी अधखिली कली जैसी थी, जिस पर मनुष्यका कठोर हाथ थोड़े ही दिन हुए पड़ा था।

ओह! अब उस सुन्दरीकी मनोहर मूर्त्ति अच्छी तरह उनके हृदयमें बैठ गई। वे उसके क्षण भरके विलम्बके लिये भी चिन्तित होने लगे। उन्होंने घड़ी देखी—नौ बज कर दस मिनट हो चुके थे, परन्तु वह तबतक भी न आई थी। 'क्या वह अब न आवेगी?' ज्योंही उन्होंने अपने मनमें यह प्रश्न किया, त्योंही दरवाजा खुल गया, मखमली पर्दा हट गया और विनोफ्रियाकी मनमोहनी मूर्त्ति सामने आ खड़ी हुई। इसके बाद फिर पर्दा गिरा, उस नौकरने, जो उसे यहां पहुँचा गया था, बाहरसे दरवाज़ा बन्द कर लिया और प्रिन्स रीजेण्ट उसे आलिङ्गन करनेके लिये अपने स्थानसे झपट कर उठ खड़े हुए।

विनोफ्रिया एक बड़े और लम्बे लबादेमें, अपनेको इसलिये छिपाकर वहां आई थी, जिसमें कि प्रिन्सके नौकर उसे पहचान न सकें, परन्तु अब उसने फुर्तीसे अपना लबादा उतारकर फेंक दिया, टोपी रख दी और अपनी शानदार मनोहर मूर्त्तिसे प्रिन्सके आलिङ्गनमें कूद पड़ी।

प्रिंसने पहले तो उसे अच्छी तरह कलेजेसे लगाया, फिर सोफाके पास लेजाकर, उसे बैठाने बाद, स्वयं भी उसकी बगलमें बैठकर कामोन्मत्त दृष्टिसे उसे देखते हुए बोले,—"आह! तुम कैसी सुन्दर दिखाई देती हो?"

इस समय लैम्पकी मनोहर, पर तेज रोशनी, विनोफ्रियाकी आँखें

ढाल शरीर और चन्द्र-मुख पर इस तरह पड रही थी, जिससे मालूम होता था, कि मानो वह एक स्वर्गकी अप्सरा है। उसकी सुन्दरता चकाचौंध लगा रही थी, क्योंकि उसके अङ्ग प्रत्यङ्गसे सौन्दर्य्यकी झलक फूटी पडती थी—आखोंकी चमक, कपालका अर्द्ध चन्द्राकार घुमाव, गर्दनका गोरापन, उन्नत उरोजोंका हृदय-वेधक उभार और केशोंकी चमक मनको मोह रही थी।

वह कामदार लाल मखमलकी बहुमूल्य पोशाक पहने हुए थी, उसके ऊपर एक अंगिया खूब सटकार बैठी हुई थी, जिससे उसके दोनों उरोज अपना उभार दिखा रहे थे और उसकी दोनों गोरी गोरी बाहें खुली हुईथीं। यहां तक आनेमें उसे जो कष्ट हुआ था, तथा उसके हृदयमें जो विचार या उत्तेजना उत्पन्न हो रही थी, उसने उसके गालोंकी लाली और भी बढ़ा दी थी। सारांश यह, कि वह उस समय इतनी सुन्दरी दिखाई देती थी, कि प्रिन्स मन ही मन विचारने लगे, कि आज रातमें उसपर अधिकार जमानेके लिये अपना वर्त्तमान ऐश्वर्य ही नहीं, बल्कि बृटिश राज्याधिकार पानेकी आशा भी यदि त्यागनी पड़े तो भी कोई चिन्ता नहीं।

अब विनोप्रियाके गलेमें हाथ डालकर, उसे अपने पास खींचते हुए प्रिन्सने कहा,—"मेरी प्राणप्यारी विनोप्रिया! क्या यह सम्भव है, कि तुम्हारे प्रेमका मजा लूटनेका समय आ गया है? अथवा मैं वह सुख स्वप्न देख रहा हूं, जिसका फल निराशा और दुःखमय होता है?"।

विनोप्रिया,—(बडी ही प्रेम भरी मधुर बोलीमें) "मैं अपने वचनके अनुसार यहां आई हूं, परन्तु आपको क्या वे शर्त्तें याद हैं, जो मैंने आपसे निवेदन की थीं?"

प्रिन्स,—"मेरी परी! मेरी प्राण! तुम ही फिर बता दो, कि वे शर्त्तें क्या हैं?"

विनोप्रिया,—"सबसे पहली बात तो यह है, कि हम दोनोंमें यह बात तय हो गई थी, कि अपनी सम्मान-रक्षाके लिये मुझे विवाह कर लेना चाहिये—और मैं विवाह कर चुकी।"

प्रिन्स,—"आह! भाग्यवान फ्लोरेस। परन्तु मेरी प्यारी! जरा यह तो बता दो, कि जिस दिन यह विवाह करनेकी बात उठी थी, क्या उसके पहले ही वह तुम्हारे पास पहुंच गया था?"

विनोप्रिया,—"नहीं, परन्तु मैं यह जरूर जानती थी, कि वह भी उन छः मनुष्योंके दलमें सम्मिलित है, जिन्होंने मुझे प्राप्त करनेके लिये बाजी लगा रखी है। साथही मैं यह भी जानती थी, कि उसने इसके पहले भी मुझे देखा है और मेरे प्रेममें मुग्ध हो चुका है। इसीलिये मुझे दृढ़ विश्वास हो गया था, कि वह मेरी शर्त्तें मान लेगा।"

प्रिन्स,—"परन्तु क्या वह जानता है—क्या उसे मालूम है..."

विनोप्रिया,—"कि मैं इस समय आपके पास आई हूं। हां, विवाह होनेके पहले ही मैंने उससे कह दिया था, कि जिसको तुम अपनी अर्द्धाङ्गिनी बनाना चाहते हो, वह प्रिन्सकी उपपत्नी बननेका वचन दे चुकी है।"

प्रिन्स,—"परन्तु उसे तुम्हारी यह बात बुरी तो अवश्य ही लगी होगी। पर यह कोई आश्चर्यकी बात नहीं है, जो उसने तुम्हारी शर्त्तें स्वीकार कर लीं, क्योंकि इस संसारमें तुम्हारी सुन्दरताका जोड़ा नहीं है।"

विनोप्रिया,—(तानेसे) "चुप चापलूस। मैं पहलेही कह चुकी हूं, कि तुम्हारे मुंहसे ये चापलूसीकी बातें कितनी जल्दी निकल पड़ती हैं।"

प्रिन्स,—(पहले प्रेमसे उसे गले लगाकर, और फिर उसके मुंह, कन्धे तथा स्तनोंके अगणित चुम्बन लेते हुए) "मैं ईश्वरको सौगन्ध खाकर कहता हूं, कि ये विशेषण जब तुम्हारे लिये

प्रयोग किये जाते हैं, तो वे ठीक ही घटती हैं,परन्तु तुम हम दोनोंके बीच तय हुई शर्त्ते कह रही थीं। अच्छा, अब पहले शर्त्तें तय कर लो, फिर हमलोग केवल प्रेम और प्यारके ही काममें लगेंगे।"

विनोग्निया,—"यह पहलेही तय हो चुका था, कि आप मेरे पतिको अपने यहां कोई ऐसी जगह दे देंगे, जिससे हमलोग कार्लटन-महलमें ही रह सकें।"

प्रिन्स,—"कलही होरेस सैकविलको मैं अपने महलका 'लार्ड हिटवर्ड' * बना दूंगा। गत दस दिवसोंसे यह जगह खाली भी है और मैं सुन्दरी विनोग्नियाके पतिसे बढ़कर उपयुक्त मनुष्य दूसरेको नहीं समझता।"

विनोग्निया,—(प्रेम भरी तिर्छी चितवनसे प्रिन्सकी ओर देख कर) "और मेरे नामके साथ पियरेसका खिताब ?"

प्रिन्स,—"हां प्यारी! वह शर्त्त भी पूरी कर दी जायगी। क्या अभी कुछ और भी कहना है ?"

विनोग्निया,—(प्रसन्नतासे फूलकर) "नहीं, अब कुछ भी नहीं मेरे प्यारे।"

प्रिन्स,—"और अब तुम मेरी हो। एक बार अपने मुंहसे कह दो, कि अब तुम मेरी हो।"

विनोग्निया,—"हां, मैं तुम्हारी ही हूं।" इतना कहते कहते उसकी आवाज इतनी धीमी पड़ गई, जिस तरह कि मरनेवाले मनुष्यकी धीमी पड़ जाती है इसके बाद उसका माथा प्रिन्सके कन्धे पर ढुलक गया और वह उनकी छातीपर गिर पड़ी।

* * * * * * *

अभी अच्छी तरह सवेरा भी नहीं हुआ था और अन्धकार छाया ही हुआ था, जब विनोग्निया कार्लटन-प्रासादके गुप्त दरवाजेसे

* किसी जमींदार अथवा राजाके घराऊ कामोंका प्रबन्ध कर्त्ता।

बाहर निकली। वह एक लम्बा लबादा ओढ़े हुए थी और उसके चेहरे पर मोटी नकाब पड़ी हुई थी, जिसमें, इस उपन्यासकी नायिकाके मनोहर चेहरेको तीखीसे तीखी दृष्टिवाले मनुष्य भी न पहचान सकें।

पासके ही एक गाड़ीके अड्डेके पास जाकर, कोचवानको नाइट्स ब्रिज नामक स्थानमें गाड़ी लेजानेकी आज्ञा दे, वह गाड़ीमें बैठ गई। अकेसिया काटेज पहुंचनेके कुछ पहले ही, वह गाड़ीसे उतर पड़ी और पैदल ही अपने मकान तक चली गई। ज्योंही उसने अपने घर पर पहुंच कर धीरे धीरे दरवाजा थपथपाया, त्योंही स्वयं होरेसने दरवाजा खोल दिया और विनोशिया चोरोंकी तरह पैर रखती हुई ऊपर चढ़ गई। उसके पीछे पीछे उसके पति होरेस थे।

जिस समय ये दोनों अपने कमरेमें पहुंचे और जब विनोशिया अपना लबादा तथा टोपी उतार चुकी; तब, उसने उस लेम्पकी रोशनीमें, जो टेबिल पर जल रहा था, अपने पतिके चेहरे पर एक तेज और टटोलनेवाली दृष्टि डाली। उसने देखा, कि होरेसका चेहरा पीला पड़ रहा है और वे दुःखकी सुलगती हुई ज्वालाको हृदयमें ही दबा रखनेका उद्योग कर रहे हैं। यह देखते ही विनोशिया उनसे चिपट कर जोर जोरसे रोने लगी।

होरेसने उसे अपने कलेजेसे लगाकर कहा,—"ईश्वरके लिये अपनेको सम्हालो। मेरी प्यारी विनोशिया। तुम्हारी यह रोनेकी आवाज सुनकर, नौकर जाग उठेंगे और वे तुम्हारे इस शोकका कारण पूछने लगेंगे।"

विनोशिया,—(अपनी आंखें पोंछ, होरेसके चेहरेकी ओर विस्मयसे देखती हुई) "परन्तु क्या तुम मुझसे घृणा न करोगे?"

होरेस,—(तेज आवाजमें) "क्या तुम ऐसी आज्ञा देनेके लिये

मुझे घृणाकी दृष्टिसे नहीं देखती हो? परन्तु अब हमलोगोंको उस विषय पर बातें न करनी चाहियें, जिस पर हमलोग कितनी ही बार विचार कर चुके हैं और जो अब उस अवस्थामें पहुंच गया है, कि उसके सम्बन्धमें कुछ कहना ही वृथा है।"

विनोग्रिया,—"हां, परन्तु क्या भविष्यमें कोई चिन्ताकी बात इससे न उत्पन्न होगी?"

होरेस,—"हो सकती है, परन्तु क्या किया जायगा। हम लोगोंकी आवश्यकताओंने भाग्य-लिपिके समान ही यह काम कारा डाला है। वास्तवमें हमलोगोंके भाग्यमें यही बदा था। इसलिये अब शोक करना वृथा है। अब हमलोगोंको इसके लाभालाभ पर विचार करना चाहिये।"

विनोग्रिया,—(प्रसन्नतासे) "हां, यदि तुम्हारी यही इच्छा है, तो मेरी आकांक्षा पूरी होगी और आशा भी सफल होगी। कलका सरकारी गजट ही तुम्हें सम्मानके उच्चपद पर पहुंचा देगा।"

होरेस,—(विनोग्रियाको प्रेमसे आलिङ्गन कर) "तब विनोग्रिया! तुम भी पियरेस होओगी।"

विनोग्रिया,—"हां, क्योंकि तुम पियर हो जाओगे।"

होरेस,—"और क्या हमलोग अब कार्लटन-महलमें जाकर सुखसे न रहेंगे?"

विनोग्रिया,—"नहीं, तुरत ही; क्योंकि तुम्हें लार्ड स्टिवर्डका पद मिलेगा।"

होरेस,—"तब तो शाही दलमें तुम चमकीले सितारेकी तरह चमकोगी—मेरी प्यारी विनोग्रिया!"

विनोग्रिया,—"और तुम्हें भी चमकनेका पूरा अवसर मिलेगा—मेरे खूबसूरत होरेस।"

होरेस,—"ये तो बड़ी ही अच्छी और बढ़िया बातें हैं। और

मैं समझता हूं, कि यह भी ईश्वरका विधानही है, क्योंकि बिना कोई भयानक स्वार्थत्याग किये, कोई उच्च आकांक्षा पूरी नहीं होती।"

विनीशिया,—"परन्तु यदि हमलोग पारस्परिक प्रेम न त्यागें, होरेस! तो क्या हमलोग सुखी नहीं हो सकते हैं? यद्यपि यह सुख मेरे सम्मानमें बट्टा लगाकर प्राप्त होगा।"

होरेस—"नहीं प्यारी! हमलोग अपनेको सुखी बनायेंगे।" यद्यपि होरेसने यह बात बड़े तपाकसे कही, तथापि उसके मुखसे एक ठण्डी सांस, उस समय निकल गई, जब उसने ये शब्द इतने जोरसे कहे, जिसमें इस ठण्डी सांसकी आवाज विलीन हो गई।

विनीशियाने भी एक ठण्डी सांस ली, क्योंकि अभी वह इतनी भ्रष्ट-चरित्रा नहीं हुई थी। खासकर, आज उसका पहला अपराध था तथा वह अपने मन ही मन अच्छी तरह समझती थी, कि वह एक पापिनी स्त्री है, जिसे उसका पति दयाकर हृदयसे लगाये हुए है। जो हो, इसके बाद वे आराम करनेके लिये चले गये; क्योंकि अभी बहुत सवेरा था और वे नीचे नहीं जा सकते थे, और उस समय विनीशिया वास्तवमें बड़ी ही प्रसन्न हुई, जब बत्ती बुझा दी गई, क्योंकि अब होरेस उसका वह कलङ्कित मुख नहीं देख सकते थे, जो लज्जासे लाल हो रहा था।

दोनों सो गये और सवेरे बहुत देरसे उठे। अब शोक, दुःख और लज्जाका पहला भाव दूर हो गया था। वे कुछ ही देर बाद साहससे एक दूसरेके कलङ्कित मुखकी ओर देखने लगे। इसका परिणाम यह हुआ, कि कुछ ही देरमें उनके हृदयसे ग्लानि और लज्जाका भाव दूर हो गया। निषिद्ध फल तोड़ा और खाया जा चुका था। दोनो ही वैवाहिक पवित्रताके स्वर्गको छोड़ चुके थे, अपनी चरित्र-भ्रष्टता अच्छी तरह समझ चुके थे और इसीलिये

उन्होंने लज्जा शर्म्म भी शीघ्रही त्याग दी। अब ऐसा मालूम होता था, मानों दोनोंने इस विषय पर विचार न करनेका पक्का इरादा कर लिया है और अब उस सुखके बदले, जो विवाह और गृहस्थीसे प्राप्त होता है, उस सुखकी ओर ध्यान लगाये हैं, जो इस दुष्कार्य्यसे मिल सकता था।

मिसेस आरबुथनाट और पेनीलोप स्ट्रैटन-ग्रोटमें मिस वेथस्टं के साथ रहती थी, इसलिये इस नव विवाहिता जोड़ीके पास ऐसा कोई भी मनुष्य न था, जो उसके मनकी परिवर्त्तित दशा पर ध्यान देता। नौकर यह जानते ही न थे, कि विनोग्रियाने घरके बाहर रात बिताई है। इस तरह उसका मान सम्मान अभी तक सुरक्षित अवस्थामें था।

सवेरा होनेके थोड़ी ही देर बाद अकेग्रिया काटेजमें दो सरकारी सनदें आ पहुंचीं। एकमें मिष्टर होरेस सेकविलको बैरनका खिताब दिया गया था; जिससे अब वे लार्ड सैकविल बन गये थे और दूसरेमें उन्हें प्रिन्स रीजेण्टके महलके लिये लार्ड स्टिवर्डका पद मिला था।

जब गजटमें यह समाचार प्रकाशित हुआ, तब उसे पढ़कर शौकीन दुनिया,चकित,स्तम्भित तथा विस्मित हो गया और उसे यह बात समझनेमें बाकी न रह गई, कि इस नव-प्रसूत अमीर आदमीने ऐसी स्त्रीसे विवाह किया है। जिसका जोड़ा इङ्गलैण्डमें नहीं है। परन्तु निन्दक अपनी इच्छा जोरसे प्रकट न कर सके और न लार्ड तथा लेडी सेकविलकी ओर उंगली ही दिखा सके, क्योंकि उनमें चाहे कितनी ही बुराई क्यों न भरी हो—पर वे विवाहित थे! इसीलिये अकेग्रिया काटेज कई दिनों तक मिलने वालोंकी भीड़से भरा रहा और नाइट्स ब्रिजपर उनलोगोंकी गाड़ियोंका तांता लगा रहा, जो इस पदकी प्राप्तिके लिये प्रिन्सकी चहेती और लार्ड स्टिवर्डको बधाई देनेके लिये आते थे।

इसी सप्ताहके अन्तमें होरेस तथा विनोशिया कार्लटन-प्रासादके उस भागमें रहनेके लिये चले गये,जो उनके लिये खाली करा दिया गया था और उनकी वफादार दासी जेसिका, खानसामा प्लमस्टेड तथा वह विचित्र पहरेदार भी उनके साथ ही साथ उनकी सेवाके लिये कार्लटन-महलमें जावसे।

चौंसठवां परिच्छेद।

फांसी।

रविवारकी रातके दो दस बजेके बाद, बहुतसे मनुष्योंका दल ओल्ड बेलीमें, खासकर न्यूगेट-जेलखानेके सामने खुले मैदानमें, एकत्र होने लगा। गत सप्ताहमें ही रेकार्डरने कैदखानेके विषयकी रिपोर्ट प्रिन्स रीजेण्टके पास भेज दी थी और उस रिपोर्टमें एक ऐसे मनुष्यका नाम भी लिखा हुआ था, जिसे फांसीकी आज्ञा मिली थी। इस मनुष्यके सम्बन्धमें ऐसा मालूम होता था, कि कानूनी हुक्म काममें लाया ही जायगा, क्योंकि उसकी फांसीका परवाना निकल चुका था और इसीलिये निठल्ले तमाशबीनोंका दल रविवारकी संध्यासे ही एकत्र होने लगा था।

वह मनुष्य, जिसे फांसी होनेवाली थी—अभागा पाल डाइमर्ट था।

रविवारकी सन्ध्याको कुहरा खूब छाया हुआ था और ठंढ ज़ोरसे पड़ रही थी। उस बढ़ते हुए अन्धकारमें न्यूगेटका दृश्य, बड़ाही भयानक,विषादमय और अन्धकारपूर्ण दिखाई देता था तथा अर्द्ध बुभुक्षित, क्रोधोन्मत्त पुरुष कांपती हुई उंगलियोंसे इशारा कर आपसमें कह रहे थे, कि यही उस मनुष्यका कमरा है, जिसे कल सबेरे फांसी दी जायगी। कुछ मनुष्य उस जगहके पास ही बैठकर, जहां फांसीकी तख्ती रक्खी जानेवाली थी, कह रहे थे,—"यही

वह स्थान है, जहां अपराधी फाँसी पर लटकाया जायगा।" इससे कुछ दूरीपर और भी कुछ मनुष्य बैठे हुए थे जो हाथका इशारा कर बता रहे थे, कि फाँसीकी तख्ती इसी स्थानसे निकालकर लाई जायगी।

वास्तवमें कोई दृश्य, कोई स्थान और कोई बात इस फाँसीके विषयमें ऐसी न थी, जिसका जिक्र उन निठल्ले मनुष्योंने वहां बैठकर न किया हो, जो पहलेसे ही तमाशा देखनेके लिये एकत्र हो रहे थे।

उसी रविवारकी रात्रिके दस बजे, एक गाड़ी स्नो-हिल नामक मुहल्लेके 'साराकैन हेड' नामक स्थानमें आ पहुंची और उसमेंसे छः मनुष्य उतर पड़े।

इस दलने गाड़ीसे उतरते ही साईससे कहा,—"तुम कल नौ बजे फिर आओ।"

साईसने उत्तर दिया,—"बहुत अच्छा मेरे प्रभु!"

इसी समय उनमेंसे एक मनुष्य बोल उठा,—"पर कार्जन! इसे नौ बजे क्यों बुलाते हो? आठ बजकर पांच मिनिट होते ही तो सब काम समाप्त हो जायँगे।"

अर्लने कहा,—"परन्तु फाँसीके घण्टेभर बाद, जब उसका शरीर काटकर टुकड़े टुकड़े कर डाला जायगा,—तब वह तमाशा देखकर हमलोग चलेंगे।"

दूसरेने कहा,—"आह! यह दूसरी ही बात है। इस कार्यका यह अन्तिम भाग तो मैं भूल ही गया था। हमलोग इस न्यूगेट-नाटकका कोई भी दृश्य देखे बिना न छोड़ेंगे।"

इतना सुनते ही उसके साथी हँस पड़े, गाड़ी चली गई और साराकैन हेडके काफीखानेमें वे सब घुस पड़े। इस समय वे लोग ज़ोरसे हँसी-दिल्लगी कर, फाँसीके काण्डकी आलोचना कर रहे थे।

इस दलके अर्ल कार्जन, आनरेबुल चार्ल्स मैकनमरा और लेफ्टि-

नेएट ऐप्सली—पाठकोंसे अच्छी तरह परिचित हैं, परन्तु इनके अतिरिक्त लार्ड प्लेएटेगेनेट टिथटाइड नामक एक नौजवान व्यक्ति और भी इस दलमें थे, जो थोड़ेही दिन हुए, हाउस आफ कामन्स के मेम्बर बने थे। ये ड्यूक एडेलन्नेन्सके लड़के थे। पांचवें मनुष्य मार्किस ब्रेगडोफोर्ड थे। इन्हें पियरकी उपाधि मिल चुकी थी। ये अपर हाउसके सदस्य थे पर वहां उपस्थित पुरुषोंकी नीरस बहस इन्हें पसन्द न आती थी। इसीलिये ये किवाड़ोंके कुण्डे खटखटाकर लोगोंको उत्तेजित और विचलित कर दिया करते थे। छठे मनुष्य—काउएट ओसेंविल थे—ये शौकीन जगत्में बड़े विख्यात थे और स्त्री-पुरुषोंके लिये सदा नई नई तरन्दाजियां निकाला करते थे। उस समयकी शौकीन स्त्रियों बड़े पूज्य थे। कौएटकी मूछें बड़ी और रोबीली थीं। वे वास्तवमें एक खूबसूरत आदमी थे। उनकी चालढाल बड़ी ही भड़कीली थी और वे सदा फौजी पोशाक पहने रहते थे, जो उनके बदनपर बहुत ही फबती थी।

काफीखानेमें घुसकर इस दलका प्रत्येक मनुष्य; एक एक कुर्सी खींच बैठ गया और उनमेंसे एक पैर पसार जम्हाई लेने लगा, दूसरेने अपने पैर फैला दिये, तीसरेने टेबिलपर दोनों पाव रख दिये, चौथा जोर जोरसे निरर्थक हँसी हँसने लगा, पांचवेंने बार बार झूठ ही कसम खानी आरम्भकी, क्योंकि यह उसकी सखुन तकिया थी और छठे अर्ल कार्जन इस जोरसे घण्टा बजाने लगे, कि घण्टेकी रस्सी ही टूट गई।

जब घण्टेकी भयानक आवाज सुन, काफी खानेका मालिक दौड़ा आया, तब अर्ल कार्जनने कहा,—"आज रातभरके लिये हमें एक एकान्त कमरा चाहिये।"

वह मनुष्य अर्ल कार्जनको जानता था, इसलिये तुरत ही बोल उठा,—"बहुत अच्छा, मेरे लार्ड!"

"और एक बोतल व्हिस्की भी।" हकलाते हुए लार्ड प्लेण्टेगेनेटने कहा, क्योंकि उन्हें हकलानेका अभ्यास था, परन्तु लार्ड रहनेके कारण यह दुर्गुण रहनेपर भी, वे पार्लियामेण्टके मेम्बर होने योग्य समझे गये थे।

तुरत ही मार्क्विस ब्रैण्डोफोर्ड जोरसे गरज उठे,—"और एक बक्स बढ़िया चुरुट भी लाओ।"

लार्ड प्लेण्टेगेनेटने फिर हकलाते हुए कहा,—"आग, आग जला देना। बदमाश! शराब लाना न भूलना।"

काउण्ट ओर्सेविल,—"क्या व्हिस्की बढ़िया मिलेगी?——बहुत बढ़िया?"

काफीखानेका मालिक सिर झुकाकर वहासे चला गया और शीघ्र ही उन चीजोंके प्रबन्धमें लगा, जिनकी उसे आज्ञा मिली थी। परन्तु ज्योंही वह उस कमरेसे चला, जिसमें ये लोग बैठे हुए थे, त्योंही मार्क्विस ब्रैण्डोफोर्डने एक कुर्सीकी गद्दी उसकी ओर फेंक मारी, परन्तु काफीखानेका नौकर मार्क्विसकी कार्रवाई देख रहा था, इसलिये उसने गद्दी खराब न होने दी और दौड़कर उठा ली। इस दिल्लगी पर सब लोग जोरसे हँस पड़े और लार्ड प्लेण्टेगेनेट बोल उठे,—"बड़ा तमाशा हुआ!"—साथही काउण्ट चिल्ला पड़े,—"बहुत बढ़िया! वाह वाह!!"

लगभग आध घण्टेमें काफीखानेवालेने इन लोगोंके लिये एक कमरा खाली कर, उसमें इनके आरामका सब प्रबन्ध कर दिया और अब वहाँ यह सम्भ्रान्त मण्डली जा बैठी। उस कमरेमें जाते समय रास्तेमें भी इस मण्डलीवाले अपनी हर्कतोंसे बाज न आये। एक व्यापारी इन्हें सीढ़ीपर मिला, जिसे पहले तो ब्रैण्डोफोर्डने धक्का दे दिया और फिर उससे यह कहकर माफी मांग ली, कि धोखेमें धक्का लग गया। इस कार्रवाईसे दूसरा ठहाका लगा और

उस समय तो हँसीका फव्वारा ही छूटने लगा, जब कि अर्ल कार्जनने सत्तर बरसकी एक बुड्ढी मजदूरिनका चुम्मा ले लिया, जो वहां खड़ी ही कोई चीज साफ कर रही थी।

जो कमरा इन्हें ठहरनेके लिये मिला था, वह उस काफीखानेका सबसे अच्छा कमरा था और यद्यपि उसका मालिक अच्छी तरह जानता था, कि वहां जितनी चीजें रखी जायँगी, वे सब सबेरे टुकड़े टुकड़े मिलेंगी, तथापि उसे इस बातका भी पूरा पूरा विश्वास था, कि अपने हर्जानेका पुर्जा जब वह भेजेगा, तो वह कौड़ी कौड़ी चुका दिया जायगा। इसीलिये उसने इतनी ही देरमें कमरेको सब तरहके नये सामानोंसे सजा भी दिया था। कमरेमें आग जल रही थी, टेबिल पर शराब, फल तथा अन्यान्य सामान रखे हुए थे और इन सम्भ्रान्त भोजनानुरागियोंके लिये सिंगारका एक बक्स भी मौजूद था।

कमरेमें घुसते ही आनरेबल जार्ज मैकनभराने कहा,—"बस अब हमलोगोंकी रात मौजसे कट जायगी।"

ऐप्सली,—"अब मैं शरबत बनाऊंगा।"

लार्ड प्लैण्टेगेनेट,—"न ब्राण्डी है, न रम है, ऐप्सली, बदमाशने सिर्फ ह्विस्की लाकर रख दी है—थोड़ा लेमोनेड।"

ब्रेण्डी फोर्ड,—"(ऐप्सलीसे) मैं तुम्हारा बनाया शरबत पियूँ तो मुझे फांसी हो। मैं तबतक ब्राण्डी पी सकता हूं, जबतक आगकी तरह तपने न लगूं।"

कारट्राइट,—"बहुत खूब मार्क्विस! बहुत खूब। तुम्हारी ठीक अंगरेजी रुचि है। परन्तु तुम पोर्ट क्यों नहीं पीते? मैं समझता हूं, कि पोर्ट तुम्हारे लायक शराब है।"

मार्क्विस,—"ओह! वह केवल जी बहलानेके लिये है।"

प्लेण्टेगेनेट,—"यही मैं भी कहता हूं, ऐप्सली! तुम लेमो

नेडमें शराब और चीनी मिलाकर बढ़िया शरबत बनाओ। यदि चीनी न मिलाओगे तो बढ़िया शरबत न बनेगा।"

अर्ल कर्जन,—"टिथटाइड। इसका भार ऐल्सली पर छोड़ दो। वह इस काममें बड़ा चतुर है। इसे दूसरा न कर सकेगा। मैं यह सोच रहा हूं, कि बदमाश डाइसर्टकी इस समय कैसी अवस्था होगी। उसे शायद ही इस बातका सन्देह हो, कि उसकी इतने दोस्त उसे फांसीकी तख्ती पर नाचते देखने आये हैं।"

काउण्ट,—"बहुत अच्छा, बहुत बढ़िया।"

प्लैण्टे गेनेट,—"परन्तु यदि अन्तिम समयमें शरीफके पास माफीका परवाना आ पहुंचा, तब तो हमलोगोंका सब मजा ही किरकिरा हो जायगा और हम लोगोंको निराश होकर लौट जाना पड़ेगा। इस अवस्थामें डाइसर्टको माफीकी आज्ञा स्वीकार न करनी चाहिये, क्योंकि हमलोग उसीको फांसीकी तख्ती पर नाचते देखनेके लिये, इतना कष्ट उठा कर यहां आये हैं।"

काउण्ट,—"अहा! बहुत अच्छा! बहुत बढ़िया।"

कर्जन,—"मैं कल प्रिन्ससे मिला था। उन्होंने मुझसे जोर देकर कहा है, कि जूरियोंने डाइसर्टके लिये दयाका अनुरोध नहीं किया है। इसलिये कानूनी कार्रवाई ठीक ठीक ही होगी।"

प्लैण्टे गेनेट,—"अहा। यदि प्रिन्सने स्वयं ही यह बात कही है, तब तो हमलोग बच गये। मैंने आज तक फांसी लटकते किसीको नहीं देखा है और यदि इस तमाशेके लिये हजार गिन्नियां भी खर्च करनी पड़े, तो भी मैं बाज न आऊं।"

काउण्ट—"बहुत अच्छा। बहुत ही बढ़िया। यह अंगरेजी चाल है, कि कानून जितने मनुष्योंको फांसीकी आज्ञा दिलाये, वे सब फाँसीपर चढ़ा दिये जायें।"

ब्रेण्डीफोर्ड,—"इसके लिये तो हमलोग तुमसे बाजी लगा

सकते हैं, कि अन्य कामोंकी अपेक्षा हमलोग यह दृश्य देखना खूब पसन्द करते हैं।"

काउण्ट,—"मैं भी तो यही कहता हूं, परन्तु मुझे आश्चर्य्य है, कि लेडी अर्नेष्टिना और मार्क्विस आफ लेवेसनका इस बार प्रिन्स पर कुछ भी प्रभाव न पड़ा और डाइसर्ट न छूटा।"

कर्जन,—"मार्क्विस उससे घृणा करता है। इसके अलावा वह कण्टिनेण्ट गया हुआ है। मैं तो यही समझता हूं, कि इस कामसे बचनेके लिये ही वह यहांसे भाग गया है।"

मैकनमरा,—"ठीक ही है। डाइसर्टको फांसी मिलनी ही चाहिये, परन्तु जो हो, हमलोगोंको बदमाश काफीखानेवाले से यह भी कह देना चाहिये, कि वह रातको न सोये, क्यों कि हम लोगोंको सवेरे छः या सात बजे ही जलपानका सामान चाहिये।"

ब्रैण्डीफोर्ड,—"साथही उसे न्यूगेटके सामनेवाले किसी मकानकी दो खिड़कियां भी भाड़ेपर ले रखनेके लिये कह देना चाहिये, जिसमें हमलोग अच्छी तरह वह तमाशा देख सकें?"

प्लैण्टेगेनेट,—"हां, हां, हमलोगोंको सामनेकी जगह अधिकारमें कर लेनी चाहिये, जिसमें वहांका कोई दृश्य अच्छी तरह दिखाई देनेसे छूट न जाय।"

काउण्ट,—"बहुत अच्छा! बहुत बढ़िया!!"

इसकेबाद काफीखानेवाला बुलाया गया। उसे खिड़कियां भाड़े पर लेनेकी आज्ञा दे दी गई और वह न्यूगेटमें फांसीका जो स्थान था, उसके सामनेके किसी मकानमें दो खिड़कियां किरायेपर ठीक करनेके लिये चला गया। लगभग दस मिनटमें उसने लौटकर यह खुशखबरी सुनाई, कि ठीक सामनेवाले मकानमें उसने दो खिड़कियां ठीक कर ली हैं और उनका भाड़ा भी कुल दस गिन्नियां ही देना पड़ेगा। सम्भ्रान्त कुलके इन भूषणोंने यह भाड़ा बहुत ही

सस्ता समझा और तुरतही मार्किस आफ ब्रेण्डोफोर्डने उस मनुष्य पर अपनी थैली जोरसे फेंककर कहा, कि रुपये देकर स्थान पक्का कर ले और बाकी जो बच जाय उसे अपने पास रख ले। वह थैली उस मनुष्यकी दाहिनी आँखमें जाकर इतने जोर से लगी, कि वह व्याकुल होगया, परन्तु उसकी बाईं आंख अभी सही सलामत थी तथा वह थैली भी कुछ भारी मालूम हुई, जिससे उसे विश्वास होगया, कि इसमें रकम कुछ अधिक है, इसलिये वह इस भयानक दिल्लगी पर कुछ न बोला और चुप रह गया। अस्तु।

अब हम इस सम्भ्रान्त दलको शरबत पीते, हँसी दिल्लगी करते और अपनी अभ्यसित वाकचातुरी दिखाते छोड़, न्यूगेट-जेलकी उस कोठरीमें चलते हैं, जहां मिष्टर डाइसर्ट कैद है।

रातके ग्यारह बज चुके थे और अपराधी डाइसर्ट अपनी कैद-खानेवाली कोठडीमें अकेला ही बैठा हुआ था। उसके पास ही एक छोटे टेबिलपर एक बोतल शराब और एक छोटा गिलास रखा हुआ था; क्योंकि फांसीपर चढनेका समय जितना ही निकट आता जाता था, डाइसर्ट अपने छुटकारेकी आशामें उतनाही प्रसन्न भी होता जाता था। अर्थात्, उसे अपनी माफीकी आज्ञापर इतना दृढ विश्वास था, कि जिस समय फांसीकी रस्सी उसके गलेमें पडेगी, उसी समय माफीकी आज्ञा भी आ पहुंचेगी। इसलिये कई-दिनों-से डाइसर्ट फांसीकी वह घड़ी गिन रहा था, जिसके आनेपर उसे दुःख, शोक और सन्तापसे छुट्टी मिल जानेकी पूरी आशा थी।

जबसे वह कैद हुआ था, तबसे अर्नेष्टिना नित्यप्रति उससे मिलने आती थी और जब आती तभी प्रिन्सकी दयाके सम्बन्धमें एक न एक नयी बात सुना जाती थी। इसके अतिरिक्त अर्नेष्टिनाकी बातोंमें आकर, उसे प्रसन्न करनेके विचारसे न्यूगेटके गवर्नरने भी डाइसर्टको पूरा विश्वास दिला रखा था, कि ठीक फांसी पडनेके

समय माफीकी सनद उसे मिल जायगी। इन्हीं सब कारणोंसे कैदी डाइसर्टके मनमें फाँसीका जरा भी भय न था और जिस समय ओल्ड वेलीमें एकत्र हुए पुरुष डाइसर्टकी अवस्थापर विचार करते हुए मन ही मन समझते रहे थे, कि वह अत्यन्त दुःखित होगा, उस समय डाइसर्ट आनन्दसे कैदखानेकी कोठरीमें बैठकर भोजन और शराबका मज लूट रहा था।

भोजन कर लेने बाद, डाइसर्टने अपने वस्त्र उतार डाले और सोनेके लिये पलग पर लेट गया। लेटते ही उसे नींद आगई। इधर ज्यों ज्यों रात अधिक बीतती गई; त्यों त्यों जेल खानेके साम नेकी भीड भी बढती गई। पाँच बजे सवेरे ही फाँसीकीतख्ती खडी करनेके लिये मिस्त्री लोग आ पहुंचे, परन्तु बाहर इतनी चिल्लाहट और हथौडेकी चोटोंकी भयानक आवाज रहने पर भी डाइसर्ट आनन्दसे सोता ही रहा।

लगभग छः बजे सबेरे फाँसीकी तख्ती अपने स्थानसे निकाली जाकर मैदानमें रखी गई। अब मिस्त्री सीढी ठीक करने और तख्तीकी बडी बडी कडिया खडी करने लगे। इस समय वहाँ एकत्रित मनुष्य बड़ेही आश्चर्य और कौतुहलसे यह तमाशा देख रहे थे।

खूब सबेरेही एक काला मनुष्य, जो गन्दे कपडे पहने हुए था और जिसके हाथमें एक बडा डण्डा था, वहा आ पहुंचा और जब न्यू गेटका दरवाजा खुला तब वह दरवाजेकी बगलमें जाकर पत्थरकी मूरतके समान इस तरह चुपचाप खडा होगया, जिससे मालूम होता था, कि वहां उपस्थित मनुष्य जो बातें कर रहे हैं, वह उसके कानोंमें नहीं सुन पडतीं और इसी लिये वह किसीको जवाब भी नहीं देता।

लगभग सात बजे सबेरे डाइसर्टकी निद्रा भङ्ग हुई। वह अभी

सोया ही रहता, यदि पादड़ीके कमरेमें घुसनेकी आहट उसे न मिलती। पादड़ीकी आहट मिलते ही, उसने पादड़ीसे समय पूछा और इसका उत्तर सुनकर उसे बड़ा ही आश्चर्य हुआ, कि उसे उठनेमें बहुत देर होगई।

पादड़ीने कहा,—"कल रातमें आप खूब सोये हैं?"

डाइसर्ट,—(प्रसन्नतासे) "अपने जीवनमें इससे उत्तम नींद मुझे कभी न आई थी। अच्छा, अब मैं उठता हूं।"

पादड़ी,—"मैं दस मिनटमें लौट कर आता हूं।"

इतना कह कर पादड़ी चला गया और डाइसर्ट हाथ मुंह धो, उतनी ही प्रसन्नतासे वस्त्र पहनने लगा, जितनी प्रसन्नतासे गत रात्रिमें उसने भोजन किया था। पादड़ीके आनेपर उसने पूछा, कि क्या शरीफ आ गये हैं? परन्तु उसने उत्तरमें "नहीं" कहा। इसके बाद पादड़ी बोला, कि उसका अन्तिम समय आगया है, अतः उसे ईश्वरकी प्रार्थना करनी चाहिये। परन्तु डाइसर्टने कहा,—"क्या आप समझते हैं, कि यह काम अभी करना अत्यन्त आवश्यक है?"

पादड़ी,—"प्रार्थना सदा ही उचित और लाभदायक होती है?"

डाइसर्ट,—(बेसब्रीसे) "परन्तु क्या आप भी समझते हैं, कि मुझे माफी मिल जायगी?"

पादड़ी,—"गवर्नरने तो मुझसे ऐसी ही बात कही है और वे ऐसे आदमी हैं, कि जबतक किसी विश्वसनीय सूत्रसे उन्हें कोई बात नहीं मालूम होती, तबतक अपने मुंहसे एक शब्द भी नहीं निकालते।"

डाइसर्ट,—"शरीफके आते ही क्या मैं उनसे पूछ सकता हूं, कि. "

पादड़ी,—"मेरे बन्धु! यह विश्वासघात होगा और सम्भवतः इससे मेरी और गवर्नर—दोनोंकी ही नौकरी चली जायगी।"

डाइसर्ट—"आह! सच ही तो। यह तो मैं भूल ही गया था। क्या आप कृपाकर गवर्नरको मेरे पास भेज देंगे,?"

पादडी,—"अवश्य।" इतना कह पादडी एक बार फिर उस कमरेसे बाहर चला गया।

जब पादडी चला गया, तब डाइसर्ट उस घबडाहटसे इधर उधर उस कोठरीमें घूमने लगा, जो उसे अब तक न मालूम हुई थी। उसने अपने दुर्बल भावोंको दबानेकी बहुत चेष्टा की, परन्तु वे तेजीसे बढ़तेही गये। अब उसके मनमें भयानक विचार उत्पन्न होने लगे। वह मनही मन विचारने लगा, कि सम्भव है, कि प्रिन्सने झूठही यह चाल चली हो अथवा अन्तिम समयमें वे अपना मत बदल दें तो क्या होगा। यदि उनकी सब बातें सत्य ही हों तो क्या माफी का परवाना देरसे नहीं आ सकता? ओह! ये विचार बड़ेही भयानक थे। वह अभागा मनुष्य अभी तक जिस भ्रममें पड़ा हुआ था, वह भ्रम, अब धीरे धीरे दूर हुआ जाता था। उसकी ज्ञान शक्ति मानो अब एकाएक जागरित हो उठी थी, मानो ये सब विचार उसे भयानक रूपसे बता रहे थे, कि उसका जीवन इस समय कच्चे सूतमें लटक रहा है। वह चिल्ला उठता, वह हार्दिक कष्टसे रो उठता, परन्तु ज्योंही उसके विचार अन्तिम श्रेणी पर पहुंचे थे, कि पादडी, गवर्नरको साथ लिये उस कोठरीमें आ पहुंचा।

उन दोनों पुरुषोंके प्रसन्न मुख मण्डलने डाइसर्टका भयानक भय दूर कर दिया। उन दोनों पुरुषोंका प्रभाव ठीक वैसाही हुआ, जैसा कि समुद्रकी उठती हुई तरङ्गोंमें तेल डालनेका होता है और अभी उन दोनोंने एक शब्द भी न कहा था, कि डाइसर्ट अपने उन दुर्बल भावोंपर आपही क्रोधित हो उठा।

डाइसर्टका एक हाथ पकड़कर गवर्नरने कहा,—"गुड मार्निङ्ग, मिष्टर डाइसर्ट! शरीफके नामका एक पत्र, जिसमें राजकीय मुहर

लगी हुई है, अभी अभी आया है, परन्तु ईश्वरके लिये ऐसा कोई काम न कर बैठना, जिससे यह बात प्रकट हो जाय, कि तुम्हें यह भेद मालूम है। यह वैसी ही बात है, जैसा कि मेरा पद है और जिस तरह मैंने तुमसे सब बातें कह दी हैं ..."

डाइरक्टर,—(प्रसन्नतासे गवर्नरका हाथ दबाते हुए) "मैं किसी तरह आपको हानि न पहुंचाऊंगा। आपने मुझपर बड़ी दया दिखाई है। परन्तु क्या शरीफ आये हैं? उन्होंने वह चिट्ठी खोली है?—क्या उसमें माफीकी कोई बात लिखी है?"

गवर्नर,—"दूसरी और क्या बात हो सकती है? पौने आठ बजनेके पहले शरीफ यहां न आवेंगे और न वे मेरे सामने वह पत्र ही खोलेंगे। मैं उनसे यह भी नहीं पूछ सकता, कि उसमें क्या लिखा है, परन्तु मुझे इसमें जरा भी सन्देह नहीं है, कि—"

डाइरक्टर,—(तेजीसे) "अभी के बजे हैं?"

गवर्नर,—(हँसकर) "साढ़े सात। क्या आप कुछ जलपान करेंगे? परन्तु इसमें कोई सन्देह नहीं, कि आपको अपना वैसाही भाव चाहिये, मानो रात आपने बड़े कष्टमें बिताई है।"

डाइरक्टर,—"बहुत अच्छा, मैं वैसाही भाव बना लूंगा। पर, मैं जलपान करूँगा। इससे शरीर जरा गर्मा जायगा?"

अब न्यूगेटके भीतरी दृश्यको छोड़, हम कैदखानेके बाहरी दृश्य पर दृष्टि डालना उचित समझते हैं।

आजका प्रभात कुहासेसे घिरा था और सूर्योदयके बाद ही पानी बरसना भी आरम्भ हो गया था। ओल्ड बेलीमें बड़ी भीड़ एकत्र थी। ओल्डबेलीके एक किनारेसे 'स्मिथ फील्ड बाजार' तक मनुष्योंके माथेका एक महासागर ही दिखाई देता था। पुरुष स्त्रियां, लड़के और लड़कियां सब इतने एकत्र हुए थे, कि तिल रखनेको भी जगह न रह गई थी। जेलके सामने तथा अगल बगलके

मकानोंकी खिड़कियाँ और बराम्दे, जहाँसे यह भीषण दृश्य दिखाई दे सकता था, मनुष्योंसे खचाखच भरे थे। फाँसी देनेवाले स्थानके सामने ही एक मकानके पहले खण्डकी खिड़कियोंमें वे सम्भ्रान्त कुलभूषण बैठे हुए थे, जिन्होंने सारी रात सारासेन होटेलमें बिताई थी और अच्छी तरह चाह, कहवा तथा जलपानसे पेट भर कर, अपनेको इस योग्य बना लिया था, कि यह भीषण दृश्य बेफिक्रीसे देख सकें।

पौने आठ बजनेके समय शरीफ, दो सहायक शरीफ और उनके दो अर्दली जेलमें आ पहुंचे। वे तुरतही गवर्नरके कमरेमें पहुंचाये गये और उन्हें वह मोहर किया हुआ लिफाफा दे दिया गया। पत्र लेकर शरीफ एक एकान्त कमरेमें चले गये और वहाँ वह पत्र पढ़कर, जो बहुत लम्बा-चौड़ा न था, उन्होंने सावधानतासे उसे अपनी जेबमें रख लिया। जिस समय वे गवर्नरके कमरेमें लौटकर आये, उस समय उनका चेहरा पहले जैसाही शान्त और गम्भीर था। उनके चेहरेसे इस बातका बिल्कुलही पता न चलता था, कि उस पत्रमें कैसे समाचार लिखे थे और तहजीबके लिहाजसे उनके सहकारी शरीफ भी उनसे उस पत्रके विषयमें कुछ पूछ न सकते थे।

शरीफ,—(गवर्नरको सम्बोधन कर) "मैंने आपसे गत शनिवारको कहा था, कि जल्लादका काम करनेवाला कोई मनुष्य इस समय तय्यार नहीं है।"

गवर्नर,—"हाँ, और अभी तक वही अवस्था है। मुझे विश्वास था, कि इस कैदखानेका कोई न कोई कैदी इस कामका भार उठा लेगा, परन्तु आपके आनेके कुछ देर पहले, मुझे पहरेदारने कहा, कि यह काम कोई भी नहीं किया चाहता।"

शरीफ,—"तब यह बात बाहर, एकत्रित पुरुषोंकी भीड़में भी कह देनी चाहिये, जिसमें उनमेंसे कोई मनुष्य मिल जाय। अच्छा, मैं अभी इस बातकी घोषणा करता हूं।"

इतना कह, गवर्नर तथा अपने सहकारी शरीफोंको साथ लिये, शरीफ वहासे निकलकर, कैदखानेके दरवाजे पर आ पहुंचे और फिर सीढियां चढ एक ऊंचे स्थानपर खडे हो गये। शरीफको उस स्थानपर देखतेही उपस्थित भीडमें एकदम सन्नाटा छा गया, लोगोंका आपसमें बोलना बन्द हो गया और उस नर-महासागरकी उठती हुई तरङ्गे एकदम शान्त हो गई। सभोंकी आंखें आश्चर्य और सन्देहसे, शरीफके चेहरेकी ओर उस समय जा लगीं, जब उन्होंने यह कहनेके लिये अपना मुंह खोला, कि जल्लादके कामके लिये एक मनुष्य चाहिये और वह मनुष्य चाहे कितने ही भयानक-से भयानक अपराधका अपराधी क्यों न हो, उसका अपराध एकदम क्षमा कर दिया जायगा।

अभी उन्होंने मुश्किलसे अपना कथन समाप्त किया था, कि एक जोरकी आवाज़ सुन पडी—"मैं यह काम करूंगा" और इसके साथ ही वह बदसूरत काला आदमी डेनल कौफिन जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है, भीडमेंसे कूद कर उस स्थानके नीचे चला आया जिसपर शरीफ आदि खडे थे।

"हुर्रे" कहकर भीडके सब मनुष्य प्रसन्नतासे चिल्ला उठे, क्यों कि शरीफकी बातें सुनकर उन लोगोंके हृदयमें यह सन्देह उत्पन्न हो गया था, कि कहीं उन्हें बिना तमाशा देखे ही वापस न चले जाना पडे।

इसके अतिरिक्त उन सम्भ्रान्तकुलके उत्पन्न भूपणों की प्रसन्नता का भी वारापार न रहा, जो यह तमाशा देखनेके लिये घण्टों पहलेसे ही में डटे बैठे थे, कि अब बिना किसी रुकावटके यह तमाशा समाप्तहोगा।

शरीफ वहासे उतरकर कैदखानेमें चले गये। उनके साथ ही साथ उनके दोनों सहायक, गवर्नर और मालगिटयर हैङ्गमैन भी था।

इतना कह, गवर्नर तथा अपने सहकारी शरीफोंको साथ लिये, शरीफ वहांसे निकलकर, कैदखानेके दरवाजे पर आ पहुंचे और फिर सीढ़िया चढ़ एक ऊंचे स्थानपर खड़े हो गये। शरीफको उस स्थानपर देखतेही उपस्थित भीड़में एकदम सन्नाटा छा गया, लोगोंका आपसमें बोलना बन्द हो गया और उस नर-महासागरकी उठती हुई तरङ्गें एकादम शान्त हो गई। सभोंकी आंखें आश्चर्य और सन्देहसे शरीफके चेहरेकी ओर उस समय जा लगीं, जब उन्होंने यह कहनेके लिये अपना मुंह खोला, कि जल्लादके कामके लिये एक मनुष्य चाहिये और वह मनुष्य चाहे कितने ही भयानक-से भयानक अपराधका अपराधी क्यों न हो, उसका अपराध एकदम क्षमा कर दिया जायगा।

अभी उन्होंने मुश्किलसे अपना कथन समाप्त किया था, कि एक जोरकी आवाज़ सुन पड़ी—"मैं यह काम करूँगा" और इसके साथ ही वह बदसूरत काला आदमी डेनस कौफिन जिसका जिक्र ऊपर किया जा चुका है, भीड़मेंसे कूद कर उस स्थानके नीचे चला आया जिसपर शरीफ आदि खड़े थे।

"हुर्रे" कहकर भीड़के सब मनुष्य प्रसन्नतासे चिल्ला उठे, क्यों कि शरीफकी बातें सुनकर उन लोगोंके हृदयमें यह सन्देह उत्पन्न हो गया था, कि कहीं उन्हें बिना तमाशा देखे ही वापस चले जाना पड़े।

इसके अतिरिक्त उन सम्भ्रान्तकुलके उत्पन्न भूपर्यों की प्रसन्नता का भी वारापार न रहा, जो यह तमाशा देखनेके लिये वहाँ पहलेसे हो में डटे बैठे थे, कि अब बिना किसी रुकावटके यह तमाशा समाप्त होगा।

शरीफ वहांसे उतरकर कैदखानेमें चले गये। उनके साथ ही साथ उनके दोनों सहायक, गवर्नर और चामन्टियर डेझमेन भी था।

इसी समय घड़ीमें आठ बजे, इसलिये वे कैदखानेकी उस कोठरी की ओर चले, जिसमें डाइसर्ट कैद था और पादड़ी खड़ा होकर उसे उपदेश दे रहा था।

शरीफको देखतेही कैदीको विश्वास होगया, कि माफीका परवाना शरीफकी जेबमें पड़ा है। इसलिये उसने अपने चेहरेपर साहस लाकर, बड़ी नम्रतासे उन्हें सलाम किया। कोठरीमें आकर शरीफने पादड़ीसे कहा,—"मैं आपसे कुछ बातें किया चाहता हूं।

इतना सुनते ही पादड़ी उनके पास चला गया। अब पादड़ीको एकान्तमें लेजाकर शरीफ कुछ बातें करने लगे। डाइसर्टने यह भी देखा, कि शरीफने अपनी जेबसे एक ऐसी चिट्ठी निकाली, जो राजाकी, ओरसे आई हुई मालूम होती थी और जिसपर एक बड़ी मुहर लगी हुई थी।

डाइसर्टने मनही मन विचारा,-"यही मेरी माफीका परवाना है" और जीवनका रक्त बड़ी तेजीसे उसकी नसोंमें प्रवाहित होने लगा।

एक रस्सी निकालकर डाइसर्टको बांधते हुए हैङ्गमैनने कहा,—"इसके लिये क्षमा कीजिये।" इसके बाद उसने कैदीको कोठरीके एक कोनेमें लेजाकर कहा,—"मिष्टर डाइसर्ट! डरकी कोई बात नहीं है। शरीफके पास आपकी माफीकी आज्ञा आ पहुंची है और मैंने उसे देखा है।"

कैदी हैङ्गमैनका हाथ अपने शरीरसे छूते ही कांप उठा और खास कर उसका भयानक चेहरा देखकर और भी घबड़ा उठा, क्योंकि उस मनुष्यका चेहरा हबशियोंके समान काला हो रहा था? परन्तु उसकी आवाज डाइसर्टको परिचित सी मालूम हुई और अब, जब उसने ध्यानसे उसका चेहरा देखा तो उसेमालूम हुआ कि इसमें काला रङ्ग पोते हुआ है।

दरवाजे की ओर देखते हुए और यह देखकर कर, कि इस समय उसकी ओर किसीका लक्ष्य नहीं है, डाइसर्टने इशारेमें ही हैङ्गमैनको बता दिया, कि उसने उसे पहचान लिया है और फिर बहोही धीमी आवाजमें बोला,—"क्या तुमने माफी की सनद अच्छी तरह देखी है?"

कौफिन,—"मैंने शरीफको वह सनद अपने सहायकोंको दिखाते हुए देखा है और उसमें लिखी हुई इबारत पढ़ते भी सुना है।"

डाइसर्ट,—(बेसब्रीसे) "और उसमें क्या बात लिखी थी?"

हैङ्गमैन,—"यही, कि यह माफोका परवाना फाँसी पड़नेके समयके पहले न प्रकाशित किया जाय। इसलिये आपको किसी तरह घबड़ाना न चाहिये, क्योंकि लगभग पन्द्रह मिनट बाद ही आप सहीसलामत फिर इस कोठरीमें लौट आवेंगे?"

डाइसर्ट,—(खुशीसे उछलकर) "कौफिन। तुम बहुत अच्छे आदमी हो, जो तुमने मुझे इस तरह सब बातें बता दी हैं।"

हैङ्गमैन,—"आपने मेरे साथ हमेशः उत्तम व्यवहार किया है, इसलिये मुझे आपको इस अवस्थामें देख दुःख हुआ है, परन्तु अब वहां चलनेका समय हो गया।"

तेजीसे इतनी बातें कह, हैङ्गमैनने जोरसे गवर्नरसे कहा, कि सब कुछ तय्यार है। अब मृत्यु समयकी बारात सजी। पादड़ी और शरीफ,जो बाहर खड़े बातें कर रहे थे,आगे आगे चले। इसके बाद डाइसर्ट और उसकी बगलमें हैङ्गमैन चला। गवर्नर, दोनों सहायक शरीफ, अर्दली तथा जेलके कुछ अन्य अफसर उनके पीछे पीछे चले।

अभी यह दल थोड़ोही दूर आगे बढ़ा था, कि सेण्ट सिपलगरके घण्टेकी भयानक आवाज सुन पड़ने लगी। वह आवाज इमलोंकी

फिर एक प्रकारका भय डाइसट पर छा गया। "हे ईश्वर! यदि माफी—वह आशा, जो अभीतक मेरे हृदयमें जाग रही है, मुझे जीवनदान माफी और स्वतंत्रताका वह वचन—हे प्रभु! यदि ये सब दिमागकी कमजोरीके कारण उत्पन्न हुए विचार हों—यदि ये सब मेरे खाम खयाल हों! वह घण्टा जो इतने जोरसे बज रहा है, यह मृत्युके समयको याता—इस भयानक भीड़का शब्द—और मृत्यु के समयकी पादड़ीकी गम्भीर आवाज—आह! इन सभोंका क्या मतलब है? इनका क्या प्रयोजन है? ये सब काण्ड किस लिये हैं, और यह मृत्युके समयकी भीषण तय्यारियां! यदि इन सबका अन्त जीवनदानमें ही हो जाता है! और क्या पादड़ीकी आवाजसे कुछ आशाकी झलक निकलती है? ओह! नहीं, बिल्कुल नहीं! वह गम्भीर, मनहूस, और मृत्यु-विभीषिकामय है, मानो यह आवाज मुझे सावधान कर रही है—बता रही है, कि यह सब झूठ नहीं है, बल्कि ये सभी भयानक, भीषण और कण्टकित करने वाली सत्यता प्रमाणित कर रहे हैं। हा—इन सबमें मृत्यु घुसी हुई है—मृत्यु! भयानक मृत्यु!!" और इसी समय मानो किसीने चुपचाप डाइसटसे यह भी कह दिया, कि तुम धोखा दिये गये हो, ठगे गये हो और तुम्हारे साथ गहरी चाल खेली गई है। वास्तवमें तुम उस कब्रके पास जा रहे हो, जो तुम्हारे पैरोंके नीचे खोदी हुई तय्यार है।

ये ही वे विचार थे, जो एक चिड़ियाकी उड़ानकी तेजीके समान डाइसटके दिमागमें चक्कर लगाने लगे। परन्तु दूसरेही क्षण उस की बुद्धि ठिकाने आगई और क्षण भर बाद ही वह सब घटनाओंको अपने अनुकूलही देखने लगा। गवर्नरने उससे जोर देकर कहा था, कि होम आफिससे एक पत्र [illegible] है। उसने स्वयं शरीफको वह [illegible] औ[illegible] दिखाते

देखा है—डेनल कौफिनने उसमें लिखी बातें उसको बताई हैं। तब वह अवश्यही क्षमा पत्र है—उसके अलावा वह दूसरा पत्र हो ही नहीं सकता। ओह! नहीं, नहीं, यह दूसरा पत्र नहीं हो सकता।

परन्तु एक गुप्त भय, अनिश्चित:—चिन्ता और सैकड़ों तरहके सन्देह उसके हृदयमें घुसे हुए थे। यदि वह इतना जल्दबाज न होता—दूसरोंपर विश्वास करनेका इतना अन्धभक्त न होता—यदि उसने वह दूसरी शर्त, जो तीन वर्षका कारागार थी, स्वीकार कर ली होती—तो वह कमसे कम इन भयानक सन्देहोंसे तो बच जाता! परन्तु अब क्या? अब तो उस बातको बीते बहुत देर हो गई। "नहीं, मैं शरीफ तथा गवर्नरसे सब बातें कह दूँगा—कह दूँगा; कि मेरी स्त्रीके पास प्रिन्स रोजेवडका लिखा हुआ एक एकरारनामा है—जिस तरह तीन वर्षके कैदकी शर्त मेरे सामने पेश की गई थी—और अब मैं फाँसीकी तख्तीपर जानेके बदले वही शर्त कबूल करता हूँ।

परन्तु आह! वह बड़ा ही अभागा मनुष्य था—उसकी जीभ उसके तालूसे सट गई, उसे ऐसा मालूम होने लगा, मानो उसके कण्ठमें किसीने जलती हुई राख डाल दी है। अब वह क्या कर सकता था? बड़ी तेजीसे सभी बातें उसके दिमागमें घूम गई। आह! वे बिजलीको तेजीसे भी अधिक तेज दौड़ गई। लगभग दस बारह कदम आगे बढ़ते बढ़ते इतने तरहके विचार उसके दिमागमें चक्कर लगा गये, कि जिन्हें लिखनेके लिये एक बड़ी पोथी चाहिये। उसके दिमागमें जोरकी आग जल रही थी, उसको ज्वाला भीषणतासे चक्कर लगा रही थी—तथापि वह उन करोड़ों शब्दोंमेंसे एक भी अपने मुँहसे बाहर न निकाल सका जो इतनी देरसे उसके पागल मस्तिष्कमें ठोकर दे रहे थे, उठ रहे थे, चक्कर

लगा रहे थे और उसके दिमागको टुकड़े टुकड़े कर डालना चाहते थे।

अब एकाएक उसके चेहरेपर ठण्डी हवाका झोंका लगा। इसी समय उसकी आखें, एक पलले गलियारेकी ओर घूमी, और उसे मालूम हो गया, कि वह भी किसी भयानक उद्देश्यसे बनाया गया है, क्योंकि अब वह उस रसोईघरकी ओर आ रहा था, जो इसी गलियारेमें पड़ता था और जिसपर न्यूगेटके सामने जानेवाले मनुष्यकी दृष्टि पड़े बिना नहीं रह सकती थी।

इस स्थानपर आतेही उसे सुन पड़ा,—"साहस! साहस!" वह एक क्षण तक इधर उधर देखता रहा और तुरत ही उसे ह्वैकमैनका काला चेहरा दिखाई दे गया।

अब फिर शान्त होकर, माना किसी भयानक स्वप्नसे जाग पड़ा हो, डाइसर्टने अपने विचार फिर एकत्र किये और बड़ी कठिनतासे साहस बांधा। सौभाग्यवश उसका दिमाग शान्त होनेके कारण, शरीफकी जेबमें कोई सफेद चीज भी उसे रखी हुई दिखाई दी। "आह! यह माफीका परवाना है—माफीका परवाना, जिसको शरीफने इस तरह रखा है, कि आवश्यकता पड़ने पर तुरत ही निकाल ले।" अब सबके अन्तमें वह फिर समझने लगा, कि भयकी कोई बात नहीं है और फांसीकी तख्तीकी सीढ़ियों पर इस विचारसे चढ़ने लगा—कि उसे तुरत ही उनपरसे उतरकर एक नवीन जीवनमें पदार्पण करना पड़ेगा।

इसी समय फिर उस भीड़में सन्नाटा छा गया—एक शब्द भी न सुन पड़ने लगा। उसका यह अपराध सर्वसाधारणकी दृष्टिमें ऐसा भयानक न था, जिससे सब चिल्लाते और उसे श्राप देते। इसलिये धिक्कारका एक शब्द भी न सुनाई दिया और न एक गाली ही किसीके मुंहसे निकली।

इसके बाद डाइसट की आंखोंके आगे अन्धेरा छा गया। उसने अपनी आंखें पहले जोरसे बन्द कर लीं और फिर तुरत ही खोलदीं— और अब उसकी आंखोंमें एक विचित्र ज्योति छा गयी। वह तीव्र दृष्टि, जो उसने इस समय अपने दाहिने बायें डाली, उसने उसे नर-मुंडका एक महा सागर दिखा दिया, जो उसी काली तख्तीकी ओर देख रहा था, जिसपर वह खड़ा था। उस भीड़में एकत्रित मनुष्योंकी दृष्टि उसे अपने शरीरमें घुसती हुई मालूम होने लगी और उसकी यही अवस्था तख्तीपर खड़े होनेके समय पहले कुछ क्षणतक रही, परन्तु दूसरे क्षणमें समस्त जीवनकी बुद्धि, विचार और घटनायें उसे स्मरण हो आयीं।

अब वह हैङ्गमैनके ठीक बगलमें आ पहुंचा। इसी समय हैङ्गमैनने फिर कहा—"साहस!" उसने बोलनेका उद्योग किया, परन्तु ज्योंही उसके ओठ खुलना चाहते थे, त्योंही फांसीकी रस्सी उसके गलेमें डाल दी गयी। उसके मुंहसे एक चीख निकलना ही चाहती थी, कि उसके चेहरेपर एक नाइट कैप (वह टोपी, जो रातकी समय पहनी जाती है, परन्तु फांसी देते समय चेहरेपर लगा दी जाती है) पहना दी गयी। इसके बाद हैङ्गमैनका हाथ उसपरसे उठ गया—उसने उसके नीचे उतरनेकी आवाज सुनी। उसके भारी पांव उस ऊंचे मंचपर पड़ते हुए मालूम हुए और इसके बाद यह भी मालूम हुआ, कि वह फांसी खींचनेकी रस्सीके पास जा पहुंचा है।

इस जीवनमें डाइसटकी बुद्धि कभी इतनी तेज न हुई थी; जितनी इस समय हो गयी, उसकी आंखोंमें उस कपड़ेकी टोपीके भीतरसे बाहरका दृश्य देखनेकी शक्ति आगयी।

परन्तु आह! नीचे कलीके खसकनेकी आवाज भीषण रवसे उसके कानोंमें पड़ी और अब फिर—ओह! कितने जोरसे यह

विचार उसके दिमाग में घुसआये कि उसे धोखा दिया गया है। अब यह सत्य, निश्चित और सन्देह-रहित था, कि उसे धोखा दिया गया। ओह! भय—भयानक आतङ्क उसपर छा गया, क्योंकि वह ठीक उस बूंदके समान हो रहा था, जो गिरना ही चाहती है।

वह गिरा, रक्त उसके माथेमें बिजलीकी तरह दौड़ गया—कुछ क्षणतक उसका शरीर खिंचता रहा, परदूसरेही क्षण वह निर्जीव हो कर रस्सी में झूलने लगा।

वे सम्भ्रान्त-कुल-भूषण खिड़कियों में नौ बजे तक, जबतक कि उसकी लाश टुकड़े टुकड़े न करडाली गयी, बैठे रहे। इसके बाद वे सारासेन होटल में चले गये। वहां जाकर बिल का रुपया उन सभोंने उदारतासे चुकादिया और फिर अर्ल कर्जनकी गाड़ीमें सवार हो वेस्ट एण्डकी ओर रवाना होगये।

सर्वसाधारणको फांसी देनेके समयकी रीतिके अनुसार गवर्नर, शरीफ, उनके दोनों सहायक और पादड़ीके साथ बैठकर भोजनकर रहे थे, क्योंकि उस जमाने की यही चाल थी।

गवर्नरने भोजन करते करते शरीफकी ओर देखकरकहा,—"बिचारी लेडी अर्नेष्टिना बड़ोही मर्म्माहत होगी। उसको पूरी आशाथी, कि उसका पति बच जायगा, क्योंकि जब कल सन्ध्याको वह यहांसे गई है, तो कहगई थी, कि कल फिर मिलूंगी। क्या सोच कर उसने ऐसा कहा, यह समझमें नहीं आता और मुझे भी विश्वास हो गया था, कि यह भयानक दण्ड कदापि न दिया जायगा।

पादड़ी,—"मेरी भी यही धारणा थी (शरीफको सम्बोधनकर) आपने जिस समय मुझे बाहर बुलाया और वह कागज अपनी जेब से निकाला, तो मुझे पूरा विश्वास हो गया, कि वह माफीका परवाना है। आपने देखाही होगा कि उसकी इबारत पढ़कर मैं कितना चकित, विस्मित तथा अचम्भित हो गया था।"

शरीफ,—(लापर्वाहीसे) "मैंने उस समय इतना ध्यान नहीं दिया। (गवर्नरको ओर देखकर) शायद आपने वह पत्र नहीं देखा ?"

इतना कहकर उसने वह पत्र गवर्नरकी ओर फेंक दिया और वह पुरुष, जिसे उसने अन्तमें सम्बोधन किया था, पत्र उठाकर पढ़ने लगा।

पत्रमें यह लिखा था:—

"होम आफिस, शनिवार संध्या, १० अक्टूबर।

महाशय, लंडनके शरीफके सेवामें—

मुझे सेक्रेटरी आफ स्टेटसे, आपका ध्यान इस विषयपर आकर्षित करनेको आज्ञा मिली है, कि फांसी पानेवाले अपराधी, तख्तीपर खड़े हो, एकत्रित मनुष्योंको सम्बोधन कर, ऐसी ऐसी वाहियात बात कहते हैं, जिनका प्रभाव जनतापर बहुत बुरा पड़ता है। अतः यह चाल, जो बहुत दिनोंसे चली आ रही है, रोक देनी चाहिये। इस लिये मेरा निवेदन है, कि न्यू गेट-जेलके बाहर फांसीके समय होनेवाली ये बातें जहांतक सम्भव हो, बन्द कर दी जायें। मेरी यह भी इच्छा है, कि आप कृपाकर यह पत्र न्यू गेट-जेलके माननीय पादड़ीको भी दिखा दें।"

इस पत्रपर होम डिपार्टमेण्टके अण्डर सेक्रेटरीका दस्तखत था। गवर्नरने पत्र पढ़ लेनेपर आश्चर्यसे पादड़ीसे आंखें मिलायीं। मानो वे इस बातपर शोक प्रकाशित कर रहे थे, कि घटनाके वश हो, वृथा ही उन लोगोंने डाइसर्टको माफीकी आशा दिखाकर धोखेमें डाल रखा था, परन्तु ये बातें उन दोनोंने अपने हृदयमें ही गुप्त रखीं और गवर्नरको भी इस बातका बिलकुल संदेह न हुआ, कि उसे अर्नेष्टिनाने अपनी पतिको धोखा देनेके लिये अपने हाथका खिलौना बना रखा था।

पैंसठवां परिच्छेद ।

पुलिसकी गारद ।

लगभग एक मासके हो गया, जब जेसिलिन लोफ्टस, इस तरह एकाएक केवल पासपोर्टमें कुछ भूल रहनेके कारण सन्देह पर कैदखानेमें डाल दिये गये थे और पाठकोंको यह भी खयाल रखना चाहिये, कि इस तरह जिस मकानमें वे कैद कर दिये गये थे, वह पुलिसके अधिकारियोंके रहनेका मकान था।

पहले ही कहा जा चुका है, कि जिस कमरेमें मिष्टर जेसिलिन लोफ्टस कैद किये गये थे,वह छोटा और मनहूस सा था। उसमें एक बिछानेवाली चारपाई, एक टेबिल, दो कुर्सियां, एक नहानेका हौज और दो तीन अन्य आवश्यक पदार्थ जेसिलिनको उनकी आवश्यकताओंकी पूर्त्तिके लिये दिये गये थे। उस कमरेमें दो खिड़कियां थीं और दोनोंमें ही लोहेके मोटे मोटे मजबूत छड़ लगे हुए थे तथा ये खिड़कियां उस आंगनकी ओर पड़ती थीं जो चारों ओरसे ऊंची ऊंची दीवारोंसे घिरा हुआ था। उसकी दीवारें इमारतके इस भागको दूसरे भागसे अलग करती थीं और इस ओरसे किसीका भाग निकलना बिल्कुल ही असम्भव था। उस कमरेका दरवाजा बहुत ही मोटा और मजबूत बना हुआ था और उसमें लोहेके बड़े बड़े कांटे जड़े हुए थे। इन कांटोंके अतिरिक्त बेड़े, तथा बड़े बड़े कड़े भी किवाड़ोंमें जड़े हुए थे, जिनमें बाहरसे दरवाजा बन्द करते समय जञ्जीरसे कसकर ताला बन्द कर दिया जाता था। इन सब पदार्थोंको देखकर यह स्पष्ट मालूम

होता था, कि यह एक कैदखाना है। इतना और भी खयाल रखना चाहिये, कि यह कोठरी मकानके एकतल्लेमें ही पड़ती थी और उसके आगे एक लम्बा और अन्धकारमय गलियारा बना हुआ था, जिसमें कभी कभी जेसिलिनको घूमनेको आज्ञा मिल जाती थी। बस, इस तरह हमारा यह वर्णन भी उतना ही यथेष्ट है, जितना कि इस किस्से के लिये आवश्यक है।

हम पहले भी कह चुके हैं, कि जिस समय जेसिलिन पुलिसकी इस मकानमें गाड़ीमें लाये जा रहे थे, उस समय इस गिरफ्तारीके कारणका कुछ आभास उन्हें मिल गया था। पुलिसके अधिकारीने उनसे जो कुछ प्रश्न किये, उससे उनका यह सन्देह और भी दृढ़ हो गया और यह बात जाननेमें भी उन्हें विशेष कष्ट न हुआ, कि इस तरह उन्हें फंसा देनेका कारण कौन है? इस लिये अब वे जेसिलिन लोफ्टसके नामसे यात्रा करनेके विचारपर स्वयं भी अपनेको धिक्कारने लगे।

परन्तु खासकर कैदके पहले दिनकी घटनाओंपर ही विचार करना चाहिये। दिनके लगभग नौ बजनेके समय, पुलिस अधिकारीके मकानमें एक नौकर भोजनके नाना प्रकारके स्वादिष्ट पदार्थ ले आया, परन्तु यह भी स्मरण रखना चाहिये, कि जेसिलिनने उसमेंका एक ग्रास भी अपने मुंहमें न डाला। वह मनुष्य यद्यपि देखनेमें अच्छा नहीं था, परन्तु बहुत ही कम बोलता था और उसी चाल चलन और हावभावका था, जैसा कि इस मकानके लिये उचित था। इसलिये जेसिलिनने उससे कुछ पूछना भी वृथा ही समझा, क्योंकि सबसे पहली बात तो यह थी कि उसे देखते ही जेसिलिन समझ गये, कि इसे ऐसा करनेका गुप्त कारण कभी मालूम न होगा और यदि मालूम भी होगा तो कभी अपने मुंहसे न निकालेगा।

जिस समय इस प्रसन्नतामें आकर जेसिलिन ईश्वरको प्रार्थना कर रही थी, ठीक उसी समय एक विचित्र आवाज सुनकर वे एका एक चौंक उठे। यह आवाज उस कमरेकी तख्तबन्दीसे आ रही थी, जहां वे सोए हुए थे। अब वे ध्यानसे उस आवाजको सुनने लगी—सहसा आवाज बन्द हो गई। उन्होंने मनही मन विचारा, कि उन्हें धोखा हुआ है और वे फिर सोनेका उद्योग करने लगी। परन्तु ज्योंही उनकी पलकें बन्द होने लगीं, त्योंही फिर वह आवाज सुन पड़ी।

वे फिर चौंक उठें—उन्होंने अपना सांस रोका और अब पहले से अधिक ध्यानसे उस आवाजको सुनने लगी। यह आवाज ठीक उसी ढङ्गकी थी, जिस ढङ्गसे औजार द्वारा किसी पदार्थमें छेद किये जानेपर आती है, साथ ही उस आवाजसे यह भी मालूम होता था, कि बड़ी सावधानतासे यह काम किया जा रहा है, जिसमें कोई सुन न ले। अब एकाएक जेसिलिनके हृदयमें यह विचार उत्पन्न हुआ, कि कोई कैदी भागनेका उद्योग कर रहा है, और इस विचा रने उनके हृदयमें एक प्रकारका अलौकिक आनन्द भर दिया—क्योंकि वे विचारने लगी, कि जिस राहसे वह कैदी भागना चाहता है, उसी राहसे उसके साथही मैं भी भाग जाऊँगा।

आवाज अब बराबर आ रही थी। जेसिलिन उस कैदीसे—

इसमें कोई सन्देह नहीं, कि उसे यह विश्वास दिलाया गया है, कि उसके कमरेके बगलका कमरा खाली है अथवा इसके बाद कोई ऐसी राह पड़ती है, जहांसे होकर वह भाग जा सकता है। यही उसकी धारणा होगी। ऐसी अवस्थामें यदि उसके उद्योगमें बाधा डालकर मैं उससे बातें करूँगा, तो वह एकाएक घबड़ा जायगा। इसलिये उसे अपना काम करने देना चाहिये, जिससे अन्तमें उसे स्वयं मालूम हो जावे, कि उसके कामने कहाँतक सफलता प्राप्त की है, और इसके बाद जब वह इस कमरेमें आनेको राह बना ले, तब उसे यह जता देना उत्तम होगा, कि इस कमरेमें भी एक कैदी है, जो उसका साथ देनेके लिये तय्यार है।"

इतना विचारकर जेसिलिम लौफ्टसने अभी अपनेको प्रकट करना उचित न समझा और ध्यानसे उस आवाजको सुनते रहे, जो बगलवाले कमरेसे आ रही थी। जितना ही वे अपना ध्यान उस ओर लगाते गये, उतनाही उन्हें विश्वास होता गया, कि उनकी धारणा ठीक है और यह कोई कैदी ही है, जो इस तरह भागनेका उद्योग कर रहा है। लगभग दो घण्टे तक यह काम होता रहा और उस आवाजको बराबर सुनते रहनेके कारण उन्हें कुछ बातें और भी मालूम हो गईं। अब उन्हें मालूम हुआ, कि तखतयन्दो-के कुछ पीछे दीवारका अंश तोड़ दिया गया है। और इसके बाद उन्होंने सब औजार एक ओर छिपा रखनेकी आवाज भी सुनी। इसके बाद उन्हें मालूम हुआ, कि अपने इस कामको अधिकारियों की दृष्टिसे छिपानेके लिये, वह उस खोदे हुए सूराखमें ईंटे लगा रहा है, जिससे सवेरे आकर कोई इस कामको देख न ले।

इसके कुछ देर बाद सन्नाटा छागया—आवाज आनी बन्द हो गई। परन्तु चिन्ताके कारण जेसिलिनको फिर नींद न आई, क्योंकि इस नवीन कार्य्यने उनके अपरिवर्त्तनीय नियमकोभी

वह अपना काम कर चुकी है। यह उन्हें अपने कमरेमें लौट जाने-का इशारा था। परन्तु ज्योंही वह अपने कमरेमें गये, त्योंही उस बुड्ढीने उस नौकरकी निगाह बचाकर उनके हाथमें एक पत्र पकड़ा दिया। लौफ्टसने जोरसे वह पत्र अपनी मुट्ठीमें दबा लिया। ओह! उतने ही जोरसे, कि जितने जोरसे समुद्रकी तरंगोंमें पड़ा हुआ मनुष्य उस रस्सीको पकड़ लेता है, जो जहाजसे उसे बचानेके लिये फेंकी जाती है। इसके बाद वह जल्दबाज मजदूरिन वहांसे चली गई और वह विचित्र सूरतका नौकर, जो अबतक गलियारेमें एक ओर खड़ा कुछ देख रहा था, फिर दरवाजा बन्द करनेके लिये आ पहुंचा।

जब जेसिलिन अकेले रह गये, तब उस पत्रको पढ़नेका उद्योग करने लगे, जो इस तरह गुप्त रीतिसे उन्हें दिया गया था। उस पत्रमें किसीका नाम न था—बल्कि बहुत थोड़ी ही बातें लिखीं हुई थीं। उसकी इबारत किसी खूबसूरत औरतके हाथकी लिखी मालूम होती थी, और उसकी भाषा अंगरेजी थी। पत्रमें यह लिखा था :—

"मेरे साथी! यदि तुम अपनी स्वतन्त्रताका उपभोग करनेके लिये, इस भयानक स्थानसे भाग जाना चाहते हो, तो उस मनुष्यकी सहायता दो, जो इसी कार्यका उद्योग कर रहा है। आज रातकी समय यदि कोई आवाज तुम्हें सुनाई पड़े अथवा कोई नई घटना घटे, तो घबड़ा न उठो, बल्कि यदि तुम्हें कोई बात बताई जावे, तो उसे पूरा करनेके लिये तय्यार रहो। मुझसे कहा गया है, कि—तुम अंगरेज—जातिके मनुष्य हो और समय आनेपर तुम्हें मालूम होगा, कि तुम्हें अपने देशको एक स्त्रीने ही यह पत्र लिखा है।"

लौफ्टसका वह आश्चर्य, जो उन्हें उस पत्रसे यह जानकर हुआ था, कि वह बहादुर कैदी एक स्त्री है, वर्णन करनेकी अपेक्षा

बदल डाला था, बल्कि उनके हृदयमें निकल भागनेकी प्रसन्नता-मयी आशा जागरित कर दी थी।

बहुत देर बाद उन्हें नींद आई और सवेरे जब आंख खुली, तब वे उस स्थानकी परीक्षा करने लगे, जहांसे रातमें आवाज आ रही थी; क्योंकि उन्हें सन्देह होगया, कि शायद यह भी कोई दूसरा स्वप्न हो अथवा उसी पहले स्वप्नका कोई अंश हो, जो अब तक उनके मगजमें चक्कर लगा रहा था। अस्तु।

अब पलङ्गसे उठकर उन्होंने वस्त्र पहन लिये और उस विचित्र सूरतके नौकरके आनेकी राह देखने लगे। जब नौ बजे सबेरे वह नौकर जलपानका सामान लेकर आया, तब लौफ्टसने उससे पूछा, कि—क्या इस मकानमें और भी कैदी हैं?

उसने कुछ रूखी आवाजमें कहा,—"मैं नहीं जानता महाशय!"

उसका ऐसा उत्तर सुनकर जैसिलिन अपने ऊपर आप ही बड़े अप्रसन्न हुए, कि वृथा ही उन्होंने इस नौकरसे कुछ पूछा, जिसका इतनी रूखी भाषामें उन्हें उत्तर मिला।

जलपानके बाद मजदूरिन आई और नित्यके नियमानुसार काम करने लगी। इस समय लौफ्टस उस गलियारेमें टहलने लगे। यह पहले ही कहा जा चुका है, कि वह गलियारा अन्धेरा, लम्बा तथा देखनेमें मनहूस सा मालूम होता था। उसके अन्तमें एक दरवाजा था, जिसके बाद सीढ़ियां थीं और उसकी बगलमें लगभग बारह दरवाजे थे, जिन्हें देखनेसे ही स्पष्ट मालूम होता था, कि ये कैदियोंके कमरोंके दरवाजे हैं। इस तरह जब वे गलियारेमें घूम रहे थे, तब अपने कमरेके दरवाजेके बगलमें जो दरवाजा था, वहां कुछ देर खड़े हो गये और ध्यानसे सुनने लगे, कि भीतरसे कोई आवाज आती है या नहीं? परन्तु कोई आवाज न आई।

कुछ क्षण बाद उस मजदूरिनने बाहर निकलकर कहा, कि

वह अपना काम कर चुकी है। यह उन्हें अपने कमरेमें लौट जानेका इशारा था। परन्तु ज्योंही वह अपने कमरेमें गये, त्योंही उस बुढ़ीने उस नौकरकी निगाह बचाकर उनके हाथमें एक पत्र पकड़ा दिया। लौफ्टसने जोरसे वह पत्र अपनी मुट्ठीमें दबा लिया। ओह! उतने ही जोरसे, कि जितने जोरसे समुद्रकी तरंगोंमें पड़ा हुआ मनुष्य उस रस्सीको पकड़ लेता है, जो जहाजसे उसे बचानेके लिये फेंकी जाती है। इसके बाद वह जल्दबाज मजदूरिन वहांसे चली गई और वह विचित्र सूरतका नौकर, जो अबतक गलियारेमें एक ओर खड़ा कुछ देख रहा था, फिर दरवाजा बन्द करनेके लिये आ पहुंचा।

जब जैसिलिन अकेले रह गये, तब उस पत्रको पढ़नेका उद्योग करने लगे, जो इस तरह गुप्त रीतिसे उन्हें दिया गया था। उस पत्रमें किसीका नाम न था—बल्कि बहुत थोड़ी ही बातें लिखीं हुई थीं। उसकी इबारत किसी खूबसूरत औरतके हाथकी लिखी मालूम होती थी, और उसकी भाषा अंगरेजी थी। पत्रमें यह लिखा था :—

"मेरे साथी! यदि तुम अपनी स्वतन्त्रताका उपभोग करनेके लिये, इस भयानक स्थानसे भाग जाना चाहते हो, तो उस मनुष्यकी सहायता दो, जो इसी कार्यका उद्योग कर रहा है। आज रातके समय यदि कोई आवाज तुम्हें सुनाई पड़े अथवा कोई नई घटना घटे, तो घबड़ा न उठो, बल्कि यदि तुम्हें कोई बात बताई जावे, तो उसे पूरा करनेके लिये तय्यार रहो। मुझसे कहा गया है, कि—तुम अंगरेज—जातिके मनुष्य हो और समय आनेपर तुम्हें मालूम होगा, कि तुम्हें अपने देशकी एक स्त्रीने ही यह पत्र लिखा है।"

लौफ्टसका वह आश्चर्य, जो उन्हें उस पत्रसे यह जानकर हुआ था, कि वह बहादुर कैदी एक स्त्री है, वर्णन करनेकी अपेक्षा

स्वयं ही अच्छी तरह अनुभव किया जा सकता है। उसको बिखावटसे ही मालूम होता था, कि वह एक सुशिक्षिता स्त्री है। साथ ही इस बातका भी पता लगता था, कि यह मजदूरिन भागनेमें उसको सहायता कर रही है। परन्तु जैसिलिन यह नहीं समझ सकते थे, कि अपनी कोठरीसे मेरी कोठरीमें आकर, वह स्त्री किस तरह भागनेकी आशा कर रही है। जो हो, परन्तु इस पत्रसे उन्हें इतना पता मिल गया, कि आज रातमें उस लेडीसे उनकी कुछ बातें जरूर होंगी, जिससे मालूम होगा, कि भागनेके विषयमें उसने क्या विचार स्थिर किया है।

धीरे धीरे तथा कठोरतासे जिस तरह कैदियोंका समय बीतता है, उसी तरह यह दिन भी बीतने लगा, परन्तु इस कैदखानेमें जितने दिनोंसे जैसिलिन पड़े थे, उन सब दिनोंकी अपेक्षा आजका दिन धीरे धीरे पहाड़ सा बीता। कभी कभी तो वे मनही मन विचारने लगते, कि संध्या होगी ही नहीं, और कभी कभी यह सोचते, कि अभी संध्या होनेमें कई घण्टे बाकी हैं। जो हो, जिस तरह जल्दी या देरसे सभी चीजोंका अन्त होता है, उसी तरह यह कठोर दिवस भी बीत गया और अन्तमें घड़ियालोंने रातके नौ बजनेका घण्टा बजादिया। वह विचित्र मनुष्य, जो भोजन लेकर आता था, वह भी चला गया और अब लौफ्टसको अपनी उस कोठरीमें किसीके आनेकी आशा न रही।

उन्होंने कुछ पढ़नेके इरादेसे पहलेही बत्ती जला दी थी, परन्तु कई प्रकारकी पुस्तकें उन्होंने उलट पलट कर देखीं, पर किसीके पढ़नेमें जी न लगा। इसलिये वे कुर्सीसे उठ खड़े हुए और उत्तेजित भावसे कोठरीमें इधर उधर टहलने लगे। इसके बाद वे बैठ गये और उस चिट्ठीके विषयमें सैकड़ों बातें विचारने लगे, जो आज सबेरे उन्हें दी गई थी।

वास्तवमें उस पत्रके अक्षर बड़े ही सुन्दर, स्पष्ट, और किसी पढ़ी लिखी स्त्रीके हाथके लिखे मालूम होते थे, परन्तु आह! यदि यह लुइसाके हाथकी लिखावट होती, तो उनके हृदयमें कितना आनन्द होता। अस्तु, इस वर्त्तमान अवसरका काम, जिसके लिये उनका साथी कैदी उद्योग कर रहा है, यदि ठीक ठीक उतर जाय, तो इसमें कोई सन्देह नहीं, कि यहांसे भागकर उन्हें अपनी प्यारी लुइसाके शरीरसे लिपटनेका सौभाग्य शीघ्र ही प्राप्त होजाय, जिसके लिये वे इतनी चिन्ता कर रहे थे।

कुछ ही देर बाद घड़ीमें ग्यारह बजे और इसी समय जैसिलिन-को मालूम हुआ, कि कल रातकी तरह ही आज भी दीवारसे आवाज आ रही है। वे चारपाईपर जाकर लेट रहे—अपने कान उन्होंने दीवारकी ओर लगा दिये—और ध्यानसे उस आवाजको सुनने लगे। उस समय उनका विचित्र पड़ोसी, उन उखाड़े हुए पदार्थों को वहांसे हटा रहा था। तथा कुछ ही क्षण बाद उन्हें विश्वास हो गया, कि उनके साथीने, किसी औजारसे दीवारमें छेद कर लिया है। अब जैसिलिन और भी ध्यानसे उस आवाजको सुनने लगे। अन्तमें उन्होंने उस औजारको तख्तबन्दीसे टकराते सुना। इसके बाद फिर सन्नाटा छा गया।

इसी समय एकाएक बड़ी ही मधुर और सुरीली आवाजमें किसी स्त्रीने पूछा,—"क्या तुम्हारी दीवारमें तख्तबन्दी जड़ी है?"

जैसिलिनने उत्सुकताके साथ कहा,—"हां।"

इसपर उसी मधुर आवाजने फिर कहा,—"तो यदि तुम वास्तवमें भागनेके इच्छुक हो और मुझे भी भागनेमें सहायता दिया चाहते हो, तो छपाकर किसी तरह अपनी तख्तबन्दीका एक तख्ता उखाड़ दो।"

जैसिलिनने तुरत ही उस स्त्रीको ढाढ़स दिलाते हुए कहा, कि

शीघ्र ही अपनी तथा उसकी वह इच्छा पूर्ण करनेका उद्योग करेंगे, जिसमें दोनोंका ही स्वार्थ मिला हुआ है। इसके बाद उन्होंने तख्तबन्दीके पाससे अपनी चारपाई हटा दी और उस छुरी द्वारा, जो भोजनके समय लाई गई थी, उन्होंने एक पेंच खोल डाला जिसके साथही एक तख्ता अपने स्थानसे हट गया। अब उन्होंने आश्चर्यके साथ देखा, कि तख्तबन्दीके पीछेकी दीवारमें लगभग अढ़ाई फीट लम्बा चौड़ा एक सूराख किया गया है!

उस स्त्रीने बगलवाले कमरेसे ही कहा,—"यह सब ले लो।" अपनी मधुर और जवानीकी उमंग भरी आवाजमें इतना कहकर उसने कई चीजें उस सूराखकी राहसे जेसिलिनके हाथमें दे दीं।

उनमें दो रेतियां, एक बोतलमें पीले रङ्गका कोई अर्क, चार चाभियां, और तीन लोहेकी सलाकें थीं, जिनका चमकीला तथा नुकीला मुंह साफ बता रहा था, कि इनके सहारेसेही दीवारमें छेद किया गया है। जेसिलिनने तुरत ही वे चीजें ले लीं और उन पदार्थोंको देखतेही उन्हें विश्वास हो गया, कि उस स्त्रीने भागनेके सब सामान एकत्र कर रखे हैं, परन्तु उन्हें सोचनेका बहुत ही कम समय मिला, क्योंकि वह बहादुर स्त्री सब काम बड़ी शीघ्रता और उतावलीसे कर रही थी। ज्योंही जेसिलिनने वे चीजें एक ओर रख लीं, जो उसने उस सूराखसे दी थीं, त्योंही उसने घबड़ाई हुई आवाजमें कहा,—"अब अपने कमरेमें आनेके लिये मुझे सहायता दो।"

इसके बाद तुरत ही दो गोल गोल, सुन्दर, सुडौल हाथ उस छेदमें दिखाई दिये, उनके बाद ही एक सर निकला, जो काले कपड़ेसे छिपा हुआ था—और उसके बाद वह आधा शरीर निकला, जिसमें जवानीका मद फूट फूट कर भरा हुआ मालूम होता था। अर्थात् हमारे नायकने उस स्त्रीकी बांहें पकड़ कर, उसे इस तरह

सुराखसे बाहर निकाल लिया, जिससे उसे कुछ भी कष्ट न हुआ।

जब यह काम हो गया और वह स्त्री जैसिलिनके सामने आ खड़ी हुई, तब उन्होंने एकबार उसके शरीर पर दृष्टि डाली और साथ ही वे आश्चर्य चकितसे रह गये। उन्होंने देखा, कि वह स्त्री मझोले कदकी है और उसके शरीरमें जवानीका मद भरा हुआ है, उसका समूचा शरीर बड़ा ही सुन्दर तथा सुडौल है, और स्त्रियोचित् सभी गुण उसमें वर्त्तमान है। परन्तु उसका चेहरा काली नकाबसे ढका हुआ था और यद्यपि इसमें कोई सन्देह नहीं, कि वह उस नकाबके भीतरसे जैसिलिनको अच्छी तरह देख सकती थी; पर उसे देखनेवालेकी आखोंके लिये यह कदापि सम्भव नहीं था, कि उस बुर्केमें घुस सकें। अस्तु, वह कुछ चण तक बड़े ध्यानसे जैसिलिनको देखती रही, क्योंकि उसका माथा बराबर उनके चेहरेकी ओर उठा हुआ था। यहा इतना और भी समझ लेना चाहिये, कि वह काली नकाब केवल उसके चेहरे पर लटक ही नहीं रही थी, जो हवाके झोंके अथवा हिलने डोलनेसे हट-जाती, बल्कि इस तरह मजबूतीसे बँधी हुई थी, कि वह स्त्री चाहे किसी भावसे खड़ी रहती,—कितनी भी भाव भङ्गी करती, पर वह किसी तरह भी अपने स्थानसे न हट सकती।

कुछ देर बाद उस स्त्रीने कहा,—"इस तरह मेरा चेहरा नकाबसे ढका हुआ देखकर आपको बड़ा आश्चर्य हुआ होगा, परन्तु इसका कारण एक शपथ है, जो कुछ दिन हुए, कारणवश मैंने खाई थी।"

लौफ्टस,—(आश्चर्य और सन्देहसे) "शपथ! कैसी शपथ?"

स्त्री,—(अपनी बातपर जोर देती हुई लौफ्टसके सामने पूरी लंबाईमें खड़ी होकर) "हां, यह एक शपथ ही है, जिसके कारण मैं ऐसा करनेके लिये वाध्य हुई हूं, जो कठिनता और भयानकतासे

खाई गई थी—जो निराशाके समयमें की गई थी। परन्तु उसके अनुसार कार्य्य करनेके लिये मैं सदा बाध्य नहीं हूं।"

लौफ्टस,—(यह सोचकर, कि यद्यपि यह ऐसी धोखेबाज नहीं मालूम होती, परन्तु स्थिर मतवाली भी नहीं है) "परन्तु ऐसी विचित्र शपथ तुमने क्यों खाई?"

स्त्री,—(कुछ सोचकर, नम्र और दुःखपूर्ण स्वरमें) "आप सोचते होंगे, कि मैं निरी पागल हूं। जैसे दुःखमें मैं पड़ी हूं, सम्भव है, कि उसे दूसरे मनुष्य एक तरहका सुख और आशीर्वाद समझें। परन्तु अफसोस! सद अफसोस! मेरे लिये सदासे जिन्दगी एक बवाल रही है और अब भी है। आप मुझपर सन्देह करते होंगे, परन्तु आपको यह विश्वास दिलानेके लिये, कि आप इस समय किसी धोखेबाज और लम्पट स्त्रीके सामने नहीं खड़े हैं, मुझे कुछ बताना आवश्यक जान पड़ता है। आप विश्वास रखिये, कि मैं किसी ऐसे अपराधके, कारण जो मुझे ईश्वरके सामने दोषी ठहरा सके, इस कैदखानेमें कैद नहीं हुई हूं, वरन् मेरे कैद होनेका कारण केवल मेरी बेहद खूबसूरती है। वही सत्यानाशी खूबसूरती—जिसकी मैंने रत्तीभर भी कद्र नहीं की, आज मेरी प्रशंसा करनेवाले और मुझे चाहनेवाले नव्वाबों, रईसों और अफसरोंका—जिनकी चिकनी-चुपड़ी बातोंके फेरमें मैं नहीं पड़ी थी और जिनको रूखा-सूखा जवाब देकर मैंने धता बताई थी, आश्रय ले मुझसे इस प्रकार बदला चुका रही है। अथवा यों कहिये, कि एक निःसहाया अङ्गरेज-स्त्री होनेके कारण आज मैं अभाग्यवश फ्रांसके नव्वाब, रईस, अमीर-उमरा, अफसर, यहांतक, कि स्वयं गवर्नर-जनरल रूपी आततायीसे बुरी तरह सताई जा रही हूं। हे ईश्वर! तुम कबतक मेरी इस प्रकार कठिन परीक्षा करोगे?"

जेम्सिन,—(उसकी बातोंपर पूर्ण विश्वास कर और एक निःश-

हाया स्वजातीय स्त्रीके,इतने बड़े आदमियोंसे सताये जानेपर अफसोस करते हुए) "आह! तो क्या तुम्हारे जेलमें आनेका कारण केवल यही है, कि तुमने इन फेशनेबुल बदमाशों और खासकर गवर्नर-जनरलकी चिकनी-चुपड़ी बातोंका तिरस्कार किया? और क्या मैं भी तुम्हारे इस प्रकार बिना अपराध कैद हो जानेपर विश्वास करलूं?"

स्त्री,—"आप विश्वास रखिये, कि मैं आपसे जो कुछ कह रही हूं, वह बिल्कुल सत्य है। मुझे केवल इसी अपराधके कारण, आज तीन सप्ताह हुए, इस प्रकार जेलका कड़ा दण्ड भोगना पड़ रहा है। यदि इस प्रकारकी कड़ी मुसीबतसे दुःखी हो और चिढ़कर मैंने यह प्रण कर लिया, कि अब कभी किसी मनुष्यको यह दुखदाई मुख न दिखाऊंगी, तो कहिये इसमें आश्चर्यकी कौनसी बात है? (कुछ जोशमें भरकर अपनी बात पर जोर देती हुई) नहीं, कभ नहीं, यह मुख अब कोई मनुष्य नहीं देख सकता। हां, यदि मुझे विश्वास हो जाय, कि यह मनुष्य मेरे चेहरेकी खूबसूरतीके कारण नहीं, मेरे धन-दौलतके लालचसे नहीं, बल्कि मेरे अटल विश्वासपर मुग्ध हो—मुझे दिलसे चाहता है, तो शायद उसके लिये मेरी प्रतिज्ञा टूट जाय। (एक ऐसे मनुष्यके,समान, जिसके हृदयका बोझ अपनी दुःख-कहानी सुना लेनेपर हलका हो गया हो, जल्दी जल्दी बात करते हुए) खैर, अब हमें काममें लगना चाहिये और अपने निकल भागनेका उपाय सोचना चाहिये।"

जेसिलिन,—(उस स्त्रीकी बातोंपर अविश्वास कर तर्क-वितर्कमें अधिक समय नष्ट करना अनुचित समझ) "हां, यह तो ठीक है, परन्तु यही काम तो जरा टेढ़ा जान पड़ता है। अच्छा, मुझे एक बात—"

स्त्री,—(बीच हीमें बात काटकर) "एक बात और है—हमें

खाई गई थी—जो निराशाके समयमें की गई थी। परन्तु उसके अनुसार कार्य्य करनेके लिये मैं सदा वाध्य नहीं हूं।"

लोफ्टस,—(यह सोचकर, कि यद्यपि यह ऐसी धोखेबाज नहीं मालूम होती; परन्तु स्थिर मतवाली भी नहीं है) "परन्तु ऐसी विचित्र शपथ तुमने क्यों खाई?"

स्त्री,—(कुछ सोचकर, नम्र और दुःखपूर्ण स्वरमें) "आप सोचते होंगे, कि मैं निरी पागल हूं। जैसे दुःखमें मैं पड़ी हूं, सम्भव है, कि उसे दूसरे मनुष्य एक तरहका सुख और आशीर्वाद समझें। परन्तु अफसोस! सद अफसोस! मेरे लिये सदासे जिन्दगी एक वबाल रही है और अब भी है। आप मुझपर सन्देह करते होंगे, परन्तु आपको यह विश्वास दिलानेके लिये, कि आप इस समय किसी धोखेबाज और लम्पट स्त्रीके सामने नहीं खड़े हैं, मुझे कुछ कहना आवश्यक जान पड़ता है। आप विश्वास रखिये, कि मैं किसी ऐसे अपराधके, कारण जो मुझे ईश्वरके सामने दोषी ठहरा सके, इस कैदखानेमें कैद नहीं हुई हूं, वरन् मेरे कैद होनेका कारण केवल मेरी बेहद खूबसूरती है। वही सत्यानाशी खूबसूरती—जिसकी मैंने रत्तीभर भी कद्र नहीं की, आज मेरी प्रशंसा करनेवाले और मुझे चाहनेवाले नव्वाबों, रईसों-और अफसरोंका—जिनकी चिकनी-चुपड़ी बातोंके फेरमें मैं नहीं पड़ी थी और जिनको रूखा-सूखा जवाब देकर मैंने धता बताई थी, आश्रय ले मुझसे इस प्रकार बदला चुका रही है। अथवा यों कहिये, कि एक निःसहाया अङ्गरेज-स्त्री होनेके कारण आज मैं अभाग्यवश झांसके नव्वाब, रईस, अमीर, उमरा, अफसर, यहांतक, कि स्वयं गवर्नर-जनरल रूपी आततायियोंसे बुरी तरह सताई जा रही हूं। हे ईश्वर! तुम कबतक मेरी इस प्रकार कठिन परीक्षा करोगे?"

जेकिन्सन,—(उसकी बातोंपर पूर्ण विश्वास कर और एक निःस-

हाया स्वजातीय स्त्रीके,इतने बड़े आदमियोंसे सताये जानेपर अफसोस करते हुए) "आह! तो क्या तुम्हारे जेलमें आनेका कारण केवल यही है, कि तुमने इन फेशनेबुल बदमाशों और खासकर गवर्नर-जनरलकी चिकनी-चुपड़ी बातोंका तिरस्कार किया? और क्या मैं भी तुम्हारे इस प्रकार बिना अपराध कैद हो जानेपर विश्वास करलूं?"

स्त्री,—"आप विश्वास रखिये, कि मैं आपसे जो कुछ कह रही हूं, वह बिलकुल सत्य है। मुझे केवल इसी अपराधके कारण, आज तीन सप्ताह हुए, इस प्रकार जेलका कड़ा दण्ड भोगना पड़ रहा है। यदि इस प्रकारकी कड़ी मुसीबतसे दुःखी हो और चिढ़कर मैंने यह प्रण कर लिया, कि अब कभी किसी मनुष्यको यह दुखदाई मुख न दिखाऊंगी, तो कहिये इसमें आश्चर्यकी कौनसी बात है? (कुछ जोशमें भरकर अपनी बात पर जोर देती हुई) नहीं, कभ नहीं, यह मुख अब कोई मनुष्य नहीं देख सकता। हां, यदि मुझे विश्वास हो जाय, कि यह मनुष्य मेरे चेहरेकी खूबसूरतीके कारण नहीं, मेरे धन-दौलतके लालचसे नहीं, बल्कि मेरे अटल विश्वासपर मुग्ध हो—मुझे दिलसे चाहता है, तो शायद उसके लिये मेरी प्रतिज्ञा टूट जाय। (एक ऐसे मनुष्यके समान, जिसके हृदयका बोझ अपनी दु:ख-कहानी सुना लेनेपर हलका हो गया हो, जल्दी जल्दी बात बदलते हुए) खैर, अब हमें काममें लगना चाहिये और अपने निकल भागनेका उपाय सोचना चाहिये।"

जेसिस्किन,—(उस स्त्रीकी बातोंपर अविश्वास कर तर्क-वितर्कमें अधिक समय नष्ट करना अनुचित समझ) "हां, यह तो ठीक है, परन्तु यही काम तो जरा टेढ़ा जान पड़ता है। अच्छा, मुझे एक बात—"

स्त्री,—(बीच हीमें बात काटकर) "एक बात और है—हमें

सबसे पहले यह अवश्य जान लेना चाहिये, कि हमें इस समय एक दूसरेको किस किस नामसे सम्बोधित करना चाहिये। आपका क्या नाम है ?"

जेसिलिन,—"जेसिलिन लौफ्टस।"

स्त्री,—"और मुझे लोग लौरा-लिण्डन कहते हैं। शायद पहलेभी आपने मेरा नाम सुना हो ?"

जेसिलिन,—"जो नहीं—अभी नहीं सुना। क्या मैं आपको यह विश्वास दिला सकता हूं, कि जबसे मैंने यह सुना है, कि आप जैसी एक निरपराधा और निःसहाया रमणीको प्रासके कुछ दुष्टोंने इस प्रकारके अत्याचार द्वारा कैदमें फँसाया है, इससे मेरा यह कर्त्तव्य है, कि मैं जिस प्रकार हो, आपकी सहायता करूं ?"

लिण्डन,—"अवश्य। और जिसका प्रत्युपकार मैं इङ्गलैण्ड पहुंच कर खुशी और धन्यवादके साथ दूंगी। अतएव अब अधिक समय नष्ट न कर हमें दृढ़ता और उत्साहके साथ अपने काममें लग जाना चाहिये।"

लौफ्टस,—"क्या आप यहांसे निकल भागनेका कोई सरल उपाय स्थिर कर चुकी हैं ?"

लिण्डन,—"जी हां, मुझे इस जेलखानेकी इमारतका सारा रहस्य मालूम हो चुका है। जो स्त्री मुझे खाना देनेके लिये यहां आया करती है, उसको मैंने रिश्वत दे और तरह तरहके सब्जबाग दिखाकर अपने पक्षमें कर लिया है। यह उसी स्त्रीका काम है, कि आज मेरे पास उस उपायको पूरा करनेके लिये समस्त आवश्यकीय औजार मौजूद हैं। और यह भी उसीका अनुग्रह है, जो इस इमारतका तमाम रहस्य मुझे मालूम है। यहांपर कोई भी ऐसा कमरा, तहखाना या दालान नहीं है, कि जिसका हाल मुझे न मालूम हो। यदि मैं अपने कमरेकी खिड़कीसे निकल-भागनेका उद्योग करती,

खिड़कीका दरवाजा खोला और चुपकेसे मोम-बत्ती उठाकर खिड़कीके छड़ोंकी परीक्षा करने लगी। कुछ ही देरमें परीक्षा समाप्त कर उन्होंने बड़े उत्साहके साथ कहा :—

"हां, तो मिस लिण्डन! मैं इन छड़ोंको एक जोड़ी दो घण्टोंमें रेत सकता हूं। अब तुम यह बताओ,—क्योंकि तुम्हें इस मकानका सारा भेद मालूम है, कि इसके अतिरिक्त जो काम रह जायगा, वह निर्दिष्ट समयतक पूरा हो सकता है या नहीं?"

लिण्डन,—(कैदसे छूटनेकी आशासे खुश होकर) "अवश्य!"

जैसे ही उपर्युक्त बात समाप्त हुई, वैसे ही नीचेके दालानमेंसे किसीने कड़ी आवाजमें फ्रांसीसी भाषामें कहा,—"यह खिड़की बन्द कर दो और मोम-बत्ती भी बुझा दो।" इसके साथ ही साथ चाभियोंके गुच्छेकी झङ्कार और ताला लगानेका शब्द सुन पड़ा।

लिण्डन,—(भयसे घबड़ा और ऊपरकी ओर हाथ उठाकर धीरेसे) "हे ईश्वर! जिसने हमें खिड़कीपर खड़े हुए देख लिया है, कहीं यह गश्त लगानेवाला पहरेदार तो नहीं है?"

लौफ्टस,—(हताश मनुष्यकी भांति) "बस, तो अब हमें विश्वस्त रूपसे समझ लेना चाहिये, कि हमारी समस्त आशाओंपर पानी फिर गया।"

लिण्डन,—(शीघ्रतासे, मानो किसी नवीन आशाने उसमें पुनः साहस भर दिया हो) "नहीं—कदापि नहीं। परन्तु इतना अवश्य हो गया, कि अब हमें कल राततककी प्रतीक्षा करनी पड़ेगी। कल मैं उस मजदूरिनसे यह निश्चय कर लूंगी, कि पहरेदार गश्त लगाकर कब चला जाता है। इतना निश्चय कर लेनेपर कल रातको हमलोग अपना काम बखूबी पूरा कर सकेंगे।"

लौफ्टस,—"जैसा मुनासिब समझो।"

जेसिलिनको विश्वास था, कि—पहरेदार चला गया होगा, किन्तु इतनेमें ही फिर नीचेके दालानसे आवाज आई'—

"यह क्या ? पन्द्रह नम्बरके कैदो! क्या तुमने अभीतक मोमबत्ती नहीं बुझाई ?" इस कठोर वाक्यके साथ ही साथ ताला खुलनेका शब्द भी सुनाई दिया।

जेसिलिन,—(अभीतक खुली हुई खिड़कीसे झाँककर) "मेरे प्यारे मित्र! यह पहला ही अवसर है, कि मुझे रोशनी गुल करनेका हुक्म दिया गया है।"

पहरेदार,—(बात काट और डपट कर) "यदि ऐसा हुआ भी है, तो हमलोगोंकी लापरवाहीसे, न कि सरकारी हुक्मसे।"

जेसिलिन,—(बड़े कोमल और नम्र स्वरमें) "आज खिड़की खुली देखकर तुम्हें शायद अपनी लापरवाहीकी याद आई है।"

पहरेदार,—(क्रोधमें भरकर) "ठीक है, आपके इस कथनसे मुझे आपपर सन्देह होता है। अतएव यदि आप सवेरे ही गवर्नर साहबसे अपने विरुद्ध रिपोर्ट कराना नहीं चाहते हैं, तो आपको मेरी आज्ञानुसार अभी रोशनी गुल और खिड़की बन्द करनी पड़ेगी, जिससे मुझे आपपर सन्देह करनेका मौका न रहे।"

कोनेमें खड़ी हुई लिफ्डनने धीरेसे कहा,—"ईश्वरके लिये आप इस पहरेदारसे अधिक बातें न करें। इसको कहीं सचमुच ही हमपर सन्देह न हो जाय। यदि ऐसा हुआ, तो हमारा सर्व्वनाश ही हो जायगा।"

लोफ्टस,—(खिड़कीमेंसे बाहरकी ओर झांक कर) "अच्छा प्रिय मित्र! अब ऐसा न होगा।"

इतना कह उन्होंने रोशनी गुल करके खिड़की बन्द कर दी। साथ ही कमरेमें चारों ओर घोर अन्धकार छा गया। अब हमें अपने पाठकोंको यह बतानेकी आवश्यकता नहीं रही, कि मि॰ लोफ्टस इस

समय कैसी विचित्र और भयानक अवस्थामें थे। कमरेमें चारों ओर अन्धकार छाया हुआ था, समीपमें केवल एक सुन्दर नवयौवना रमणी बैठी हुई थी। सम्भव है, बहुतसे मनुष्य उनकी इस अवस्था पर ईर्षा करें। परन्तु उनकी स्वाभाविक सुशीलता, आत्मिक गौरव, लुइसा-ष्टेनलीके प्रति सच्चा प्रेम और सम्मुख उपस्थिता स्त्रीकी सहायताका पवित्र एवं उन्नत विचार इत्यादि बातोंने मिलकर उनकी अवस्था और भी विचित्र बना दी थी। वे इस समय घबराहट, चिन्ता और आश्चर्यके शिकार बने हुए थे। कमरेमें कुछ देरतक मौतका सा सन्नाटा छाया रहा। किसीके मुंहसे आवाज न निकली। अन्तमें जेसिलिनने उस सन्नाटेको भङ्ग कर धीमी आवाजमें कहा,—"मिस लिण्डन!"

'मुझे अपनी अपेक्षा तुम्हारे स्वतन्त्र होनेका अधिक खयाल है। परन्तु यह किसे खबर थी, कि बनेबनाये काममें इस प्रकार बाधा पड़ जायगी!"

मिस लिण्डन,—"खैर, कुछ हर्ज नहीं। इससे हमारी अधिक हानि नहीं हुई। हां इतना अवश्य हुआ, कि हमें कल राततककी और प्रतीक्षा करनी पड़ेगी।"

इतना कह मिस लिण्डन चुप हो गई, परन्तु उसके रेशमी कपड़ोंकी खड़खड़ाहट और पैरोंकी आहटसे लोफटसने जान लिया, कि वह उनकी ओर आ रही है। कुछ क्षण बाद ही सहसा जोरसे उनका हाथ पकड़ लिया।

अनन्तर मि॰ लोफटसने कहा,—"मिस लिण्डन! तुम्हारा साहस अद्भुत और प्रशंसनीय जान पड़ता है।"

मिस लिण्डन,—"जबतक इस कठिन कार्य्यके पूरा करनेका उत्साह मेरे दिलमें रहेगा, साहस देव, किसी प्रकार भी मेरा साथ न छोड़ेंगे। हैं, यह क्या! मेरा सिर क्यों घूमता है? मि॰ लोफटस!

मुझे एक जगह बैठा दीजिये। इस समय मुझे चक्कर आ रहा है। जान पड़ता है, बेहोश हो जाऊंगी।"

उपर्युक्त बातें उसने बड़े धीमे और काँपते हुए स्वरसे कही थीं, जिससे जान पड़ता था, कि मानो वह जेसिलिनसे सहायताकी प्रार्थना कर रही है। अब वह एकाएक गिरना ही चाहती थी, कि उसने लौफ्टसके दोनों कन्धोंपर हाथ धर दिया।

लौराकी ऐसी हालत देख मि० जेसिलिन घबड़ा गये और जल्दीसे उसको गोदमें उठाकर पासवाली आराम-कुर्सीकी ओर बढ़े। कुर्सीके समीप पहुंचते ही मिस लिण्डन धड़ामसे उसपर गिरपड़ी और बड़े कष्टके साथ बोली,—"आह! यह नकाब मेरा दम घोटे डालती है। अब नकाब उतार डालनेमें कुछ नुकसान नहीं, क्योंकि— इस समय चारों ओर अन्धेरा है। अब मैं अपनी नकाब हटा देती हूं, जिससे चेहरे पर ताजी हवा लगनेसे तबीयत कुछ शान्त हो जाय।"

इतना कह उसने अपनी नकाब हटा दी और फिर नम्र स्वरमें कहा,—"महाशय! कृपाकर एक गिलास पानी और पिला दीजिये।"

इतना सुनते ही मि० लौफ्टस अंधेरेमें टटोलते हुए अलमारीकी ओर बढ़े। इस अलमारीमें एक पानीका घड़ा और शीशेका गिलास रखा हुआ था। गिलासमें पानी भर कर वे शीघ्रतासे रमणीकी तरफ लौटे और पास आकर गिलास पकड़ानेके लिये उसका हाथ टटोलने लगे।

मिस लिण्डन,—(मुर्दों जैसी आवाजमें—जिसे सुन मिष्टर लौफ्टसको उसकी बोलीपर सन्देह होने लगा) "मेहरबानी करके गिलासको मेरे मुँहसे लगा दीजिये।"

यह सुन मिष्टर लौफ्टसने तत्काल ही गिलासको उसके ओठोंसे लगा दिया, लिण्डन धीरे धीरे गिलासका सारा पानी पी कर बोली,—"बस करो, बस करो।"

इतना कह उसने मिष्टर लौफटसके कन्धे फिर पकड़ लिये और अपना सिर उनके वक्षस्थलपर रख दिया।

यह देख मि० लौफ्टस बड़े संकुचित और विस्मित हुए। उन्होंने घबड़ा कर पूछा,—"मिस, लिण्डन! तुम्हारा क्या हाल है! बोलो, इस समय मैं तुम्हारी क्या सहायता करूं?"

मिस लिण्डन,—(पहलेसे भी अधिक गिरी हुई आवाजमें) "कुछ नहीं, कुछ नहीं, मैं थोड़ी देरमें स्वयं अच्छी हो जाऊंगी। मेरी पीड़ा क्रमशः घटती जा रही है, पर कुछ देरके लिये मुझे अपने बिछौनेपर लेट जानेकी आज्ञा दीजिये। जिससे मुझे विश्वास है, कि कुछ देर बाद मैं धीरे धीरे चलकर अपने कमरेमें पहुंचनेके योग्य हो जाऊंगी।"

इतना कह उसने मि० लौफ्टसको अपनी छातीसे चिपटा लिया और अपने शरीरका तमाम बल छोड़ दिया। अतएव उन्हें भी उसको गोदमें उठा अपने बिस्तरेपर लेजाकर सुलानेके लिये बाध्य होना पड़ा। इस जगह पाठकोंको यह बात अच्छी तरहसे समझ रखनी चाहिये, कि—मिष्टर लौफटसने उसकी सहायताकी प्रार्थना एवं अनुरोधसे ही यह काम किया था। वे उसको अपनी बहनके समान समझते थे और उसके दुःखसे कातर हो उसकी हर प्रकारसे सहायता करनेके लिये प्रस्तुत थे। परन्तु क्या उस समय मिस लिण्डन भी उनसे बहिनके जैसा ही व्यवहार कर रही थी? क्या वह भी उनको अपने भाईके समान ही समझ रहीथी? यह हम निश्चित रूपसे नहीं कह सकते, पर इतना अवश्य जानते हैं, कि उसके सुडौल और सुन्दर हाथ उनकी- गर्दनको मजबूतीसे जकड़े हुए थे, उसकी उभरी हुई मनोहर छाती उनके वक्षस्थलको अच्छी तरह स्पर्श किये हुई थी और उसका सिर उनके बायें कन्धेका सहारा लिये हुए था। वह उस समय एक भयभीतकी भांति लौफट्सके

लिपटी हुई थी। उसके रेशम जैसे चिकने और भूरे बाल उनके कपोलोंका स्पर्श कर रहे थे। उसकी नासिकासे निकलनेवाले शीघ्र-गामी श्वास, उनके मुखमण्डलपर पङ्खेका काम कर रहे थे। उसके कलेजेकी धड़कन उनके वक्षस्थलसे टकरा कर उसमें एक प्रकारकी अद्भुत तरङ्गोंका सञ्चार कर रही थी। यदि मि० लौफटसका हृदय अपवित्रता एवं किसी प्रकारकी अनुचित आकांक्षाके वशीभूत होता, तो वे अवश्य ही ऐसे फुसलानेवाले अवसरके शिकार बन गये होते। कारण, हमारा विश्वास है, कि उसकी उपर्युक्त अवस्थासे मनुष्य तो क्या—वरन् एक बड़े भारी तपस्वीको भी अपने तपसे डिग जाना पड़ता। देवतालोग भी क्षणकालके लिये प्रवृत्तिके स्रोतमें गोते खाने लगते। पर जेसिलिनका मन पूर्णतया निर्विकार था। अस्तु।

इसके बाद मि० जेसिलिन लौफटसने धीरेसे उसको अपने बिछावन पर लिटा दिया और अपने रूमालसे उसके मुखपर पंखा झलने लगे। अनन्तर उसकी नाड़ीकी परीक्षाकर, उसको कुछ शान्त और स्वस्थ सा देख अब उन्हें आशा हो चली, कि वह अधिक देर इस हालतमें न रह शीघ्र ही होशमें आ जायेगी। यदि न्यायकी दृष्टिसे देखा जाय, तो उस समय एक सच्चे भाईके समान उस युवतीकी सेवा शुश्रुषा कर लौफटस उसकी समस्त आवश्यकताएँ पूर्ण करनेके लिये बिछावनके समीप खड़े हुए पंखा झल रहे थे। यदि उस समय वे वहांसे हटनेकी इच्छा भी करते, तो वह बेकार ही थी, क्योंकि उस समयतक उस रमणीने एक भय भीत और घबड़ाई हुई स्त्रीकी भांति उनके हाथ कसकर पकड़ रखे थे।

मि० जेसिलिनने, कहा—"मिस लिण्डन! कहो, इस समय तुम्हारा क्या हाल है? अपनेको सम्हलती जाती है न?"

मिस लिण्डन,—(उन्हें धन्यवाद देनेकेबाद उनके हाथोंको अपने सीनेपर रखते हुए) "हां, महाशय! अब तो तबीयत ठीक

कमरेमें कुछ प्रकाश हो, हम सूराखको और बड़ा कर लेंगे। ऐसा कर लेनेपर मैं आसानीसे उसके भीतर घुस जा सकूँगी और जब मैं अपने कमरेमें चली जाऊं, तब आप उस पर फिर पहलेकी भांति ही तख्ताबन्दी कर दीजियेगा। मैं समझती हूं, इस काममें अधिक समय न लगेगा और पहरेदारके आनेतक वह अच्छी तरह समाप्त हो जायगा। मिष्टर लीफ्टस! मेरे अनुमानसे इस समय सिवा इसके और कोई उपाय नहीं किया जा सकता। आप स्वयं भी सोच-विचारकर देख सकते हैं।"

मि० लीफ्टस,—(गम्भीर स्वरमें, मानो वे भय और विपत्तिसे कुछ सहम गये हों) "खैर, जैसी तुम्हारी राय हो। मुझे भी इसके सिवा इस समय और कोई उपाय नहीं देख पड़ता।"

इतना कह वे चुप हो गये और कमरेमें घोर सन्नाटा छा गया।

इस प्रकार हमारे उपन्यासके मुख्य नायक मि० लीफ्टस और नवयौवना तथा अपूर्व लावण्यमयी, मिस लौराको उस अन्धकार पूर्ण कमरेमें एक साथ, रहनेके लिये विवश होना पड़ा। पाठकगण! देखिये, इस समय कैसा नाजुक, विचित्र एवं अनूठे प्रकारसे जी ललचा देनेवाला अवसर उपस्थित है!*

॥ ३२ वीं संख्या समाप्त ॥

लण्डन-रहस्य

:- अर्थात् :-

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन

छठवाँ खण्ड ।

आर० एल० बर्म्मन द्वारा

कलकत्तासे प्रकाशित ।



कलकत्ता, ३७१ अपर चीतपुर रोड, "बर्म्मनप्रेस"में

रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित ।

सं० १९७७ विक्रमीय ।

प्रथम बार २०००] [मूल्य प्रति संख्या ।=)

सिर झुकाये खड़े रहते थे। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी उपर्युक्त दम्पति चिन्तित एवं शोकातुर क्यों दिखाई पड़ते थे? उनके चेहरेपर उदासी क्यों छायी हुई थी? क्या ऐसा मान, सम्मान, धन, गौरव बहुमूल्य साज-सज्जा एवं श्रेष्ठता भी उनको सुखी और प्रसन्न रखनेमें असमर्थ थीं?—वे लण्डनकी वर्त्तमान सभ्य-श्रेणीके लिये ईर्षाके पात्र थे, इङ्गलैण्ड भरके सारे नव्वाब और अफसर लोग उनका आदर सम्मान और प्रतिष्ठा करते थे। इङ्गलैण्डकी समस्त सभ्य और सरूपा स्त्रियाँ महारानीके सिवा 'विनोशियाको' अन्यान्य स्त्रियोंसे सर्वोत्तम समझती थी। उसका सम्मान और प्रतिष्ठा करती थी। राज्य प्रिय होनेके कारण 'लार्ड सैकविल' भी समस्त नव्य सभ्य श्रेणीमें आदर तथा सम्मान की दृष्टिसे देखे जाते थे। परन्तु इतना होते हुए भी वे न मालूम क्यों, दुःखी और चिन्तित देख पड़ते थे? विनोशिया प्रिन्सकी प्रियतमा थी, वे उसको प्यार करते थे,—क्या यही उनके दुःख और चिन्ताका कारण है?

हां—अवश्य यही कारण था। इसके अतिरिक्त हमें और कोई कारण नहीं मालूम होता। विनोशियाके इस दुष्कर्म पर ही लज्जित हो, वे सदा दुःखी और चिन्तित देख पड़ते थे। जबसे विनोशिया प्रिन्सकी प्रेम-पात्री हुई है, तबसे उनके लिये यह पहला ही अवसर था, कि वे इस प्रकार एकान्तमें विनोशियाके साथ बैठे हुए आमोद प्रमोद कर रहे थे। बात यह थी, कि प्रिन्स महोदय आजकई दिनोंसे किसी विशेष कार्य्यवश मन्त्रियोंके साथ मन्त्रणा करनेमें लगे हुए थे, तदनुसार आज भी समस्त मन्त्रियोंकी बैठक और दावतका प्रबन्ध किया गया था। आजकी सभामें लार्ड होरेस निमन्त्रित नहीं किये, गये थे। यही कारण था, कि—आज युगल प्रेमी उपर्युक्त स्थानमें बैठे हुए अपने मनोगत भावोंको स्पष्टरूपसे प्रकट करना चाहते थे। उस समय यद्यपि दोनोंही एक दूसरेको

कह देना काफी होगा, कि इङ्गलैण्डके बड़े बड़े रईस और अमीर उसमें बैठनेके लिये ईर्ष्या करते थे। यदि संसारमें बहुमूल्य, गौरवमय और कान्तिमान वस्तुएं ही मनुष्यको सुख और प्रसन्नता प्रदान कर सकती हैं, तो हमारे उपर्युक्त दम्पति संसारमें मुख्यरूपसे सुखी एवं प्रसन्न कहलाने के योग्य और अधिकारी हैं।

चमकदार सामान, बढ़िया बढ़िया पोशाकें, बहुमूल्य कालीन, अमूल्य आभूषण एवं सब प्रकारकी फैशनेबिल सुन्दर सुन्दर अँगूठियाँ, इतरदान, घड़ी, चेन और गुलदस्तोंसे सुसज्जित मेज इत्यादि बहुत सी अमूल्य वस्तुओंने लार्ड और लेडी सेकविलके इस नवीन भवनकी शोभाको मनमाने तौरसे बढ़ा रखाथा। सच तो यह है, कि प्रिंस रीजेण्टके राजकीय भवनका एक सर्वोत्तम कमरा इन दोनोंके अधिकारमें दे दिया गया था। यद्यपि इस प्रकार ऐश-आराममें घिरे रहनेके कारण, वे नवीन सभ्य-श्रेणीके ईर्ष्यास्पद बने हुए थे, परन्तु न जाने क्यों, हम उन दोनोंको ऐसे सुखदायक स्थानमें भी चिन्ता और दुःखके वशीभूत ही देखते हैं।

चिन्तित होनेपर भी बहुमूल्य वस्त्रों और भड़कीले आभूषणोंसे सजी हुई विनीशिया अनुपम सुन्दरी जान पड़ती थी। उसके पतिका प्रेमभरी दृष्टिसे उसे देखना इस बात का विश्वास दिलाता था, कि लार्ड महोदय ऐसी अनुपम सुन्दरीके पति होनेमें अपना गौरव समझते थे। इसके अतिरिक्त स्वयं 'लार्ड हौरेस' भी एक गौरवशाली युवक जान पड़ते थे, क्योंकि इङ्गलैण्डकी अधिकांश वजहदार स्त्रियां उनके जैसे स्वामीकी स्त्री बननेमें अपनी प्रतिष्ठा समझती थीं। उनका नाम, प्रधान सभासदोंकी उपाधिसे विभूषित था। उन्हें शाही दरबारसे तीन हजार पौण्ड सालानाकी पेन्शन मिलती थी, इसके अतिरिक्त "लार्ड स्टीवर्ड"के पदसे भी उनको आमदनी बहुत कुछ थी। सब प्रकारकी सुविधाएं एवं सुख स्वाच्छन्द्य उनके सामने हर समय

सिर झुकाये खड़े रहते थे। परन्तु यह सब कुछ होते हुए भी उप युक्त दम्पति चिन्तित एवं शोकातुर क्यों दिखाई पड़ते थे? उनके चेहरेपर उदासी क्यों छायी हुई थी? क्या ऐसा मान, सम्मान, धन, गौरव बहुमूल्य साज-सज्जा एवं श्रेष्ठता भी उनको सुखी और प्रसन्न रखनेमें असमर्थ थीं?—वे लण्डनकी वर्त्तमान सभ्य श्रेणीके लिये ईर्षाके पात्र थे, इङ्गलैण्ड भरके सारे नव्वाब और अफसर लोग उनका आदर सम्मान और प्रतिष्ठा करते थे। इङ्गलैण्डकी समस्त सभ्य और स्वरूपा स्त्रियां महारानीके सिवा 'विनीशियाको' अन्यान्य स्त्रियोंसे सर्वोत्तम समझती थी। उसका सम्मान और प्रतिष्ठा करती थीं। राज्य प्रिय होनेके कारण 'लार्ड सेकविल' भी समस्त नव्य सभ्य श्रेणीमें आदर तथा सम्मान की दृष्टिसे देखे जाते थे। परन्तु इतना होते हुए भी वे न मालूम क्यों, दुःखी और चिन्तित देख पड़ते थे? विनीशिया प्रिन्सकी प्रियतमा थी, वे उसको प्यार करते थे,—क्या यही उनके दुःख और चिन्ताका कारण है?

हां—अवश्य यही कारण था। इसके अतिरिक्त इसमें और कोई कारण नहीं मालूम होता। विनीशियाके इस दुष्कर्म पर ही लज्जित हो, वे सदा दुःखी और चिन्तित देख पड़ते थे। जबसे विनीशिया प्रिन्सकी प्रेम-पात्री हुई है, तबसे उनके लिये यह पहला ही अवसर था, कि वे इस प्रकार एकान्तमें विनीशियाके साथ बैठे हुए आमोद-प्रमोद कर रहे थे। बात यह थी, कि प्रिन्स महोदय आज-कई दिनोंसे किसी विशेष कार्य्यवश मन्त्रियोंके साथ मन्त्रणा करनेमें लगे हुए थे, तदनुसार आज भी समस्त मन्त्रियोंकी बैठक और दावतका प्रबन्ध किया गया था। आजकी सभामें लार्ड होरेस निमन्त्रित नहीं किये, गये थे। यही कारण था, कि—आज युगल प्रेमी उपर्युक्त स्थानमें बैठे हुए अपने मनोगत भावोंको स्पष्टरूपसे प्रकट करना चाहते थे। उस समय यद्यपि दोनोंही एक दूसरेको

देख कर कुछ लज्जित से हो रहे थे, तथापि इस अवसरने अपने आन्तरिक भाव छिपा, खुल्लमखुल्ला बातचीत करनेके लिये उन्हें बाध्य कर दिया था। पाठकोंको याद रखना चाहिये, कि—अभीतक उपर्युक्त प्रेमिकोंके बीचमें किसी प्रकारके भ्रष्टाचरणने प्रवेश नहीं किया था, इसीसे वे स्वच्छहृदयी हो एक दूसरेसे बातचीत कर रहे थे।

विनीथियाका गोरा गोरा नाजुक हाथ अपने हाथमें ले उसके गुलाबी अधरोंका चुम्बन कर 'होरेस'ने मृदुस्वरसे कहा,—"विनीथिया! प्रियतमे! तुम अच्छी तो हो?"

विनीथियाने सलज्ज भावसे 'होरेस' की ओर क्षण भर देख कर कहा,—"पहले मैं पूछती हूँ, कि—आप अच्छे तो हैं? पहिले इस प्रश्नका मुझे उत्तर दीजिये।"

अनन्तर लार्ड सेकाविलने,—कुछ देर चुप रहनेके बाद फिर पूछा,—"विनीथिया? जिस रातको तुम 'कार्लटन-प्रासाद'से 'अकेथिया-काटेज'को लौट रही थीं, हम तुममें क्या सलाह हुई थी, कुछ याद है?" यह सुनतेही विनीथियाका देह कांप गया, मानो वायुके एक तेज झोंकेने एकदम किसी शान्त सरोवरको कम्पायमान कर दिया हो। उसके चेहरेका रंग पीला पड़ गया। वह कहने लगी,—"ओफ? उस रातका जिक्र मत करो।"

उसकी ऐसी अवस्था देख 'होरेस'ने कहा,—"प्रिये! इस प्रकार स्पष्ट कहनेके लिये मैं क्षमा मांगता हूँ। मेरा उस बातके सङ्केत करनेका केवल यही उद्देश्य है, कि मैं तुमको उस अवसरकी याद दिला दूं, जिसमें हम दोनोंने प्रत्येक अवस्थामें प्रसन्न रहनेका संकल्प किया था।"

विनीथिया,—"ठीक है—मुझे वह बात अच्छीतरह याद है। मैं उसे भूली नहीं हूँ। ईश्वर जानता है, कि मैंने उसीके अनुसार

अपनेको और तुमको सदैव प्रसन्न रखनेका प्रयत्न भी किया है। परन्तु——"

यह सुनते ही मि० हौरेस एकदम सोफेसे उठकर बैठ गये और विस्मयके साथ, एक ऐसे मनुष्यके समान, जो किसी आश्चर्यकी बातको अधूरा सुन उसको पूर्णतः जाननेके लिये व्यग्र हो उठता है, उससे घबड़ाकर पूछने लगे,—"परन्तु—क्या विनिप्रिया ?"

विनीप्रिया,—"मि० हौरेस, आप बैठ जाइये, व्याकुल न हूजिए। मेरा इस कहनेका जो कुछ अभिप्राय है, मैं आपसे स्पष्ट कह दूंगी। घबड़ाइए नहीं ?"

परन्तु मि० हौरेस बिछावन पर नहीं बैठे, वे उठ खड़े हुए और एक समीपमें पड़ी हुई कुर्सी पर हथेली पर माथा टेक बैठ गये। उन्होंने कहा,—"हां, विनीप्रिया, अब तुम्हें जो कुछ कहना हो, कह डालो ? देखो, जो कुछ कहो, उसे स्पष्ट ही कहना।"

मि० हौरेसको इस प्रकार बैठा देख, विनीप्रयाकी स्वाभाविक स्थिरताने उसका साथ छोड़ दिया। उनके इस प्रकार समीपसे उठकर कुर्सीपर बैठ जानेका उसके दिलपर बहुत कुछ असर हुआ। वह डबडबाई आंखोंसे कहने लगी,—"आह ! तुम्हारी यह अवस्था—तुम्हारा इस-प्रकार उठ कर अलहदा बैठ जाना, मुझे उस अपनी सुहागरातकी याद दिलाता है। जो बहुत ही छोटी होनेपर भी स्वर्गीय आनन्दसे परिपूर्ण थी। उस समय हम दोनों प्रेमकी प्रतिमा थे, एक दूसरे पर विश्वास करते थे। उस समय हमारा परस्परमें बच्चोंके जैसा निश्चय व्यवहार था और हाय! हम एक दूसरेके चेहरेको छिप छिपकर—लज्जासे नहीं बल्कि दिल्लगीसे मुस्कराते हुए देखते थे। परन्तु अब—अब, उसमें कितना भेद पड़गया। हमारी अवस्था किस प्रकार बदल गई ? यद्यपि इस समय हम ऐसी अवस्थाको पहुंच गये हैं, जिसे देख समस्त नव्य सभ्य हमारी

प्रशंसा, खुशामद, सम्मान और यहाँ तक, कि उसपर ईर्षा भी करते हैं, परन्तु क्या उससे हमें वास्तविक आनन्द मिलता है? क्या हम लोग उससे प्रसन्न हैं? नहीं, कदापि नहीं। हाय! यह उसी का परिणाम है, कि हम आज एक दूसरेको देखकर शर्माते घृणा करते और चिढ़ते हैं। ओफ! हे ईश्वर! अब तुमसे हमारी यही प्रार्थना है, कि किसी प्रकार हमारी फिर पहलेकी जैसी अवस्था हो जाय, हम आपसमें प्रेम करने लगें और इस प्रकार एक दूसरेको शर्माते, घृणा करते और चिढ़ाते हुए हमारे जीवनकी समाप्ति न हो।"

'हौरेस' यह सुनते ही एक दम बोल उठे,—"विनीशिया! विनीशिया! तुम्हारा इस प्रकार बातें करना मुझे पागल बना देगा। तुम्हारी अधोगतिके कुछ काल बादहीसे नहीं, वल्कि उसके अगले दिनसे ही परस्परमें ऐसा निर्लज्जभाव हो गया? इस अवस्था को देखते हुए मुझे मालूम होता है, कि मानो पश्चात्तापकी कठिन पीड़ा एवं लज्जाकी जड़ताने नये सिरेसे फिर हमारे प्राणोंमें प्रवेश किया है, मानो हमारा परस्परका प्रेम, जोकि इतने दिनों और सप्ताहोंका अन्तर पड़नेसे नष्ट होजाना चाहिये था,—क्रमशः बढ़ता ही गया है, मानो हमारी समस्त प्रसन्नताएँ हमारे परस्परके प्रेमको अपनी उमड़ती हुई तरङ्गोंमें लीन नहीं कर सकी हैं और मानो अपने मान, प्रशंसा, गौरव और पदवीमेंसे कोई भी पदवी हमको हमारी पिछली क्षतियोंसे शान्त न कर सकी है।"

विनीशियाने अत्यन्त मधुर और कोमल स्वरमें कहा,—"आह! इधर देखिये, मि० हौरेस इधर देखिये। क्षण भरके लिये मेरी ओर देखिये। मेरे प्रिय स्वामी, हमें इस समय इन बातोंको एक दम भुला देना चाहिये, कि हम क्या हैं, और क्या होंगे? इस समय हमें अपनी वर्त्तमान अवस्था पर विचार करना चाहिये, क्योंकि अब

हम अकेले और स्वतन्त्र हैं। इस समय हमें ऐसा समझ लेना चाहिये, कि मानो हम स्वप्नमें ही विगत सुखोंका उपभोग कर रहे हैं। आओ अब हम फिर एकबार वैसे ही प्रेम, उत्साह और आनन्दके साथ एक दूसरेका आलिङ्गन करें, जैसे, कि हम उस रातसे पहले, जिसे तुम मेरी अधोगतिकी रात समझती हो, किया करते थे।"

"हां, ठीक है। ओफ! तुमने बहुत ठीक कहा प्रिये! आओ, फिर एकबार हम उसी प्रकार परस्परमें मिलें।"

ऊपरका वाक्य मिष्टर हौरेसने कुछ उच्च स्वरसे कहा। क्योंकि उस समय उनकी विचित्र अवस्था हो गई थी। उनके दिलमें विनीग्रियाके लिये किसी अपूर्व-प्रेमका सञ्चार हो गया था। वे प्रेम भरी दृष्टिसे उसकी ओर देख एवं उसकी खूबसूरती पर मन ही-मन मुग्ध हो रहे थे। विनीग्रियाकी अवस्था भी उस समय वैसी ही थी। मि० हौरेसने विनीग्रियाको अपने हृदयसे लगा लिया और उसके मधुर अधरोंका पान करने लगे।

अब मि० हौरेस, कुर्सी पर बैठे हुए अपनी प्रियतमाके अपूर्व सौन्दर्यका आनन्द उपभोगकर रहे थे। वे उस समय, विनीग्रियाको इस प्रकार उत्साह पूर्ण दृष्टिसे देख रहे थे, जैसा, कि—उसकी अधोगतिसे पूर्व देखा करते थे, यद्यपि उसको दूसरेके अधिकारमें कुछ समयके लिये छोड़ देनेको मजबूर होजानेके कारण वे लज्जित और दुःखित रहते थे, तथापि इस समय उसके सौन्दर्यकी अलौकिक छटाको देख कर वे सब कुछ भूल गए और उसे अपनी पत्नी समझ आनन्दमें निमग्न हो गए। उनकी दृष्टि उसके शरीरके समस्त अवयवों पर पड़रही थी। उन्होंने प्रेम भरी दृष्टिसे देखा, कि—विनीग्रियाके सुनहरे बाल आरक्तिम गालों पर पड़ कर एक विचित्र शोभा धारण कर रहे हैं। उसके अनुपम सौन्दर्यशाली शरीर का हरएक अवयव ऐसा था, मानो ब्रह्माने स्वयं अप...

कर गढ़ा हो, उसके गुलाबके जैसे लाल अधरोंकी मन्द मुसकान उनके हृदयको भेद कर पार हो रही थी, उसकी सुराही जैसी गर्दन, कमलदलोंकी भांति गोरे हाथोंको देखकर उनका चित्त हर्षसे प्रफुल्लित हो रहा था। उसके उभरे हुए सीनेकी मनोहर गठन, नागिन जैसी पतली और लचकदार कमर, एवं प्रत्येक अवयवकी सुघड़ बनावटको देख कर वे हृदयसे उसके बनानेवाले और उसकी प्रशंसा कर रहे थे।

इस प्रकार अनिन्द्य सुन्दरी विनोग्रियापर मुग्ध हो, मि० हौरेसने उसको अपने हृदयसे लगा लिया और बारम्बार उसके अधरोंका पान करने लगे। अनन्तर उन्होंने उसके सुकोमल हाथोंको अपने हाथोंसे पकड़ते हुए धीरेसे दबाकर कहा,—"विनोग्रिया। प्रिये! अब मैं तुमसे फिर वैसाही प्रसन्न हूं, जैसा, कि कभी पहले रहा करता था। निःसन्देह तुम एक अनुपम सुन्दरी हो। आज तुमसे मिलकर मैं बहुत ही प्रसन्न हुआ हूँ।

इतना सुनकर विनोग्रियाने दीवानोंकी भांति मि० 'हौरेस'के गले में अपनी बाहें डाल दीं और उन्हें दबाते हुए कहा,—"हां, प्रियतम! मैं भी तुम्हें हृदयसे प्यार करती हूं।"

इतना कहते कहते उसका सारा शरीर कांपने लगा। उसने हताश स्वरमें कहा,—"प्रिय हौरेस, मेरी इच्छा है, कि—तुम्हारे सिवा और कोई मेरे अङ्गको कभी स्पर्श न किया करे।"

हौरेस,—"विनोग्रिया! प्रिये। इस बातके कहनेसे तुम्हारा अभिप्राय क्या है? उसे मुझसे कह डालो न? क्योंकि—अब परस्परमें हमें एक दूसरेका विश्वास करना चाहिये।"

विनोग्रियाने किसी दुर्भावनासे पीड़ित हो धीमे और रुद्ध स्वरमें कहा,—"मेरे प्यारे हौरेस, अच्छा तो सुनो, मैं उसे तुमसे कहे देती हूं। परन्तु तुम अपना शिर मेरे कन्धेपर रख लो, जिससे अपना

रहस्य प्रकट करते समय, तुम्हारी निगाहसे मेरी निगाह न मिल सके, क्योंकि उस रहस्यको याद करते ही मेरा हृदय काँप उठता है।"

इतना कह चुकनेके बाद उसका स्वर और भी कोमल पड़ गया और उसने रुँधे हुए स्वरसे कहा,—"प्राणनाथ! वह रहस्य यही है, कि मैं उस प्रिन्ससे, जिसके हाथ मैं एक प्रकारसे बिक चुकी हूँ, अथवा यों समझ लीजिये, कि जिसके हाथ जान-बूझकर मैंने अपनेको बेच दिया है—घृणा करती और चिढ़ती हूँ। उसकी लम्पटता,—जिसे देखकर मुझे हँसी आती है, सहनेमें कष्ट होता है, परन्तु क्या करूँ? मुझे उसके प्रेम और प्रसन्नताका, बनावटी सहानुभूतिके साथ स्वागत करना पड़ता है और बदलेमें झूठा प्रेम दिखाना पड़ता है।" परन्तु भयानक, इन सबसे भयानक—"

इतना कहते कहते विनोशियाने अपना सिर इतना झुका दिया, कि उसके ओठ हौरेसके कानसे छू गये। इसके बाद वह बहुत ही धीमी आवाज़में, मानों कोई सर्पिणी धीरे धीरे फुफकार मार रही हो, फिर कहने लगी,—"यहाँतक, कि—मैं उसके आलिङ्गनके बदले एक शैतानके पञ्जे में फँसना हज़ार दर्जे अच्छा समझती हूँ।"

यह सुन मिष्टर हौरेस चौंक पड़े। उनका हृदय उमड़ आया और वे सिसक सिसक कर रोने लगे। उन्होंने विनोशियाको छोड़ दिया और घबराये हुए व्यक्तिकी भाँति कमरेमें पाँव पटक पटक कर टहलने लगे। फिर हृदयका वेग कुछ कम होजानेके बाद दुःखी आवाज़से सहसा बोल उठे,—"ओफ! गज़ब हो गया! मेरी ही पत्नी और मेरे ही सामने इस प्रकारके रहस्य प्रकट करने पर लाचार हो! आह! और वही पत्नी, जिसे मैं अत्यन्त उत्तेजना, उन्माद और आग्रहसे प्यार करता था और अब भी करता हूँ, इस प्रकार एक लाञ्छनीय दुर्भाग्यके पाले पड़े! ओफ! यह सब मेरा ही अपराध है, मैं ही सब तरहसे इसके लिये दोषी हूँ!

(अपने कलेजेमें घूंसा मारकर) यदि मैं चाहता, तो इस प्रकार गढ़ेमें गिरनेसे बहुत पहले ही उसकी रक्षा कर सकता था। यदि मैं चाहता, तो उसी समय—जिस समय वह उस घृणित कार्यके विचार-मात्रसे काँप रही थी—उसे बचा सकता था। परन्तु नहीं; उस समय मैं एक परले सिरेका कमीना और बदमाश था, इसी कारणसे, अपने तुच्छ स्वार्थ-साधनके लोभमें पड़ कर, उसे उस भयानक गढ़ेमें ढकेल देनाही मैंने उचित समझा। ओफ! प्रिये! तुम सचमुच ही एकदम निर्दोष हो!"

विनोभिया,—(बड़ेही कोमल और मधुर स्वरसे, उनके कन्धेपर हाथ धरकर) "मेरे प्रिय स्वामी! अपनेको इस तरहको बुरी बुरी गालियाँ न दो। इसमें तुम्हारा कुछ भी अपराध नहीं है। तुमसे मिलनेके पहलेही मेरे भाग्यमें यह दुःख विधाता द्वारा लिखा जा चुका था। प्यारे होरेस! यह तुम भलीभाँति जानते हो, कि तुम्हारे साथ विवाह होनेके बहुत पहले ही मेरी अवस्था कैसी बिगड़ चुकी थी। मैं किस प्रकारके भीषण जालमें फँसी और अपनी प्रतिज्ञाके बन्धनमें जकड़ी हुई थी। उस समय कैसी विचित्र शक्तिने मुझपर अपना अधिकार जमा रखा था? फिर, केवल इतनाही नहीं, तुम्हें यह भी ज्ञात होगा, कि यदि मैं अपने निर्धारित पथके त्यागनेका साहस करती, तो किस प्रकार उस आराम, सुख, ऐश्वर्य और लाड़ प्यारसे, जो मुझे अकेभिया काटेजमें प्राप्त थे, वञ्चित की जा सकती थी। उस समय मिस आरबुथनाट मेरी चौकसीके लिये नियुक्त थी। वह मेरे प्रत्येक कार्य, शब्द और रङ्ग-ढङ्ग सभी बातोंकी सूचना ग्रेटन ष्ट्रीटमें भेजा करती थी। तुम्हारे साथ विवाह होनेके बहुत पहले ही मेरी यह अवस्था हो चुकी थी, और जबसे—"

मिष्टर होरेस,—(बीचमें ही बात काट कर, बड़ी व्यग्रतासे) "ओफ! 'जबसे'—बस यही एक ऐसा वाक्य है, जो मेरे हृदयको

हर घड़ी जलाया करता है, क्योंकि जब तुम मेरी स्त्री हुई, तब यदि मैं चाहता, तो तुम्हें उस भीषण जालसे छुटकारा दिला सकता था और उन मनुष्योंसे—जिन्होंने तुम्हें अपने ऐश आराम-का शिकार बना रखा था—यथेष्ट बदला लेता हुआ, दृढ़ताके साथ यह कह सकता था, कि—'यह स्त्री मेरी विवाहिता पत्नी है। यह अब तुम जैसे धूर्तोंकी कुटिलताका शिकार नहीं बन सकती।' यदि मैं चाहता, तो आज तुम इस घृणित अवस्थाको कदापि प्राप्त न होतीं और न इस प्रकार एक दूसरेको देखकर लज्जित होनेकी नौबत हो आती।"

विनोफ़िया,—(जिसने इस समय किसी न किसी प्रकार अपने आपको शान्त करनेका विचार स्थिर कर लिया था) "मेरे प्यारे होरेस! यह बात नहीं है। तुम भूलते हो। यदि उस शक्तिका, जिसके अधिकारमें रहनेकी मैं प्रतिज्ञा कर चुकी थी,—यदि उस शक्तिका, जिसके अधिकारमें रहना मैं स्वयं अपनी इच्छानुसार स्वीकार कर चुकी थी—और यदि उस शक्तिका, जिसने कई शर्तों पर मुझे तुमसे विवाह करनेकी अनुमति दी थी—मुकाबिला करने-का मैं साहस भी करती, तो व्यर्थ था। उसका परिणाम और भी भयानक होता। मेरे समस्त पिछले रहस्य निर्दयता तथा दुष्टतासे शत्रुओं द्वारा संसारपर तत्काल प्रकट कर दिये जाते और मैं एक दुष्टा तथा व्यभिचारिणीके नामसे सदाके लिये मशहूर कर दी जाती, जिसका परिणाम आप स्वयं—"

सि० होरेस,—(क्रोधसे जमीनपर पैर पटकते हुए) "नहीं, कदापि नहीं। वे ऐसा दुःसाहस नहीं कर सकते थे। इसका कोई प्रमाण नहीं है। तुम व्यभिचारिणी और लम्पट स्त्री नहीं हो—और यदि पहले थीं भी, तो इसमें तुम्हारा कुछ दोष नहीं, बल्कि वह दूसरोंका ही ज्ञानकृत अपराध था।"

विनोप्रिया,—"आह। प्रियतम! क्या तुम इस बातको एकदम भूल गये, कि मैं उस समय कैसे जबर्दस्तके पञ्जेमें फँसी हुई थी और किसने पहले—"

मि॰ होरेस,—(एकाएक बात काटकर) "बस करो, प्रियतमे! बस करो! मैं समझ गया, कि तुम बिल्कुल सत्य कह रही हो। उस समय तुमने जो कुछ किया, उसके अतिरिक्त और कुछ हो ही नहीं सकता था। अतः इस बात को अच्छी तरहसे जानते हुए भी यदि हम अपनेको दुःखी और चिन्तित रखें, तो हमलोगोंकी कितनी बड़ी मूर्खता है? यह बात प्रायः सभी आदमी जानते हैं, कि मैं लार्ड सेकविल और तुम लेडी सेकविल हो। मैं इस अङ्गरेज़-राज्यका एक उमराव और तुम उसकी एक सभ्य-पत्नी हो। हमें बड़े बड़े खिताब मिले हुए हैं। राज्यसे काफी पेन्शन भी मिलती है। ये सब हमारे हैं। इनपर हमारे सिवा अन्य किसीका अधिकार नहीं है। हमारी समस्त धन-सम्पत्ति स्थायी है, वह जीवन पर्यन्त हमारा साथ देगी। अतएव उसको हर्ष पूर्वक भोग करना हमारा एक निश्चित कर्त्तव्य है।"

विनोप्रिया,—"ठीक है, तो अब हमें इसी मार्गका—अर्थात् प्रसन्नतापूर्वक जीवन व्यतीत करनेका ही प्रयत्न करना उचित है। (जोशमें भरकर) निःसन्देह अपना जीवन सुख और प्रसन्नता-पूर्वक बितानेके लिये हमारे पास यथेष्ट धन और सम्पत्ति है। यदि इतना होनेपर भी हमारे सुख और प्रसन्नतामें किसी प्रकारकी विघ्न बाधा आपड़े, तो वह अपराध हमारा है या हमारे भाग्यका?"

मि॰ होरेस,—(प्रसन्न होकर) "तुम्हारा यह कथन बहुत ठीक है। ऐसी सुन्दर अवस्थामें हमारे ऐश-आराममें बाधा डालनेवाली केवल हमारी झूठी कल्पनाएँ और निरर्थक भ्रम ही हो सकते हैं। अतएव अब हमें इस बातकी दृढ़ प्रतिज्ञा कर लेनी चाहिये, कि अबसे हम

कभी अपने हृदयमें ऐसे बे-सिर पैरके दुःखदायी विचार न उत्पन्न होने दें, वरन् ईश्वरको धन्यवाद देते हुए भविष्यमें अपने जीवनको प्रसन्नता और सुखके साथ बितावें।"

विनोथिया,—"आपके इस विचारको मैं भी हृदयसे स्वीकार करती हूँ।"

मि॰ हौरेस,—"तो आजसे हमारे परस्परके प्रेममें किसी प्रकार की भी अनुचित कल्पनाओंको स्थान न मिलने पावे, उसकी दिनों-दिन वृद्धि ही होती रहे और हमलोग भविष्यमें कभी एक दूसरेपर किसी प्रकारका सन्देह न करें।"

विनोथिया,—"और न फिर कभी बच्चोंकीसी बेहूदा हरकत ही की जाय। हमारा परस्परका व्यवहार अत्यन्त निष्कपट और एक दूसरेके निकट विश्वसनीय होना चाहिये।"

मि॰ हौरेस,—"यह मुझे स्वीकार है। अच्छा, तो अब हमें अपने कमरेमें चलना चाहिये, जिसमें कि हम दोनों परस्पर स्वर्गीय सुखका उपभोग कर सकें।"

उपर्युक्त प्रेम वाक्योंसे उन्मत्त एवं कामदेवके वशीभूत होकर जिस समय विनोथिया मतवाले नेत्रोंसे कटाक्ष करती हुई मिष्टर हौरेसके गलेमें हाथ डालना ही चाहती थी,—ठीक उसी समय एकाएक कमरेका दरवाजा खुल गया और मिष्टर रोजेष्टने शिष्टाचारके विरुद्ध उसमें प्रवेश किया। वे वहाँ पर आतेही मि॰ हौरेसकी पीठ पर हाथ फेर और फिर तुरत ही विनोथियाकी कमरमें हाथ डालकर बोल उठे :—

"मेरे प्यारे हौरेस! और मेरी परम प्यारी विनोथिया! मैं समझता हूँ, कि शायद आज सभासदलोग मुझे रातके दो या तीन बजे ही छोड़ते, पर बड़े सौभाग्यकी बात है, कि मैंने उनसे इतना शीघ्र पीछा छुड़ा लिया और अब मैं पूरी तरहसे स्वतन्त्र हूँ।"

इतना कह, उन्होंने लार्ड मेकविलको कोई गुप्त इशारा किया, जिसको पूरा करनेके लिये वे मजबूर होकर कमरेसे बाहर चले गये। परन्तु जिस समय वे वहाँसे उठकर दरवाजेकी ओर जा रहे थे, उस समय उनके चेहरेका रङ्ग पीला पड़ गया था, हाथ काँपने लगे थे और क्रोधसे उनकी ऐसी विचित्र अवस्था हो गई थी, कि जिसका अनुमान पाठकगण स्वयं ही कर सकते हैं।

अस्तु, अब उस शानदार कमरेमें विनोशिया प्रिन्सके साथ अकेली रह गई और उसका स्वामी,—जो केवल अपनी पत्नीके वियोगसे ही पीड़ित नहीं किया गया था, वरन् एक जङ्गली कुत्तेकी भाँति दुम दबाकर भागनेके लिये भी मजबूर हो गया था,—अपने एकान्त कमरेमें लौट गया। अब मिष्टर होरेस अपने खिताब और पदवीकी निरर्थकतापर विचार करने तथा इस प्रकार अपमानित होनेसे उनको जो क्रोध चढ़ा हुआ था, उसे शान्त करनेका प्रयत्न करने लगे।

उधर इस प्रकार सहसा प्रिन्सके आजाने और उनके फन्देमें फँस जानेसे विनोशियाको भी जैसा कुछ कष्ट हुआ, उसका अनुभव वही कर सकती थी। परन्तु, अपने उस दारुण कष्टको वह इस प्रकार छिपा गई, कि उसकी छायातक भी उसके चेहरेपर प्रकट न हो सकी, वरन् प्रिन्सको देखते ही विनोशिया एकदम मुस्कुरा उठी!

इस समय प्रिन्स शराबके नशेमें बेहद चूर थे। उनके मुँहसे शराबकी ऐसी कड़ी दुर्गन्ध निकल रही थी, कि जिसका सहन करना विनोशियाके लिये असह्य हो उठा था।

कुछ देर बाद प्रिन्स विनोशियाका हाथ पकड़कर बड़े प्रेमसे बोले,—"देखो, प्रियतमे! आज कितनी ही सम्भ्रान्त महिलाओंने मेरे प्रासादमें कुछ आमोद प्रमोदका आयोजन किया था, पर ये कम्बख्त मन्त्रिगण इस प्रकार अनियमित समयमें मुझे राज सम्बन्धी बातोंमें लगाकर मेरे आनन्दमें बाधा डालते हैं, कि जिसका बयान

करनेसे भी दुःख होता है। क्या तुम जानती हो, कि मेरा यह समय कैसा बहुमूल्य था? एवं मैं इस समय कैसे आनन्दका उपभोग करनेवाला था? दुःख है, कि आज इन कम्बख़्तोंने मेरा बहुतसा समय बेकार नष्ट कर दिया। खैर, कुछ हर्ज नहीं; मैं अब उनके पञ्जेसे निकल आया हूँ। हाँ, तो मैंने अभी अभी तुमसे जिस आमोद-प्रमोदकी बात कही थी, वह अभीतक समाप्त नहीं हुआ है। मैं जाता हूँ, और यदि तुम्हारी इच्छा हो, तो आज तुम भी उसको देखनेका आनन्द उपभोग कर सकती हो।"

विनोशिया,—(यह विचार कर, कि अब शीघ्रही प्रिन्ससे पीछा छूट जायगा, खुश होती हुई) "यह आमोद किस प्रकारका होगा?"

प्रिन्स,—"चलकर देख ही क्यों न लो?"

इतना कह, प्रिन्सने उसका हाथ पकड़ लिया और सीढ़ियोंसे होते हुए उसे अपने साथ एक ऐसी खाली कोठरीमें ले गये, जिसकी सामनेवाली दीवारमें एक शीशेका दरवाजा लगा हुआ था। दरवाजे-की दूसरी तरफ एक दूसरा कमरा, जो उपर्युक्त कमरेकी अपेक्षा बहुत कीमती सामानोंसे सुसज्जित था, दिखाई पड़ रहा था।

उस कोठरीमें पहुँचकर प्रिन्सने कहा,—"मेरी प्यारी विनोशिया! तुम यहीं ठहरकर उस लीलाके देखनेका आनन्द उपभोग करो। यदि उसे देखकर तुम्हारे दिलमें भी किसी प्रकारकी तरङ्ग उठ आवे, तो तुम भी उसमें निःसङ्कोच शामिल हो जाना।"

इतना कह प्रिन्सने विनोशियाको छातीसे लगाकर उसके गुलाबी गाल चूम लिये और फिर तुरत ही शीशेका दरवाजा खोल दूसरे कमरेमें चले गये।

अब विनोशिया भी उस शीशेके दरवाजेके पास पहुँच गई और उसके समीपवाले एक खम्भेकी आड़में इस प्रकार खड़ी होगई, कि जिससे वह तो उस कमरेका सारा दृश्य देख ले, पर उसे कोई भी

न देख सके। क्षणभर बाद उसने वहीं खड़े होकर देखा, कि—वह सुसज्जित कमरा बड़े उज्ज्वल आलोकोंसे आलोकित हो उठा है।

इस कमरेमें विनोप्रियाको जो नई बात दिखाई पड़ी, वह यह थी, कि अच्छे अच्छे घरानोंकी पाँच छः नवयौवना तथा लावण्यमयी अनुपम सुन्दरियाँ, जिन्हें कि वह पहलेसेही पहचानती थी, प्रिन्सको चारों ओरसे घेरे हुई, उनसे हँसी-मजाक कर रही हैं। प्रिन्सको इस अवस्थामें देखकर विनोप्रियाको जरा भी ईर्षा न हुई, वरन् उनके इस घृणित कार्य्यको देखकर वह उनपर पहलेसे भी अधिक घृणा करने लगी।

उसने अपने दिलमें सोचा,—"प्रिन्स समझते हैं, कि मैं एक लम्पट और व्यभिचारणी स्त्री हूँ, मेरा चाल-चलन बिगड़ा हुआ है और मैं इस प्रकारकी भ्रष्ट लीलाओंको देखकर प्रसन्न होती हूँ। अच्छा, कदाचित् वह समय भी आ जाय, कि मैं इस प्रकारकी धृष्टताओंसे आनन्द अनुभव करने लगूँ, तो उसमें बुराई ही क्या है? अब चाहे जो कुछ हो, मैं अपनी इच्छानुसार काम करनेमें कभी न सकुचाऊँगी और जहांतक हो सकेगा, अपनी वासनाओंको पूर्ण कर मनको खूब प्रसन्न रखूँगी। क्योंकि, अब मैं इस बातका अच्छी तरह अनुभव कर चुकी हूँ, कि संसारमें सिवा अपने सुखके कोई भी किसीकी परवाह नहीं करता।"

जिस समय 'विनोप्रिया' इस प्रकार खयाली पुलाव पका रही थी, ठीक उसी समय उसे पीछेसे किसीके आनेकी आहट मालूम पड़ी। उसने तेजीसे घूमकर देखा—तो अपने सामने सर डगलास हण्टिङ्गडनको खड़े पाया।

इस जगह हमारे पाठकोंको यह बात अच्छी तरहसे याद रखनी चाहिये, कि सर हण्टिङ्गडन एक राज-मान्य व्यक्ति थे। एक समय उन्होंने भी विनोप्रियापर मोहित होकर, उससे शादी करनेका

प्रस्ताव उठाया था। परन्तु उस समय विनीप्रियाने इस प्रस्तावको बड़ी लापरवाहीके साथ अस्वीकार कर दिया था। तो भी विनीप्रिया और उनमें किसी प्रकारकी दुश्मनी न होने पाई थी। इसके अलावा विनीप्रिया इस बातको भी भलीभाँति जानती थी, कि 'सर हण्टिङ्डन' ने कप्तान 'टैम'को उसकी कार्रवाइयोंपर निगाह रखनेके लिये नियुक्त कर दिया था, परन्तु विनीप्रियाको 'मलपास' वाले मामलेमें, उनके इस कार्य्यसे, नुकसानके बदले उल्टा लाभ और सहायता ही मिली। अतएव उसने उनके इस कार्य्यको दुश्मनीके रूपमें परिगणित न कर, उपकारमें ही शामिल कर लिया था। इसके अतिरिक्त वह अभी तक यह भी नहीं भूली थी, कि शादी होनेवाले दिन 'सेण्टजार्ज गिर्जे'में पहलेपहल सर हण्टिङ्डनने ही उसको मुबारकबादी या शुभाशीर्वाद दिया था। इन सब बातोंके अतिरिक्त उनसे वैर-भाव न होने और प्रेम-भाव बने रहनेका एक और भी कारण था। वह यह, कि हण्टिङ्डन स्वभावके बड़े अच्छे थे। देखनेमें बहुत खूबसूरत न होनेपर भी, उनके हाव भाव और रङ्ग ढङ्ग कुछ ऐसे थे, जिन्हें देखकर नई रोशनीकी सभ्य लेडियाँ उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकती थीं।

इन बातोंपर विचार करते हुए, हमारे पाठकोंको यह देखकर आश्चर्य्य न करना चाहिये, कि विनीप्रियाने उन्हें देखते ही क्यों उनके स्वागतके लिये उत्साह सहित अपने दोनों हाथ फैला दिये और चार आँखें होते ही क्यों मन्द मुस्कानसे उन्हें अपने प्रेमका परिचय दिया?

अस्तु, हाथ मिलानेके बाद सर हण्टिङ्डनने विनीप्रियाको उस कोठरीमें अकेले देखकर आश्चर्य्यसे कहा,—"आह! लेडी मेक विल! क्या मैं पूछ सकता हूँ, कि आप इस कोठरीमें अकेली खड़ी होकर क्या कर रही हैं? आपके दर्शनसे तो सचमुच तबीयत बड़ी प्रसन्न होती है?"

विनोश्रिया,—(घृणासे ओठोंको दबाती हुई) "आज प्रिन्स महोदय मुझे एक ऐसा नवीन अभिनय दिखानेके लिये यहाँ पकड़ लाये हैं, जिसमें वे स्वयं भी पार्ट करनेवाले हैं।"

सर हण्टिङ्गडन,—"ठीक है, मुझे भी प्रिन्स-महोदयने उसी अभिनयको दिखानेके लिये यहां बुलाया है। मुझे आनेमें कुछ देर हो गई है, परन्तु आपके साथ साक्षात्का सौभाग्य प्राप्त हो जानेसे मुझे अब उस देरका तनिक भी अफसोस नहीं रहा।"

विनोश्रिया,—(कुछ मुस्कराकर,) "आप तो जानते ही हैं, कि जो चोज़ जैसी होती है, मैं उसका आदर भी ठीक वैसा ही करती हूं। तिसपर भी आप इस विषयमें बहुत कुछ बढ़े हुए हैं। खुश करनेवाली बातें करनेमें आपका नम्बर पहला है।"

सर हण्टिङ्गडन,—"मैंने जो शब्द कहे या कह रहा हूं, वे हीरे और जवाहिर भी हों, तो भी उस वाक्यके सामने, जो आपने अभी कहा है, कौड़ियोंका भी मूल्य नहीं रखते।"

विनोश्रिया,—(बड़ी मधुर मुस्कराहटके साथ) "निःसन्देह, यह एक ऐसी प्रशंसा है, जिसके सुननेको मुझे आजतक सौभाग्य प्राप्त न हुआ था। परन्तु यह क्या! क्या आप उस कमरेमें नहीं जाया चाहते, जिसमें कि आपकी उपस्थिति नितान्त आवश्यक है?"

सर हण्टिङ्गडन,—(विनोश्रियाको प्रेमभरी दृष्टिसे देखते हुए) "यदि आप मुझे यहां ठहरनेकी आज्ञा दें, तो मैं कदापि उस जगह जानेकी इच्छा न करूं और यहीं आपकी सेवामें उपस्थित रहूं।"

विनोश्रिया,—"भला ऐसे यारबाश साथीका सहवास कौन नहीं चाहता?"

इतना कह वह अपने कटीले नेत्रोंसे कटाक्ष करती हुई उनकी ओर देखने लगी। यद्यपि वास्तवमें उसकी यह दृष्टि कोई विशेष मतलब नहीं रखती थी, परन्तु ऐसे समयमें एक

मनचला और रसिक मनुष्य, उससे कुछ और ही अर्थ निकाल सकता था।

सर हण्टिङ्गडन,—(शीशेके दरवाजेकी तरफ देखकर) "तो आप कुछ देरतक यहीं खडी रहेंगी ?"

विनीशिया,—"अवश्य! मुझे वह अभिनय देखनेका बड़ा शौक है, जिसमें कि आप भी कुछ भाग लेनेवाले हैं। यदि मैं यह भी अनुमान कर लूं, कि ये उच्च घरानोंकी पाँचों स्त्रिया, जिनको मैं खूब पहचानती हूं, इस अभिनयमें पात्रियोंका काम करेंगी, तो शायद यह अनुचित न होगा।"

इतना कह विनीशिया सर हण्टिङ्गडनके उत्तरकी प्रतीक्षा न कर फिर खम्भेके समीप जा खड़ी हुई और छिपकर अभिनय देखने लगी। यह देख कर सर हण्टिङ्गडनने भी उसीका अनुसरण किया। ऐसा करनेसे उन दोनोंके शिर एक दूसरेके शिरसे स्पर्श करने लगे। सर हण्टिङ्गडनको यह बात बहुत पसन्द आई, पर उन्हें भय था, कि मेरे इस शिर स्पर्शसे कहीं लेडी सेकविल नाराज़ न हो जाये', परन्तु लेडी सेकविलने इसपर कोई एतराज न किया। अतएव उन दोनोंके शिर एक दूसरेके शिरको बहुत देर तक स्पर्श करते रहे और इस प्रकार खड़े हो वे दोनों भीतरके दृश्यका आनन्द लूटने लगे।

उन्होंने देखा, कि कईएक नवयौवना सुन्दरिया, अच्छी अच्छी पोशाकें पहने और नखसे शिखतक सोलहो शृङ्गार किये अठला रही हैं। उनके सारे शरीरसे सुगन्धिकी लपटें निकल रही हैं। यद्यपि ये स्त्रिया अनुपम सुन्दरिया थीं, तथापि उनकी काम भरी दृष्टि और असत् तथा निर्लज्ज हाव भावसे यह स्पष्ट प्रकट होता था, कि उनकी लज्जा केवल अपने घरमें दिखानेका ही एक आभूषण है।

इसी समय कमरेमें एकाएक पियानोके बजनेका शब्द हुआ और

उसमेंसे एक सुन्दर रागके स्वर निकलने लगे। स्वर निकलनेके साथ ही साथ उन स्त्रियोंके नाचनेकी भी ध्वनि सुनाई पड़ने लगी। अनन्तर पासवाले टेबिलपरसे सबोंने नकली फूलोंका एक एक गजरा उठा लिया और फिर उन गजरोंको दोनों हाथोंमें ले उन्हें ऊपरकी ओर उठाकर, अपने शरीरकी मनोहर गठन तथा उन्नत उरोजोंका रसभरा उभार दिखाती हुई नाचने एवं अपने जादू-भरे नेत्रोंसे कटाक्ष मार मारकर देखनेवालेको मोहित करने लगीं। इसके पश्चात् उन्होंने एकाएक आगे बढ़कर प्रिन्सको चारों ओरसे घेर लिया और नाचते नाचते उनपर फूलोंके गजरे फेंकने तथा अपनी रस-भरी नाज़ो-अदाके साथ उनसे हँसी-मजाक करने लगीं।

इधर प्रिन्स रीजेण्ट भी तरह तरहकी अश्लील छेड़छाड़से अपना दिल खुश करने लगे। कभी वे खड़े हो स्त्रियोंके पीछे पीछे दौड़ते थे और कभी उनके साथ साथ नाचते हुए समीपमें पड़े सोफापर धड़ामसे गिर पड़ते थे। उनके गिरते ही कोई एक सुन्दरी शराबसे भरे हुए गिलासको उनके मुखसे लगा देती थी और वे उस मनमोहिनीसे मज़ाक करते हुए शराबको गटगट चढ़ा जाते थे। कभी उन सबके समीपसे भागकर वे कमरेके एक कोनेमें जा छिपते और इस प्रकार हथेलीपर सिर रख या किसी वस्तुका सहारा लेकर बैठ जाते, मानो किसी बड़ी भारी चिन्तामें निमग्न हों या रूठ गये हों। उनकी ऐसी अवस्था देख, सब स्त्रियां उनके पास दौड़ आतीं और तरह-तरहसे उनकी खुशामद करने लगतीं। उस समय जो स्त्री उनके हाथ आजाती, उसको वे बुरी तरह झकझोरते और रह रहकर उसके कपोलोंका चुम्बन करते थे। उनकी ऐसी अवस्था देख शेष स्त्रियां खूब तालियां बजातीं और खिलखिलाकर हँसने लगती थीं।

लगभग दस मिनिटतक लेडी-मेकविल और सर-हण्टिङ्गडन खम्भेके पीछे खड़े हुए इस दृश्यको देखते रहे। उनके सिर अभीतक

उसी प्रकार परस्परमें सटे हुए थे, जैसा कि हम ऊपर लिख आये हैं। कमरेके भीतरवाले दृश्यने उनलोगोंको कामाग्निको भी खूब भड़का दिया और उनपर भी उसका कुछ कुछ प्रभाव पड़ने लगा। इसके अतिरिक्त एक तरफ तो सर हण्टिङ्गडन ऐसी अवस्थामें खड़े हुए थे कि जरा तिरछी दृष्टि करनेसेही वे विनोशियाके कान्तिमान और उभरे हुए सीनेकी सारी झलक देख सकते थे और दूसरी तरफ स्वयं विनोशिया ऐसी दशामें खड़ी थी, कि जरासा आँख घुमाकर देखनेसे ही उसकी नजरोंमें सर हण्टिङ्गडनकी खूबसूरतीका सारा नक्शा खिंच जाता और वह विचारने लगती, कि वास्तवमें उसने उन्हें पहले जैसा समझा था, वे उससे कहीं अधिक रूपवान् हैं।

अस्तु, थोड़ी देर बाद विनोशियाने एकाएक उनके शिरसे शिर हटा उनकी तरफ देखकर कहा,—"महाशय। इस दृश्यको आप कैसा समझते हैं?"

इतना कह जैसे ही उसकी आँखें सर हण्टिङ्गडनकी आँखोंसे मिलीं, कि वह कुछ शर्मा गयी और उसके गालोंपर सुर्खी आ गयी।

कुछ क्षण बाद सर हण्टिङ्गडनने विनोशियाके प्रश्नका उत्तर देते हुए कहा,—"मैं तो इसके विषयमें सिर्फ यही कह सकता हूं, कि अफसोस! इस कोठरीमें फूल न हुए, कि जिससे इन रमणियोंकी भांति तुम भी मेरे साथ उनका वैसा ही उपयोग कर सकतीं!"

विनोशिया,—(एकाएक अपने सायेकी जेबमेंसे फूलोंका एक गुलदस्ता निकाल और सर हण्टिङ्गडनको दिखाकर) "कोठरीमें नहीं हैं, तो न सही, मेरे पास तो हैं। देखिये, इनका उपयोग कैसा मधुर है!"

इतना कह उसने वह गुलदस्ता सर हण्टिङ्गडनके ऊपर फेंक दिया।

सर हण्टिङ्गडन,—"मैं भी इस गुस्ताखीका बदला बिना लिये न मानूंगा।" इतना कह उन्होंने विनोशियाको अपनी छातीसे लगा लिया और बड़े प्रेमसे उसके रस-भरे ओठ चूमने लगे।

विनोशियाने उनके इस प्यारको बिना किसी प्रकारकी आपत्ति या अप्रसन्नताके स्वीकार कर लिया। थोड़ी देर बाद विनोशिया एकाएक घबराकर कहने लगी,—"अब आप शीघ्रतापूर्वक यहांसे चले जाइये, कहीं ऐसा न हो, कि प्रिन्सको यह सन्देह हो जाय, कि अबतक आप मेरे ही पास खड़े थे!"

आशा और उत्साहसे हण्टिङ्गडनका हृदय फूलकर कुप्पा हो गया था। जिस अनुपम सुन्दरी विनोशियाने यौवन-गर्वसे गर्व्वित हो, एक समय उनका प्रत्याख्यान कर दिया था, उसी रमणी-रत्नको तीन महीने बाद फिर अपने ऊपर अनुग्रह करनेके लिये अग्रसर होते देख वे आनन्दसे मतवाले हो गये, और मनही मन कहने लगे,—"अब मेरी दीर्घकालीन आशा शीघ्रही सफल होगी। जिस सुन्दरीने एकबार मेरा प्रदत्त चुम्बन ग्रहण कर लिया, अब वह भविष्यत्‌में कभी मुझे अमान्य न कर सकेगी।" इस प्रकार सुखकी तरङ्गोंमें डूबते उतराते सर डगलास हण्टिङ्गडन दूसरे कमरेमें चले गये।

ठीक इसी समय प्रिन्स भी उस नाचवाले कमरेसे लौट पड़े और शीशेका दर्वाजा बन्द करते हुए उस कोठरीमें आ पहुँचे। विनोशियाके गालोंपरकी सुर्खी और उसे हाँफती हुई देखकर प्रिन्सको विश्वास हो गया, कि यह भीतरवाले दृश्यका प्रभाव है। क्योंकि, उसे अपने साथ कोठरीमें लाकर इस दृश्यको दिखानेसे प्रिंसका उद्देश्य यही था, कि वह किसी तरह हृदयमें स्फूर्ति पैदा होजानेसे एकदम कामोन्मत्त हो जाय।

अब प्रिन्सने विनोशियाको हृदयसे लगाकर उसके ओठोंको,

जिनपर, कि कुछ ही देर पहले सर डगलास हण्टिङ्गडनके प्रेमकी छाप लग चुकी थी, चूमते हुए कहा,—"प्रियतमे। चलो, अब तुम भी उस कमरेमें चलो।"

इतना कहकर उन्होंने विनोग्नियापर एक प्रेम-भरी दृष्टि डाली और कामाग्निसे विह्वल हो उसको अपने शयनागारमें ले गये।

सड़सठवाँ परिच्छेद।

राजकीय विचारालय।

हम जिस समयकी बात कह रहे हैं, उस समय तक सेक्रेटरी आफ स्टेटके उन आविष्कारों, दबावों और नवीन परिवर्त्तनोंका प्रभाव किङ्गसबेञ्चके कैदखाने पर न पड़ा था, जिनसे आज उसकी शान प्रायः एकदम नष्ट हो चुकी है। उस समयतक उस कैदखानेकी ऊँची चहारदीवारी भिन्न भिन्न कमरों और दर-दालानोंमें विभक्त नहीं हुई थी, वरन् उसकी शानका झण्डा सातवें आसमानतक उसी तरह फहरा रहा था, जिस तरह लण्डनकी वेष्ट एण्ड मुहल्लेके सड़े और बदबूदार जलवाले तालाबकी गन्ध।

एक विस्तृत मैदानमें एक बड़ी आलीशान इमारत बनी हुई थी, जिसके चारों तरफ उस इमारतके बराबरही ऊँची चहारदीवारी खिंची हुईथी। उस इमारतका सदर फाटक लोहेका बना हुआ था और शेष फाटकोंमें लोहेके पुराने छड़ लगे हुए थे। उसके आस-पास कई एक पुरानी इमारतें बनी हुई थीं, जिनमेंसे कोई राजकीय सभा, कोई चायघर और कोई रसोईघरके नामसे पुकारी जाती थी। इस इमारतके सामने एक बहुत बड़ा सहन था, जिसमें चारों तरफ फूलदार पेड़ोंकी क्यारियां बनी हुई थीं। इस इमारतका नाम "किंगसबेञ्च-कारागार" था।

इस इमारतसे सम्बन्ध रखनेवाले बहुतसे स्थान ऐसे भी थे, जो पहले बहुत विख्यात थे और अब उनका वैसा रूप न रहने पर भी अभीतक भयङ्कर हैं। इसमें सन्देह नहीं,—कि हजारों मनुष्य, जिनको इस कारागारमें कभी सजा भुगतनेका सौभाग्य प्राप्त हुआ था, उन स्थानों और कारणोंको अपने जीवनमें कभी न भूले होंगे। बलवाई मुजरिमोंको कैद करनेके लिये बनाया हुआ सुदृढ़ कमरा, प्रार्थना करनेकी गिर्जा, बावर्चीखानेके पासवाला छोटा बाजार और रैकट ग्राउण्डकी सीमापर गड़े हुए तीनों पम्प,—ऐसे स्थान नहीं थे, कि जिन्हें वहांका रहनेवाला कोई भी व्यक्ति अपने जीवनमें भूल सके। इनके अतिरिक्त वहां एक शराबका गोदाम भी था, जिसमें सवेरेसे शामतक ग्राहकोंकी बड़ी भारी भीड़ लगी रहती थी। चायघरमें एक कमरा ऐसा भी था, जहापर रईस लोग बैठकर शराब पिया करते थे।

राजकीय विचारालयसे सम्बन्ध रखनेवाले उपर्युक्त स्थान एवं बहुत सी अन्यान्य वस्तुएं ऐसी थीं, कि जिनको अबतक हजारों मनुष्य याद करते चले आते हैं। अब भी यदि कोई बूढ़ा कैदी उस स्थान पर टहलता हुआ पहुँच जाता है, तो वह वहांकी पिछली बातोंको याद कर ठण्ढी सांसें भरने लगता है। उसको वह समय याद आजाता है, जब वह स्थान अच्छी तरहसे आबाद था, और वहां पर हर समय एक मेलासा लगा रहता था।

जिस समयका वर्णन किया जा रहा है, उस समय जेलखानेकी चहारदीवारीके भीतर कई मनुष्य ऐसे भी रहते थे, कि जिनके विषयमें यहां पर कुछ लिखना, आवश्यक जान पड़ता है। उनमें सबसे पहला, आदमी 'योर्की' है। उसको वहां पर यह काम करना पड़ता था, कि यदि कोई कैदीका मिलने वाला आदमी आता, तो वह उसको अपने साथ ले जाकर उस कैदीसे मिला

जाता था। यदि किसीको कुछ चीज खो जाती, तो वह उस चीजकी तमाम लोगोंमें घोषणा कर देता था। चाय घर या शराबखानेमें यदि कभी दावत होती, तो यौकीं तमाम उसका न्योता दे आता था, या कुछ ले-देकर साधारण मनुष्योंके छोटे मोटे काम कर दिया करता था। दूसरी एक अधेड़ और पतली दुबली लम्बीसी औरत थी। उसे सब लोग 'बुढ़िया नानी'के नामसे पुकारते थे। वह वहां पर मछली, अण्डे या शाकपात इत्यादि बेचा करती थी। सदा, 'बुढ़िया नानी' या तो मरदाना कोट पहनती या एक भूरे रङ्गका लबादा ओढ़े रहती थी। उसके शिरपर हमेशा एक पुराना सा टोप धरा रहता था।

जेलखानेके अन्दरूनी फाटकके सन्तरीवक्स पर हर समय एक बड़ा बदसूरत और भयानक पहरेदार रहता था। वह शिरपर बालोंको एक तिरछी टोपी पहना करता था। इस बूढ़े, भयानक पहरेदारका नाम 'बूढ़ा सिम्स' था। पहरा देनेके अलावा यह वहांपर आने जाने वाले लोगोंसे कुछ नामा भी वसूल किया करता था।

इन मनुष्योंके अतिरिक्त उस जेलखानेमें और भी बहुत सी ऐसी मूर्त्तियां थीं, जिनको एक कैदी या नया मनुष्य बड़े कौतूहलके साथ देखता था। उनमेंसे कुछ लोग तो ऐसे थे, कि जिनकी तमाम उम्र उस जेलखानेमेंही कटी थी। यद्यपि उनकी कैदकी मियाद पूरी हो चुकी थी, और जिस समय वे चाहते, उससे छुटकारा पा सकते थे, परन्तु न मालूम क्या सोचकर वे उसे छोड़ना नहीं चाहते थे। वे वहांपर साधारण मनुष्योंके वेशमें घूमा करते थे।

परन्तु जैसा कि हम ऊपर लिख चुके हैं, कुछ दिनों बाद नये नये अधिकारियोंके अनुग्रहसे क्रमश: वहांके निवासियोंकी यह स्वतन्त्रता नष्ट हो गयी थी।

अस्तु, मि० इमरसन नामक महाजनके पांच हजार गिनीके बिल न चुकानेके अपराधमें गिरफ्तार कर 'कर्नल मलपास' फेटरलेनमें मि० मोसेज आइकीके मकानपर भेज दिये गये थे। सो वे अपने महाजनका रुपया चुका देनेकी फ़िक्रमें तीन सप्ताहतक उसी मकानमें पड़े रहे।

पहले उन्होंने अपनी सुसरालवालोंको पांच हज़ार गिन्नियां उधार देनेके लिये पत्र लिखा, परन्तु वहांसे कोरा जवाब आगया। फिर उन्होंने अपने दोस्तोंको लिखा, परन्तु उनसे भी कोई काम न निकला। हारकर कुछ दिनों ठहर जानेके लिये उन्होंने अपने महाजनसे प्रार्थना की, परन्तु उसने एक न सुनी। अन्तमें दुःखी होकर उन्होंने एक पत्र, जिसमें अपने पिछले कर्मों पर पश्चात्ताप करते हुए रुपयोंकी प्रार्थना की थी, कर्ज़नकी 'काउन्टेस'को लिखा, परन्तु दुर्भाग्यवश वह पत्र जैसाका तैसा ही एक खाली लिफ़ाफ़ेमें वापस आगया, क्योंकि काउन्टेसने उनके खतको पहचानकर उस पत्रके लेनेसे साफ इनकार कर दिया था।

जब कर्नल मलपास, सब तरफसे हताश होगये और उन्हें विश्वास होगया, कि उस मुसीबतसे छुटकारा पानेमें उन्हें बहुत विलम्ब लगेगा, तो उन्होंने उस मकानकी अपेक्षा शाही जेलमें ही रहना उत्तम समझा, क्योंकि वहांपर खानेपीने और सोनेके किरायेमें उनका बहुत सा रुपया खर्च हो जाता था।

तदनुसार समय मिलनेपर अपने इस इरादेको उन्होंने अपने वकीलपर प्रकट किया। वकीलने अदालतसे उनको किंग्सग बेंचमें जानेका आज्ञापत्र दिलवा दिया। इसके बाद वे एक पहरेदारकी निगरानीमें घोड़ागाड़ीपर सवार कराकर उपर्युक्त स्थानमें पहुंचा दिये गये। जिस समय वे मकानके भीतर पहुंचे, उस समय एक युवकने गेट-फी देनेके लिये कहा, जिसे कर्नल

'मलपास'ने फौरन चुका दिया। अदालत द्वारा उनके रहनेके लिये उस मकानके दुमञ्जिले पर एक कोठरी नियुक्त हुई थी। अतः जिस समय वे उसमें पहुंचे, पांच छः सभ्य मनुष्य (जैसा कि उनकी पोशाक इत्यादि से जान पड़ता था) उनको घेरकर खड़े होगये और इनाम मांगने लगे, उनकी बातोंसे मालूम हुआ, कि वे उस मकानके नौकर हैं और वहांके रहनेवालोंके आवश्यकीय काम कर दिया करते हैं। कर्नल मलपासको यह सुन आश्चर्य हुआ। अन्तमें उन्होंने उनको कुछ इनाम दे, बिदा कर दिया।

थोड़ी देर बाद एक मनुष्यने आकर उनसे खाना मंगानेके लिये पूछा। कर्नल 'मालपास' उससे पूछने लगे,—"क्या यहां पर भोजन मिल सकता है?"

वह मनुष्य—"जिस चीजके लिये आप आज्ञा देंगे सो सब यहां पर मिल सकती है। परन्तु क्या भुने गोश्त और रोटीके अतिरिक्त और खाना बनवाना पड़ेगा?"

उस समय शामके पांच बज चुके थे। 'कर्नल मलपास'को बेहद भूख लग रही थी। अतएव उन्होंने उस समय उपर्युक्त भोजन करना ही उचित समझा और उस मनुष्यको उक्त भोजनके लानेकी आज्ञा देदी। उनकी आज्ञा पाकर वह मनुष्य कहने लगा,—"तब आपको जरा 'काफीखाने' तक चलनेका कष्ट उठाना पड़ेगा।"

यह सुन कर्नल मलपास उस मनुष्यके साथ हो लिये और वह उन्हें 'काफीखाने'में लेगया। वहां पहुंचनेपर वे शराबखानेमें पड़ी हुई एक मेजके सामने कुरसीपर बैठा दिये गये। इसके बाद खाना लाया गया। कर्नल मालपास उसको फीस अदाकर भोजन करने लगे।

वे कुरसीपर उदासभावसे बैठे हुए एक समाचार पत्रको अनमनेसे पढ़ने लगे। परन्तु उन्होंने एक पढ़ने योग्य अच्छे लेखको आरम्भ ही किया था कि, उनके कानोंमें बाहरकी तरफसे एक विचित्र

प्रकारकी पुकार सुनाई दी। उन्होंने सुना कि, कोई बड़े जोर-जोरसे बार बार कह रहा है:—

"भाइयो, सुनो। इत्तिला दी जाती है कि, एक जोड़ी नयी ब्रीचेज (एक तरहका पायजामा, जो औरतें ही पहनती हैं) ऊपर दसवें खनके नं० ३ वाले कमरेसे, जिसमें मैकाय दर्जीकी दूकान है, खो गयी है। यदि कोई उसे ला देगा या मुझे उसका पता बता देगा, उसे एक शराबकी बोतल इनाममें दी जायगी और कुछ दण्ड नहीं दिया जायगा। ईश्वर सम्राट्की रक्षा करे।"

यह पुकारनेवाला यौर्की था। उसने इतना कहनेके बाद खांस-कर अपना गला साफ कर लिया और फिर वहांके रहनेवालोंको, जो उसकी बातें बड़ी ही दिलचस्पीके साथ सुन रहे थे, एक दूसरा समाचार सुनाने लगा—

"भाइयो, सुनो। जिन्हें ऐसे मामलोंसे दिलचस्पी हो, वे गौरसे सुन रखें और सुनकर फायदा उठावें। आजकी रात शराबखानेमें गाने-बजानेका जलसा होगा। जलसेकी सारी आमदनी बेचारे मिष्टर पिटर स्लिग्सको दी जायगी, जिनका शिर, नं० १०की सीढ़ीसे शराबके नशेमें गिर पड़नेके कारण, फट गया है। ठीक आठ बजे जलसेके सभापति मिष्टर जोजेफ टक्स आ जायेंगे और तरह-तरहके हंसीके गाने होंगे और नाना प्रकारके बाजे बजाये जायेंगे। ईश्वर सम्राट्की रक्षा करे।"

यह कहता हुआ यौर्की काफी-खानेके पाससे आगे बढ़ा और उस मकानके भिन्न-भिन्न हिस्सोंमें ऊपर लिखे वाक्योंको दुहराने लगा। कर्नल मनपासने बेहरेके मुंहसे सुना कि, ये घोषणायें सची हैं, कोरी दिल्लगी नहीं हैं। यह सुनकर कर्नलको अपना विचार बदल देना पड़ा, क्योंकि उन्होंने पहले इन बातोंको पूरा मजाक ही समझा था।

वे भोजन समाप्त कर शराबका ग्लास मुँहसे लगाना ही चाहते थे, कि उनसे 'काफीखाने' के एक नौकरने आकर कहा,—"आपसे एक सभ्य मनुष्य मिलना चाहते हैं।"

मलपास,—"वह मनुष्य कौन है ?"

नौकर,—"वे यहाके एक मशहूर व्यक्ति हैं और जो सभ्य मनुष्य मुसीबतमें गिरफ्तार होकर यहा आते हैं, वे उनको अक्सर सहायता किया करते हैं। उन्होंने मेरे कानमें कहा है, कि वे आपको तीन या चार दिनके भीतर ही भीतर यहासे रिहाई दिला देंगे।"

मलपास,—(खुश होते हुए आश्चर्यके साथ) "क्या तुम सच कह रहे हो ? उनका नाम क्या है ?"

नौकर,—"मि० जोशुआ जेनकिन। क्यों, उनसे आनेके लिये कह दूं ?"

मलपास,—"अवश्य, शराबका एक ग्लास भी लेते आना, क्योंकि सम्भव है, मि० जेनकिन मेरे साथ शराब पीनेका भी अनुग्रह करें।"

यह सुनते ही नौकर बाहर चला गया। कुछ मिनट बाद वह एक नाटे कदके मनुष्यको, जो मलमलके मैले कपड़े पहने हुए था और चेहरेसे यहूदी जान पड़ता था, अपने साथ लिये हुए कमरेमें लौट आया। अपनी सहायता करने वाले मनुष्यको ऐसी हीन दशामें देखकर, कर्नल मलपास विस्मित हो उठे और उन्होंने उसका विशेष स्वागत नहीं किया, बल्कि एक मामूली ढङ्गसे अपने समीपकी कुरसीपर बैठा दिया, परन्तु मि० जोशुआ जेनकिनने बेतक-ल्लुफोके स्कूलमें तालीम पाई थी। अतएव वे अपनी कुरसी, मेजके समीप खींचकर पूछने लगे,—"अच्छा, कर्नल साहब! आखिरकार आप भी इस बवालमें फँसही गये ?"

मलपास,—(आश्चर्यसे उनकी तरफ देखते हुए) "महाशयकी बातोंसे जान पड़ता है, कि आप मुझे पहलेसे ही जानते हैं।"

जैनकिन,—(लापरवाहीसे) "ओह! मैं तो करीब करीब यहांके प्रत्येक मनुष्यको जानता हूं। फिर भला यह कैसे सम्भव था, कि कर्नल मलपासके सुविख्यात नामसे मैं अनभिज्ञ रहता? असल बात तो यह है, कि मैं आपको तभीसे जानता हूं, जबसे आप 'भाईके'के मकानपर पहुँचाये गये थे। मैं आपसे वहीं मिलनेवाला था, परन्तु यह विचार कर कि, वहांपर आप स्वयं ही अपनी रिहाईकी फिक्र कर रहे होंगे, आपसे न मिल सका। परन्तु जब आप यहां आ गये, तो मैंने भी आपसे मुलाकात करना उचित समझा। आशा है, यहांपर आपका काम अवश्य सिद्ध हो जायेगा।"

इतना कह उन्होंने मेज़परसे शराबका ग्लास उठा लिया और उसको बेतकल्लुफीसे गटागट चढ़ा गये।

कर्नल मलपास,—(उसकी बेतकल्लुफीसे कुछ चिढ़कर) "महाशय! पहले यह तो बता दीजिये, कि आप मेरी किस प्रकारकी और क्या सहायता कर सकते हैं?"

जैनकिन,—"मैं आपको यहांसे रिहाई दिलवा सकता हूं।"

मलपास,—(उसकी बातपर अविश्वास करते हुए,) "तो क्या आप किसी ऐसे आदमीको जानते हैं, जो मुझे पांच हजार गिन्नियां कर्ज दे दे?"

जैनकिन,—"नहीं, मेरा अनुमान है, कि बिना रुपया दिये ही आपका काम हो जायेगा। आप यहांसे छूटकर सीधे फ्रांस चले जायँ और वहांसे यदि हो सके, तो अपना थोड़ा बहुत कर्ज निपटा दें, मुझे विश्वास है, कि आपको अपने महाजनको रुपयेमें एक पैसा भी न देना पड़ेगा।"

मलपास,—"परन्तु क्या ऐसा हो जाना सम्भव है?"

जैनेकिन,—(हठतासे) "अवश्य।"

मलपास,—(आश्चर्यसे) "सो कैसे?"

जैनकिन,—"जमानतसे।"

मालपास,—"ओह! मैंने सुना है, कि इस प्रकार भी काम हो जा सकता है।"

जैनकिन,—(ठोढ़ी मलते हुए) "हां हां, अवश्य हो सकता है! आप रुपयेके अपराधमें गिरफ़तार किये गये हैं, सो जमानतपर मुकद्दमा लड़नेसे आपको रिहाई मिल सकती है।"

मलपास,—"परन्तु इतनी बड़ी जमानतके लिये मैं दो जामिन कहांसे लाऊंगा? क्या आप नहीं जानते, कि मुझे पांच हजार गिन्नियां देनी हैं?"

जैनकिन—"मालूम है। इसकी आप कुछ परवा न करें। आपके लिये ऐसे दो जामिन मिल सकते हैं, जिनमेंसे हरएक दस हजार गिन्नियोंकी जमानत कर सकता है।"

मलपास,—(अविश्वास और आश्चर्यसे) क्या "मुझे ऐसे दो जामिन मिल सकते हैं, जो बीस हजार गिन्नियोंकी जमानत कर सकें? यह आप क्या कह रहे हैं? आपकी बातपर मुझे विश्वास नहीं होता।"

जैनकिन,—"अवश्य मिल सकते हैं। अच्छा, तो मैं साफ साफ कहे देता हूं, कि मैं इस समय ऐसे दो मनुष्य अपने साथ लाया हूं, जो आपकी जमानत करनेके लिये अपनी राजीसे रजामन्द हैं। यदि अब भी विश्वास न हो, तो आप उन्हें बुलाकर देख सकते हैं।"

मलपास,—(आश्चर्य और खुशीसे) "तब ठीक है। तो वे इस समय कहां हैं?"

जैनकिन,—"यहीं हैं। परन्तु इस कामके लिये आपको सौ गिन्नियां खर्च भी करनी पड़ेंगी। चालीस चालीस गिन्नियां उन्हें

और बीस गिन्नियां मुझे देनी पड़ेंगी। बस इतने ही खर्च में आपका काम सिद्ध हो जायेगा और एक सप्ताहके भीतर ही आप स्वतन्त्र हो जायेंगे।"

मलपास,—"परन्तु क्या यह सम्भव है, कि दो रईस और शरीफ मनुष्य चालीस गिन्नियोंके लालचमें इतनी बड़ी रकमकी जमानत कर दें और अपनेको खतरेमें डाल दें?"

जेनकिन,—(मुस्कुराकर) "जी जनाब! वे दोनों मनुष्य जिनको मैं अपने साथ लाया हूं, एक शैतानकी भी, यदि वह उनको उपर्युक्त धन दे सके—तो जमानत कर सकते हैं।"

मलपास,—"आपकी बातोंपर मुझे आश्चर्य होता है! अच्छा, वे दोनों मनुष्य कहां हैं, जरा बुलवाइये तो।"

जेनकिन—"मैं उन्हें बाहर एक नानबाईकी दूकानपर रोटी और गोश्त खाते हुए छोड़ आया था और बोतलके लिये एक रुपया भी दे आया था।"

यहूदीकी इस विचित्र बातको सुनकर कर्नल मलपास एकदम चौकन्ने हो गये। अब उन्हें सन्देह होने लगा, कि यहूदी उन्हें बहका रहा है। परन्तु उनके दिलमें एक खयाल आया, जिससे वे संभल गये और उससे पूछने लगे,—"तो मेरा यह अनुमान है, कि वे बनावटी रईस हैं।"

जेनकिन,—"बनावटी नहीं तो क्या असली हैं? मुझे आश्चर्य होता है, कि आप अभीतक इस बातको नहीं समझे! परन्तु, इससे आप हताश न हूजिये। आपका काम अवश्य हो जायेगा। मैं आपको इसका एक प्रमाण भी देता हूं। सुनिये, लगभग एक सालके हुआ होगा, कि एक मनुष्य तीन हजार पौण्डके कर्जमें गिरफ्तार होकर यहां लाया गया था। उस मनुष्यका बाप उस महाजनको रुपयेमें बारह आने दे रहा था, परन्तु महाजन राजी न हुआ।

तब उस मनुष्यने मुझे बुलाया। मैंने तुरत दो मनुष्योंको, जिनमेंसे एक ठठेरा और दूसरा सुनार था, कुछ रुपया ठहराकर उसकी जमानतके लिये तय्यार कर दिया। जिस दिन मुकद्दमा हुआ, वे दोनों किरायेके कपड़ोंसे सजधजकर जजके सामने पहुंचे और कसम खाकर कह आये, कि उनकी हैसियत दस-पन्द्रह हजार पौण्डसे किसी प्रकार भी कम नहीं है। अतएव उनकी जमानत लेकर वह मनुष्य छोड़ दिया गया। इधर मैं उसके महाजनके पास गया और रुपया चुकानेके लिये बातचीत करने लगा। अब आपही बताइये, आपके अनुमानसे वह कितना लेनेपर राजी हो गया होगा?"

मलपास,—"मैं इस विषयमें क्या बता सकता हूं? शायद रुपयेके आठ आने ले लिये होंगे।"

जेनकिन,—"बस! मैंने उसको बातोंके फेरमें डालकर रुपयेमें दो आने लेनेको रजामन्द कर दिया। उस समय मैंने उसको यह साबित करके दिखा दिया था, कि—उससे कौड़ी भी वसूल नहीं हो सकती। अब तो आपको मालूम हुआ, कि किस प्रकार ऐसे-ऐसे कठिन काम सहजहीमें सिद्ध कर लिये जाते हैं? कहिये, अब तो कुछ सन्देह की बात नहीं रही?"

मलपास,—"जी नहीं, परन्तु यह तो बताइये—क्या जजसाहबने इतनी आसानीसे उनका विश्वासकर लिया और कोई प्रमाण न मांगा?"

जेनकिन,—"जी नहीं, कोई भी प्रमाण नहीं मांगा। यद्यपि जजसाहब यह खूब जानते थे, कि वे मनुष्य सरासर झूठ बोल रहे हैं, परन्तु करही क्या सकते थे? कानूनसे लाचार थे। महाजनका वकील कोई उज्र पेश करता, तो अवश्य दिक्कत पड़ जाती। परन्तु क्या आप समझते हैं—कि मैं इतनी बात भी नहीं जानता? सबसे पहले उसीको साट लिया जाता है, तब कोई ऐसी कार्रवाई की जाती है। क्यों, समझ गये न?"

मलपास,—"ठीक है।"

जैनकिन,—"यदि हमलोग ऐसा न करें, तो हमें पूछे ही कौन! आप भले ही इन बातोंको सुनकर आश्चर्य्य करें, परन्तु हमारे लिये ये बातें नई नहीं हैं। हमें इनसे रोजमर्रह काम पड़ता है। आज चौदह वर्षसे हमलोग यही काम करते चले आ रहे हैं। मुझे आप अकेला न समझिये, मेरे ऐसे बहुतसे साथी हैं, जो यही काम करते हैं। ईश्वरको धन्यवाद है, कि अभीतक जिस कामको हाथ लगाया है, उसे पूरा ही करके छोड़ा है। अच्छा, अब यदि आज्ञा हो, तो और दो बोतलें शराबकी मँगवानेके लिये घण्टी बजाऊं?"

इतना कहते ही उसने घण्टी बजा दी। घण्टी बजते ही नौकर सामने आकर खड़ा हो गया, जिसको देखते ही यहूदीने शराबकी बोतलें लानेका इशारा कर दिया। इशारा होतेही शराबकी दो बोतलें लाकर मेजपर रख दी गयीं। अब शराबका दौर चलने लगा। कुछ देर सोच-विचारकर कर्नल मलपासने जेबसे बीस गिन्निया निकालकर यहूदीके हाथपर रख दीं और शेष अस्सीके लिये उन्होंने काम पूरा हो जानेपर देनेका वादा किया। सब बातें ठीक हो जानेपर मि० जैनकिन वहांसे बिदा हो गये और कर्नल मलपास अकेले बैठे हुए गम्भीर भावसे जैनकिनकी उपर्युक्त अद्भुत बातोंपर विचार करने लगे।

थोड़ीही देर बाद एकाएक फिर कमरेका दरवाजा खुल गया और उसमें पांच छै मनुष्य शीघ्रताके साथ आते हुए देख पड़े। देखनेमें सब सभ्य जान पड़ते थे, परन्तु उनका व्यवहार बड़ा छिछोरा और असभ्योंका सा था.क्योंकि जैसे ही वे उनके समीपवाली बेञ्चपर आकर बैठे, त्योंही एकदम खिलखिलाकर हँस पड़े और आपसमें हँसी-मजाक करने लगे।

उनके आनेके थोड़ी ही देर बाद कामरेमें एक नौकर आया और कहने लगा,—"महाशय! कुछ आज्ञा दीजिये।"

एक मनुष्य,—(अपने साथोसे) "हां, तो क्या मँगाया जाये?"

दूसरा,—"दौर चलना चाहिये। हम सब छः आदमी हैं। (नौकरकी तरफ देखकर) जाओ जो, नोगसकी (एक प्रकारकी शराब) चार बोतलें ले आओ।"

नौकर,—"बहुत अच्छा, जनाब! मैं बहुत जल्दी ही लाऊंगा; लाइये, दाम दीजिये।"

पहला,—"कैसी बेहूदा गुस्ताखी है! भला यह भी कोई दाम मांगनेका ढङ्ग है? (जेबमें हाथ डालकर) अरे! मैं तो अपना बटुआ घरही भूल आया।"

दूसरा,—(जेबमें हाथ डालकर और उसमेंका सूराख दिखाकर) "अरे! यह क्या! मेरी जेबमें सूराख हो गया और सारे दाम कोटके दामनमें जापड़े! अब तो बिना कोट उतारे उनका निकलना ही मुशकिल जान पड़ता है।"

तीसरा,—"मेरे पास अभाग्यवश एक भी रुपया नहीं है, केवल एक सौ पौण्डकी हुण्डी पड़ी हुई है। इतनी रात गये इतनी बड़ी रकमका भुगतान होना भी असम्भव जान पड़ता है।"

चौथा,—"लीजिये, यदि मुझे यह खबर होती, कि तुम सबके सब खोखले हो, तो मैं अभी 'लार्ड स्मिग्समेग' को वे बीसों गिन्नियां उधार ही क्यों देता? परन्तु उनकी आवश्यकताको देखते हुए तो ज़रासी बातके लिये मना करना भी बड़ी बेजा बात मालूम होती थी।"

पांचवां,—"खैर, कुछ हर्ज नहीं, सुस्त होनेकी कौन सी बात है? मेरे पास बहुतेरा रुपया है!" इतना कह उसने बड़े इतमीनानके साथ अपनी वास्कटकी जेबमें हाथ डाला, परन्तु एकाएक

विस्मित और व्याकुलसा होकर कहने लगा,—"या खुदा, जेवही उलट गई ! इसमें तो एक पैसा भी नहीं दिखाई पड़ता ।"—इतना कह वह क्रोधसे दांत पीसने लगा।

छठा (जेबमेंसे एक चेक-बुक निकालते हुए),—"ऐसा मनहूस दिन भी कभी न देखा होगा। मैं इसी समय सौ रुपयेका एक बिल लिख देता, परन्तु क्या करूँ अब तो बैङ्कही बन्द हो गया होगा। उसको लिखना न लिखना बराबर ही है।"

नौकर (चिढ़कर घृणाके साथ),—"लीजिये, कैसे मजेकी बात है। छः फेशनेबल जेण्टिलमैन और पासमें चार रुपये भी न निकले।"

एक मनुष्य (मलपासकी ओर देखते हुए),—"ठीक है। यदि इस समय कोई मनुष्य मुझे चार रुपये उधार दे दे,तो मैं घर पहुँचतेही अपने नौकरके हाथ उसको वे चार रुपये धन्यवाद सहित लौटा दूँ और साथमें हमेशाके लिये उसका अहसानमन्द भी रहूँ।"

कर्नल मलपासने, जो अभीतक बड़े गौरसे उनकी सब बातें सुन और समझ रहे थे, उसको इस बातपर कुछ ध्यान न दिया और चुपचाप बैठे रहे।

दूसरा मनुष्य (कर्नल मलपासको देखते हुए),—"जी, क्या फरमाया ?"

मलपास (कुछ रूखेपनसे),—"कुछ नहीं, मैंने तो कुछ भी नहीं कहा।"

पहला मनुष्य,—"क्या खूब। महाशय, चुपकेसेही टाले देते हैं ? (अपने साथियोंसे) आप आज ही आये हैं। आपके आनेकी खुशीमें भी तो हम सबको एक-एक बोतल पीनी चाहिये ? (नौकरसे) इधर आओ, और आपसे दाम ले लो।"

कर्नल मलपास इस समय बड़े चुप हुए। उनके मुखसे एक

एक 'ना' या 'हां' कुछ भी न निकल सकी। उनको चुप देख नौकरने समझा, कि वे दाम देनेको रज़ामन्द हैं। फिर क्या था, वह एकदम झपटकर कमरेके बाहर चला गया। उसके चले जानेके बाद उन आदमियोंने अपनी बातोंको फिर एक नये सिलसिलेसे छेड़ दिया।

एक मनुष्य (मलपाससे),—"क्या आप आज ही आये हैं?"

दूसरा,—"क्या अधिक दिनतक ठहरना होगा?"

तीसरा,—"कहिये, कबतक ठहरियेगा?"

चौथा,—"क्या ज़मानतपर मामला रुका हुआ है?"

पांचवां,—"यदि आप यहां अधिक दिनोंतक ठहरें, तो आपको एक कमरा अवश्यही लेना पड़ेगा। यहां आदमियोंकी अधिकताके कारण जगहका बड़ा तोड़ा है। खैर, यदि आप चाहेंगे, तो मैं आपको, एक शरीफ आदमी होनेके कारण, अपना कमरा किरायेपर दे दूंगा।"

कर्नल साहब अभी कुछ कहने भी न पाये थे, कि नौकरने, नीगस शराबकी चार बोतलें लिये हुए, कमरेमें प्रवेश किया। उसने आते ही चारों बोतलें कर्नल मलपासके सामने मेज़पर रख दीं और फिर एक ओर हटकर खड़ा होगया। बोतलोंके सामने आते ही बातोंका रुख दूसरी ओर पलट गया।

एक मनुष्यने, जो उन सबका मुखिया जान पड़ता था, कर्नल मलपासकी ओर देखकर कहा,—"प्यारे दोस्त! आपके आनेकी खुशीमें शराब पीनेसे पहिले मैं आपसे यह कह देना उचित समझता, हूं, कि आप हमारे साथ अधिक शराब न पी जाना, क्योंकि ऐसा होनेपर आपको बड़ी परेशानी उठानी पड़ेगी। और यदि आपको अधिक पीनेका अभ्यास हो हो, तो कोई डरकी बात नहीं है। अच्छा, तो शुरू करो।"

इतना कह उसने एक बोतल खोल डाली और उसमेंसे एक ग्लास भर कर्नल मलपासके सामने धर दिया। कर्नल मलपासके मुखसे ग्लास लगते ही सबोंने उनका अनुकरण किया।

जिस मनुष्यने कर्नल मालपासको शराबका ग्लास दिया था, वह उनका ध्यान अपनी ओर खींचता हुआ कहने लगा,—"मैं समझता हूं, कि आप हमलोगोंका हाल जाननेके लिये उत्कण्ठित होंगे। अच्छा, तो मैं आपको उस उत्कण्ठा को दूर करनेके लिये जो कुछ कहूं, उसे आप ध्यानपूर्वक सुनिये। मेरी उम्र इस समय २७ वर्षकी है और लगभग छः वर्षके हुए, जब मैं यहांपर गिरफ़ार करके लाया गया था। जिस समय मैंने होश सँभाला था, उस समय मेरे पास बीस हज़ार पौण्डकी पूँजी थी, परन्तु उस सबको मैंने नौ मासके अन्दर ही उड़ा डाला। इसके बाद तीन महीनेतक मैं इधर-उधरसे माल उड़ाता रहा और फिर गिरफ़ार होकर चला आया। बस तभीसे मैं यहां रहता हूं और अब ईश्वर जाने कब-तक रहूंगा।"

दूसरा,—"जनाब! मैं भी इस थोड़ी सी उम्रमें जिन्दगीके बहुत कुछ मजे उड़ा चुका हूं, जिस समय मैंने होश सँभाला था, मेरे पास एक हजार पौण्ड था, परन्तु मेरे फेशन और ठाठबाटसे वह दूसरोंको पचास हजार जँचता था। अतएव दो वर्षतक उसे स्वच्छन्दतापूर्वक खर्च कर खूब ऐशोआराम उड़ाता रहा। अन्तमें बरबादीने आही घेरा। जो कुछ जमापूँजी थी, सब तीन तेरह हो गई। महाजनोंके इधर-उधरसे इकट्ठे किये हुए अनुग्रहसे मुझे भी यहाकी हवा खानी पड़ी। कहिये (सिर हिलाकर) कैसी मौज उड़ाई?"

तीसरा,—"अजी यह क्या है? जरा मेरी सुनिये। जिस समय मैंने होश संभाला था, खुदाके फजलसे पासमें एक पैसा भी न

था। परन्तु मेरे पास बापका खरीदा एक बड़ा सा गलमुच्छोंका जोड़ा, बड़ी बड़ी ऊपरको उमेठी हुई मूछें, एक फुलबूटका झकमकाता हुआ जोड़ा एवं कई एक फेन्सी कोट रक्खे हुए थे। इसलिये उन सबको पहन मैं एक फैशनेबिल और रोबदार जण्टिलमैन मालूम होने लगा। अपने ठाटबाट और सूरत-शक्लको निहारते हुए लौण्डरस होटलमें पहुंच मैंने अपनेको कप्तान मशहूर कर दिया और उसमें बड़ी शान शौकतके साथ समय बिताने लगा। मेरी शान-शौकतको देख, वहांके सौदागर लोग मेरे लिये हर प्रकारका सामान उधार दे दिया करते थे। जिस वस्तुको आवश्यकता होती, वह आर्डर देते ही, फौरन उपस्थित हो जाती थी। इस प्रकार मुफ्तका माल उड़ाते, खाते और सिरपर कर्ज चढ़ाते चढ़ाते लगभग एक सालके बीत गया। इस बीचमें मेरी, एक लेडीसे, जो कि कुछ ही समय बाद सौ हजार पौण्डकी वारिस होनेवाली थी, मुलाकात हो गई। वह मुझसे शादी करनेको भी राजी हो गई थी, यहांतक कि शादी का दिन भी मुकर्रर हो गया था। परन्तु दुर्भाग्यवश, शादी होनेके एक दिन पहले, जिस समय मैं उसके मकानपर गया—मेरी पाकट बुक वहीं रह गई। मेरे चले आनेके बाद वह पाकट-बुक उसके माता-पिताके हाथोंमें पड़ गई। फिर क्या था?—कप्तान साहबकी भीतरी हाल जाननेके लिये उनकी उत्कण्ठा बेहद बढ़ गई। उन्होंने उसको खोलकर देखा और उसमें सिवा कर्जकी वस्तुओं, रुपया उधार देनेवाले महाजनों एवं सौदागरोंके नामोंके, उन्हें कुछ भी दिखाई न पड़ा। अगले दिन जिस समय मैं वेफिक्रीसे, क्योंकि मुझे अपनी पाकट-बुक छोड़ आनेका जरा भी ख्याल न था—दूल्हेके साथ शादीवाली फैन्सी और बहुमूल्य पोशाक पहिन रहा था, इसी समय लौण्डरस होटलके दरवाजने आकर मेरे हाथपर एक पैकट धर दिया। मैंने उसे बड़ी उत्कण्ठाके साथ उसी दम फटसे

खड़े खोल डाला, तो उसमेंसे वही कम्बख्त पाकट-बुक निकलकर जमीनपर गिर पडी। मैंने उसे उठा लिया और जैसे ही उसको खोला, वैसे ही उसमें लेडीके बापके हाथका लिखा एक पत्र रखा हुआ दिखाई पडा। उस पत्रकी याद आते ही अब भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्योंकि उसके आनेके थोडी देर बाद ही दो पुलिसके सिपाहियोंने आकर मुझे गिरफ़ार कर लिया और मैं वेड्लतीके साथ अदालतके सुपुर्द कर दिया गया। तबसे, आज चार वर्ष हुए, मैं इस पवित्र स्थानका निवासी बना हुआ हूं। कहिये, कैसी हिम्मत और होशियारीसे काम किया था?"

उस तीसरे मनुष्यका सिर हिलाकर इतना कहना था, कि उसके सब साथी खिल खिलाकर हँस पड़े और उसकी मनमानी प्रशंसा करते हुए उसे शाबाशियाँ देने लगे।

अभी उन लोगोंका हँसना पूरे तौरसे बन्द भी न हुआ था, कि चौथे मनुष्यने कहा,—"अफसोस! हमारा जमाना भी कभी ऐसा ही था। यद्यपि मेरे पिछले जीवनका ढङ्ग इतना अनूठा और काफी दिलचस्प नहीं है, तथापि उसमें मेरी मूर्खताकी तो हद है। जिस समय मैंने होश संभाला, उस समय मेरे पास अपने बुजुर्गोंका छोड़ा हुआ तीस हजार पौण्ड था। जिस स्त्रीसे मेरी शादी हुई थी, उसके पास भी पचास हजार पौण्डकी पूँजी थी। इस प्रकार दोनों मिलाकर मेरी हैसियत लगभग एक लाख पौण्डके हो गई थी। शादीके तीन महीने बाद इङ्गलैण्डकी मशहूर ऐक्ट्रेस 'मैडम ओफलीगेट'से एक जगह मेरी मुलाकात हुई। यद्यपि वह स्त्री मेरी स्त्रीकी अपेक्षा अधिक सुन्दरी न थी, परन्तु उस समय मेरे ऊपर कुछ ऐसा खब्त सवार हुआ, कि उसको अधिकारमें लानेके लिये मैं एकदम व्यग्र हो उठा। अतएव मैंने उसके पास विवाहका सन्देसा भेजा और उसने भी एक गाडी, एक मकान और पांच सौ पौण्ड

बालाना लेनेके वादेपर मुझसे विवाह कर लिया। इसकी बाद बहुत दिनोंतक मेरी और उसकी खूब पटती रही, और इस बीचमें उसने तरह तरहकी फरमाइशोंसे मेरे धनका भी खूब सत्यानाश किया, यहांतक कि एक सालके भीतर मेरी सारी जमापूँजी नष्ट हो गई। उसके बाद फिर कर्जकी नौबत आई। किस्सा मुख्तसर यह है, कि दूसरे सालकी समाप्तितक मेरे ऊपर अस्सी हजार पौण्डका कर्ज हो गया, जिसमेंसे तीन हजार पौण्ड नकद लिये गये थे और दस हजार पौण्डकी तसवीरें एवं साज-सज्जाका सामान आया था। शेष दलाली और सूदका हो गया। अन्तमें जब महाजनों और सौदागरोंने मुझसे एकदिन झगड़ा किया, तब उस ऐक्ट्रेस(नायिका)ने मेरा साथ छोड़ दिया। झगड़ेके ठीक दूसरे ही दिन मैंने सुना, कि उसने एक और मुझ जैसा काठका उल्लू फांस लिया है। इधर रुपया न चुका सकनेके कारण एक महाजनने पांच हजार पौण्डकी 'अदम वसूली' में मुझे गिरफ्तार करा दिया। इस समय सब ओरसे लाचार हो, मैंने एक आदमी द्वारा उस नायिकाके पास पांच हजार पौण्ड कर्ज देनेके लिये एक विनयपत्र लिखकर भेजा; क्योंकि यह बात मुझे पहले मालूम हो गई थी, कि उसने अपने नवीन प्रेमीसे एकदिन पहले पांच हजार पौण्ड वसूल किये थे। परन्तु मेरे आदमीको देख और उस पत्रको पढ़कर वह उस आदमीका मजाक उड़ाने लगी और कहने लगी,—"जाओ मियां! अपना काम करो, यहां क्या रुपयों-की टकसाल खुली हुई है?" यह सुन आदमी चुपचाप लौट आया। अपने आदमीके मुखसे उसके इस उत्तरको सुनकर यद्यपि मुझे बहुत क्रोध हुआ था, परन्तु कर ही क्या सकता था? बस उसी दिनसे आजतक, तीन वर्ष हुए कि, मैं इस जेलखानेमें पड़ा हूँ। परन्तु कुछ परवाह नहीं। मेरा तो कौल यही है, कि—राज़ी हैं हम उसीमें जिसमें तेरी रजा हो।"

खड़े खोल डाला, तो उसमेंसे वही कम्बख्त पाकट-बुक निकलकर जमीनपर गिर पड़ी। मैंने उसे उठा लिया और जैसे ही उसको खोला, वैसे ही उसमें लेडीके बापके हाथका लिखा एक पत्र रखा हुआ दिखाई पड़ा। उस पत्रको याद आते ही अब भी मेरे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। क्योंकि उसके आनेके थोड़ी देर बाद ही दो पुलिसके सिपाहियोंने आकर मुझे गिरफ़ार कर लिया और मैं वेइज्जतीके साथ अदालतके सुपुर्द कर दिया गया। तबसे, आज चार वर्ष हुए, मैं इस पवित्र स्थानका निवासी बना हुआ हूं। कहिये, कैसी हिम्मत और होशियारीसे काम किया था?"

उस तीसरे मनुष्यका सिर हिलाकर इतना कहना था, कि उसके सब साथी खिल खिलाकर हँस पड़े और उसकी मनमानी प्रशंसा करते हुए उसे शाबाशियाँ देने लगे।

अभी उन लोगोंका हँसना पूरे तौरसे बन्द भी न हुआ था, कि चौथे मनुष्यने कहा,—"अफसोस। हमारा जमाना भी कभी ऐसा ही था। यद्यपि मेरे पिछले जीवनका ढङ्ग इतना अनूठा और काफी दिलचस्प नहीं है, तथापि उसमें मेरी मूर्खताकी तो हद है। जिस समय मैंने होश संभाला, उस समय मेरे पास अपने बुजुर्गोंका छोड़ा हुआ तीस हजार पौण्ड था। जिस स्त्रीसे मेरी शादी हुई थी, उसके पास भी पचास हजार पौण्डकी पूँजी थी। इस प्रकार दोनों मिलाकर मेरी हैसियत लगभग एक लाख पौण्डकी हो गई थी। शादीके तीन महीने बाद इङ्गलेण्डकी मशहूर ऐक्ट्रेस 'मैडम मौफ्लीगेट'से एक जगह मेरी मुलाकात हुई। यद्यपि वह स्त्री मेरी स्त्रीकी अपेक्षा अधिक सुन्दरी न थी, परन्तु उस समय मेरे ऊपर कुछ ऐसा खब्त सवार हुआ, कि उसको अधिकारमें लानेके लिये मैं एकदम व्यग्र हो उठा। अतएव मैंने उसके पास विवाहका सन्देसा भेजा और उसने भी एक गाड़ी, एक मकान और पाच सौ पौण्ड

प्रिन्स महोदयकी दिल-शिकनी करना मुझे स्वीकार न था, अतएव दो तीन मिनटके बाद खेल शुरू हो गया। यद्यपि खेलके समय मैं स्पष्ट देख रहा था, कि प्रिन्स साहब सरासर बेईमानी कर रहे हैं, परन्तु उन्हें सचेत करदेना मेरी सामर्थ्यके बाहर था। हारना तो स्वीकार किया,परन्तु उनकी दिल-शिकनी करना स्वीकार न किया। साराश यह है, कि इस प्रकारकी पाच छै दावतोंमें प्रिन्सने मुझे तबाह कर डाला और मैं आंखकी मुरव्वतमें ही रहा। आखिरी दावतमें जब प्रिन्स महोदयको यह मालूम हो गया, कि मै पैसा-पैसा हार गया हूं, तब उन्होंने मेरी तरफसे रुख बदल लिया और अपने समीप आनेतकको मना कर दिया। आखिर लाचार हो, मैंने कर्ज लेना शुरू कर दिया, जिसका नतीजा यह हुआ, कि आज चार वर्षोंसे लोग मुझे यहा देख रहे हैं। अब मैंने भी यही इरादा कर लिया है, कि चाहे जो कुछ हो, इस जेलखानेकी चहार-दीवारीके बाहर कभी कदम न रखूंगा।"

हमारे उपर्युक्त मनमौजी दोस्तोंकी जबर कही हुई दास्तानोंको सुनकर इस पुस्तकके पाठकगण यह अवश्य जान गये होंगे, कि कर्नल मलपासके साथ शराब पीनेवाले एव शेखीकी शानको एक दम लँगड़ा करदेनेवाले ये मनुष्य कौन हैं? कहां रहते हैं? एव क्या करते हैं? और यदि न समझे हों, तो हम बताये देते हैं,— ये मनुष्य उन मनुष्योंमेंसे है, जिन्होंने सब प्रकारकी आशाओंको छोड केवल जेलखानेकी चहारदीवारीके भीतर ही रहकर किसी न किसी प्रकारसे अपना जीवन बिताना स्थिर कर लिया है।

कर्नल मलपास इनकी बातोंसे एकदम उकताकार उठ खडे हुए। यह देख, वे सब भी उनसे बिदा मांग, कमरेसे बाहर चले गये। बहासे वे अपने बिस्तरेपर जाकर सो गये।

पाँचवां,—"ठीक है, पिछली बातोंको याद कर पछताना तुच्छ दिलोंका काम है। मैं तो समझता हूँ, कि हम सबके सब एक ही डालकी चिड़ियां हैं। यद्यपि अभी मेरी उम्र पूरे छब्बीस वर्षकी भी नहीं हुई, तथापि इस थोड़ीसी उम्रमें तीन बार जिन्दगीका उलटफेर हो चुका। पहले पहल मुझे अपने दादाका माल मिला था, जिसको मैंने थोड़े ही दिनोंमें शराब-खोरी और जुएकी बाजीमें धरकार फूंक दिया। इसके बाद फिर मुझे अपने चचाका माल मिला, परन्तु उसको भी मैंने उसी प्रकार फूँक डाला और फिर पहलेकी भाँति इधर उधर ठोकरें खाता फिरने लगा। अन्तमें कुछ दिनों बाद फिर तकदीरने पलटा खाया, जिसके कारण एकदम मुझे अपने पिताका सञ्चित सत्तर हजार पौण्डका माल मिल गया। यदि अब भी संभल कर चलता, तो यह माल उम्रभरके लिये काफी था। परन्तु नहीं, उसको पाकर तो मैं बिलकुल नवाब बन गया। मनमाना खाया, उड़ाया और लुटाया; जिसके कारण अन्तमें यह दर्जा पाया।"

छठवा,—"भाई! क्या पूछते हो? हमलोगोंका भाग्य ही जमानेसे निराला है। और सुनो। आज पाच वर्ष हुए, कि मुझे अपने बापका ८४ हजार पौण्डका माल मिला था, जिसका मैं ही एकमात्र स्वतन्त्र मालिक था। एक दिन मेरे कुछ फैशनेबिल दोस्तोंने अपने साथ लिवा जाकर मेरी मुलाकात प्रिन्स रीजेण्टसे करा दी। प्रिन्स रीजेण्टने यह जानकर, कि मैं इतनी बड़ी सम्पत्तिका एकमात्र स्वतन्त्र मालिक हो गया हूँ, मेरी बड़ी आव-भगत की। प्रथम साक्षात्के कुछ दिनों बाद प्रिन्स महोदयने एकदिन सायंकालके समय दावत की, जिसमें उन्होंने अपने और पाच छ साथियोंको बुलाया था। दावतके पश्चात् प्रिन्सने जुएका प्रस्ताव उठाया, जिसको कई जनोंके अनुमोदन और समर्थनके बाद सबने स्वीकार कर लिया। यद्यपि उस समय मेरी इच्छा खेलनेकी न थी, तथापि

प्रिन्स महोदयकी दिल-शिकनी करना मुझे स्वीकार न था, अतएव दो तीन मिनटके बाद खेल शुरू हो गया। यद्यपि खेलके समय मैं स्पष्ट देख रहा था, कि प्रिन्स साहब सरासर बेईमानी कर रहे हैं, परन्तु उन्हें सचेत करदेना मेरी सामर्थ्यके बाहर था। हारना तो स्वीकार किया,परन्तु उनकी दिल-शिकनी करना स्वीकार न किया। सारांश यह है, कि इस प्रकारकी पांच छै दावतोंमें प्रिन्सने मुझे तबाह कर डाला और मैं आँखकी मुरव्वतमें ही रहा। आखिरी दावतमें जब प्रिन्स महोदयको यह मालूम हो गया, कि मैं पैसा-पैसा हार गया हूं, तब उन्होंने मेरी तरफसे रुख बदल लिया और अपने समीप आनेतकको मना कर दिया। आखिर लाचार हो, मैंने कर्ज लेना शुरू कर दिया, जिसका नतीजा यह हुआ, कि आज चार वर्षोंसे लोग मुझे यहां देख रहे हैं। अब मैंने भी यही इरादा कर लिया है, कि चाहे जो कुछ हो, इस जेलखानेकी चहार-दीवारीके बाहर कभी कदम न रखूंगा।"

हमारे उपर्युक्त मनमौजी दोस्तोंकी ऊपर कही हुई दास्तानोंको सुनकर इस पुस्तकके पाठकगण यह अवश्य जान गये होंगे, कि कर्नल मलपासके साथ शराब पीनेवाले एवं शेखीकी शानको एक दम लँगड़ा करदेनेवाले ये मनुष्य कौन हैं ? कहाँ रहते हैं ? एवं क्या करते हैं ? और यदि न समझे हों, तो हम बताये देते हैं,— ये मनुष्य उन मनुष्योंमेंसे है, जिन्होंने सब प्रकारकी आशाओंको छोड़ केवल जेलखानेकी चहारदीवारीके भीतर ही रहकर किसी न किसी प्रकारसे अपना जीवन बिताना स्थिर कर लिया है।

कर्नल मलपास उनकी बातोंसे एकदम उकताकर उठ खड़े हुए। यह देख, वे सब भी उनसे बिदा मांग, कमरेसे बाहर चले गये। वहांसे वे अपने बिस्तरेपर जाकर सो गये।

यह विचार मतलबसे खाली नहीं था, क्योंकि लौफ्टसने जिन स्थानोंका इशारा किया था, वे इतनी दूर-दूर थे, कि लौरा, सिण्डन और उनके बीचमें सारे कमरेकी लम्बाईका अन्तर पड़ जाता था। अपने इसी विचारके अनुसार नवाबे अपना सारा शरीर ढककर लौफ्टस आराम कुरसीपर जा पड़ रहे। कुछ मिनटोंतक उस कमरेमें पूरा सन्नाटा छाया रहा।

अन्तमें लौराने ही वह सन्नाटा तोड़ा तथा धीमे, कांपते हुए और विलाप-भरे स्वरमें कहा,—"आज हमलोग जो काम करनेको तय्यार हैं, वह कैसा अद्भुत और दुस्साहसिक है! क्यों?"

लौराके इस कम्पित स्वर और करुणा भरे वचनका मतलब ही कुछ और था। स्त्रियोंके जब सारे हाव, भाव और कटाक्ष व्यर्थ हो जाते हैं, तब वे इसी ब्रह्मास्त्रका प्रयोग करती हैं, क्योंकि स्त्रियोंका विलाप मनुष्यके कठिनसे कठिन कलेजेको भी पार कर जाता है। यह तीर कभी खाली नहीं जाता।

सन्नाटा दूर होने और बातोंका सिलसिला नये सिरेसे जारी होनेके कारण लौफ्टस मनहीमन दुखी हुए, साथ ही उन्होंने यह भी देखा कि, उस स्त्रीकी आवाज़ पहलेसे बहुत धीमी हो गई है। एक प्रकारका विचित्र सन्देह उस नौजवानके मनमें घर करने लगा। वे सोचने लगे, कि यह आवाज़ तो मेरी पहचानी हुई सी मालूम पड़ती है,—मैंने कहीं न कहीं अवश्य ही सुनी है। इसी प्रकार सोचते विचारते हुए उन्होंने उत्तर दिया,—"सचमुच ऐसी घटनाओंका हाल तो उपन्यासोंमें ही पढ़नेमें आता है, वास्तविक संसारमें तो शायद ही दिखलाई पड़ती हैं!"

लौराने कहा,—"पर हमारे इस दुस्साहिक कार्यकी बात सुनकर दुनिया क्या कहेगी?"

इस बार लौराकी आवाज़में बनावटीपन बिलकुल नहीं था।

या तो वह जानबूझकर अपनी असली आवाज़में बोलने लग गई थी, अथवा वह आवाज़ बदलनेकी बात ही भूल गई थी; इसीसे अबके उसके कण्ठसे असली स्वर निकल पड़ा था।

जेसिलिनने कहा,—"मेरे मुँहसे दुनियाके लोगोंको कभी ऐसी बात सुनाई नहीं देगी, जो बुराई या निन्दा करानेवाली हो।" यह कहते-कहते उनका मन कुछ चञ्चल हो उठा, क्योंकि आवाज़के बारेमें उनके मनमें जो सन्देह पैदा हुआ था, वह धीरे-धीरे पक्का होता जाता था। यद्यपि उन्हें यह नहीं याद आता था, कि उन्होंने इस तरहका स्वर पहले पहल कहाँ, किसके मुँहसे, सुना था, तथापि इस विषयमें तो उन्हें निश्चय हो गया, कि यह स्त्री पहले आवाज़ बदलकर बोलती थी और अब अपनी असली आवाज़में बोल रही है।

लौराने कहा,—"नहीं मिष्टर लौफ्टस। हम लोग रातको एक जगह एक साथ रहे, इससे दुनियाको सन्देह करनेकी बहुत गुंजायश है। संसार भलाईकी ओर कम जाता है, वह हमेशा, बुराईहीकी बात टटोलता रहता है।"

यह बात कहते समय न जाने क्यों लौराका स्वर काँप रहा था। उसके मनमें चाहे तो तरह-तरहके भाव उठ रहे थे अथवा काम वासना जग पड़ी थी, क्योंकि ऐसा न होता तो उसकी आवाज़ कभी न लड़खड़ाती। उसकी इन बातोंसे बुराईकी झलक पा, कुछ नाराज होकर लौफ्टसने कहा,—"मिस लिण्डन! ऐसी बातें न करो। सो जाओ। रात बहुत गई, यदि तुम न सोओगी तो तुम्हारी तबीयत खराब हो जायगी और तब कल रातको हमें जो काम करना है, उसे पूरा करने की शक्ति न रह जायगी।"

लौराने कहा,—"इस किवाड़की सन्धसे जैसी सन-सन हवा आ रही है, उससे तो नींद आनी मुश्किल है।"

इसी समय लौरा कौचपरसे लपककर उठ खड़ी हुई और जेसिलिनके कानोंमें उसके पैरोंको आहट साफ सुनाई दी।

जेसिलिन कुरसीसे उठे और धीरे धीरे अन्धकारमें अग्रसर होते हुए बोले,—"अच्छा, लो, मैं किवाड़के दोनों पल्लोंको ऐसा बराबर किये देता हूँ, कि हवा न आयेगी।"

लौराने अपनी अप्रसन्नता मनहीमन दबाते हुए कहा, "यह असम्भव है।"

जे॰—"ज़रा मोमबत्ती जलाकर चेष्टा तो करूँ—"

लौराने हँसते हुए कहा,—"बत्ती काहेको जलाइयेगा? क्या मेरा मुँह देखनेके लिये? सचमुच मेरे चेहरेपर इस समय बुर्क़ा नहीं है।"

जेसिलिनने नाराज़ीके साथ उत्तर दिया,—"मिस लिण्डन! विश्वास रखो, मैं ऐसे कमीने खयालका आदमी नहीं हूँ, जो मेरे मनमें इस तरहका कौतूहल पैदा होवे।"

लौराने बड़े रूखे स्वरसे कहा,—"नहीं, नहीं—मैं वह बात नहीं कहती। मैं भली भांति समझती हूँ, कि आपका कलेजा मोमका नहीं, जो पिघले, वह तो बिल्कुल ठोस पत्थरका बना है। मिष्टर लौफ्टस! मैं युवती हूँ, आप भी युवक हैं। परन्तु एक सुन्दरी युवतीके साथ नवयुवकगण जिस प्रकारकी बातें करते हैं, आपने क्या उस ढंगकी एक भी बात मेरे साथ की है? मैं सच कहती हूँ, मिष्टर लौफ्टस! इससे मेरा अपमान हुआ है। समझे? अधिक क्या कहूँ, मैं आपके इस व्यवहारसे अपनेको अपमानित समझती हूँ। क्यों? बोलिये, आपने मेरी उपेक्षा की या नहीं?"

यह सुन जेसिलनने मनहीमन सोचा, "या भगवान्! यह तो पूरी राक्षसी निकली!" इसके बाद वे दृढ़ता-भरे स्वरमें बोले,—"लिण्डन! अभी थोड़ी देर पहले तुमने मुझे धन्यवाद देते हुए

कहा था, कि आपने मेरी विपत्तिमें भाईकी जो सहायता की है, इसके लिये मैं आपका उपकार मानती हूं। अब कह रही हो, कि आपके व्यवहारसे मेरा बड़ा अपमान हुआ है। यह कैसी बात है? तुमही देखो, इन दोनों बातों में कितना भेद है?"

लीराने बड़ी तत्परता और झुंझलाहटके साथ पूछा,—"अच्छा, मेरी एक बातका जवाब दीजिये। आप क्या सचमुच इस कैदखानेसे निकल भागना चाहते हैं?"

लोफ्टसने कहा,—"इसमें क्या शक है? पर इस समय यह सवाल कैसा? तुम्हारा मतलब क्या है?"

लीराने उत्तर दिया,—"मतलब यह है, कि आप बिना मेरी सहायताके यहांसे नहीं निकल सकते, परन्तु आपने जैसा व्यवहार किया है, उससे आपको मेरी सहायताकी आशा छोड़ देनी चाहिये।"

दुःखित और निराश होकर लोफ्टसने कहा, "तो क्या सचमुच मेरे व्यवहारसे तुम्हें बड़ा भारी दुःख हुआ है?"

लीरा, फिर वैसेही धीमे, गम्भीर और कांपते हुए स्वरमें कहने लगी (परन्तु लोफ्टस यह न समझ सके, कि यह स्वर असली है या बनावटी)—

"मैंने आपसे पहलेही कहा है, फिर भी कहती हूं कि यहांके अनेक बड़े बड़े अमीर-उमरा मेरे रूप-लावण्यको देखकर पागल हो गये हैं—वे दिन-रात मुझे घेरे रहते हैं। कोई तो उचित उपाय से मुझे पाना चाहते हैं और कितनेही अनुचित रूपसे मुझे हथियानेकी घातमें हैं। परन्तु मैंने जिस प्रकार दूसरे दलवालों को घृणाके साथ फटकार दिया है, उसी प्रकार पहले दलवालोंको भी निराश कर दिया है। पर मैंने ऐसा क्यों किया है, सो सुनियेगा? मैं केवल शुद्ध प्रेमकी भिखारिणी हूं। जो व्यक्ति अपने मन-प्राण देकर मुझे प्यार करेगा, हर बातमें मेरा रुख देखकर

चलेगा, जो आपसे आप मेरे हृदयपर अधिकार कर लेगा, मैं उसी· की होकर रहूँगी। ऐसेही प्रेमीकी मूर्त्ति कल्पित कर मैं मनही· मन उसकी आराधना किया करती और सोचती थी, कि शायद ऐसा सुन्दर, मनोमोहक, आनन्द-दायक व्यक्ति मुझे न मिलेगा और मेरी यह कल्पना स्वप्नकी भांति कभी सत्य न होगी। ऐसेही समय मैंने एकाएक आपको देखा। उस समय मेरे आश्चर्य और आनन्दकी सीमा न रही; क्योंकि मैंने आपमें वे सब गुण मौजूद पाये, जिन्हें मैं अपने प्रेमीमें देखना चाहती थी।"

जेफिलिनने कहा,—"मिस लिण्डन! बस। अब इस सम्बन्धमें एक वाक्य, नहीं नहीं—एक शब्द भी मत बोलो। चाहे इसे मेरी प्रार्थना समझो, अनुरोध समझो या आज्ञा समझो, किन्तु चुप हो जाओ। ऐसी बातें करनेसे मेरी आँखोंके सामने उन प्रलोभनों, बुरी वासनाओं, चालों और फरेबोंके चित्रसे खिंच जाते हैं, जिनका मैं कैद होनेके पहले शिकार हो चुका हूँ। मुझे लुभानेवाली एक नहीं, तीन थीं और वे यहाँसे क्या, पेरिससे भी बहुत दूर हैं। शायद अबतक उन्होंने मेरी आशा नहीं छोड़ी है और न जाने क्यों मेरे मनमें सन्देह हो रहा है, कि तुम उन्हींमें से एक हो। अतएव मिस लिण्डन! इस बातको छोड़ो, जिससे तुम्हारे ईमानमें बट्टा लगता है और मुझे दुःख और घृणा होती है।"

बड़ी दृढ़ता भरे स्वरमें लौराने कहा,—"मिस्टर जोपटस! मैं देखती हूँ, कि आपसे पूरी तरह समझौता किये बिना काम न चलेगा, क्योंकि मैंने जितना सोचा था, उससे भी आप अधिक कठोर हैं।"

जेफिलिनने भी वैसी ही दृढ़तासे कहा,—"अच्छी बात है, हम लोग एक दूसरेको समझ लें तो बड़ा अच्छा हो। क्योंकि इधर मैं तो समझता हूँ कि, तुम अच्छे विचारोंवाली, यद्यपि दुःखी

हो और तुम समझ रहो हो, कि मैं न तो अपने कर्त्तव्यको समझता हूं और न तुम्हारे प्रति अच्छा व्यवहार कर रहा हूं।"

तानेके साथ लौरा बोली,—"अहा! क्या कहने हैं! जरा रोशनी होती, तो मैं आपका धर्म-भावसे चमकता हुआ चेहरा तो देखती!"

लौफ्टसने घृणाके साथ कहा, "अच्छा, अपनी बातें कह सुनाओ।"

लौरा कहने लगी,—"सुनिये। मैं यहांसे भाग जानेके लिये जितनी उत्सुक हो रही हूं, उतनी ही अपनी आशा पूरी करनेके लिये भी बेचैन हूं। अब मेरा भागना इसी आशाके पूर्ण होनेपर निर्भर है। मिष्टर लौफ्टस! मैं अपनी बातकी बड़ी पक्की हूं, मुझे अपने विचारोंसे कोई हटा नहीं सकता। इसके साथ ही यह भी जान लें, कि मेरा स्वभाव उतना ही क्रोधी भी है। इसलिये यदि आप मेरे प्यारके बदलेमें मुझे भी प्यार करेंगे, तब तो ठीक है, नहीं तो मैं आपको कट्टर दुश्मन हो जाऊंगी।"

बड़ी घृणा और नाराजोके साथ लौफ्टसने कहा,—"मिस लिण्डन! तुम मुझे ऐसी बातें कहनेके लिये मजबूर कर रही हो, जिन्हें कहकर मैं बहुत पछताऊंगा।"

लौरा,—"मिष्टर लौफ्टस! यदि आप मुझसे लड़ मरनेको तय्यार हैं, तो अच्छा, वही सही। मैं भी तय्यार हूं। जन्म भर मेरी आपकी शत्रुता बनी रहे, यह भी मुझे स्वीकार है। पर निश्चय जान लें, मैं आपका सत्यानाश कर डालूंगी—इसमें चाहे मेरे प्राण भी चले जायँ। लीजिये, मैं कलही पुलिसवालों को इस बातका पता दे दूंगी, कि आप यहांसे निकल भागनेके लिये—"

बात काटकर लौफ्टसने कहा,—"मूर्ख औरत! इससे तुम अपने पैरों में आप कुल्हाड़ी मारोगी। तुम्हें किसी औरही काल कोठरी की सजा भुगतना पड़ेगी।"

लौरा,—"इसमें हर्ज ही क्या है? मेरे मनमें बदला लेनेकी जो इच्छा पैदा हो गयी है, वह तो पूरी होगी? मैं सजासे नहीं डरती। मैं आपसे ठीक ठीक कहती हूं, कि मैं आपको चाहती हूं—जन्मभरके लिये न सही, सप्ताहभरके लिये, एक दिनके लिये न सही, एक ही घण्टेके लिये—आप मेरी प्रार्थना स्वीकार कर लें, मेरे दिलकी लगी बुझायें। इतने कठोर हृदय न बनें। याद रखें, मैं सुन्दरी—परम सुन्दरी हूं और यहां तीसरा कोई देखनेवाला भी नहीं है। यदि घण्टे भर हमलोग यहा सुख लूटें, तो संसारको इसका क्या पता लगेगा?"

लौराकी यह बात सुनते ही लोफटस क्रोधसे अपने आपको भूल गये, बोले,—"मायाविनी! तू कौन है, जो मुझे इतना लुभा रही है? तेरी आवाज मेरी पहचानी हुई सी मालूम पड़ती है। अवश्य मैंने तेरी बोली कहीं सुनी है—"

लौरा चिल्लाकर कहने लगी,—"हां, और मैं भी तुझे जानती हूं। जितना तू समझता है, उससे अधिक जानती हूं। और मैं तेरे कानमें एक नाम कहना चाहती हूं, जिसे सुनते ही तू सब समझ जायगा।"

अधिक उत्तेजित होकर युवा वीरने कहा, "तो बतला, तू कौन है? इस सारी घटनामें इतना रहस्य, ऐसी विचित्रता भरी हुई है, कि—"

लौरा,—"अच्छा, तो मुझे एक बात कानमें कहने दो, तब तुम समझ जाओगे, कि मैं तुम्हारा सारा कच्चा चिट्ठा जानती हूं।"

लेसिलिनने देखा, कि उसी अन्धकारमें लौरा धीरे-धीरे उनकी ओर अग्रसर हो रही है। यह देख वे डरसे चिल्लाकर बोले,—"नहीं, मिस लिण्डन! कानमें नहीं। तुम्हें जो कुछ कहना हो, जोरसे कहो।"

घृणाके साथ लोराने कहा, "क्या मुझसे डर लगता है ? वाहरे धर्मभाव ! ऐसा पाखण्ड मैंने और कभी नहीं देखा। परम सुन्दरी लुइसा हेनली भी शायद अपने प्रेमीको ऐसा अलौकिक महात्मा नहीं समझती होगी।" इतना कहते-कहते उसने उस स्त्रीके नाम पर बड़ा जोर दिया, जिसे सुन कर जेसिलिन चौंक पड़े और बोले,—"तुमने अभी जिस युवतीका नाम लिया है, उसीका अनुकरण यदि तुम भी करतीं तो क्या ही अच्छा होता। मैं तुमसे प्रार्थना करता हूं, तुम्हारे पांवों पड़ता हूं, इस तरह की बातें न करो, जो कि जितनी ही बुरी उतनी ही दुःख देनेवाली हैं; जितनी ही हंसी पैदा करनेवाली है, उतनी ही आत्माको नीचे गिरा देनेवाली हैं।"

एक मिनटतक दोनों चुप रहे। इसके बाद उस युवतीकी बातें जेसिलिनके कानोंमें फिर गूंजने लगीं, उसने कहा—"प्यारे ! मैं तुम्हारे ऊपर मर रही हूं, मैं तुम्हें जीसे प्यार करती हूं। मुझे अधिक न सताओ।"

इसके एक ही क्षण बाद सांप जैसे अन्धेरे में अपने शिकारको धीरे-धीरे जकड़ लेता है, उसी तरह जेसिलिन जबतक दो कदम पीछे हटें, तबतक उनकी रात्रि-सहचरीने उन्हें अपनी छातीसे लगा लिया। उसकी बाहें उनके गलेमें पड़ गईं, ओठ उनके ओठोंसे जा मिले और उस शीतल स्पर्शसे उनके अङ्ग-अङ्ग ऐसे सिहर उठे, कि उस वासनासे अपने मनको अलग रखना असम्भव हो गया। परन्तु उनकी बुद्धिने उन्हें सहारा दिया और वे तुरत ही अपनेको उस गाढ़ आलिङ्गनसे छुड़ानेकी चेष्टा करने लगे। उन्होंने बलका प्रयोग किया, परन्तु वह भी जान लड़ाकर उन्हें पकड़ी रही।

तब जेसिलिनने कहा,—"मिस लिण्डन ! सम्हल जाओ, नहीं तो मैं तुम्हारा बहुत अनिष्ट कर डालूंगा।"

"एक स्त्रीका और क्या अनिष्ट कर सकते हो ?" यह कहते हुए

उसने उनके गालोंको बार-बार चूमना आरम्भ कर दिया—उस समय उसके हृदयमें कामकी ऐसी ज्वाला भड़क रही थी, जिसे वह किसी तरह रोक नहीं सकती थी।

जैसिसिमने चिल्लाकर कहा,—"बस, अब बर्दाश्तके बाहर है! निर्लज्ज, बेहया, बेशर्म कहींकी!!"

अपनी जीतपर खुश होती हुई लौरा बोली,—"हो, जितनी चाहो गालियाँ दो, पर मैं या तो प्राण दे दूंगी या तुमसे मनचाही इच्छा पूरी कराकर ही छोड़ूंगी।"

अपनी गर्दनसे उसकी बाहें हटाकर, दोनों हाथोंसे उसके हाथ पकड़े हुए लोफ्टसने कहा,—"तुम मुझे जबरदस्ती अख्तियार करनेको मजबूर कर रही हो।"

लौराने उन्हें फिरसे जकड़ लेनेकी बड़ी चेष्टा की और उसकी कुपिता सिंहिनीकी सी फुफकार भी जैसिसिनके कानोंमें पड़ी, परन्तु वह किसी तरह पार नहीं पा सकी। उन्होंने उसपर ऐसी कोई जबरदस्ती नहीं की, केवल उतनाही बल प्रयोग किया, जितनेकी आवश्यकता थी और अपनेको उस पापिनीके पञ्जेसे छुड़ा लिया। परन्तु वह लपझप करनेसे बाज नहीं आई और उस अन्धकारमें इस पर पकड़में एक बार ठोकर खाकर वह गिर पड़ी और बेहोश हो गई। इसमें बेचारे लोफ्टसका कोई कुसूर न था।

कुछ क्षणतक लोफ्टस, जिन्हें आजकी इस दुर्घटनापर बड़ा खेद हो रहा था, यही सोचते रहे, कि उसका गिरकर बेहोश हो जाना बिल्कुल बनावटी है, कोरी मक्खरेबाजी है, परन्तु जब वह बड़ी देरतक वैसी ही बिना हिले डुले पड़ी रही तब वे नीचे झुककर उसे देखने और धीरे-धीरे उसके ललाटपर हाथ फेरने लगे। छूते ही उन्हें मालूम हुआ, कि उसका ललाट ठण्डा हो रहा है, पसीना चुचुआ रहा है। मनहीमन डरते हुए उन्होंने उसके हृदय

पर हाथ रखकर देखा, कि यद्यपि वह धड़क रहा है, तथापि धड़कन बड़ी धीमी और कमजोर है। अब तो उनके चेहरेका रंग उड़ गया और उन्हें इस बातका भय होने लगा, कि कहीं यह मर तो न जायगी? कुछ देरके लिये वे-बिल्कुल अज्ञानसे हो गये। क्या करें, क्या न करें—कुछ भी समझ न सके।

एकाएक उनके जीमें आया, कि ऐसी अवस्थामें अन्धकार रहना अच्छा नहीं, अतएव उन्होंने झटपट दियासलाई लेकर एक मोम-बत्ती जलाई और उस सुन्दरीके पास पहुँचे। ज्योंही वह रोशनी उसके मुखड़ेपर पड़ी त्योंही उनके मुँहसे एक चीख निकल पड़ी। उन्होंने जो कुछ सन्देह किया था, उसे यों एकाएक निश्चयके रूपमें बदलते देख, उनके आश्चर्यका कोई ठिकाना न रहा।

उनके मुँहसे चीख निकलते ही उस रमणीने आँखें खोल दीं और उनकी ओर देखने लगी। उसके मुंहसे भी निराशा, क्रोध और भयसे मिली हुई एक चीत्कारध्वनि निकल पड़ी। उसने देखा, कि समयसे पहले ही पहचानी जानेके कारण उसकी आशा चूर-चूर हो गई है। इस प्रकार घटनावश जेथिलिन लौफ्टसने लौरा लिण्डन बनकर आई हुई जूलिया उवेनको पहचान लिया।

उनहत्तरवाँ परिच्छेद।

अफसर और उनके मिहमान।

पाठकोंको यह बतला देना आवश्यक है, कि इसी प्रसिद्ध रात्रिको, जब कि जेथिलिन लौफ्टस और लौरा लिण्डन उर्फ जूलिया उवेनकी मुलाकात हो गई थी, पुलिसके बड़े अफसर साहब अपने मकानके सजे-सजाये बैठकखानेमें अपने कुछ खास चुने हुए दोस्तोंकी खातिर तवाजो कर रहे थे।

अफसर अपने अफसराना वेशमें थे, क्योंकि, सरकारी उहदेदार-को हैसियतसे वे कानून बनानेवाली कौन्सिलकी बैठकमें शामिल होकर आये थे। इस जलसेमें जो भलेमानस शरीक होनेके लिये आये थे, उनमें उनके दो खास सेक्रेटरी, राजकीय अन्तःपुर विभाग-के उपमन्त्री और तीन छैलछबीले ठाटदार आदमी थे, जो न तो किसी इज्जतके उहदेपर थे और न उनकी आमदनीका ऐसा कोई जरिया नजर आता था, परन्तु रहते थे बड़ी नफासतके साथ और फ्रांसकी राजधानीमें बड़े ही प्रसिद्ध हो रहे थे। साफ बात तो यह है, कि वे तीनों आदमी पुलिसके गोइन्दे थे और पुलिस-विभाग उन्हें चुपचाप तनख्वाह देकर पालता था।

यह कहना व्यर्थ है, कि जलसेमें जितने लोग मौजूद थे, वे सबके सब फ्रेंच थे और अङ्गरेज लोग खाना खाते समय जिस तरह गप्पें लड़ाया करते हैं, उस तरह ये खाते खाते बातें भी नहीं करते थे। अफसरके बावर्चीने ऐसी बढ़िया चीजें खानेको बनाई थीं, कि लोग खाखाकर प्रसन्न हो गये और उसकी होशियारीकी तारीफ करने लगे। खूब अच्छी सी शराब मंगवाई गई थी और उदारताके साथ हाथोंहाथ बाटी जारही थी। अपनी अपनी सुन्दर प्रेमिकाओंके नामपर उन्होंने जा भरकर प्यालेपर प्याले पिये। ग्यारह बजनेके पहले यह जलसा शुरू हुआ था और खतम होते-होते रात आधीसे अधिक चली गई।

इसी समय पुलिस अफसर और उनके दोस्त एक पासके कमरेमें चले गये, जहां और भी अच्छी शराब, काफी और कहवी 'पञ्च'का प्रबन्ध किया गया था।

अन्तःपुर-विभागके उपमन्त्रीने पुलिसके अधिकारीसे कहा,— "मेरे प्यारे मित्र! तुमने तो आज रातको उस परम धनी, मार्क्विस आफ लेवेसमको ले आनेके लिये कहा था, पर वे कहां आये?"

गया और पुलिस आफिसको 'काली बही' में सारा हाल दर्ज हो गया। सचमुच यहांकी पुलिस भी गजबकी है।"

पुलिसके अधिकारीने कहा,—"परन्तु इस झमेलेमें मुझे जेमिलिन लौफ्टसके पीछे पड़नेकी कोई गरज नहीं थी, यदि कुछ लोग इङ्गलैण्डसे हमारी सरकारको उस विषयमें नहीं लिखते। मेरे प्यारे मित्रो। तुम लोगोंको इस बातको याद दिलाना फिजूल है कि गत अप्रैल महीनेमें, जब कि फ्रांसकी गद्दीपर बादशाह अठारहवें लुई बैठे थे, उस समय इङ्गलैण्डके युवराजसे उनकी एक गुप्त सन्धि हुई थी, जिसमें यह शर्त्त रखी गई थी, कि आजसे वे दोनों परस्पर एक दूसरेके कहे अनुसार चलें और एक दूसरेके उद्देश्यों, कामनाओं और अभिलाषोंकी पूर्त्ति करनेका प्रयत्न करेंगे। इस लिये यह तो निश्चित ही था, कि अपनी स्त्रीके सम्बन्धमें इङ्गलैण्डके युवराज जो कुछ करना चाहते, उसमें अठारहवें लुईकी सरकारका हाथ अवश्य ही रहता। अतएव जिस समय जेमिलिनने अपना इरादा उन तीनों मित्रोंपर जाहिर कर दिया, तब उन तीनोंमें इस विषयमें इङ्गलैण्डको चिट्ठी डाल दी, जिसका नतीजा यह हुआ, कि वहांसे हमारे बादशाहके पास चिट्ठी आई कि, जेमिलिन लौफ्टस नामका आदमी गिरफ्तार कर लिया जाय और किसी महफूज जगहमें रख छोड़ा जाय। यह भार मेरे ऊपर रखा गया और मैं उसपर निगाह रखने लगा। इधर मैंने यह भी देखा, कि वह दूसरेके नामका झूठा पासपोर्ट लेकर आया है।"

जलस मार्टिगनेकने कहा,—"और पुलिसने म्यूरिस होटलमें पहुंचकर उस अङ्गरेजके तमाम कागजपत्र जब्त कर लिये। क्यों? मैंने तो ऐसाही कुछ सुना था।"

अफसरने कहा,—"हां, उसकी तमाम चिट्ठी-पत्री उससे छीनकर यहां लाई गई थी, पर वे चिट्ठियां कुछ कामकी न निकलीं,

क्योंकि उनमें केवल इतना ही पता चलता था, कि मिष्टर लौफ्टसकी शादी कैण्टरबरीकी लुइसा हैनलीके साथ होनी निश्चित हो चुकी है।"

जूल्स चिल्ला उठे,—"अहा! केण्ट-प्रदेशका वह प्रधान नगर केण्टरबरी भी कैसी अच्छी जगह है! मैं इङ्गलैण्ड हो आया हूं, यह तो तुम्हें मालूम ही है? मैं कैण्टरबरीमें भी दो-चार दिन रहा था। वहांका गिरजाघर बड़ा सुन्दर है। हां, तो और कहो, उन चिट्ठियों और कागजोंमें और क्या-क्या बातें थीं?"

अफ०,—"यही, कि उन तीनों औरतोंमें, जिनका अभी हमलोग जिक्र कर रहे थे, एकका नाम मिस मेरी उवेन है——"

जू०,—"कहो, कहो, मेरी उवेनका क्या हुआ?"

अफ०,—"वह अपनी मां और बहिनोंको छोड़कर चुपचाप भाग आई और इत्तिफाकसे उसी कैण्टरबरीकी मिस लुइसा हैनलीकी शरणमें चली आई। उन चिट्ठियोंसे तो इतनाही हाल मालूम होता है। परन्तु मैंने यह समझकर, कि ये खत और कागजात कुछ कामके नहीं हैं,—इङ्गलैण्डके माननीय युवराज साहबके पास भेज दिये।"

जू०,—"और वे तीनों मिसें क्या इटली चली गईं?"

अफ०,—"हो तो रवानः हो चुकी हैं और शायद अबतक प्रिन्स आफ वेल्सकी पत्नीके पास पहुँच भी गई होंगी। उन्हें पहुँचानेके लिये मिसेस रेष्ठर नामकी एक औरत साथ-साथ गई है।"

अफसर के प्राइवेट सेक्रेटरियोंमेंसे एकने कहा,—"परन्तु आपको यह तो याद होगा, कि इंग्लैण्ड से खबर आनेपर भी, लौफ्टसको गिरफ़ार करनेके पहले उन तीनों बहनोंको कुछ दिनोंके लिये पेरिसमें रोक रखना अच्छा समझा गया था, जिसमें इंग्लैण्डसे और कोई नया हुक्म उन चिट्ठियों आदिके पहुचनेपर आये, तो उसके अनुसार कार्य किया जा सके।"

आई है, देखकर मेरी तो सच्ची और ईमानसे पाक राय यह है, कि अंगरेज़ों के बड़े-बड़े राजा-महाराजों, नवाबों और बड़े आदमियोंमें जितने नीच, दुश्चरित्र, व्यभिचारी और अधर्मी हैं, उतने और कहीं नहीं।"

लूस मार्टिंगनेकको चरित्रके विषयमें व्याख्यान सुनना पसन्द नहीं था, अतएव उन्होंने कहा,—"यार! इस जूलिया और जेक्लिन लीफ़ूसमें भी कुछ ऐसा ही गोलमाल है क्या?"

अफ़,—"सो आप जानें। मुझे तो ऐसा मालूम होता है, कि यह भलामानस चालचलनका बड़ा पक्का है और अपने धार्मिक गुणोंके कारण उस समाजका भूषण कहा जा सकता है, जिसमें चरित्रहीनताका बाज़ार गरम है। परन्तु इसी हठ धार्मिकताके कारण वह बहुतोंकी आँखोंका काँटा हो गया है। जब मारक्विस लेविसन यहाँ आये, तब मिसेस रेव्ज़रने यह कहकर उनका कान भरा, कि ये तीनों बहनें उस नौजवानपर बेतरह मर रही हैं; किन्तु अगेथा और एम्मा अपनी कोशिशोंमें कारगर नहीं हुईं। उसके पत्थरसे कलेजेको मोम न बना सकीं। मारक्विसको मिसेस रेव्ज़र की इस बातसे बड़ी उत्कण्ठा पैदा हुई और उन्होंने एक-एक करके उन तीनोंको बुलाकर पूछा, जिसके जवाबमें दोने तो अपने उन सारे फन्दफेरों और चक्रोंकी बात क़बूल कर ली, जो उन्होंने अपनी काम-वासनाके लक्ष्यको हाथमें करनेके लिये काममें लाये थे। किन्तु तीसरी जूलियाने कहा, कि मुझे अभीतक अपनी ख़ूबसूरती, हाव, भाव, कटाक्ष और नाज़ोअदाके असरका इम्तिहान लेनेका मौक़ा नहीं मिला है, परन्तु मिलतेही मैं अपने इन हथियारोंको उसपर चलाकर देखूँगी, कि वह मेरे दाममें फँसता है, कि नहीं। यह सुनतेही मारक्विसने तर्कीब सोचली और वे उसे काममें लानेका विचार करने लगे। बस उन्होंने दोनों बड़ी बहनों-

को तो इटलीकी ओर रवाना कर दिया और मुझसे आकर कहा, "कि जूलियाको छिपाकर लौफटसकी बगलवाली कोठरीमें रख छोड़िये तो बड़ा अच्छा हो। मुझे पहले पहल तो उनको यह बात बड़ी चक्करदार मालूम हुई, पर पीछे उनसे सारा हाल मालूम करनेपर मैं राजी हो गया। उन्होंने कहा, 'यह बहुत जरूरी बात है, कि इस नौजवानकी असलियतकी परीक्षा ली जाय, क्योंकि इसे जाने बिना यदि हमलोग इसे छोड़ देंगे तो अपनी धार्मिकता की धुनमें यह दुनियाँ भरमें प्रिन्सेस आफ वेल्सके विषयमें बड़ी बुराई फैला देगा। पर दरअसलमें यह कितने पानीमें है, यह जान लेना बहुत आवश्यक है।' मुझे मारक्विसकी यह बात पसन्द आ गई। जेसिविनको इस सम्बन्धमें बहुतसी बातें मालूम थीं और उसका मुँह बन्द करनेके लिये दो ही तरीके थे—या तो उसे सदा कैदमें रखना या उसे इस धर्मके ऊँचे सिंहासनपरसे गिराना। परन्तु उसे बहुत दिनोंतक कैदमें डाले रहनेसे बड़ी बदनामी फैलेगी—सम्भव है, कानूनी सभाका कोई मेम्बर कौन्सिलमें इसका सवाल पेशकर दे; फिर तो सरकारके दुश्मनोंकी बन आयेगी। अतएव इस नौजवानको उन फन्दोंमें डालना चाहिये, जिनमें वह अगर सतर्क रहकर न पड़ सका तो कैदमें अवश्यही पड़ जायगा। मारक्विसने और भी कहा, कि यह वह साँप है, जिसका जहरीला दाँत 'धर्म' है। इसका यह दाँत तोड़ दिया जाय, बस यह बेकार हो जायगा। फिर तो आज वह जिस तरह हमलोगोंको धमका रहा है, कल हमलोग भी उसे वैसी ही धमकी दे सकेंगे। मारक्विसकी दलीलें इतनी ही थीं। मैं उसकी बातपर राजी हो गया और उसकी मदद करनेको तैयार हुआ। उसे धर्मके ऊँचे शिखरसे गिरानेके लिये जूलियाकोही जरिया बनाया गया। यह सँपेरी उस साँपको अपने मन्त्र बलसे वशीभूत करनेके लिये उसकी

कोठरीको बगलमें ही रखी गई। इस औरतने भी अपने इसकी तैयारी पूरी तरहसे कर ली। उसने सोचा, कि एकाएक उसके जैसा उन्नत विचारों वाला आदमी कामके फन्देमें न फंसेगा, अत एव उसने पहले उसको और तरीकेसे अपने ऊपर अनुरक्त करनेका विचार किया। उसने सोचा, कि अगर मैं एक वीर रमणी बन कर उसकी प्रशंसाकी पात्री हो जाऊं, उसका मन अपनी ओर फेरकर विश्वास पैदा कर दूं और अपनी असलियतको तबतक छिपाये रहूं, जबतक काम न बन जाय, तो मेरा मतलब सिद्ध हो जायगा। जो बुढिया पहरेदारिन कैदियोंकी सेवा-सहायताके लिये रखी जाती है, वह मेलमें लाई गई। उससे मैंने कह दिया, कि वह जूलियाको हर तरहकी मदद दे। कहने का मतलब यह, कि जूलिया ने जो कुछ चाहा, सब सुभीते उसके लिये कर दिये गये। उसे तरह-तरह के हथियार भी दिये गये। उसने पक्का इरादा कर लिया, कि वह उन्हें यह चकमा देगी, कि मैं तुम्हें इस कैद खानेसे बाहर निकाल दूंगी और आप भी निकल भागूंगी। मैं भी तुम्हारी ही तरह कैदके दुःख भोग रही हूँ।"

जूलस०,—"ऐसी बात है? पर कहीं बुरी तरह पहचान न ली जाय! उसके मन में पूरा विश्वास पैदा किये विना उसका भेद खुल जाय तो बड़ा बुरा हो।"

अफ—"अजी! एक एक बात खूब अच्छी तरह तौल ली गई है, जिसमें भण्डा आसानीसे फूट न जाय। इसीलिये जूलियाने एक काले बुर्के से अपना मुँह छिपा लिया और लौरा लिण्डन बन गई। कहो, कैसा प्यारा नाम है! तरकीब बड़ी पक्की सोची गई। कल्पना करो, आधी रातके समय एक कैदीके कमरे में एक नौजवान औरत दीवार तोड़कर आती है और अपनी कैदकी विचित्र कहानी सुनाती है तथा निकल भागनेका इरादा जाहिर करते हुए उसे भी

छुड़ानेका मन्सूबा करती है। ऐसी हालतमें उस नौजवान कैदीके दिलकी क्या हालत होगी, तुम्हीं सोचो। क्यों न उसका कलेजा पिघल उठेगा? और जूल्स! मैं तुम्हें यह बतला देना चाहता हूँ, कि आजहीकी रातको यह नाटक खेला भी जानेवाला है। आजही जूलिया ववेन और जेसिलिन लौफस की मुलाकात होने वाली है। एक बज रहा है, अतएव बहुत सम्भव है, कि उनकी मुठभेड़ हो चुकी हो।"

जूल्स०,—"पर वे कहीं एक हो साथ उड़नछू तो न हो जायेंगे?"

अफ०—"आप क्या मुझे कोरा पागलही समझते हैं? जबतक जेसिलिन अपने धर्मपर आरूढ़ रहेगा, तबतक वह यहीं पड़ा रहेगा और अगर वह जूलिया कामिनी के फन्दे में आ फँसेगा तो अपनी राह जाने के लिये छोड़ दिया जायगा, क्योंकि फिर तो अपने पौबारह हैं।"

जूल्स०,—(इस किस्से को सुनकर खुश होता हुआ),—"निकल भागनेकी यह बनावटी कोशिश कहीं असली सूरत न अख्तियार कर ले, इसका आपने क्या उपाय किया है?"

अफ०,—"जो कारखाई की गई है, यह बिल्कुल सोची, समझी और हर तरहसे चुस्त-दुरुस्त है। इस जञ्जीरकी एक भी कड़ी कमजोर नहीं है। मैंने हुक्म देरखा है, कि तमामकी रोशनी बुझा दी जाय। इसका नतीजा यह होगा, कि वे दोनों अंधेरेमें अकेले पड़ जायँगे और लौरा लिण्डन बनी हुई जूलिया अपनी नाजोअदा और ऐयाश तबीयतके झटके छोड़कर उसको अपने काबूमें कर लेगी। इन्सानके लिये इतना प्रलोभन बहुत है। अगर वह देवता या मनुष्यसे नीचे दर्जेका कोई प्राणी हो तभी बच सकता है, नहीं तो नहीं।"

जूलस०,—"मेरा भी तो ऐसाही खयाल है। और जहांतक आपके कहने से मालूम होता है, अगर वह आजकी रात बीतते बीतते या पहले उसके चक्कर में आ जाय तो—"

अफ०,—(बात काटकर) "अजी! एक बार जहाँ वह जूलिया उवेनके फन्देमें फँसा, कि फिर अपना सिर ऊँचा न उठा सकेगा। उसके धर्मकी ध्वजा गिर जायेगी। उसकी अपनी ही आत्मा उसे धिक्कारेगी और वह अपने आपको घृणित, लज्जित और अपवित्र देखेगा। फिर या तो वह अपना काला मुँह छिपाता फिरेगा या जूलियाका दामन पकड़कर सारी झंझटोंसे छुट कारा पा लेगा। यह दूसरी ही बात जियादा मुमकिन मालूम होती है; क्योंकि ऐसी नाजनी पाकर वह लुइसा स्टेनलीको भूल जायगा और युवराजके कार्योंमें बाधा देनेका विचार भी त्याग देगा।"

जूलस०,—"पर इस शादीमें कुछ बाधा मालूम पड़ती है।"

अफ०,—"हां, मुझे भी तो यही मालूम पड़ता है, किन्तु इन मित्रोंके कार्य्यमें वह बाधा न डालने पावे और सदाके लिये उसका मुँह बन्द हो और हाथ-पैर बँध जायँ, इसके आगे वह बाधा कोई चीज नहीं है।"

अफसरने अपनी बात पूरी भी नहीं की थी, कि उनका एक नौकर उस कमरेमें आकर उनके कानमें कोई बात कहने लगा।

नौकरके चले जानेपर अफसरने कहा,—"अच्छा, मेरे प्यारे मित्रो! वही हुआ, जो मेरा अनुमान था। पहरेदारने खबर भिजवाई है, कि उसने लोफ़सकी खिड़कीकी देखभाल करते हुए देखा है और जिस समय वह रोशनी बुझानेकी आज्ञा देने गया था, उस समय उसने उसके कमरेकी सामनेवाली दीवारपर एक औरत-की परछाईं पड़ते भी देखी है।"

जूलस०,—"बड़ा भाग्यवान् है। देखा चाहिये, वह इस मौक़ेसे

कहांतक फायदा उठाता है। सुखका राज्य इस समय उस वाक्यक-को पहुँचके भीतर है।"

इसी समय फिर दरवाजा खुला और मारक्विस लेवेसन कामरेके अन्दर दाखिल हुए। वे इस समय सन्ध्याकी पूरी पोशाकें पहने हुए थे, क्योंकि वे ठेठ ब्रिटिश राजदूतके घरसे चले आ रहे थे। आपसमें सलाम-बन्दगी और पुलिसके अधिकारीके मिहमानोंके साथ उस बड़े जमीन्दारकी जान-पहचान हो जानेपर वे पुलिसके अफसरको और इस दृष्टिसे देखने लगे, जिससे जाहिर होता था, कि वे यह जानना चाहते है, कि जिस मामलेके साथ उनका घना सम्बन्ध है, उसके विषयमें पुलिसका यह बड़ा अफसर क्या कहता है।

अफ०,—"जनाब! ये सब लोग मेरे मित्र हैं और चूंकि सब-का ही सम्बन्ध शासन विभागसे है, अतएव हमलोगोंमें कोई लुकाव-छिपाव नहीं है। यहांकी तमाम बातें मेरे दोनों हो प्राइवेट सेक्रेटरी जानते हैं, इसमें तो कोई कहना नहीं है और वे तीनों सज्जन (उन लेडियोंकी ओर उङ्गलीका इशारा करते हुए) पुलिस-विभागके बड़े विश्वासपात्र और भेदकी बातें मालूम करनेपर मुकर्रर है, और ये हजरत (जूल्स मार्टिगनेकको बतलाते हुए) होमडिपार्टमेण्टके अफसरों हैं और पुलिसको कोई भी बारोकसे बारीक बात आपसे छिपी नहीं है। और यद्यपि ये सब मित्र आपके पेरिसमें आनेके असली मतलब और उन तीनों लेडियोंके मकसदके बारेमें कुछ जान गये हैं, तथापि वह भेद सबके पेटमें वैसा ही दबा है, जैसा आप अपने मनमें छिपाये हुए हैं। क्योंकि इस राजधानीकी पुलिसके सब आदमी एक ही आंखसे देखते, एक कानसे सुनते, एक ही मुंहसे बोलते और एक ही दिमागसे चलते हैं। यद्यपि इसमें बहुतेरे आदमी काम करते हैं, परन्तु आपसमें एक दूसरेसे ऐसे घुलमिले हुए हैं, कि एक हो

मालूम पड़ते हैं, अतएव कोई किसीके छिपे रहस्य दूसरोंपर हरगिज जाहिर नहीं कर सकता ।"

लार्ड लेवेसन०,—"आपके इन विश्वासके वचनों और व्याख्याओंसे मैं बडा ही प्रसन्न हुआ और मुझे अपना भेद खुल जानेका तनिक भी भय नहीं है। (जरा मुस्कराते हुए) और चूँकि हम सब एक ही थैलीके चट्टेबट्टे हो चुके, तब आओ, खुले आम उस बारेमें बातें होने दो ।"

अफ०,—"हां, बेखौफ । अच्छा, तो सुनिये । अभी थोड़ी देर पहले मेरे पास जो खबर पहुंची है, उससे मुझे मालूम हुआ है, कि आपकी सोची हुई तर्कीब उस दर्जेतक पहुंच गयी है, जहांपर या तो वह कारगर हो जायगी या एक-बारगी चकनाचूर हो जायगी।"

लार्ड०,—(खुशीसे फूलकर) "तो क्या सचमुच जूलिया इवेन इस वक्त उस कैदीके पास होगी ? बडी अच्छी बात है—खासकर इस-लिये कि मैं अपने साथ एक———"

अफ०,—(लार्ड लेवेसनके अन्तिम वाक्योंकी ओर ध्यान न दे, उनकी बात काटते हुए) "क्या मैंने हुजूरसे आज सुबहमें ही यह बात नहीं कह दी थी, कि आजकी रात सब ठीक हो जायगा ?"

लार्ड०,—"और आपके वचनोंपर विश्वास करके ही अपने साथ मैं एक ऐसी तमाशबीनको लाया हूं, जो अपने प्यारे हृदयेश्वरको एक तुच्छ कामिनी—विलासिनी जूलियाकी गोदमें पडा हुआ देखेगी ।"

अफ०,—"ओह ! तो क्या आप अपनी बातोंके जोरसे लुइसा इंगलीको अपने प्रेमीका व्यभिचार आंखों दिखानेके लिये पेरिस-तक घसीट लाये हैं ? ओहो ! आप तो बड़ी दूरतककी सोचे हुए थे । गोया आपको यह पक्का विश्वास हो गया था, कि आप उसे उसके प्रेमीकी ऐसी बेवफाई जरूर दिखा सकेंगे ।"

लार्ड०,—(एक मतलब भरी निगाहसे देखते हुए) "भई! यह मौका मेरे लिये बड़ा ही कीमती था, इसीलिये मैंने इसका पूरा-पूरा फायदा उठाना चाहा और एक ढेलेमें दो शिकार करनेका इरादा किया।"

मुलुस०,—"भाई! आप भी बड़े फितना निकले! इस कूट-नीतिका क्या कहना है? अगर यह चल गई, तो लुइसा हैनली और जेसिलिनका ब्याह कट जायगा। यह लुइसा भी, सुननेमें आया है, कि बड़ी ही खूबसूरत है। इसलिये आपकी बड़ी मिहरबानी हो, अगर मेरा उसका मेल मिला दें, क्योंकि मैं एक अङ्गरेज औरतसे शादी करके बहुत ही खुश होऊंगा।"

लार्ड०,—(हंसते हुए) "मुझे शोक है, कि मैं आपका यह अरमान नहीं पूरा कर सकूंगा; क्योंकि वह ऐसी अप्सराके समान परम सुन्दरी है, कि मैं खुद ही अपनी किस्मत आजमाना चाहता हूं।"

अफ०,—"वह है कहां?"

लार्ड०,—"राजदूतके घरसे लौटते समय मैं एक गाड़ीमें सवार होकर उस होटलमें पहुंचा, जहां वह ठहरी हुई थी और उसे अपने साथ यहांतक लेता आया हूं। वह उधरवाले कमरेमें है—"

अफ०,—"और केथराइनवारोमें जो मेरी उसेन उसके साथ रहती थी, वह कहां गई? क्या वह भी आई है?"

लार्ड०,—"नहीं, वह वहीं है। क्योंकि लुइसाकी बुआ बीमार है। इसकी गैरहाजिरीमें उस बुढ़ियाकी कौन देखभाल करता? मेरीसे किसी तरहका खुटका नहीं है, पर जरा चलकर जेसि-लिनके कमरेकी कैफियत तो देखनी चाहिये।" यह कहते कहते उन्होंने देखा, कि अफसर अपनी जगहसे उठ खड़े हुए।

अफ०,—"जैसी आपकी मरजी! मैं आपके कहनेसे बाहर

नहीं हूं। मेरे मित्रो! आपलोग यहीं रहें, क्योंकि इतने आदमियोंका जाना ठीक नहीं।"

यह कह अफसर लार्ड लेवेसनके साथ उस कमरेमें आया, जहां लुइसा ष्टेनली बैठी हुई थी। उसके बदनपर एक बड़ासा लबादा पड़ा हुआ था और सिरपर स्विटजरलैण्डकी बनी हुई टोपी धरी थी। पहली ही निगाहमें अफसर रूपकी उस विचित्र छटाको देख हैरतमें आ गया। यद्यपि उसके ऊपर चिन्ता और उद्वेगकी छाप पड़ी हुई थी, तो भी वह मुखड़ा सुन्दरताकी खान मालूम पड़ता था। उसके अङ्ग-प्रत्यङ्गकी गठन जैसी सुडौल थी, उसे देखते ही अफसरने समझ लिया, कि इसके आगे जूलिया उवेन कोई चीज नहीं है। इसकी शोभा सारी दुनियासे न्यारी, सुन्दरता बड़ी ही मद कारी है। यही सोचते सोचते उनके दिमागमें यह बात घूम गई, कि जिसने ऐसी देवीसी रूपसीको अपने हृदयमें स्थान दे रखा है, वह क्योंकर जूलियाके झूठे प्रलोभनोंमें आयेगा? इसकी शान्ति, पवित्रता और भोलेपनसे भरे हुए मुखड़ेकी याद ही उसे सारे फन्दोंसे बचायेगी और वह बेवफाई न कर सकेगा।"

लार्ड०,—"मिस ष्टेनली! ये महाशय यहांकी पुलिसके सबसे बड़े अफसर हैं। इनसे तुम्हें मालूम होगा, कि वह व्यक्ति, जिसे तुम जेसिलिन लौफ्टसके नामसे जानती हो और प्यार भी करती हो, वह अपनी बदचलनी और बहशीपनके लिये कैद किया गया है। यद्यपि यह समाचार तुम्हारे लिये बड़ा दुःखदायी है, पर क्या किया जाय? सच्ची बात तो कहनी ही पड़ती है? उसे कोई भला कैसे छिपा सकता है?"

अफसोससे हाथ मलती और आंखोंसे आंसू बरसाती हुई लुइसा बोल उठी,—"या भगवान्! जो कुछ मैं सुन रही हूं, वह क्या सच है?" इसके बाद अपने हृदयके उछलते हुए वेगको रोक और

दिली दर्दको बतलानेवाले उन मोतीकेसे अश्रु बिन्दुओंको पोंछकर बोली,—"आपने स्नेहमय जनकको तरह दयाकर मुझसे जो कुछ कहा है, उससे मेरी नस-नसमें आग सुलग उठी है। आपने जो कुछ कहा है, मेरी सहानुभूतिसे प्रेरित होकर कहा है, परन्तु वह मेरे लिये इतना बुरा है, कि मैं कह नहीं सकती।"

इतना कह वह विश्वास पूर्ण नेत्रोंसे मार्किस लेवेसनकी ओर तथा उदासी और याञ्चा भरी दृष्टिसे पुलिस अफसरके प्रति देखने लगी। उस दृष्टिके एक-एक सञ्चारसे यही मालूम होता था, मानों वह सारी घटना ब्योरेवार सुनना चाहती है।

अब तो पुलिस अफसरका भी मन चला, कि जरा दर्दमन्दी जाहिर कर दें और इसीलिये वे अपना स्वर उदासीसे भरा हुआ बनाते हुए कहने लगे,—"बेटी। तुम्हें उस मनुष्यके असली चरित्रका परिचय अवश्य प्राप्त करना चाहिये, जिसपर तुम्हारा प्यार है और जिसके साथ तुम्हारा विवाह बहुत ही जल्द होनेवाला है। सच पूछो, तो तुमने अपना दिल एक लफंगे मनुष्यको दे डाला है, जिसका चाल चलन बड़ा ही खराब है और जो शुहदेपनमें अव्वल नम्बरका है तथा बनावटी नाम धारण किये दुनियाकी आंखोंमें धूल झोंकता फिरता है।"

अभागिनी लुइसा हृदयसे आप ही आप उठती हुई अपनी चीत्कारध्वनिको ओठ काटकर दबाते हुए कहने लगी,—"या परमेश्वर। दया करो!—" यह कह अपने नैराश्य, दुःख और शोकसे भरे हुए हृदयको बड़ी कठिनतासे संयतकर, सारे व्याकुलताके भावोंको वशमें करते हुए बोली,—"कहिये कहिये, जो कुछ बाकी हो, वह भी कह डालिये।"

मारक्विसको कनखियोंका इशारा पा, अपनी जहरीली बातोंका असर होते देख साहस बढ़ जानेके कारण, अफसरने कहा,—"मिस

ष्टेनली। यह सच है, कि जेसिलिन लोफ्टसने पेरिसमें आकर जिस तरहका आचरण किया है, उससे समाजको धक्का लगता है। इसीसे मजबूर होकर कानूनके मजबूत हाथोंको उसे उसकी ज्यादतियोंके लिये सजा देनी पड़ी है। यद्यपि उसने कोई प्रत्यक्ष अपराध नहीं किया, तथापि उसकी चरित्रहीनता, लोलम्पटता, और नीतिके अधःपतनने अङ्गरेज-जातिके नामको कलङ्कित किया है। यही बात मालूमकर और यह जानकर, कि वह नकली नाम धारण कर फ्रांसमें फिरा फिरता है, मैंने उसे यहां पकड़कर कैद कर रखा है; क्योंकि लोगोंकी जान, माल, इज्जत और चरित्रकी रक्षाका भार मेरे ऊपर निर्भर है। मैं, जहांतक होगा, अपने इलाकेमें दुश्चरित्रताका प्रचार नहीं होने दे सकता।"

पगलीकी तरह चारों ओर चकित नेत्रोंसे देखती हुई लुइसा बोली,—"महाशय! मैं आपकी बातोंका विश्वास करती हूँ—अविश्वास करनेका साहस भी नहीं कर सकती,—तो भी मुझे आपकी बातें ऐसी असम्भव और स्वप्नकी तरह असत्य मालूम होती हैं, कि—"

बड़ा अपनपौ और बड़ी दया दिखलाते हुए लार्ड लेवेसनने उसका हाथ अपने हाथमें ले कहा, "अफसोस! प्यारी लड़की! तुम्हें विश्वास नहीं होता, पर आखों देख रही हो, कि माजरा क्या है? पुलिसके सबसे बड़े अफसर क्या कहते हैं? इन्हें क्या पड़ी थी, जो झूठमूठ उस आदमीको गिरफ्तार करते, जो अपनेको जेसिलिन लोफ्टस मशहूर किये हुए है और न तुम सी सीधीसाधी अबलाको व्यर्थ धोखेमें डालनेमें ही इनका कुछ स्वार्थ है।"

पुलिस अफसर बीचमें ही बोल उठे,—"ठीक है, बहुत ठीक! परन्तु मिस ष्टेनलीके अविश्वास, सन्देह और झूठी कल्पनाको मैं क्षमा करता हूँ; क्योंकि अपने प्यारेके ऊपर आदमीका ऐसा

शार्दिक विश्वास होता ही है, कि वह हालाहाली उसके विरुद्ध कोई बात जानकर भी, देखकर भी, विश्वास करना नहीं चाहता। परन्तु प्यारी मिस ! आओ, मैं अभी तुम्हारे सारे सन्देह दूर किये देता हूं।"

यह कह अफसरने बगलका दरवाजा खोला और उन लोगोंको एक आफिसके से सजी-सजाये कमरेमें लेगये, जिसमें मेजपर एक लम्प जल रहा था। इसी मेजपर एक काली जिल्दवाली किताब भी रखी हुई थी। वह किताब प्रोटेस्टेण्ट मतानुयायी गिरजोंमें व्यवहार की जानेवाली तमाम बाइबिलोंसे आकार-प्रकारमें बड़ी और मोटी थी। उस किताबकी जिल्दपर 'काली बही' यह नाम छपा हुआ था।

अफसरने झटपट मेजके पास जाकर वह किताब उठा ली और उसके पन्ने उलटते हुए, जिनमें तरह-तरहके अक्षरोंकी लिखावट मौजूद थी, एक पन्नेपर आकर रुक गये और उसके एक विशेष भागकी लिखावटपर अंगुली रख बोले,—"देखो, मिस ट्रेनली, इसे देखो। इसमें इस गिरफ्तारीके सम्बन्धमें क्या-क्या लिखा हुआ है।"

लुइसाने उस मनहूस लिखावटपर दृष्टि डाली और सरसरी तौरसे उन पंक्तियोंको पढ़ गई, जिनकी ओर उसका ध्यान आकर्षित किया गया था। उसमें फ्रेंच भाषामें लिखा हुआ था :—

"एक अङ्गरेज, जिसकी अवस्था तेईस वर्षकी है, अपना नाम जेमिलिन लोफ्टस बतलानेके कारण गिरफ्तार किया गया। उसका यह नाम नकली है और उसने इसी झूठे नामसे पासपोर्ट लिया है। पुलिसके अधिकारीको उसका असली नाम मालूम है, परन्तु कई विशेष कारणोंसे यहां लिखना मुनासिब नहीं समझा गया। इसके लिये उनकी प्राइवेट साइन्यूट बुक (गुप्त बही) के २०२१ वें पेजकी २५ वीं पंक्ति देखो।"

अभागिनी लुइसा मर्म्मान्तिक क्षोभके स्वरमें बोली, "बस,—मैं अब और कुछ देखना नहीं चाहती, बहुत हो चुका।"

मारक्किस ने कहा,—"और लेडी साहबा। तुम्हारे विश्वास और पूर्ण सन्तोषके लिये तुम्हारे इस धोखेबाज प्रेमीको बदचलनी और पाजीपनका जो पक्का प्रमाण दिखानेके लिये तुम्हें इस ढलती रातमें अपने साथ ले आया हूं, उसे भी चलकर देख लो। अगर पुलिसके बड़े अफसर साहबकी आज्ञा हो, तो हमलोग वहां चलें—"

अफ०,—"हां, हां, मैं समझ गया। चलिये, आइये मेरे साथ।"

यह कह अफसर आगे बढ़े और वे दोनो उनके पीछे-पीछे चले। बाहर आतेही उन्होंने अपने हाथों उस कमरेमें ताला लगाया और सामनेके एक दरवाजेमें घुसे। वह एक कमरा था, जहां पहुंच, हाथमें एक लालटेन ले, वे लुइसा और मार्क्किसको लिये हुए एक सीढ़ीपर चढ़ने लगे। जहां सीढ़ियोंका सिलसिला खतम हुआ था वहां एक बड़ा मजबूत दरवाजा मिला, जिसे अफसरने अपने पास की एक चाभीसे खोला और एक लम्बे और अँधेरे रास्तेसे सब लोग अग्रसर होने लगे। इस रास्तेको दोनों ओर बहुतेरे दरवाजे बने हुए थे। जाते-जाते वे लोग ऐसे ही एक द्वारके पास खड़े हो गये।

बड़े धीरेसे अफसरने मारक्किस और लुइसाके कानमें कहा, "देखना, खूब आहिस्ते आहिस्ते पैर रखते हुए चुपचाप चले आना।" इसके बाद इस चतुराईसे दरवाजा खोल, जिसमें जरा भी आवाज न हो, उन्होंने लम्पको एक आलेपर रख दिया और कमरेके अन्दर दाखिल हुए।

लुइसाके पैर कांप रहे थे, उससे चला नहीं जाता था, मालूम होता था, कि वह अभी बेहोश होकर गिरा ही चाहती है, कारण एक तो वह अपने प्रेमपात्रके दुष्ट व्यवहार और दूषित आचरणकी बात ही सुनकर दुःखसे अधीर होगई थी, दूसरे उसको पवित्र आक

अपने उसी प्रेमीके असत् आचरणका प्रमाण अपनी आंखों देखनेको किसी प्रकार तैयार नहीं होती थी।

बड़ी तत्परताके साथ मारक्विस लेवेसनने कहा,—"आगे बढ़ो, आगे बढ़ो। अन्ततक धीरजके साथ देखती जाओ।"

कौतूहल नहीं, किन्तु एक तरहकी प्रबल उत्तेजनाके वशमें हो लुइसा हैनली उस कमरेमें चली गई, पर मारक्विस उसके साथ नहीं गये। वे चौकठपर इसी इरादेसे खड़े रहे, कि अपनी आखोंसे देखनेकी अपेक्षा औरोंके मुंहसे सारा हाल सुनना बहुत अच्छा होगा।

बड़े धीरे धीरे दबे पावों लुइसा उस कमरेके अन्दर गई। वह कुछ ही कदम आगे गई थी, कि उस अन्धकारके भीतर उसे एक और लम्बकी रोशनीकी चमक सी मालूम पड़ी। अफसरने उसका हाथ पकड़ लिया और उधर ही ले चले, जिधरसे वह रोशनी आरही थी। दो चार पग और आगे बढ़ते ही लुइसा समझ गई, कि यह रोशनी पासके एक कमरेसे आ रही है। बीचकी दीवारमें एक बहुत बड़ा मोखा था। उसीसे इस दूसरे कमरेमें रोशनी आरही थी।

उस भीता और चकिता सुन्दरीको लिये हुए पुलिसके अफसर साहब उस मोखेके पास पहुंचे। इन सारी विचित्र बातों और घोर अँधियारीके बीच थोड़ी सी रोशनी देख वह चकित और विस्मित होही रही थी, कि उसके कानोंमें एक चिरपरिचित कण्ठसे निकला हुआ यह वाक्य सुनाई दिया,—"तुम तुझे पागल बना दोगी—अपने आपेमें न रहने दोगी।"

उसके मुंहसे एक चीख निकला ही चाहती थी—क्योंकि सदा-लय भर आनेसे घड़ा छलकता ही है—परन्तु रुक गई, क्योंकि उसके कानोंमें उसी समय एक स्त्रीके मधुर कण्ठसे यह बात निकलती हुई सुनाई दी—"जेसिलिन, प्यारे जेसिलिन। तुम जानते हो, कि मैं तुमपर मर रही हूं।"

बस—लुइसाने और कुछ न सुना। जिस हृदयके आवेगने उसके मुंहसे निकलती हुई चीखको रोक दिया था, अबके उसने एक ऐसा धक्का दिया, कि वह बेहोश होकर धड़ामसे पृथ्वीपर गिर पड़ी।

भीतरके कमरेमें जेसिलिन चिल्ला उठे,—"या भगवान्! यह काहे को आवाज है?" और यह कह मेजपर रखा हुआ लम्प उठाकर उस मोखेकी ओर चले। ज्योंही उन्होंने उस लम्पको उस मोखेके भीतर हाथ घुसाकर पहुंचाया और झाँका त्योंही उनकी दृष्टि अपनी प्राणेश्वरी लुइसापर जा पड़ी, जो बेहोश होकर गिर पड़ी थी और जिसे पृथ्वीपरसे उठानेकी पुलिस अफसर चेष्टा कर रहे थे।

एक क्रोध भरी चीत्कार-ध्वनि उनके मुँहसे निकल पड़ी और हृदयकी उत्तेजना और आवेगके कारण उनके हाथसे लालटेन छूट कर उसी दूसरे कमरेके फर्शपर जा गिरी। परन्तु उस समयतक बिजलीके सपाटेकी तरह जल्दबाजीके साथ अफसर उस मूर्च्छिता सुन्दरीको लिये हुए उस कमरेके बाहर हो गये और जाते समय उसका दरवाजा बन्द कर दिया।

इस तरह एकाएक यह विचित्र घटना होती देख जूलिया उवेन डर गई और बोली,—"क्यों? बात क्या है?"

क्रोधके साथ कांपते हुए जेसिलिनने कहा, "पापीयसी! राक्षसी!! दुष्टे!!! तूने मुझे मेरी प्रेमपात्रीके आगे अपमानित कर डाला—मेरा सर्वनाश कर दिया।"

यह अन्तिम बात कहते-कहते वे मारे हृदय-वेदनाके अधीर हो गये और बेहोश होकर कटे वृक्षकी तरह बड़े जोरसे पृथ्वीपर गिर पड़े।

उस घोर अँधियारीमें यह भयानक घटना घटती देख जूलिया उवेन बेचैन सी हो गई और चिल्ला उठी,—"जेसिलिन! जेसिलिन! बोलो, बोलो, बात क्या है? बोलो। या परमेश्वर! तुम बोलते क्यों

नहीं ?" यह कह वह अन्धियालेमें टटोलती हुई उस स्थानपर पहुँची, जहांसे पलंग उठा लिया गया था, जैसा कि पाठकोंको स्मरण होगा। वहां पहुँचकर उसने नीचे झुककर उनके मुँहपर हाथ रखा।

उसने देखा, कि उनका शरीर अचल और ठंढा हो रहा है। यह देख वह मारे भय और दुःखके घबरा उठी और उनके होठोंके पास कान ले जाकर सांस लेनेका स्वर सुननेकी चेष्टा करने लगी। परन्तु उसे श्वास चलता हुआ नहीं मालूम पड़ा। उसके सिरमें चक्कर सा आने लगा, दिल धड़क उठा और वह पगलीसी हो गयी। तोभी कलेजा कुछ पोढ़ा कर उसने अपना हाथ उनके हृदयपर रखा। उसने देखा, कि हृदय बिलकुल निश्चल है, उसकी धड़कन एकबारगी बन्द हो गई है। नैश गगनको अपने भय विकम्पित स्वरसे शब्दायमान करती हुई वह चिल्ला उठी—"हाय! यह क्या हुआ? या परमात्मा! मेरी ही दुष्टताने इस बेचारेका जीवनान्त कर दिया! या भगवान्! मेरे इस पापका क्या परिणाम होगा? रक्षा करो—रक्षा करो।" यह कहते कहते उसका ज्ञान लुप्त हो गया, संज्ञा जाती रही और वह भी बेसुध होकर जमीनपर गिर पड़ी।

*** ३३ वीं संख्या समाप्त ***



इसके आगेका हाल जाननेके लिये ३४ वीं संख्या मंगा देखिये।

'बर्म्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

कोहेनूर

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आपको राजपूतों और मुसलमानोंकी भयानक लड़ाइयोंका आनन्द लेना हो, यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेब" के इतिहास-प्रसिद्ध भीषण संग्रामका रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप उदयपुरके युवराज "अमरसिंह" की वीरता, धीरता और बुद्धिमत्ताका पूर्णपरिचय पाया चाहते हों, यदि आप "अरावली-उपत्यका" में होने वाले लक्षाधिक क्षत्रिय वीरों और दुर्दान्त मुसलमानोंका घोर संग्राम देखा चाहते हो, यदि आप वीर-शिरोमणि "काला पहाड़" राजकुमार "केशरीसिंह" आदि मुट्ठीभर क्षत्रिय वीरोंका असंख्य मुसलमानोंके साथ आश्चर्यजनक युद्ध



दृष्टिगोचर किया चाहते हों, यदि आप वीर-कन्या और वीर-पत्नी "विलासकुमारी" को आदर्श पति-भक्तिका ज्वलन्त प्रमाण पाया चाहते हों, यदि आप अम्बरकी राजकुमारी स्वर्गीय सुन्दरी "अम्बालिका" का प्रकृतप्रेम हृदयङ्गम किया चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर पांच चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल १।) सजिल्द २) रुपया।

नकली रानी—इसमें एक डाकू स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी ही बारीकीसे किया गया है। साथही बहुतसे गुप्त रहस्य खोले गये हैं, दाम सिर्फ १)

जासूसी कहानियां—यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) साढ़े आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नीलाम घरका रहस्य, (४) घुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर और चतुर। दाम सिर्फ ॥) आना।

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

घटना चक्र

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिको पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमब्रोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे सताये जाकर अपनी अद्वितीय सुन्दरी स्त्री "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके शत्रु-दलने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार भारतके सरकारी जासूस "लालाजी रघुपन्त" ने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षा की, किस प्रकार शत्रुओंके जासूस ... पेमब्रोकके दाये नौकरी तकमें ... गये, किस प्रकार दुष्टोंके षड्यन्त्रसे लार्ड पेमब्रोकको भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो ... जाना पड़ा, किस प्रकार रास्तेमें शत्रुओंके जवानने उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी स्त्री "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार जासूस रघुपन्तने समुद्रमें कूदकर उनकी स्त्रीका उद्धार किया, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे "लार्ड पेमब्रोक" को अदालतसे रिहाई मिली, किस प्रकार उनके खूनके प्यासे शत्रु गिरफ्तार किये गये, आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। पुस्तक बड़ी और सचित्र है। दाम बेजिल्द २।) रुपया, जिल्द बंधीका २॥) रुपया।



शोणित-चक्र

—: जासूसी उपन्यास :—

इस उपन्यासमें "शोणित-चक्र", नामक एक अद्भुत रहस्यका ऐसा अनूठा भेद खोला गया है, कि पढ़कर आप दङ्ग हो जायगे और बार बार ऐसे ही उपन्यास पढ़नेकी इच्छा प्रकट करेंगे। यह जासूसी ढङ्गका अनूठा उपन्यास है,...

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इस उपन्यासमें भारत-सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही मनोरञ्जक घटनाओंका अच्छा बयान किया गया है। सम्राट अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इसकन्दर" का गुप्त भावसे "ईंदलगढ-दुर्ग" पर चढ़ाई करना, भयानक अंधेरी रातके समय चुपचाप दुर्गपर अधिकार जमा कर दुर्गाधिपति 'सोहानी' को कैद करनेकी चेष्टा करना, सोहानीकी वीर-पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप लावण्यपर मुग्ध हो कर्त्तव्य-विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इस्कन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इस्कन्दरका पीछा करना, सोहानीका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना,



गुलशनको फरियाद पर अकबरके दरबारसे इस्कन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, गुलशनकी सहायतासे इस्कन्दरका कारागारसे निकल भागना, बाज मालवाधिपति "बाजबहादुर" को गुप्त घातकके आक्रमणसे बचाना, बाज बहादुरका इस्कन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रूपिया" पर इस्कन्दरका मोहित होना, बहुत मुसीबतोंके बाद दोनोंमें विवाह होना आदि बहुतही अपूर्व घटनायें दी गयी है। सुन्दर सुन्दर ४ चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ २) रुपया।

राजसिंह

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इसमें वीर-शिरोमणि महाराणा राजसिंह और सम्राट औरङ्गजेबमें जब भीषण युद्धका वर्णन है, जिसमें असंख्य वीरोंकी प्राणाहुति हुई थी। इस महायुद्धमें राजसिंहने दुर्दान्त औरङ्गजेबको बड़ी बहादुरीसे पराश्त कर 'रूप नगर' की राज कन्या "चञ्चल कुमारी" की धर्म्म रक्षा की थी। दाम १॥)

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०,
अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

❋ जासूसी कुत्ता ❋

सचित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक ! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। इसमें न्नाडो नामक एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी करामाते दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदेपर पहुंचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही इस उपन्यासरी यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य नेकचलनी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। हमारा एकान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी शौक न हो, तो भी आप इसे अवश्य पढ़ें, आपको पछताना न पड़ेगा, क्योंकि इसमें भाग्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि उसे



पढ़कर निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें हाफटोन फोटोके सुन्दर ३ चित्रभी दिये हैं। मूल्य सिर्फ १॥)

❋ गुलबदन ॐ रजिया बेगम ❋

बड़ाही अनूठा थियेट्रिकल उपन्यास।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नव्वाब मफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइया, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका बीच बीचमें बाधा देना। ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको बागसे उठा लेजाना। एकाएक पुलका टूट जाना और गुलबदनका नदीमें गिर पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम सिर्फ १।) रु०

आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

दुर्गादास

सचित्र ऐतिहासिक नाटक।

बङ्ग-साहित्यमें जिस नाटकको धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें जिस
नाटकके अनेकों संस्करण हाथों-
हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके
बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकके
खेलते समय दर्शकोंको स्थान
मिलना कठिन हो जाता था,
हिन्दीके बड़े बड़े पुस्तक विक्रेता
जिस नाटकका हिन्दी अनुवाद
प्रकाशित करनेके लिये जी-
जानसे कोशिश कर रहे थे, वही



हृदयग्राही वीर-रस-प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें सबसे पहले प्रका-
शित कर हम मारे आनन्दके फूले नहीं समाते। वास्तवमें यह नाटक नाटकोंका
'मुकुटमणि' है। जिसने इसे एकबार पढ़ा या देखा, वह और नाटकोंको भूल
गया। इसमें मेवाड़के प्रसिद्ध वीर 'दुर्गादास' सम्राट "औरङ्गजेब" महाराणा
राजसिंह, भीमसिंह, राणा उदयसिंह, शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति
"शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, आजम तथा काम बख्श प्रभृतिके इति-
हास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया
है। मुगल-रमणियों और राजपूत-ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही
बारीकीसे खींचा गया है। बीच बीचमें अच्छे अच्छे गाने देकर नाटककी
शोभा और भी बढ़ा दी गयी है। हम दावेके साथ कहते हैं, कि ऐसा अनूठा
नाटक हिन्दीमें अबतक नहीं था। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश
होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे।
पहली बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी
सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोके छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर
रङ्गीन चित्र भी दिये हैं। दाम सिर्फ १।) रुपया।

डाकू भाई

यह उपन्यास इतना अद्भुत, आश्चर्यजनक और जटिल घटनाओंसे पूर्ण
है, कि पढ़कर रोयें खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ ।=) आना

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

डबल जासूस

-: सचित्र जासूसी उपन्यास :-

इसमें नरेन्द्र और सुरेन्द्र नामक एक ही सूरत-शक्लके दो नामी जासूसोंकी बड़ीही आश्चर्य्यजनक कार्रवाइयोंका बयान किया गया है, जिसके पढ़नेसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह उपन्यास घटनाका खजाना, कौतुकका आगार और जासूसी करामातोंका भण्डार है। दोनों जासूसोंने किस बहादुरीसे चोरों, दगाबाजों और खूनियोंको गिरफ्तार कर "सुशीला" और "मनोरमा" नामी दो सम्भ्रान्त रमणियोंको बचाया है, कि सुनसे 'वाह वाह' निकल पड़ती है। कलकतिया चोरोंके तिलस्मी अड्डे का अद्भुत रहस्य, नाव पर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, कम्पनीबागमें भीषण तमंचेबाजी, एक वीरान खण्डहरमें डाकूके



दलकी विचित्र गिरफ्तारी, मुर्दाघरमें बेनामी लाशका अनूठे ढङ्गसे पहुंचाया जाना, नदीके किनारे दो असली और दो नकली जासूसोंका द्वन्द्व युद्ध,—आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग न रह जाय तो बात ही क्या है? इसमें 'सुशीला' नामी सुन्दरीका एक तिनरङ्गा चित्र देखने ही योग्य है। इसके अलावा और भी सुन्दर सुन्दर ३ चित्र दिये गये हैं। इतना कुछ होनेपर भी दाम १॥)

शशिबाला

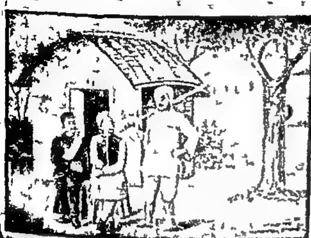
शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास।

इसमें एक सच्चरित्रा स्त्रीने किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूर-दर्शितासे अपने कुपथगामी स्वामी और कितने ही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, यह पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलस्मी मठ, जोगिनीकी अद्भुत चातुरी, वीरसेनकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय सुन्दरता आदिका हाल पढ़कर आप अवाक् रह जायगे। यह स्त्री, पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ ॥=) आना।

अमीरअली ठग

सचित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक महोदयो! आपने शायद पुराने जमानेके भयानक ठगोंका हाल



सुना होगा। 'इष्ट इण्डिया कम्पनी' के राजत्वकालमें इन ठगोंका बड़ा ही दौर-दौरा था। ठगोंके जोर-जुल्मसे उस समय सर्कार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थीं। ठगोंके बड़े बड़े दल राजसी ठाठ बाटसे दौरा करते फिरते थे और उनके गोइन्दे मुसाफिरोंको बर्गला (बहका) कर अपने गरोहमें ले आते थे। फिर ठग लोग विचित्र ढङ्गसे मुसाफिरोंको बातकी बातमें उन्हें फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे। मुसाफिरोंके लिये वह समय बड़ा ही भयानक था। डाकुओंके हाथसे मुसाफिर लोग बच भी जाते थे, मगर ठगोंके चङ्गुलसे निकल भागना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव था। इन्हीं ठगोंके "अमीरअली" नामक सर्दारने कम्पनी बहादुरसे मिलकर हजारों ठगोंको फांसी दिलवा दी और तभीसे ठगोंको जड़ भारतसे एक प्रकारसे कट गयी। यह उपन्यास बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है और हाफटोन फोटोकी बड़ी बड़ी कई तस्वीरें लगाकर खूब ही सजा दिया गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

कैदीकी करामात

सचित्र जासूसी उपन्यास।

यह एक बड़ा ही वैचित्र्यपूर्ण डिटेकटिभ उपन्यास है, लण्डनके मशहूर जासूस मि० राबर्ट ब्रूकने फ्रान्सके प्रसिद्ध विद्रोही और डाकू "हेनरी गेरक" को कितनी ही बार बड़ी बहादुरीके साथ गिरफ्तार किया था, पर फिर भी गेरक बराबर उनकी आखोंमें धूल झोंक भागता रहा। इस डाकूने सारे यूरोपमें खलबल मचा रखी थी। यहांतक कि स्वयम् मिटर ब्रूकको भी कई बार इससे लाञ्छित होना पड़ा। अन्तमें ब्रूकने किस तरह इसे पकड़ कर सजा दिलवाई, यह पढ़कर आप दङ्ग हो जायेंगे—दाम १॥) रु०

आदर्श चाची

शिक्षाप्रद सचित्र गार्हस्थ उपन्यास।

हिन्दी-संसारमें यह पहला ही उपन्यास छपा है, जिससे समाज या देशका वास्तविक उपकार हो सकता है। यों तो सैकड़ों उपन्यास छप चुके हैं, जिनसे मनोरञ्जन या ऐतिहासिक बातें जाननेके सिवा विशेष कुछ लाभ नहीं हुआ, किन्तु हमें पूर्ण आशा है, कि इस उपन्याससे हिन्दू-जातिका सच्चा उपकार होगा। स्त्री, पुरुष, बूढ़े, बच्चे, सभी इस उपन्याससे मनोरञ्जनके साथ ही साथ आदर्श शिक्षा भी प्राप्त कर सकेंगे। प्रायः देखा गया है, कि स्त्रियोंकी अनबनसे बड़े बड़े सुखी, समृद्धिशाली परिवार तहस-



नहस हो गये हैं, बाप बेटेसे छूट गया है, भाई भाईसे विश्रृंखलता हो गयी है, चाचा भतीजेमें वैर छा गया है और बना बनाया लाखका घर खाकमें मिल गया है। यह उपन्यास इसी प्रकारकी घटनाओंको सामने रखकर लिखा गया है। एकबार इस उपन्यासको पढ़ लेनेसे आपसके वैर-भाव और दुराग्रह-द्वेषका सदाके लिये नाश हो जाता है। हाफटोन फोटोमें छपे कई चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल १) है।

वीर-चरितावली

इसमें निम्नलिखित वीर-वीराङ्गनाओंकी १६ वीरकहानियां दी गयी हैं, (१) रानी दुर्गावती, (२) रानी लक्ष्मीबाई, (३) जवाहर बाई, (४) कर्मदेवी (५) वीर-धात्री पन्ना, (६) वीर-बालक और वीर-नारी, (७) राजकुमार चण्ड, (८) पृथ्वीराज, (९) बादलचन्द, (१०) रायमल्ल (११) सिक्ख वीर रणजीतसिंह (१२) हम्मीर, (१३) महाराणा प्रतापसिंह, (१४) छत्रपति शिवाजी, (१५) राणा संग्रामसिंह, (१६) राजर्षि उम्मेदसिंह प्रभृति। इसमें सुन्दर सुन्दर ५ चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ ॥) आना।

आर० एल० वर्म्मन एण्डको०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

लण्डन-रहस्य

-: अर्थात् :-

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन।

दूसरा भाग।

चौथा खण्ड।

आर० एल० वर्म्मन द्वारा

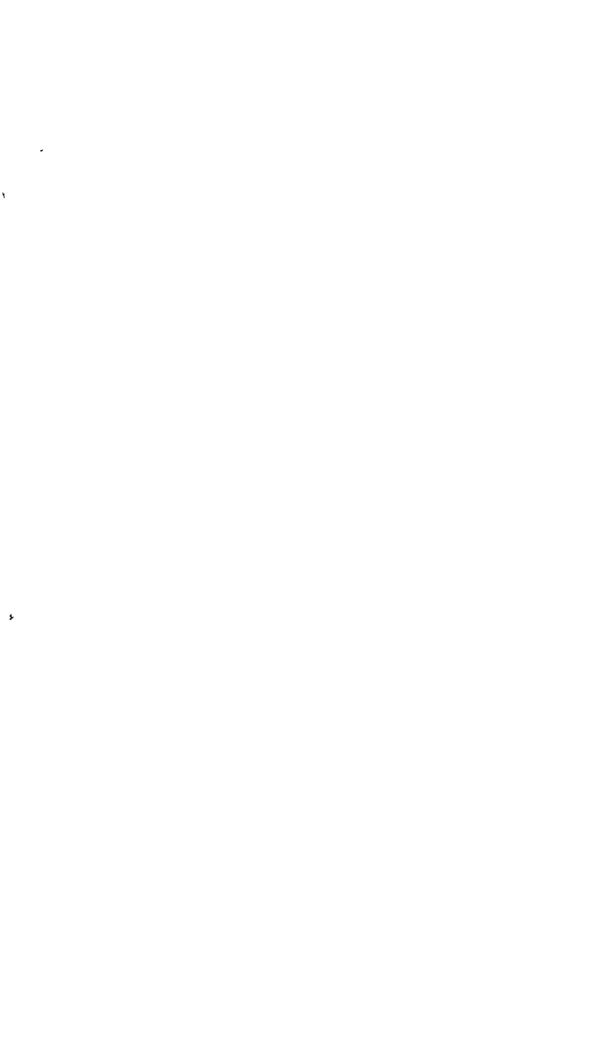
कलकत्तासे प्रकाशित।



कलकत्ता २७१ अपर चीतपुर रोड, "वर्म्मनप्रेस"में,
रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

स० १९७६ विक्रमीय।

द्वितीय वार २०००] [मूल्य प्रति सख्या



लण्डन-रहस्य



एवा लाइट फुट

(चौथा खण्ड ।)

Burman Press, Calcutta

संख्या २१

लण्डन-रहस्य

:अर्थात्:-

मिस्ट्रीज़ आफ दी कोर्ट आफ लण्डन।

चौथा खण्ड।

छिहत्तरवां परिच्छेद।

आखिरी मुलाकात।

टिम मोगल्सके घोड़े अड्गड़ेमें रहते थे*। घटना वश जब उसे देश छोड़ना पड़ा, तब लेडी लेडने उन घोड़ोंको लाकर अपने अस्तबलमें रख लिया।

लेडी लेड अब विधवा हो गई थी। प्रचलित शोक-कालतक उसने सदाचारसे रहनेकी प्रतिज्ञा भी की थी, सुतरां जिन कामोंसे मोगल्सके साथ उसकी घनिष्ठता प्रकाश होनेकी विशेष

* "अड्गड़ा" उसे कहते हैं, जो गाड़ी, घोड़े आदि भाड़े पर देता है और महाजनोंके घोड़े सिर्फ मासिक खर्च लेकर अपने अस्तबलमें रखता है। बड़े बड़े नगरोंमें अड्गड़े वालोंकी बहुत सी कम्पनियां होती हैं और उनमें हजारों गाड़ी घोड़े भाड़े पर चलानेके लिये रहते हैं। कलकत्तेमें "कुक कम्पनी" का अड्गड़ा इस कामके लिये बड़ा मशहूर है।

माको रोशनीमें देख लो, कि जितना तुमने लिखा था, उतना ही लाई हूं, या नहीं?"

अब रामसेने हाथ बढाकर खुशीसे कहा,—"तुम्हारी बातका मुझे विश्वास है,—लाओ दो।"

एलिनर,—"विश्वासघातका पुरस्कारस्वरूप न?"

रामसे,—"जैसा समझो,—लाओ, जल्द दो।"

"अच्छा तो लो" इतना कह और लबादेके अन्दरसे हाथ निकाल-कर एलिनरने उसकी ओर बढा दिया, साथ ही पलक गिरते न गिरते धडामसे पिस्तौलकी भीषण आवाज हो गई।

आवाजके बाद ही रामसे चीख मारकर धम्मसे जमीनपर गिर पडा और उसी क्षण उसकी जान निकल गई।

यह देख नरघातिनी एलिनर जिधरसे आई थी, उसी ओर बेतहाशा भाग चली और मोगल्स हक्का-बक्का पेडकी ओटमें छिपा खड़ा रह गया।





आखरी मुलाकात—रामसेका खून।

(चौथा खण्ड—७६ वा परिच्छेद ।)

Burman Press, Calcutta

सतहत्तरवां परिच्छेद ।

हत्याके बाद ।

क्षणही भरमें मौगल्सको मालूम हो गया, कि वह कैसी बलामें फँस गया है। लण्डनसे एल्सवरी तक उसने रामसेका पीछा किया था, होटलमें भी बराबर उसपर दृष्टि रखी थी, और जब वह होटलसे मैदानकी ओर (जहां यह भयानक हत्याकाण्ड हुआ था) चला, तब भी मौगल्स उसके पीछे पीछे गया था। रामसेकी लाश मैदानमें अवश्य ही पाई जायगी, सुतरां घटना-सूत्रसे मौगल्स ही अपराधी समझा जायगा।

यह सब सोच-विचारकर मौगल्स लेडी डिसबोरोकी ओर दौड़ चला। वह बागके फाटकपर पहुंची ही थी, कि अपने पीछे आदमीके पैरकी आहट पा घबराकर उसी जगह खड़ी हो गई।

मौगल्सने एलिनरका कन्धा पकड़कर कहा,—"बदनसीब? यह क्या कर डाला?"

मौगल्सकी आवाज सुनते ही एलिनर पहचान गई, कि यह तो मेरे परित्राताका स्वर है, इससे कुछ आश्वस्त होकर उसने कहा,—"मिष्टर मौगल्स। कोई बात जाहिर न करना।"

मौगल्सके जवाब देनेके पहले ही बागकी झाड़ीमें कुछ खड़-खड़ाहट मालूम हुई और साथ ही उसमेंसे एक आदमी निकल आया।

एलिनर,—"आह। फ्रैन्सिस?—"

अर्ल,—"हां तुम्हारे पीछे पीछे मैं यहां तक आया था, सिर्फ इसलिये, कि यदि शत्रुके साथ तुम्हारी हाथापाई होती, तो मैं चट वहां पहुंचकर तुम्हारी रक्षा करता।"

इसपर एलिनरने धीर, गम्भीर स्वरसे कहा,—"शत्रु अब जीवित नहीं है। अच्छा, मिष्टर मौगल्स। आप यहां कैसे ?"

मौगल्स,—"मन्दभागिनी। मैं तुम्हारी भलाईके इरादेसे ही आया था। रामसे आज रातमें यहां आवेगा, यह बात मुझे किसी तरह मालूम हो गई थी। मैंने समझा, कि हो न हो यह किसी बुरी नीयतसे ही जा रहा है। इसीसे मैं लण्डनसे बराबर यहांतक उसके पीछे पीछे आया था, पर अब देखता हूं, कि मेरा ऐसा न करना ही अच्छा होता।"

अब मौगल्सका हाथ पकड़कर अर्ल कहने लगे,—"मिष्टर मौगल्स। इस भयानक बातको प्रकाश न करना। उस दुष्टको उपयुक्त दण्ड ही मिला है। आप तो जानते ही हैं, कि मेरी स्त्रीपर उसका कैसा असामान्य अधिपत्य था। तिसपर वह धमकाकर इससे रुपये झपटने आया था। मेरी स्त्रीने और यन्त्रणा न सह सकनेपर—"

इस दुर्घटनासे मौगल्स जैसी आफतमें पड़ गया था, उसका बयानकर उसने कहा,—"इस हत्याका उद्देश्य अच्छा है, यह तो मैं भी समझता हूं,—पर मैं तो बड़ी भारी विपदमें पड़ गया हूं।"

अर्ल,—"तो अब क्या किया जाय, आप ही बताइये ?"

एलिनर,—"निरपराधको कभी दण्डित न होने दूंगी। जब मैंने ऐसे भयानक काम करनेका साहस किया है, तब अपराध स्वीकार करनेका भी साहस करूंगी।"

अर्ल,—"नहीं, नहीं,—ऐसा कभी न होने पावेगा।"

मौगल्स,—"हां, मैं भी कहता हूं, कि ऐसा कभी न होने पावेगा। इस घटनाका कोई चिन्ह ही न रहने पावेगा। मैं इस लाशको इसी वक्त जमीनमें गाड़ देना चाहता हूं। क्या इस काममें आप मेरी मदद करेंगे ?"

अर्ल,—"खुशीसे।"

मोगल्स,—"तो आप एक बार कोठीमें जाकर देख आइये, कि और किसीको तो इसकी खबर नहीं है।"

एलिनर,—"अर्ल कोठीमें जाय, मैंने जो काम किया है, उसको छिपानेके लिये जो कुछ करना होगा, उसे मैं ही करूंगी।"

मोगल्स,—"नहीं, नहीं,—आप कोठीसे गैरहाजिर रहियेगा, तो लोग चाय चाय करेंगे, और अर्ल अगर कुछ देर बाहर रहेंगे, तो कोई कुछ भी न कहेगा, इसलिये जो कहता हूं, वही कीजिये, यदि इसमें उज्र कीजियेगा, तो फिर मैं इस काम में हाथ न दूंगा।"

इसपर मोगल्सका हाथ पकड़कर एलिनरने कहा,—"इस समय मेरा मान, प्राण, सब आप हीके हाथ है, फिर आपकी बात कैसे टाल सकती हूं?"

मोगल्स,—"तो निश्चिन्त रहिये, किसी बातका डर नहीं है।"

ठीक इसी समय लेडी डेसबोरोके मुंहपर चन्द्रमाकी चांदनी पड़ जानेसे मोगलसको मालूम हो गया, कि उसके मुखपर क्षतज्ञता विराज रही है। यह देख उसने मन ही मन कहा,—"ऐसी सुन्दरी रमणी भी ऐसा भयानक काम कर सकती है।"

इसके बाद अर्लकी ओर मुखातिब होकर मोगल्सने कहा,—"आप जल्द एक कुदाल ले आइये, तबतक मैं इस लाशको झाड़ीमें उठा लाता हूं। यहीं वह गाड़ दी जायगी।"

इसपर अर्लका हाथ पकड़कर एलिनर कोठीकी ओर चली गई। स्वभावतः साहसी होनेपर भी मोगल्स इस घटनासे डर गया था। कहीं कोई है तो नहीं, यह निश्चित करनेके लिये उसने एकबार अच्छी तरह चारों ओर देख लिया। फिर लाशके पास गया तो देखा, कि गोली सिरमें लगी है। सिर चूर चूर हो गया है। जब मोगल्स लाशको फाटकके अन्दर, झाड़ीके पास ले

आया, तब उसने सोचा, कि देखूं इसके पाकेटमें कोई कामका कागज है, या नहीं। यह सोचकर उसने ज्योंही लाशके पाकेटमें हाथ डाला, कि फीतेमें बंधा हुआ कागजका एक मुट्ठा मिल गया। उसने चट उस मुट्ठे को अपने कोटकी भीतरी जेबमें छिपा लिया।

इसके बाद तुरत ही कुदाल और गाती लिये अर्ल आ पहुंचे। उनके मुखपर भय और निराशाके चिन्ह देखकर मोगल्सने कहा,—"हिम्मत बांधिये—यदि असावधानतासे किसीके सामने आपके मुंहसे कोई बात निकल जायगी, तो आपकी स्त्रीको फांसी हो जायगी।"

अर्ल,—"आपका कहना दुरुस्त है। अच्छा, चलिये जो कुछ करना है, उसे कर डालें।"

मोगल्स,—"अच्छा इस वक्त आपका कोई आदमी फाटक बन्द करने तो इधर न आवेगा?"

अर्ल,—"यह फाटक बन्द नहीं किया जाता। चलिये, हम लोग गढ़ा खोद डालें।"

इसके बाद झाड़ीमें एक जगह ठीक की गई। फिर मोगल्सने काममें हाथ लगा दिया। अर्ल भी यथासाध्य सहायता करने लगे। घण्टे भरके अन्दर ही कब्र खुदकर तय्यार हो गई। फिर लाशको उसमें डाल, दोनों आदमियोंने उसे भरकर अच्छी तरह मट्टीको बैठा दिया। देखते देखते रामसेकी लाशके दफनानेका काम समाप्त हो गया।

इतनी देरके बाद अब अर्लने अघाकर लम्बी सांस ली। फिर अर्ल मोगल्सको कोठीमें ले जानेके लिये आग्रह करने लगे, पर अर्ल-काउण्टेस दोनो ही हत्याकाण्डमें लिप्त हैं, यह समझकर उसने उस समय उनका आतिथ्य स्वीकार नहीं किया। अर्लसे विदा होकर वह उसी होटलमें लौट गया।

यद्यपि उस समय रातके ग्यारह बज चुके थे, तो भी होटलका मालिक बैठा बैठा मोगल्सकी राह देख रहा था। मोगल्स सब बातें सोच-विचारकर ही आया था, इसलिये आते ही उसने पूछा,— "क्यों, वह आया है?"

होटलवाला,—"नहीं तो,—क्या हुआ?"

मोगल्स,—"जान पड़ता है, उसे किसी तरह कुछ मालूम हो गया, और इसीलिये वह किसी राहसे निकल गया।"

होटलवाला,—"वाह! खा-पीकर मुझे ही ठग ले गया? अब काहेको आवेगा।"

इसपर मोगल्स चट बोल उठा,—"कोई चिन्ता नहीं, मेरे ही खौफसे वह कम्बख्त भाग गया है, उसका हिसाब मेरे बिलमें जोड़ लेना। अच्छा एक गिलास ब्राण्डी तथा जल ले आओ और मेरे सोनेका कमरा मुझे बता दो। आज रातभर मैं यहीं रहूंगा।"

क्षण ही भरमें सब बन्दोबस्त कर दिया गया। सोनेके कमरेमें जा और भीतरसे दरवाजा बन्दकर मोगल्स उस कागजके मुट्ठेको देखने लगा।

जब उस मुट्ठेके ऊपर और नीचेकी कुछ सतरोंको उसने पढ़ा, तब उसके आनन्द और विस्मयकी सीमा न रही।

उन सतरोंमें यही लिखा था,—"मिस हन्ना लाइटफूट तथा लेडी ईमफोर्डकी चिट्ठी पत्री, और उनके सम्बन्धकी अन्यान्य बातें— १७५७—१७५८।"

इस पुलिन्देमें क्या है? यह जाननेके लिये मोगल्स इतना व्याकुल हो उठा, कि उसके हाथ कांपने लगे। मुट्ठेका फीता खोलते समय कई कागज नीचे गिर गये, उन्हें उसने फौरन उठा लिया और आनन्द-विह्वल होकर बोल उठा,—"अहा! यह तो मेरी खोई हुई निधि अनायास ही मिल गई!"

आखिर मोगल्स उन कागजोंको पढने लगा। पढ़ते समय उसके मनमें तरह तरहके खयाल उठने लगे। कभी वह गम्भीर विलापोक्तिमें निमग्न हो जाता, कभी निदारुण मर्म्मवेदनाकी बातसे उन्मत्त हो उठता, कभी हार्दिक अनुनय विनयपर उसका मन कुछ और ही हो जाता और कभी मर्म्मभेदी रुदनपर वह चौंक उठता। चिट्ठी बडी विचित्र थी। टीका-टिप्पणीसे अति गूढ, गम्भीर बातका पता लगता था। उस चिट्ठीसे इङ्गलैण्डके अधिपति महाराज तीसरे जार्जके मान सम्भ्रम और पद-मर्य्यादा आदिका अति निकट सम्बन्ध था।

मोगल्ससे और धैर्य्य न धरा गया। महा उल्लाससे उन्मत्त सा होकर वह कमरेमें टहलने और मन ही मन कहने लगा,—"मैंने प्रिन्ससे जो कागज पत्र उडा लिये थे और, जिन्हें अमेजन (लिटौ-ग्रिया) के यहांसे प्रिन्सने फिर उडवा मंगवाया था, वे इन कागजोंके सामने क्या हैं? कुछ भी नहीं,—एकदम रद्दी। इनके साथ स्वयं इङ्गलैण्डाधिपतिका निकट सम्बन्ध है।"

इस तरह कुछ देर बीत जानेपर अन्तमें मोगल्स शान्त हुआ। तब उसने देखा, कि रात बहुत बीत गई है, अब विश्राम करना चाहिये, क्योंकि तडके ही शहर लौट जाना है।

इसके बाद वह चारपाईपर जाकर सो रहा, पर नींद न आई। बीच बीचमें तन्द्रा आ जाती थी और उसी तन्द्रामें वह हत्या, कब्र, सुन्दरी क्वेकरेस* तीसरे जार्ज, चिट्ठीमें लिखे हुए और और आदमी और उनके विषयका स्वप्न देखने लगता था। इसी तरह रात बीत गई। सवेरा होते ही मोगल्स उठ बैठा और नित्य कर्म्मसे फुरसत पाकर कपडे बदलनेके बाद नाश्ता किया। उसके बाद उदारता सहित होटल वालेका बिल चुका और घोडेपर सवार होकर शहरकी राह ली।

* क्वेकरेस—मिसरानीका एक फिरका। क्वेकरेस स्त्री लिंग है।

अठहत्तरवां परिच्छेद।

महाराजसे दूसरी मुलाकात।

जिस दिन टिम मौगल्स लौटकर लण्डन आया, उसी दिन शामके वक्त महाराज और महारानी दोनोंने बड़ी धूमधामके साथ सेण्ट जेम्स-प्रासादमें लेवी और ड्राइङ्ग रूम दर्बारका जलसा किया। सुतरां कितनी ही उपाधिधारिणी तुच्छ स्त्रियां और पुरुष राज-प्रासादके जलसेमें शामिल हुए। एक ओर देशभरके आदमी दुःख दारिद्र्यसे जर्जरित होकर हाहाकार कर रहे थे। और दूसरी ओर थोड़ेसे अपदार्थ स्त्री पुरुष महाआडम्बरके साथ अपना धन, ऐश्वर्य दिखानेमें ही मग्न थे। यह दृश्य असहनीय था।

जिस ष्टुअस तीसरे जार्जको तुलनामें 'नीरो'* और 'कैलीगुला'†को महामहर्षि कहना कोई अत्युक्ति न होगी, वेही आज अपनी योग्य

---

* 'नीरो'—रोमका बादशाह (३७—६८ ई०) जी० डी० अहेनोबारबस अग्रीपिनाका लड़का था। उसका असल नाम था—एल० डी० अहेनोबारबस। रोमके बादशाह क्लाडियसके साथ उसकी माताकी शादी होनेके बाद बादशाहने उसे गोद बैठा लिया। क्लाडियसकी मृत्युके बाद नीरोकी माने चेष्टा करके उसे तख्त पर बैठाया। यह अपनी माताके शासनसे निकलनेकी चेष्टा करने लगा और अपने सौतेले भाई ब्रिटैनिकसको, जो बादशाह क्लाडियसका खास लड़का था, जहर दिला दिया। उसके बाद उसने अपनी माता और स्त्रीकी हत्या की। फिर उसने पापियासेबिनाके साथ (जिससे उसकी पहले होसे प्रीति थी) विवाह किया और एक दिन क्रोधमें आकर उसे भी मार डाला इसी तरह उसने और भी कितने ही आदमियोंकी हत्या की। ६८ ई० में गौलका गवर्नर उसके विरुद्ध उठ खड़ा हुआ। स्पेनके एक प्रदेशके गवर्नर गल्बाने उसका साथ दिया। गल्बाको रोमवालोंने राजसिंहासन पर बैठाया। नीरो रोमसे भाग खड़ा हुआ और दूसरे दिन उसने आत्मघात कर डाला।

† 'कैलीगुला'—रोमका बादशाह (१२—४१ ई०) जरमेनिकस और अग्रीपिनाका पुत्र था। उसका असली नाम गैयस सीजर था। सिपाहियोंने उसका नाम कैलीगुला रख दिया

पत्नी महारानी शारलौटीको साथ लेकर कुछ उपाधि धारी खुशामदियोंकी पूजा ग्रहण करनेके लिये प्रवृत्त हुये थे। हाय! हाय! खुशामदी भी कैसे भयानक होते हैं। ये लोग भूलकर भी भगवानका नाम नहीं लेते, पर आज सानन्द शिर-झुकाये उन नर-कुल-कलङ्कोंकी चरणपूजा करनेके लिये उनमत्त हो उठे थे।

लेवो और ड्राइङ्ग-रूमका दरबार रीतिके अनुसार खतम हो गया। बालकोंकी क्रीडा दोषशून्य होती है, पर यह क्रीडा दोष-पूर्ण थी। यह क्रीडा कुछ आदमियोंके अहङ्कार और कुछ मनुष्योंके अत्याचार तथा उत्पीडनको स्थायी करनेवाली थी। जो हो,पांच बजेके अन्दर ही जलसा खतम हो गया। महारानी कपड़ा बदलनेके लिये चली गईं और महाराज भी "राय क्लोसेट" नामक कमरेमें पधारे। जिन लोगोंपर महाराजका विशेष अनुग्रह रहता था, दरबारके बाद वे इसी कमरेमें उन लोगोंसे मुलाकात करते थे।

महाराज अभी उस कमरेमें पधारे ही थे, कि इसी समय नौकरने दो कार्ड लाकर उनके सामने रख दिये। उनमेंसे एकपर "मिष्टर मीगल्स" और दूसरेपर "लेडी लेड" लिखा हुआ था। इन दोनों नामोंको देखते ही महाराज जल उठे। पहले तो उन्होंने सोचा, कि मुलाकात करनेका कोई काम नहीं, पर पीछे विचारा, कि गतवार जब ये लोग विण्डसरमें मिलने आये थे, तब मेरे सम्बन्धकी अति प्रयोजनीय बात लेकर ही आये थे, क्या ताज्जुब है, कि इसबार

था पिताकी मृत्युके बाद वह गद्दीपर बैठा। कुछ दिन तो उसने न्यायके साथ बहुत अच्छी तरह राज किया। पर,जब एक कड़ी बीमारीके बाद वह अच्छा हो गया, तो एकदम जालिम हो उठा। सच पूछो, तो वह पागल हो गया था। उसने अपने घोड़ेको एलची बना दिया और अपने कुछ सैनिकोंको मानोंब्रिटेनपर आक्रमण करनेके लिये गोलके किनारे लेगया फिर वहां उन्हें विजयके स्वरूप घोंघा, कौड़ी वगैरह चुननेका हुक्म दिया। ४१ ई० के जनवरी महीनेमें उसका एक फौजी अफसर बागी हो गया और उसने उसे कतल कर डाला।

उससे भी कोई भारी बातके विषयमें आये हों ? इस तरह सोच-विचार कर महाराजने नोकरको उन दोनोंके गुप्त-पथसे लानेका हुक्म दे दिया। सुतरां कुछ ही मिनटोंमें मौगल्स और लिटोमिया दोनों महाराजके सामने हाजिर कर दिये गये।

मौगल्स महाराजसे मिलनेके लिये अच्छी काली पोशाक पहनकर आया था, पर लेडी लिटोमिया लेड अपनी विधवा वाली पोशाक हीमें थी। इस पोशाकमें वह बहुत खूबसूरत भी दिखाई देती थी।

नौकरको चले जानेका इशारा करके महाराजने दोनों आगन्तुकोंसे पूछा,—"इसबारकी खबर क्या है ?"

मौगल्स,—"किसी गुरुतर विषयके सम्बन्धमें ही इसबार फिर हम लोग महाराजका दर्शन करने आये हैं।"

अब लिटोमियाकी ओर क्रोधसे दिखाकर महाराजने पूछा,—"तुम इसे अपने साथ क्यों लाये हो ? गतबार तुमने इसे अपनी स्त्री बताया था,—हा—अपनी स्त्री—मिसेस मौगल्स—मौगल्स। पर वह बात बिल्कुल झूठ थी, बिल्कुल झूठ। जार्ज—यानी प्रिन्स-आफ-वेल्सने पीछे इसका सारा हाल मुझसे कह दिया था। एक दिन रातको वह नशेके झोंक—नहीं नहीं—बात ही बातमें उसने मुझसे कह दिया, कि नकली मिसेस मौगल्स असलमें कौन है। तुमने इसे अपने साथ मेरे पास लानेका कैसे साहस किया ?"

इसपर मौगल्सने निःशङ्क उत्तर दिया,—"इसे गवाहकी तरह ले आया हूं। श्रीमानके बड़े लड़के प्रिन्स-आफ वेल्सने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। होम आफिस भी बीच बीचमें दगाबाजी कर बैठती है, इसलिये आज महाराजसे मेरी जो बातचीत होगी, उसके लिये　　　। बड़ी ही जरूरत है और इसीसे

पत्नी महारानी शारलौटीको साथ लेकर कुछ उपाधि धारी खुशामदियोंकी पूजा ग्रहण करनेके लिये प्रवृत्त हुये थे। हाय! हाय! खुशामदी भी कैसे भयानक होते हैं। ये लोग भूलकर भी भगवानका नाम नहीं लेते, पर आज सानन्द शिर-झुकाये उन नर-कुल-कलङ्कोंकी चरणपूजा करनेके लिये उनमत्त हो उठे थे।

लेवो और ड्राइङ्ग-रूमका दरबार रीतिके अनुसार खतम हो गया। बालकोंकी क्रीडा दोषशून्य होती है, पर यह क्रीडा दोष-पूर्ण थी। यह क्रीडा कुछ आदमियोंके अहङ्कार और कुछ मनुष्योंके अत्याचार तथा उत्पीडनको स्थायी करनेवाली थी। जो हो, पांच बजेके अन्दर ही जलसा खतम हो गया। महारानी कपड़ा बदलनेके लिये चली गईं और महाराज भी "राय क्लोसेट" नामक कमरेमें पधारे। जिन लोगोंपर महाराजका विशेष अनुग्रह रहता था, दरबारके बाद वे इसी कमरेमें उन लोगोंसे मुलाकात करते थे।

महाराज अभी उस कमरेमें पधारे ही थे, कि इसी समय नौकरने दो कार्ड लाकर उनके सामने रख दिये। उनमेंसे एकपर "मिष्टर मोगल्स" और दूसरेपर "लेडी लेड" लिखा हुआ था। इन दोनों नामोंको देखते ही महाराज जल उठे। पहले तो उन्होंने सोचा, कि मुलाकात करनेका कोई काम नहीं, पर पीछे विचारा, कि गतबार जब ये लोग विण्डसरमें मिलने आये थे, तब मेरे सम्बन्धकी अति प्रयोजनीय बात लेकर ही आये थे, क्या ताज्जुब है, कि इसबार

था पिताकी मृत्युके बाद वह गद्दीपर बैठा। कुछ दिन तो उसने न्यायके साथ बहुत अच्छी तरह राज किया। पर जब एक कड़ी बीमारीके बाद वह अच्छा हो गया, तो एकदम जालिम हो उठा। सच पूछो, तो वह पागल हो गया था। उसने अपने घोड़ेको एलची बना दिया और अपने कुछ सैनिकोंको भागोविटैनपर आक्रमण करनेके लिये गोलके किनारे लेगया फिर वहां उन्हें विजयके स्वरूप घोंघा, कौड़ी वगैरह चुननेका हुक्म दिया। ४१ ई० के जनवरी महीनेमें उसका एक फौजी अफसर बागी हो गया और उसने उसे कत्ल कर डाला।

उससे भी कोई भारी बातके विषयमें आये हों? इस तरह सोच-विचार कर महाराजने नौकरको उन दोनोंके गुप्त-पथसे लानेका हुक्म दे दिया। सुतरां कुछ ही मिनटोंमें मौगल्स और लिटोशिया दोनों महाराजके सामने हाजिर कर दिये गये।

मौगल्स महाराजसे मिलनेके लिये अच्छी काली पोशाक पहनकर आया था, पर लेडी लिटोशिया लेड अपनी विधवा वाली पोशाक होमें थी। इस पोशाकमें वह बहुत खूबसूरत भी दिखाई देती थी।

नौकरको चले जानेका इशारा करके महाराजने दोनों आगन्तुकोंसे पूछा,—"इसबारको खबर क्या है?"

मौगल्स,—"किसी गुरुतर विषयके सम्बन्धमें ही इसबार फिर हम लोग महाराजका दर्शन करने आये हैं।"

अब लिटोशियाकी ओर क्रोधसे दिखाकर महाराजने पूछा,—"तुम इसे अपने साथ क्यों लाये हो? गतबार तुमने इसे अपनी स्त्री बताया था,—हां—अपनी स्त्री—मिसेस मौगल्स—मौगल्स। पर वह बात बिल्कुल झूठ थी, बिल्कुल झूठ। जार्ज—यानी प्रिन्स-आफ-वेल्सने पीछे इसका सारा हाल मुझसे कह दिया था। एक दिन रातके वक्त नशेके झोंके—नहीं नहीं—बात ही बातमें उसने मुझसे कह दिया, कि नकली मिसेस मौगल्स असलमें कौन है। तुमने इसे अपने साथ मेरे पास लानेका कैसे साहस किया?"

इसपर मौगल्सने निःशङ्क उत्तर दिया,—"इसे गवाहकी तरह ले आया हूं। श्रीमान्‌के बड़े लड़के प्रिन्स-आफ वेल्सने मेरे साथ अच्छा व्यवहार नहीं किया। होम आफिस भी बीच बीचमें दगाबाजी कर बैठती है, इसलिये आज महाराजसे मेरी जो बातचीत होगी, उसके लिये एक गवाहकी बड़ी ही जरूरत है और इसीसे

गवाहकी तरह मैं इसे अपने साथ लेता आया हूं। इसे मेरी बहुत सी गुप्त बातें मालूम हैं। इसीसे मैंने सोचा, कि किसी अनजान आदमीको न ले जाकर अगर इसे ही ले चलूंगा, तो महाराजको कोई आपत्ति न होगी।"

"वाह! कैसी अच्छी बात कही—कैसी अच्छी बात।" इतना कह महाराज आप ही आप कहने लगे,—"सचमुच ही मर्दाने लिबासमें यह जैसी अच्छी दिखाई देती—है, वैसी ही खूबसूरत विधवाके वेशमें भी दिखाई पड़ती है—दिखाई पड़ती है। पर अफसोस यही है, कि यह जैसे कुलकी है, उससे अच्छी न हुई। यह बात मोगलूस और लिटोयियाके कानमें न पड़ी। अब मोगलूसकी ओर फिरकर जोरसे महाराजने पूछा,—"अच्छा, अब बताओ, काम क्या है?—काम क्या है?"

इसपर मोगलूसने दृढ़ता पूर्वक कहा,—"घटनाक्रमसे महाराजसम्बन्धी कुछ बहुत ही जरूरी कागज पत्र मेरे हाथ लग गये हैं।"

यह सुन महाराजने बड़ी घबराहटके साथ कहा,—"कागज!—जरूरी कागज!—कौनसे कागज? इस बार तुम फिर कागज लेकर आये हो,—फिर कुछ भसना चाहते हो—अपने राजाको फिर दिक करना चाहते हो। अच्छा, बोलो—बोलो, कैसे कागज हैं?"

इतना कहकर महाराज तीक्ष्ण दृष्टिसे मोगलूसकी ओर देखने लगे। स्थिर दृष्टिसे उनकी ओर देखता हुआ मोगलूस कहने लगा,—"किसी स्त्रीकी चिट्ठी-पत्री और उसके साथ साथ कुछ टीका टिप्पणियां। उस स्त्रीका नाम सुनकर आपके मनमें जो जो बातें उदय होंगी, उनसे आप सुखी न होंगे।"

यह सुनते ही महाराजका चेहरा जर्द पड़ गया। उन्होंने खिजलाकर कहा,—"जब आते हो, तब यही एक ही गलछेड़ते और एक

ही सुर अलापते हो। वह सब जाल है—एकदम जाल। उससे क्या होगा ? तुम मेरा क्या कर लोगे ? जाओ,—जाओ अपना काम देखो।" इतना कहकर महाराज कमरेके दूसरे छोरपर चले गये।

यह देख मोगल्सने जोरसे कहा,—"सुनिये, महाराज! सुनिये, न तो मैं जाल करना जानता हूं और न जालिया ही हूं। आप मुझपर वृथा कलङ्क लगाते हैं। जितने जालिये आप हैं, उसका आधा भी मैं नहीं हूं।"

इतना सुनते ही मारे क्रोधके महाराज आगबबूला हो गये और जमीनपर जोरसे पैर पटककर बोले,—"क्या।—ऐसी बात।—तुझे क्या जेलकी हवा खानेकी इच्छा हुई है ?"

मोगल्स,—(निडर) "अब आप मेरा कुछ भी नहीं कर सकते।"

लिटोब्रिया,—"हन्ना लाइटफूटका नाम क्यों नहीं सुना देते, जिससे महाराज समझ जावें, कि हम लोगोंका काम कैसा है।"

यह सुन कुछ पीछे हटकर महाराज कहने लगे,—"आह! वह नाम।—नहीं,—नहीं,—वह नाम मत लो। भले आदमी! आओ हम लोग शान्त और स्थिर होकर बातें करें। अब मैं बैठ जाता हूं; अच्छा, मोगल्स।—विचित्र नाम है,—मोगल्स—बहुत ही विचित्र—मोगल्स—मोगल्स।—क्या कहना चाहते हो, कहो।"

मोगल्स,—"सुनिये, महाराज! अब साफ ही कहता हूं। उक्त किलामत मिस हन्ना-लाइटफूट और लेडी ट्रैमफोर्डकी आपसकी खत किताबत और उनके ऊपरकी हुई टीका टिप्पणियां आप कितने दाममें खरीदना चाहते हैं ?"

इतना कह और पाकेटसे कागजके मुट्ठेको निकाल कर मोगल्सने उसके ऊपरकी कुछ पङ्क्तियोंको पढ़ दिया, जिनका जिक्र ऊपर किया आ चुका है।

अब महाराजको पिछली सब बातें याद आ गईं; उनका चेहरा पीला पड़ गया। वे अब अच्छी तरह समझ गये, कि मैं एकदम मोगल्स और लिटोशियाके हाथमें हूं। फिर, दुःखित होकर वे आपही आप कहने लगे,—"खत-कितावत।—लेडी ष्टैमफोर्ड।—टीका टिप्पणी।—"

यह देख मोगल्सने चुपचाप लिटोशियाके कानमें धीरेसे कहा,—"अबमार लिया है, सुन्दरी।"

इसपर लिटोशियाने उसी तरह जवाब दिया,—"वह तो अब हम लोगोंकी मुट्ठीमें है। देखना, डिउकडम (डिउकका खिताब) से कममें राजी न होना।"

मोगल्स,—(दृढता सहित) "कभी नहीं।"

महाराज,—(धीरे धीरे) "अच्छा। जो जखम अभी अच्छी तरह सूखा भी नहीं था, उसको तुमने नोच दिया। तुम्हारे राजाका मान, सम्भ्रम इस समय तुम्हारे ही हाथमें है। अब जो कुछ कहना हो, कहो, मै स्थिर होकर सुनता हूं।"

मोगल्स,—"मै यह सुनकर बहुत खुश हुआ, कि महाराज मेरी बात सुननेके लिये तय्यार हैं। जिसमें इस बारेमें फिर श्रीमान्से मुलाकात करनेकी आवश्यकता न पड़े, इस लिये, इन कागजोंमें क्या है, उसका वर्णन अब संक्षेपसे किये देता हूं। उससे आप ही मालूम हो जायगा, कि उनका जो दाम मैं मागने वला हूं वह कम होगा या ज्यादा?"

महाराज,—"अच्छा, कहो।"

मोगल्स,—"१७५६ ई० में जब आप प्रिन्स-आफ-वेल्स थे, तभी मिस हना लाइटफूटपर मुग्ध हो गये थे। वह क्वेकर मतावलम्बिनी रमणी सिवा शादी करनेके और किसी तरह राजी हो न होती थी। लाचार और कोई उपाय न देख आपने अपना परिचय देते हुए

१८५७ ई० के फरवरी महीनेमें मिस हन्ना लाइटफूटको एक चिट्ठी लिखी। यद्यपि इस पुलिन्देमें वह चिट्ठी नहीं है, पर उसका जिक्र अवश्य है। इसके बाद १७५७ ई०के अप्रेल महीनेमें ईश्वरको साक्षी देकर आपने गुप्तभावसे हन्ना लाइटफूटके साथ विवाह कर लिया। विवाहका सार्टिफिकेट पाकर वह सन्तुष्ट हो गई, उसी सालके जून महीनेमें हन्नाको गर्भ रह गया। तब वह लेडी ष्टैमफोर्डके साथ एलसवरोके निकट ष्टैमफोर्ड मेनरमें जाकर रहने लगी। घटनाचक्रसे लेडी ष्टैमफोर्ड भी उसी समय गर्भवती हुई थी। कई हफ्तेके बाद हन्ना लाइटफूट फिर लण्डन लौट आई। उधर प्रसव-काल क्रमश: समीप आने लगा। १७५८ ई० के जनवरी महीनेमें आप विवाह बन्धन तोड़ देनेके लिये बारम्बार बहुत आर्जू-मिन्नत सहित हन्नाके पास पत्र लिखने लगे। इस बातसे अत्यन्त दु:खित होकर वह मन्दभागिनी लण्डनसे भाग गई और लेडी ष्टैमफोर्डकी कोठीमें जाकर रहने लगी। उस समय उन दोनोंके प्रसवका समय अति निकट आ गया था, सुतरां कुछ ही घण्टोंके बीचमें दोनोंने बच्चा जना। उसके बाद जो कुछ हुआ, उसे महाराज अच्छी तरह जानते ही हैं। वे सब बातें खुद लेडी ष्टैमफोर्डके हाथकी लिखी हुई हैं। लेडी ष्टैमफोर्डका पुत्र पैदा होनेके कई घण्टे बाद ही मर गया। तब उसने अपने स्वामीकी रायसे हन्नाके पुत्रको अपना कहकर ग्रहण कर लिया”

महाराज अब क्या करें? आखिर नितान्त कातर स्वरसे उन्होंने कहा,—“सच—सब सच है। अच्छा, उन कागजोंमें तुमने और क्या पाया है,—बताओ तो?”

मोगल स,—“और क्या पाया है? अच्छा, सुनिये;—जब सर विलियम और लेडी ष्टैमफोर्डने आपके लड़केको अपनाकर आप की खबर दी, तब आपने उन लोगोंके पास लिखा, कि यह युक्ति

बहुत अच्छी है। फिर उस लड़केका लालन-पालन करके वे लोग मरते समय अपनी सारी सम्पत्ति उसे दे गये। वह लड़का अभी वर्त्तमान है और उसका नाम 'सर रिचर्ड ष्टैमफोर्ड' है। यही कारण है, कि राज-परिवारके साथ उसका रूप-रङ्ग बहुत कुछ मिलता है। इन सब बातोंको क्या आप फिर मुझसे सुनना चाहते हैं?"

"बस—बस" कहकर महाराज बड़ी बेचैनीसे कमरेमें टहलने लगे। फिर सहसा मीगलसकी बांह पकड़कर वे कहने लगे,—"उन कागजोंकी क्या कीमत चाहते हो?"

मीगलस,—"उनकी कीमत बहुत ज्यादा है।"

महाराज,—"कितनी?—कुछ कहो भी तो?"

मीगलस,—"डिउकडम।"

यह सुनते ही महाराज अवाक हो गये और भौंह सिकोड़कर मीगलसकी ओर कुछ देर देखनेके बाद 'डिउकडम' कहकर फिर टहलने लगे।

अब लिटोशियाने मीगलसके कानमें धीरेसे कहा,—"देखना, खबरदार! मारक्विसकी पदवी देना चाहें, तो भी राजी न होना।"

मीगलस,—"अगर लाख रुपये वार्षिक पेन्शन के साथ मारक्विसकी पदवी भी मिले, तो कुछ बेजा नहीं है।"

इसी समय चित्तको स्थिरकर महाराज खड़े होगये और कहने लगे,—"मिष्टर मीगलस! तुम बहुत ज्यादा दाम मांगते हो! तुम्हें इस पदवीसे विभूषित करनेकी तो कोई राह दिखाई ही नहीं देती। अगर इससे कुछ कमपर राजी हो, अर्थात् अर्ल—"

मीगलस,—"महाराजको मैं बहुत सताना भी नहीं चाहता। मारक्विसकी पदवीपर भी, मैं राजी हो जाऊंगा। आप खुद ही विचारकर देखिये,—मैंने तो बहुत नहीं मांगा है। जिन

दुश्चरिता स्त्रियोंने दूसरे चार्ल्सको आत्मसमर्पण किया था, उन सबके लड़के भी तो 'डिउक' होगये थे—"

महाराज,—"बस—बस—बहुत हुआ। अच्छा, तुम्हें मारक्किस ही बना दूंगा।"

अब लिटोथियाने मोगल्सके कानमें कहा,—"क्यों, टिम! मैं बराबर कहती थी न कि एक न एक दिन तुम बड़े आदमी होगे। क्यों,—अब तो मुझे मारश्रियोनेश बनाओगे न?"

महाराज,—(लिटोथियाकी ओर बताकर) "वह सब क्या कहती है?"

मोगल्स,—"वह कहती है, कि इस बातसे महाराजको कष्ट होता है इसलिये इसे जल्द खतम कर डालना चाहिये।"

महाराज,—"यही कहती है?—यही कहती है तब तो यह बहुत अच्छी औरत है,—बहुत अच्छी। अच्छा, तो लाओ, कागजोंको मुझे दे दो, कुछ दिनोंके बाद मैं तुम्हारे पास खबर भेज दूंगा।"

अब लिटोथिया ने फिर धीरेसे मोगल्सके कानमें कह दिया,—"खबरदार! मूर्खता न करना।"

यह देख महाराजने पूछा,—"अब क्या कहती है?'

मोगल्स,—"यही कहती है, कि मारक्किसका परवाना और इन कागजोंका लेना देना एक साथ ही होना अच्छा है। दोनों मामलोंका एक साथ ही मिट जाना ठीक है।"

यह सुन गुस्सेसे लाल होकर महाराजने कहा,—"तो तुम लोग मेरी बातका विश्वास नहीं करते?"

मोगल्स,—"महाराज हमेशा राज-काजमें व्यस्त रहते हैं। इन कागजोंको अगर मैं अभी दे जाऊं, तो ताज्जुब नहीं, कि काम-काजकी झंझटोंमें महाराज खिताब देनेकी सामान्य बातको भूल जायं।"

महाराज,—"नहीं, मैं समझता हूं—मेरी बात पर तुम लोगोंका विश्वास नहीं है। पर यह बड़े अपमानकी बात है। क्या तुम बता सकते हो, कि मैंने कभी अपनी प्रतिज्ञा भङ्गकी है?"

मोगल्स,—(निःशङ्क चित्तसे) "जी हां, एक निरीह स्त्रीका हृदय तो अवश्य तोड़ डाला है।"

यह सुन वृद्ध महाराज अत्यन्त विह्वल हो उठे। उन्हें यह ज्ञान न रहा, कि इस वक्त मेरे पास कोई खड़ा है। अत्यन्त व्याकुल होकर वे आप ही आप बोल उठे,—"हन्ना लाइटफूट! आज तुम्हारा बदला चुक गया,—मजेमें चुक गया।"

इतना कहकर महाराज तीसरे जार्जने दोनों हाथोंसे अपना मुँह ढाक लिया। उनकी उँगलियोंके बीचसे आंसू टपक पड़े।

हाय! उस समय वृद्ध महाराजके मनमें उनकी युवावस्थाकी प्रेम-तरङ्ग महावेगके साथ प्रवाहित होने लगी। पिछली बातोंके याद हो जानेसे वे अत्यन्त दुःखित हो उठे। प्रतिज्ञा करके उन्होंने उसका पालन नहीं किया, शपथ करके उसकी रक्षा नहीं की, इन बातोंके याद आजाने वे नितान्त कातर हो गये। राजा होनेसे क्या होता है,—मनुष्यके भोग्याभोग्यको वे रोक न सके। जिनके अत्याचारसे लाखो प्राणी जर्जरित हो रहे थे, वे आज अपने ही विवेकके उत्पातसे छटपटा रहे थे। राजा होकर भी इस समय वे अति दीन, हीन, क्षुद्र हो रहे थे।

ऐश्वर्य्यके सर्वोच्च शिखरपर बैठकर जो संसारके ऊपर आधिपत्य कर रहे थे, वे आज अपने ही हृदयसे परास्त हुए थे। आज उनके हृदयमें जो आग धधक रही थी, उसपर उनका वश न चला! जिसके रोबसे लाखों प्राणी डरके मारे काप उठते थे, आज अपने भयसे यह आप ही भयभीत हो रहा था। जिसके भीम-पराक्रमसे

प्रजा-प्राधान्य-विधिका भीषण स्रोत सारे फ्रान्स-राज्यको प्लावितकर इङ्गलैण्डके श्वेत पर्वतके नीचेतक आकर भी विफलमनोरथ हो रहा था, जिसके पराक्रमरूपी सीकलमें लाखों जीव बंधे हुए थे,—आज वही अपने आपसे परास्त हो रहा था, आज विवेकबिच्छू उसके हृदयमें बारम्बार डंक मार रहा था। जो व्यक्ति नित्य लाखों प्राणियोंको रुलाया करता था, आज वही हत्या लाइटफूटका नाम याद आनेपर रो रोकर व्याकुल हो रहा था।

इस समय महाराज तीसरे जार्जको अपने तन-वदन की सुधि नहीं थी। उधर मोगल्स और लिटोग्रिया एक दूसरेको मतलब भरी निगाहसे देख रहे थे। महाराजको उनकी उपस्थितिका कुछ भी खयाल नहीं था। सहसा वे चैतन्य हुए और यथासाध्य आत्म-संयम कर बोले,—"मिष्टर मोगल्स। सुविधा होते ही मैं तुम्हें मारक्विस बना दूंगा।"

मोगल्स,—"पेन्शन सहित।"

महाराज,—"हां, पेन्शन सहित। यह काम ऐसे ढङ्गसे करना होगा, जिसमें निन्दा न हो, और यदि हो भी, तो बहुत कम। ऐसे राज-सम्मान पानेका तो कोई काम तुमने किया नहीं, इस-लिये बहुत सोच-समझकर ही कोई उपाय निकालना पड़ेगा। समझते हो न?"

मोगल्स,—"कुछ कुछ। अच्छा, आप क्या करना चाहते हैं?"

महाराज,—"कितने ही खिताब वालोंका वंश-नाश होगया है, मैं शीघ्र ही उनकी फेहरिस्त निकलवाऊंगा। यदि मारक्विसकी कोई पदवी खाली मिल जाय, तो तुम उसके लिये दावा करना। दावा साबित करनेके कागजात सहज ही तय्यार किये जा सकते हैं। फिर जब वह बात महासभामें उठेगी, तब मैं तुम्हारा ही पक्ष ग्रहण करूंगा, अवश्य ही इन सब कामोंके करनेमें कई महीने

लग जायेंगे। सम्भवतः आगामी वर्षके प्रारम्भतक यह काम हो जायगा, तब तक——"

मौगल्स,—"बहुत अच्छा,—कागजोंको मैं बड़ी हिफाजतसे रखूंगा, कोई देखने न पावेगा।"

महाराज,—"उसमें तुम्हारा ही लाभ है। अच्छा, अब जाओ।"

इतना कह और कुछ शिर झुकाकर महाराज चले गये। इधर आशा पूर्ण होनेके आनन्दसे आनन्दित होकर मौगल्स और लिटीशियाने भी अपनी राह ली।

उन्यासीवां परिच्छेद।

लड़केकी खोज और भयानक आतङ्क।

गत परिच्छेदकी घटना जिस दिन घटी, उसके दूसरे दिन सवेरे ही महाराज तीसरे जार्जने सपरिवार विण्डसरकी यात्राकी। मौगल्स और लिटीशियासे मुलाकात करनेके बाद महाराज बहुत बेचैन हो उठे थे, इसलिये विण्डसर जानेपर राज-काजके कागजात देखनेका बहाना कर वे कुछ देरतक अकेले ही अपने कमरेमें बैठे रहे।

दुःखी महाराज अब अपने लड़केको देखनेके लिये अत्यन्त व्याकुल हो उठे थे;—महारानी शारलोटीके गर्भजात पुत्रको नहीं, बल्कि उस पुत्रको जो उनके और हना लाइटफूटके गुप्त प्रेमका फल स्वरूप था।

मौगल्सने जिन कागजोंको पाया था और जिनका हाल उसने संक्षेपमें महाराजके सामने बयान किया था, उससे पाठक समझ गये होंगे, कि महाराजको यह बात मालूम थी, कि लेडी ईम-

फोर्डके लड़केके मर जानेपर इन्ना लाइटफुटने अपना लड़का उसे दे दिया था। सचमुच बात ऐसी ही थी। शुरूसे ही महाराज इस बातको जानते थे, पर जैसे जैसे दिन बीतने लगे, महाराज भी उस लड़कीकी सुधि भूलने लगे। इन्ना लाइटफुट इस भेदको अपने साथ कब्रमें लेती गई, और सर विलियम तथा लेडी टेमफोर्डने भी मौत तक इस भेदको किसीसे न कहा। इसलिये जब वर्त्तमान सर रिचर्ड उनकी सब धन-सम्पत्तिके मालिक हुए, तब लोगोंको पूरा विश्वास हो गया, कि ये सचमुच ही मृत बैरोनेट और उनकी स्त्रीके ही लड़के हैं। उधर जब महाराज तीसरे जार्जने देखा, कि भण्डा किसी तरह नहीं फूटा, तब उन्होंने सर रिचर्डको इस बातका जताना भी उचित न समझा।

उसके बाद जब सर रिचर्डके दुर्दिन आये और वे बड़े भारी मुकद्दमेमें फँस गये, तब महाराज अपने पुत्रके लिये मन ही मन बहुत घबराये, पर करें क्या? खुलकर किसी तरह उसे मदद भी न दे सकते थे। अखबारोंमें सर रिचर्ड सम्बन्धीय कितनी ही बातें छपने लगीं, 'प्रिन्स आफ वेल्ससे, उनका चेहरा बहुत मिलता जुलता है, यह बात भी प्रकाशित हुई। इन सब बातोंको पढ़कर महाराजको 'इन्ना'की बात याद आ गई और वे अत्यन्त सन्तप्त हो उठे। व्याकुलता सहित वे प्रतिदिन अखबार पढ़ते रहे, अन्तमें जब उन्होंने देखा, कि सर रिचर्ड बेकसूर साबित होकर रिहाई पा गये हैं, तब वे बहुत खुश हुए।

इस तरह महाराजका मन बहुत कुछ स्थिर हो गया था, पर इधर मौगल्स और लिटीशियासे बातचीत हुई, उससे उनका दुःख फिर ताजा हो गया,—इन्ना लाइटफुटका शोक फिर उन्हें सताने लगा, और एकबार अपने लड़कीको देखनेके लिये वे व्याकुल हो उठे।

विधाताकी विधि अति दुर्ज्ञेय और मनुष्यके मनकी गठन अति अद्भुत है। दुष्कर्म्मी—पापीका निस्तार नहीं,—पापी पाप करता है, सामाजिक वा ईश्वरीय नियम भङ्ग करता है, पर बहुत दिन बीत जानेपर भी वह उस पापकी बातको नहीं भूलता। जहां पापी दुष्कर्म्म करता, वा जिसका अनिष्ट करता है, एक न एक दिन वह अवश्य ही उस स्थान वा मनुष्यको देखने जाता है। मनकी उत्तेजनासे उसने जिसपर अत्याचार किया है, एक न एक दिन छिपकर वह अवश्य ही उसका कोई न कोई उपकार कर डालता है। नरघातक हत्या करके लाशको जहां गाड़ देता है उसका मन एक न एकबार उसे जरूर ही वहां ले जाता है? नौकर जब लड़कपनमें कुप्रवृत्तिके वशीभूत होकर अपने मालिकके बक्ससे प्रायः रुपये-पैसे उड़ा लिया करता है, तब बुराईसे बहुतसा धन कमा लेनेपर एक न एक दिन मय सूद दरसूदके उस चुराये हुए धनको बेनामी चिट्ठीके साथ अपने मालिकके पास भेज देता है, और तब उसकी आत्मा सन्तुष्ट हो जाती है। जो लोग धूर्त्तता करके सरकारी मालगुजारी हड़प जाते हैं, वे भी एक न एक दिन बिना अपना नाम जाहिर किये सरकारी खजानेमें उस रकमको जमा करा देते हैं। इसीसे 'टाइमस' नामक समाचारपत्रमें कोषाध्यक्ष द्वारा उस धनकी प्राप्ति-स्वीकार प्रायः देखी जाती है। ऐसी घटनायें एक नहीं, अनेक होती हैं। अतएव आज जो महाराज तीसरे जार्ज अपने पुत्रको खोजने और एकबार उसे देखनेके लिये व्याकुल हो उठे हैं, इसमें विचित्रता ही क्या है?

सेण्ट जेम्स नामक राज प्रसादमें मोगल्सके साथ बातचीत होनेके बाद महाराज बहुत बेचैन हो उठे। समय बीतने लगा, पर महाराज किसी तरह शान्त न हो सके। वे कभी उठकर कमरेमें टहलने लगते और कभी आकर सोफापर बैठ जाते, पर किसी तरह उनके

हृदयकी ज्वाला न दूर होती। इना लाइटफुटकी मूर्त्ति मानो उनके साथ साथ घूमने लगी। आंखोंको मूंद लेनेपर भी इना उनके मानो नेत्रोंके सामने दिखाई देने लगी। धीरे धीरे उस अप्रत्यक्ष रमणी-मूर्त्तिको मानो वे प्रत्यक्ष देखने लगे।

महाराजसे और न रहा गया। वे आपही आप कहने लगे,—"इना! और क्यों?—इस तरह क्यों जलाती हो,—इना? मैंने तुम्हारा सर्वनाश अवश्य किया है, पर क्या तुम मुझे क्षमा न करोगी? लड़केको देखूंगा,—तुम्हारे पुत्रको देखूंगा और उसके सुखी रहनेका उपाय भी कर दूंगा।—हां, अब तुम्हारे मुखपर हँसीकी रेखा दिखाई दी! अच्छा, अब जाओ, निश्चिन्त होकर आराम करो, मैं उससे मिलूंगा, यदि उसे धनका कष्ट होगा, तो उस कष्टको दूर कर दूंगा। यदि उसे बड़े आदमी होनेकी इच्छा होगी, तो उस इच्छाको पूर्ण कर दूंगा। इनके अलावा यदि उसके मनमें और कोई कष्ट होगा, तो उसके साथ सहानुभूति दिखाऊंगा, पर वह मेरा कौन है—यह बात उससे न कहूंगा। अरे! तुमने फिर मुंह फुला लिया! अच्छा, शान्त, स्थिर हो, यह बात भी उससे कह दूंगा। अब जाओ, मेरे पीछे पीछे न घूमो।"

अब वह अप्रत्यक्ष रमणी-मूर्त्ति धीरे धीरे उनके नेत्रोंकी ओट होकर आकाशमें विलीन हो गई। महाराजका मन भी स्थिर हुआ। फिर भोजनालयमें जाकर उन्होंने भोजन किया। उस समय रातके आठ बज चुके थे। खाना खानेके बाद महाराज फिर अपने खास कमरेमें चले गये और अपने एक विश्वासी नौकरको बुलाकर कहने लगे,—"मैं जो कुछ कहता हूं, उसे मन लगाकर सुनो। एल्सवरीके पास 'सर रिचर्ड ट्रेमफोर्ड' नामक जो एक आदमी रहता था और जिसकी कोठी आज कई महीने हुए, लार्ड इसबरोने खरीद ली है, उसकी बात तुमने अवश्य सुनी होगी?"

पैरोंसे लिपटकर बड़े कातर स्वरसे कहने लगी,—"बाबा! क्षमा करो,—दया करो।"

महाराज उस समय अधैर्य्य हो उठे थे। उन्होंने भर्राई हुई आवाजमें कहा,—"मन्दभागिनी? यह तू क्या कर बैठी। तू नहीं जानती,—यह तो तेरा भाई है।"

अमीलिया,—"नहीं, बाबा। दोनोंके रूपमें समानता होनेके कारण आपको भ्रम हो गया है। ये तो सर रिचर्ड्स ष्टैमफोर्ड हैं।"

महाराज,—"सो मैं जानता हूं। ये इसा लाइटफूटके गर्भजात मेरे ही पुत्र हैं।"

यह सुन भयसे एकदम अविभूत होकर बैरोनेटने मुंह ढांक लिया और कहा,—"कैसा सर्वनाश है!"

अब अधमरीसी होकर अमीलिया उठ खड़ी हुई और बड़े दुःखसे बोली—"बाबा! आपने यह क्या कहा?"

महाराज,—"और क्या कहूंगा। उठती जवानीमें मेरा मन एक अनुपमा सुन्दरीपर मुग्धहो गया था। ये सर रिचर्ड्स ष्टैमफोर्ड—"

यह सुन थरथर कांपती हुई अमीलिया सोफापर बैठ गई। फिर रुंधे हुए गलेसे कहने लगी,—"बस, अब और कुछ मत कहिये। ये मेरे भाई हैं। परमेश्वर इस पापको क्षमा करें।"

महाराज,—"पाप!—नहीं—नहीं,—अभीतक तो तूने कोई पाप नहीं किया?"

मन्दभागिनी अमीलियाने इसका कुछ भी जवाब नहीं दिया। उसका शरीर एकदम शिथिल हो गया; मुंहसे बोल न निकली। वह अचल, अटल बैठी रही। उधर महाराज भी अवाक् और मृतप्राय हो रहे थे। बैरोनेट भी चुपचाप खड़े थे। निदारुण यन्त्रणासे उनका मन अस्थिर हो रहा था। आज इन तीन प्राणियोंके प्राणमें एक साथ ही भीषण आघात लगा था, उसका वर्णन कौन



प्रेमालापमें भयानक भण्डाफोर।

सर रिचर्ड स्टैमफोर्ड, राजकुमारी एमान्थिया और महाराज तीसरे जार।

(चौथा खण्ड—१८ वां परिच्छेद।)

Burman Press, Calcutta

कर सकता है ? आखिर सर रिचर्डने उठकर महाराजका हाथ पकड़ लिया और कहा,—"क्या यह बात सच है ?"

महाराज,—"हां, सच,—एकदम सच है। तुम मेरे ही लड़के हो, पर अब तुम्हें आलिङ्गन करनेका साहस नहीं होता।"

बैरोनेट,—"ठीक ही है। कैसे हो सकता है ? पर मुझे शाप न दीजिये—"

महाराज,—"रिचर्ड। मैं क्या शाप दूंगा,—शाप तो तुम्हें ही देना चाहिये।"

अब कुछ स्थिर होकर अमीलियाने कहा,—"किसीको शाप देने-का काम नहीं। जो होना था, हो गया, अब यह खयाल कीजिये, कि इस बातके प्रकट हो जाने पर कैसा भयानक गोलमाल मचेगा।"

महाराज,—"ठीक कहती हो।"

"जरा चुप रहिये" इतना कह और दरवाजा खोल कर सर रिचर्ड बाहर चले गये और थोड़ी देर तक सीढ़ी पर खड़े होकर चारों ओर देखते रहे, पर जब कहीं कोई न दिखाई पड़ा, तब लौट आकर बोले,—नहीं, डरनेकी कोई बात नहीं है। हम तीनों आदमियोंके सिवा यह बात और किसीके कानमें नहीं पड़ी। मकानमें पूरा सन्नाटा छाया हुआ है। मकान वाला और उसकी स्त्री दोनों बड़े भले आदमी हैं। छिपकर किसीका भेद लेनेकी आदत उन लोगोंमें नहीं है।"

अमीलिया,—"अच्छा, बाबा! आप यहां क्या करने आये थे ? मेरे यहां आने-जानेकी खबर क्या किसीको लग गई है ?"

महाराज,—"नहीं,—मैं किसीसे कोई बात सुनकर यहां नहीं आया। इतने दिनोंके बाद सहसा लड़कीको देखनेकी इच्छा अत्यन्त प्रबल हो उठी, इसीसे चुपचाप यहां चला आया। इस बातके प्रकाश करनेकी इच्छा न थी, पर घटनाक्रमने हठात् यह

बात मेरे मुंहसे निकल गयी। अच्छा, क्या तुम लोगोंका विवाह हो गया है?"

"बाबा। राजकुमारियोंका विवाह क्या छिपा कर हो सकता है? वैसी हालतमें कन्यादान कौन करता?" यह, कह कर, अमीलिया रोने लगी।

बैरोनेट,—"अमीलिया। अब मत रोओ। जो कुछ हो गया है, वह अब लौटनेका नहीं। अनुताप और आत्मग्लानि से ही उस पापका उपयुक्त प्रायश्चित हो सकता है। ईश्वर तो जानते हैं, कि अनजानमें हम लोगोंसे यह पाप हो गया है।"

महाराज,—"आओ चलो, अमीलिया। यहां रहनेसे कष्ट बढने के सिवा घट नहीं सकता। रिचर्ड। मन स्थिर होने पर मैं फिर शीघ्र ही तुमसे मिलूंगा।"

बदनसीब बैरोनेटने पिताकी यह बात नहीं सुनी। वे मुंह मूंदकर रो रहे थे। कुछ देरके बाद जब उन्होंने आंख खोलकर देखा, तो वहां और किसीको न पाया।

अस्सीवां परिच्छेद।

कपड़ेवाली और उसका नया यार।

पाठक! अब दृश्य बदलता है। अब हम एक बार फिर मिसेस ब्रेसके पास मालवाले मकानके उस कमरेमें चलते हैं, जिसमें कितने ही भले आदमियोंकी कितनी ही बार आदर-अभ्यर्थना की गयी थी। आज इस समय वह उसी कमरेमें मिष्टर फ्रेडरिकके साथ बैठी हुई है। पाठक, शायद यह न भूले होंगे, कि यह फ्रेडरिक किसी समय मिसेस ब्रेसका एक अदना नौकर था।

फ्रेडरिक, अब वह फ्रेडरिक नहीं रहा। अब वह भला आदमी बन गया है। आज वह जुएके अड्डेमें बहुत सा रुपया हार आया है, इससे उसका मन खराब हो रहा है। इसके अलावा दो तीन दिनसे उसकी तबीयत भी ठीक नहीं है। अपनी जिन्दगीमें वह पहिली ही बार बीमार हुआ है, इसीसे बहुत दिक हो रहा है।

मिसेस ब्रेसके अब वे दिन नहीं है। उसका वह खिलता हुआ गुलाबसा चेहरा अब सूख गया है, दोनों मारू आंखें धंस गई हैं और उनके चारों ओर विषाद-कालिमा बैठ गई हैं। यद्यपि उसका शरीर एकदम सूख नहीं गया, पर उसमें अब वह लावण्य और गुदगुदापन नहीं रहा। यद्यपि उसके कपडे पहले ही जैसे साफ सुथरे हैं और वही सुन्दर पेरिसकी टोपी शिर पर सुशोभित है, पर अब उसमें वह बहार नहीं है। एक समय मिसेस ब्रेसके अधर कैसे सरस दिखाई देते थे, हँसीमें कैसी मधुरताकी लहर उठती थी, पर अब समयके फेरसे वह कुछ भी नहीं है। वे सरस अधर अब विवर्ण हो गये हैं और दांतोंकी वैसी ही चमक रहनेपर

भी उस हँसीमें अब मधुरताका नाम निशान नहीं है। वह प्रफुल्लित चित्तवाली सुन्दरी देखते ही देखते चिन्ताग्निसे जल कर शोभाशून्य हो गई है।

टेबिल पर अच्छी अच्छी खानेकी चीजें कायदेसे चुनी हुई हैं और दो तीन बोतल, अच्छीसे अच्छी शराब भी रखी हुई है; इसी समय फ्रेडरिक्स बाहरसे आ, टोपीको एक ओर रख आराम कुरसी पर बैठ गया और मिसेस ग्रेसके चेहरेकी ओर देखकर कहने लगा,—"जब मैं आता हूं, तभी तुम्हारी रोनी सूरत देखनेमें आती है,—इसका क्या मतलब है?"

ग्रेस,—(अति विषण्ण भावसे) "फ्रेडरिक! मैं तो कही चुकी हूं, कि मेरे मनमें अब सुखका लेशमात्र भी नहीं है।"

फ्रेडरिक,—"तो शम्पेन उड़ाकर सब चिन्ता-फिक्रको भगा क्यों नहीं देतीं?"

ग्रेस,—"शम्पेन इसलिये नहीं पीती, कि नशा उतर जाने पर तबीयत बहुत ही खराब हो जाती है। अकेले मुझसे रहा नहीं जाता, रह रह कर आत्महत्या करनेकी इच्छा प्रबल हो उठती है। तुमसे तो यह बात कई बार कह चुकी हूं, फिर भी तुम बारबार वही बात पूछते हो।"

फ्रेडरिक,—"पूछता हूं इसीलिये, कि मैं तुम्हें ऐसा देखना नहीं चाहता। दुःख देखनेसे मेरे मनमें कैसा एक प्रकारका भय उत्पन्न हो जाता है। तीन चार दिनोंसे मुझे भी न मालूम क्या हो गया है, कि कुछ भी अच्छा नहीं लगता?"

ग्रेस,—"खाओगे नहीं?"

फ्रेडरिक,—"नहीं,—खाया न जायगा। एक घूंट पानी पीनेसे जी मचलाने लगता है।"

ग्रेस,—"कुछ जुएके नशेने ही तुम्हारी यह हालत कर डाली है।"

फ्रेडरिक,—"तुम तो ऐसा कहोगी ही। तुम्हारा खजाना खाली हुआ जाता है न? और अब खाली तुम्हारा ही क्यों कहूं, अब तो हम दोनोका ही कहना चाहिये, क्योंकि यद्यपि तुम विवाह-बन्धनमें बँधना नहीं चाहती, तो भी हम दोनों आदमी तो ठीक स्त्री पुरुषकी ही तरह रहते हैं। और पहले जब मैंने तुमसे इस तरह रहनेकी बात कही थी, तब तुमसे रोजगारमें हानि पहुचनेका हवाला देकर तुमने कितनी ही बातें कह डाली थीं।"

ब्रेस,—"तो क्या कुछ झूठ कहा था? खुल्लमखुल्ला मेरे बराबर का नौकर रहनेसे रोजगारमें हानि होनेकी जो बात कही थी, वह तो हाथो हाथ फल गई। मेरे सेण्टजेम्स स्क्वायरवाले मकानमें आने वाले जितने बडे बडे मुवक्किल थे, उनमेंसे अब एक भी तो नहीं आता, और कपडेका काम भी दिन दिन मद्दी हुआ जाता है।"

फ्रेडरिक,—"सच?"

ब्रेस,—"सच नहीं तो क्या झूठ कहती हूं? यह बात तो मैं कई बार तुमसे कह चुकी हू।"

फ्रेडरिक,—"तुम्हारे दोनों रोजगार क्यों मद्दी हुए जाते हैं, यह मेरी समझमें नहीं आता। तुम्हारे सेण्टजेम्स स्क्वायरवाले मकानके मुवक्किलोंमें कितने ही एक न एकबार तुम्हारे कृपा पात्र हो चुके हैं। क्या वे नहीं जानते, कि तुम सती, साध्वी नहीं हो? और तुम्हारी दूकानमें जो लोग आते जाते थे, वे तो पूरे शोहदे थे। लुक-छिपकर आनन्द भोगनेके बदले अब एक आदमीके पास रहती हो, इसमें क्या दोष है? यह मेरी समझमें किसी तरह नहीं आता।"

ब्रेस,—"फ्रेडरिक! अगर मैं सब बाते खोलकर कह दू, तो तुम मेरे ऊपर बहुत नाराज हो उठोगे। आजकल तो तुम

बात बातमें उलझ पडते हो, इसीसे तो मेरी यह दुर्दशा हो रही है।"

फ्रेडरिक,—"अच्छा, तुम सब खोलकर कह डालो। मैं सौगन्ध खाकर कहता हूं; कि मैं जरा भी नाराज न हूंगा। आज मैं बातको खतम ही कर डालना चाहता हूं। तुम निश्शङ्क होकर सब कह डालो।"

ब्रेस,—"अच्छा, तो लो सुनो,—अगर मैं किसी उमराव वा भले आदमीकी होकर खुल्लमखुल्ला बैठ जाती, तो कोई कुछ भी न कहता, पर तुम्हें जो बावर्चीखानेसे निकालकर बैठकखानेमें बैठा लिया है, यह बात किसीको भी अच्छी नहीं लगी।"

फ्रेडरिक—"यह उन लोगोंकी मूर्खता है। उन्हें भाडमें झोंक दो।"

ब्रेस,—"भाडमें तो सहज ही झोंक दिये जा सकते हैं, पर ऐसा करनेसे माल तो न मिलेगा न। तिसपर आजकल तुमने जो लत पकडी है, उससे बहुत जल्द ही सब धन स्वाहा हो जायगा। तुम्हें कुछ मालूम है, कि इन कई हफ्तोंमें तुमने नकद कितना रुपया खर्च कर डाला है?"

फ्रेडरिक—"मालूम होता है, तुम उसका हिसाब रखती हो?"

ब्रेस,—क्यों, रखूंगी नहीं? सिर्फ जुए में ही तुमने तीन चार हजार पाउण्ड फूंक दिये हैं। इसके ऊपर तुम्हारी अमीरीका खर्च अलग है। इस तरह तो अब चल नहीं सकता। आज तुमने जो काम काजकी बात उठाई है, यह अच्छा ही हुआ है।"

फ्रेडरिक,—"आज मेरी तबीयत बहुत ही खराब हो रही है, इसीसे मन भी कैसा हो गया है। जो हो, आओ हम लोग कोई उपाय सोचें। तुम्हारी क्या राय है?"

ब्रेस०,—"चलो, हम लोग अमेरिका चल दें। इङ्गलैण्ड अब

मुझे नहीं सुहाता। यहां पग पगपर विपद दिखाई देती है, न मालूम कब कौन बात जाहिर हो जाय।"

फ्रेडरिक,—"बस चुप! और कुछ कहनेका काम नहीं, मैं समझ गया। मव्सवाली घटनाके बाद तुम मुझे धोखा देकर अमेरिका भाग जाना चाहती थीं, पर मैं तुम्हारी चालाकी समझ गया—"

ग्रेस,—"फिर इस बातको क्यों छेड़ते हो? मैंने तो तुमसे कह दिया है, कि अगर मेरी और तुम्हारी राय मिल जायगी, तो मैं अपना वह सब इरादा छोड़ दूंगी। देखो, अब तक मैंने कोई दूसरी बातकी है?"

फ्रेडरिक,—"बेशक नहीं की, पर क्यों नहीं की, यह मैं जानता हूं। मैंने तो कह रखा है, कि अगर तुमने फिर कोई चालाकी की, तो तुम्हारी खोपड़ी एकदम चूर चूर कर डालूंगा।"

यह सुन मिसेस ग्रेसकी आखोंसे आंसू निकल पड़े। उसने कहा,—"देखो, जब काम-काजकी बातचीत होती है, तब तुम इस तरह मेरे साथ क्यों पेश आते हो?"

फ्रेडरिक,—"बस चुप रहो। और रोने धोनेका काम नहीं। आज मेरी तबीयत बहुत खराब मालूम होती है, इसीसे तुम्हारे ऊपर गुस्सा आता है। शिर भी दर्द करता है और शरीर भी कैसा तो होरहा है। खैर, तुम अमेरिका जाना चाहती हो, अच्छा ही है। अब मैं इस बातसे उतना नाराज नहीं हूं। पहले लण्डन मुझे बड़े आनन्दका स्थान मालूम होता था, पर अब मजा नहीं है। और अब तुम कहती हो, कि कामकाज सब मट्टी हुआ जाता है—"

ग्रेस,—मैं तो कुछ झूठ नहीं कहती। तीन महीने पहले दूकानमें ग्यारह लड़कियां काम करती थी, पर अब सिर्फ तीन ही रह गई हैं। रसेल फारेष्टर प्रसवके बाद बहुत बीमार हो

हूं। मैंने सुना है, कि आपको सवेरे सोनेकी आदत नहीं है। इसके अलावा मैं लार्ड फ्लोरिमेलके यहांसे आया हूं—"

यह सुन मिसेस ब्रेसने खयाल किया, कि अभीतक मेरे कुछ मुरव्वी बने हुए हैं सबने ही मुझे नहीं त्याग दिया। इससे बहुत कुछ सन्तुष्ट होकर उसने पूछा,—"क्या तुम उनके नौकर हो ?"

राव,—"हां, नौकर और विश्वासपात्र दोनों ही हूं। उन्होंने किसी विशेष कामके लिये मुझे आपके पास भेजा है। यदि आप उसमें मदद दे सकें, तो खुशकर दो जायंगी।"

इसपर मिसेस ब्रेसने हँसकर कहा,—"इसके कहनेकी कोई जरूरत नहीं है। बोलो, मैं अपने परम प्रिय मित्र लार्ड फ्लोरिमेलके किस काम आ सकती हूं ?"

राव,—'वे तो हमेशा ही आपका नाम लिया करते हैं।"

ब्रेस,—"तुम्हारे मालिक अब तक मुझे नहीं भूले, यह जानकर मैं बहुत खुश हूं। सुननेमें आया है, कि उनकी तबीयत कुछ खराब हो गई है, इसीसे वे आब-हवा बदलनेके लिये दूसरी जगह चले गये हैं।"

राव,—"आपने ठीक ही सुना है। अच्छा, अब कहिये तो मैं संक्षेपमें कामकी बात कह डालूं ?"

ब्रेस,—"शौकसे कहो, मैं सुननेके लिये तय्यार हूं।"

राव,—"तो सुनिये, लार्ड फ्लोरिमेल किसी नाजनीके प्रेम-पाशमें फँस गये हैं—"

ब्रेस,—"मिस पालिनके न?"

राव,—"नहीं, वह नशा तो उतर गया है। इस समय जिस सुन्दरी पर वे लट्टू हैं, वह आग्रह और प्रेमोत्साहमें उनके योग्य ही है। पर न मालूम उस रमणी पर कैसी सनक सवार हो गई है, कि बिना

विवाह हुए न तो वह अपना नाम ही बताती है और न मुँह ही दिखाना चाहती है।"

ब्रेस,—"वाह! यह तो बड़ी विचित्र बात है। जिसका मुँह तक नहीं देखा, उसकी उलफतमें कैसे फँस गये?"

राव,—"विचित्र होनेपर भी बात सच है। आखसे न देखनेपर भी लार्ड फ्लोरिमेलको विश्वास हो गया है, कि वह कोई परी-पैकर है। बल्कि लण्डन और डोवरमें वे लोग कई बार मिल चुके हैं। उस रमणीके सर्वाङ्गमें कई बार हाथ फेर कर भी मेरे मालिकने देख लिया है। इन सब बातोंसे उन्हें पूर्ण विश्वास हो गया है, कि ऐसो सुन्दर अङ्गवाली स्त्रीका मुँह कभी बुरा नहीं हो सकता।"

ब्रेस,—"तो वह रमणी सतीत्वकी उतनी कद्र नहीं करती?",

राव,—"जो हो, मुझे उन बातोंसे क्या मतलब। मैं इतना ही जानता हूँ, कि जब तक विवाह न हो जायगा, तबतक वह किसी तरह अपनेको जाहिर न करेगी। लेकिन उसने लार्ड फ्लोरिमेलसे इतना जरूर कह दिया है, कि विवाह हो जाने पर अनुतापका कोई कारण न रहेगा।"

ब्रेस,—"तुम चाहे जो कहो, पर मैंने तो अपनी जिन्दगी भरमें ऐसी अद्भुत बात नहीं सुनी। कौन कह सकता है, कि इसका नतीजा बुरा न होगा? लार्ड फ्लोरिमेल तो बड़े चालाक आदमी है, समझदार होकर भी वे बिना सोच समझे उसपर ऐसे लट्टू हो रहे हैं, यह बड़े ही आश्चर्यकी बात है।"

राव,—"देखिये, इस बातपर तर्क-वितर्क करनेके लिये मैं यहां नहीं आया। मेरे स्वामी और उनकी प्रणयिनीने जिस कामके करनेकी ठान ली है, उस कामको पूरा करनेमें आप सहायता दे सकती हैं, या नहीं? मैं सिर्फ यही जानने आया हूँ।"

ब्रेस,—"यह तो मैं पहले ही कह चुकी हूँ। बोलो, मुझे क्या

करना होगा ? पर यह बात एकदम नई है, जल्द विश्वास ही नहीं होता, इसीसे दो एक बात मुँहसे निकल गई। खैर जो हो, अब मैं कुछ भी न कहूँगी। बताओ, मुझे क्या करना होगा ?"

राव,—"यदि विचारकर देखा जाय, तो संसार ही आश्चर्यमय है। आपने तो बहुत कुछ देखा सुना है, आपको मैं और क्या कहूँ ?"

ब्रेस,—"सच है। अच्छा, तुम्हारे मालिक मुझसे कौनसा काम लिया चाहते हैं ?—मुझे क्या करना होगा ?"

राव,—"लार्ड फ्लोरिमेल कल शामको लण्डन आजायंगे। उनकी प्रणयिनीके आज आनेको बात थी, शायद वे आ गई होंगी। मैं भी आज ही शामको आया हूँ। विवाहके बन्दोबस्त करनेका सब भार मुझे ही दिया गया है।"

ब्रेस,—"तो जल्द ही शादी होगी ?"

राव,—"यदि सब बन्दोबस्त हो जाय, तो कल ही शामको विवाह भी हो जायगा। और यदि आपको कोई उज्र न हो, तो वह काम यहीं हो।"

ब्रेस,—"नहीं, मुझे कोई उज्र नहीं है। अच्छा, इस तरह छिप-लुककर शादी करनेको जरूरत ही क्या है ? लार्ड फ्लोरिमेलके खास मकानमें भी तो यह काम मजेमें हो सकता है ?"

राव,—"जरूरत और क्या है ? विवाहको बात तो सबको मालूम हो ही जायगी। एकदम स्त्रीको साथ लेकर ही लार्ड फ्लोरिमेल मकानमें जाना चाहते हैं। उनको इच्छा केवल यही है, कि इस विवाहमें जो नवीनता है, वह किसी पर प्रकट न हो। अब तो सब समझ गई न ?

ब्रेस,—"हां समझ गई, पर बिना उसका नाम जाने लार्ड फ्लोरिमेल विवाह कैसे कर सकेंगे ? पुरोहितको तो नाम बताना ही पड़ेगा, और लाइसेन्समें भी तो नाम दर्ज करनेको जरूरत होगी।"

राव,—"उससे क्या ? कोई नाम कह देनेसे हो हुआ। उससे शादी तो नाजायज न होगी ? लार्ड फ्लोरिमेलको जो लाइसेन्स लेना होगा, उसका बन्दोबस्त तो मैं कल सबेरे होकर लूंगा। आपको एक ऐसे पुरोहितका प्रबन्ध कर देना होगा, जो कुछ गोलमाल न करे और न कुछ पूछे-ताछे हो।"

ब्रूस,—(कुछ सोचकर) "ऐसे एक आदमीको मैं जानती हूं।"

राव,—"लार्ड फ्लोरिमेलको मालूम है, कि आप अनायास ही इन सब बातोंका बन्दोबस्त कर दे सकती हैं। कल रातके नौ बजे पुरोहितको ठीक कर रखिये, तो बहुत अच्छा हो। और एक बात है,—आप अपने उस मकानमें,—यानी सेण्ट-जेम्स स्क्वेयरवाले मकानमें कुछ कमरे भी उनके लिये ठीक कर रखियेगा।"

ब्रूस,—(हँसती हुई) "मालूम होता है लार्ड फ्लोरिमेलने तुमसे मेरे मकानकी बात भी कुछ कुछ कह दी है।"

राव,—"आपके मकानका सब हाल मुझे मालूम है, पर इस समय उसके कहनेकी कोई जरूरत नहीं। तो अभी जो बात-चीत हुई है, उसे आप समझ गईं न ?——"

रावकी बात खतम होते न होते ही सदर दरवाजेका घण्टा जोरसे बज उठा। मिसेस ब्रूस घण्टेकी आवाज पाकर चौंक उठी और राव चुप हो गया।

ब्रूस,—(घबराहटके साथ) "दो चार मिनटके लिये माफ करो। नौकर सो गये हैं। मैं ही जाकर देखूं, कि कौन आया है।"

राव,—"हां, जाइये, मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजिये।"

रावकी मीठी बात सुन मिसेस ब्रूस मुस्कराती हुई दरवाजा खोलने चली गई।

अयासीवां परिच्छेद ।

गुप्त श्रोता ।

मिसेस ब्रेसके जाने बाद जब राव उस कमरेमें अकेला रह गया, तब वह आप ही आप कहने लगा,—"इसकी कैसी दशा हो गई है। घण्टेकी आवाज पाते ही कैसी चौंक उठी। यह पापका फल है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। पापने इसे ऐसा बना डाला है और पाप होके कारण यह इस तरह डर जाती है। इसने अवश्य ही कोई भयानक काम किया है। खाली फिक्रसे ऐसी खुशदिल औरत इस तरह बुजदिल नहीं हो सकती। जो हो अगर किसी तरह इसका भेद मालूम हो जाता तो इससे भी बदला चुका लेता, और उससे तो चुका हुआ ही समझना चाहिये। उसमें अब देर ही क्या है ?———"

इस तरह कहता हुआ राव ज्यों ही बैठकखानेके दरवाजेके पास जाकर खडा हुआ, कि साथही कुछ आदमियोंके पैरकी चाप उसके कानमें पडी। फिर उसने किसीको साफ ही "चुप" कहते सुना इसके बाद ही उसने मिसेस ब्रेसको यह कहते सुना :—

"इस कमरेके अन्दर चलो, तबतक कुछ भी न बोलना जब—" इसके बाद उसने क्या कहा, यद्यपि रावने उसे नहीं सुना, तथापि वह समझ गया, कि ऐसी ही कोई बात कही गई है, कि "जबतक तुम लोग इकट्ठे न हो जाओ, और दरवाजा अच्छी तरह बन्द न कर लिया जावे, तब तक कुछ भी न बोलना।"

अब रावको कपडेकी सरसराहटसे मालूम हुआ, कि बैठकखानेकी तरफ कोई आ रहा है, इसलिये वह चट अपनी जगहपर जा बैठा। उसका अनुमान ठीक निकला। उसके बैठते ही मिसेस

ब्रेस आ पहुंची। उसका रङ्ग-ढङ्ग देखते ही राव समझ गया, कि वह अत्यन्त चञ्चल हो रही है।

ब्रेस,—"देखो, जो लोग अभी आये हैं उनसे मुझे कोई विशेष काम है; इससे तुम अगर कल सवेरे एकबार आ जाते, तो बहुत अच्छा होता।"

राव,—"मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजिये, और खुशीसे आकर अपना काम खतम कर डालिये। घण्टा दो घण्टा मैं अनायास ही ठहर सकता हूं। यहांका काम आज रातमें ही ठीक कर जाना होगा, क्योंकि कल दिनभर मुझे फुरसत न मिलेगी।"

ब्रेस,—"अच्छा, अगर ठहरनेमें तुम्हें कोई उज्र नहीं है, तो मजेमें बैठो, मै बहुत जल्द आती हूं। कुछ खाओगे पियोगे?"

राव,—"नहीं।"

इतना कह रावने पास होके टेबिलपरसे कविताकी एक पुस्तक उठा ली और कहा,—"जबतक आप नहीं आतीं, तबतक इसीसे मन बहलाऊंगा।"

इसके बाद मिसेस ब्रेस बैठकखानेसे चली गई। उसके जाने बाद किताबको रख राव भी उठ खडा हुआ, और अभी कुछ देर पहले वह जहां जाकर खडा हुआ था, फिर उसी जगह जा खडा हुआ।

अब राव आप ही आप कहने लगा,—"उसके पैरकी आहटसे ही मुझे मालूम हो गया है, कि वह किस कमरेके अन्दर गई है। न मालूम इस मकानका हाल तो मुझे रत्ती रत्ती मालूम है। न मालूम आज इन लोगोंकी बातचीत सुननेके लिये मेरी ऐसी इच्छा क्यों हो रही है। मुझे साहस करना ही होगा।" ऐसा स्थिरकर वह चला और धीरे धीरे दबे पांव उसी कमरेके दरवाजे के पास जा सांस रोककर खडा हो गया, जिसमें मिसेस ब्रेस अभी गई थी। रावको यहीं छोडकर अब हम कमरेके अन्दर चलते हैं।

बयासीवां परिच्छेद।

गुप्त श्रोता।

मिसेस ब्रूसके जाने बाद जब राव उस कमरेमें अकेला रह गया, तब वह आप ही आप कहने लगा,—"इसकी कैसी दशा हो गई है। घण्टेकी आवाज पाते ही कैसी चौंक उठी। यह पापका फल है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। पापने इसे ऐसा बना डाला है और पाप होके कारण यह इस तरह डर जाती है। इसने अवश्य ही कोई भयानक काम किया है। खाली फिक्रसे ऐसी खुशदिल औरत इस तरह बुजदिल नहीं हो सकती। जो हो अगर किसी तरह इसका भेद मालूम हो जाता तो इससे भी बदला चुका लेता, और उससे तो चुका हुआ ही समझना चाहिये। उसमें अब देर ही क्या है?———"

इस तरह कहता हुआ राव ज्यों ही बैठकखानेके दरवाजेके पास जाकर खड़ा हुआ, कि साथही कुछ आदमियोंके पैरकी चाप उसके कानमें पड़ी। फिर उसने किसीको साफ ही "चुप" कहते सुना इसके बाद ही उसने मिसेस ब्रूसको यह कहते सुना :—

"इस कमरेके अन्दर चलो, तबतक कुछ भी न बोलना जब—" इसके बाद उसने क्या कहा, यद्यपि रावने उसे नहीं सुना, तथापि यह समझ गया, कि ऐसी ही कोई बात कही गई है, कि "जबतक तुम लोग इकट्ठे न हो जाओ, और दरवाजा अच्छी तरह बन्द न कर लिया जावे, तब तक कुछ भी न बोलना।"

अब रावको कपड़ेकी सरसराहटसे मालूम हुआ, कि बैठकखा नेकीतरफ कोई आ रहा है, इसलिये वह झट अपनी जगहपर जा बैठा। उसका अनुमान ठीक निकला। उसके बैठते ही मिसेस

ब्रेस आ पहुंची। उसका रङ्ग-ढङ्ग देखते ही राव समझ गया, कि वह अत्यन्त चञ्चल स्त्री है।

ब्रेस,—"देखो, जो लोग अभी आये हैं उनसे मुझे कोई विशेष काम है, इससे तुम अगर कल सवेरे एकबार आ जाते, तो बहुत अच्छा होता।"

राव,—"मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजिये, और खुशीसे आकर अपना काम खतम कर डालिये। घण्टा दो घण्टा मैं अनायास ही ठहर सकता हूं। यहांका काम आज रातमें ही ठीक कर जाना होगा, क्योंकि कल दिनभर मुझे फुरसत न मिलेगी।"

ब्रेस,—"अच्छा, अगर ठहरनेमें तुम्हें कोई उज्र नहीं है, तो मजेमें बैठो, मैं बहुत जल्द आती हूं। कुछ खाओ पियोगे?"

राव,—"नहीं।"

इतना कह रावने पास होके टेबिलपरसे कविताकी एक पुस्तक उठा ली और कहा,—"जबतक आप नहीं आतीं, तबतक इसीसे मन बहलाऊंगा।"

इसके बाद मिसेस ब्रेस बैठकखानेसे चली गई। उसके जाने बाद किताबको रख राव भी उठ खड़ा हुआ, और अभी कुछ देर पहले वह जहां जाकर खड़ा हुआ था, फिर उसी जगह जा खड़ा हुआ।

अब राव आप ही आप कहने लगा,—"उसके पैरकी आहटसे ही मुझे मालूम हो गया है, कि वह किस कमरेके अन्दर गई है। इस मकानका हाल तो मुझे रत्ती रत्ती मालूम है। न मालूम आज इन लोगोंकी बातचीत सुननेके लिये मेरी ऐसी इच्छा क्यों हो रही है। मुझे साहस करना ही होगा।" ऐसा स्थिरकर वह चला और धीरे धीरे दबे पाव उसी कमरेके दरवाजेके पास जा सांस रोककर खड़ा हो गया, जिसमें मिसेस ब्रेस अभी गई थी। रावको यहीं छोड़कर अब हम कमरेके अन्दर चलते हैं।

बयासीवां परिच्छेद

गुप्त श्रोता।

मिसेस ब्रूसके जाने बाद जब राव उस कमरेमें अकेला रह गया, तब वह आप ही आप कहने लगा,—"इसको कैसी दशा हो गई है। घण्टेकी आवाज पाते ही कैसी चौंक उठी। यह पापका फल है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। पापने इसे ऐसा बना डाला है और पाप होके कारण यह इस तरह डर जाती है! इसने अवश्य ही कोई भयानक काम किया है। खाली फिक्रसे ऐसी खुशदिल औरत इस तरह बुजदिल नहीं हो सकती। जो हो अगर किसी तरह इसका भेद मालूम हो जाता तो इससे भी बदला चुका लेता, और उससे तो चुका हुआ ही समझना चाहिये। उसमें अब देर ही क्या है?———"

इस तरह कहता हुआ राव ज्यों ही बैठकखानेके दरवाजेके पास जाकर खडा हुआ, कि साथही कुछ आदमियोंके पैरकी चांप उसके कानमें पडी। फिर उसने किसीको साफ ही "चुप" कहते सुना इसके बाद ही उसने मिसेस ब्रूसको यह कहते सुना :—

"इस कमरेके अन्दर चलो, तबतक कुछ भी न बोलना जब—" इसके बाद उसने क्या कहा, यद्यपि रावने उसे नहीं सुना, तथापि वह समझ गया, कि ऐसी ही कोई बात कही गई है, कि "जबतक तुम लोग इकट्ठे न हो जाओ, और दरवाजा अच्छी तरह बन्द न कर लिया जावे, तब तक कुछ भी न बोलना।"

अब रावको कपडेकी सरसराहटसे मालूम हुआ, कि बैठकखानेकी तरफ कोई आ रहा है, इसलिये वह चट अपनी जगहपर जा बैठा। उसका अनुमान ठीक निकला। उसके बैठते ही मिसेस

ब्रेस आ पहुंची। उसका रङ्ग-ढङ्ग देखते ही राव समझ गया, कि वह अत्यन्त चञ्चल हो रही है।

ब्रेस,—"देखो, जो लोग अभी आये हैं उनसे मुझे कोई विशेष काम है, इससे तुम अगर कल सवेरे एकबार आ जाते, तो बहुत अच्छा होता।"

राव,—"मेरे लिये कोई चिन्ता न कीजिये, और खुशीसे आकर अपना काम खतम कर डालिये। घण्टा दो घण्टा मैं अनायास ही ठहर सकता हूं। यहाका काम आज रातमें ही ठीक कर जाना होगा, क्योंकि कल दिनभर मुझे फुरसत न मिलेगी।"

ब्रेस,—"अच्छा, अगर ठहरनेमें तुम्हें कोई उज्र नहीं है, तो मजेमें बैठो, मैं बहुत जल्द आती हूं। कुछ खाओ पियोगे?"

राव,—"नहीं।"

इतना कह रावने पास होके टेबिलपरसे कविताकी एक पुस्तक उठा ली और कहा,—"जबतक आप नहीं आतीं, तबतक इसीसे मन बहलाऊंगा।"

इसके बाद मिसेस ब्रेस बैठकखानेसे चली गई। उसके जाने बाद किताबको रख राव भी उठ खड़ा हुआ, और अभी कुछ देर पहले वह जहा जाकर खड़ा हुआ था, फिर उसी जगह जा खड़ा हुआ।

अब राव आप ही आप कहने लगा,—"उसके पैरकी आहटसे मुझे मालूम हो गया है, कि वह किस कमरेके अन्दर गई है। इस मकानका हाल तो मुझे रत्ती रत्ती मालूम है। न मालूम आज इन लोगोंकी बातचीत सुननेके लिये मेरी ऐसी इच्छा क्यों हो रही है। मुझे साहस करना ही होगा।" ऐसा स्थिरकर वह चला और धीरे धीरे दबे पाव उसी कमरेके दरवाजे के पास जा सांस रोककर खड़ा हो गया, जिसमें मिसेस ब्रेस अभी गई थी। रावको यहीं छोड़कर अब हम कमरेके अन्दर चलते हैं।

बयासीवां परिच्छेद ।

गुप्त श्रोता ।

मिसेस ब्रूसके जाने बाद जब राव उस कमरेमें अकेला रह गया, तब वह आप ही आप कहने लगा,—"इसको कैसी दशा हो गई है! घण्टेकी आवाज पाते ही कैसी चौंक उठी। यह पापका फल है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। पापने इसे ऐसा बना डाला है और पाप होके कारण यह इस तरह डर जाती है। इसने अवश्य ही कोई भयानक काम किया है। खाली फिक्रसे ऐसी खुशदिल औरत इस तरह बुजदिल नहीं हो सकती। जो हो अगर किसी तरह इसका भेद मालूम हो जाता तो इससे भी बदला चुका लेता, और उससे तो चुका हुआ ही समझना चाहिये। उसमें अब देर ही क्या है?———"

इस तरह कहता हुआ राव ज्यों ही बैठकखानेके दरवाजेके पास जाकर खड़ा हुआ, कि साथही कुछ आदमियोंके पैरकी चांप उसके कानमें पड़ी। फिर उसने किसीको साफ ही "चुप" कहते सुना इसके बाद ही उसने मिसेस ब्रूसको यह कहते सुना —

"इस कमरेके अन्दर चलो, तबतक कुछ भी न बोलना जब—" इसके बाद उसने क्या कहा, यद्यपि रावने उसे नहीं सुना, तथापि वह समझ गया, कि ऐसी ही कोई बात कही गई है, कि "जबतक तुम लोग इकट्ठे न हो जाओ, और दरवाजा अच्छी तरह बन्द न कर लिया जाये, तब तक कुछ भी न बोलना।"

अब रावको कपड़ेकी सरसराहटसे मालूम हुआ, कि बैठकखानेकी तरफ कोई आ रहा है, इसलिये वह चट अपनी जगहपर आ बैठा। उसका अनुमान ठीक निकला। उसके बैठते ही मिसेस

किञ्चिन०,—"ठकुराइन। तुम्हारी जान कौन लेना चाहता है? मैंतो कहता हूं, कि तुम्हारी उम्र लाख वर्षकी हो——"

गैलेज०,—"क्यो बेफायदे बकवाद करता है, बिल? तुझे हम लोग अपनी हिफाजतके लिये लाई हैं, बक बक करनेके लिये नहीं।"

ब्रेस,—"हिफाजतकी बात क्यों कहती हो। यहा तुम लोगोंको डर ही किस बातका है? क्या तुम समझती हो, कि मैं तुम लोगोंके साथ कुछ बुराई करूंगी?"

गैलोज विडो मिसेस ब्रेसपर हृदयसे घृणा करती थी। इस समय उसका दिल दुखानेके लिये उसने कहा,—"ठकुराइन। जब बात तुमने छेड दी है, तब लाचार मुझे कहना ही पडता है, कि मुझे और केरोटी पोलको अकेले यहा आनेकी हिम्मत नहीं पडी, इसीसे इस छोकरेको साथ लेती आई हूं। तुम तो जानती ही हो, कि इस मकानके अन्दर आकर निकलना सहज नहीं है। ऐसी दो एक घटना हो भी गई है। मैं तो उस बार कही गई हूं, कि बावर्ची खानेमें जमीनके भीतर पिटर ग्रमले पडा सड रहा है और उसका असिस्टण्ट मबस भी उससे बहुत दूरपर नहीं है।"

इतना सुनते ही बदनसीब मिसेस ब्रेसका शरीर अवसन्न हो गया। उसने टूटी-फूटी आवाजमें कहा,—"अब फिर उन बातोंका जिक्र क्यों करती हो?"

गैलोज०,—"तुम्हींने न अभी कहा है, कि तुम लोगोंको यहा डर ही किस बातका है? इसीसे लाचार कहना पडा। ठकुराइन? यह तो ऐसा-वैसा मकान नही है। यह खूनका अड्डा है। यहांकी हवासे भी मुझे घृणा होती है।"

ब्रेस,—"बस माफ करो,—बहुत हुआ। अब अपने आनेका मतलब कह डालो।"

गैलोज,—"अच्छा, तो सुनो,—"

ब्रेस,—"हां कहो।"

गैलोज०,—"जो वारेन नामके आदमीको तुम अवश्य ही जानती हो, और उसका विचार शीघ्र ही होनेवाला है, यह भी तुम्हें मालूम होगा—"

ब्रेस,—"हां, मालूम है। कागजोंमें सब पढ़ा है।"

गैलोज०,—(कैरोटो पोलकी ओर बताकर) "और इसके बाप ष्टिफेन प्राइसका विचार भी उसीके साथ होगा। मुझे मालूम है, कि उन लोगोंको फांसीकी आज्ञा कभी न मिलेगी।"

ब्रेस,—"यह तुम कैसे कह सकती हो?"

गैलोज०,—"अभी उसी दिन एक जगह प्रिन्स हम लोगोंके फन्देमें पड़ गये थे। उनसे हम लोगोंने इस बातका एकरारनामा लिखवा लिया है। फांसीसे तो दोनों बच जायंगे, पर जन्म भरके काले पानीकी सजा उन्हें अवश्य मिलेगी। जहां वे दोनों जायंगे, कैरोटो पोल और मैं भी वहीं जाऊंगी। हम लोग जितनी रकम मिल सके, उतनी अपने साथ ले जाना चाहती हैं, इसीलिये आज तुम्हारी उदारताकी शेष परीक्षा करने आई है।"

ब्रेस,—"तुम लोग कितना चाहती हो?"

गैलोज०,—"दश हजारसे कमतो किसी तरह हो ही नहीं सकता। अगर इतनी रकम तुम खुशीसे दे दो, तो हम लोगोंकी भलाई-बुराई चाहे जो हो, फिर तुमसे कोई सम्बन्ध न रह जायगा, तुम एकदम हम लोगोंसे निश्चिन्त हो जाओगी।"

अब मिसेस ब्रेसने सोचा, कि यहांसे भाग चलनेके लिये प्रेमरट-रिकक्ट तो प्राय राजी हो ही गया है, शायद शीघ्र ही इङ्गलैण्ड त्याग देना होगा, इस लिये तुरत पर इन लोगोंको कुछ दिन टाल देनेमें ही सब बखेड़ा तय हो जायगा। यही सब सोच-विचारकर

उसने कहा,—"दश हजार ? ओह । पर क्या करूं, तुम लोगोंकी बात तो माननी ही पड़ेगी। अच्छा, चाहिये कब ?"

किश्चिन०,—"कब क्या।—अभी, इसी वक्त चाहिये।"

ब्रेस,—"इतनी रकम तो घरमें मौजूद नहीं है। बन्दोबस्त करनेमें कमसे कम एक हफ्ता लग जायगा।"

गैलोज०,—तब तक तो तुम शायद अमेरिकामें जा बैठोगी।"

ब्रेस,—(घबराकर) "क्यों,—ऐसा क्यों कहती हो ?"

गैलोज०,—"हूं, निशाना ठीक लगा है। देखो, मिसेस ब्रेस। जबतक दश हजार रुपया तुम न दोगी, तब तक हम लोग भी तुम्हारा मकान छोड़कर और कहीं न जायंगी।"

उस कमरेके दरवाजेसे कान सटाये हुआ राव सब बातें सुन रहा था। उसने सोचा कि रुपया लेने मिसेस ब्रेस जरूर ही आवेंगी, इस लिये अब इस जगह ठहरना मुनासिब नहीं। यह स्थिर कर वह वहांसे खिसक गया और फिर उसी बैठकखानेमें जाकर किताब पढ़ने लगा।

रावने जो सोचा था, वही हुआ। रावके लौटकर बैठनेके बाद ही मिसेस ब्रेस आईं और डेस्कसे कुछ निकाल कर फिर लौट गईं। इस बार रावने उसका पीछा करनेकी कोशिश न की। उसने खयाल किया, कि जितना मालूम हो गया है, उतना ही काफी है। फिर वह आप ही आप कहने लगा,—"उसने कोई दुष्कर्म किया है, यह तो मैं पहले ही समझ गया था, पर यह कौन जानता था कि यह ऐसा भयानक काण्ड कर बैठी है।" किताब हाथमें लिये राव इसी चिन्तामें निमग्न हो रहा था, कि इसी समय सहसा मिसेस ब्रेसके आजानेसे वह चौंक उठा।

ब्रेस,—"मुझसे बड़ा कसूर होगया है, माफ करना। जो लोग आये थे, वे मेरे बड़े भारी ग्राहक हैं। उन्हींसे बातचीत करनेमें इतनी देर हो गई।"

राव,—"कोई चिन्ता नहीं, ऐसे चाहे जितने खरीदारोंसे आप बातें करें, मेरा कुछ भी नुकसान नहीं है।"

ब्रेस,—"तुम बहुत ही अच्छे लडके और धन्यवादके पात्र हो।"

राव,—"अब और अधिक मुझे कुछ भी कहना नहीं है, आपको जो कुछ करना होगा, उसे आपने अच्छी तरह समझ ही लिया है। आपको एक ऐसा पुरोहित खोज रखना होगा, जो कोई बात पूछे ताछे नहीं, और अगर जरूरत आ पडे तो अन्धकारमें ही विवाह भी करा दे। यह तो हुआ आपका पहला काम, और दूसरा काम है, कुछ कमरोंको ठीक करवा रखना।"

ब्रेस,—"तुम्हारे मालिकका कोई काम रुका न रहेगा। मैं अपना सब काम कल नौ बजे रातके पहले ही ठीक कर रखूंगी।"

राव,—"(उठकर) "अच्छा, अब चलता हूं, आपको और अधिक तकलीफ देना नहीं चाहता, रात भी बहुत बीत गई है।"

इतना कहकर राव चल खडा हुआ। उसके जानेके बाद मिसेस ब्रेस उस घटना की बात सोचने लगी, जो उसके मकानमें अभी कुछ ही देर बाद पहले घटी थी।



तिरासीवां परिच्छेद।

मनसूबा और बन्दिश।

दूसरे दिन रातके आठ बजे राव हाथमें कागजका एक बक्स लिये मिसेस ब्रेसके मकानपर पहुंचा। उसने मिसेस ब्रेससे सुना, कि पुरोहित ठीक होगया है और नौ बजेके बाद आ जायगा। इसके बाद रावने कहा, कि अब चल कर उन कमरोंको भी दिखा दीजिये, जो इस शुभ कर्म्मके लिये स्थिर किये गये हैं। यह सुन मिसेस ब्रेस रावको अपने साथ, सेण्ट-जेम्स स्कोयरवाले मकानके एकतले और दोतलेके दालानों, बड़े बड़े कमरों और शयनागारोंको दिखाती और यह कहती हुई, कि इनमेंसे कोई या सब कमरोंको मैं लार्ड फ्लोरिमेलके लिये दे सकती थी, उन कमरोंमें ले गई, जो विवाहके लिये ठीक किये गये थे।

राव,—"ठीक है। अब मेहर्बानी करके अपने नौकर चाकरोंसे कह दीजिये, कि इस वक्तसे अगर कोई सदर दरवाजेका घण्टा बजावे, तो वे लोग दरवाजा खोलने न जायँ, यह भार मेरे ही ऊपर रहा।"

ब्रेस,—"अच्छी बात है। अगर तुम्हें और किसी बातकी जरूरत आ पड़े, तो मुझसे कहना, मैं उसी बैठकखानेमें मिलूंगी।"

राव,—"कन्या-दान आपहीको करना होगा। साढ़े नौ बजेके पहले आप तय्यार हो जाइयेगा, समय आ जानेपर या तो खुद मैं ही आकर बुला ले जाऊंगा और नहीं तो पुरोहितजीको भेज दूंगा।"

ब्रेस,—"बहुत अच्छा! यह तो बड़े आनन्दकी बात है।"

राव,—"एक बात और भी आपसे कहे देता हूं, जिसमें आप-

को उस समय विस्मय न हो। वह बात यही है, कि विवाह अन्धकारमें ही होगा।"

"अच्छा किया जो पहले ही कह दिया।" यह कहकर मिसेस ब्रेस चली गई। इधर रावने उन कमरोंमेंसे कुछको होने वाले कार्य्य के लिये स्थिर करके एक शयनागार अपने लिये ठीक कर लिया। फिर उस कमरेमें कागजवाला बक्स ले जाकर उसमेंसे दुलहिनके लिये सफेद गाउन, और बुरका वगैरह निकाल कर चारपाई पर रख दिया। इसके बाद कुछ देरतक उन कपड़ोंको स्नेहकी दृष्टिसे देख-कर यह आप ही आप बोल उठा,—"अन्तमें—" अभी उसकी बात पूरी भी न हुई थी, कि इसी समय किसीने सदर दरवाजेको दो बार जोरसे खटखटा दिया। रावने चट नीचे जाकर दरवाजा खोला, तो अपने सामने लार्ड फ्लोरिमिलको खड़े पाया। वे गाड़ीकी डाक बैठाकर सीधे डोवरसे आये थे। उनके साथ और कोई भी न था। गाड़ीसे मालिकका माल-असबाब उतार और कोचवानको भाड़ा देकर राव उन्हें एक शयनागारमें ले गया।

उस समय युवक लार्ड फ्लोरिमिलका मन कुछ चञ्चल हो रहा था। उन्होंने पूछा,—"क्यों राव! सब बन्दोबस्त ठीक है न?"

राव,—"जी हां, सब ठीक है।"

"तो चटपट मेरे कपड़े बदलनेका बन्दोबस्त कर दो। बहुत गर्मी लगनेके कारण गाड़ीकी खिड़कियोंको खोल दिया था, इसीसे सब कपड़े धूलसे भर गये हैं। शीघ्र ही वरके उपयुक्त कपड़े निकाल दो।" इतना कहकर फ्लोरिमिलने एक लम्बी सांस ली।

उन्हें लम्बी सांस लेते देखकर रावने अदबके साथ पूछा—"क्या, तबीयत कुछ खराब है?"

फ्लोरिमिल,—हां—नहीं—न मालूम मन कैसा तो कर रहा है, कुछ कह नहीं सकता। ऐसा जान पड़ता है, मानों मैं कोई दुस्सा-

अनजान औरत मुँहपर बुरका डाले भाड़ेकी गाडीसे नीचे उतरी। यह भी अपने साथ एक एक बक्स लिये, अकेली ही आई थी। उसके हाथसे बक्स ले और उसे ऊपरके एक कमरेमें लेजा रावने दरवाजेपर खडे होकर कहा,—"अगर आपको साथके लिये किसी स्त्रीकी आवश्यकता हो, तो मकानवाली मिसेस ब्रेस आनेके लिये तय्यार है।"

अनजान,—"नहीं, उसकी कोई जरूरत नहीं है। मैं सब अपने हाथसे ठीक कर लूंगी।"

इतना कह और रावके हाथसे बक्स लेकर उसने भीतरसे दरवाजा बन्द कर लिया।

इसके बाद राव अपने मालिकके पास चला गया और फ्लोरिमेलके पूछनेपर उसने कहा, कि हाँ, वह आ गई है। यह सुन एक लम्बी सांस लेकर लार्ड फ्लोरिमेल चुप हो रहे।

पन्द्रह बीस मिनटके अन्दर ही फ्लोरिमेल कपडे बदलकर तय्यार होगये। इसके बाद राव उन्हें शादीवाले कमरेमें ले चला।

उस कमरेमें जा और सोफापर बैठकर लार्ड फ्लोरिमेलने पूछा,— "क्यों राव! लाइसेन्स मिल गया है न?"

इसपर पाकेटसे एक कागज निकालकर रावने कहा,—"यह देखिये, सरकार!"

फ्लोरिमेल,—"पात्रीका नाम क्या लिखवाया है?"

राव,—"असल नाम तो मालूम नहीं, इसलिये उस समय जो नाम जबानपर आया, वही लिखवा दिया। इस वक्त तो वह नाम याद नहीं पड़ता।"

इसी समय सदर दरवाजेमें फिर किसीने धक्का मारा। राव तुरतही दरवाजा खोलने दौड़ा। सीढ़ीसे उतरते समय वह आप ही आप कहने लगा,—"बहुत अच्छा हुआ। बडे मौके से

दरवाजा खटखटाया गया। अब कोई ऐसी उस्तादी करनी होगी, जिसमें लाइसन्सकी बात फिर न उठे।"

सदर दरवाजा खोलनेपर रावने एक अधेड़ उम्र वाले आदमीको पुरोहितके वेशमें खड़े पाया। उसके मुखसे भक्ति और पवित्रताके भावको झलक साफ आ रही थी। यह देख राव समझ गया, कि विवाह करानेके लिये मिसेस ब्रेसने इसे ही बुलाया है और इससे उसका काम भी सहज ही निकल जायगा।

राव उस पुरोहितको एक कमरेमें ले गया और दरवाजा बन्द करके उससे कहने लगा,—"महाशय। एक बात पूछता हूं, आपका नाम क्या है?"

पुरोहित,—"टौबियस कौलवेल।"

राव,—"जिस कामके लिये आप बुलाये गये है, शायद मिसेस ब्रेसने उस कामकी बात आप सुन चुके होंगे?

पुरोहित,—"किसी बड़े आदमीका विवाह करानेके लिये ही न?"

अब पाकेटसे बीस अशर्फियां निकालकर रावने पुरोहितजीके हाथमें रख दीं और बोला,—इस विवाह का प्रबन्धकर्त्ता मैं ही हूं। यदि मेरी इच्छाके अनुसार आप सब काम कर दें, तो इससे दुगुना इनाम फिर मिले।"

भला कौलवेलकी खुशीका क्या ठिकाना था? परम प्रसन्न हो कर उसने कहा,—"आप जो कहेंगे, मैं वही करूंगा। विवाह हो, नामकरण हो, दीक्षा हो, अन्त्येष्टि हो,—जो कुछ हो, मैं सबमें तय्यार हूं।"

राव,—"अच्छा, यह लाइसेन्स लीजिये। इसमें वर, कन्या दोनोंके नाम दर्ज हैं। जब तक गठबन्धन न हो जाय, तब तक कन्याका नाम न लेना, और अगर कन्याका नाम लिये बिना काम न चले, तो उसका नाम ऐसे ढङ्गसे उच्चारण करना, कि वर यानी

लार्ड फ्लोरिमेल कुछ भी समझ न सकें। क्यों, समझ गये न? ठीक इसी तरह कर सकोगे तो?"

कौलवेल,—"हां, मजेमें? और कुछ कहना है?"

राव,—"हम लोगोंकी मौजा पट गई, यह बहुत ही अच्छा हुआ। हां एकबात और है। विवाह अन्धकारमें कराना होगा।"

दुगुने इनामकी बात यादकर पुरोहित महाराजने कहा,—"अच्छा इसमें मुझे कुछ भी उज्र नहीं है। अब रही प्रार्थना,—उसे किताब देखकर भी कह सकता हूं और बिना किताबके भी।"

राव,—"यह तो बहुत ही अच्छा हुआ। और एक बात कह रखता हूं। कन्या-दान का भार मिसेस ब्रेसने लिया है। जबतक अनुष्ठान आरम्भ करनेका समय न आवे, तब तक उसे बुलानेकी कोई जरूरत नहीं। विवाह-वेदीके पास पालीके आते ही आप दौड़ जाकर उसे बुला लाइयेगा। विवाह अन्धकारमें ही सुसम्पन्न होगा, यह बात वह सुन चुकी है, इससे इस बारेमें उससे और कुछ कहनेका काम नहीं। समझते हैं न?"

पुरोहित,—"आपने जो जो कहा, मैं सब समझ गया हूं पर यह काम बड़ा ही विचित्र—"

राव,—"आपको डर मालूम होता है क्या? क्या खिसक जाना चाहते हैं?"

पुरोहित,—"बीस मुहरे मिल गई हैं, चालीस और मिलने की आशा है। ऐसी दशामें क्या मैं मूर्ख हूं, जो खिसक जाऊंगा? नहीं—नहीं, मैं ऐसा आदमी नहीं हूं।"

इससे सन्तुष्ट होकर रावने कहा,—"अच्छा, तो थोड़ी देर यहीं ठहरिये, मैं अभी आया। टेबिलपर शराब रखी है, इच्छानुसार पीजियेगा।"

शराबका नाम सुनते ही पुरोहितके मुंहमें पानी भर आया।

उसने कहा,—"अच्छा, अच्छा ! मिसेस ब्रेसके यहांकी शराब तो बढ़िया होती है। मेरे लिये आप चिन्ता न कीजिये। इस पोर्ट-की बोतलके साथ मेरा समय आनन्दसे कट जायगा।"

पुरोहितके पाससे जाकर रावने लार्ड फ्लोरिमेलसे कहा,—"पुरोहितजी आ गये हैं। अब अनजान रमणीकी एक प्रार्थना है।"

फ्लोरिमेल,—"वे जो कुछ कहें, मैं उसीमें राजी हूं।"

राव,—"उनकी इच्छा है, कि जबतक गठबन्धन न हो, तबतक उनका मुख कोई न देखने पावे, इसलिये विवाह अन्धकारमें ही होगा। पुरोहितजीसे भी यह बात कह दी गई है, वे इसपर राजी भी हो गये हैं।"

फ्लोरिमेल,—"अच्छा, मुझे भी कोई आपत्ति नहीं है। यह छिपना-लुकना खतम हो जाय, तो बड़ा आनन्द हो, पर इसका अर्थ क्या है—उद्देश्य क्या है ?"

राव,—"मुझे तो ऐसा जान पड़ता है, कि बिना मुंह दिखाये और नाम धाम तथा पद-मर्य्याद बताये केवल बातोंके जोर और हाव-भावसे ही उन्होंने जब आपका मन मोह लिया है, तब इसी बातका गौरव वे चाहती हैं। विवाहके बाद शायद वे ऐसी रूप राशि दिखायेंगी, जैसी आपने स्वप्नमें भी कभी न देखी होगी।"

फ्लोरिमेल,—"तो तुम उसका मतलब यही समझते हो ?"

राव,—"जी हां, और मेरा कहना ठीक भी है। अभी जब मैं उनके दरवाजेके सामनेसे आ रहा था, तो हठात् दरवाजा खोलकर उन्होंने मुझे रोक लिया, उस वक्त घटनाक्रमसे मैंने उनका मुंह कुछ कुछ देख लिया।"

फ्लोरिमेल,—"तो तुमने उसका चेहरा देख लिया ?"

राव,—"जी हां, दरवाजेमें लगाकर उनका बुरका कुछ सरक गया था—"

फ्लोरिमिल,—"वाह। मुँह खूब सुन्दर है न?"

राव,—"सरकार! क्या कहूं, मुझे तो ऐसा मालूम होता है, कि ऐसा सुन्दर रूप तो किसीने कभी देखा ही न होगा। उनकी सब बातें माननेका विशेष फल आपको शीघ्र ही मिल जायगा।"

फ्लोरिमिल,—"तुमने तो मुझे बावला बना डाला। जाओ, जाओ,—जल्दी जाओ और शुभ कार्य्यके प्रारम्भ करनेका उद्योग करो; उससे जाकर कह दो, कि उसकी किसी बातमें मुझे उज्र नहीं है।"

राव,—"तो रोशनी बुझा देता हूं। जबतक वे कपड़े न पहन लें, तबतक अन्धकारमें ही बैठिये।"

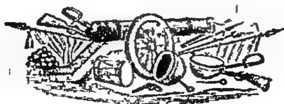
फ्लोरिमिल,—"बुझा दो, जो तुम्हारी इच्छा हो वही करो; उन्होंने जैसा कहा हो, उसीके मुताबिक करो।"

इसके बाद रोशनी बुझाकर रावने कहा,—"तो पुरोहितजी को ले आऊं?"

आखिर जिस बैठकखानेमें श्रीमान् पुरोहितजी महाराज बैठे थे, वहां जाकर रावने कहा,—"आइये, पुरोहितजी। चलिये, लार्ड फ्लोरिमिल अन्धकारमें बैठे हैं। अगर वे लाइसेन्सकी कोई बात पूछें, तो कह दीजियेगा, कि मेरे पास है, पर देखिये,—पात्रीका नाम किसी तरह न बताइयेगा।"

पुरोहित,—"मैं आपकी इच्छानुसार ही काम करूंगा।

इसके बाद पुरोहितको विवाहवाले कमरेमें पहुंचाकर राव उस कमरेमें गया, जिसमें पात्री बैठी थी।"



चौरासीवां परिच्छेद।

प्रतियोगिनी।

जिस कमरेमें वह अनजान औरत बैठी थी, उसके पास आकर रावने धीरे धीरे दरवाजा खटखटाया। इसपर थोड़ा सा दरवाजा खोल किवाड़की ओटसे ही उसने पूछा,—"कौन है, राव?"

राव,—"जी हां, मैं ही हूं। कोई विशेष बात कहनी है।"

अनजान,—(घबराकर) "क्यों, क्या खबर है?"

राव,—"कोई नई बात नहीं है। मुझे अन्दर आने दीजिये, कोई जरूरी काम है।"

अनजान,—"अभी तो मैंने अच्छी तरह कपड़े भी नहीं पहने।"

राव,—"नहीं पहने तो क्या हुआ। मैं देर नहीं कर सकता।"

अनजान,—"तो जरा ठहर जाओ।"

इसके मिनट भर बाद ही दरवाजा खुल गया। अन्दर जाकर रावने दरवाजा बन्दकर लिया और कहा,—"देखिये, हम लोगोंको बहुत बातचीत और तर्क-वितर्क करनेका समय नहीं है।"

अनजान,—"माजरा क्या है?"

राव,—"मैं अभी जो बात कहूंगा, वह आपको माननी ही पड़ेगी, इधर-उधर करनेसे काम न चलेगा, क्योंकि इसवक्त आप बिल्कुल मेरे कब्जेमें हैं।"

अनजान,—"राव! क्या तुम मुझसे दगाबाजी करना चाहते हो?"

राव,—"लार्ड फ्लोरिसेलके साथ आपने जैसा व्यवहार किया है, उससे मैंने अपना मतलब गांठ लेनेका पक्का इरादा कर लिया है, और उस मतलबके हासिल करनेका उपाय भी आपके जरिये

हो गया है। जिसपर आप मर रही हैं, उससे विवाह करनेकी आशा त्याग दीजिये।"

अनजान,—(घबराकर) "सुखके एकमात्र विषयको त्याग देना पड़ेगा। नहीं, यह तो कभी नहीं हो सकता। शायद तुम दिल्लगी करते हो? इस बारेमें तुम्हें कुछ कहनेका अधिकार ही क्या है? और किस बिर्तेपर तुम मेरे ऊपर हुकूमत चलाया चाहते हो?"

राव,—"बदला लेनेके हिसाबसे कुछ कहनेका अधिकार है, और आपको पहचानता तथा आपके गुप्त प्रेमकी सब बातें जानता हूं, इसलिये हुकूमत चलानेका भी अधिकार है।"

यह सुन हताश होकर वह अनजान रमणी कुरसीपर बैठ गई, और बड़े दुःखित स्वरसे बोल उठी,—"कैसी विडम्बना है।"

राव,—जो हो, पर जबतक यह शुभ कार्य्य सुसम्पन्न न हो जाय, तब तक आपको इसी कमरेमें कैद रहना पड़ेगा। तब इतना भरोसा आपको अवश्य देता हूं कि आपकी गुप्त बात किसीको भी मालूम न होगी, लार्ड फ्लोरिमेलको भी उसकी खबर न होगी।"

इसपर एकदम बावलीसी होकर वह रमणी बोल उठी,—"शुभ कार्य्य सुसम्पन्न होनेकी बात क्या कहते हो। मैं तो यहा कैद रहूंगी, फिर विवाह कैसे होगा? क्या मेरी कोई प्रतियोगिनी आगई है क्या मिसपालिनका प्रभाव फिर प्रबल हो उठा है?"

राव,—"प्रतियोगिनी तो अवश्य है, पर जिसे तुम समझती हो वह नहीं है।"

अनजान,—"तब कौन है?"

इसपर पाषाण-हृदय रावने कोटका बटन खोल और अपनी छाती दिखाकर कहा,—"मैं ही हूं।"

यह माजरा देख अनजान रमणीने बड़े आश्चर्यके साथ कहा,—

"यह क्या। तुम कौन हो? यह कपट रूप क्यों? मुँह हाथमें काला रंग ही किस लिये?"

विचित्र युवती,—"यह कहानी बहुत लम्बी है, पर इतना कहे देती हूं, कि सिर्फ बदला चुकानेकी नीयतसे ही मैं लार्ड फ्लोरिमेलसे विवाह करने जाती हूं।"

अनजान,—(आपेसे बाहर होकर) "यह तो बड़ी भयानक बात है। नहीं,—ऐसा तो कभी न होने पावेगा।"

"भद्रे! सुनिये, आपके कानमें एक बात कहती हूं, सुनिये, आप कोन हैं।" इतना कहकर उस विचित्र युवतीने अनजान रमणीके कानमें धीरेसे कुछ कह दिया।

इसपर क्रोधसे अधीर होकर उसने कहा,—"हां हां, समझ गई कि तुम मुझे पहचान गई हो, पर मैं तुमसे डरने वाली नहीं। मैं जिस ढंगसे काम करती हूं, उसका सबूत तुम्हें कहा मिलेगा? तुम चाहे जो हो, मैं तुम्हें कुछ भी नहीं समझती।"

विचित्र युवती,—"देखिये, अब आप मुझे अँगूठा नहीं दिखा सकतीं। मैंने आपका गुप्तकेलि-भवन देख लिया है और लार्ड फ्लोरिमेलके साथ आपको आमोद-प्रमोद करते भी अपनी आँखों देख चुकी हूं।"

अनजान,—"यह सब झूठ है।"

इसपर उस कपट-वेश-धारिणी युवतीने पाकेटसे एक टुकड़ा कपड़ा निकालकर कहा,—"झूठ नहीं, सब सच है—एकदम सच। अच्छा, देखिये, तो यह कपड़ा आपके केलि भवनके पर्देका है, या नहीं?"

अब अनजान रमणी समझ गई, कि मेरे गुप्त प्रेमकी बात एक अपरिचित औरतको मालूम हो गई है, इसलिये अत्यन्त कातर होकर उसने कहा,—"गजब हो गया। पर हाथ जोड़ती हूं, यह

बात किसीसे न कहना, और न लोगोंकी नजरोंमें मुझे हेय ही बनाना—"

विचित्र युवती,—"नहीं, मेरी ऐसी इच्छा कदापि नहीं है। आपकी हानि करनेसे मुझे क्या लाभ होगा? इसके लिये आप कोई चिन्ता न करें। अब मैं और देर नहीं कर सकती, पर जानेके पहले यह जान लेना चाहती हूं, कि जबतक मैं लौट आकर इस कमरेके दरवाजेको खोल और आपको बाहर न निकाल दूं, तबतक आप चुपचाप यहा बैठी रहेंगी, या नहीं?"

अनजान,—(रोआसे स्वरसे) "और करूंगी ही क्या?"

कपट-वेश-धारिणी युवती अब वहांसे चल पड़ी। बाहर आकर उसने ताला लगा दिया और फिर उस कमरेमें गई, जिसमें पहले अपना कागजवाला बक्स रख आई थी। कमरेके अन्दर जाकर उसने पाकेटसे एक शीशी निकाली और पानीसे भरे बर्त्तनमें शीशीका अर्क डालकर अपना हाथ-मुँह धोने लगी। देखते देखते उसके बदनका नकली काला रङ्ग उड़ गया और खासा गुलाबसा गोरा बदन निकल आया।

इसके बाद एकबार अहंकार सहित आइनेमें अपना चेहरा देखकर वह विवाहके नवीन कपड़े पहनने लगी और सब कपड़े पहन चुकनेपर झपटती हुई विवाहवाले कमरेमें जा घुसी।

विवाह वाले कमरेमें उस वक्त भी घोर अन्धकार छाया हुआ था। उस युवतीके वहा पहुंचते ही लार्ड फ्लोरिमेलने यह समझकर कि पाली आगई, बड़े प्रेमसे उसका हाथ पकड़ लिया और गद्गद स्वरसे कहा,—"अब तो कुछ ही देरमें तुम सदाके लिये मेरी हो जाओगी, सुन्दरी।"

विचित्र युवती,—"हां, प्यारे गेब्रील।"

यह उत्तर इतना धीरे दिया गया, जिससे लार्ड फ्लोरिमेल

जरा भी न समझ सके, कि यह युवती वह अनजान रमणी नहीं है।

उसके बाद लार्ड फ्लोरिमेलने पुरोहितसे कहा,—"आप कहते थे न, कि मिसेस ग्रेसने कन्या-दान लेनेका भार लिया है। बस अब चटपट उसे बुला लाइये।"

अब उस युवतीने सोचा, "यह तो बड़ी भारी आफत आया चाहती है। अगर निराला पाकर लार्ड फ्लोरिमेलने मेरा अङ्गस्पर्श किया, तो उन्हें सहजहीमें मालूम हो जायगा, कि यह तो वह अनजान रमणी नहीं है।" सुन्दरी होनेपर भी वह युवती (कपट-वेश धारिणी स्त्री) दुबली और नाटी थी, तथा वह अनजान रमणी लम्बी और पुष्टाङ्गी थी। अतएव इस समय उस युवतीकी सारी चतुराईके मट्टीमें मिल जानेकी पूरी सम्भावना थी।

पुरोहितके बाहर जाते ही वह युवती यह कहकर, कि उस कमरेमें एक चीज भूल आई हूं, अभी लेकर आती हूं, जाकर दरवाजेके पास छिप रही। फ्लोरिमेल यह समझकर, कि उनकी हृदयहारिणी दूसरे कमरेमें गई है, अपने मनका भाव इस प्रकार व्यक्त करने लगे,—

"तुम्हारे गुदगुदे, चिकने और सुडौल बदनको छूते ही मैं समझ गया था, कि तुम्हारा चेहरा बहुत ही खूबसूरत होगा। फिर जबसे रावकी जबानी तुम्हारे सुन्दर मुंहकी बड़ाई सुनी है, तबसे तो मैं पागल हो हो रहा हूं। अब तुम्हारे देव-दुर्लभ मुखारविन्दको देख इन प्यासे नेत्रोंको तृप्त करनेमें अधिक विलम्ब नहीं है। थोड़ी ही देरमें सब झमेला मिट जायगा। तुम्हारा मुंह भी देख लूंगा नाम भी सुन लूंगा और तुम्हारे पद-मर्यादाकी बात भी जान लूंगा। इसके अलावा मेरी धन-सम्पत्ति आदि बचानेकी शक्ति रखने वाली बात जो तुमने कही है, वह भी जाहिर हो जायगी। मेरे हृदय पर

तुम्हारा कितना अधिकार है, यह मैं मुँहसे व्यक्त नहीं कर सकता, कुछ ही देरके बाद तुम्हें सब प्रत्यक्ष हो जायगा। अहा! इस समय इस आशामें कितना आनन्द है।"

प्रेमोन्मत्त फ्लोरिमिल इस तरह अपने मनका भाव व्यक्त ही कर रहे थे, कि इसी समय मिसेस ब्रेसको साथ लिये पुरोहितजी आ धमके।

इसी समय युवतीने भी झूठमूठ दरवाजा खोलनेका शब्द किया और अपने नये गाउनको खडखडाकर यह जताया, मानो वह बाहरसे आ रही हो।

अब कुछ आगे बढ और उसका हाथ पकडकर लार्ड फ्लोरिमिल उसे टेबिलके पास ले गये।

इसके बाद उस घोर अन्धकारमें ही अनुष्ठान आरम्भ हो गया। पुरोहितजीने अभूतपूर्व वैवाहिक कार्य्यकी उपासना प्रारम्भ कर दी।



पचासीवां परिच्छेद ।

रोगी ।

शायद हमारे पाठक अभी यह बात भूले न होंगे, कि गत रात्रिमें जब फ्रेडरिक ड्रे सोने गया था, तब उसकी तबीयत बहुत खराब थी । स्वभावसे ही उसे बराबर गाढी नींद आती थी, आज भी वैसा ही हुआ, बल्कि आज वह कुछ ज्यादा देरतक सोता रहा ।

नींद टूटनेपर उसकी तबीयत अच्छी मालूम हुई, तौ भी उसने चारपाईपर ही बयालू करनेका इरादा जाहिर किया, इसलिये मिसेस ब्रेस खानेकी चीजें ऊपर ही ले गई । ज्यों ही उसने चायके प्यालेमें मुँह लगाया, कि उसे उबकाई आने लगी और शिरमें दर्द होने लगा । यह देख उसने विचारा, कि खाई हुई चीज पची नहीं है, इसलिये कोई पाचक खाकर वह फिर पड़ रहा ।

अब मिसेस ब्रेस गत रात्रि की सब बातें फ्रेडरिकसे कहने लगी । किंग्चिनग्रेस्ड वगैरहका आना, धमकाकर दश हजार रुपया लेकर ले जाना, लार्ड फ्लोरिमेलके नौकरका आना और विवाहका सब बन्दोबस्त उसीपर छोड़ जाना यह सब बातें मिसेस ब्रेसने एक एक करके फ्रेडरिकको सुना दीं ।

मिसेस ब्रेसका खजाना अब क्रमश खाली हुआ जाता है, और लार्ड फ्लोरिमेलके कामसे भी घाटा पूरा होने लायक लाभ होनेकी सम्भावना नहीं, यह खयालकर फ्रेडरिक अत्यन्त विरक्त हो उठा । एक तो उसकी तबीयत पहले ही खराब थी, तिसपर यह बात सुन कर और उद्विग्न हो उठा, इससे वह बिछौनेपर पड़ा पड़ा दिनभर छटपटाता रहा । शाम होते होते वह कुछ स्थिर हुआ और उसे

नींद आ गई। अब रावके कहने मुताबिक बन्दोबस्त करनेका मौका मिसेस ब्रेसको मिल गया।

उधर नींद टूटनेपर फ्रेडरिकने देखा, कि चारपाईके पास टेबिलपर लम्प जल रहा है। वह मिसेस ब्रेसको पुकारने लगा, बारम्बार पुकारनेपर भी जब कोई जवाब न मिला, तब उसने उठनेकी कोशिशकी, पर उठ न सका, कातर होकर फिर वह बिछौनेपर लेट रहा। अब उसके जीका मचलाना असह्य हो उठा, शिर फटने लगा और प्यासमे कण्ठ सूख गया। आखिर हाथ बढ़ा-टेबिलपरसे पानीका गिलास उठाकर उसने प्यास बुझानी चाही, पर उस शीतल जलको बूंसे ही उसका जी ऐसा मचल उठा, कि उसने गिलासको दूर फेंक दिया।

अब उसका सारा शरीर कांप उठा, पर वह अपनी अवस्थाको समझ न सका। धीरे धीरे उसको प्यास असह्य होने लगी, पर पानी पीनेका साहस न हुआ। लाचार अत्यन्त झुंझलाकर वह बोल उठा,—"हाय! मेरी यह क्या दशा हो रही है?" आखिर उसने सोचा, कि इस समय चाय पीनेसे शायद कुछ फायदा हो जाय, दिन भर कुछ भी नहीं खाया, इस समय पेटमें कुछ पड़ जानेसे शायद तकलीफ कम हो जाय।"

ऐसा स्थिरकर वह फिर मिसेस ब्रेसको पुकारने लगा, पर जब कुछ भी जवाब न मिला, तब उसने घण्टेकी रस्सी पकड़कर खींचली, रस्सी खुल गई और घण्टा न बजा। अब वह अस्थिर होकर आप ही आप कहने लगा, सर्वनाश! क्या मैं गीदड़ और कुत्तोंकी तरह पड़ा पड़ा मरूंगा?"

इसके बाद उसके मनमें यह खयाल उठा,—"मेरी बीमारीका सुअवसर पा मिसेस ब्रेस शायद सब ले दे और मुझे अकेला छोड़कर भाग गई है। मेरा अनुमान ठीक ही है। वह तो बहुत दिनोंसे अने:

रिका भाग जानेको थी अब निश्चय ही भाग गई है। किञ्चिनर्थ गड वगैरह और लार्ड फ्लोरिमेलके नोकरकी बात शायद झूठ ही थी। पहली बात कहनेका मतलब यही होगा, कि जिसमें मुझे विश्वास हो जाय, कि उसको सब रकम हाथसे निकल गई, अब उसके पास कुछ भी नहीं है। और दूसरी बात कहनेका यह तात्पर्य है, कि हाथमें एक जरूरी काम आ जाने से वह उसीमें व्यस्त है। पर मैं सब समझता हूं। वह भाग ही गई है। शायद मुझे कुछ खिलाकर वह चम्पत हो गई है। कहीं किसी तरहका विष तो नहीं खिला गई? ऐसा न होनेसे इतनी उबकाई क्यों आती है? शिरमें ही इतना दर्द क्यों हो रहा है? रह रहकर सारा शिर ऐसा क्यो हो जाता है? वह बड़ी शैताना है, उसने जरूर ही मुझे जहर दे दिया है।"

मन ही मन ऐसा तर्क-वितर्ककर फ्रेडरिक कुछ देर तक चुप-चाप पड़ा रहा। इसके बाद उसने सोचा, कि जो होना था, सो तो हो हो गया अब एकबार अन्त तक देख लेना चाहिये। आखिर हिम्मत बाधकर वह उठा और बत्ती लेकर सोढ़ीके रेलिङ्गको पकड़ता हुआ धीरे धीरे नीचे उतरने लगा।

नीचे मिसेस ब्रेसके बैठकखानेमें जाकर उसने देखा, कि टेबिलपर लेम्प जल रहा है, मिसेस ब्रेसके शिल्प-कार्य्यका बक्स खुला पड़ा है और उसीके समीप शराबका एक गिलास भी रखा है। यह सब देख कर उसके दिलसे मिसेस ब्रेसके भाग जानेका सन्देह तो दूर हो गया, पर विष खिला देनेका विश्वास बना ही रहा।

अब घण्टा बजा और नौकरको बुलाकर फ्रेडरिकने पूछा,—"मिसेस ब्रेस कहा है?" नौकरने जवाब दिया, कि अभी दो मिनट हुए उस मकानमें गई हैं। यह सुन फ्रेडरिकने कहा,—"अच्छा, मैं अभी उसे खोजकर पूछता हू, कि उसने मुझे जहर क्यों खिला दिया है?"

इसके बाद बगल वाले मकानमें जानेके लिये वह फिर बड़े कष्टसे ऊपर चढने लगा। आखिर किसी तरह उस मकानमें पहुंच कर उसने मन ही मन सोचा, कि इसमें जो सबसे बढिया कमरा है, उसीमें वह होगी।

उधर अभी विवाहका अनुष्ठान आरम्भ ही हुआ था, कि इसी समय हाथमें जलती हुई बत्ती लिये फ्रेडरिक उस अन्धकारमय कमरे के दरवाजेपर जा खड़ा हुआ।

उसे देखते ही पाली चिल्ला उठी, लार्ड फ्लोरिमेल मारे क्रोधके आग-बबूला हो गये, पुरोहितजी रुक गये और मिसेस ब्रेस अवाक खडी रह गई।

पर तुरत ही लार्ड फ्लोरिमेल बडे जोरसे गर्ज उठे। पालीको देखते ही वे समझ गये, कि यह उनकी प्यारी अनजान रमणी नहीं है। इसके बाद उसके मुंहपरका बुरका हटाते ही वे पहचान गये, कि यह तो वही कैरोलाइन वाल्टर्स है।

इसके बाद बड़ा गोलमाल मच गया। कैरोलाइन वाल्टर्सको पहचानते ही मिसेस ब्रेस मूर्च्छित हो गई, पुरोहित यह सोचकर कि इस अनर्थमें सहायता देनेके लिये कहीं लार्ड फ्लोरिमेल मुझे दण्ड न दें, चुपचाप खिसक गया और फ्रेडरिक हाथमें बत्ती लिये बीच कमरेमें खड़ा हो कभी लार्ड फ्लोरिमेल, कभी मिसेस ब्रेस और कभी 'कैरोलाइन वाल्टर्स' की ओर देखने लगा।

आखिर लार्ड फ्लोरिमेल उस युवतीका हाथ पकडकर बडे क्रोधसे कहने लगे,—"अब मैं सब समझ गया, मैं निरा पागल हूं, जो अब तक इस षडयन्त्रको न समझ सका था। कैरोलाइन! क्या इसी तरह धोखा देकर मुझसे विवाह करनेके लिये ही तुमने अपना काला रंग कर रखा था? और वह अनजान रमणी भी तुम्हारे ही दलकी कोई स्त्री है? तुम्हारे मनमें अब क्या है? बोलो—बोलो

तुम्हें सब कहना पड़ेगा। हां, तुम्हीने मेरे कागजात भी चुराये हैं।"

कैरोलाइन,—"अगर मान लूं, कि मैंने तुम्हारे कुछ कागज भी चुरा लिये हैं, तो तुमने मेरी जो चीज हर ली है, उसके सामने तो तुम्हारे वे कागजात कुछ भी नहीं है।"

फ्लोरिमेल,—"ऐं! तुम्हारी चीज हर ली है।"

कैरोलाइन,—"नहीं हर ली? तुम्होंने न मेरी इज्जत खराब कर डाली है, जन्म भरके लिये मेरा सुख हर लिया है, और मेरे प्राणको अपने पैरोंसे कुचल डाला है! तुम्हारे लिये जो स्त्री एक दिन जान तक देनेको तय्यार थी, उसके ऊपर तुमसे जहांतक हो सका, अत्याचार किया है, पर याद रखो, कि मैं भी तुमसे इसका बदला बिना लिये न छोड़ूंगी।"

इतना कहकर कैरोलाइन ऐसी फुर्तीके साथ बाहर निकल गई, कि लार्ड फ्लोरिमेल उसे पकड़ न सके। जबतक वे दरवाजे पर पहुंचे तबतक तो उसने बाहर जाकर चट ताला जड़ दिया।

यह देख लार्ड फ्लोरिमेल सोचने लगे, कि इसके क्या मानी है? और कुछ करेगी क्या? इस तरह सोचते सोचते कमरेके बीचमें आकर उन्होंने देखा, कि मिसेस ग्रेस होशमें आ रही है और फ्रेडरिक उसी तरह बत्ती लिये खड़ा है।

फ्रेडरिक बहुत देर तक स्थिर न रह सका। एकाएक बत्ती फेंक कर वह कुत्ते की तरह भूकने लगा।

उधर नकली राव या कैरोलाइनने, जिस कमरेमें उस अनजान रमणीको बन्दकर रखा था, उसके दरवाजे पर जाकर कहा,—"यदि आप अपना परिचय न दिया चाहती हों, तो भागिये;—फौरन चल दीजिये।"

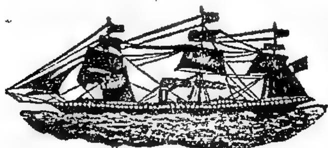
अनजान,—(घबराकर) "क्यों, क्या हुआ है? क्या, मेरे

ऊपर कोई आफत आया चाहती है? या तुमने मेरा भेद खोल दिया है?"

कैरोलाइन,—"नहीं, नहीं, मेरा मतलब हासिल नहीं हुआ। और थोड़ी देरमें उसकी विवाहिता पत्नी हो जाती। खैर अब समय नहीं है, यह सब बातें फिर हो रहेंगी, अगर आप अपना भेद छिपाये रखना चाहती हों तो, भागिये,—शीघ्र भागिये,—देर न कीजिये।"

यह सुन कर वह अनजान रमणी बिना सोचे-समझे घबराकर बतहाशा भाग चली। बेचारीको विवाहके कपड़े वगैरह लेनेकी भी सुधि न रही। सिर्फ भागती भागती इतना कह गई,—"इस कृपाके लिये अनेकानेक धन्यवाद।"

जिसमें लार्ड फ्लोरिमेलसे इस वक्त उस अनजान औरतकी मुलाकात न हो सके, इसलिये चटपट उसे भगाकर कैरोलाइन उस कमरेमें पहुंची, जिसमें वह अपनी कपड़े छोड़ गई थी। जल्दी जल्दी कपड़े बदल कर वह वहांसे भागी, पर जिस रोगनको लगाकर इतने दिनोंतक 'राम' बनी फिरती थी, उसे न लगा सकी।



छियासीवां परिच्छेद।

भयानक काण्ड।

अब जिस कमरेमें लार्ड फ्लोरिमेल, मिसेस ब्रेस और फ्रेडरिक रह गये थे, उसमें भयानक काण्ड आरम्भ हो गया। बत्तीके जमीनपर गिरकर बुझ जानेके वक्तसे ही फ्रेडरिक पागल होकर जमीनपर लोटने और जोर जोरसे कुत्तेकी तरह भूंकने लगा।

यह माजरा देख लार्ड फ्लोरिमेल बहुत डर गये, पर इस बातको मिसेस ब्रेससे छिपानेके लिये उन्होंने साहस करके पूछा,—"यह कौन है और इसे क्या हुआ है?"

लार्ड फ्लोरिमेलकी बातका कुछ भी खयाल न कर अभागिनी मिसेस ब्रेसने अन्धकारमें टटोलते टटोलते घण्टेकी रस्सीको पकड़कर इतने जोरसे खींचा, कि रस्सी टूट गई! साथ ही वह हताश हो कर बोल उठी,—"हाय! यह क्या हो गया? यह तो एकदम पागल हो गया है।"

फ्लोरिमेल,—"तुमने रस्सी क्यों तोड़ डाली?"

अब दूसरे घण्टेकी रस्सीको खींचकर मिसेस ब्रेसने कहा,—"हां, पर दूसरी मिल गई है। हाय! फ्रेडरिककी यह क्या दशा हो गई। जान पड़ता है, कि यह पागल हो गया है। प्रलापमें कहीं हम लोगोंकी गुप्त बातोंको न बक डाले।"

फ्लोरिमेल,—"मेरी जितनी बातें वह जानता है, भले ही बक डाले, मैं उसकी कुछ भी परवाह नहीं करता, पर जिस फन्देमें मैं पड़ गया था, उसमें तुम भी शामिल थीं, क्यों?"

ब्रेस,—"नहीं, कभी नहीं, मैं सच कहती हूं, कि मुझे इसकी कुछ भी खबर न थी। सर्वनाश! देखो यह कैसा तो कर रहा

है; कैसा हाथ पैर पटक और अनाप-शनाप बक रहा है। देखो, मुझे विश्वासघातिनी न बनाओ। जैसे तुम धोखेमें पड गये हो, उसी तरह मैं भी ठगी गई हूं—"

फ्लोरिमिल,—"मै भी यही समझता हूं, क्योंकि मेरी तुम्हारी मुलाकात एक दिनकी तो है ही नहीं। खैर, जो कुछ हो, फिर घण्टा बजाओ; नही तो कहो, दरवाजेको तोड डालूं।" उधर घण्टेकी आवाज पा घबराये हुए कई नौकर ऊपर आ गये और उन्होंने बाहरसे दरवाजेको खोल दिया। रोशनी आनेपर सब लोगोंने फ्रेडरिककी शोचनीय दशा देखी। उसकी आखोंसे मानो आग निकल रही थी, गलेकी नशें फूलकर रस्सी जैसी मोटी हो गई थीं, और मुखका रग बिगड गया था।

"यह दृश्य तो और देखा नही जाता" कहते हुए लार्ड फ्लोरिमिल चल खडे हुए।

उस समय फ्रेडरिकको किसी दूसरे कमरेमें ले जानेके लिये मिसेस ब्रूस ऐसी व्यस्त हो रही थी, कि लार्ड फलोरिमिलका चले जाना उसे कुछ भी मालूम न हुआ। फ्रेडरिक जितना प्रलाप बकता था, मिसेस ब्रूस उतना ही डरती थी, कि कहीं बावर्ची खानेवाली बातको न कह दे।

मिसेस ब्रूसकी हुक्मके मुताबिक दो नौकरोंने फ्रेडरिकको ले जाकर पास ही के एक कमरेमें सुला दिया। इसके बाद नौकरोंको जानेका हुक्म देकर उसने कहा,—"कि मै इसकी खबरदारी खुद कर लूंगी।" जब उन लोगोंने देखा, कि मिसेस ब्रूसने डाक्टर बुलानेका हुक्म नहीं दिया, तो उनमेंसे एकने पूछा,—"किसी डाक्टरको बुला लाऊं क्या?" मन न रहनेपर भी मिसेस ब्रूसको लाचार होकर कहना ही पडा, कि,—"हा, जाओ, बुला लाओ।" हुक्म पाकर दोनों नौकर डाक्टरको बुलाने चले गये।

अब फ्रे डरिक कुछ शान्त हुआ। यह देख मिसेस ब्रूसने उसके कपड़े उतार लिये और यह समझकर, कि यह प्यासले व्याकुल हो रहा है, एक गिलास जल उसके मुँहके पास ले गई। वह बदनसीब जल देखते ही फिर हाथ पैर फेंकने और जोर जोरसे भूकने लगा।

फ्रे डरिकके कष्टकी सीमा न रही। रह रहकर उसके गलेकी नसें ऐसी फूल जाती थीं, कि जिसे देखकर ऐसा मालूम होता था, मानो अभी इसका दम घुटना चाहता है। उसकी आखोंसे मानो आग बरस रही थी, मुँह फेनसे भर गया था। कभी तो उसके मुँहसे साफ बोली भी न निकलती थी और कभी अत्यन्त कातर होकर कहता था,—"देखो, मुझे जानसे न मार डालना, कहीं मेरी लाशको भी उसी पत्थरके नीचे न गाड देना।"

इसका परिणाम क्या होगा? मिसेस ब्रूस अब क्या करे? एकबार उसके मनमें आया, कि इसे विष दे देना ही अच्छा है। फिर उसने सोचा, कि डाक्टर आना ही चाहता है, उसके आनेपर मृत्युका कारण प्रकट हो जायगा। इसलिये उसे जहर देनेकी हिम्मत न पड़ी। फिर मिसेस ब्रूस सोचने लगी, कि इसे अब तक जिन्दा रहने देना ही भूल हुई।

मिसेस ब्रूस इसी तरह सोचती हुई कमरेमें चारों ओर देखने लगती थी, पर उसे कोई उपाय न सूझता था। रोगीका आरोग्य हो जाना भी उसके लिये अच्छा नहीं, और उसे विष खिला देना भी निरापद नहीं। उसे कोई उपाय न दिखाई दिया। बस इसी समयसे उसके पापका दण्ड आरम्भ हो गया। उसका पाप मानो चारों ओरसे उसे धीरे धीरे घेरता चला आता था।

उस समय उस मन्दभागिनीको जो कष्ट हो रहा था वह अकथनीय है। उसकी आखोंके सामने अभागा फ्रे डरिक बेतरह छटपटा रहा था, और वह चुपचाप खड़ी खड़ी देख रही थी।

अब फ्रेडरिक फिर कुछ शान्त हुआ। उसका भूंकना तो बन्द हो गया, पर ज्ञान उदय न हुआ। मिसेस ब्रेस उसके सामने खडी थी, वह उसे देख भी रहा था, पर पहचान न सकता था।

इसी समय डाक्टर आ गया। रोगीकी अवस्था देख और मिसेस ब्रेससे बहुतसे सवालकर वह उसे एक किनारे ले गया और पूछने लगा,—"क्या आप बता सकती हैं, कि इसे कभी किसी तरहकी चोट लगी थी?"

ब्रेस,—"मुझे तो कुछ भी नहीं मालूम।"

डाक्टर,—"इसके पास कोई कुत्ता है?"

ब्रेस,—"नहीं।"

डाक्टर,—"तो अब साफ ही पूछना पडा, कि इसे कभी किसी कुत्तेने काटा था?"

यह सवाल सुनते ही मानो मिसेस ब्रेसके सब अङ्ग शिथिल हो गये। आखिर उसने कहा,—"हां, एकबार एक कुत्ता कमरेमें घुसकर पलँगके नीचे छिप रहा था, जब इसने उसे घसीटकर बाहर निकाला, तो उसने इसके हाथमें काट खाया था।"

डाक्टर,—"वही तो, अब इसकी आशा छोड दीजिये, कुछही देरमें यह मर जायगा। मरनेके वक्त इसे बहुत कष्ट होगा। कुत्तेके काटे हुए मनुष्यकी मृत्यु जैसी भयानक होती है, वैसा भयानक और कुछ नहीं होता।"

ब्रेस,—"तो सचमुच ही इसे वही भयानक रोग हो गया है?"

डाक्टर,—"हा वही, रोग हो गया है। अब यह किसी तरह बच नहीं सकता।"

इसपर घबराकर मिसेस ब्रेसने डाक्टरके कन्धेपर हाथ रख दिया और पूछा,—"अच्छा, क्या यह रोग संक्रामक है? इसके पास

रहनेसे मुझे तो किसी तरहका डर नहीं है? यदि यह मुझे काट ले अथवा इसका थूक मेरी देहमें पड़ जाय—"

डाक्टर,—"नहीं, आपको कोई डर नहीं है। देखिये, इसके हाथ-पैर फिर ऐंठने लगे। इसे कोई ऐसी दवा देनी चाहिये, जिससे इसे कुछ आराम मालूम हो। अच्छा, मैं अभी दवा लाता हूं।"

डाक्टरका मकान पास ही था। उसके चले जानेपर रोगीका रोग एक दम बढ़ गया। तकलीफसे छटपटाता हुआ वह कहने लगा, कि कोई मुझे जानसे न मार डाले, पर तबतक उसने मिसेस ब्रेसपर कोई अत्याचार नहीं किया था।

इतनेमें डाक्टर दवा लेकर लौट आया। अनेक प्रकारका डर-भय दिखा और फुसलाकर उसने उसे एक मात्रा अफीम खिला दी। देखते देखते फ्रेडरिक सो गया। यह देख डाक्टरने कहा,—"नींद टूटनेके बाद और एक मात्रा खिला देना। अगर तुमसे खिलाते न बने तो, मुझे बुला लेना, पर इतना समझ रखना, कि इस दवासे कुछ होने जानेका नहीं है, यह किसी तरह बच नहीं सकता। तब इतना अवश्य होगा, कि जबतक यह जिन्दा रहेगा, तबतक तकलीफ कम होगी।"

इतना कहकर डाक्टर चला गया, पर जानेके वक्त कह गया, कि अगर बारह बजे तक मुझे कोई बुलाने न जायगा, तो मैं खुद चला आऊंगा।

डाक्टरके जाने बाद मिसेस ब्रेस आप ही आप कहने लगी,—"अब मैं तुम्हें काहेको बुलाने लगी। सौभाग्यकी बात है, कि यह आप ही मरा जाता है, नहीं तो मुझे और एक खून करना पड़ता।"

इस तरह कहती कहती मिसेस ब्रेस घोर चिन्तामें लीन हो

इसीने तो मुझसे यह काम कराया है। पहलेको तो इसने खुद ही मारा है———”

यह सब देख सुनकर मिसेस ब्रेसने डाक्टरका हाथ पकड़ लिया और कहा,—“एक खुराक अफीम और खिला दो न ?”

डाक्टर,—“हां, खिलाता हूं। शीशी लाओ तो।”

डाक्टरके उसके पास शीशी लेजाते ही कष्टसे अधीर होकर फ्रेडरिकने इस जोरसे हाथ मारा, कि डाक्टरके हाथसे छूटकर शीशी जमीनपर गिर पड़ी और चूर चूर हो गई।

रोगी फिर बड़बड़ाने लगा,—“नहीं, मुझे फांसी मत दो, मैं फांसीकी तख्तीपर न चढ़ूंगा।—क्यों, मुझे क्यों बांधते हो ? मुझे नाइट-कैप क्यों पहनाते हो ?—मेरे गलेमें फांसी क्यों लगाते हो ? मैंने तो कुछ किया नहीं, दोनोंको तो मैंने नहीं मारा;—सिर्फ एकके गले · · ।यही औरत तो आफतकी पुड़िया है। इसने एकको तो खुद जहर देकर मार डाला है और दूसरेको मुझसे फांसी दिलवा दी है। पत्थरको हम दोनोंने मिलकर उठाया था,—यही पीछे वाले बावर्ची—खानेमें,—नीचे—नीचे,—पीछे वाले बावर्चीखानेमेंजी,—उस मकानमें—घोर रातमें गाड़ा था,—एक साथ और एक ही वक्त नहीं दफनाया,—एक ही जगहमें अलबत्ता—”

ब्रेस०—“महाशय, डाक्टर साहब। जल्द इसका कुछ उपाय कीजिये, नहीं तो मैं पागल हो जाऊंगी।”

अब फिर रोगीका प्रलाप आरम्भ हुआ,—“सांपोंने फिर मुझे लपेट लिया!—नरकको आग जल रही है,—ओह! जल गया—जल गया।—अब फांसीकी तख्तीके नीचे चला,—लो—गलेमें फांसी दे दी—पहना दी—नाइट कैप पहना दी गई। अब सांस नहीं ले सकता, फांसी दे दी! ठहरो—ठहरो,—जरा ठहर जाओ;—मैं अब कहे देता हूं।—पुरोहितजी! सुनिये—कानमें कहता हूं,—जाइये—

जो कहता हूं, जाकर कीजिये,—पीछे वाले बावर्चीखानेके बीचका पत्थर उठाओ,—गढेको थोडा खोदनेसे ही दोनों लाशें मिल जायेंगी। मैंने सब कबूल कर लिया—फिर अब क्यों मुझे फांसीको तख्तोपर खडा किया है? अब गलेमें फांसी क्यों?—टोपी ही क्यों?—नरक—आग—तुम लोग मुझे छोड नहीं—फांसी दे दो।—लो अब तख्तोका खटका खसक गया—ओह। यह गया—" इतना कहनेके बाद ही बदनसीब फ्रेडरिकाका प्राण-वायु निकल गया।

यह देख मिसेस ब्रेस अत्यन्त भयभीत होकर प्रायः चेतनाशून्य हो गई। जब डाक्टरने दोबार उसके कानमें कहा, कि रोगी मर गया, तब मानो उसे होश हुआ। तब उसका मन मानो कुछ हलका हुआ। उसने सोचा, कि अब मैं स्वाधीन हो गई, अब मुझे जलाने वाला कोई न रहा।

इसके बाद डाक्टरकी ओर देखकर उसने कहा,—"देखा न? अन्त समय कैसी ऊट-पटांग बातें बक गया है।"

डाक्टर,—"मैंने तो न कभी ऐसा देखा है, और न सुना ही है।"

ब्रेस,—"ओह। उसे कितना कष्ट हुआ था। उसके मनमें कैसी भयानक बातें उठ रही थी।"

डाक्टर,—"उन्मत्तावस्थामें अथवा कुत्तेके काटनेपर लोग मन ही मन कितनी ही कल्पना करते हैं। अच्छा, अब मेरे ठहरनेकी तो और कोई जरूरत नहीं, अब मैं जाता हूं।"

डाक्टरके चले जानेपर मिसेस ब्रेस अपने बैठकखानेमें गई और एक गिलास ब्राण्डी चढ़ाकर रातकी घटनापर विचार करने लगी।

सत्तासीवां परिच्छेद ।

मिष्टर रिगडेनका आफिस ।

अब हम फिर कैरोलाइन वाल्टर्सका अनुसरण करते हैं । पाठकोंको याद होगा, कि उसका कौशल-जाल छिन्न भिन्न हो जानेपर वह तुरत ही मिसेस ब्रेसके मकानसे भाग गई थी। विवाहके कपड़े पहने रातके वक्त लण्डनके रास्तोंमें घूमना अच्छा न समझकर उसने फिर नौकर वाली वर्दी पहन ली थी, पर लाचार, करे क्या ? मिसेस लिण्डलीकी हत्याका मुकद्दमा अभी तक उसके शिरपर सवार था। ग्रमले और मज्सके साथ फोर-ष्ट्रीटवाली धायके मकानमें अपनी सफाई दिखानेके लिये जुस वह टेम्स नदीमें कूदकर भाग गई थी, इससे उसपर लोगोंका सन्देह और भी बढ़ गया था । इस बातका कौन विश्वास करेगा, कि ग्रमलेने ही जान बूझकर उसे भगा दिया था ?

यद्यपि लोगोंको विश्वास हो गया था, कि कैरोलाइन वाल्टर्सने टेम्स नदीमें कूदकर प्राण-त्याग किया है, तथापि बिना कपट-वेश धारण किये खुल्लमखुल्ला लण्डनकी सड़कोंपर घूमना उसके हकमें अच्छा नहीं था। फौजदारी अदालतमें जिस वक्त उसका इजहार हुआ था, उस वक्त तो कितने ही आदमियोंने उसे देखा था। और होर्समौङ्गर-लेनकी जेलके कर्मचारी तो उसे अच्छी तरह पहचानते थे। इसके अलावा मिसेस ब्रेसकी दूकानमें भी उसे कितने ही आदमियोंने देखा था। उधर लार्ड फ्लोरिमेल भी हताश होकर क्रोध वश उसके लण्डनमें रहनेकी खबर शायद पुलिसको दे दें, तो क्या ताज्जुब है ? यह सब सोच-विचार कर उसने देखा, तो अपनेको चारों ओर आफतसे घिरा हुआ पाया ।

पर उसमें साहस खूब था और धनका भी टोटा नहीं था। मौक-

रीको कमाई तो उसके पास थी ही, इसके अलावा लार्ड फ्लोरिमेलने विवाहके बन्दोबस्तके लिये जो खर्च दिया था, उसमेंसे भी कुछ बच गया था। जब उसके पास धनका जोर था, तब वह डरने क्यों लगी थी? वार्डर-ष्ट्रीटमें कपड़े भाड़ेपर देनेकी एक दुकान थी। कैरोलाइनने उसी दुकानपर जाकर दरवाजा खटखटाया। रातके दश बज जानेके सबब दुकान बन्द होगई थी, तो भी दुकानवालीने खुद आकर दरवाजा खोल दिया। उसे देख कैरोलाइनने कहा,—"क्या आप को याद है, कि एक दिन एक काला छोकरा आपकी दुकानसे जिप्सीकी पोशाक भाड़ेपर ले गया था?"

दुकानवाली,—"हां, हां, कावेण्ड गार्डेन वाले मसकरेडके दिन न? यह तो कई महीनेकी बात है।"

कैरोलाइन,—"हां, कई महीने हुए, तब तो शायद आप मुझे पहचानती होंगी?"

दुकानवाली,—"हां, अच्छी तरह। वह काला छोकरा तो असलमें छोकरा न था। वह तो खासी युवती थी। मैंने उसे खुद कपड़े पहना दिये थे और वह तुम्हीं हो। अधिक जांच पड़तालकी जरूरत नहीं, तुम तो मुंहसे ही साफ पहचानी जाती हो। आओ न, भीतर चलो, क्या काम है?"

इसपर दुकानके अन्दर जाकर कैरोलाइनने पूछा,—"अच्छा, आपने तो मुझे काले छोकरेके वेशमें भी देखा है और अब गोरे छोकरेके वेशमें भी देख रही हो। तो अब यह बताइये, कि और किस लिवासमें मैं अच्छी दिखाई पड़ूंगी?"

इसपर कैरोलाइनकी दुबली पतली नाटी देहकी ओर देखती हुई दुकानवाली कहने लगी,—"तुम बहुत नाटी हो, नहीं तो मूंछ लगाकर तुम्हें खासा सेनानायक बना देती।"

कैरोलाइन,—"सेनानायककी पोशाक तो मुझे अच्छी न लगेगी;

क्योंकि मैं बहुत ही नाटी हूं। उससे तो लोगोंकी नजरोंमें मैं और भी खटकने लगूंगी। जल्द ही कोई दूसरा वेश बताओ।"

दुकानवाली,—"अच्छा, जहाजी सैनिकका वेश कैसा होगा? एक अच्छी मूछ और दाढी लगा देनेसे जनानापन भी दूर हो जायगा और नीले कपडेपर कमरबन्द लगाकर एक छुरा लटका लेनेसे ही हुबहु जहाजी सैनिक ही मालूम होने लगोगी।"

कैरोलाइन,—"अच्छा, यही सही। मेरी देहके लायक वैसे कपडे तय्यार हैं?"

"न तय्यार होते, तो कहती ही क्यों?"—इतना कह दुकानवालीने कैरोलाइनके सामने कागजका एक बक्स लाकर रख दिया और कहा,—"इसमेंसे अपने मन लायक दाढी मूछ चुन लो।"

इसपर कैरोलाइनने अपनी पसन्दसे खूब पतली मूछ और दाढी चुन ली। इसके बाद ऊपर ले जाकर दुकानवालीने अपने हाथसे उसे जहाजी सैनिकका लिबास पहना दिया और दाढ़ी, मूछ लगा दी जिसमें कैरोलाइनके चेहरेमें कुछ भी जनानापन न रह जाय, इसलिये उसके बाल भी छाट दिये। फिर जब कमरबन्दमें एक छुरा खोंसकर कैरोलाइनने आइनेमें अपना चेहरा देखा, तो उसे विश्वास हो गया, कि अब उसे जल्द कोई पहचान न सकेगा।

इसके बाद अब दुकानवालीको यथोचित् पारितोषिक देकर कैरोलाइन पासहीके एक काफीखानेमें घुसगई और वहां कुछ बयालू कर उसने दो चिट्ठियां लिखीं। एक एजवर रोडकी मारग्रियोनेस वेलेण्डनके नाम और दूसरी वो-ष्ट्रीटके प्रधान मजिष्ट्रेटके नाम। इसके बाद दोनों चिट्ठियोंको डाकखानेमें छोड आकर उसने वह रात उसी काफीखानेमें गंवाई।

दूसरे दिन दोपहरसे पहले ही मिष्टर रिगडेनके आफिसमें जाकर उसने पूछा,—"वकील साहब हैं?"

आफिसके हेड क्लर्कके पास बैठा एक नवयुवक किसी कागजकी नकल कर रहा था, हेड क्लर्कने उसकी ओर देखकर कहा,—"अलफ्रेड वकील साहबसे जाकर, कहो, कि अगर उन्हें फुरसत हो, तो एक नौ-सैनिक उनसे मुलाकात करना चाहता है।"

हेड क्लर्कने जिस युवकसे यह बात कही, उसकी उम्र सतरह अठारह वर्षसे अधिक न थी। उसका शरीर दुबला था, पर देखनेमें बुद्धिमान मालूम होता था। उसने अति सम्मानपूर्वक हेड क्लर्कसे कहा,—"महाशय। आप तो जानते ही हैं, कि मिष्टर रिगडेनको आज जरा भी फुरसत नहीं है। उन्होंने तो पहले ही कह दिया है, कि इस समय उनके पास कोई न जाने पावे।"

इसपर हेड क्लर्कने कुछ देर सोचकर कहा,—"हां हां, वे इस समय उडफाल बनाम फ्लोरिमिलके मुकद्दमेके कागज देख रहे हैं और कौंसिलियोंको जो जो विवरण देना होगा वही, सब लिख रहे हैं।"

कैरोलाइनने देखा, कि इस बातसे अलफ्रेडका मुख उत्साहित हो उठा, उसने मानो कुछ विस्मित होकर कहा,—"हां, ठीक है।" कैरोलाइनने जो देखा, हेड क्लर्क उसे ताड़ न सका। उसने कहा,—"इस मुकद्दमेके लिये मिष्टर रिगडेन बहुत व्यस्त हो रहे हैं। बिना किसी विशेष कामके वे इस समय किसीसे मुलाकात नहीं कर सकते।"

"मेरा भी कोई विशेष काम ही है।" इतना कह और युवाकी ओर देख कैरोलाइनने फिर कहा,—"वकील साहबसे एकबार मुलाकात करा दीजिये, महाशय।"

इसपर अलफ्रेडने हेड क्लर्ककी ओर देखा। उन्होंने भी शिर हिलाकर सम्मति प्रकाशकी। इसके बाद मिष्टर रिगडेनके पाससे लौट आकर वह कैरोलाइनको उनके पास ले गया। कैरोलाइनके जाते

ही वकील साहब उसकी ओर इस तरह देखने लगे, मानो उन्होंने पहले भी कभी उसे देखा है, पर कब और कहां देखा है, सो उन्हें याद नहीं आता।

अब कैरोलाइनने मुस्कराकर कहा,—"आप मुझे पहचानते नहीं?—क्या आपको याद नहीं है, कि कुछ दिन हुए एक छोकरी आपको कई दस्तावेज दे गई थी?"

वकील,—"हां, अब पहचान गया, पर इस वेशमें क्यों?"

कैरोलाइन,—"इससे आपको कोई मतलब नहीं। इस समय मैं यही कहने आई हूं, कि लार्ड फ्लोरिमिल शहरमें लौट आये हैं, और अन्दाजसे यह भी समझ गये हैं, कि उनके दस्तावेजोंको कौन उड़ा ले गया है, पर वे पकड़ न सकेंगे। उस विषयमें किसी बातके प्रकाश होनेकी सम्भावना नहीं है।"

वकील,—"फिर क्या कहना है। तब तो हम लोगोंके भय करनेका कोई कारण ही नहीं है।"

कैरोलाइन,—"हां, फ्लोरिमिलकी ओरसे तो कुछ भी डर नहीं है, पर उनके स्टेट और पद-मर्य्यादाके दावेदार जार्ज उडफालके ऊपर किसी स्त्रीका बहुत प्रभाव है। मुझे मालूम होता है, वह औरत उडफालके साथ कोई चालाकी करेगी, क्योंकि उससे उसका कोई इष्ट सिद्ध होने वाला है।"

वकील अवश्य ही यह बात आप वेलिंग्टनकी मारशियोनेसको लक्ष्य करके कहती हैं। वे तो अतिशय धर्मशीला और उच्च श्रेणीकी स्त्री हैं। आप अच्छी तरह समझ रखिये, कि उनसे अन्याय कार्य्य कभी नहीं हो सकता, पर मुझे ताज्जुब है, कि आप हंस रही हैं। मेरी बातपर विश्वास नहीं होता क्या?—"

कैरोलाइन,—"मेरे मनमें कुछ अधिक सन्देह होता है। खैर, जो कुछ हो, जार्ज उडफाल यदि मारशियोनेस वा और किसीकी

कहने सुननेसे अपना मुकद्दमा उठा लेना चाहें, तो बिना उनकी मर्जीके तो आप मुकद्दमा चला नही सकते न ?"

वकील,—"तब कैसे चला सकता हूं ? पर जिस मुकद्दमेके परिणामसे मिष्टर उडफालको निश्चय ही लाभ होने वाला है, वे उसे कोड़ देंगे, आप ऐसा क्यों सोचती हैं ?"

कैरोलाइन,—"रोज फाष्टर नाम्नी एक लड़की, जो वेलेण्डन प्राय रोमें रहती है, इसके साथ जार्ज उडफालकी लगन लग गई है।"

वकील,—"हां, सुननेमें तो ऐसा ही आता है, पर उससे क्या ?"

कैरोलाइन,—"मिस फाष्टरपर मारशियोनेसका बहुत कुछ एहसान है, इससे वह उनकी दबैल है। इसका प्रभाव उडफाल पर भी पड़ सकता है। अच्छा, आपसे एक बात पूछती हूं, इधर मिष्टर उडफालने अपने मुकद्दमेमें कुछ ढिलाई दिखाई है क्या।"

वकील,—(एक चुटकी सूंघनी सूंघकर) "जब आप पूछती हैं, तो मुझे कहना ही पड़ता है, कि मुकद्दमेके आरम्भमें मिष्टर उडफाल जितनी व्यग्रता दिखाते थे, उतनी अब नही दिखाते। उन्होंने यह भी कह दिया है, कि लार्ड फ्लोरिमेलके खिताबके बारेमें वे उतना जोर लगाना नही चाहते, और ष्टेटके बारेमें आपसमें ही निबटेरा कर लेना चाहते हैं।"

कैरोलाइन,—"अब तो आपको विश्वास होता है न, कि भीतर ही भीतर कोई कार्रवाई कर रहा है ?"

वकील,—"अच्छा, यह तो मान लिया, पर वेलेण्डनको मारशियोनेस ही इसके अन्दर है, यह कैसे समझूं। उनसे और लार्ड मपटशुभरीसे जो मुकद्दमा बहुत दिनोंसे चल रहा है और जिसका खातमा अब जल्द ही होने वाला है, उस मुकद्दमेमें मैं लार्ड मपटशुभरीके पक्षमें हूं, क्या इसीसे मारशियोनेस ऐसा कर रही हैं ? वे जैसी उच्च प्रकृतिकी रमणी हैं, उससे तो मुझे ऐसा विश्वास नहीं

होता, कि घटनाक्रमसे मेरे उडफालके पक्षमें हो जानेसे वे उडफालको हानि करेंगी।"

केरोलाइन,—"कौन किस मतलबसे क्या करता है, क्या नहीं करता? यह जाननेकी जरूरत हम लोगोंको नहीं है। हम लोगों को तो जो प्रत्यक्ष दिखाई देता है, उसीके अनुसार चलना होगा। मिष्टर उडफाल इसमें जो शिथिलता दिखा रहे हैं, यह कार्रवाई मारशियोनेस ही की है——"

वकील,—"वे तो कितने ही दिन तक यहां थी ही नहीं।"

केरोलाइन,—"नहीं थीं, यह ठीक है, पर वे अपनी एक पुरानी और विश्वासनीया कर्मचारिनीके तत्त्वावधानमें रोजको छोड गई थीं। मिष्टर उडफाल प्रायः उसके पास जाते आते थे। उन्होंने वहांसे रोजके नाम जो चिट्ठियां लिखी हैं, उनहीमें रोजको ऐसी शिक्षा दी है कि रोजने अपना प्रभाव उडफाल पर डाल दिया है।"

वकील,—"आप तो इस बारेकी खूब खबर रखती हैं! वेलेण्डन की मारशियोनेसका मन इतना नीच है, इस बातपर विश्वास कौन करेगा?"

केरोलाइन, "जो हो, आपको इस बातकी खबर तो लग ही गई कि उडफाल पर मारशियोनेसका प्रभाव पडा है। समय आने पर उनके चरित्रकी और भी बहुत सी बातें आपको मालूम हो जायंगी। मैंने भी एक कौशल रचा है, उससे मालूम होता है, मारशियोनेस उस विषयमें अब बहुत उत्साह न दिखावेंगी। तो भी इसलिये कह दिया है, कि यदि आप उडफालको ढिलाई करते देखियेगा, तो सहज ही समझ जाइयेगा, कि वह ऐसा क्यों करता है। इस समय आपको कामकी बडी भीड़ है क्या?"

वकील,—"हां, मण्टगुमरी बनाम वेलेण्डन, और उडफाल बनाम फ्लोरिमेलके कागजोंके सिवाय और भी कितने ही

तब उन्होंने उस चिट्ठीको देखकर पूछा,—"ओली! तुम इस बारेमें क्या समझते हो?"

खतको पढ कुछदेर चुप रहनेके बाद हेड कनिष्टबलने कहा,—"हुजूर! कुछ समझमें नही आता।"

मजिष्ट्रेट,—"अच्छा, जिस आदमीकी बात लिखी गई है, उसका स्वभाव कैसा है, कुछ जानते हो?"

कनिष्टबल,—"बहुत खुशदिल। पहले तो बड़े बड़े आदमियोंका उसपर बहुत अनुग्रह रहता था। मुझे तो यह खबर झूठ मालूम होती है।"

मजिष्ट्रेट,—"यह तो बड़े आश्चर्यकी बात है। यदि आदमी खुद हाजिर होकर ऐसी खबर देता तो, खानातलाशीका वारेण्ट भी जारी किया जा सकता था। मालूम होता है किसी दुष्टने दिल्लगीकी है।"

कनिष्टबल,—"हुजूर! तौ भी इसपर कुछ कार्रवाई तो जरूर की जानी चाहिये। अच्छा,—अगर मैं वहां जाकर ऊपर ही ऊपर तहकीकात करूं, तो कैसा हो?"

मजिष्ट्रेट,—यह तो बहुत अच्छी बात है, पर देखो, इस चिट्ठीकी बात जाहिर न होने पावे। अगर तहकीकातसे कोई बात मालूम न हो, तो बेफायदे एक आदमीके नामको कलङ्कित करना अच्छा नहीं।"

इस पर "बहुत अच्छा" कह और चिट्ठीको पाकेटमें रख कनिष्टबल रवाना हो गया।

पन्द्रह मिनटके बाद ओली (हेड कनिष्टबल) ने पालमालमें जाते जाते देखा, कि एक दुबला पतला रोगी कुत्ता उसके पीछे पीछे आ रहा है। उसे पीछा छोड़ते न देख ओलीने एकबार तो सोचा, कि इसे लात मारकर खदेड़ दूं, पर तुरत ही उसे याद हो आया, यह कुत्ता पहचाना हुआ मालूम होता है।

वकील,—"आपने तो मेरे मनमें बेढब शङ्का पैदा कर दी। मैंने तो बिना जाने बूझे ही उसे रख लिया है।"

यह सुन कैरोलाइनने सोचा, कि लार्ड फ्लोरिमेलने भी मुझे इसी तरह रख लिया था।

अब फिर चुटकी भर सुंघनी लेकर रिगडेन कहने लगा,—"मैं हमेशा सतर्क रहता हूं। एक दिन यह मेरे पास आकर बहुत रोया धोया और गिडगिडाने लगा। उस वक्त मुझे एक ऐसे छोकरेकी बहुत जरूरत थी। इसका कष्ट देखकर मुझे दया आगई, बस मैंने बिना जाने सुने ही इसे रख लिया, पर इसमें सन्देह नहीं कि यह बडा चालाक और मेहनती लडका है।"

मेरा सन्देह बेजड भी हो सकता है, पर उसका चेहरा मुझे वैसा तो लगता है। जो कुछ हो, आप होशियार रहियेगा।"

इतना कह कर कैरोलाइन चल खडी हुई।

अट्ठासीवां परिच्छेद।

सबूतोंका सिलसिला।

बो-स्ट्रीटके प्रधान मजिष्ट्रेटके इजलासमें आकर बैठते ही नायब नाजिरने एक चिट्ठी पेशकी। चिट्ठी औरतकी लिखी हुई मालूम होती थी, पर उसमें किसीका दस्तखत न था। मजिष्ट्रेट साहब उस चिट्ठीको पढ़ कर बहुत विस्मित हुए, पर सहसा कर्त्तव्य स्थिर न कर सकने पर वे उठकर खास कमरेमें चले गये और सलाह करने के लिये हेड कनिष्टबलको बुला भेजा।

सहसा ग्रमलेके गायब हो जाने पर जो आदमी उसकी जगह बहाल किया गया था, जब वह मजिष्ट्रेटके सामने हाजिर हुआ,

तब उन्होंने उस चिट्ठीको देखकर पूछा,—"क्रोलो! तुम इस बारेमें क्या समझते हो?"

खतको पढ कुछदेर चुप रहनेके बाद हेड कनिष्टबलने कहा,—"हुजूर! कुछ समझमें नही आता।"

मजिष्ट्रेट,—"अच्छा, जिस आदमीकी बात लिखी गई है, उसका स्वभाव कैसा है, कुछ जानते हो?"

कनिष्टवल,—"बहुत खुशदिल। पहले तो बडे बडे आदमियोका उसपर बहुत अनुग्रह रहता था। मुझे तो यह खबर झूठ मालूम होती है।"

मजिष्ट्रेट,—"यह तो बडे आश्चर्यकी बात है। यदि आदमी खुद हाजिर होकर ऐसी खबर देता तो, खानातलाशीका वारेण्ट भी जारी किया जा सकता था। मालूम होता है किसी दुष्टने दिल्लगीको है।"

कनिष्टवल,—"हुजूर! तो भी इसपर कुछ कारवाई तो जरूर की जानी चाहिये। अच्छा,—अगर मै वहा जाकर ऊपर ही ऊपर तहकीकात करू', तो कैसा हो?"

मजिष्ट्रेट,—यह तो बहुत अच्छी बात है, पर देखो, इस चिट्ठीको बात जाहिर न होने पावे। अगर तहकोकातसे कोई बात मालूम न हो, तो बेफायदे एक आदमीके नामको कलङ्कित करना अच्छा नही।"

इस पर "बहुत अच्छा" कह और चिट्ठीको पाकेटमें रख कनिष्टबल रवाना हो गया।

पन्द्रह मिनटके बाद क्रोलो (हेड कनिष्टबल) ने पालमालमें जाते जाते देखा, कि एक दुबला पतला रोगी कुत्ता उसके पीछे पीछे आ रहा है। उसे पीछा छोडते न देख क्रोलोने एकबार तो सोचा, कि इसे लात मारकर खदेड दू, पर तुरत ही उसे याद हो आया, कि यह कुत्ता तो पहचाना हुआ मालूम होता है।

इसके बाद कुछ सोचता सोचता कनिष्टवल सहसा बोल उठा,—"हां, खूब याद हुआ, मब्सके साथ यही कुत्ता तो रहता था।" फिर कुछ देरके बाद कुत्तेका नाम याद कर उसने पुकारा,—टौबी! टौबी।"

अपना नाम सुन टौबी मारे खुशीके अपनी दुम हिलाने और पिछले पैरोंपर खड़ा होकर क्रौलीका हाथ चाटने लगा।

अब अच्छी तरह देखने भालनेसे उसे निश्चय हो गया, कि यह वही टौबी है। कुत्तेका रङ्ग-ढङ्ग देख उसे कुछ विस्मय हुआ। आखिर उसने खयाल किया,—"पहले तो इस मामलेको मैं अश्रद्धाकी दृष्टिसे देखता था, पर अब यह अश्रद्धाकी वस्तु नहीं मालूम होती। सुबूतकी छाया कुछ कुछ दिखाई देती है। सुबूतके सिलसिलेका यह पहला हिस्सा प्रत्यक्ष दिखाई दे रहा है।"

इस तरह सोचता हुआ क्रौली पालमाल मोहल्लेमें आगे बढने लगा। जब वह मिसेस ब्रेसकी दुकानके पास पहुंचा तो कुछ देरतक उसे बड़े गौरके साथ देखकर आगे बढा। आखिर बारी ष्ट्रीटकी एक मांसकी दुकानपर जाकर उसने टौबीको मांस दिलाया। बहुत दिनोंसे टौबीको मास मुयस्सर न हुआ था, इस वक्त मास पा और बडी खुशीसे भर पेट खा वह कृतज्ञता दिखानेके लिये उछल उछल कर क्रौलीका हाथ चाटने लगा।

आखिर टौबीको ले और मासकी दुकानसे बाहर आकर क्रौली आप ही आप कहने लगा,—"तो अब कुछ तहकीकात करनी चाहिये।"

क्रौली जिस राहसे गया था। फिर उसी राहसे लौटा, सेण्टजेम्स स्क्वेयरको मोडसे घूमकर ज्यों ही वह पालमालमें जाना चाहता था, कि सहसा एक आदमीको धक्का लग गया। यह देख क्रौलीने कहा, "क्षमा कीजिये, महाशय।"

"कोई चिन्ता नहीं" कह और कुत्तेको अच्छी तरह देखकर उस भले आदमीने कहा,—"इस कुत्तेका मुँह बन्द कर दो, यह मुझे तनिक भी नहीं सुहाता।"

उधर कुत्ता फिर मौलीके पैरपर अपने दोनों अगले पैरोंको रखना ही चाहता था, कि इतनेमें उस कुत्तेको एक चपत लगा कर उस भलेमानसकी बातके उत्तरमें कहा,—"आपका मङ्गल हो; मैं कुत्तेसे जरा भी नहीं डरता, बल्कि उसे बहुत प्यार करता हूं। कुत्तेने मुझे दो एक बार काट भी लिया है, पर देखिये, उस रोगको क्या कहते हैं?—मैं उससे मरा नहीं।"

भलामानस,—"उस रोगका नाम 'हाइड्रोफोबिया' है। जो हो, मेरी बातको तुच्छ समझकर उड़ा मत देना। कल रातको मैंने जो भयानक काण्ड देखा है, अगर तुम उसे देखते, तो मालूम होता।"

मौली,—"वह क्या यही रोग—क्या नाम बताया?"

भलामानस,—"हाइड्रोफोबिया। देखो, मेरा समय बहुत मूल्यवान है और तुम्हारा भी वैसा ही है पर मैं डाक्टरी करता तथा इसानी धर्मको मानता हूं, इसीसे तुम्हें दो एक बात कहकर बिना सावधान किये जा नहीं सकता। कल एक पागलको देखनेके लिये मुझे एक जगहसे बुलाहट आई। मैंने जाकर देखा, तो उसे हाइड्रोफोबियासे पीड़ित पाया। क्या कहूं, उसकी अवस्था बड़ी ही भयानक हो रही थी। डाक्टरीके कारण मुझे नित्य प्रति कितने ही भयङ्कर काण्डोंको देखना पड़ता है, पर यह आदमी ऐसा भयानक प्रलाप करता था, कि इस समय भी उसकी बातें मेरे कानमें गूंज रही है।"

मौली,—"ओह! ऐसा भयकर प्रलाप था?"

डाक्टर,—मैंने तो ऐसे कष्टकी मृत्यु कभी देखी ही नहीं। उस

वक्त उस रोगीके मनमें ऐसा विश्वास हो गया था, कि वह फांसीपर लटकाया जा रहा है। वह खुद अपनेको, और उस समय वहां जो स्त्री मौजूद थी, उसे दो भयानक हत्याओंमें लिप्त स्वीकारकर सब बातें बकने लगा। मनुष्यका मन भी कैसा अद्भुत पदार्थ है। उसे ऐसी धारणा हो गई थी, मानो वह फांसीकी तख्तीपर खडा हो, न्युगेट जेलके धर्मयाजकके निकट अपना पाप स्वीकार कर रहा हो। उसी समय उसने यह भी कहा, कि जिन दो आदमियोंका खून हुआ है, उनकी लाशें पीछेवाले बावर्चीखानेमें गडी हुई हैं।"

यह बात सुनते ही क्रौलीका औत्सुक्य अत्यन्त बढ गया। व्यग्र होकर वह बोल उठा,—"ऐं। यह आप क्या कह रहे हैं। यह घटना कहां हुई थी, महाशय ?"

डाक्टर,—"यहीं, पास ही तो। वहींसे तो मैं आ रहा हूं। वह औरत बहुत डर और घबरा गई थी, इसीसे उसे देखने गया था, कि अब वह कैसी है। क्यों भाई। मेरी ओर इस तरह क्यों देख रहे हो ?"

क्रौली,—"इसलिये देख रहा हूं, कि सुबूतके सिलसिलेका यह भी एक अंश है।"

डाक्टर,—"तो क्या उन दोनों खूनोंकी बात सच ही है ?"

"पढ़कर देख लीजिये"—इतना कहकर क्रौलीने वह गुमनाम चिट्ठी डाक्टरके हाथमें रख दी।

चिट्ठीमें यह लिखा था,—"बो-ष्ट्रीटके प्रधान मजिष्ट्रेटकी सेवामें सूचित किया जाता है, कि पालमालवाली मिसेसब्रेसके मकानके पीछे बावर्चीखानेमें पत्थरकी एक बडीसी पटियाके नीचे लापता यमले और मब्स नामक दो पुलिस-कर्म्मचारियोंकी लाशें गडी हुई हैं। उन दोनोंका खून कैसे हुआ, यह तहकीकात करना आपका काम है।"

इन कई सतरोंको पढ़कर डाक्टर सन्न होगया। वह बहुत दिनोंसे मिसेस ब्रेसके यहां दवा-दारू करता था। यद्यपि उसे यह विश्वास नहीं था, कि मिसेस ब्रेस एकदम सती साध्वी स्त्री है, पर उसके साथ साथ यह भी विश्वास न था, कि वह ऐसा भयानक काम कर सकती है।

चिट्ठीको वेष्टकोटके पाकेटमें रख क्रौली फिर कहने लगा,—"महाशय! आप बड़े आश्चर्यमें पड़ गये हैं। और बात भी वैसी ही है। मैं इस मुकद्दमेकी तहकीकात करने ही आया हूं, पर आपसे बातचीत होनेके पहले खुद मुझे ही विश्वास न होता था, कि यह बात कहांतक सच है। अब हठात् कहूं, या भगवानकी लीला। एक एक करके सब सुबूत मिलता जाता है।"

डाक्टर,—"निसन्देह यह भगवानकी ही लीला है। तुम पुलिसके आदमी हो?"

क्रौली,—"जी हां, कृपाकर अपना कार्ड दीजिये, आपकी गवाहीकी जरूरत पड़ेगी?"

डाक्टर,—(कार्ड देकर) "हाय! बेचारीकी कैसी दुर्दशा होगी। उस समय उसके अत्यन्त घबराने और डरसे बारबार मेरी ओर ताकनेका कारण अब समझमें आया। पर एक औरतको ऐसे सङ्गीन जुर्ममें गिरफ्तार करके ले जानेमें तुम्हें भी बहुत तकलीफ उठानी पड़ेगी।"

क्रौली,—"यह तो मेरा हर रोजका काम है। अच्छा, महाशय! अब चलता हूं, सलाम। जब आपकी गवाहीकी जरूरत होगी तो आपको खबर दे दूंगा।"

इधर सोचता-विचारता डाक्टर अपने घर चला, और उधर जल्द जल्द मजिस्ट्रेटसे सारा हाल कहने तथा कानूनन तहकीकात करनेका वारण्ट जारी करानेके लिये क्रौली बो ष्ट्रीटकी ओर लपका।

वहां पहुंच और मजिष्ट्रेटसे सारा मांजरा बयानकर उसने चटपट वारण्ट जारी कराया। फिर तीन कनिष्टबलों और टोबीको साथ ले आध घण्टेके बाद ही पालमालमें मिसेस ब्रेसकी दुकानपर जा पहुंचा। उस समय उसकी दुकानमें तीन युवतियां काम करती थीं। जिस वक्त दलबल सहित क्रौली दुकानमें पहुंचा, उस वक्त तीनों वहीं मौजूद थीं। मिसेस ब्रेस अपने खास बैठकखानेमें बैठी बैठी अनेक प्रकारकी चिन्ता कर और फ्रेडरिककी मृत्यु ही जानेसे अपने भाग्यको सराह रही थी। उन तीनों युवतियोंमें जो सबसे आगे थी, क्रौलीने उसीसे पूछा,—"तुम्हारी मालिकिन कहां है?"

उन लोगोंका रूप-रङ्ग और पोशाक आदि देखकर युवतियां झट उन्हें पहचान गईं। वे सब बड़े पशोपेशमें पड गईं, कि उसकी बातका क्या जवाब दें, क्या न दें। जवाबकी कोई परवाह न कर क्रौली दुकानसे होता हुआ दलबल सहित मकानमें जा घुसा। उधर कई आदमियोंके पैरोंका शब्द सुन यह जाननेके लिये, कि माजरा क्या है? मिसेस ब्रेस बैठकखानेसे बाहर निकल आई।

कनिष्टबलोंको देखते ही मिसेस ब्रेस असल बात समझ गई। उसका जो घबरा उठा और वह बेहोश होकर गिर पड़ी।

मिसेस ब्रेसको देखते ही टोबी महा उत्पात मचाने लगा। वह बार बार मिसेस-ब्रेसपर टूट पड़नेकी कोशिश कर रहा था। बड़ी मुश्किलसे उसे रोक और एक कनिष्टबलको मिसेस ब्रेसकी निगरानीमें छोड बाकी दो आदमियोंको साथ ले क्रौली बावर्चीखानेमें जानेके लिये नीचे उतरने लगा। टोबी साथ साथ जा रहा था। नौकरोंके कमरेके पाससे जाते वक्त वह उन लोगोंसे मालिकिनकी सेवा-शुश्रूषा करनेके लिये बैठकखानेमें जानेको कहता गया। मालिकिनकी मोहब्बतसे हो, चाहे न हो, पर यह जाननेके लिये, कि बात क्या है? वे सब बैठकखानेकी ओर दौड़ चले।

उधर क्रौली वगैरहके बावर्चीखानेमें पहुंचते ही टोबी एक पत्थरकी पटियाके चारों ओर घूमघूमकर शोर मचाने लगा।

यह देख क्रौलीने कहा,—"देखते हो न? यह जानता है, कि इसका मालिक यहीं गड़ा है। और यह मिसेस ब्रेसको भी अपना शत्रु समझता है। अगर मैं इसे पकड़े न रहता, तो यह मिसेस ब्रेसको नोच डालता। निश्चय समझ रखो, कि इसने खून होते अपनी आखों देखा है।"

अब एक कानिष्टबलने कुदाल और गाती निकालकर कहा,—"हुक्म हो, तो काममें हाथ लगा दिया जाय?"

क्रौली,—"इसमें पूछनेकी क्या जरूरत है। मुख्य प्रमाण तो इसी जगह है।"

अब क्या था, कानिष्टबलोंने चट काम शुरू कर दिया। पत्थरकी पटियाके अनायास ही उठ आनेसे वे लोग समझ गये, कि अभी हाल होमें यह उठाई बैठाई गई है। मट्टी भी सहज ही खुदने लगी, जिससे लोगोंको विश्वास होने लगा, कि चिट्ठीकी बात ठीक ही मालूम होती है। खोदते खोदते पहले बक्स और पीछे अमलेकी लाश मिली। धर पकड़कर दोनों लाशें ऊपर लाई गईं।

उधर नौकरोंकी सेवा-शुश्रुषासे बदनसीब मिसेस ब्रेस होशमें आई। पहले तो उसने समझा, कि स्वप्न देख रही हूं, पर यह सुखका भ्रम बहुत देर तक न रहा। नौकरोंका भयभीत मुख और कानिष्टबलोंकी तीव्र दृष्टि देखते ही वह समझ गई, कि यह भ्रम नहीं, सत्य—भीषण सत्य है। अब उसने अपने भविष्यत्‌को विचारा, तो उसे मालूम हुआ, कि इसका एकमात्र परिणाम फासी है।

इस जगह हमें एक बात कहनी है। यद्यपि वह बात पहले कही जा चुकी है, पर इस जगह उसे फिर दुहरा देना बहुत जरूरी है। बात यह है, कि दुष्कर्ममें दोषको अपेक्षा मूर्खताका भाग

ही अधिक रहता है। अवस्था चाहे जितनी शोचनीय क्यों न हो, विपद चाहे जितनी भयानक क्यों न हो,— अन्याय करके कभी उस का प्रतिकार नहीं किया जा सकता। दुःखी, दरिद्री आदमी दुष्कर्मद्वारा धन कमाकर अमीर हो सकता है सही, पर क्या उस धनसे वास्तविक सुख मिल सकता है? नहीं—कभी नहीं,—लाखबार नहीं। हिताहित ज्ञान नामकी कोई गूढ आध्यात्मिक शक्ति हम लोगोंमें रहे, वा न रहे पर हम लोगोंका चित्त कर्म्मानुसार ही हम लोगोंको दण्ड और पुरस्कार देता है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। पापी दुष्कर्मियोंको बराबर अपने पापके प्रकाश हो जानेकी शंका लगी रहती है, इसलिये उन्हें सुख कहां? जीवनका सम्भोग कहां? सामने अनेक प्रकारके स्वादिष्ट भोजनकी सामग्री रखी रहनेपर भी दरवाजा खटकते ही जिसका हृदय कांप उठता है, उससे तो वह मनुष्य ही हजार दर्जे अच्छा है, जो निःशङ्क होकर सुखसे चूनी-भूसी खाकर ही पेट भरता है। खूब बन ठनकर अच्छी बढिया गाडीपर जाते समय पुलिसको देखते ही जिसके मनमें यह भय उत्पन्न हो जाता है, कि गाडी रोककर कहीं यह मुझे गिरफ्तार तो न कर ले जायगा? उससे तो वही आदमी सुखी है, जो मामूली वेशमें पैदल घूमता फिरता है। पापीके पाप-भोगकी बात तो कह दी गई, अब उसकी मूर्खताके बारेमें कुछ कहना है। पापाचरणसे निवृत्त होनेका उपयुक्त सद्गुण यदि तुममें नहीं है, तो आओ तुम्हें दिखा दें, कि तुम्हारा प्रकृत स्वार्थ क्या है? यदि सुखके निमित्त तुम अपनेको विपन्न करना चाहते हो, तो हम यही कहेंगे, कि तुम निरे मूर्ख, गंवार और पागल हो। दुष्कर्मी जब कोई दुष्कर्म करता है, तो वह यही समझता है, कि उसका दुष्कर्म कभी प्रकट न होगा, पर यह विश्वास, यह युक्ति अभिज्ञताके विरुद्ध और नित्य शिक्षाके विपरीत है। अपराध करके यदि कोई बच जाता है, तो उसकी संख्या सौमें एक ही

होती है। आत्महत्या करनेके इरादेसे वाटरलू पुलपरसे नदीमें जो कूदा है, वही मर गया है, पर उनमेंसे अगर किसीको किसी माझीने बचा लिया हो, तो तुम्हारा यह समझना, कि तुम्हें भी पुलपरसे नदीमें कूदते ही कोई माझी आकर बचा लेगा, सिवाय मूर्खता और पागलपनके और क्या है?

खैर, इन बातोंको यहीं छोड़, अब हम फिर अपने किस्सेका सिलसिला जारी करते हैं।

होशमें आते ही मिसेस ब्रेस गाड़ीमें बैठाकर बी ष्ट्रीटके थानेमें भेज दी गई। उसके दो घण्टे बाद ही यह बात सारे शहरमें फैल गई, कि पालमालकी मशहूर कपड़ा बेचनेवाली मिसेस ब्रेस दो कनिष्ट-बलोंका खून करनेके इल्जाममें गिरफ्तार की गई है।

जिस वक्त मिसेस ब्रेस अदालतके कठघरेमें जाकर खड़ी हुई, उस वक्त उसका मिजाज बहुत कुछ ठिकानेपर आ गया था। उसे अपनी अवस्थाकी भयङ्करता साफ दिखाई देतीथी पर तो भी प्राण बचनेकी आशामें वह रो रोकर अपनी निर्दोषिताकी बात कहनेसे बाज न आई।

इसके बाद डाक्टरकी गवाही ली गई। फिर ओलोने मिसेस ब्रेसके बावर्चीखानेकी जमीनसे दो लाशें बरामद करनेकी बात बयान की। इसके बाद शव-परीक्षककी जाच खतम न होने तकके लिये मजिष्ट्रेट असामीको हाजतमें भेजा ही चाहते थे, कि इसी समय एक पियादेने आकर कहा,—"हुजूर! एक औरत आई है। वह इस मुकद्दमेकी विशेष बात बतानेको कहती है और इजहार देनेके लिये भी मुस्तैद है।" इसपर मजिष्ट्रेटने उसे हाजिर करनेका हुक्म दिया। दो ही मिनट बाद पियादेकी बाहका सहारा लिये एक बहुत ही दुबली-पतली जर्द चेहरेवाली कमसिन औरत अदालतमें आ हाजिर हुई। मिसेस ब्रेस उसे देखते ही पहचान गई। यह उसकी दाई

हेरियेट थी। पहले तो हेरियटकी आखोंसे आंसू निकल पड़े, पर कुछ देरमें मनको स्थिर कर वह सब बातें साङ्गोपाङ्ग बयान करने लगी। उसने कहा,—"एक दिन रातके वक्त जब मैं अपनी मालिकिनके कमरेमें गई, तो उनसे सुननेमें आया, कि बगलवाले हम्माममें एक लाश पडी है। उनके कहनेके मुताबिक, मैं इस माजरेको फ्रेडरिकसे कहने और उसकी सहायतासे लाशके छिपानेकी बातपर राजी हो गई। अन्तमें वह लाश बावर्चीखानेमें गाड़ दी गई। और मव्सके खूनकी बात तो अभी घण्टाभर पहले मुझे पालमालमें सुनाई दी है। इससे पहले मुझे उसका कुछ भी हाल मालूम न था। एक दिन खूब सवेरे जब मैं अपनी मालिकिनीके कमरेमें गई, तब वहा फ्रेडरिक ड्रेको बैठे पाया। उसी दिन एक कुत्तेने, जो उसी कमरेमें छिपा हुआ, फ्रेडरिकको काट खाया था।" इसके बाद हेरियेटने कहा,—मैं ईर्षा द्वेषसे मिसेस ब्रेसके बखिलाफ गवाही देने नही आई, बल्कि इस खयालसे आई हूं, कि सब बातें यथार्थ रूपसे बयान कर देनेसे मेरी छातीपरका एक भारी बोझा टल जायगा और मिजाज हलका हो जायगा। बस, सिर्फ इसी बातके लिये मैं अदालतमें आई हूं; मेरा और कोई दूसरा उद्देश्य नहीं है।"

उस औरतका बयान सुन लेनेके बाद मजिस्ट्रेटने पूछा,—"तुमने अदालतके नाम कोई गुमनाम चिट्ठी तो नही भेजी?" उसके इन्कार करने पर पेशकारने उस चिट्ठीको जोरसे पढकर सबको सुना दिया, पर किसीने न कहा, कि चिट्ठी मेरी लिखी हुई है। इसपर मजिस्ट्रेटने उस गुमनाम चिट्ठीके लिखनेवालेको जल्द हो खोज निकालनेका हुक्म कौलीको दिया।

इसके बाद हाकिमने हैरियेटसे कहा,—"असलेका खून होनेके बाद तुमने जो जो काम करनेकी बात अभी बयान की है, उससे

मैं तुम्हारे ऊपर भी मुकद्दमा चलानेके लिये लाचार हुआ हूं। पर तुमने विचारके काममें सहायता देनेके उद्देश्यसे अनुतप्त हृदयके साथ जो जो बातें साफ तौरपर कह दी हैं, विचारके दिन उसका अवश्य खयाल किया जायगा।"

इसपर हैरियेटने कहा,—"जान बूझकर ही मैंने यह आफत मोल ली है, पर इसके लिये मैं दुःखित नहीं हूं, क्योंकि सब बात साफ साफ खोलकर कह देनेसे मेरा जी बहुत हलका हो गया है।"

उधर हैरियेटको देख और उसका इजहार सुन प्रिन्स प्रभृति उमरावोंकी प्रणयिनी मिसेस ब्रेसकी रही सही आशा भी विलुप्त हो गई और उसने जब मन ही मन इस कामका परिणाम सोचा, तो उसका सारा शरीर कांप उठा।"

अब मजिष्ट्रेटने मिसेस ब्रेस और उसकी पुरानी दाई हैरियेटपर जुर्म लगा दिया। दो खून करनेके लिये मिसेस ब्रेस अभियुक्त हुई और पहली हत्याके बाद और और कामोंमें उसे मदद देनेका मुकद्दमा हैरियेटपर चला। जब तक न्यूगेट जेलमें ले जानेके लिये गाड़ी न आई, तब तक दोनों अलग अलग कमरोंमें बन्द कर दी गईं। कमरेका दरवाजा बन्द होनेके पहले मिसेस ब्रेसने एकबार कौलीसे मुलाकात करनेकी इच्छा प्रकट की। कौलीके आनेपर मिसेस ब्रेसने कहा,—"जिस गुमनाम चिट्ठीका जिक्र हो रहा था, क्या उसे एकबार मुझे दिखलानेमें आपको कोई उज्र है?"

कौली,—"कुछ भी नहीं। गवाहोंके बयानके साथ ही साथ तुम्हें उसकी नकल भी दी जायगी, तो भी लो—देख लो।"

चिट्ठीको देखते ही मिसेस ब्रेस बोल उठी,—"अरे! यह तो कैरोलाइन वाल्टर्सकी लिखी हुई है।"

कौली,—"कैरोलाइन वाल्टर्स। यह तो जाना हुआ नाम है।"

ब्रेस,—"हां, यह वही कैरोलाइन है, जिसने फोर-ष्ट्रीटकी धाय मिसेस लिण्डलीका खून किया है।"

कौली,—"और जो पिटर ग्रमलेको धोखा दे टेम्स नदीमें कूद पडी थी। क्या अबतक वह लण्डनमें ही छिपी हुई है?"

ब्रेस,—"कल रातमें वह मेरे मकानपर भी गई थी। पहले काले छोकरे नौकरके वेशमें और उसके बाद विवाह करनेके निमित्त कन्याके वेशमें। अवश्य इस वक्त किसी दूसरे वेशमें होगी।"

कौली,—"अगर वह अभीतक लण्डनमें मौजूद है, तो चाहे जिस वेशमें हो, बारह घण्टेके अन्दर ही जरूर उसे गिरफ्तार कर लूंगा। जिस बलामें तुम फँसी हो, उसमें शायद वह भी शामिल है?"

ब्रेस,—"नहीं, पर न मालूम कैसे उसे यह बात मालूम हो गई। खैर, कुछ चिन्ता नहीं। अब तुम जाओ और जल्द ही उसे ढूंढ निकालो,—गिरफ्तार करो और फांसीपर चढा दो। उसीने मेरा सर्वनाश किया है।"

जबतक मिसेस ब्रेस यह सब बाते करती रही, तबतक मानो उसके दिलमें साहस रहा, पर अन्तमें चित्तके क्षोभसे नितान्त कातर होकर वह बैठ गई। प्राय: घण्टे भरके बाद ही मिसेस ब्रेस और हैरियेट न्यूगेट-जेलमें पहुंचाई गईं और जुदा जुदा कमरोंमें कैद कर दी गईं।



इसके आगेका हाल जाननेके लिये २२वीं संख्या मगा देखिये।

'बर्म्मन प्रेस' कलकत्ताकी सर्व्वोत्तम पुस्तकें।

कोहेनूर

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।



यदि आपको राजपूतों और मुसलमानोंकी भयानक लड़ाइयोंका आनन्द लेना हो, यदि आप राठोर-वीर "दुर्गादास" और सम्राट "औरङ्गजेब" के इतिहास-प्रसिद्ध भीषण संग्राम-का रसास्वादन करना चाहते हों, यदि आप उदयपुरके युवराज "अमर-सिंह" की वीरता, धीरता और बुद्धि-मत्ताका पूर्णपरिचय पाया चाहते हों, यदि आप "अरावली-उपत्यका" में होने वाले लक्षाधिक क्षत्रिय वीरों और इहांके मुसलमानोंका घोर संग्राम देखा चाहते हों, यदि आप वीर-शिरोमणि "काला पहाड़" राजकुमार "केशरीसिंह" आदि मुट्ठी-भर क्षत्रिय वीरोंका असंख्य मुसल-मानोंके साथ आश्चर्यजनक युद्ध दृष्टिगोचर किया चाहते हों, यदि आप वीर-कन्या और वीर-पत्नी "विलास-कुमारी" की आदर्श पति-भक्तिका ज्वलन्त प्रमाण पाया चाहते हों, यदि आप अम्बरकी राजकुमारी स्वर्गीय सुन्दरी "अम्बालिका" का प्रकृतप्रेम हृदयङ्गम किया चाहते हों, तो इसे अवश्य पढ़िये। इसमें सुन्दर सुन्दर पांच चित्र भी दिये गये हैं। मूल्य केवल १॥) सजिल्द २) रुपया।

नकली रानी—इसमें एक डाकू-स्त्रीकी वीरता, बुद्धिमानी, चालाकी और दिलेरी आदिका वर्णन बड़ी ही बारीकीसे किया गया है। साथही बहुतसे गुप्त रहस्य खोले गये हैं, दाम सिर्फ १)

जासूसी कहानियां—यह उत्तमोत्तम जासूसी उपन्यासोंका बड़ा ही अपूर्व संग्रह है। इसमें ५ उपन्यास दिये गये हैं—(१) साढ़े आठ खून, (२) सतीका बदला, (३) नीलाम घरका रहस्य, (४) घुड़दौड़का घोड़ा (५) चोर और चतुर। दाम सिर्फ ॥) आना।

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

घटना चक्र

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इस उपन्यासमें अङ्गरेज-जातिकी पारस्परिक शत्रुताका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है। "लार्ड पेमब्रोक" नामी एक सम्भ्रान्त अङ्गरेज किस प्रकार शत्रुओंसे सताये जाकर अपनी अद्वितीय सुन्दरी स्त्री "क्लिओपेट्रा" सहित भारतवर्षमें भाग आये, किस प्रकार उनके शत्रु-दलने भारतमें भी उनका पीछा न छोड़ा, किस प्रकार, भारतके सरकारी जासूस "लक्ष्मणजी रघुपन्त" ने शत्रुओंके हाथसे बारम्बार उनकी रक्षा की, किस प्रकार शत्रुओंके जासूस लार्ड पेमब्रोकके हाई नोकरों तकमें घुस गये, किस प्रकार दुष्टोंके षड्यन्त्रसे लार्ड पेमब्रोकको भयानक खूनी मामलेमें गिरफ्तार हो इङ्गलैण्ड



जाना पड़ा, किस प्रकार रास्तेमें शत्रुओंके जहाजने उनपर आक्रमण किया, किस प्रकार उनकी स्त्री "क्लिओपेट्रा" समुद्रमें फेंक दी गयी, किस प्रकार जासूस रघुपन्तने समुद्रमें कूदकर उनकी स्त्रीका उद्धार किया, किस प्रकार बड़े बड़े जासूसोंकी मददसे "लार्ड पेमब्रोक" को अदालतसे रिहाई मिली, किस प्रकार उनके खूनके प्यासे शत्रु गिरफ्तार किये गये, आदि सैकड़ों दिलचस्प घटनाओंका वर्णन है। पुस्तक बड़ी और सचित्र है। दाम बेजिल्द २।) रुपया, जिल्द सहीका २॥) रुपया।

शोणित-चक्र

—: जासूसी उपन्यास —

इस उपन्यासमें "शोणित-चक्र" नामक एक अद्भुत रहस्यका ऐसा अनूठा भेद खोला गया है, कि पढ़कर आप दङ्ग हो जायगे और बार बार ऐसे ही उपन्यास पढ़नेकी इच्छा प्रकट करेंगे। यह जासूसी ढङ्गका अनूठा उपन्यास है, २।)

शीशमहल

सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास ।

इस उपन्यासमें भारत-सम्राट "अकबर" के समयकी कितनी ही मनोरञ्जक घटनाओंका सचित्र वर्णन किया गया है। सम्राट अकबरकी आज्ञासे सेनापति "इसकन्दर" का गुप्त भावसे "ईदलगढ़-दुर्ग" पर चढ़ाई करना, भयानक अंधेरी रातके समय चुपचाप दुर्गपर अधिकार जमा कर दुर्गाधिपति 'लोहानी' को कैद करनेकी चेष्टा करना, लोहानीकी वीर-पत्नी "गुलशन" के अपूर्व रूप लावण्यपर मुग्ध हो कर्त्तव्य-विमुख होना, पतिव्रता गुलशनका इसकन्दरको धोखा देकर पति सहित दुर्गसे निकल भागना, इसकन्दरका पीछा करना, लोहानीका पहाड़से गिरकर प्राण त्याग करना,



गुलशनकी फरियाद पर अकबरके दरबारसे इसकन्दरको फांसीका हुक्म मिलना, गुलशनकी सहायतासे इसकन्दरका कारागारसे निकल भागना, मालवाधिपति "बाजबहादुर" को गुप्त घातकके आक्रमणसे बचाना, बाज बहादुरका इसकन्दरको सम्मान सहित घर लेजाना, बाज बहादुरकी सुन्दरी कन्या "रुखिया" पर इसकन्दरका मोहित होना बहुत मुसीबतोंके बाद दोनोंमें विवाह होना आदि बहुतसी अपूर्व घटनायें दी गयी हैं। सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ २) रुपया।

राजसिंह सचित्र ऐतिहासिक उपन्यास।

इसमें वीर-शिरोमणि महाराणा राजसिंह और सम्राट औरङ्गजेबके उस भयंकर युद्धका वर्णन है, जिसमें लक्षाधिक वीरोंकी प्राणाहुति हुई थी। इस महायुद्धमें राजसिंहने दुर्दान्त औरङ्गजेबको बड़ी बहादुरीसे पराजय कर 'रूपनगर' की राज कन्या "चञ्चल-कुमारी" की धर्म्म रक्षा की थी। दाम १।) ।

जासूसी कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक! हम दावेके साथ कहते हैं, कि आजतक आपने ऐसा उपन्यास न पढ़ा होगा। इसमें ब्राडो नामक एक स्वामि-भक्त कुत्तेने कैसी कैसी करामातें दिखाई हैं और अपने गरीब स्वामीको "लार्ड" जैसे बड़े ओहदेपर पहुंचा दिया है, कि पढ़कर तबियत फड़क उठती है। साथ ही इस उपन्यासमे यह शिक्षा भी खूब मिल सकती है, कि मनुष्य नेकचलनी और परिश्रमके बलपर कहांतक उन्नति कर सकता है। हमारा एकान्त अनुरोध है, कि यदि आपको उपन्यासोंसे कुछ भी शौक न हो, तो भी आप इसे अवश्य पढ़ें, आपको पछताना न पड़ेगा, क्योंकि इसमें भाग्य-परिवर्त्तनका ऐसा सुन्दर चित्र अङ्कित किया गया है, कि उसे



पढ़कर निकम्मे मनुष्य भी कुछ दिनोंमें अपनी उन्नति कर सकते हैं। इसमें हाफटोन फोटोके सुन्दर ३ चित्र भी दिये हैं। मूल्य सिर्फ १॥)

गुलबदन व रजिया बेगम

बड़ाही अनूठा थियेट्रिकल उपन्यास।

प्रेम-रसका इससे अच्छा उपन्यास हिन्दीमें अबतक दूसरा नहीं छपा। नव्वाब सफदरजङ्ग और जमशेदकी भयानक लड़ाइयां, दो दो आदमियोंका गुलबदनके फिराकमें जी-जानसे कोशिश करना, गुलेनार और हैदरका बीच बीचमें बाधा देना। ठीक शादीके वक्त जमशेदका गुलबदनको भगाले उठा लेजाना। एकाएक पुलका टूट जाना और गुलबदनका नदीमें गिर पड़ना। आदि बातें बड़ी खूबीसे लिखी गयी हैं। दाम सिर्फ १) रु०

आर० एल० बर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

दुर्गादास

सचित्र ऐतिहासिक नाटक।

टीका दास बढ़िया

बङ्ग-साहित्यमें जिस नाटककी धूम मच गयी थी, बङ्ग-भाषामें जिस नाटकके अनेकों संस्करण हाथो-हाथ बिक गये थे, कलकत्तेके बङ्गला थियेटरोंमें जिस नाटकको खेलते समय दर्शकोंको स्थान मिलना कठिन हो जाता था, हिन्दीके बड़े बड़े पुस्तक-विक्रेता जिस नाटकका हिन्दी अनुवाद प्रकाशित करनेके लिये जी-जानसे कोशिश कर रहे थे, वही



हृदयहारी हुआ वीर-रस-प्रधान ऐतिहासिक नाटक हिन्दीमें सबसे पहले प्रकाशित कर हम मारे आनन्दके फूले नहीं समाते। वास्तवमें यह नाटक नाटकोंका 'मुकुटमणि' है। जिसने इसे एकबार पढ़ा या देखा, वह और नाटकोंको भूल गया। इसमें मेवाड़के प्रसिद्ध वीर 'दुर्गादास' सम्राट "औरङ्गजेब" महाराणा राजसिंह, भीमसिंह, राणा उदयसिंह, शिवाजीके पुत्र महाराष्ट्राधिपति "शम्भाजी" और शाहजादे अकबर, आजम तथा कामबख्श प्रभृतिके इतिहास-प्रसिद्ध भीषण युद्धोंका वर्णन बड़ी ही ओजस्विनी भाषामें किया गया है। मुगल-रमणियों और राजपूत-ललनाओंके चरित्रका खाका बड़ी ही बारीकीसे खींचा गया है। बीच बीचमें अच्छे अच्छे गाने देकर नाटककी शोभा और भी बढ़ा दी गयी है। हम दावेके साथ कहते हैं, कि ऐसा अनूठा नाटक हिन्दीमें अबतक नहीं था। इसे पढ़ और खेलकर पाठक इतने खुश होंगे, कि फिर नित्य ऐसे ही नाटक खेलने और पढ़नेके लिये खोजते फिरेंगे। पहली बारकी छपी कुल कापियां बिक जानेपर हमने इसे दूसरी बार बड़ी सज-धजसे छापा है और हाफटोन फोटोके छपे कितने ही सुन्दर सुन्दर रङ्गीन चित्र भी दिये हैं। दाम सिर्फ १।।) रुपया।

डाकू भाई

यह उपन्यास इतना अद्भुत, आश्चर्यजनक और जटिल घटनाओंसे पूर्ण है, कि पढ़कर रोयें खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ।=) आना

डबल जासूस

-: सचित्र जासूसी उपन्यास :-

नरेन्द्र और सुरेन्द्र नामक एक ही सूरत-शक्लके दो नामी जासूसोंकी



पाश्चर्य्यजनक कारवाइयोंका बयान किया गया है, जिसके पढ़नेसे रोंगटे खड़े हो जाते हैं। यह उपन्यास घटनाका खजाना, कौतुकका आगार और जासूसी करामातोंका भण्डार है। दोनों जासूसोंने किस बहादुरोसे चोरों, दगाबाजों और खूनियोंको गिरफ्तार कर "सुशीला" और "मनोरमा" नामी दो सम्भ्रान्त रमणियोंको बचाया है, कि मुहसे 'वाह वाह' निकल पड़ती है। कलकतिया चोरोंके तिलस्मी अड्डेका अद्भुत रहस्य, नाव पर जासूस और चोरोंका भयानक संग्राम, कम्पनीबागमें भीषण तमचेबाजी, एक वीरान खड्हरमें डुटोंके दलकी विचित्र गिरफ्तारी, मुर्दाघरमें बेनामी लाशका अनूठे ढङ्गसे पहचाना जाना, नदीके किनारे दो असली और दो नकली जासूसोंका द्वन्द्व युद्ध,—आदि बातें पढ़कर आप दङ्ग न रह जाय तो बात ही क्या है? इसमें 'सुशीला' नाम्नी सुन्दरीका एक तिनरङ्गा चित्र देखने ही योग्य है। इसके अलावा और भी सुन्दर सुन्दर ९ चित्र दिये गये हैं। इतना कुछ होनेपर भी दाम १॥)

शशिबाला

शिक्षाप्रद जासूसी उपन्यास।

इसमें एक सचरित्रा स्त्रीने किस चतुरता, बुद्धिमत्ता और दूर-दर्शितासे अपने कुपथगामी स्वामी और कितने ही मनुष्योंको सुपथगामी बनाया है, यह पढ़ते पढ़ते जी फड़क उठता है। कुमारस्वामीका तिलस्मी मठ, जोगिनीकी अद्भुत चालाकी, वीरसेनकी विलक्षण वीरता, शशिबालाकी अद्वितीय सुन्दरता आदिका हाल पढ़कर आप अवाक् रह जायगे। यह स्त्री, पुरुष, बूढ़े बच्चे सभीके पढ़ने योग्य है। दाम सिर्फ ॥≈) आना।

अमीरअली ठग

सचित्र जासूसी उपन्यास।

पाठक महोदयो! आपने शायद पुराने जमानेके भयानक ठगोंका हाल सुना होगा। 'इष्ट इण्डिया कम्पनी' के राजत्वकालमें इन ठगोंका बड़ा ही दौर-दौरा था। ठगोंके जोर-जुलमसे उस समय सर्कार और प्रजा दोनों ही तङ्ग आ गयी थीं। ठगोंके बड़े बड़े दल राजसी ठाठ बाटसे दौरा करते फिरते थे और उनके गोइन्दे मुसाफिरोंको बगला (बहका) कर अपने गरोहमें ले आते थे। फिर ठग लोग विचित्र ढङ्गसे रूमालके झटकेसे बातकी बातमें उन्हें फांसी देकर सारा धन लूट लेते थे।



मुसाफिरोंके लिये वह समय बड़ा ही भयानक था। डाकुओंके हाथसे मुसाफिर लोग बच भी जाते थे, मगर ठगोंके चगुलसे निकल भागना कठिन ही नहीं, वरन् असम्भव था। इन्हीं ठगोंके "अमीरअली" नामक सर्दारने कम्पनी बहादुरसे मिलकर हजारों ठगोंको फांसी दिलवा दी और तभीसे ठगोंकी जड़ भारतसे एक प्रकारसे कट गयी। यह उपन्यास बड़ा ही रोचक और शिक्षाप्रद है और हाफटोन फोटोकी बड़ी बड़ी कई तस्वीरें लगाकर खूब ही सजा दिया गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

कैदीकी करामात

त्र जासूसी उपन्यास।

डिटेकटिव उपन्यास है, लग

कलकत्ता ३७१ अपर चीतपुर रोड बर्म्मन प्रेसमें,
रामलाल वर्म्मा द्वारा मुद्रित।

सं० १९७६ विक्रमीय।

तीय बार २०००]

[मूल्य प्रति संख्या ।=)

संख्या २३

लण्डन-रहस्य

अर्थात्

मिस्ट्रीज़ आफ़ दी कोर्ट आफ़ लण्डन।

चौथा खण्ड।

निन्नानवेवां परिच्छेद।

अर्लका शेष कार्य्य।

गत परिच्छेदकी घटनायें जिस दिन और जिस समय घटी थीं, उसी दिन और प्रायः उसी समय एनवर रोडके समीपवर्त्ती टैमफोर्ड-मैनरमें और एक भयानक काण्ड उपस्थित हुआ था।

वह दिन बहुत ही सुन्दर था। सन् १७८५ ई० की वसन्त ऋतु भरमें वैसा दिन और एक भी नहीं हुआ। टैमफोर्ड भवनके चारों ओर आज अपूर्व सुन्दरता छाई हुई है। बागोंमें आज नाना रङ्ग और नाना प्रकारके फल फूलोंकी बड़ी बहार है। मैदानोंमें आज अनेक प्रकारकी घासोंकी विचित्र शोभा हो रही है। मैदानके भीतरसे कल कल शब्द करती हुई जो नदी बह रही है, वह ऐसी मालूम होती है, मानो खूब साफ चांदीकी प्रशस्त रेखा हो। पक्षियोंके आनन्दकी आज सीमा नहीं है, अपने मधुर शब्दसे उन लोगोंने चारों दिशाएं

गूँजा दी है। जड़ चैतन्य मिलकर आज मानो महामहोत्सवमें मत्त हो उठे हैं।

ऐसे ही आनन्दके समयमें डेसबोरोके अर्ल अपनी स्त्रीके साथ ष्टैमफोर्ड-मैनरके बागमें सैर कर रहे हैं। बागके काङ्कडविके रविश बहुत ही खूबसूरत बने हुए हैं। उनके दोनो तरफ फूलोंकी क्यारियाँ क्या ही भली मालूम होती हैं। स्त्री पुरुष दोनों आज हाथ मिलाकर नहीं बल्कि अलग अलग टहल रहे हैं।

दोनोंकी नजर नीचे है, कोई किसीकी ओर नहीं देखता। दोनो एक साथ टहल रहे हैं सही, पर कोई किसीका अङ्ग स्पर्श नहीं करता। दोनोंके हाव भाव और रङ्ग ढङ्गसे यही मालूम होता है, कि आज उनके मनमें कुछ मलीनता छाई हुई है। आज उन लोगोंकी अवस्था ऐसी क्यों रही है? क्या आज उन लोगोंमें कुछ लडाई झगडा हुआ है? या कुछ वाद विवाद हो गया है? नहीं, ऐसा तो कुछ भी नहीं हुआ। तब आज उन लोगोंकी ऐसी हालत क्यों है? आशा पूर्ण न होनेके कारण क्या काउण्टेस आज दुःखित हैं? अथवा अपनी भूलको खयालकर अर्ल ही आज लज्जित हो रहे हैं? नहीं, नहीं, आज उन लोगोंके मनमें ऐसी कोई बात नहीं है, आज वे लोग किसी दूसरी ही चिन्तामें निमग्न हैं। तो वह चिन्ता कौन सी है?

असल बात यह है, कि वे लोग एक दूसरेपर घृणा करते हैं बहुत चेष्टा करनेपर भी वे लोग अपने मन वशमें नहीं कर सकते और न घृणा को ही त्याग सकते हैं। उन लोगोंके हृदयमें एक दूसरेके लिये पहले जो सहानुभूति भरी हुई थी, वह अब निर्दय घृणा नरहत्यासे नष्ट हो गई है। एक दिन वह था, कि अर्ल अपनी स्त्रीको प्राणसे भी अधिक प्यार करते थे, उसे देखकर बाग बाग हो जाते थे—प्रेमसे पागल हो उठते थे। जिस स्थानसे होकर निकलती थीं

उसे परम पवित्र भूमि समझते थे। पर आज वैसा दिन नहीं है। यद्यपि काउण्टेसका सौन्दर्य वैसा ही बना हुआ है, पहले की की तरह खूब बन ठनकर आज भी वह अर्लके साथ साथ घूम रही है, पर आज अर्ल उसे पहलेकी तरह प्रेम-दृष्टिसे नहीं देखते। वे सोचते हैं, कि यह नरघातिनी नारीरूपमें काल-सर्पिणी है। इसके खास-प्रखासमें हलाहल भरा है, इसका अङ्ग स्पर्श करनेमें भी पाप है। आकाशकी वृष्टिसे फल फूल सभी उत्पन्न होते हैं, परन्तु यदि उस वृष्टिके साथ विषात्मकीट हों, तो उनके स्पर्श मात्रसे ही सब नष्ट हो जाता है।

अर्लका हृदय-क्षेत्र अति पवित्र था। उसमें कितने ही सुन्दर सुन्दर भाव-पुष्प खिले हुए थे, पर उनपर नर-शोणित बिन्दुके गिरते-ही उन कोमल फूलोंकी सब पखड़िया झड़ गई। यह तो हुई अर्लकी अवस्था, अब उनकी पत्नीकी अवस्था देखिये। यद्यपि एलिनर पति-प्रेममें कभी पगली नहीं हुई, यद्यपि उसने पतिकी पूजा करना नहीं सीखा, यद्यपि उसके मनमें पति-प्रेम कभी इतना बद्धमूल नहीं हुआ, कि उसे उखाड़कर फेंक देनेमें उसके हृदयमें चोट लगती, तौ भी जो घटना घटी है, उससे उसके मनमें पतिके ऊपर जो कुछ श्रद्धा-भक्ति थी, वह सभी नष्ट हो गई है। वह जानती थी, कि उसका पति सर्वगुण सम्पन्न और न्याय-धर्मसे विभूषित है और सर्वसाधारण उसे पवित्र-हृदय तथा उन्नतमना समझते हैं, पर आज वह पतिके साथ साथ घूमती हुई सोच रही है, कि वह घोर पाखण्डी और भयानक कपटी है। यद्यपि उसने अपने हाथसे नर हत्या की है, पर उसका पति इस कार्य्यमें उसका सहायक था, इसलिये जिस तरह वह कलङ्किनी है, उसी तरह उसका स्वामी भी कलङ्कित है।

सुतरां अर्ल और काउण्टेस अब एक दूसरेको घृणाकी दृष्टिसे देखते हैं और उनके मनमें जो भाव प्रबल हो रहा है, उसे भी वे

लोग आपसमें छिपा नहीं सकते। अब एक साथ रहनेमें दोनोंको डर मालूम होता है, कोई किसीके मुँहकी ओर देखना नहीं चाहता और न हाथ ही छूनेकी इच्छा करता है। इस समय वे लोग इच्छापूर्वक एक साथ नही घूम रहे थे। दोनों अलग अलग टहल रहे थे, टहलते टहलते हठात् एक स्थानपर आकर मिल गये। साथ ही दोनोंकी आंखें मिलीं और तुरन्त ही नीची हो गईं। एक दो बातें भी हुईं, पर वे बिल्कुल मामूली थीं।

बहुत देर तक दोनों पति-पत्नी चुपचाप टहलते रहे। आखिर अर्लने कहा,—"एलिनर। इस तरह तो अब न चलेगा।"

इसपर आश्चर्यके साथ एकबार पतिके मुखकी ओर देख और सिर झुकाकर एलिनरने कहा,—"क्या कहा ?"

अब अर्लने शान्त और गम्भीर स्वरसे कहा,—"चाहे जिस तरह हो, जल्द ही इसका कुछ निबटेरा कर लेना चाहिये। इस तरह तो जीवन धारण करना असम्भव है।"

एलिनर,—(विस्मय सहित) "जीवन - धारण करना असम्भव है ?"

अर्ल,—"एलिनर। मेरी बात न समझनेका भाव दिखानेसे क्या लाभ है ? तुम्हारा हृदय ही तुम्हें मेरे मन्तव्यको भलीभांति समझा रहा है। अब हम लोग एक दूसरेकी आखके काटे हो गये हैं। हम लोगोंके काम काज में जो भाव प्रकट होता है, यद्यपि इस समय हम लोग उसे बातोंमें प्रकट करनेका साहस नहीं कर सकते हैं, पर दुष्कर्मने हम लोगोंके मनमें भारी विच्छेद पैदा कर दिया है। अब हम लोग किसी तरह एक साथ नहीं रह सकते।"

एलिनर,—(सिर नीचा किये हुए धीरे धीरे) "अगर हम लोग एक साथ न रहेंगे, तो लोग क्या कहेंगे ? इसमें बड़ी बदनामी होगी और लोग तरह तरहके सन्देह करेंगे।"

अर्ल,—"यह तो ठीक है, खैर तो हम लोग अब अलग नहीं हो सकते, क्यों ?"

एलिनर,—"नहीं, अलग कैसे हो सकते हैं ?"

अर्ल,—"तब इस तरह एक साथ भी तो नहीं रह सकते।"

एलिनर,—"नहीं' साथ भी नहीं रह सकते।"

इस तरह बातचीत करनेके बाद दोनो चुपचाप धीरे धीरे कोठीको ओर चले। फिर न तो किसीने किसीको ओर देखा ही और न कुछ बातचीत ही की।

कुछ देर बाद मानो सहसा प्राकृतिक सौन्दर्य्यसे विमुग्ध होकर अर्ल कहने लगे,—"देखो आजका दिन कैसा सुन्दर है। चलो जरा छतपर चलें। वहांसे प्राकृतिक सुन्दरता और भी अच्छी तरह दिखाई देगी।

एलिनर! मुझे मालूम होता है, कि लोगोंके नेत्रोंको परितृप्तिके लिये ऋतुराजने आज प्रकृतिकी गोदमें जो अनेक प्रकारकी भोग्यवस्तुए सजाकर रख दी हैं, उनके सम्भोगसे हम लोगोंके हृदयकी ज्वाला यन्त्रणा बहुत कुछ निवृत्त हो सकती है।"

यह सुन एलिनर बहुत देरतक पतिके मुँहकी ओर देखती रही। वह सोचने लगी, कि अर्लने जो बात कही है, उसका असल मतलब क्या है ? इस समय तो दोनों आदमियोंके हृदयमें चिन्ताका अभाव नहीं है, फिर अर्लका मन सहसा प्राकृतिक सौन्दर्य्यमें मग्न हो गया, इसका क्या कारण है ? क्या सहसा अर्लके मनकी अवस्था अच्छी हो उठी है ? अथवा इसमें उनकी कोई गूढ़ अभिसन्धि है ?

एलिनर,—(नीची नजर किये हुए) "क्या मुझे भी छतपर चलनेको कहते हो ?"

निश्चय जानना, कि मन जब फिर कुछ सुस्त हो जायगा, तो फिर वही पूर्वभाव उपस्थित हो जायगा और उस वक्त फिर हम लोग एक दूसरेसे घृणा करने लगेंगे। कोई किसीकी ओर मुंह उठाकर देखना भी न चाहेगा।"

एलिनर,—"यह तो ठीक है, तब—"

अर्ल,—"तब हम लोगोंको एक दूसरेके लिये कुछ स्वार्थ त्याग करना चाहिये। एलिनर! विचारकर देखो, मैं ही तुम्हारा दुश्मन हूं। जिस विवाह पर तुम शुरूसे ही राजी नहीं थीं, उस विवाहका मूल मैं ही हूं। इन सब कारणोंसे मैंने तुम्हारी जो हानि की है, उसे अब इतने दिनोंके बाद पूर्ण कर देना चाहता हूं। एलिनर! तुम सुखसे रहो,—ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करें———"

इतना सुन एलिनर घबरा उठी और आंखें फाड़कर पतिकी ओर देखती हुई बोली,—"तुम क्या कह रहे हो?"

अब अर्ल एकबार आग्रह सहित एलिनरका हाथ पकड़, उसके मुंहकी ओर देख और यह कहकर, कि "इस घटनाको दैवी घटना कहकर प्रचार करना" धड़ामसे महलके नीचे बहती हुई नदीमें कूद पड़े।

यह देख एलिनर बड़े जोरसे चिल्ला उठी, उसकी आंखें पथरा गईं और शरीर अवसन्न हो गया। बहुतसे माली बागके सामने काम कर रहे थे। अर्लको नदीमें गिरते देख वे लोग दौड़ आये। अर्लका शिर चूर होगया और प्राण निकल गये। नौकर लोग छतपर जाकर एलिनरको नीचे उतार लाये। अत्यन्त दुःख और कष्टसे दुःखित तथा अस्थिर होकर वह प्रलाप करने लगी। क्षण ही भरमें इस दुर्घटनाको खबर चारों ओर फैल गई।

सौवां परिच्छेद ।

न्यूगेट जेलकी घटनावली ।

हम जिस दिनकी बात कह रहे थे, दिन वही है पर दृश्य बदलता है। अभी हम ष्टैमफोर्ड-मेनरका दृश्य दिखा रहे थे, पर अब न्यूगेट-जेलका दृश्य दिखाते हैं।

बारह बजके अभी कुछ ही मिनट गुजरे हैं। जिस हालसे होकर अपराधियोंकी कोठरियोंमें जानेकी राह है, इस वक्त कैरोलाइन वाल्टर्स उसी हालमें टहल रही है। हम जिस समयकी बात कह रहे हैं उस समय न्यूगेट-जेलके नियम उतने कठिन न थे। रुपया खर्च करनेसे कैदियोंको बहुत कुछ आराम मिलता था, यही कारण था, कि कैरोलाइन वाल्टर्स इस समय हालमें टहल रही थी।

खाना खानेका वक्त हो गया था। जिन कैदियोंको जेलसे खाना मिलता था, वे लोग खानेके लिये अपनी अपनी जगहपर बैठ गये थे और जो लोग अपना खाना बाहरसे मँगाकर खाते थे, वे लोग रेलिङ्गके पास खड़े हो गये थे, अतएव जिस समय, कैरोलाइन वाल्टर्स टहल रही थी, उस समय उसके पाससे होकर बहुतसे आदमी आ जा रहे थे।

रेलिङ्गके पास खड़ी होकर कैरोलाइन कैदियोंका तमाशा देख रही थी। कितनी ही तरहके कितने ही अद्भुत आदमी उसे दिखाई दे रहे थे। उनमें दो आदमी सबसे भयङ्कर थे। इन दोनों आदमियोंका हाल जाननेके लिये कैरोलाइन जेलरके पास गई। उसीकी कृपासे कैरोलाइनको घूमने फिरनेका सुभीता हुआ था। हालके

एक ओर खड़ा होकर वह आदमी (जेलर) कैदियोंकी कार्रवाई देख रहा था।

जेलरने कैरोलाइनके प्रश्नके उत्तरमें कहा,—"वे लोग कौन हैं, क्या तुम यह जानना चाहती हो? इस आदमीका नाम जोवारेन उर्फ मैग्समैन है और उसका नाम ष्टिफेन ग्राइस उर्फ वेगरमैन है। मैग्समैन ऐसा वैसा आदमी नहीं है। यह एक बार यहांसे भाग भी गया था*। इन लोगोंपर खून, चोरी, और डकैती वगैरह सभी तरहके जुर्म लगे हैं। इस वक्त समुद्रमें डाका डालनेके अपराधमें इन लोगोंका विचार जलविभागकी अदालतमें होगा। इन दोनोंका खाना भी आ जाता, तो अच्छा होता। सभी लोग तो चले गये, सिर्फ यही दो रह गये हैं। कैरोटीपोल क्या आज न आवेगी?"

कैरोलाइन,—"अभी आपने जिस स्त्रीका नाम लिया, वह कौन है?"

जेलर,—"वह वेगरमैनकी लड़की है। वह प्रतिदिन स्वयं इन लोगोंका खाना लेकर यहां आती है।"

कैरोलाइन,—"शायद वह पास ही कहीं रहती है?"

जेलर,—"नहीं, पास तो नहीं रहती। होसली डाउनमें निम्न श्रेणीके मनुष्योंके लिये उसका एक छोटा सा होटल है। रोज ही वह दोपहरको खाना लेकर अपने बापको देखने आती है। इन लोगोंके पास खूब धन है। यदि तुम देखना चाहती हो, तो अभी एक जोड़ा मुर्गी या कबूतर लेकर वह आती ही होगी। लो, बात कहते ही वह आ भी गई।"

"गुडमौनिंङ्ग, मिष्टर ग्रिगमैन।" इतना कह और रेलिङ्गके पास जाकर कैरोटीपोलने शिर परसे एक टोकरी उतारी।

* देखो—पहला खण्ड—१४ वां परिच्छेद।

इधर जेलरने धीरेसे, कैरोलाइनसे कहा,—"अगर इन लोगोंकी बातचीत सुननेकी इच्छा हो, तो धीरे धीरे उस खम्भेकी ओटमें जाकर खड़ी हो जाओ।"

जेलरकी बात सुनकर कैरोलाइनको कौतूहल हुआ। वह धीरे धीरे जाकर खम्भेकी ओटमें खड़ी हो गई।

वेगरमैन,—"पोल। आज इतनी देर क्यों हुई?"

पोल,—"कल जिस बातका पता लगानेके लिये तुम लोगोंने कहा था, उसीका पता लेनेमें इतनी देर हो गई।"

वेगरमैन,—"अच्छा, क्या मालूम हुआ?"

पोल,—"जिन किताबोंमें बड़े घरानोंके आदमियोंके नाम लिखे रहते हैं, उन्हींमें खोजते खोजते एकमें वह नाम मिला है।"

मैगसमैन,—"आह। जरासी बात कहनेमें तुम्हें कितनी देर लग जाती है? वह कौन है, जल्द कह क्यों नहीं डालती?"

पोल,—"जरा दम तो ले लेने दो। देर हो जानेके सबब टोकरी लिये दौड़ती दौड़ती आ रही हूं।"

इसपर मैगसमैन और विग वेगरमैन दोनों ही एक साथ बोल उठे,—"अच्छा, अब कह डालो।"

पोल,—"लार्ड फ्लोरिमेलके कामके लिये रिगडेनके यहां अल-फ्रेड नामक जिस छोकरेको रख दिया था, उसे साथ लेकर——"

मैगसमैन,—"यह सब तो कही चुकी हो। अच्छा, रिगडेनके यहांसे कागज पत्र उड़ाकर लार्ड फ्लोरिमेलको देनेपर बखशीश तो खूब मिली है न?"

पोल,—(हँसकर) "मिली नहीं तो क्या? कागज ला देनेके लिये मिला है पाच सौ और प्रिन्सके हाथसे पालिनकी इज्जत बचानेके लिये मिला है, दो सौ सब मिलाकर हुए सात सौ। इसके अलावा और भी कुछ कमाया है।"

मैग्समैन,—"अच्छा, अच्छा। मेरी स्त्रीने भी तो, जो अब अपने को मिसेस ब्रेस कहती है, दो हजार पाउण्ड दिये हैं। भाग्यवश उसके गिरफ्तार होनेके पहले ही तुम लोगोंने उसे घेर लिया था, नहीं तो सब मट्टी हो जाता। अच्छा, देखो तो कैसे आश्चर्य्यकी बात है, कि वह और हम लोग एक ही समय जेलमें मौजूद हैं। कौन जाने, वह मेरी कोई बात पूछती है, या नहीं?"

पोल,—"मिष्टर वारेन। तुम्हारी उस गुणागरी स्त्रीकी बात कहनेसे अब क्या होगा? हां, कहना यह है, कि जितने रुपयेका प्रबन्ध हो गया है, उससे और कुछ ज्यादेकी फिक्र करनी होगी। उसीके सम्बन्धमें जो कल कह रहे थे वही बात कहो। तुम लोगोंने कहा था न, कि तीन महीने हुए, एक गांवमें जाकर तुम लोगोंने कोई भारी काम किया था। उसका तुमने जो पता दिया है, उसीके जरिये हम लोग बहुत खबर मालूम कर लेंगे।"

मैग्समैन,—"यदि ऐसा हो, अर्थात् उस काममें जो लोग लिप्त थे उनको ढूंढ निकालो तब तो तुम्हारे पौ बारह है। खूब माल हाथ लगे। दो चार हजारमें कोई सन्देह ही नहीं है। क्यों, ष्टिफेन। यह बात तो मैंने उसी समय कही थी न?"

वेगरमैन,—"हां, कही तो थी। और तीन सूत हम लोगोंको मालूम भी है। १—उस औरतका नये ढङ्गका नाम। २—कब्रस्थानकी उस लाशके हाथकी निकाली हुई अँगूठी। ३—जिस बुढ़ीके यहां हम लोग ठहरे थे, उसका उस नकाबपोश आदमीको 'लार्ड' कहकर सम्बोधन करना।"

पोल,—"बस ये तीन ही बहुत हैं। मैं कह रही थी न, कि अन्नफ्रेडको लेकर मैं वेष्टएण्डके एक किताब वालेकी दुकानमें गई और जिस किताबमें आली खानदानके आदमियोंका हाल लिखा रहता है, वह उससे गढ़वाने लगी। उसमें फरनफ्राल्का नाम मिला,

उसकी पदवी अमर है। अर्ल डेसबोरो, अर्ल मण्टगुमरी, मारयियोनेस आफ वेलेण्डन आदि सब बड़े आदमियाके साथ उसका सम्बन्ध है। इसके अलावा यह भी मालूम हुआ है, कि अब वह लेडी होल्डरनेस हो गई है। उसका चेहरा खूब चमकीला, बाल खूब लाल, आखें घोर नीली और रङ्ग बहुत साफ है——"

मैग्समैन,—"उस औरतके चेहरेपर बुर्का पड़ा हुआ था, बुर्केके भीतरसे जहातक मैं देख सका हूं, उसका चेहरा ऐसा ही मालूम होता है। मुझे तो मालूम होता है, कि तुमने ठीक ही पकाड़ा है। और ऐसा नाम भी तो बहुत नहीं सुननेमें आता—"

"पोल,—"और एक बात यह है, कि तुमने जो अँगूठी दी थी, उसमें वेलेण्डन-परिवारका नाम पाया जाता है, और लेडी होल्डरनेसके साथ वेलेण्डनोंका सम्पर्क भी है।'

मैग्समैन,—"तब तो मालूम होता है, कि हम लोगोंको ठीक ही पता लग गया है। अच्छा, ष्टिफेन! अगर पोल एकदम लेडी होल्डरनेसके पास चली जाय और उससे साफ ही कह दे, कि गोल घरसे वही उस खूबसूरत युवाको बुला लाई थी और जब हम लोगोंने उसे पकड़कर पुलके पायेकी नीवमें डाल दिया था, तो प्राणके भयसे उसने उसीका (लेडी होल्डरनेसका) नाम लेकर पुकारा था, तो कैसा हो?'

बेगरमैन,—"नहीं नहीं, इस तरह एकाएक कोई काम कर बैठना अच्छा नहीं है। मेरी समझमें पोलका हठात् लेडी होल्डरनेसके पास जाना ठीक नहीं है।'

मैग्समैन,—"अच्छा, तो आज यहीं तक रहे, खूब विचार मैंने र कल जैसा होगा, किया जायगा, पर मैं तो समझता हूं, कि ...के उस खून, कब्रस्थानमें लाशे शवाधारका ढकना बदलने और

उसके बाद गिर्जेके रजिष्टरमें अदल-बदल करनेका ठीक पता हम लोगोंको लग गया है।"

पोल,—"आज सुबह सुननेमें आया है, कि उस अंगूठीमें जिस वेलेण्डनका नाम खुदा है, उसी वेलेण्डनको मारशियोनेसके साथ इस लेडी ह्रोल्डरनेस और लार्ड मण्टगुमरीका जायदादके लिये मुकद्दमा चल रहा है।"

वेगरमैन,—"शायद इसी मुकद्दमेके लिये वह नकाबपोश गिर्जेके रजिष्टरमें जाल करने गया था।"

मैगसमैन,—"और मालूम होता है, कि शवाधारका ढकना बदलनेका कारण भी वही है। और जिस युवकका खून किया गया है, जान पड़ता है जिस जायदादके लिये मुकद्दमा चल रहा है, उससे उसका भी कुछ सम्बन्ध था।"

वेगरमैन,—"और पोल जिस मण्टगुमरीकी बात कहती थी, शायद वही हम लोगोंको अपने साथ ले गया था और अन्तमें चालाकी करके हम लोगोंको अमेरिकाके लिये रवाना कर दिया था।"

मैगसमैन,—"हो सकता है। जो हो, आज शामको भी पोल जाकर पता लगावे। अच्छा, देखो तो खाने-पीनेके लिये क्या क्या आया है। बातचीत करनेमें देर हो गई। खाना ठण्डा हो गया होगा।"

पोल,—"ठण्डी 'पाई' ही लाई हूं अगर वह ठण्डी भी हो जायगी तो कोई हर्ज न होगा। और पकाये हुए अण्डे भी लाई हूं, इतना शायद थोड़ा नहीं है?"

वेगरमैन,—"सो तो हुआ, पर मुखशुद्धी भी कुछ लाई हो?"

पोल,—"पूरी एक बोतल। रेलिङ्गके भीतरसे हाथ बढ़ाओ, मैं एक एक करके देती जाती हूं।"

फैरोनाइन वाल्टमें जरा वृक्षोंकी आड़में जाकर खड़ी हुई थी,

तब उसे यह नहीं मालूम था, कि डाकुओंकी बातचीतसे उसका कुछ उपकार होगा। पर अब उसे मालूम हुआ, कि उनकी बात-चीतसे उसका बहुत काम निकल सकता है। डाकुओंको खाने-पीनेमें मशगूल होते देख कैरोलाइन वहांसे हटकर धीरे धीरे दूसरी ओर चली गई।

पाठकोंको शायद याद होगा, कि कैरोलाइन जब राब बनकर लार्ड फ्लोरिमेलके यहां नौकरी करती थी तब एक दिन वह लार्ड मण्टगुमरीसे मिलनेके लिये उनके मकानपर गई थी। वह उनसे वार्त्तालाप कर ही रही थी, कि इसी समय मिष्टर रिगडेन आ गये थे, और उसे कमरेसे बाहर हो जाना पड़ा था। अर्ल और मिष्टर रिगडेनमें मुकद्दमेकी बातचीत हुई थी और उसी उपलक्षमें लार्ड रेमण्ड तथा फरनण्डाका जिक्र भी हुआ था। रिगडेनके चले-जाने पर जब मण्टगुमरीने कैरोलाइनको बुलाया, तो उसने ऐसा रङ्ग-ढङ्ग दिखाया मानो निद्रासे उठी हो, पर असलमें अर्ल और रिगडेनकी बात उसने बिल्कुल सुन ली थी।

मुकद्दमेका हाल तो कैरोलाइन पहलेसे ही जानती थी। अब मैग्समैन वगैरहकी बातचीत सुननेपर उसे साफ मालूम हो गया, कि लार्ड रेमण्डकी पुलके पायेकी नीवमें डाकुओंके डाल देनेकी जड़ अर्ल मण्टगुमरी और फरनण्डा एमर ही हैं। कैरोलाइनने इस समय और जो कुछ सुना, उससे सिर्फ उसे फरनण्डासे बदला ही चुकानेका सुभीता नहीं हुआ बल्कि इस बातके प्रमाणित करनेका भी सुभीता हो गया, कि ऐसा कोई काम ही नहीं है, जो फरनण्डा न कर सकती हो। इसके अलावा डाकुओंने अलफ्रेडके जरिये रिगडेनके यहांसे कागजपत्र उड़ाकर फिर लार्ड फ्लोरिमेलको दे दिये हैं, यह सुनकर उसे बहुत रञ्ज हुआ। रिगडेनकी असावधानी पर भी वह बहुत नाराज हुई। आखिर कुछ देर तक इधर-उधर

घूम और मनको कुछ स्थिरकर कैरोलाइन अपनी जगहपर लौट गई और मिष्टर रिगडेनके पास उसने यह चिट्ठी लिखी,——

"अलफ्रेड नामक जिम कोकरेने आपके कागज-पत्र चुराये हैं, उसने वह काम एक स्त्रीके सलाहसे किया है। उस स्त्री का नाम प्राइस है। फ़ीसली डाउनमें उसका छोटे आदमियोंके लिये एक होटल है। उनलोगोंका एक भयानक दल है। उस दलके कुछ आदमी इस समय न्यूगेट जेलमें कैद हैं। कागजोंकी चोरीके बारेमें यदि आप कुछ करना चाहें, तो कर सकते हैं।"

इस चिट्ठीको लिखकर कैरोलाइनने प्रिगमैनके हाथ डाकघर भेज दिया। चिट्ठी डालकर जब प्रिगमैन लौट आया, तब कैरोलाइन, अर्थर इटनसे मुलाकात करा देनेके लिये उससे आर्जू-मिन्नत करने लगी।

कैरोलाइनकी इच्छा पूर्ण हुई। अर्थर इटनके पास जाकर उसने फरनण्डाके बारेमें जो कुछ सुना था, सब ज्योंका त्यों बयान कर दिया। इसके अलावा फरनण्डाके बारेमें उसका जैसा खयाल हुआ था, उसे भी कह सुनाया। अर्थर इटनने उसकी सब बातें नोट कर लीं। उसके बाद प्रिगमैन आ गया और कैरोलाइन उसके साथ चल पड़ी। जब वह दरदालानसे जा रही थी, तब अचानक रास्तेमें पालमालकी प्रसिद्ध कपड़ेवाली मिसेस ब्रेमसे उसको मुलाकात हो गई। उसे देख कैरोलाइन आपेसे बाहर हो गई और बोली,—"अच्छा ही हुआ, जो तुमसे मुलाकात हो गई। क्यों, क्या हाल है? अब तो फांसीकी तखतीपर लटकना हो पड़ेगा। और इसकी जड़ भी मैं ही हूं।"

यह सुन मारे क्रोधके मिसेस ब्रेमका सारा शरीर जल उठा उसने कहा,—"विश्वासघातिनी! तू भी अछूती न बचेगी। तुझे भी फांसीकी तख्तीपर लटकना पड़ेगा। तूने जैसा मेरा नाम लगाया है, वैसा ही मैंने भी तेरा नाम लगाया है।"

इसपर दुतकारकर कैरोलाइनने कहा,—"राक्षसी। मैं तो न लटकूंगी, क्योंकि मैंने अपनी निर्दोषताका पूरा प्रमाण संग्रह कर लिया है, पर तू किसी तरह भी न बच सकेगी।"

अब भयानक क्रोधसे कांपती हुई मिसेस ग्रेस कहने लगी,—"अगर किसी तरह तू जल्लादके हाथसे बच भी गई, तो और किसी उपायसे तेरी जान ले ली जायगी। अब तू भी जीती जागती नहीं रह सकती। तुझे भी मरना ही होगा।"

कैरोलाइन,—"तू मेरी चिन्ता न कर। मैं तो कभी मरूंगी ही नहीं। जब तू फासीकी तख्तीपर छटपटाने लगेगी, तो मैं खड़ी खड़ी खुशीसे तमाशा देखूंगी।"

ग्रेस,—(दांत पीसकर) "अरी राड। मिसेस लिगहलीका खून किसने किया है?"

कैरोलाइन,—"अरी कुटनी। तेरा भतार मैंगसमैन तो अभी तेरी ही बात कह रहा था।"

"तेरे ही दोषसे मुझे यह काम भी करना पड़ा"—इतना कहकर मिसेस ग्रेसने तेजीके साथ अपनी कुरतीके अन्दरसे एक चमकीली कैंची निकाली।

उसे देखते ही "खून—खून" कहकर कैरोलाइन कुछ कदम पीछे हट गई, पर तो भी बच न सकी। पलक मारते ही मिसेस ग्रेसने वह तेज कैंची उसकी छातीमें घुसेड़ दी।

घोर आर्त्तनाद कर कैरोलाइन वाल्टर्स मिसेस ग्रेसके पैरोंके पास गिर पड़ी। यह माजरा देख जेलके सिपाही ओघोन्मत्ता मिसेस ग्रेसको पकड़कर कारागारमें ले गये और घायल कैरोलाइन अस्पतालमें पहुंचा दी गई।

एकसौ एक परिच्छेद ।

मृत्यु-शय्या ।

अभी गत परिच्छेदमें जिस दिनकी बात हम कह आये हैं, उसी दिन सन्ध्याके समय न्यूगेट-जेलके पादड़ीने पिकेड़लीमें लार्ड फ्लोरिमेलके मकानपर जाकर उनसे मुलाकातकी और कहा, कि "साघातिक आघातसे कैरोलाइन वाल्टर्स मृतप्राय हो रही है। एकबार आपसे मिलनेकी उसकी बड़ी ही इच्छा है।" लार्ड फ्लोरिमेल तो स्वभावसे ही दयालु थे, दुर्घटनाकी बात सुनते ही वे पादड़ीके साथ चल पड़े। जाते जाते राहमें पादड़ीने उनसे कहा,—"जिस आघातसे हतभागिनी कैरोलाइन मृतप्राय हो रही है, वह आघात मिसेस ब्रेसका किया हुआ है।" इसी मिसेस ब्रेसके साथ एक समय फ्लोरिमेलकी विशेष घनिष्ठता थी, यह सोचकर वे कुछ दुःखित हुए।

न्यूगेट-जेलमें पहुंचते ही लार्ड फ्लोरिमेल वहांके अस्पतालमें दाखिल किये गये। वहां जाकर उन्होंने देखा, कि कैरोलाइन एक मामूली विस्तरेपर पड़ी हुई है। उसका चेहरा पीला और सूखा हुआ है और वह बहुत ही कमजोर हो गई है।

यह देख फ्लोरिमेलको बड़ा अनुताप हुआ। उन्होंने सोचा, कि मेरे ही दोषसे कुपथमें जाकर आज इसकी यह दुर्दशा हो रही है।

दुःखित चित्तसे उस मृतप्राय युवतीके निकट जाकर फ्लोरिमेलने देखा, कि उसके मुखपर अनुताप और स्नेहका भाव विद्यमान है। इन्होंने सोचा था, कि शायद कैरोलाइनने डाटने डपटने हीके लिये मुझे बुलाया है, पर अब उनकी समझमें आ गया, कि बात वैसी नहीं है। लार्ड फ्लोरिमेलको कैरोलाइनके पास पहुंचा कर पादड़ी चला

गया और जो धाय उसकी सेवा-शुश्रूषा कर रही थी, वह भी वहांसे हट गई। अब केवल फ्लोरिमेल ही, कैरोलाइनके पास रह गये।

कमरेको चारों ओरसे देखकर फ्लोरिमेलने सोचा, कि ऐसी जगहमें प्राण त्याग करना कैसा भयङ्कर है। इसके बाद जब उन्होंने फिर कैरोलाइनकी ओर देखा, तो उन्हें मालूम हो गया, कि सचमुच ही उसका मन नरम हो गया है। हाथके इशारेसे लार्ड फ्लोरिमेलको अपने पास बुलाकर कैरोलाइनने धीरे धीरे कहा, —"मेरे पास बैठो। ताकि मरनेसे पहले तुम्हें बहुत सी गुप्त बातें बता जाऊं।"

जैसी कातरताके साथ यह बात कही गई, उसे देख लार्ड फ्लोरिमेलकी आखोंमें आसू भर आये। युवतीके पसारे हुए हाथको पकड़ और घुटनोंके बल उसके पास बैठकर फ्लोरिमेलने कहा,— "कैरोलाइन। मुझे क्षमा करो। मैंने तुम्हारा जो अनिष्ट किया है, उसके लिये क्षमा मांगता हूं।"

कैरोलाइन उस समय बहुत ही कातर हो गई थी। उसने बहुत धीरे धीरे कहा,—"गेब्रील। अब हम लोगोंके सामने एक दूसरेको क्षमा कर देनेका समय उपस्थित है। एक समय मैं तुम्हें जिस तरह प्यार करती थी, उसी तरह इधर कई वर्षोंसे घृणा भी कर रही थी। अब मेरा अन्तकाल उपस्थित है। यहाके पादड़ी महाशयकी दयासे अब मेरा मन एकदम पलट गया है। अब मेरे मनमें रह रहकर यही उठ रहा है, कि यदि हम लोग एक दूसरेको क्षमाकर दें, तो मैं सुखकी मौत मर सकूंगी।"

फ्लोरिमेल—"देखो, तुमने मेरी हानि करनेके लिये जो कुछ चेष्टा की है, उसे मैं कैसी सरलताके साथ क्षमा करता हूं, सो ईश्वर ही जानते हैं, पर कैरोलाइन! बताओ तो सही, कि मैंने

तुम्हारे ऊपर जो अत्याचार किया है, क्या सचमुच ही तुम उसे भूल जाओगी?"

कैरोलाइन,—"हां गेब्रील। भूल जाऊंगी। मैं हृदयसे तुम्हें क्षमा करती हूं।"

लार्ड फ्लोरिमेल अबतक घुटनोंके बल ही बैठे हुए थे। अब कैरोलाइनके दोनों हाथोंको चूम और उठकर पासहीकी एक कुर्सी पर बैठते हुए बोले,—"तुम्हारे हृदयमें जो कुछ पाप मन्त्रणा हो, भगवान उसे दूर कर दें।"

कैरोलाइन,—"गेब्रील। भगवानसे क्षमा पानेमें मुझे कोई भी रुकावट नहीं है, क्योंकि तुम्हारे प्रेमके फन्देमें पड़कर पहले मैंने जो दुष्कर्म किये हैं और फिर अन्तमें तुम्हारे ही दोषसे बदला लेनेके लिये जो जो काम किये हैं, उनके सिवाय मैंने और कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके लिये मुझे जवाबदेह होना पड़े।"

फ्लोरिमेल,—(विस्मित होकर) "यह कैसी बात है, कैरोलाइन? और जिस अपराधके लिये तुम्हें इस कारागारमें आना पड़ा है, वह क्या बात है? तुम्हारी निर्दोषिता सुनकर मैं अतिशय प्रसन्न हूंगा।"

कैरोलाइन,—"गेब्रील। मैं एकदम निर्दोष हूं। और यह बात शीघ्र ही प्रकट हो जायगी। पर यदि ईश्वर उतने दिनोंतक मुझे बचा ले, तो मैं सुखकी मौत मर सकूंगी।"

फ्लोरिमेल,—"अच्छा, तो यह काम किसने किया है? उस धायको किसने मारा है?"

कैरोलाइन,—"अर्थर इटन नामक जो व्यक्ति घटनाक्रमसे मेरे ही समान अभियुक्त हुए हैं, वे सब हाल जानते हैं। वे अपनी और मेरी निर्दोषिता एक साथ और एक ही समय प्रमाणित कर देंगे, अतएव उस बातसे अभी कोई काम नहीं। अभी सिर्फ इतना ही समझ रखो, कि जिस भयानक अपराधमें मैं फँसी हुई हूं, उसका

कुछ भी हाल मुझे मालूम नहीं है। तुम मेरे पास निःशङ्क बैठकर मैं जो कहती हूं, उसे सुनते जाओ।"

फ्लोरिमेल,—"यदि तुम यथार्थमें ही अपराधिनी होतीं, तो भी अब मैं तुमसे घृणा न करता, बल्कि मैं ही तुम्हारी दुर्दशाका मूल हूं, यह समझ कर अपनेको बहुत धिक्कारता। जो हो, तुम क्या कहना चाहती थी, कह डालो।"

कैरोलाइन,—"मेरे पास और खिसक आओ। मैंने तुम्हारी जो कुछ हानि की है, यदि उसका कुछ भी प्रतिकार कर सकूं, तो मरनेके समय मुझे कुछ कष्ट न होगा। अब मेरी मृत्यु निकट मालूम होती है, इस समय मेरी पूर्व प्रीति मानो फिर लौट आई है। भगवानकी कैसी महिमा है। मृत्यु-काल उपस्थित होनेपर मनुष्यका मन कितना बदल जाता है।—दुष्प्रवृत्तियां भाग जातीं और सब सद्भाव जाग उठते हैं। तुमसे क्रुद्ध रहकर मैं मर न सकती। अब मैंने तुम्हें माफ कर दिया और तुम्हारे मुंहसे भी क्षमाकी बात सुन ली। अब मेरी वासना पूर्ण हुई, मैं बहुत ही सुखी हुई। अच्छा, अब समय अधिक नहीं है, कामकी ही बात कहूं। गिब्रोल! जिस समय मैंने अपना काला वेश बना और 'राब' नाम धारणकर तुम्हारे यहां नौकरी की थी, उस समय मेरी मनसा अच्छी न थी, यह तुम अनायास ही समझते होगे। खयाल करके देखो, एक दिन तुम अर्ल मण्टगुमरीके साथ न मालूम क्या बातचीत कर रहे थे, उसी समय मैं तुम्हें एक दिन चिट्ठी देने गई थी। उसी समय मैंने तुम्हें यह कहते सुना, कि तुम अपने जरूरी कागजोंको एक टीनके बक्समें बन्द कर अपनी चारपाईके नीचे रखते हो। जिस ढङ्गसे तुम अर्लसे बोल रहे थे, उससे मुझे यही विश्वास हुआ, कि कोई भारी बातचीत हो रही है। चिट्ठी देकर मैं बाहर निकल आई दरवाजेके पास कान लगाकर खड़ी हो गई। पहले तो मैंने अर्लको अपने

तुम्हारे ऊपर जो अत्याचार किया है, क्या सचमुच ही तुम उसे भूल जाओगी ?"

कैरोलाइन,—"हां गेब्रोल। भूल जाऊंगी। मैं हृदयसे तुम्हें क्षमा करती हूं।"

लार्ड फ्लोरिमेल अबतक घुटनोंके बल ही बैठे हुए थे। अब कैरोलाइनके दोनों हाथोंको चूम और उठकर पासहीकी एक कुर्सी पर बैठते हुए बोले,—"तुम्हारे हृदयमें जो कुछ पाप मन्त्रणा हो, भगवान उसे दूर कर दे।"

कैरोलाइन,—"गेब्रोल। भगवानसे क्षमा पानेमें मुझे कोई भी रुकावट नहीं है, क्योंकि तुम्हारे प्रेमके फन्देमें पड़कर पहले मैंने जो दुष्कर्म किये हैं और फिर अन्तमें तुम्हारे ही दोषसे बदला लेनेके लिये जो जो काम किये हैं, उनके सिवाय मैंने और कोई ऐसा काम नहीं किया, जिसके लिये मुझे जवाबदेह होना पड़े।"

फ्लोरिमेल,—(विस्मित होकर) "यह कैसी बात है, कैरोलाइन? और जिस अपराधके लिये तुम्हें इस कारागारमें आना पड़ा है, वह क्या बात है? तुम्हारी निर्दोषिता सुनकर मैं अतिशय प्रसन्न हूंगा।"

कैरोलाइन,—"गेब्रोल। मैं एकदम निर्दोष हूं। और यह बात शीघ्र ही प्रकट हो जायगी। पर यदि ईश्वर उतने दिनोंतक मुझे बचा ले, तो मैं सुखकी मौत मर सकूंगी।"

फ्लोरिमेल,—"अच्छा, तो यह काम किसने किया है? उस धायको किसने मारा है?"

कैरोलाइन,—"अर्थर डटन नामक जो व्यक्ति घटनाक्रमसे मेरे ही समान अभियुक्त हुए हैं, वे सब हाल जानते हैं। वे अपनी और मेरी निर्दोषिता एक साथ और एक ही समय प्रमाणित कर देंगे, अतएव उस बातसे अभी कोई काम नहीं, अभी सिर्फ इतना ही समझ रखो, कि जिस भयानक अपराधमें मैं फँसी हुई हूं, उसका

कुछ भी हाल मुझे मालूम नहीं है। तुम मेरे पास निःशङ्क बैठकर मैं जो कहती हूं, उसे सुनते जाओ।"

फ्लोरिमेल,—"यदि तुम यथार्थमें ही अपराधिनी होतीं, तो भी अब मैं तुमसे घृणा न करता, बल्कि मैं ही तुम्हारी दुर्दशाका मूल हूं, यह समझ कर अपनेको बहुत धिक्कारता। जो हो, तुम क्या कहना चाहती थीं, कह डालो।"

कैरोलाइन,—"मेरे पास और खिसक आओ। मैंने तुम्हारी जो कुछ हानि की है, यदि उसका कुछ भी प्रतिकार कर सकूं, तो मरनेके समय मुझे कुछ कष्ट न होगा। अब मेरी मृत्यु निकट मालूम होती है, इस समय मेरी पूर्व प्रीति मानो फिर लौट आई है। भगवानकी कैसी महिमा है। मृत्यु-काल उपस्थित होनेपर मनुष्यका मन कितना बदल जाता है।—दुष्प्रवृत्तिया भाग जातीं और सब सद्भाव जाग उठते है। तुमसे क्रुद्ध रहकर मैं मर न सकती। अब मैंने तुम्हें माफ कर दिया और तुम्हारे मुँहसे भी क्षमाकी बात सुन ली। अब मेरी वासना पूर्ण हुई, मैं बहुत ही सुखी हुई। अच्छा, अब समय अधिक नहीं है, काम कीही बात कहूं। मैंनोल! जिस समय मैंने अपना काला वेश बना और 'राव' नाम धारणकर तुम्हारे यहा नौकरी की थी, उस समय मेरी मनसा अच्छी न थी, यह तुम अनायास ही समझते होगे। खयाल करके देखो, एक दिन तुम अर्ल मण्टगुमरीके साथ न मालूम क्या बातचीत कर रहे थे, उसी समय मैं तुम्हें एक दिन चिट्ठी देने गई थी। उसी समय मैंने तुम्हें यह कहते सुना, कि तुम अपने जरूरी कागजोंको एक टीनके बक्समें बन्द कर अपनी चारपाईके नीचे रखते हो। जिस ढङ्गसे तुम अर्लसे बोल रहे थे, उससे मुझे यही विश्वास हुआ, कि कोई भारी बातचीत हो रही है। चिट्ठी देकर मैं बाहर निकल आई दरवाजेके पास कान लगाकर खड़ी हो गई। पहले तो मैंने अर्लको अपने

ऊपर सन्देह प्रकाश करते सुना। उसके बाद तुमने उन्हें एक गुप्त प्रेमकी कहानी सुनाई। वह कहानी मसकरेडके जलसेके एक टिकट और नीले डोमिनोके उपलक्ष्यमें कही गई थी, उसके बाद फिर जब तुमने मुझे बुलाकर उस डोमिनोको जला देनेका हुक्म दिया, तो मण्टगुमरीका रङ्ग-ढङ्ग देखते ही मुझे मालूम हो गया, कि उनकी इच्छा वैसी नहीं है। मैं चट समझ गई, कि तुम्हारे बदले मसकरेडके जलसेमें जानेकी इच्छा उनके दिलमें जाग उठी है। उस समय मैंने विचारा, कि इस कामसे मेरी अभिलाषा पूर्ण हो सकती है, इसीलिये मैंने नीले डोमिनोको जलाया नहीं, बल्कि उसी तरह रख दिया। फिर जब लार्ड मण्टगुमरी तुमसे विदा होकर चले, तो मैंने उनसे बातचीतकी। उन्होंने मुझे ग्रेफटन-ष्ट्रीटमें मुलाकात करनेके लिये बुलाया। सन्ध्याके बाद ही मैं उनके मकानपर गई और उस समय उनसे और मिष्टर रिंगडेनसे जो बातचीत होरही थी, घटनाक्रमसे सब सुनली। रिंगडेन तुम्हारे ऊपर नालिश करनेकी कोशिशमें है, यह सुनकर मैंने विचारा, कि यह सुयोग पाकर यदि तुम्हें एकबार ही नष्ट न भी कर सकूंगी, तो भी हानि तो अवश्य ही बहुत कुछ कर दूंगी। फिर रिंगडेनके चले जानेपर मैंने लार्ड मण्टगुमरीसे अपने मनकी बात कही। वे उस नीले डोमिनोको लेनेके लिये राजी हो गये।"

फ्लोरिमेल,—"ओह! मसकरेडके जलसेके लिये मण्टगुमरी तुमसे मिल गये थे? अच्छा, उस अनजान औरतसे उनकी मुलाकात हुई थी?"

केरोलाइन,—"हुई क्यों नहीं? वे तो उस लिये गये ही थे। और उधर एक चिट्ठी लिखकर मैंने पालिनका मन भी खराब कर दिया था।"

फ्लोरिमेल,—"सो तो सुन चुका हूं। अब पालिनसे फिर मेल

मिलाप हो गया है। मसकारेडको जलसेकी सब बातें उसने मुझसे कह दी है।"

"तुम लोगोंके मेल मिलापकी बात सुनकर बड़ी खुशी हासिल हुई। भगवान् करें, जोड़ी सलामत रहे।" इतना कहकर कैरोलाइन रोने लगी। फ्लोरिमेल कुछ देरतक चुप रहकर कहने लगी,—"तुमने कञ्जरिनका वेश धारण किया था न? खैर जाने दो, अब इस सब बातोंका प्रयोजन ही क्या है।"

कैरोलाइन,—"पालिन और तुममें झगड़ा करा देना ही मेरा मतलब था। तुम पालिनको प्राणसे भी अधिक प्यार करते थे, इसलिये मैं बराबर यही चेष्टा करती रही, कि जिसमें तुम लोगोंके मनमें फर्क पड़ जाय, क्योंकि तुमको दुःख देना ही मेरा एकमात्र उद्देश्य था। गैब्रील! तुम्हारा मैं बहुत ही अनिष्ट करती-फिरती थी। एक दिन रातके वक्त तुम्हारे कमरेमें जा और तुम्हारे तकियेके नीचेसे चाभी लेकर मैंने तुम्हारा टीनवाला बक्स खोला और उसमेंसे तुम्हारे दस्तावेजोंको चुराकर मिष्टर रिगडेनको दे आई। फिर तुम्हें जलानेके लिये झूठमूठ गढ़कर अपनी बहिनकी कहानी सुनाई। उस कहानीको सुनकर तुम्हें कितना कष्ट हुआ था, याद है?"*

फ्लोरिमेल,—"याद क्यों नहीं है? तुम्हारी कहानी सुन और तुम्हारा रङ्ग-ढङ्ग देखकर उसी समय मेरे मनमें सन्देह हुआ था। और कष्ट भी हुआ था।"

कैरोलाइन,—"हम लोग बातचीत कर रहे थे, कि इसी समय तुम्हारे वकील मिष्टर क्रासवेलने आकर तुमसे कहा, कि मिष्टर रिगडेनने तुम्हारे ऊपर नालिश करनेकी नोटिस दी है। यह सुन तुम दस्तावेज लाने चले गये, पर जब वे न मिले, तो लौट आकर

* देखो तीसरा खण्ड—२१ वां परिच्छेद।

तुमने कहा, 'सर्वनाश हो गया'। उस समय मुझे इतना आनन्द हुआ था, कि जिसका वर्णन नहीं किया जा सकता। उस समय मैं तुम्हारी घोर वैरिन थी, उन दिनों मैंने तुम्हारा जो जो अपकार किया है, उन सबको यादकर अब मैं इतना पछताती हूं, कि कहा नहीं जाता। तुम्हें दुःखी देखकर मैंने इस बातकी खबर रिगंडनको कर दी थी। उस दिन सन्ध्या-समय तुम कहीं बाहर चले गये थे——"

फ्लोरिमेल,—"हां, उस समय मैं होमंलोडाउन गया था। उसके बाद फिर?'

केरोलाइन,—"तुम्हारे बाहर जानेके कुछ देर बाद एक लम्बासा चपरासी एक चिट्ठी दे गया। उसका रङ्ग ढङ्ग देखकर मैं समझ गई, कि हो न हो, यह वही चपरासी है, जिसकी बात तुमने लार्ड मण्टगुमरीसे कही थी। इसके बाद वह आदमी आधीरातके वक्त फिर आया। तुम उसके साथ चले और तुम लोगोंके पीछे पीछे मैं भी चल पड़ी। अन्तमें वह अनजान औरत तुम्हारी आंखोंपर पट्टी बांधकर तुम्हें जिस कमरेमें ले गई, मैं भी आंख बचाकर उसमें घुस गयी" *

फ्लोरिमेल,—"सच। तब तो तुम यह भी जान गई होगी, कि वह कौन है? अच्छा, उसका नाम क्या है?"

केरोलाइन,—"ज़रा धीरज धरो; आगे चलकर आप ही सब जान जाओगे। उस दिन तुममें और उस अनजान औरतमें जो बातचीत हुई थी, वह तो तुम्हें अवश्य ही याद होगी। वह जिस ढङ्गसे बातचीत कर रही थी, उससे मुझे मालूम हो गया, था, तुम उससे कभी जीत न सकोगे, वह ज़रूर ही तुम्हें अपने वशमें कर लेगी। जब उसने कहा, कि तुम मुझे अपनी पत्नी स्वरूप

* देखो तीसरा खण्ड—१८ वां परिच्छेद।

ग्रहण कर लो, तो तुम्हारी धन सम्पत्ति नष्ट करनेके लिये जो शालिग्र हुई है, उसे मैं रोक दूंगी, * तभी मैं समझ गई थी, कि तुम उसे कभी परास्त न कर सकोगे। इसीसे अब शेष रात्रिमें मैं वहांसे चली, तब उस मकानको इस तरह देखती आई; जिसमें फिर उसे पहचाननेमें किसी तरहकी कठिनाई न पड़े।"

फ्लोरिमेल,—"कैरोलाइन। मुझे बड़ा कौतूहल हो रहा है, जल्द बताओ, वह मकान कहां है?"

इसपर मरणोन्मुखी व्याकुल चित्तसे बोल उठी,—"क्या तुम फिर उसके पास जाया चाहते हो?"

फ्लोरिमेल,—"नहीं, अब नहीं जाना चाहता। अब वह कितना ही लोभ क्यों न दिखावे और कितना ही मायाजाल क्यों न फैलावे, पर मैं कभी जानेका नहीं। वह स्वप्न अब टूट गया है। पालिनके पवित्र प्रेमालापने उस मायाविनीके आधिपत्यको दूर कर दिया है।"

कैरोलाइन,—"तुम्हारी इस बातको सुनकर मैं बहुत ही खुश हुई। ईश्वर करे, तुम अब उसके मायाजालमें कभी न फँसो। मैं तुम्हारा नाम जपती जपती प्राणत्याग कर दूंगी। भगवान् करे, अब तुम्हारा मन कभी कमजोर न हो। अपनी बात खतम होजाने पर मैं तुम्हारे कानमें उस औरतका नाम कह दूंगी, फिर वह तुमसे अनजान न रहेगी।"

फ्लोरिमेल,—"अच्छा, जो कहती थीं, वही कह जाओ।"

कैरोलाइन,—"याद करके देखो, एकदिन तुम औरतके वेशमें चैम्बरी-लेनसे जारहे थे। उस समय जब कई मतवाले तुम्हारा अपमान करनेके लिये उद्यत हुए, तब तुमने प्रासहीकी एक शालत-में जाकर अपनी जान बचाई थी। तुम जब अपने मकानसे निकलते थे, तभी मैं तुम्हारा पीछा करती थी। उस रातमें भी मैं तुम्हारे पीछे पीछे

* देखो तीसरा खण्ड—४० वां परिच्छेद।

आ रही थी। तुम जल्द ही हाजतसे चले आओगी, इसलिये मैं राहमें तुम्हारी प्रतीक्षा करने लगी, पर जब दो घण्टे बीत जानेपरभी तुम बाहर न निकले, तब मैंने हाजतके दरवाजे पर जाकर पूछा। पूछने पर मालूम हुआ, कि मिसेस फिन और लेडी लिटीशियाके साथ तुम आजकी रात वहीं गंवाओगी। तब मैंने विचारा, कि तुम्हें आफतमें डालनेका यह अच्छा मौका है। बस, मैं उसी पांव सीधी कार्लटन प्रासादमें चली गई और एक चिट्ठी लिखकर प्रिन्सके पास भेजदी, पर प्रिन्स उस समय मकानपर न थे। मैंने सोचा था, कि मकानपर लौटतेही वे चिट्ठी पाकर सीधे हाजतमें चले जांयगे। प्रिन्स प्रायः दो बजे रातको घर आये, पर मैंने जैसा सोचा था, वैसा न हुआ। वे उस समय फिर घरसे बाहर न निकले। लाचार मैं भी पिकेडली लौट गई। सवेरे सात बजे मैं फिर चेम्सरी-लेनमें गई और सड़क परके एक काफीखानेमें बैठ रही। नौ बजनेके बाद डेसबोरोकी काउण्टेस और डेवनशायरकी डचेजको हाजतमें घुसते देखा। उसके कुछही देर बाद प्रिन्स भी आ पहुंचे। फिर उसके बाद देखा, कि डेसबोरोकी काउण्टेस और तुम बाहर आये और गाड़ीपर सवार होकर चले गये। मालूम होता है, कि काउण्टेसने तुम्हें पहचाना नहीं था और यदि पहचाना था, तो वे बड़ी भारी पाखण्डिन हैं,—"*

फ्लोरिमेल,—"नहीं, सो बात नहीं है। उन्होंने सचमुचही मुझे मिस प्लैण्टाजिनेट ही समझ रखा था। अच्छा फिर क्या हुआ?"

कैरोलाइन,—"तुम्हारे काउण्टेसके साथ चले जानेके बाद मैंने भी एक गाड़ी करके तुम्हारा पीछा किया। आखिर तुम लोग बेलेण्डन-प्रायरीमें चले गये—"

फ्लोरिमेल,—"यह भी देखा था?—"

* देखो—तीसरा खण्ड—४८—५० और ५१ परिच्छेद।

केरोलाइन,—"रहो, ज़रा धीरज धरो। इस घटनाके बाद जब तुम तीन दिन तक घर नहीं आये, तब मैंने समझा, कि तुम फिर उसी मायाविनीके माया-जालमें फंस गये हो। ठीक बात जाननेके लिये मैं कौशल करके फिर उसीके लिये भवनमें गई और देखा, कि वहां उसी तरह घोर अन्धकार छाया हुआ है। वहां तुम भी थे और वह मायाविनी भी थी। तुमलोगोंमें जो बातें होरही थी, सब मैंने सुनलीं। एक तो वह परम मायाविनी थी ही, तिसपर तुम्हारी तबीयत अच्छी न थी, इससे तुम सहज ही उसकी बातपर राजी हो गये। तुमने लण्डन छोड़कर विदेश चले जानेकी बात मानली। तुम्हें उस वक्त यह न सूझा, कि पालिनसे जुदा करानेके लियेही वह तुम्हें विदेश भेजनेकी जिद कर रही थी।"

फ्लोरिमेल,—"उस समय मुझे कुछ भी ज्ञान न था। मैं नहीं जानता, कि वह कौन है, पर यह बात माननी ही पड़ेगी, कि पुरुषोंको भुलावादेनेकी शक्ति स्त्रियोंमें खूब होती है। अच्छा, उस समय मुझसे और उससे जो बातचीत हुई थी, उसे तुमने सुना था?"

केरोलाइन,—"सुना क्यों नहीं। तुमलोगोंका वह अद्भुत प्रेमालाप सुन मैंने विचार किया, कि तुमलोगोंके मिलनसूत्रसे मुझे बदला लेनेका अच्छा अवसर मिल जायगा। इस मायाविनीके सब गुप्त काम मुझे मालूमही होगये हैं, जरूरत आ पड़नेपर इससे सब बात कह सकूंगी, यह सोचकर उसकी मसहरी और खिड़कीके पर्देका एक एक टुकड़ा काटकर मैं वहांसे चली आई, उसके बाद तुम डोवर चले गये। तुम्हारे लिखनेके मुताबिक मैं भी वहां जा पहुंची। वह औरत भी वहां एक भाड़ेके मकानमें जा रही। उसका वही लम्बा चपरासी रोज तुमसे समुद्रके किनारे मुलाकात करता और तुम्हारी आंखोंपर पट्टी बांधकर तुम्हें उसके यहां ले जाता। वह भी वैसा ही अन्धकारमय घर था। उस समयभी तुम यह न जान

सके, कि वह कौन है। कुछ दिनोंके बाद तुमने खुद ही मेरा विश्वास करके मुझसे कहा, कि उससे तुम्हारे विवाहको बातचीत चल रही है, जबतक विवाह न होजायगा, तबतक नतो वह अपना मुँह ही दिखावेगी और न परिचय ही देगी। आखिर विवाहका दिन स्थिर हो गया। फिर सब तय्यारी करनेके लिये तुमने मुझे लण्डन भेज दिया। तब मैंने सोचा, कि तुमसे अपना विवाह करलेनेका यही अच्छा मौका है, क्योंकि जब तुमपर यह बात प्रकट हो जायगी, तब तुम्हारे दिलपर गहरी चोट लगेगी और तुम जल जल कर मरोगे। अगर वह पागल अकस्मात् आकर रङ्गमें भङ्ग न कर देता, तो मेरी इच्छा अवश्यही पूर्ण होजाती।"*

फ्लोरिमेल,—"सो तो समझता हूँ, पर यह तो बताओ, कि वह मायाविनी कौन है, किस तरह तुमने उसका स्थान अधिकृत किया और उसके बाद फिर उसका क्या हुआ?"

कैरोलाइन,—"मैं उसके यहांसे जो मसहरी और खिड़कीके पर्देके टुकड़े काट लाई थी, उन्हें दिखाकर ही उसे अपनी मुट्ठीमें करलिया था, फिर जब मैंने देखा, कि मेरा मतलब हासिल न हुआ, रङ्गमें भङ्ग पड़ गया, तो मिसेस ब्रेसके यहांसे भागनेके समय उस औरतसे कहती आई, कि अगर तुम अपनी इज्जत बचाना चाहती हो, तो अब फिर कभी उसको (फ्लोरिमेलको) साथ विवाह करनेकी चेष्टा न करना।"

फ्लोरिमेल,—"अच्छा, कैरोलाइन! उस औरतके साथ शादी करनेसे ही जब मैं आफतमें पड़ जाता, और मेरी हानि करना ही तुम्हारा मतलब था, तब फिर तुम उस शादीसे नाराज क्यों थीं?"

कैरोलाइन,—"नाराज इसलिये थी, कि विवाह हो जानेसे वह आर्ल उडफालको तुमपर मुकद्दमा चलाने न देती। अबतो अपने दस्तावेज वगैरह तुम पाही गये हो, पर यदि न पाते, तो उडफालकी

* देखो—चौथा खण्ड—८५ वां परिच्छेद।

मुकद्दमेमें तुम्हारी बड़ी हानि होती, इसीसे ऐसी चेष्टा की थी, जिसमें उसके साथ तुम्हारा विवाह न हो। जो हो, मुझे जो कुछ कहना था, सब कह चुकी। अब मेरा अन्तकाल निकट है। अब मेरी समझमें आया है, कि यद्यपि तुमने मेरा बहुत अनिष्ट किया था, तथापि तुम्हारे साथ मेरा बैर करना अच्छा नहीं हुआ। मुझे धीरज धरना ही उचित था।"

फ्लोरिमेल,—"यह क्यों? मैंने तुम्हारे ऊपर जैसा अत्याचार किया था, उससे यदि तुम मेरी हानि करनेको चेष्टा न करके स्थिर रह जातीं, तो उसमें तुम्हारी भीरुता ही प्रकट होती। खैर जो हो पर तुमने अबतक उस अनजान औरतका नाम नहीं बताया।"

कैरोलाइन,—"गेब्रोल। मैं बहुत कमजोर हो गई हूं। आंखसे कुछ दिखाई नहीं देता—"

फ्लोरिमेल,—"उसका नाम?—कैरोलाइन।—नाम?"

कैरोलाइन,—(धीरेसे) "गेब्रोल। जरा सिर झुकाओ, और—थोड़ा और पास आओ; अब एकबार अन्तिम चुम्बन ले लूं। डरोमत, यदि इस समय यहां पालिन भी मौजूद होती, तो वह कभी नाराज न होती।"

फ्लोरिमेल,—"तो अब मुझे माफ कर दिया न, कैरोलाइन?"

कैरोलाइन,—"हां, अन्त करणसे।"

फ्लोरिमेल,—"पर वह नाम?"

"आह! भूल गई थी"—इतना कहनेके बाद फ्लोरिमेलके कानमें धीरेसे कुछ कहकर कैरोलाइन बेहोश हो गई।

इसी समय भार्यके साथ डाक्टर आ पहुंचा, कैरोलाइनको अवस्था देखकर वह दवा देने लगा। उससे उसकी मूर्च्छा तो दूर होगई, पर ज्ञान न आया। अब फ्लोरिमेलके पूछनेपर डाक्टरने कहा, कि चेष्टा करनेसे यह और दो-एक घण्टे जी तो सकती है, पर दिन नहीं काट सकता।"

अब दुःखित चित्तसे लार्ड फ्लोरिमेल उस अभागिनीकी ओर देखने लगे। उनके मनमें यह खयाल उठने लगा, कि यदि वे उसे कभी न देखते, और उसके साथ उनकी कभी जान-पहचान न होती, तो शायद आज उसकी यह दुर्दशा न होती। उन्होंने ही उसे कुपथ गामिनी किया था। उन्हींके कारण, उन्हींके अत्याचारसे उत्पीड़ित हो हतभागिनी निदारुण ईर्षानल परितृप्त करनेके लिये गली गली घूमती फिरी है। हाय! जिसको एक समय देखकर लोग मुग्ध हो जाते थे, आज वही सुन्दरी कैरोलाइन सूखे कमलकी भांति जीर्ण शीर्ण होकर पड़ी हुई है ?

फ्लोरिमेल विषम अनुतापाग्निसे दग्ध होगये। जिस हतभागिनी रमणीके ऊपर उन्होंने अत्याचारका अन्त कर डाला था, वही आज मृत्यु शय्यापर पड़ी हुई पूर्व अनुरागके अनुरोधसे राग द्वेष परित्यागकर उन्हींका नाम लेती लेती बेहोश होगई है।

इस घटनासे फ्लोरिमेलका अन्तःकरण कांप उठा। कोई मानो उन्हें बड़े क्रोधसे धमकाने लगा। उनका हृदय पसीज उठा। उस समय उनकी समझमें आया, कि आत्मग्लानि और विवेक क्या वस्तु है।

अब रोते रोते डाक्टरको एकान्तमें लेजाकर फ्लोरिमेलने कहा,—"डाक्टरसाहब! खूब मन लगाकर इसकी दवा कीजिये, यदि यह बच जायगी, तो कल फिर देखने आऊंगा।"

डाक्टर,—"जहांतक बनेगा, मैं अपनी कोशिशसे बाज न आऊंगा।"

अब डाक्टरसे हाथ मिला और उस निर्वाणोन्मुख सुन्दरीको थोड़ी देर तक स्थिर दृष्टिसे देखकर लार्ड फ्लोरिमेल धीरे धीरे बाहर चले गये। उस समय उनके मनमें मानो कोई बार बार कहने लगा, कि इतने दिनतक वे जो मनुष्य थे, अबसे वे वह मनुष्य न रहे।

एकसौ दो परिच्छेद ।

हत्याकारिणी ।

बड़ी भयानक रात थी। चारों ओर घोर सन्नाटा छाया था। कहीं कोई आवाज सुनाई नहीं देती थी। इसी समय सेण्ट सिपलकर गिर्जेकी चोटीसे कालने अपनी लौहमयी रसनाकी सहायतासे घोर रवके साथ विकट मध्यरात्रि उपस्थित होनेकी घोषणा की। कारागारमें अकेली बैठी हुई मिसेस ब्रेस एक—दो—तीन करके बारह गिननेके बाद फिर मानो घोर सन्नाटेमें खो गई।

हतभागिनी न्यूगेट-जेलकी एक गन्दी कोठरीमें अकेली बैठी हुई थी। उस भयानक अँधेरी कोठरीमें एकदम सन्नाटा छाया हुआ था। इतनेमें न जाने किस खयालसे अभागिनीका हृदय हठात् काँप उठा। उसके घूमते हुए सिरमें अनेक प्रकारकी चिन्ताएं उठने लगीं। न्यूगेट बड़ा भारी कारागार था। उसके कितनेही स्थानोंमें कितनेही काण्ड होते रहते थे।

उसके किसी स्थानमें कोई रोता था, कोई हँसता था और कोई लड़ाई झगड़ा करता था, पर उससे क्या, मिसेसब्रेस जिस कोठरीमें कैद थी, उसकी दीवार इतनी चौड़ी है, कि बाहरकी कोई आवाज भीतर न सुनाई देती थी। हतभागिनी मिसेसब्रेसके मनमें रह रहकर यही हो रहा था, कि वह मानो सौ फुट नीचे पातालमें बैठी हुई है।

कैरोलाइन वाल्टर्सके जखमी होनेके बाद प्राय बारह घण्टे बीत चुके हैं। इस बीचमें कारागार-रक्षक तीन बार आकर मिसेसब्रेसको देख गया था। हतभागिनीने विषम क्रोधसे जामेके बाहर होकर कैरोलाइनको घायल किया था, पर अब क्रोधके बदले उसे

निदारुण आत्मग्लानि हो रही है, इसलिये कारागार-रक्षक जभी आता था, तभी वह पूछती थी, कि कैरोलाइन कैसी है? इस सवालका जो जवाब उसे मिलता था, उससे उसका मन और भी व्याकुल हो उठता था। कारण, कारागार-रक्षक उससे यही कहता था, कि कैरोलाइनकी हालत बहुत बुरी है। अधिकसे अधिक दो चार घण्टे और बचेगी, दिन नहीं काट सकती। यह सब सुनकर मिसेसब्रैसको निश्चय हो गया, कि वह फिर नरघातिनी हुई है। नरहत्या तो सहज बात नहीं है। इस बातका खयाल होतेही उसका हृदय कांप उठता था। यह बात वह मुँहसे बाहर निकालना चाहती, पर मनमें चिन्ता अवश्य ही होती थी। नरहत्या शब्द ही भयानक है। इस शब्दको सुनते ही मनुष्य भयभीत हो उठता है। कोई कितना ही बड़ा साहसी क्यों न हो, वह न तो नरघातिनीको देखना चाहता है और न उसका अङ्ग ही स्पर्श करना चाहता है।

हम पहले कह आये हैं, कि सेण्ट सिपलकर गिर्जेकी घड़ीमें जब जोर जोरसे बारह बजने लगा था, तब मिसेसब्रैस चौंककर एक दो तीन करके गिनने लगी थी। अन्तमें ज्यों ही घड़ीका बजना बन्द हुआ, त्योंही उसका कलेजा काप उठा। वह उस समय जिस स्थानमें बैठी थी, वह घोर अन्धकारमय था। वहां एकदम ऐसा सन्नाटा छाया हुआ था कि किसी प्राणीका शब्द भी सुनाई न देता था। उस घोर अन्धकार और भयानक सन्नाटेमें उस हत्याकारिणीने जब समझा, कि वह अकेली है, सिवाय दुश्चिन्ताके उसका और कोई साथी नहीं है, तो उसकी क्या गति हुई होगी, सो कौन कह सकता है।

अब उस जेलकी सुनसान कोठरीमें उसकी कल्पना धीरे धीरे भयानकसे भयानक मूर्त्तियां सृजन करने लगी। उसके ओठ थरथर कांपने लगे, आखोंमें टकटकी बंध गई, श्वास-प्रश्वास रुकने लगी, छाती जोर जोरसे धड़कने लगी और मानो वह प्रत्यक्ष देखने लगी,

कि कब्रसे मुर्दे निकल निकल उसके निकट आने और अपनी अप्राकृतिक भाषामें परस्पर बातें करने लगे।

उधर उस अभागिनीको न तो पैर पसारने और न हाथ डुलानेकी शक्ति थी, एक दम अचल अटल हो रही थी, पर इधर उसका मन सम्पूर्ण रूपसे जाग्रत था। उसके माथेमें पसीनेकी बूंदे निकल आई थीं और घोर कष्टसे उसका मन छटपटा रहा था। उसका ज्ञान वैसाही बना हुआ था, इसलिये उसे मालूम होता था, कि कितनी विकट और भयानक मूर्त्तियां उसे चारों ओरसे घेरकर न मालूम आपसमें क्या बातचीत कर रही हैं। अभागिनी घोर चिन्तामें चूर होरही थी; पर उस चिन्ताके साथ ज्ञान और बुद्धिका सम्बन्ध नहीं था। मनमें चिन्ता आती थी और वह पहलेके कर्मोंको जगा देती थी। उसे मालूम होता था, कि जिन नर बालकोंकी कब्रें न्यूगेट जेलमें हैं, वे अपनी अपनी कब्रसे निकलकर उसकी सम्बर्धना करने के लिये एक एक करके उसकी कोठरीमें आ रहे हैं। अबतक तो वह अचल अटल बैठी हुई थी, पर अब सहसा हाथ पैर पटकने और दांतोंसे ओंठ काटने लगी। उसके ओठसे खून बहने लगा। अब उस हतभागिनीके मनकी अवस्था ऐसी विकृत होगई, कि उसे मालूम होने लगा, मानो बहुत सी विकट मूर्त्तियां कतार बांधकर दीवारके सहारे खड़ी खड़ी एकटक उसकी ओर देख रही हैं। उन सबके गलेमें फांसीकी रस्सी लगी हुई है।

सहसा उनमेंसे एक मूर्त्ति मिसेसब्रसको सम्बोधन कर कहने लगी,—"आ, हम लोगोंके साथ आ। तुझे लेजानेके लिये हमलोग जमीनके अन्दरसे निकल बाहर आई हैं। वह बहुत अच्छी जगह है वहां किसी तरहका गोलमाल नहीं है। तेरे इस गोलमटोल शरीरको नरकके मकोड़े अच्छी तरह स्वाद ले ले कर धीरे धीरे खायंगे। तेरा समय तो नजदीक आ गया है। मनुष्योंसे अब तेरा

सम्बन्धही क्या ? तू तो अनन्त-राज्यके फाटकपर आकर खड़ी है तेरे लिये जो आग जली है, वह अब बुझने की नहीं। और थोड़ी ही देरमें तेरा यह गुदगर, चिकना शरीर काठ हो जायगा तू जिस बक्समें सोवेगी, उसके ऊपर मट्टी भरदी जायगी और पत्थर रख दिया जायगा। इस जेलकी जमीनके भीतर और जो लोग गड़े हैं, उनके साथ तू भी मिला दी जायगी।"

इतना कहकर वह मूर्त्ति चुप हो रही। उसके बाद दूसरी मूर्त्ति कहने लगी,—"कीड़े मकोड़े तो तेरा मांस खावे होंगे। पर तू जमीनके अन्दर रखी जायगी, वह कैसे मजेका अन्धकार मय स्थान है, यह तुझे अच्छी तरह मालूम हो जायगा। तू अच्छी तरह समझ जायगी, कि तेरा दम बन्द हो गया है। तू सांस लेनेकी चेष्टा करेगी, पर सांस ले न सकेगी। तुझे ऐसा मालूम होगा, मानो किसीने तेरी छातीपर पत्थर रख दिया हो, और नाक तथा मुँहमें गला हुआ सीसा ढाल दिया हो। भीतर ही भीतर सांस लेनेकी चेष्टा करेगी, पर तेरी सब चेष्टा व्यर्थ हो जायगी।"

इतना कहकर वह भी चुप हो गई। अब तीसरी कहने लगी,—"हा, व्यर्थ हो जायगी। तू अच्छी तरह समझेगी, कि कीड़े मकोड़े सरसराकर तेरी देहके ऊपर चढ़ रहे हैं—तेरे मुँह, नाक और आंखमें घुस रहे हैं—तेरी दोनों आंखोंको खा रहे हैं। आंखोंके भीतर उन सबने रास्ता बना लिया—उसी राहसे वे कभी भीतर जाते और कभी बाहर आते हैं। यह सब तू अच्छी तरह समझेगी और भागनेकी चेष्टा करेगी, पर तुझमें इतनी भी शक्ति न रहेगी, कि हाथ हिलाकर उनको भगा सके। तू बहुत कष्ट पावेगी, पर चिल्ला-कर रो भी न सकेगी। यमदूत तेरा मुँह बन्द कर देंगे।"

उसके चुप होनेके बाद फिर और एक मूर्त्ति कहने लगी,—"सिर्फ आधी रातके वक्त तुझे छुट्टी मिलेगी। उसी समय तू चलने फिरने

और बातचीत करने पावेगी। फिर जिस तरह आज हमलोग तुझे लेने आई हैं, उसी तरह तू भी हमलोगोंके साथ इस कोठरीमें और किसीको लेने आवेगी।"

इस तरह बात खतम हो जानेपर वे सब भीषण मूर्त्तियां हाथ पसारकर उस मन्दभागिनीकी ओर धीरे धीरे बढ़ने लगीं। ज्यों ज्यों वे सब आगे आने लगीं, त्यों त्यों उस अभागिनीका खून सूखने लगा। आखिर उन सबने एक साथ उसके कान्धे पर हाथ रख दिया। अब तक तो वह मंत्रमुग्धकी नाईं चुप थी, पर उन विकट मूर्त्तियोंका हाथ लगते ही वह बड़े जोरसे चिल्ला उठी। उधर वह पिशाचगणभी मानो इस चिल्लाहटके सुननेकी ही अपेक्षा कर रहे थे। चिल्लाहट सुनते ही उन लोगोंनेभी सहसा अपना रूप बदल डाला। उन लोगोंका सारा शरीर मानो अग्नि-मय हो गया। और वे मानो जलती हुई आगमें नाचने-कूदने लगे। मिसेसब्रेस अब स्थिर न रह सकी। उसके शिरमें मानो आग लग गई। अत्यन्त भयभीत होकर वह फिर बड़े जोरसे चिल्ला उठी।

अब उसने आंख पसारकर देखा, कहीं कुछ भी नहीं था। वे पिशाच मूर्त्तियांभी पलक मारते ही न जाने कहां चली गई थीं। उस घोर अन्धकारमय कोठरीमें वह अकेली ही बैठी हुई थी। क्षण भर वह चुपचाप बैठी हुई देखती रही। धीरे धीरे उसका मस्तिष्क प्रकृतिस्थ होने लगा, धीरे धीरे मानो फिर उसकी रगोंमें खून दौड़ने लगा। उसके अङ्ग प्रत्यङ्ग मानो फिर काम लायक हो गये। अब वह सहसा उठकर खड़ी हुई और पसीनेसे तरबतर माथेमें हाथ रखकर टूटी हुई आवाजमें बोल उठी,—"यह सब झूठा—प्रलाप था, पर कैसा भयानक था।"

वह फिर बैठ गई और उसके दोनों हाथ मानो बेकाम होकर झूलने लगे। उसके कष्टका भार उस समय पूर्ण हो उठा था।

वह उस समय अकूल निराशा-सागरमें उपला रही थी। क्रमसे उसके हृदयमें पहली बातें उदय होने लगीं। वह क्या थी और क्या हो गई है? इसी चिन्तामें वह एकदम पागल हो गई।

आखिर वह छाती पीटकर कहने लगी,—"हाय! मैं कैसी मन्दभागिनी हूं! मैंने यह क्या कर डाला! हाय! अभी उस दिन मैं कैसे सुख-चैनसे धन-ऐश्वर्य भोग कर रही थी और आज जेलमें पड़ी सड़ रही हूं! अब भी मेरे शरीरमें खूब शक्ति और बल विद्यमान है, तो भी यमने आकर मेरी देहमें हाथ लगा दिया। हा भगवान्! मैंने क्या कर डाला। कैसे भयानक कुएंमें अपनेको डाल दिया। ओह! क्या अब इससे न निकल सकूंगी? पहले जिस रास्तेमें चल फिर रही थी, क्या फिर कुछ दिनोंके लिये उसपर नहीं जा सकती? क्या सचमुच ही मैं न्यूगेट-जेलमें हूं? यथार्थ ही क्या मेरा विचार होगा? इकौलातसे क्या मुझे फांसी होगी? रहो देखूं, कहीं स्वप्न तो नहीं देखती? ठहरो, जरा विचारकर देखूं तो मैं सचमुच ही वही प्रसिद्ध कपड़ेवाली मिसेसन स हूं या वही? हां, इसमें कोई भूल नहीं है। बचपनमें मैं देखने सुननेमें अच्छी थी, जवानी आनेपर और भी खूबसूरत हो गई। मैं प्रिन्सकी प्रणयिनी हुई थी, उस समय कितने ही आदमी मेरी कितनी खुशामद करते थे, कितने अमीर उमराव मेरा मुँह ताकते रहते थे। उस समयकी बात याद होनेपर अब स्वप्न मालूम होती है। प्रिन्सके साथ जब पहले पहले मेरी मुलाकात हुई, तो कैसे सुख-चैनसे दिन बीतते थे और इउजिनी मण्टगुमरीके साथ भी कितनी ही रातें कैसे आनन्दसे काटी थीं। आह! और एक बात याद आती है। एक रातमें जब इउजिनी मेरे कमरेमें ही था, उसी समय मेरा स्वामी आ गया था। उससे और मुझसे जो कुछ बातें हुई थीं, उन्हें सुन इउजिनीने उसे नीचे लेजाकर मकानसे बाहर निकाल दिया था

सब बातें मुझे याद है और अब इन बातोंको याद ही क्यों करती हूं? उसके बाद फिर इचजिनी मेरे पास कभी नहीं आये। शायद मुझे बदमाशकी औरत समझकर उन्हें घृणा हो गई है। उसी दिनसे मेरा भाग्य भी फूट गया है। विपद्-जालमें एकदम फंस गई हूं, दुष्कर्ममें लिप्त हो गई हूं। क्या करूं, दुष्कर्म करना उचित है, या नहीं, यह सोचनेका समय ही नहीं मिला। ओह! मैंने कैसे कैसे भयानक काम कर डाले हैं। अब मुझे फांसी पड़ना ही होगा। कैसी भयङ्कर बात है! क्या सचमुच ही मैंने उन कामोंको किया है? क्या सचमुच ही मुझे फांसीकी तख्तीपर झूलना पड़ेगा?"

हतभागिनी इस तरह बोलती बोलती कष्टसे अधीर होकर चिल्ला उठी। इसके बाद कुछ देरतक चुप रहकर वह फिर कहने लगी,—"फांसीकी तख्ती! कौन कहता है फांसीकी तख्ती! अभी जो मुझे लेने आये थे, वही सब तो कह गये हैं। तो क्या अभीसे मैं मुर्दोंमें दाखिल हो गई हूं? क्या जिस बक्समें मेरी देह रखी जायगी, वह तय्यार हो गया है? और जो चादर मुझे उढ़ायी जायगी, वह भी बन गई है? क्या मेरी कब्र भी खुद गई है? वे सब तो कह गये हैं, कि सभी चीजें तैय्यार हैं। नहीं, नहीं, मैं फांसीकी तख्तीपर नहीं चढ़ूंगी। क्या जल्लाद मुझे फांसी देगा और लाखों आदमी खड़े खड़े मेरा तमाशा देखेंगे? नहीं—नहीं, ऐसा नहीं हो सकता।"

इस तरह बकती हुई मन्दभागिनी एकदम ज्ञानशून्य हो बाल नोचती और छाती पीटती हुई रोने लगी। उसके दुःखका पलड़ा पूर्ण हो गया। उस घोर अँधेरी कालकोठरीमें हतभागिनीको भ्रम ऐसा मालूम होने लगा, मानो फांसीका काठ, जल्लाद, शेरिफ और घातकगण सब उसके सामने मौजूद हैं और उसके गलेमें फांसीकी रस्सी डाल दी गई है।

इस भीषण दृश्यको न सह सकने पर वह कोठरीके चारों ओर चक्कर लगाने लगी। उसी वक्त उसके पैरपर एक टूल गिर पड़ा। उस चोटसे वह एकदम अधीर हो उठी। उसकी रगमें आग जलने लगी और आंखोंके सामने चिनगारियां उड़ने लगीं। उसने समझा, कि इसी जीवनमें नरक-यन्त्रणा आरम्भ होगई है। अब जीवन धारण करना ही उसे यन्त्रणाका कारण मालूम होने लगा। अतएव एक ओर जिस तरह उसके जीवनके ऊपर अभी सम्पूर्ण शक्ति विद्यमान थी, उसी तरह दूसरी ओर फांसीकी तख्तीपर लटककर मरनेका भय भी उसे बहुत दुःख दे रहा था, सुतरां उसे ज्ञान चैतन्य कुछ भी न रहा।

आखिर वह सोचने लगी, कि अब क्या करूं? उसने जितनी बार अपने मनसे पूछा, कि क्या अब कोई आशा नहीं है? उतनी ही बार मानो किसीने उसके भीतरसे उत्तर दिया, कि नहीं, कोई आशा नहीं है, मृत्यु अवश्यम्भावी है। तब हतभागिनीने आत्मघात करनेका संकल्प कर लिया।

वह संकल्प अच्छा था, या बुरा? उस समय कौन विचार करता था? उस समय उसके शिरमें भयानक आग लगी हुई थी, जो संकल्प उसने किया, उसी ओर उसका लक्ष्य भी रहा। अब उससे और न रहा गया। चट अपनी कुरती वगैरह उतार और उनके फीते तथा बन्द वगैरहको नोचकर रस्सी बटने लगी। उसकी छाती जोर जोरसे धड़कने लगी, सारा शरीर थरथर कांपने लगा और निदारुण निराशासे उसकी हृदय-ग्रन्थि शिथिल पड़ गई। उसे भले बुरेका कुछ भी ज्ञान न रहा। उसने फीते वगैरहको बटकर एक खासी रस्सी तय्यार कर ली।

रस्सी तय्यारकर उसने खिड़की और उसके छड़ोंकी ओर देखा। फिर जिस टूलसे टकराकर वह गिर पड़ी थी, उसे उठा लाई। उसपर

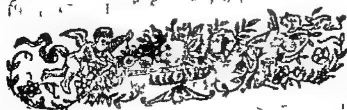
चढ़कर उसने रस्सीके एक छोरको खिड़कीके डण्डेमें बांधा और दूसरे छोरमें सकरफंदा बनाकर अपने गलेमें डाल लिया।

इस तरह आत्मविनाशकी सब तय्यारी कर हतभागिनी मिसेस ब्रेस टूलपर खड़ी हो गई। अब सहसा उसके मनकी गति पलट पड़ी। प्राणका मोह फिर प्रबल हो उठा। वह टूलसे उतरनेको ही थी, कि इसी समय सेण्ट सिपलकर गिर्जेकी घड़ीमें टनसे एक बज उठा।

चारों ओर घोर सन्नाटा छाया हुआ था, सहसा घड़ीकी आवाज सुनकर वह बदनसीब कांप उठी। उसी कंपकपाहटसे वह टूल, जिसपर वह खड़ी थी,-गिर पड़ा और वह रस्सीमें झूलने लगी।

अब वह प्राण बचानेके लिये जितना ही छटपटाती थी, फन्दा उतना ही कसकर उसके गलेमें बैठता जाता था। रस्सीको पकड़कर एक बार उसने गिरह खोलनेकी कोशिश की, फिर दीवारपर चढ़कर जान बचानेकी चेष्टाकी,-पर सब व्यर्थ हुआ। क्षण भरमें उसका शरीर शिथिल पड़ गया और वह सदाके-लिये शान्त हो गई। उसका प्राण-पखेरू देह-पिञ्जरको खाली कर उड़ गया।

सुबहके वक्त जब कारागार-रक्षक उस कोठरीमें गया, तो उसने मिसेस ब्रेसको खिड़कीके डण्डेसे बँधी हुई रस्सीमें लटकते पाया। रस्सी काट और उसे नीचे सुलाकर कारागार-रक्षकने डाक्टरको खबर दी। डाक्टरने आ और लाश देखकर कहा, कि हतभागिनी अब इस संसारमें नहीं है। इसे मरे बहुत देर हो गई।



एकसौ तीन परिच्छेद।

अर्ल मण्टगुमरीके मुलाकाती।

जिस रातमें पूर्ववर्णित आत्महत्या की गई थी, उसके दूसरे दिन २१ वीं मई थी। यह २१वीं मई एक खास दिन थी, क्योंकि बहुत दिनोंसे मण्टगुमरी और वेलेग्डन-परिवारमें जो मुकद्दमा चल रहा था, उसके ईश्यूके ऊपर चैन्सरीके माष्टर उसी दिन रिपोर्ट देने वाले थे। अतएव लार्ड चैन्सेलर इस रिपोर्टके ऊपर सम्पूर्ण रूपसे निर्भर करें या न करें, पर इसमें सन्देह नहीं; कि बहुत कुछ इसीका अवलम्बन कर उनको यह मुकद्दमा फैसला करना पड़ेगा। सुतरां बहुत दिनोंसे इन दोनों परिवारोंके बीच जो मुकद्दमा चला आता है, आज उसका फैसला हो जायगा।

आज लार्ड मण्टगुमरी बहुत सवेरे ही उठ बैठे और कदआदम आइनेके सामने खड़े होकर आप ही आप कहने लगे,—"हाँ, चेहरा कुछ पीला तो अवश्य है; पर उतना खराब नहीं दिखाई देता रात तो जागतेही बीत गई है और पिछली रातमें यदि पलक लगी भी, तो बुरे बुरे स्वप्न ही देखनेमें आये। रातभर जागनेसे लोगोंका चेहरा जितना खराब दिखाई देता है, मेरा चेहरा उतना खराब नहीं है।"

इतना कहकर अर्ल महाशय कपड़े पहनने लगे। कुछ कपड़े पहननेके बाद उन्होंने कपालपर हाथ रखा और व्यस्त होकर फिर कहने लगे,—"अच्छा, आज मन ऐसा क्यों हो रहा है? आप ही आप डर क्यों मालूम होता है? किसी चीजमें आनन्द क्यों नहीं मिलता? शरीरसे पसीना हो क्यों चल रहा है? और हाथ ही क्यों कांपता है? डरका तो कोई कारण नहीं दिखाई देता। मेरे

वे सब काम तो गुप्त ही हैं, फरनण्डा भी अपने कौलसे नहीं डिगी। और मुकद्दमा जीतनेका भरोसा मिष्टर रिगडेन दे ही चुके हैं, तब फिर भय क्यों मालूम होता है? मन रह रहकर इस तरह चौंक क्यों उठता है। उस घटनाके दिनसे ही मन खराब हो रहा है। मसकरेडके जलसेमें जाना अच्छा नहीं हुआ। उस मायाविनीके फन्देमें फँसकर ही मैं पागल हो गया हूं। कौन जाने, वह कौन है? लौरा-बेलेरडनको छोड़कर मेरे गुप्त कामोंके जाननेकी चेष्टा और कौन कर सकता है? पर वह मायाविनी तो 'लौरा' हो नहीं सकती, जिसने फ्लोरिमेलकी जगह मण्टगुमरीको अपनी छातीसे लगाया था?"

अर्ल महोदय इस तरह नाना प्रकारकी चिन्ता कर ही रहे थे, कि उनका विश्वासी नौकर जिलवर्ट आ पहुंचा। उन्हें इतने सवेरे उठते देख कुछ विस्मित होकर उसने कहा,—"हुजूर! अभी तो सात भी नहीं बजे।"

अर्ल,—"क्या करूं, रातमें जरा भी आंख नहीं लगी, इसीसे खूब सवेरे उठ बैठा हूं। और तुम्हीं क्यों इतना सवेरे, मेरे उठनेके समयसे प्रायः एक घण्टा पहले यहां आये हो?"

नौकर,—"एक बुड्ढा आया है। वह कहता, है कि एक बहुत जरूरी कामके लिये आपसे मुलाकात करनी है, इसीसे देखने आया था, कि आप सोते हैं, या जागते——"

अर्ल,—"उसका नाम क्या है?"

नौकर,—"चेपमैन।"

अर्ल,—(कांपकर) "ओह। वह बेलेयडन गांवसे आया है। अच्छा उसे कह दो, कि मैं अभी आता हूं।"

यह जवाब लेकर नौकर चला गया। इधर जल्दी जल्दी कपड़े पहनते हुए मण्टगुमरी सोचने लगे, कि चेपमैन जब इतनी दूरसे आया है, तो जरूर ही कोई बुरी खबर है। आखिर जल्दी जल्दी

कपड़ा पहनकर वे नीचे उतरे और जिस बैठकखानेमें चैपमैन बैठा हुआ था, उसमें जा और दरवाजा बन्द करके बोले,—"क्या खबर है?"

चैपमैन,—"हुजूरके सुनने लायक ही खबर है।"

अर्ल,—(अधीर होकर) "भला बुरा जो हो, जल्द कह डालो।"

चैपमैन,—"अच्छीके सिवाय बुरी खबर नहीं है।"

यह सुन अर्लका मन कुछ शान्त हुआ। अब सोफापर बैठकर उन्होंने कहा,—"अच्छा, तो अब हमलोग शान्त होकर बातचीत कर सकते हैं। मैंने समझा था, कि जब तुम लण्डन आकर इतने सवेरे मुझसे मिलने आये हो, तो अवश्यही कोई विशेष बात कहने आये हो। समझा था, कि उस कब्रस्थानकी कोई बात—"

चैपमैन,—"नहीं, नहीं, उसका कुछ भी डर नहीं है। आज तीन महीने हुए, जब हुजूरने किसी विशेष कारणसे अपने आदमियोंको मुझसे वेलेण्डन-परिवारके समाधि-मन्दिरको खुलवानेके लिये आज्ञा देदी थी, उस बातको आजभी वेलेण्डन गांवमें कोई नहीं जानता और न भविष्यतमें कोई जानेगाही। पर आपने मुझे भार दिया था, इससे नारविच बहुत नाराज होगया था, लेकिन नाराज होनेके सिवाय वह और करही क्या सकता था?"

अर्ल,—"अच्छा, तो अब लण्डन आनेका कारण बताओ?"

चैपमैन,—"हुजूर हुक्म दे आये थे न, कि जब कोई विशेष बात हो, तो फौरन मुझे खबर देना, इसीसे परसों वेलेण्डनसे मैं शामके वक्त गाड़ीपर सवार हुआ और अभी कोई घण्टाभर पहले यहां पहुंचा हूं।"

अर्ल,—"तो तुम्हारी दो रातें राहमें कटीं हैं और यहां पहुंचतेही सीधे मेरे पास चले आये हो?"

चैपमैन,—"जी हां।"

अर्ल,—"किस लिये?"

चैपमैन,—"मारश्रियोनेस वेलेण्डन गांवमें गई थीं—"

अर्ल,—(शीघ्रतासे) "किस कामके लिये ?"

चैपमैन,—"कब्रस्थान और रजिष्टर देखने—"

अर्ल,—(चौंककर) "रजिष्टर देखने।" (मनही मन) "चैपमैन तो रजिष्टरकी बात जानता नहीं।" इसके बाद मनको स्थिर कर अर्लने चैपमैनसे कहा,—"और जो कुछ कहना हो, कह जाओ।"

चैपमैन,—"परसों तीसरे पहर मारशियोनेस वेलेण्डन गांवमें पहुंची। उसी समय उनका नौकर रिचर्ड गाड़ी करके न मालूम कहां चला गया। उसके बाद पादड़ी रावर्टसको साथ लेकर वे गिर्जा देखने गईं और मिसेस मारगरेट मुझसे मुलाकात करने आई। उसका रङ्ग ढङ्ग देखकर मैं समझ गया, कि उसके मनमें कुछ है, इसलिये उसके मनकी बात जाननेके लिये मैं खूब अपनायत दिखाने लगा। पहले तो उसने कुछ इधर उधरकी बातें कहीं, फिर आपके वेलेण्डन जानेकी बात छेड़ दी। उसके बाद आपके आदमियोंने मुझसे समाधि-मन्दिर क्यों खुलवाया था और आप मेरे ऊपर इतनी कृपा क्यों रखते हैं, यह सब बातें पूछने लगी। अन्तमें उससे रहा न गया, उसने साफ ही कह दिया, कि मेरी मालिकिन बड़ी उदार हैं। उनके अनुगत होने और उनके मन-मुताबिक काम करनेसे वे खूब बखशीश देती हैं। उसके मनकी बात जान लेनेपर मैंने प्रकारान्तरसे उसे समझा दिया, कि मैं घूस खाने वाला आदमी नहीं हूं। इसपर मुझसे बहुत नाराज होकर वह चली गई।"

अर्ल,—"उसका असल मतलब क्या था, सो तो कुछ समझमें नहीं आता। शायद उन लोगोंने सोचा होगा, कि तुम कब्रस्थानके खुदवानेका उद्देश्य जानते होगे, इसीसे तुम्हारे पास गई होगी।"

चैपमैन,—"थोड़ा बहुत तो मैं जानताही हूं, पर उन लोगोंने समझा होगा, कि मैं बहुत कुछ जानता हूं।"

अर्ल,—"बात ऐसी ही है।"

चैपमैन,—"तो यह उनकी भूल है। यदि मेरी इच्छा हो भी तो मैं अधिक कही क्या सकता हूं? मैं तो सिर्फ यही जानता हूं, कि तीन महीने हुए, एक दिन आपने मेरे यहां जाकर कहा, कि जब मेरे आदमी कब्रस्थान देखने आवें, तो उसके खोदने का भार तुम्हींको लेना होगा। और उस समय यदि मुझे मालूम हो, कि इससे पहले किसीने कब्र को खोदा है, तो मैं उस बातको जाहिर न कर दबा रखूं। तब मैं तो इतना ही जानता हूं। पर जब हुजूरने काफी इनाम देकर मुझे खुश कर दिया है, तो वेलेण्डनके आदमी हों वा और किसीके, मैं किसीसे कुछ भी कहनेका नहीं।"

बुड्ढा चैपमैन पत्थरपर खुदाईका काम करता था। वह जो अर्ल मण्टगुमरीका थोड़ा बहुत विश्वासपात्र होगया था, इसीसे वह अपनेको कृतार्थ समझता था। अतएव वह अपनेको भला आदमी समझकर जबतक बकता रहा, तबतक अर्ल चुप रहकर मारशियोनेसके वेलेण्डन जाने और मिसेस मारगरेटके चैपमैनसे मिलनेकी बात ही सोचते रहे। उसकी बात खतम होतेही अर्लने कहा,—"अभी तुमने कहा है न, कि मारशियोनेस कब्रस्थान देखने गई थीं?"

चैपमैन,—"जीहां, गई थी। और उनके साथ पादड़ी रावर्ट्स तथा नारविच भी गया था, पर वहां जाकर उनलोगोंने क्या किया, सो कुछ भी नहीं जानता, परन्तु इतना जरूर सुननेमें आया है, कि वेलेण्डनके मारक्विसकी लाश कफिनसे बाहर निकली पड़ी थी। जब मैं आपकी ओरसे कब्र खोदने गया था, तभी लाशको बाहर निकले देखा था, पर उस समय मुझे यह न मालूम था, कि लाश मारक्विसकी——"

"और मुझे भी इसका कुछ खयाल न था। जिस रातमें मैं वहां गया था, उसी रातमें तो कफिन फटा था और मेरे साथके दोनों आदमी आवाज सुनकर चौंक पड़े थे।"

इस तरह मन-ही मन सोचकर अर्ल बोल उठे,—"फिर उसके बाद, चैपमैन? तुम कह रहे थे, कि परसों जब मारश्रियोनेस राबर्ट्‌स और नारविचको साथ लेकर कब्रस्थानमें गईं, तो वहां एक फटे हुए क़फिनसे आधी खुली बाहर निकली हुई एक लाशको देखा—"

चैपमैन,—"जीहां, उसके बाद सुना, कि मारश्रियोनेसके साथ जो आदमी थे, बिना समझे-बूझे वे सब लाशके बारेमें न मालूम क्या बोल उठे, कि वह बात मारश्रियोनेसको बहुत बुरी लगी और वे बहुत नाराज हुईं। मुझे यह सब कुछ मालूम न था, पर नारविचके साथ जो आदमी गया था, उसीसे सुना है। सुनकर मैंने विचारा, कि इसकी खबर आपको जल्द दे देनी चाहिये, इसीसे चटपट यहां चला आया।"

अर्ल,—"तुमने अभी कहा,—"कि एक बात सुनकर मारश्रियोनेस बहुत बिगड़ उठीं। वह बात कौन सी है?"

चैपमैन,—"बात और क्या, यही है, कि मारश्रियोनेसके स्वामीकी लाश इतनी फूल उठी और नीली पड़ गई थी, कि उसे देखकर नारविच हठात् बोल उठा, कि निश्चय ही यह आदमी विषसे मरा है——"

अर्ल,—"ऐं। क्या कहा, विषसे। ओह! अब मुझे भी कुछ कुछ खयाल होता है। अच्छा कहे जाओ, कहे जाओ।"

चैपमैन,—"नारविचकी बात सुन मारश्रियोनेस बहुत ही नाराज हुईं और उसे बहुत कुछ डराया धमकाया। उस समय नारविच करे क्या, सारा दोष मेरे मत्थे थोप दिया और यह भी कह दिया, कि मैंने कहा है, कि मारक्विसके साथ जब मारश्रियोनेसका विवाह हुआ था, उस समय वे किसी दूसरेपर मरती थीं और इस विवाहसे एकदम राजी न थीं। अच्छा हुजूर! मारक्विस हठात् ही मर गये थे न?"

चेपमैन,—"तो यह उनकी भूल है। यदि मेरी इच्छा हो भी तो मैं अधिक कही क्या सकता हूं? मैंतो सिर्फ यही जानता हूं, कि तीन महीने हुए, एक दिन आपने मेरे यहां जाकर कहा, कि जब मेरे आदमी क़ब्रस्थान देखने आवें, तो उसके खोदने का भार तुम्हींको लेना होगा। और उस समय यदि मुझे मालूम हो, कि इसके पहले किसीने क़ब्र को खोदा है, तो मैं उस बातको जाहिर न कर दबा रखूं। तब मैं तो इतना ही जानता हूं। पर जब हुजूरने काफी इनाम देकर मुझे खुश कर दिया है, तो वेलेरुडनके आदमी हों वा और किसीके, मैं किसीसे कुछ भी कहनेका नहीं।"

बुड्ढा चेपमैन पत्थरपर खुदाईका काम करता था। वह जो अर्ल मएटगुमरीका थोड़ा बहुत विश्वासपात्र होगया था, इसीसे वह अपनेको कृतार्थ समझता था। अतएव वह अपनेको भला आदमी समझकर जबतक बकता रहा, तबतक अर्ल चुप रहकर मारशियोनिसके वेलेरुडन जाने और मिसेस मारगरेटके चेपमैनसे मिलनेकी बात ही सोचते रहे। उसकी बात खतम होतेही अर्लने कहा,—"अभी तुमने कहा है न, कि मारशियोनेस कब्रस्थान देखने गई थीं?"

चेपमैन,—"जोहां, गई थीं। और उनके साथ पादड़ी रावर्टस तथा नारविच भी गया था, पर वहां जाकर उनलोगोंने क्या किया, सो कुछ भी नहीं जानता, परन्तु इतना जरूर सुननेमें आया है, कि वेलेरुडनके मारक्विसकी लाश कफिनसे बाहर निकली पड़ी थी। जब मैं आपकी ओरसे क़ब्र खोदने गया था, तभी लाशको बाहर निकले देखा था, पर उस समय मुझे यह न मालूम था, कि लाश मारक्विसकी——"

"और मुझे भी इसका कुछ खयाल न था। जिस रातमें मैं यहां गया था, उसी रातमें तो कफ़िन फटा था और मेरे साथके दोनों आदमी आवाज सुनकर चौंक पड़े थे।"

इस तरह मन ही मन सोचकर मर्ले बोल उठे,—"फिर उसके बाद, चैपमैन? तुम कह रहे थे, कि परसों जब मारग्रियोनेस राबर्ट्स और नारविचको साथ लेकर क़ब्रस्तानमें गईं, तो वहां एक फटे हुए क़फ़िनसे आधी खुली बाहर निकली हुई एक लाशको देखा—"

चैपमैन,—"जोहां, उसके बाद सुना, कि मारग्रियोनेसके साथ जो आदमी थे, बिना समझे-बूझे वे सब लाशके बारेमें न मालूम क्या बोल उठे, कि वह बात मारग्रियोनेसको बहुत बुरी लगी और वे बहुत नाराज हुईं। मुझे यह सब कुछ मालूम न था, पर नारविचके साथ जो आदमी गया था, उसीसे सुना है। सुनकर मैंने विचारा, कि इसकी ख़बर आपको जल्द दे देनी चाहिये, इसीसे चटपट यहां चला आया।"

मर्ले,—"तुमने अभी कहा,—"कि एक बात सुनकर मारग्रियोनेस बहुत बिगड़ उठीं। वह बात कौन सी है?"

चैपमैन,—"बात और क्या, यही है, कि मारग्रियोनेसके स्वामीकी लाश इतनी फूल उठी और नीली पड़ गई थी, कि उसे देखकर नारविच हठात् बोल उठा, कि निश्चय ही यह आदमी विषसे मरा है——"

मर्ले,—"ऐं। क्या कहा, विषसे। ओह। अब मुझे भी कुछ कुछ ख़याल होता है। अच्छा कहे जाओ, कहे जाओ।"

चैपमैन,—"नारविचकी बात सुन मारग्रियोनेस बहुत ही नाराज हुईं और उसे बहुत कुछ डराया धमकाया। उस समय नारविच करे क्या, सारा दोष मेरे मत्थे थोप दिया और यह भी कह दिया, कि मैंने कहा है, कि मारक्विसके साथ जब मारग्रियोनेसका विवाह हुआ था, उस समय वे किसी दूसरेपर मरती थीं और इस विवाहसे एकदम राजी न थीं। अच्छा हुजूर। मारक्विस हठात् ही मर गये थे न?"

अर्ल,—"मैं भी तो यही सोचता हूं। अच्छा, जो हो, और जो कुछ कहना हो, कह जाओ।"

चैपमैन,—"और विशेष कुछ भी नहीं है। मारशियोनेसने अपने स्वामीको जहर देकर मार डाला है, इस तरह अनुमान करनेका उपयुक्त कारण है, यही समझकर मैं पहले ही कह चुका हूं, कि खबर बुरी नहीं है।"

"तुम मेरे लिये इतना कर रहे हो, इसके लिये मैं तुम्हारा बहुत एहसानमन्द हूं।" इतना कह कर चिन्तित भावसे टहलते टहलते अर्ल सोचने लगे,—"लोरा क्या सचमुच ही इतनी पाखण्डिन है? अगर वह अपने पतिको जहर दे सकती है, तो उसके छिनाल होनेमें भी क्या आश्चर्य है? तो क्या मैं उसीके माया-जालमें फँसकर उसीके कानमें वह गुप्त बात ——"

इसी समय एक नौकरने आकर मिष्टर रिगडेनके क्लेड क्लार्कके आनेकी खबर दी।

यही क्लार्क उनके भाई रेमण्डका पता लगानेके लिये वारविकशायर गया था, यह बात अर्ल मण्टगुमरी जानते थे, इसलिये उसके आनेकी बात सुन उन्होंने घबराकर पूछा,—"वह कहां है?"

नौकर,—"उसे हुजूरके खास कमरेमें बैठा आया हूं।"

अर्ल,—"अच्छा मैं वहीं जाता हूं, तबतक तुम इस आदमीको अपने कमरेमें ले जाकर खूब आदर-सत्कार करो।"

इतना कहकर अर्ल उस कमरेमें चले गये, जिसमें रिगडेनका क्लार्क बैठा हुआ था। उस आदमीको देखते ही अर्लका सारा शरीर कांप उठा। उन्होंने सोचा, कि शहरमें पहुंचते ही यह सीधा मेरे पास चला आया है। माजरा कुछ सगीन मालूम होता है, नहीं तो यह इतना जल्द क्यों आता?"

रेड क्लार्क स्वभावसे ही बड़े आदमियोंका भक्त था। अर्लको

आते देख उसने उठकर बड़े अदबके साथ सलाम किया। इसी बीचमें मनको स्थिरकर अर्लने कहा,——"मालूम होता है, वारविक शायरसे सीधे यहीं चले आये हो? क्यों भाईसे मुलाकात हुई? मोल्लको उस शर्तके मुताबिक उन्होंने काम किया?"

यह लार्क बड़ा ही चतुर और कामकाजी आदमी था। वह जो कुछ देख आया था, उसमें उसका कुछ कुछ सन्देह अर्लपर हो रहा था, इसीसे उसको यह धारणा हुई, कि इस समय मैं जो खबर अर्लको सुनाऊंगा, वह उनके लिये नई नहीं है। इसलिये उसने कुछ कातरताके साथ कहा,—"हुजूर। क्या कहूं, खबर अच्छी नहीं है! लार्ड रेमण्डपर जैसी बीती है, उसे सुननेके लिये तय्यार हो जाइये।"

इसपर अत्यन्त व्याकुल होकर अर्लने कहा,—"ऐं। क्या कहते हो जल्द कहो, बात क्या है?"

"हुजूर। आपके भाई लार्ड रेमण्ड इस संसारमें नहीं है।" यह कह वह स्थिर दृष्टिसे मण्टगुमरीके मुंहकी ओर देखने लगा। यह देख अर्लने समझा, कि लार्क मेरे मनकी बात ताड़ने की फिक्रमें है। बस "नहीं है, रेमण्ड नहीं है रेमण्ड" कहकर अर्लने अपने दोनों हाथोंसे मुंह छिपा लिया और पुक्का फाड़कर रोने लगे।

यह देख लार्कने मन ही मन कहा,—"ओह। मुझसे बड़ी भूल हो गई है। भाईके वियोगसे तो सचमुच ही ये बड़े कातर हो उठे हैं। इनके ऊपर सन्देह करना सरासर अन्याय है।"

मिष्टर रिगडेनको नस लेनेकी आदत थी। यह लार्क बड़ा प्रभुभक्त था, इससे उसे भी मालिककी तरह सुंघनी सूंघनेकी आदत पड़ गई थी, सुतरां लार्ड मण्टगुमरीके घोर दुःखके समय वह कई चुटकी नस सूंघनेसे बाज न आया।

अब अत्यन्त दुःख और टूटे फूटे स्वरके साथ अर्लने बहुत

कातरताके साथ पूछा,—"तो मेरा भाई कहां और किस तरह मारा गया है?"

अर्लके ऊपर लार्कीका जो कुछ सन्देह हुआ था, वह सब उनका रङ्ग-ढङ्ग देखते ही दूर हो गया। उसने उदास मनसे जवाब दिया,—"हुजूर! वे बड़ी बुरी तरह मारे गये हैं, खून किया गया है।"

अर्ल,—"खून किया गया है! यह क्या कहते हो?"

लार्की,—"जो कहता हूं, वह सच ही है। कल सात आठ बजे वेलेण्डनकी मारग्वियोनेसके सामने लार्ड रेमण्डकी लाश माल्डेन पुलके पायेकी नीवके नीचेसे निकाली गई है। मैंने अपनी आंखों यह दुःख-दृश्य देखा है।"

अर्ल,—"शोक दुःखसे या तो मेरा सिर खराब हो गया है और नहीं तो तुम ही पागल हो गये हो। वेलेण्डनकी मारग्वियोनेसके सामने मेरे भाईकी लाश पुलके पायेके नीचेसे ——"

लार्की,—"हुजूर! बात एकदम सच ही है। पत्थरके नीचे से जब छोटे बबुआकी लाश निकाली गई, तो——हाय! मैं वहां क्यों गया था, यही सोचता हूं, क्योंकि उस दृश्यको मैं जिन्दगी भर न भूल सकूंगा।"

अर्ल,—"अच्छा, मारग्वियोनेसकी जो बात कहते हो तो, वे उस समय वहां क्या करने गई थीं?"

लार्की,—"पुलकी प्रतिष्ठाके उपलक्षमें उसकी नीवमें कुछ रुपया वगैरा रखने गई थीं। पायेके ऊपरका पत्थर उठाते ही बड़ी गन्ध आई, तो सबने समझा, कि उसमें कोई चीज गिरकर सड़ गई है। जब वह निकाली गई, तो आपके भाईकी लाश ठहरी।"

यह सुन अर्लने एक लम्बी सांस लेकर कहा,—"हाय भगवान्! माकी क्या दशा होगी! वे तो यह बात सुनते ही प्राण दे देंगी! अच्छा, तो फिर मारग्वियोनेसने क्या किया?"

क्लर्क,—"अहा। वे बहुत ही अच्छी—धर्मशीला स्त्री हैं। सब मण्टगुमरियोंके उनके विपक्षी होनेपर भी और लोगोंकी तरह उन्होंने उनके लिये बहुत दुःख प्रकाश किया।"

अर्ल,—"तो यथार्थ ही वे बहुत दुःखित हुई थीं?"

क्लर्क,—"हां, बहुत ही।"

अर्ल,—"हां, मैं भी समझता हूं, कि दृश्य बहुत ही भयानक होगा। हाय। अभी उसकी उम्र ही क्या थी। अच्छा, क्या इसका कोई कारण नहीं मालूम हो सकता? क्या किसीके ऊपर सन्देह नहीं हुआ? अच्छा, जो लोग वहां उपस्थित थे, उनकी धारणा कैसी हुई?"

क्लर्क,—"हुजूर। कोई कुछ ठीक न कर सका। और मैं उसके बाद ही चटपट चला आया, इसीसे विशेष कुछ मालूम भी न कर सका, पर सब आदमी कहते थे, कि जिस दिन सवेरे वह पत्थर पायेके मुंहपर गिरा था, उसी दिन और उसी समय न मालूम कहांसे एक गाड़ी पुलके पास आई थी——"

क्लर्ककी बात अभी पूरी भी न होने पाई थी, कि इसी समय एक नौकरने लार्ड फ्लोरिमेलके आनेकी खबर दी। साथ ही सामनेकी घड़ीमें आठ बजा देख उन्होंने कहा,—"लार्ड फ्लोरिमेल आज इतने सवेरे आये हैं। इस समय तो मैं आपही दुःखसे कातर हो रहा हूं, बिना किसी विशेष कामके मैं इस वक्त किसीसे मिल नहीं सकता।"

नौकर,—"हुजूर। वे कहते हैं, कि कोई बहुत जरूरी काम है और अधिक देर तक ठहरेंगे भी नहीं।"

"तब जाता हूं" इतना कहकर वे उस कमरेमें चले गये, जिसमें लार्ड फ्लोरिमेल बैठे हुए थे।

अर्ल मण्टगुमरी यद्यपि इस समय अनेक प्रकारकी चिन्तामें

घूर थे, तो भी लार्ड फ्लोरिमेलका चिन्तित मुख देखते ही उन्होंने उनको पकड़कर पूछा,—"फ्लोरिमेल। माजरा क्या है? इतने सवेरे कैसे आये? खबर अच्छी तो है?"

फ्लोरिमेल,—"स्थिर हो, सब कहता हूं। राव नामक जो काला छोकरा मेरे यहां नौकर था, उसकी बात शायद तुम्हें याद होगी। वह और कोई नहीं, वही कपटवेशधारिणी कैरोलाइन थी, जो मिसेस ब्रे सके यहां रहती थी ——"

अर्ल,—"हां हां, वही न, जिससे तुमसे प्रीति हो गई थी? तो क्या वह खूनी कैरोलाइन ही राव थी?"

फ्लोरिमेल,—"इउजिनी। वह बिल्कुल निर्दोष है। लार्ड मार्च-मौण्टके लड़के अर्थर इटनका मुकद्दमा जब शुरू होगा, तो कितनी ही अद्भुत बातें जाहिर हो जायंगी। जो हो, जेलमें मिसेस ब्रे सने कैरो-लाइनको विशेषरूपसे घायल कर दिया है।"

अर्ल,—(चौंककर) "सच! तो मिसेस ब्रे स फिर एक गुरुतर अपराध कर बैठी है? इसबार वह नहीं बच सकती। आह! एक दिन उसके साथ मेरी कितनी घनिष्ठता थी।"

फ्लोरिमेल,—"उसकी लीला समाप्त हो गई है, इउजिनी। कल रातमें उसने आप ही गलेमें रस्सा बांधकर आत्मघात कर डाला है—"

यह सुन अर्ल मण्टगुमरीका मन चञ्चल हो उठा। उन्होंने सोचा, कि देखूं मेरे नसीबमें क्या बदा है। आखिर उन्होंने कहा, —"फांसी पड़नेकी बनिस्बत इस तरहका मरना कहीं अच्छा है। अच्छा, फैनीके मरनेकी खबर कब मिली?"

फ्लोरिमेल,—"कल शामको वक्त खबर पाकर मैं न्यूगेट जेलमें कैरोलाइन वाल्टर्सको देखने गया। वहां उसके मुंहसे उसकी सब बातें सुनीं और उसको क्षमा भी पाई। आते समय डाक्टरसे कहता , कि कल सवेरे फिर देखने आऊंगा। रात भर पलक भी न

लगी, ज्यों त्यों कर रात काटी। सवेरा होते ही फिर देखने गया, कि कैरोलाइन अभी जीवित है, या नहीं। जाकर देखा तो, उसे जीवित और शीघ्र श्वासमें पाया, पर बचनेकी कोई आशा न थी। उसे देखकर लौटा आ रहा था, कि सुननेमें आया, मिसेस ब्रेस गलेमें फांसी लगाकर मर गई है। दरियाफ्त करनेपर मालूम हुआ, कि बात ठीक ही है।"

अर्ल,—(दुःखित स्वरसे) "हाय! पालमालकी प्रसिद्ध कपड़ेवाली मिसेस ब्रेसकी अन्तमें यह दशा हुई! प्रिन्सकी प्रणयिनी—कितने ही अमीर उमरावोंकी संगिनी———"

फ़ोरिमेल,—"इउजिनी! वह तो अब है ही नहीं, फिर उसकी दुर्बलताकी बातोंका उल्लेखकर चित्त क्यों दुःखित करते हो? विचारकर देखो, यदि तुम्हारे और मेरे ऐसे विलासी आदमी न रहते, तो मिसेस ब्रेसकी जरूरत ही न होती। फिर उन सब बातोंका अब प्रयोजन ही क्या है? हम दोनों आदमी लङ्गोटिया यार हैं, इसीसे मन खराब होजानेके कारण तुम्हारे पास चला आया हूं। और भी एक बात है, कैरोलाइनसे जो और एक घटनाकी खबर मिली है, उसे भी तुमसे कहना चाहता हूं।"

यह सुन मण्टगुमरीने सोचा, कि अब और कैसी खबर है। फिर उन्होंने पूछा,—"क्या उस घटनाके साथ मेरा कोई सम्बन्ध है?"

फ़ोरिमेल,—"ठीक तो नहीं कह सकता, और हो भी सकता है। जो हो, अभी मैं तुमसे सब खोलकर कहे देता हूं। देखो, उस मसकरेडके जलसेकी सब बात मुझे मालूम हो गई है।"

अर्ल,—"ओह! तब तो उस मायाविनीकी बात भी सुनो होगी। खैर जो हो, भाई! उस रातमें 'मैं जो तुम्हारे वेशमें वहां गया था, शायद उसका तुम कुछ ख़याल न करोगे।"

फ़ोरिमिल,—"तुम चाहे जो कहो, पर तुम्हारा वह खास चन्द्रा

नहीं हुआ। खैर जो हो, हम लोगोंकी बहुत पुरानी दोस्ती है, यह तुम्हारे एक सामान्य दोषसे छूट नहीं सकती; इसलिये ख्याल करने न करनेकी बात छेड़ना फजूल है। अब जो असल बात पूछता हूं, उसका जवाब दो। यह मायाविनी कौन है, सो कुछ जानते हो?———"

अर्ल—"नहीं, कुछ भी नहीं, पर उस बातके जाननेके लिये मैं अपना यथासर्वस्व परित्याग कर सकता हूं। भाई फ्लोरिमिल! अगर तुमने कुछ सुना हो————"

फ्लोरिमिल,—"थोड़ा सब्र करो, घबराओ मत। अच्छा, उसके मायाजालमें पड़कर तुमने ऐसी कोई बात उससे कह दी है, जिसका शत्रुके कानमें पड़ना अच्छा नहीं है,———"

"शत्रु! तो क्या वह मायाविनी—" इतना कहकर मण्टगुमरीने फ्लोरिमिलके कानमें एक नाम कह दिया।

"बस वही है—" फ्लोरिमिलके इतना कहते ही मण्टगुमरी कांपकर कुरसीसे गिर पड़े। मित्रकी ऐसी अवस्था देख फ्लोरिमिलने ताज्जुबके साथ पूछा,—"क्यों, क्या हुआ? ऐसे क्यों हो गये?"

अर्ल,—"नहीं नहीं, कुछ भी नहीं, अचानक शरीर न जाने कैसा तो हो गया।"

फ्लोरिमिल,—"नहीं भाई! यह तो कोई अचानककी बीमारी नहीं है। तुम कैसे तो डर गये हो? भाई! अगर तुमने अपनेको उसके हाथमें डाल दिया है, तो यह एकदम पागलपनका काम किया है।"

अर्ल,—"सो तो हो गया है, गेब्रोल! पर उसकी भी कोई गुप्त बात मैं जानता हूं, वह भी मेरे हाथमें है—"

फ्लोरिमिल,—"ऐसा होनेपर भी समझ-बूझकर उससे झगड़ा

करना। नाना कारणोंसे मुझे अच्छी तरह मालूम हो गया है, कि छल चातुरी, माया जाल और धोखेबाजीमें वह बड़ी निपुण है। घटना-क्रमसे मैं बच गया हूं, नहीं तो उसने तो मुझे ऐसे फन्देमें फँसाया था, कि उस बातके याद होनेसे अभी भी मेरा कलेजा कांप उठता है। वह कालीनागिन है। पहले मोह लेती है, फिर जकड़कर बांध लेती है। अगर मैं सब खोलकर कह सकता, तो तुम अच्छी तरह समझ जाते, पर इस समय मेरा मन भी ठीक नहीं है और न समय ही है——"

अर्ल,—"वही ऐसा काम करती है, यदि इसका कोई प्रमाण मिलता——"

फ्लोरिमेल,—"प्रमाण चाहते हो? अच्छा, यदि प्रमाण मिल जाय, तो क्या करोगे?"

अर्ल,—"तो उसके मायाजालमें पड़ और उन्मत्त होकर मैंने जो बात उससे कह दी है, उसके प्रकाश न करनेका कोई उपाय कर लेता।"

अब पाकेटसे कपड़ेके दो टुकड़े निकाल और मण्टगुमरीके हाथमें रखकर फ्लोरिमेलने कहा,—"तो यह लो प्रमाण। जिस अन्धकारमय कमरेमें वह स्वेच्छाचारिणी आमोद प्रमोद करती है, उसी कमरेके पर्दे और मसहरीसे कैरोलाइन इन दोनों टुकड़ोंको काट लाई थी। मुझे ये दोनों टुकड़े कैरोलाइनसे ही मिले हैं।"

इन टुकड़ोंको पाकर मण्टगुमरी मारे खुशीके उछल पड़े और बोले,—"फ्लोरिमेल! तुमने इस वक्त सच्चे दोस्तका काम किया है। इसके लिये तुम्हें हजार हजार धन्यवाद है। इससे अधिक और मैं कर ही क्या सकता हूं।"

फ्लोरिमेल,—"तुमने उस औरतमें क्या क्या रङ्ग ढङ्ग देखा है, वह मैं

नहीं जानना चाहता। कैरोलाइनसे मुझे मालूम हुआ है, कि मसकरेडके दिन तुम उसके घर गये थे, इसीसे मैंने सोचा, कि जब तुम्हारा उसका झगड़ा चल रहा है, तब वह धूर्त्ता तुम्हारे पेटकी बात निकाल लेनेसे कभी बाज न आई होगी। भली बुरी बात तो सभीके संग लगी है———"

अर्ल,—"ठीक कहते हो।"

फ्लोरिमेल,—"मैं उसे अच्छी तरह पहचानता हूं, इसीसे मैंने समझ लिया, कि जब उसने तुम्हें अपने फन्देमें फँसा लिया था, तब बिना कुछ मतलब निकाले कभी न छोड़ा होगा, इसीसे मैंने विचारा, कि अब भी तुम्हें सावधान कर देनेसे तुम्हारा बहुत काम निकल सकता है। इसके अलावा आज तुम लोगोंका एक विशेष दिन है, इसीसे आज मैं इतने सबेरे तुमसे मिलने आया हूं।"

अर्ल,—(साग्रह मित्रका हाथ पकड़कर) "भाई! आज तुमने मेरा बहुत उपकार किया है। आजका दिन मेरे लिये बड़ा खराब है। आज ही मुझे खबर मिली है, कि मेरा भाई रैमण्ड इस संसारसे उठ गया है। किसीने उसे मार डाला है———"

फ्लोरिमेल,—(चौंककर) "ऐं! किसीने मार डाला है!"

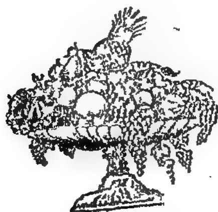
अर्ल,—"हां, मार डाला है। इस वक्त तुमसे पूरा हाल कहनेका समय नहीं है, विशेष करके अभी माके कानमें यह बात नहीं पड़ी। वे तो सुनते ही अनर्थ मचा देंगी।"

फ्लोरिमेल,—"यह तो बड़े दु:खकी बात है। जो हो, जल्द ही जाकर मासे कह दो, नहीं तो यदि हठात् कोई उनसे कह देगा, तो बड़ी आफत होगी, उनके प्राणपर आ बनेगी।"

इस समय मित्रको विरक्त न करनेकी इच्छासे सिर्फ यह कह-कर, कि—"इउजिनी! मैं सब समझता हूं।" फ्लोरिमेल उनसे विदा हो चले गये।

लार्ड फ्लोरिमेलके चले जानेपर मण्टगुमरीने माताके समीप जाकर धीरे धीरे सब बातें कहदीं। सुनते ही वे पुत्रके वियोगमें एकदम व्याकुल हो उठीं। उनके शोकको सीमा न रही। कभी वे छाती पीटतीं, कभी सिरके बाल नोचतीं और कभी प्रलाप बकती थीं। आखिर इसी तरह बकती भकती बेहोश होगईं।

माता जबतक रोती पीटती रहीं, तबतक उनके मनका हाल जाननेके लिये मण्टगुमरी बहुत व्यग्र रहे। अन्तमें जब उन्होंने देखा, कि उनके मनमें कोई सन्देह नहीं हुआ, यही विश्वास हुआ है, कि डाकुओंने ही उसे मार डाला है, तब उन्होंने डाक्टरको बुलवाया। फिर जब उन्होंने देखा, कि माता होशमें आगई हैं, तब उन्हें डाक्टर और नौकरोंको निगरानीमें छोड़कर वे गाड़ीपर सवार हुए और लार्ड तथा लेडी होल्डरनेसके यहां कवेण्डिश स्क्वायर की ओर चले गये।



एक सौ चार परिच्छेद।

मुकद्दमा।

प्राचीन समयमें हम लोगोंके पूर्वपितामह गणकी ज्ञान बुद्धि श्रेष्ठ थी। वे लोग प्रायः स्थावर जङ्गम सम्पत्तिके उत्तरा एवं भोग्याधिकारत्वके लिये नाना प्रकारके अद्भुत अद्भुत और व्यवस्था कर जाते थे। उस समय इङ्गलैण्डमें रोमन मतका ही प्राबल्य था। धनी लोग प्राय ऐसा नियम कर जाते थे, जो उनकी त्यक्त सम्पत्तिका अधिकारी होता, उसे याती प्राधान्य स्वीकार करके शपथ करनी होती, नहीं तो पूर्वाधिकारीने अथवा मन्दिरके उपकारार्थ जो भूमि वा धन वृत्तिस्वरूप दिया उसमें मठाधिकारी को ही कायम रखना होता, और नहीं तो धिकारीकी आत्माके मंगलार्थ किसी धर्म्म मन्दिरमें एक कालीन दान अथवा समय समयपर पाठ और उपासनाका खर्च देना था। उसके बाद जब प्रोटेष्टेण्ट मत क्रमसे प्रबल होने लगा, तब इस मतवालोंमेंसे कितनेही यह नियम कर जाने लगे, कि उनकी त्यक्त सम्पत्ति जिसको मिले, उसे पहले कैथोलिक मत त्याग करनेके लिये शपथ करनी पड़ेगी, फिर वह उसका उत्तराधिकारी हो सकेगा।

पूर्वकालमें लोग अपने धन सम्पत्तिका जैसा प्रबन्ध कर जाते थे

भी निःसन्तान थे। और न कोई उनका नजदीकी रिश्तेदार ही था। इसलिये उन्होंने मण्टगुमरी परिवारके एक लड़केको गोद लेकर महारानी एलीजाबेथसे उसकी मंजूरी ले ली। उसके बाद वृद्ध मारक्विसके परलोक सिधारने पर उनकी जमीन जायदाद और खिताब वगैरह सब युवा मण्टगुमरीको मिला। युवा उस समय तक अविवाहित थे, इसलिये एमर-परिवार-की एक सुन्दरी कन्यासे उन्होंने अपना विवाह कर लिया। यथा समय उससे एक पुत्र हुआ। उसके बाद फिर और कोई सन्तान न हुई। समय पाकर जब वह पुत्र युवा हुआ, तो उसे देशाटन करनेको इच्छा इतनी प्रबल हुई, कि वह किसी तरह घरमें न रह सका, और यूरोप सैर करनेके लिये निकल पड़ा। उसके बाद कितने ही दिन कितनेही वर्ष बीत गये, पर माता पिताको उसका कोई समाचार न मिला, तब उन लोगोंने समझ लिया, कि उनका वंशधर इस संसारसे उठ गया। अब वृद्ध मारक्विस बेचारे और क्या करें? लाचार उन्होंने अपनी जायदादका एक वील तय्यार किया। उनकी सम्पत्तिमें दोही प्रधान थे, एकतो वारविकसायर-ष्टेट और दूसरा प्रायरी-ष्टेट। वृद्ध मार-क्विस स्वयं मण्टगुमरी वंशके थे और उनकी स्त्री एमर वंशकी थी, इसलिये उस समय मण्टगुमरी घरानेमें जो अर्ल थे, उनके नामतो मारक्विसने प्रायरी ष्टेट और वारविकसायरका अधिकांश भाग उनके छोटे भाईके नाम लिख दिया और बाकी हिस्सा एमर परिवारको दे दिया। वारविकसायरष्टेटमें कैथोलिक सम्प्रदायका प्रतिष्ठित एक प्राचीन मठ था। उस मठपर मारक्विसकी तिलमात्र भी श्रद्धा न थी, क्योंकि वे कैथोलिकोंको विष-दृष्टिसे देखते थे, इसलिये उन्होंने अपनी वीलमें यह शर्त्त लिख दी, कि उनके पीछे वार-विकसायर-ष्टेट जिसे मिलेगा, उसे बालिग होनेके दिन या उससे पहलेही अर्थात् उसी दिन, जिस दिन वह बाईसवें वर्षमें पैर रक्खे-

अथवा उससे कुछ पहले इस शर्त्तका एक एकरारनामा लिख देना होगा, कि वह कभी पोप-प्रचारित मतको अवलम्बन न करेगा और इस ऐटमें जो मठ है, उसको मरम्मत वा फिरसे बनानेके लिये किसी तरहकी सहायता न करेगा और न उसके साथ सहानुभूति ही दिखा सकेगा। यदि उत्तराधिकारी किसी कारणसे निर्दिष्ट समयके बीचमें उपर्युक्त नियमानुसार कर्त्तव्य कर्मोंके सम्पादन करनेमें त्रुटि करे, तो उसके उत्तराधिकारत्वका स्वत्व नष्ट हो जायगा और उसके बाद फिर जो इस स्वत्वके सम्भोग करनेके अधिकारी होंगे, उन्हेंहो यह सब प्राप्त होगा।

आखिर वृद्ध मारक्विसको मृत्यु होगई और उसके कुछ दिन बाद ही उनका खोया हुआ लड़का घर लौट आया। सफर करता करता वह समुद्री डाकुओंके हाथमें पड़कर दासत्व कर रहा था, एक दिन सुयोग पाकर भाग निकला। घर आकर उसने पिताकी सारी सम्पत्तिपर अधिकार जमा लिया। उस समय चाहे पूर्व मारक्विसके वीलको बात न मालूम होनेके कारणसे हो वा सहृदयताके कारणसे हो, मण्टगुमरियोंने वेलेण्डन-ऐटके ऊपर कोई दावा न किया, इसलिये वेलेण्डन-परिवार सुखसे अतुल ऐश्वर्य्य भोग करने लगा। इस तरह बहुत दिन बीत गये। अन्तमें जब अठारहवीं शताब्दीके मध्य भागमें इङ्गलैण्डको प्रजा राजविद्रोही हो उठी, तो उसी समय वीलका पता पाकर एक चतुर वकीलने उसका जिक्र उस समयके अर्ल-मण्टगुमरीसे किया। तब अर्लने उस समयके वेलेण्डनके मारक्विसपर नालिश करने का इरादा किया। यह सुन मुकद्दमेसे बचनेके लिये मारक्विसने वेलेण्डन-ऐटका कुछ अंश अर्ल मण्ट-गुमरीको देकर लिखा-पढ़ी कर दी। इस दिब्बानामेके लिखे जानेके कुछ दिन बाद रोजगारमें घाटा लग आनेके कारण मण्टगुमरी-परिवार कर्जदार हो गया। तब हिब्बानामेके तसफियेसे उन लोगों

जो सम्पत्ति पाई थी, मारक्विसने उसे खरीद लेनेका प्रस्ताव किया। मण्टगुमरी परिवार राज़ी हो गया और मारक्विसने उचित मूल्य पर उस सम्पत्तिको खरीदकर पक्की लिखा-पढ़ी करली। उसके बाद प्राय: बीस वर्ष गुजर गये, इस बारेमें किसीने कुछ भी न कहा। हम अपनी इस कहानीके जिस समयकी बात कह रहे हैं, उससे प्राय: तीस वर्ष पहले वर्त्तमान. डबलिनी (मण्टगुमरी) के पिताने फिर तर्क उठाकर नालिश कर दी। उस समय कागज पत्र अच्छी तरह देखते देखते यह बात निकल आई, कि यदि मण्टगुमरीका दावा सिद्ध और प्रबल हो, तो मारक्विसमायर-ष्टेट रेमण्डके और मायरी-ष्टेट उनके बड़े भाईके हिस्सेमें पड़ेगा। उनकी देखादेखी एमर-परिवारने भी दावाकर दिया। पूर्वोक्त बोलकी शर्तोंपर भरोसा करके वे लोग भी खड़े हो गये।

अब पाठक समझ गये होंगे, कि कर्जके बोझसे दब मण्टगुमरियोंने रुपया लेकर जो हिब्बानामा लिख दिया था, वह कैसा प्रयोजनीय और गुरुतर था। इसी दलीलके ऊपर निर्भरकर मारक्वियोनेसकी ओरसे कहा गया, कि बोलके जरियेसे वेलेण्डन ष्टेटपर मण्टगुमरियोंका जो कुछ दावा था, वह इस हिब्बानामेके जरियेसे विनष्ट हो गया। उधर फरनण्डा एमरकी ओरसे यह तर्क किया गया, कि यदि सचमुच ही मण्टगुमरी और वेलेण्डन परिवारमें पहले कुछ तसफिया हुआ भी हो, तो उससे उसका स्वत्व नष्ट नहीं हो सकता, क्योंकि एमर वंश उस लिखापढ़ीमें शामिल न था, सच बात तो यह है, कि एमरवंशके लोगोंको अबतक यह भी मालूम न था, कि वेलेण्डन ष्टेटमें उनका कोई स्वत्व है, इसलिये उस लिखापढ़ीसे फरनण्डाका हक नहीं मारा जा सकता। अब मण्टगुमरियोंने कहा, कि यदि उन लोगोंका दावा न्याय सिद्ध हो, तो वेलेण्डन-सम्पत्ति, जो उन्हें मर्त्तं विशेषके अधीन दी गई थी, कि उस समय उसके पूर्वाधिकारीने यदि

इस ष्टेटके सम्बन्धमें वास्तवमें हो कोई लिखा-पढ़ी करदी हो, तो वह कभी ग्राह्य नहीं हो सकती। मण्टगुमरीयोंकी एक आपत्ति तो यह हुई, उसके बाद आज तीन महीने की बात है, इउजिनी मण्टगुमरीने और एक तर्क यह उठाया है, कि वर्त्तमान मारक्षियोनेसको मालूम हो वा न मालूम हो, पूर्वोक्त हिब्बानामा असली नहीं, जाली है।

जिस हिब्बानामेको लेकर इतना तर्क उठा था, वह १७८५ ई० में वर्त्तमान मारक्षियोनेसके ससुरके नाम लिखा गया था। इउजिनी मण्टगुमरी उसके जाली होनेका कारण यह दिखाते हैं, कि उपरोक्त मारक्विसको लाश जिस शवाधार में रखी हुई है, उसके ढकनेपर १७८३ ई० लिखा है और मृत्युके रजिस्टरमें भी यही सन दर्ज है। जब उपरोक्त मारक्विस १७८३ ई० में परलोक सिधारे, तब उनकी मृत्युके दो वर्ष बाद जो हिब्बानामा लिखा गया, उसमें उनका नाम कैसे आ सकता है?

चैन्सरीके माष्टर ने इस मुकद्दमेकी रिपोर्ट दाखिल करनेकी तारीख ३१ वीं मई स्थिर की थी, और ठीक उसी दिन रिपोर्ट दाखिल करदी गई। इस बारेमें मिष्टर रिगडेनने जो कहा था, वही हुआ। रिपोर्ट रिगडेनके मुअक्किलोंके अनुकूल ही हुई। पूर्व वर्णित लिखा-पढ़ी और तसफियेसे एमर-परिवारका कोई संसर्ग न रहनेके कारण माष्टरने फरनण्डाके उठाये हुए तर्कको ग्रहण कर लिया, सुतरां यह बात स्थिर हो गई, कि हिब्बानामा असली हो वा जाली, फरनण्डाका दावा किसी तरह नष्ट नहीं हो सकता। उसके बाद मण्टगुमरियोंके बारेमें माष्टरने यह स्थिर किया, कि पूर्वोक्त हिब्बानामा यदि असली है, तो मण्टगुमरियोंका दावा नहीं चल सकता, पर उनकी समझमें इस हिब्बानामाके जाली होनेका काफी सबूत दिखाया गया है, इसलिये मण्टगुमरियोंके दावेको ठीक मानना पड़ेगा। तब उनमें लार्ड रेमण्डके हाजिर न रहनेसे और पूर्वाधिकारीके बोनको शर्त्तोंके मुताबिक यथा

समय हाजिर होकर कार्य्यविशेष न करनेसे वारविकसायर-ष्टेटमें उनका जो कुछ स्वत्व होता, वह अब नष्ट हो गया। कुल प्रायरी-ष्टेटतो मण्ट्ग्रुमरीको मिलेहीगा, उसके अलावा उक्त वारविक-सायर-ष्टेटका एक अंश उक्त अर्लको मिलेगा और दो भाग लेडी होल्डरनेस अर्थात् फरनण्डा एमर पावेगी।

चैन्सरीके माष्टरको दाखिल की हुई रिपोर्टका मर्म्म ऊपर कहा गया। उसे देखकर वकील वारिष्टर कहने लगे, कि यद्यपि यह रिपोर्ट अन्तिम नहीं है, तथापि इसमें कुछभी सन्देह नहीं, कि लार्ड चैन्सेलर इस रिपोर्टके मन्तव्यानुसार ही अपनी राय देंगे, इसलिये मारग्रियोनेसकी हार और अर्ल तथा फरनण्डाकी जीत अनिवार्य्य है।

एकसौ पांच परिच्छेद।

प्रथम परीक्षा।

जिस दिन पूर्वोक्त रिपोर्ट प्रकाशित हुई, उसी दिन तीसरे पहर चार बजेके बाद और पांच बजेके पहले इउजिनी मण्ट्ग्रुमरी लेडी होल्डरनेसके साथ वेलिंग्टन-प्रायरीके दरवाजेपर गाड़ीसे उतरे। उन लोगोंको लेजाकर बैठकखानेमें बैठा देनेके बाद दरवानने कहा, कि मारग्रियोनिस अभी दोचार मिनटमें आती हैं।

दरवानके चले जानेपर संगिनीको सम्बोधनकर अर्लने धीरेसे कहा,—"न मालूम लोरा क्या करे।"

फरनण्डा,—"यहां आनेकी चिट्ठी पानेके बादसे तुम हजार बार यही बात कह चुके हो, पर तौभी तुम्हारा 'न मालूम' न छूटा, मतलब तो कुछ समझाही नहीं।"

अर्ल,—"अच्छा, यहीं हम लोगोंको किसी तरहके फन्देमें तो न फंसा देगी?"

फरनण्डा,—"क्यों ? अगर ऐसा ही होता, तो यहां बुलाती ही क्यों ? एकदम हम लोगोंके यहां पुलिस ही न भेज देती।"

अर्ल,—(चुपचाप सङ्गिनीकी ओर देखकर) "फरनण्डा! तुम्हारे लिये सुख दुःख सब समान है। डर क्या चीज है, यह तो तुम जानती ही नहीं। तुम अमेजन (सुन्दरी) दलकी जनरल होने योग्य हो।"

फरनण्डा,—"मैं स्त्री होकर विपदसे नहीं डरती। तुम पुरुष होकर इतना क्यों डर रहे हो ? लो, तुम तो कांपने लगे। तुम्हारा रंग-ढंग देखकर ही लोग सब समझ जायगे। डरकी कौन बात है ? जरा हिम्मत बांधो। मुकद्दमा तो हमलोग जीतही चुके हैं। लौरा अब जरूरही सुलहनामेका प्रस्ताव करेगी। उसका बहुत कुछ अन्दाज तो चिट्ठीसे ही मालम हो गया है। (हँसकर) शायद वह तुम्हें फिर उसी केलि भवनमें ले जाय ?"

अर्ल,—"अच्छा बताओ तो सही, सवेरे जब मैंने तुमसे वह सब बातें कही थीं, तो क्या तुम्हें ताज्जुब नहीं हुआ था ?"

फरनण्डा,—"कैसे कहूं, कि नहीं हुआ था। पर अपनी स्त्री-जातिपर पहले मेरा जो विश्वास था, वह अब न रहा—"

अर्ल,—(दुलारसे फरनण्डाके गालमें एक चपत लगाकर) "अपनी सांठ गांठ नहीं है न ? अच्छा, लार्ड डिसबोरोकी मृत्युसे तो तुम्हारे दिलमें बहुत चोट लगी होगी ? मातमी कपड़े क्यों नहीं पहने ?"

फरनण्डा,—"मुझे शोक करनेका समय ही कहां है इउजिनी ! कल रातमें ही तो मामाके मरनेकी खबर मालूम हुई है, और उस समय मैं मुकद्दमेमें ही व्यस्त थी, मातमी पोशाकके लिये हुक्म देनेका समयही कहां मिला ?"

अर्ल,—"तुम्हारे स्वामी तो बहुत उदास और चिन्तित दिखाई दिये। सवेरे जब मैंने तुमसे निरालेमें भेंट करनी चाही

और फिर जब हम लोग एक साथ गाडीमें सवार होकर आने लगे, तो तुम्हारे स्वामी मानो बहुत दुःखी हो उठे थे—"

फरनण्डा,—"वे चाहते हैं, कि मैं उनसे सब बातें कह दिया करूं, कुछभी छिपा न रखूं।"

अलं,—"और वे कुछ सन्दिग्ध-मना भी मालूम होते थे।"

फरनण्डा,—(मुँह बनाकर) "ऊँः, उनके सन्देहको मैं परवाह भी नहीं करती। मेरे विचारनेके लिये अनेक बडे बडे विषय है, उन सबको छोडकर क्या मै इन समान्य बातोंका कभी खयाल कर सकती हूं?"

अलं,—"अच्छा, तुम्हारे दिलमें इतना साहस कैसे हुआ?"

फरनण्डा,—"कुछ तो स्वाभाविक है और कुछ इसलिये हुआ, कि मैं मौतसे नहीं डरती। चाहे जैसे हो, एक दिन तो मरना ही होगा। अगर जरूरत आ पडे, तो मैं जानबूझकर जान दे सकती हूं।"

अलं,—"यह क्या कहती हो?"

फरनण्डा,—"कहती यही हूं, कि लोगोंको निन्दासे बचनेके लिये मैं सब कुछ कर सकती हूं। (चोलोके भीतरसे एक छोटोसी शीशी निकालकर) देखो, इसका मतलब समझती हो न?"

अलं,—"खूब समझता हूं। (कुछ सोचकर) तुम्हारी ही नाईं मुझे भी अपनेको तुच्छ समझ रखना चाहिये।"

फरनण्डा,—"देखो, मैंने बहुत अपराध किया है, पर मैं नहीं जानती, कि मेरे मुकाबिले तुम्हारा अपराध कितना है? ऐसी हालतमें मैं कैसे जान सकती हूं, कि तुम्हें भी मेरी ही तरह गिरफ्तार होनेकी आशङ्का सता रही है।"

अलं,—"तो क्या तुम यह कहना चाहती हो, कि उसके सिवाय तुमने और भी कुछ किया है?"

फरनण्डा,—"वही जो हमदोनो आदमियोंने मिलकर किया और कराया है, मारग्रियोनेस इस वक्त उसीका जिक्र करेंगी। अच्छा, कबतक उनकी राह देखनी होगी ?"

इसी समय पैरकी आहट पाकर मण्टगुमरीने कहा,—"चुप, चुप, शायद लोरा आरही है।"

अभी अर्लकी बात खतम भी न हुई थी, कि दरवाजा खुल गया, और मारग्रियोनेस अपनी मातमी पोशाक पहने कमरेमें आ दाखिल हुई। उनका प्रशान्त मुखमण्डल और गौरवमय प्रसन्नभाव उस समय भी वैसाही बना हुआ था। धीरे धीरे आगे बढ़कर उन्होंने लेडी थोलडरनेस और अर्ल मण्टगुमरीको अभिवादन किया, फिर सोफा पर बैठकर फरनण्डाको अपनी बगलमें बैठा लिया और अर्ल मण्टगुमरीको पासहीकी एक कुरसीपर बैठनेका इशारा किया।

बैठनेके समय अर्ल कौतुकके साथ तीव्र दृष्टिसे मारग्रियोनेसकी उस स्वर्गीय प्रशान्त मुखश्रीको देखकर मन ही मन सोचने लगे,—"कैसा आश्चर्य है, ऐसी पवित्र सौम्यमूर्त्तिके भीतर क्या वैसी दारुण कामासक्ति छिपी रह सकती है ?"

अर्ल रमणीकी ओर देखते हुए इसी तरहकी बात सोच रहे थे, कि दोनोंकी चार आँखें हो गईं। साथ ही अर्लको मालूम हुआ, मानो मारग्रियोनेसके गाल कुछ लाल हो गये और मन कुछ चञ्चल हो उठा, पर यह भाव पलक मारते ही दूर हो गया। अर्लने फिर उसकी ओर देखा, तो उसका मुख वैसा ही सौम्य और

लगी, पर उसके भावमें जरा भी परिवर्त्तन न मालूम हुआ। यह देख उनका सन्देह और भी बढ़ गया। "आजकी इस भेंट मुलाकातका नतीजा क्या होगा, सो वे कुछ भी स्थिर न कर सके। सभी मट्टीमें मिल जायंगे, या उन्हीं दोनों आदमियोंका नाश होगा और मारग्रियोका पक्ष प्रबल हो उठेगा अथवा आपसमें मुलहनामा हो जायगा, इसका उन्हें कुछ भी आभास न मिला।"

फरनण्डा और मण्टगुमरी इस तरह सोच ही रहे थे, कि उधर मारग्रियोनेसने काम शुरू कर दिया।

उन्होंने पहले मण्टगुमरी, फिर फरनण्डाको ओर देखकर कहा, —"मैंने चिट्ठी लिखकर जो तुम लोगोंको बुलाया है, उससे तुम लोगोंको बड़ा ताज्जुब हुआ होगा। आज सवेरे मुकद्दमेका जो रङ्ग-ढङ्ग देखनेमें आया है, उससे मैंने यही स्थिर किया है, कि बेफायदे और फजूल खर्चा न कर हम लोग आपस में ही निबटेरा कर लें, तो अच्छा है।"

फरनण्डा,—(विस्मित होकर) "निबटेरा कर लें!"

मण्टगुमरी,—"हम लोगोंकी जीत तो एक तरहसे हो गई है।"

मारग्रियोनेस,—(दृढ़ता सहित) "अभी तो मुकद्दमा खतम नहीं हुआ, अभी तो लार्ड चेम्बलरकी राय बाकी ही है।"

फरनण्डा,—"वह तो माष्टरकी रिपोर्टके मुताबिक ही होगी।"

मारग्रियोनेस,—"लेडी होण्डरनेस! अभी सब सबूत तो दाखिल नहीं किये गये। अभी तो बहुतसे सबूत बाकी हैं।"

मण्टगुमरी,—"अभी और सबूत हैं!"

मारग्रियोनेस,—"हां, बहुतसे हैं, और इनमें कुछ भी सन्देह नहीं, कि उनसे मुकद्दमा और भी खुलासा हो जायगा। इसीसे कहती हूं, कि हम लोग आपसहीमें विचारकर निबटेरा कर

लें, तो अच्छा है। पंञ्चलरोंसे फैसला होनेमें न मालूम और कितने दिन लगे, पर हम लोग अभी दो ही घण्टेमें सब तय कर लेंगी। बोलो तुमलोगोंकी क्या राय है?"

फरनण्डा,—"दिल्लगी करती हो क्या?"

मारश्नियोनेस,—"दिल्लगी! कामकी बातमें दिल्लगी कैसी? मैं जो कहती हूं, सच ही कहती हूं। मैं तो सिर्फ इसलिये आपसमें झगड़ा मिटा लेनेका प्रस्ताव करती हूं, कि अभी तुम लोगोंकी कितनी बुराई हो सकती है, यह बात तुमको मालूम नहीं है। मैं जिन प्रमाणोंकी बात कहती हूं, उन्हें उपस्थित करना ही होगा, इसीलिये कहती हूं, कि उनका यहां उपस्थित करना अच्छा है, या खुली अदालतमें, इस बातका विचार तुमलोग आपसमें ही कर लो।"

लेडी वेलेण्डनकी प्रशान्त मूर्त्ति और धीर गम्भीर व्यवहार देख कर फरनण्डा जल उठी, पर बड़े कष्टसे उस भावको छिपाकर उसने अर्ल मण्टगुमरीके कानमें धीरेसे कहा,—"अच्छा, इसके साथ जरा मजाक ही किया जाय, आओ हम लोग जज होकर ही बैठें।"

मण्टगुमरी,—(मारश्नियोनेससे) "अच्छा, तो तुम्हारी ही बात सही; आओ हम लोग जज होकर आपसमेंही विचार करें।"

यह सुन मारश्नियोनेसने सोफाके नीचेसे एक चांदीकी घण्टी निकालकर जोरसे बजा दी। साथ ही बैठकखानेका दरवाजा खुल गया और एक बुड्ढा अन्दर घुस आया।

इस आकस्मिक घटनाको देख मण्टगुमरी एकाएक बोल उठे,—"औष्टिन!"

"आह! तब तो तुम इसे पहचानते हो!" इतना कहनेके बाद बुड्ढेको सम्बोधन कर मारश्नियोनेसने कहा,—"तो क्या तुम भी इन दोनों आदमियोंको पहचानते हो?"

औष्टिन,—"जब आपका रुपया खाया है, तब साफ कहना ही

अच्छा है। मैं इन दोनों आदमियोंको पहचानता हूं। ये अर्ल मण्टगुमरी हैं और ये फरनण्डा एमर उर्फ लेडी होल्डरनेस हैं।"

मारश्रियोनेस,—"अच्छा, अब इन लोगोंके बारेमें और जो कुछ जानते हो, बयान कर जाओ।"

औष्टिन,—"चार महीनेसे कुछ ऊपर हुआ, एक दिन वेलेण्डन-गांवके पास मेरे मकानपर आकर अर्ल महाशयने मुझसे कहा, कि अगर मैं उनका कोई काम कर दूं, तो वे मुझे खुश कर देंगे। जब मैं उनकी बातपर राजी हो गया, तब उन्होंने मुझसे बरमिंघम जाकर कुछ चीज वस्तु लेआनेको कहा।"

मारश्रियोनेस,—"कौन कौन चीज?"

औष्टिन,—"ऐसी कुछ चाभियां, जिनसे गिर्जेका दरवाजा और लोहेका सन्दूक वगैरह खुल सकें, कब्र खोदकर लाश निकालनेके कुछ औजार, थोड़ी सी सिमेण्ट और कुछ विशेष बातें खुदी हुई एक तख्ती। उसके बाद मैं बरमिंघम गया और वहां अपने दोस्तोंकी मददसे इन सब चीजों को खरीदा। फिर शायद तीन हफ्तेके बाद अर्ल महाशयने मेरे पास पत्र लिखा, कि फलां दिन वे मिस एमर और दो आदमियोंके साथ मेरे यहां आवेंगे। मैं घोड़ेका दाना, चारा ठीक कर रखूं।"

मारश्रियोनेस,—"तो ये लोग ठीक समयपर तुम्हारे यहां पहुंच गये?"

औष्टिन,—जी हां, एक गाड़ीपर सब लोग आये थे। अर्ल और मिस एमरके मुंहपर बुर्का पड़ा हुआ था। और उनके साथ जो दो आदमी थे, उन जैसे भयानक चेहरेके आदमी तो मैंने कभी अपनी उम्र भरमें नहीं देखे। इसके बाद मिस एमर उसी गाड़ीमें बैठकर कांगालिटन चली गईं। गाड़ी तो रातको लौट आई, पर मिस नहीं आईं—"

मारग्रियोनेस,—"अच्छा, फिर रातमें क्या हुआ ?"

औष्टिन,—"अर्ल महाशय उन दोनो आदमियोंके साथ चाभी, सिमेण्ट और ओजारोंको लेकर गिर्जेमें गये—"

मारग्रियोनेस,—"और वह तख्ती क्या हुई ?"

औष्टिन,—"उसे भी साथ ही लेते गये।"

मारग्रियोनेस,—"अच्छा, उस तख्ती पर क्या खुदा हुआ था ?"

औष्टिन,—"उसपर १७४२ ई० में अन्तिम मारक्विसके पिताकी मृत्यु की बात लिखी थी।"

मारग्रियोनेस,—"अच्छा, तुम्हारा इजहार हो गया। अब तुम जाओ और दूसरे गवाहको भेजदो।"

जबतक ऊपर कहा हुआ इजहार होता रहा, तबतक अर्ल मण्टगुमरी कुरसीसे ढासना लगाये और दोनों हाथ छातीपर रखे छतकी ओर देखते रहे। फरनण्डा भी चुपचाप सोफा पर लेटी रही। उसका मुख देखनेसे मालूम हुआ, मानो ऊपर कहे हुए इजहारका उसपर कुछ भी असर नहीं पड़ा।

इजहार देकर औष्टिनके बाहर जाते ही एक बुड्ढी आ हाजिर हुई।

उसको ओर एकबार देख और "यह राड़ बुसमैन भी आ पहुंची—।" कहकर अर्ल फिर उसी तरह ओढ़क गये। मालूम होता था, मानो उस कमरेमें टंगे हुए भाड़को बड़े गौरसे देख रहे हैं।

मारग्रियोनेस,—"क्या तुम इन लोगोंको पहचानती और इनके बारेमें कुछ जानती हो ?"

बुड्ढी,—"मैं इन अर्ल मण्टगुमरी और लेडी होल्डरनेसको, जो पहले मिस फरनण्डा थीं, अच्छी तरह पहचानती हूं। प्रायः तीन महीनेकी बात है, एक दिन लेडी होल्डरनेस बहुत घबराई हुई कंगालिटनके पास मेरे मकानपर पहुंची और बोली, कि

अर्ल महाशय दो आदमियोंको लेकर चौबीस घण्टेके अन्दरही मेरे यहां आवेंगे, मैं उनको अभ्यर्थनाके लिये प्रस्तुत रहूं। इसके बाद इन्होंने मुझसे कंगालिटन जाकर दो ट्रंक और कारीगरोंके पहनने योग्य दो जोड़ कपड़े खरीदलानेका हुक्म दिया। अपने हुक्मके मुताबिक सब काम हुआ देख लेडी होल्डरनेस चली गईं। इसके बाद सुबह होतेही दो आदमियोंको साथ लिये अर्ल महाशय आ पहुंचे। उन दोनों आदमियोंको देखते ही मेरे तो होश उड़ गये। ऐसे खूंखार चेहरेके आदमी तो मैंने कभी देखे ही न थे। फिर हजा-मत बना और नहा धोकर जब उन लोगोंने कपड़े बदले, तो कुछ भले आदमियों जैसे दीखने लगे।"

मारगियोनेस,—"जब उन दोनों आदमियोंको लेकर अर्ल तुम्हारे पास गये थे, तो उस वक्त तुमसे कुछ भूल-चूक भी हो गई थी?"

बुढ़ो,—"जी हां, लेडी होल्डरनेसके बहुत कुछ मना करनेपर भी मैंने भूलसे अर्ल महाशयको 'लार्ड' कहकर सम्बोधन कर दिया था, इससे वे मुझपर बहुत नाराज हुए थे—"

मारगियोनेस,—"अच्छा, अब तुम जाओ, और दूसरे आदमीको भेज दो।"

अब फरनवड़ासे न रहा गया। वह खिझलाकर बोल उठी,—"यह लड़कोंका सा खेल कब तक होता रहेगा?"

मण्टगुमरी,—"फरनवड़ा! जरा [illegible] करो, [illegible] कर लेने दो। यह हमलोगोंकी परीक्षा भी [illegible] है। [illegible] भी परीक्षा होगी।"

यह सुन मारगियोनेस [illegible] बैठी और [illegible] की ओर दिखाकर फिर [illegible] और देखने लगी।

मारग्वियोनेस,—"अच्छा, फिर रातमें क्या हुआ ?"

औष्टिन,—"अर्ल महाशय उन दोनों आदमियोंके साथ चाभी, सिमेण्ट और औजारोंको लेकर गिर्जेमें गये—"

मारग्वियोनेस,—"और वह तख्ती क्या हुई ?"

औष्टिन,—"उसे भी साथ ही लेते गये।"

मारग्वियोनेस,—"अच्छा, उस तख्ती पर क्या खुदा हुआ था ?"

औष्टिन,—"उसपर १७४३ ई० में अन्तिम मारक्विसके पिताकी मृत्यु की बात लिखी थी।"

मारग्वियोनेस,—"अच्छा, तुम्हारा इजहार हो गया। अब तुम जाओ और दूसरे गवाहको भेजदो।"

जबतक ऊपर कहा हुआ इजहार होता रहा, तबतक अर्ल मण्टगुमरी कुरसीसे ढासना लगाये और दोनों हाथ छातीपर रखे छतकी ओर देखते रहे। फरनण्डा भी चुपचाप सोफा पर लेटी रही। उसका मुख देखनेसे मालूम हुआ, मानो ऊपर कहे हुए इजहारका उसपर कुछ भी असर नहीं पड़ा।

इजहार देकर औष्टिनके बाहर जाते ही एक बुड्ढी आ हाजिर हुई।

उसको ओर एकबार देख और "यह राड बुसमैन भी आ पहुंची—।" कहकर अर्ल फिर उसी तरह ओठक गये। मालूम होता था, मानो उस कमरेमें टंगे हुए झाड़को बड़े गौरसे देख रहे हैं।

मारग्वियोनेस,—"क्या तुम इन लोगोंको पहचानती और इनके बारेमें कुछ जानती हो ?"

बुड्ढी,—"मैं इन अर्ल मण्टगुमरी और लेडी होल्डरनेसको, जो पहले मिस फरनण्डा थी, अच्छी तरह पहचानती हूं। प्रायः तीन महीनेकी बात है, एक दिन लेडी होल्डरनेस बहुत घबराई हुई कंगासिंटनके पास मेरे मकानपर पहुंची और बोली, कि

मारशियोनेस,—"क़ब्र खोदनेका कोई प्रमाण दे सकती हो ?"

"वे लोग एक लाशकी उँगलीसे यह अँगूठी निकाल लाये थे।" इतना कहकर मेरीग्राइसने एक अँगूठी मारशियोनेसके हाथमें रखदी।

अँगूठी लेकर मारशियोनेस कहने लगी,—"इसमें तो वेलेण्डन-परिवारके मुकुटका ही चिन्ह है। इस औरतने आज सुबह आकर मुझसे कहा, कि यह ऐसी बहुतसी बातें जानती है, जिनसे मेरे मुकद्दमेका विशेष सम्बन्ध है। उन बातोंको बतानेके लिये इसने बहुत रुपया मांगा। मैंने इसे मुँहमांगा इनाम दिया और तुम-लोगोंके सामने इजहार देनेके लिये अब तक इसे रोक भी रखा। क्या तुम लोग इससे कुछ पूछना चाहते हो ?"

इसका कुछभी जवाब न देकर लार्ड मण्टगुमरी जिस तरह बैठे थे, उसी तरह बैठे रहे और फरनण्डानेभी कुछ न कहकर सिर्फ उदासीके साथ सिर हिला दिया। अब मेरीग्राइसको सम्बोधन कर मारशियोनेसने कहा, "बस, अब तुम जाओ।" अर्ल मण्टगुमरी अब-तक चुपचाप बैठे थे, पर अब न मालूम क्या सोचकर सहसा बोल उठे,—"देखिये, इसे तथा और और गवाहोंको अन्ततक ठहरनेके लिये कह दीजिये, कारण ? आप देखियेगा, कि अन्तमें इन लोगोंका मुँह बन्द करनेकी आवश्यकता आपहीको आ पड़ेगी, आपहीको फिर रुपया देकर इन लोगोंका मुँह बन्द करना पड़ेगा। इसलिये आपसे सुस्पष्टरूपमें कहे देता हूं, कि अगर सब बात जाहिर हो जायगी, तो ऐसा न समझियेगा, कि सिर्फ मेरी और फरनण्डाकी ही इज्जत-हुरमत और जानपर आ पड़ेगी, वर्ना आप भी अछूती न रहेंगी।"

मेरीग्राइस उस वक्ततक वहीं मौजूद थी। उसकी ओर मुखा-तिब होकर मारशियोनेसने कहा,—"जाओ, मिस्टर रावर्ट्सको भेज दो।"

इतनेमें एक बडी ही कुरूपा लाल लाल बालों वाली औरत कमरेमें घुस आई। यह तीसरी गवाह थी। मण्टगुमरी और फरनण्डाने इस औरतको पहले कभी नहीं देखा था, इसलिये इस अद्भुत मूर्त्तिको वे लोग बडे ताज्जुबके साथ देखने लगे।

मारग्रियोनेस,—तुम्हारा नाम क्या है?"

औरत,—"मेरा नाम मेरीप्राइस है। अर्ल मण्टगुमरी किसी विशेष कार्य्यके लिये जिन दो आदमियोंको लेगये थे, उनमें एक मेरा बाप था और दूसरेका नाम जोसेफवारेन है। वे दोनों आदमी इस समय निउगेट-जेलमें कैद हैं।"

मारग्रियोनेस,—"तुम जिस विशेष कामकी बात कहती हो, उसके बारेमें कुछ जानती भी हो?"

मेरी,—"हां, वह काम एक खूबसूरत नौजवान छोकरेको एक पुलके पायेकी नीवमें डाल देनेका था।"

मारग्रियोनेस,—"अच्छा, जिस वक्त वह छोकरा नीवमें डाला गया, उस वक्त उस जगह कोई औरत भी थी और उस छोकरेने किसीका नाम भी लिया था?"

मेरी,—"हां, फरनण्डाका नाम लिया था।"

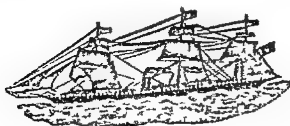
इतना सुनतेही क्रोधसे आगबबूला हो फरनण्डा एक बार मेरी-प्राइस (कैरोटी पोल) और फिर मारग्रियोनेसकी ओर टेढी नजरसे देखकर अपना ओठ काटने लगी।

मारग्रियोनेस.—"तुम्हारा बाप और जोसेफवारेन ये दोनों आदमी क्या सिर्फ उस छोकरेको मारनेके लिये ही गये थे?"

मेरी,—"जी नहीं। और भी कुछ काम था, रातके वक्त एक गिर्जेमें जाकर उन लोगोंने एक कब्रको खोदा था और एक रजिष्टरमें भी कुछ काट-छांट हुई थी, पर इस काममें सिर्फ अर्ल ही शामिल थे।"

लिप्त थीं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं है। लार्ड रेमण्ड तुम्हारे प्रेममें पागल हो उठे थे। तुमने जब उन्हें निराश कर दिया, तो उनका मन बहुत ही खराब हो गया, इसीसे वे निर्जन स्थानमें जाकर वास करने लगे थे। फिर अर्ल और तुमने मिलकर यह स्थिर किया, कि तुम लोगोंकी ओरसे मुकद्दमेका जैसा प्रबन्ध किया गया है, उससे तुम लोगोंके जीतनेमें कोई शक नहीं है, इसलिये तुम लोगोंने विचारा, कि अगर लार्ड रेमण्ड इस ससारसे उठ जाय, तो उनका हिस्सा भी तुम्हीं लोगोंको मिल जाय। यही सब सोच विचारकर तुम लोग गुण्डोंको वहां ले गये। लेडो होल्डरनेस। लार्ड रेमण्डको धोखा देना तुम्हारे लिये बहुत सहज था, क्योंकि वे तुमपर मरते थे। तुमने उनके पास लिखा, कि तुम्हारा मन पलट गया है और तुम उनसे विवाह करनेको प्रस्तुत हो। पर उनकी माकी यह विवाह पसन्द नहीं है, इसीसे शायद उन्होंने वहांके आदमियोंको उनके ऊपर निगाह रखनेके लिये लिखा भी है। इसलिये विवाह चुपचाप कर लेना होगा। इसके बाद तुम उन्हें फुसलाकर घरसे बुला लाई। उनके मनमें कोई सन्देह न हुआ, उन्होंने यही समझा, कि वेलेण्डन-गाँवमें विवाह करने जाते हैं।"

मण्टगुमरी,—"बस रहने दो, बहुत हुआ। समझता हूं, मैंने बेवकूफीसे जो कुछ तुमसे कह दिया है, उसीमें नमक मिर्च लगाकर तुमने एक खासा किस्सा तय्यार कर लिया है।"



यह सुन मण्टगुमरीने घृणाके साथ कहा,—"वही वेलेण्डन-गिर्जेका पादड़ी न ?"

अलंकी बात सुनीअनसुनी कर मारशियोनेस कहने लगीं,—"हां, लार्ड रेमण्डकी लाश माल्डेन-पुलके पायेको नींवके भीतरमें निकाली गई है, यह बात शायद तुमने सुनी है। मिष्टर रिगडेनका क्लार्क उस समय वहां मौजूद था और आज चेन्सरीके माष्टरके यहां उसका प्रमाण भी दियागया है।"

मारशियोनेसकी बात खतम होती न होती ही रावर्ट्स आ दाखिल हुआ। मण्टगुमरी और फरनण्डाको वहां बैठे देख, उसने सिर झुकाकर सलाम की, पर उसकी सलाम मञ्जूर न हुई। जो हो, रावर्ट्सने जो बयान किया, उसका मतलब यही है, कि वेलेण्डन-परिवारकी कब्र खोदनेके समय वह वहां हाजिर था, और एक शवाधारके ढकनेपरसे जो तख्ती उखाड़ली गई थी, वह उसीके पास रखी हुई थी। उस तख्तीको भी उसने दाखिल कर दिया। उसी वक्त औष्टिनको बुलाकर वह तख्ती शनाख्त करली गई। औष्टिनके चले जाने पर रावर्ट्सने कहा, कि वेलेण्डनके अन्तिम मारक्विसके पिताकी मृत्युके बारेमें रजिष्टरमें जो काट-छांट हुई है, उसमें कुछभी सन्देह नहीं है। कारण कि रजिष्टरमें जहां १७४५ ई०में मृत व्यक्तिका नाम दर्ज है, वहां १७४१ ई० की घटना कैसे आई ? अपना बयान खतम कर रावर्टसके चले जानेके बाद लार्ड मण्टगुमरीने कहा,—"क्यों, अब तो यह खेल खतम हुआ न ?"

मारशियोनस,—"खेल कहो, चाहे जो कहो, पर यह तो तुम्हें मानना ही पड़ेगा, कि यदि ये सब प्रमाण फौजदारी अदालतमें दाखिल किये जाय, तो लार्ड चेन्सलरको उन्हींपर निर्भर करके आखिरी फैसला करना पड़े। और सुनो,—लेडी होल्डरनेस! तुमसे कहती हूं, कि माल्डेन-पुलकी हत्यामें तुम विशेष रूपसे

स्वीकार करते हैं। अवश्य ही उसके लिये हम लोग स्पर्द्धा नहीं करते, वरन् समयपर अनुताप भी कर सकते हैं, पर जो कुछ हो गया है, वह तो अब लौट नहीं सकता।"

फरनण्डा,—(मुँह बनाकर) "अनुताप। मुझसे अनुतापसे क्या सरोकार। इउजिनी! तुम मेरी ओरसे और जो कुछ कहना चाहो कह सकते हो, पर यह बात मुझे पसन्द नहीं है।"

अब कुछ देर चुप रहनेके बाद मारग्रियोनेसको ओर तेज निगाहसे देखकर अर्ल मण्टगुमरी कहने लगे,—"मुझे जो कुछ कहना है, उसे मैं संक्षेपमें ही कहता हूं, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं, कि तुमने जो कौशल किया है, उससे तुम्हारी बेहद चालाकी जाहिर होती है। पर अभी कुछ ही पहले मैंने जो बात कही है, उसे सुन तुम बहुत डर गई हो। पाखण्डपनेमें खूब प्रवीण होनेपर भी अब तुम अपने मनका भाव छिपा नहीं सकतीं। यह देखो, फिर भी तुम्हारा चेहरा कैसा तो हो गया। इस समय तुम यह सोच रही हो, कि हम लोग तुम्हारे भयके पात्र हैं? मैं निरा पागल और अहमक हूं, इसीसे तुम्हारे मायाजालमें फँसकर उस घोर अन्धकारमय केलिकुञ्जमें मैंने तुमसे जो जो बातें कह दी थीं, उन्हींसे तुम्हें कफिनके ढकनेकी तख्तीके बदलने, रजिष्टरसे काट-छाँट होने और पुलके पायेकी नीवमें रैमण्डको लाशके रहनेकी बात मालूम हो गई थी। यह सब तुम्हें अच्छी तरह मालूम था, तो भी तुमने मारविकसायर जाकर लोगोंको दिखानेके लिये तहकीकात की, इससे भी तुम्हारी चालाकी झलकती है और तुम्हारी बुद्धिमानीकी प्रशंसा किये बिना नहीं रहा जाता।" यह सब सुन मारग्रियोनेसका चेहरा सुर्ख हो गया। आखिर उन्होंने कहा,—"इस तरह मेरा अपमान क्यों करते हैं? इसका क्या मानी है?"

मण्टगुमरी,—"मोरा! इसका मानी यही है कि तुम्हारी इस

एकसौ छः परिच्छेद।

द्वितीय परीक्षा।

अर्ल मण्टगुमरीकी बात सुनकर मारग्रियोनेस एकदम चौंक उठीं, मानो उनके शिरपर सहसा वज्रपात हुआ। भयसे वे एकदम दुःखित हो उठीं। उन्होंने जो इस समय सहसा अपनी बदनामीकी बात सुनी, वह उनके लिये अचिन्तनीय थी, तौ भी वह इस तरह सहसा प्रकाश हो जायगी, यह उन्हें कभी विश्वास न था, इसलिये अब वे असल भावको छिपा न सकीं, एकदम भयभीत हो उठीं।

मारग्रियोनेसका रङ्ग ढङ्ग देखकर मण्टगुमरीका हृदय अपार आनन्दसे उत्फुल्ल हो उठा। वे कहने लगे,—"तुमने अबतक जिस तरह हम लोगोंको जलाया है, अब उसी तरह तुमको भी जलना होगा।"

फरनण्डा,—"हम तीनों आदमी बैठकर अपने मुकद्दमेका आप ही विचार कर लें, इस अभिप्रायसे तुमने चिट्ठी लिखकर हम लोगोंको बुलाया है। और तुमने अबतक जो कुछ प्रमाण दिये हैं, उन्हें हम लोगोंने बिना आपत्तिके स्थिर होकर सुना है। अब हम लोग भी जो कुछ कहेंगे, उसे तुम्हें भी स्थिर होकर सुनना पड़ेगा।"

मारग्रियोनेस,—"अवश्य ही, इसमें मुझे कोई उज्र नहीं है। अच्छा, मेरे गवाहों द्वारा जो मुकद्दमा तुम लोगोंपर साबित हुआ है, उसे शायद अब तुम लोग इन्कार नहीं कर सकते।"

मण्टगुमरी,—"लेडी वेलेण्डन! अब झूठ कहनेको क्या जरूरत है। हम लोगोंने जो कुछ दुष्कर्म्म किया है, उसे सच्चे दिलसे

इसपर उस शयन-गृहके बगलका कमरा खोलकर मारग्रियो-नैसने कहा,—"मेरा कामिनी-कुञ्ज यह है।"

मण्टगुमरीने उस कमरेके अन्दर भी जाकर देखा, पर वहांकी मसहरी और खिड़कीके पर्देका कपड़ा फ़ोरिमेलके दिये हुए टुकड़ोंके साथ नहीं मिला। वे जिस केलि भवनमें गये थे, उस कमरेकी चीजें जिस तरह सजी हुई थीं, इस कमरेको वैसी न देख वे कुछ छः पांच करने लगे। अब वे यह सोचने लगे, कि इस केलि-भवनके पलँग और सोफाके बीचमें एक टेबिल रखा था, और टेबिलके पास ही एक आरामकुरसी पड़ी थी, पर इस कमरेमें तो वे सब चीजें नहीं हैं। यही सब सोचते सोचते उनके मनमें न मालूम क्या बात उठी, कि वे जाकर खिड़कीके पास खड़े हो गये। यह खिड़की मकानके दक्षिण ओर थी और वहांसे सारा नजरबाग साफ दिखाई देता था। उन्होंने देखा, कि फाटकसे बाग होकर काङ्कड़के दो रास्ते मकानकी ओर आये हैं, उनमें एक तो मकानके सदर दरवाजे तक चला आया है और दूसरा क्यारियोंके बीच होकर दक्षिणकी ओर चला गया है। कुछ देरतक उस स्थानको देखकर अर्ल मनही मन विचारने लगे,—"मेरी आंख पर पट्टी बांधकर जिस रातमें यह मुझे केलि-भवनमें ले आई थी, उस रातमें मैं निश्चय ही इस दक्षिणवाले रास्तेसे आया था। हां, ठीक ही है, जिस दरवाजेसे मुझे मकानके अन्दर ले आई थी, वह दरवाजा निश्चय ही इसी ओर है। इसमें कुछभी सन्देह नहीं, कि अभी जिस रास्तेसे मैं यहां आया हूं, उसी रास्तेसे जानेपर सीढ़ी मिल जायगी।" इस तरह सोचते सोचते खिड़कीके पाससे हट आकर मण्टगुमरी मारग्रियोनैसके मुँहकी ओर देखने लगे। उस समय मारग्रियोनैसका मन अत्यन्त व्याकुल हो रहा था। अर्लको अपनी ओर ताकते देख वह चौंक उठीं। वे मन ही मन जो बात सोच रहे थे, मारग्रियोनैस मानो उसे समझ गईं। जो हो,

सौम्य मूर्त्तिके अन्दर ज्वालामुखो पर्वत विशेष छिपा हुआ है, और प्राय: बीस वर्षसे जो तुम विधवाका वेश धारण किये घूमती फिरती हो, वह सिर्फ लोगोंकी आंखोंमें धूल डालकर अपनी सामान्य स्वेच्छा चारिताको ढकनेका वमोला है।"

यह सुन मारशियोनेस एकदम जल उठीं। उनकी प्रशान्त मूर्त्तिने ऐसा उन्नत भाव धारण किया, कि क्षण भरके लिये अर्ल-मण्टगुमरीका चित्त डावांडोल हो गया। अब मारशियोनेसने अहङ्कारके साथ कहा,—"तुम्हारी बात तो एकदम झूठ है ही, तिसपर तुम्हारी यह परायी निन्दा करनेकी आदत बिल्कुल ही घृणाके योग्य है।"

इसपर फरनण्डाने व्यङ्गके साथ कहा,—"इउजिनी! एकबार उसके केलिभवनको दिखा दो न। यद्यपि तुम एकदम अन्धकार में ही वहां गये थे, तो भी क्या उस जगहको पहचान न सकोगी?"

मारशियोनेस,—"इस बातको मैं कभी मान ही नहीं सकती, ऐसा कभी हो ही नहीं सकता, पर जब तुम लोग मुझे बदनाम करते हो, तो मैं उज्र भी नहीं कर सकती। आओ, मेरे साथ चलो।"

इतना कहकर मारशियोनेस बैठकखानेसे चल पड़ीं। फरनण्डा और मण्टगुमरी उनके पीछे पीछे चले।

कुछ दूर जा मारशियोनेसने एक कमरेका दरवाजा खोल दिया और चौकठपर खड़े होकर कहा,—"यही मेरा शयन-गृह है।"

"क्षमा करना, हम लोग बिना इसके अन्दर गये रह नहीं सकते।" इतना कह और उसके अन्दर जाकर मण्टगुमरीने चारों ओर नजर दौड़ाई, तो उन्हें मालूम हुआ, कि इस कमरेकी मसहरी और खिड़कीका पर्दा उन दो टुकड़ोंसे नहीं मिलता, जिन्हें, फ्लोरि-मेलने दिया है। इसपर मारशियोनेसकी ओर तीव्र दृष्टिसे देख कर अर्लने कहा,—"यह तो तुम्हारा कामिनी-कुञ्ज नहीं है।"

इसपर उस शयन-गृहके बगलका कमरा खोलकर मारग्रियो-नेसने कहा,—"मेरा कामिनी-कुञ्ज यह है।"

मण्टगुमरीने उस कमरेके अन्दर भी जाकर देखा, पर वहाकी मसहरी और खिड़कीके पर्देका कपड़ा फ़ौरिमैलको दिये हुए टुकड़ोंके साथ नहीं मिला। वे जिस केलि भवनमें गये थे, उस कमरेकी चीजें जिस तरह सजी हुई थीं, इस कमरेको वैसी न देख वे कुछ प' पाच करने लगे। अब वे यह सोचने लगे, कि इस केलि भवनके पलँग और सोफाके बीचमें एक टेबिल रखा था, और टेबिलके पास ही एक आरामकुरसी पड़ी थी, पर इस कमरेमें तो वे सब चीजें नहीं हैं। यही सब सोचते सोचते उनके मनमें न मालूम क्या बात उठी, कि वे जाकर खिड़कीके पास खड़े हो गये। यह खिड़की मकानके दक्षिण ओर थी और वहांसे सारा नजरबाग साफ दिखाई देता था। उन्होंने देखा, कि फाटकसे बाग होकर कङ्कड़की दो रास्ते मकानकी ओर आये हैं, उनमें एक तो मकानके सदर दरवाजे तक चला आया है और दूसरा क्यारियोंके बीच होकर दक्षिणकी ओर चला गया है। कुछ देरतक उस स्थानको देखकर अर्ल मनही मन विचारने लगे,—"मेरी आंख पर पट्टी बांधकर जिस रातमें यह मुझे केलि-भवनमें ले आई थी, उस रातमें मैं निश्चय ही इस दक्षिणवाले रास्तेसे आया था। हां, ठीक ही है, जिस दरवाजेसे मुझे मकानके अन्दर ले आई थी, वह दरवाजा निश्चय ही इसी ओर है। इसमें कुछभी सन्देह नहीं, कि अभी जिस रास्तेसे मैं यहां आया हूं, उसी रास्तेसे जानेपर सीढ़ी मिल जायगी।" इस तरह सोचते सोचते खिड़कीके पाससे हट आकर मण्टगुमरी मारग्रियोनेसके मुंहकी ओर देखने लगे। उस समय मारग्रियोनेसका मन अत्यन्त व्याकुल हो रहा था। अर्लको अपनी ओर ताकते देख वह चौंक उठीं। वे मन ही मन जो बात सोच रहे थे, मारग्रियोनेस मानो उसे समझ गई। जो हो,

पर तुरत ही मनको सम्हालकर उन्होंने कहा,—"क्यों, यहां कोई ऐसी चीज देखी, जिससे विश्वास हो, कि तुम पहले भी कभी यहां थे ?"

मण्टगुमरी,—"नहीं।"

इसके बाद उस कामिनी-कुञ्जसे निकल और बरामदेमें आकर मारशियोनेस दरदालानकी ओर जा रही थीं, कि इतनेमें अर्ल यह कहकर कि "लेडो वेलेण्डन। मैं इस तरफ जाऊंगा।" दो तीन कमरोंको पारकर उस दरदालानके प्रान्त विशेषकी ओर बढ़े।

यह देख मारशियोनेस नाराज होकर कहने लगीं,—"देखो, यह तुम्हारा अपना मकान नहीं है। क्या तुम्हारा यह व्यवहार अच्छा हो रहा है ? सुनते नहीं क्या ?"

मारशियोनेसकी बात सुनी-अनसुनीकर अर्लने कहा,—"फरनण्डा! आओ, आओ, ठीक पता मिल गया।"

यह सुन पलक मारते ही फरनण्डा मण्टगुमरीके पास जा पहुंचीं। अर्ल उस समय सीढ़ीके ऊपरी हिस्से पर खड़े होकर एक खास दरवाजेकी ओर देख रहे थे। फरनण्डाको अपने पास देखकर वे कहने लगे,—"अब सब ठीक हो गया। इतनी देरमें अब मेरा सन्देह दूर हो गया। उस रातमें मैं इसी दरवाजेसे होकर आया था और इसी गलीचे मढ़ी हुई सीढ़ीसे चढ़ा था और अभी हम लोग जो कई दरवाजे पीछे छोड़ आये हैं, उन्हींमेंसे किसी न किसीसे होकर उस केलि भवनमें जानेको राह है।"

अर्ल मण्टगुमरीकी इस कार्रवाई पर मारे क्रोधके जामेसे बाहर होकर मारशियोनेस दौड़ती हुई उनके पास गईं और उनका हाथ पकड़ कर कहने लगीं,—'जाओ, यहांसे चले जाओ, जाकर बैठकखानेमें बैठो,—सुनते हो ?"

इसपर अर्लने हंसते हंसते कहा,—"लीरा! जिस दिन मेरी

आँखोंपर पट्टी बाँधकर यहां ले आई थीं, उस दिन तो इतना क्रोध नहीं किया था।"

इसके बाद लौरासे हाथ छुड़ाकर वे एक कमरेका दरवाजा खोलने लगे, पर जब देखा, कि दरवाजा भीतरसे बन्द है, तब लातसे दरवाजेको तोड़कर कमरेके अन्दर घुस गये।

फरनण्डा मण्टगुमरीके पीछे खड़ी थी। उसने लौटकर मारग्वियोनेसको ओर देखा, तो उसे मर्माहत अवस्थामें दीवारके सहारे खड़े पाया।

अन्दर जाकर मण्टगुमरी कहने लगी,—"यही वह केलि-भवन है। इसी सोफापर वह अनजान औरतने मुझे लाकर बैठाया था और इसी टेबिलपरसे ढाल ढालकर शराब पीनेको दिया था, जिसके नशेसे मैं बेहोश हो गया था। और यही वह बिछौना है, और उसके पास वही आराम कुरसी भी है।

इसी समय किसीने पीछेसे टूटी-फूटी आवाजमें कहा,—"सब झूट, —सब झूठ है।" इसपर फरनण्डा और मण्टगुमरीने मुंह फेरकर देखा, तो मारग्वियोनेसको बहुत ही उदास भावसे चौकठपर खड़े पाया।

अब अर्लने कहा,—"जरा भी झूठ नहीं, सब सच है, सोलहो आने सच। प्रमाण चाहती हो क्या ?

मारग्वियोनेस,—"प्रमाण। क्या प्रमाण देते हो ?"

"लो, यह देखो" इतना कहकर अर्लने कपड़ेके दो टुकड़े टेबिलके ऊपर फेंक दिये। उन टुकड़ोंको देख मारग्वियोनेस स्थिर न रह सकीं। सोफापर बैठ और हाथसे मुंह छिपाकर बोल उठीं,— मेरे साथ पूरी धोखेबाजी की गई है।"

अब उन टुकड़ोंको मिलाकर मण्टगुमरीने कहा,—"अब कुछ भी सन्देह नहीं रहा, देखो ठीक मिल गये हैं। और देखो, यहां से तो कटा हुआ है।"

इसी समय गिर्जेकी घड़ीमें पांच बजनेका शब्द हुआ। उस घड़ीकी आवाज सुनते ही अर्ल बोल उठे,—"यह और भी एक प्रमाण निकल आया। मैं सौगन्द खाकर कह सकता हूं, कि उस रातमें इसी घड़ीकी आवाज मेरे कानमें पड़ी थी।"

मारश्रियोनेस,—"जो हो, जब जाहिर हो गया, तब छिपानेसे क्या लाभ? जैसे तुमने कुटिलता छोड़कर सब स्वीकार कर लिया है, उसी तरह मैं भी अङ्गीकार करती हूं, कि उस खास रातकी नायिका मैं ही हूं। मण्टगुमरी और एमर-परिवार वालोंने न कभी नीति धर्मको माना है और न अब मानते हैं, तो जिस रक्त-मांसका शरीर उनका है, उसीका मेरा भी है। मैं विधवाके वेशमें घूमती फिरती और जो इच्छा होती, करती हूं, पर इउजिनी और फर नण्ड़ा तो खूनी असामी हैं, उसका प्रमाण भी मौजूद है और यह बात उन्होंने स्वीकार भी की है।"

मण्टगुमरी,—"लौरा! मेरा दोष नहीं है। मुझे लाचार होकर कहना पड़ता है, कि हम सभी लोग एक ही सांचेमें ढले हुए हैं। जैसे हम लोग हैं, वैसी ही तुम भी हो। अगर हम लोगोंने रैमण्ड़को मार डाला है, तो तुमने भी विष देकर अपने स्वामीकी हत्याकी है।"

यह बात मारश्रियोनेसके कलेजेमें चुभ गई। यथासाध्य चेष्टा . . भी वे मनका भाव छिपा न सकीं। आखिर कुछ देर ,५ रहकर उन्होंने कहा,—"अब हमलोगोंको एक दूसरेका हाल इतना मालूम हो गया है, कि हमलोगोंके लिये आपसमें

मारग्रियोनेस,—"अवश्य, इसमें क्या सन्देह है, पर तुम लोग भी———"

मण्टगुमरी,—"मैं भी वादा करताहूं, कि तुम्हारे केलि-भवनकी बात कभी किसीसे न कहूंगा और यह भी किसीको न मालूम होने दूंगा, कि मारक्विसकी मौत विषसे हुई है।"

अब फरनण्डाके साथ खूब घनिष्ठता दिखाकर मारग्रियोनेसने पूछा,—"तुम्हारी क्या राय है, फरनण्डा? सुलह करनेपर राजी हो न?"

फरनण्डा,—"इञ्जिनीका यह कहना बहुत ही ठीक है, कि लड़ाई-झगड़ा करनेसें हम तीनोंका विनाश निश्चय है। मैं अपनी ओरसे कहती हूं, कि अब मैं तुमसे जरा भी नाराज नहीं हूं। तुमने जैसे हम लोगोंकी परीक्षा की थी, वैसे ही हम लोगोंने भी तुम्हारी परीक्षा करली, इसलिये हम लोग बराबर हैं। अगर तुम लोग इजाजत दो, तो मैं एक बात कहूं। उसपर यदि तुमलोग राजी हो जाओ, तो हम लोगोंका सुलहनामा और भी पक्का हो जाय।"

पहले तो अर्ल और मारग्रियोनेस दोनों ही एक साथ बोल उठे, कि "अच्छा कहो" पर फिर मानो फरनण्डाके मनकी बातको समझकर दोनों एक दूसरेकी ओर देखने लगे।

यह देख लेडी होल्डरनेसने कहा,—"आह! तो तुम लोग मेरे मनकी बात समझ गये हो, मेरी समझमें तो यह पथ तुम लोगोंके लिये सबसे अच्छा है। वारविकशायरका जो हिस्सा माष्टरने मुझे देनेकी राय दी है, वह मुझे मिल जावे और जहांतक हो सके, जल्द ही लेडी-वेलेण्डन लेडी-मण्टगुमरी बन जाय।"

यह सुन अर्लके मनकी अवस्था बदल गई। मारग्रियोनेसकी ऊपर उनका जो क्रोध हुआ था, वह दूर हो गया। विशेषत: इस समय उसी केलि-मन्दिरमें बैठे रहनेके कारण उनके मनमें कोमल

इसी समय गिर्जेकी घड़ीमें पांच बजनेका शब्द हुआ। उस घडीकी आवाज सुनते ही अर्ल बोल उठे,—"यह और भी एक प्रमाण निकल आया। मैं सौगन्द खाकर कह सकता हूं, कि उस रातमें इसी घड़ीकी आवाज मेरे कानमें पडी थी।"

मारग्रियोनेस,—"जो हो, जब जाहिर हो गया, तब छिपानेसे क्या लाभ? जैसे तुमने कुटिलता छोडकर सब स्वीकार कर लिया है, उसी तरह मैं भी अङ्गीकार करती हूं, कि उस खास रातकी नायिका मैं ही हूं। मण्टगुमरी और एमर-परिवार वालोंने न कभी नीति धर्म्मको माना है और न अब मानते हैं, तो जिस रक्त-मांसका शरीर उनका है, उसीका मेरा भी है। मैं विधवाके वेशमें घूमती फिरती और जो इच्छा होती, करती हूं, पर इउजिनी और फरनण्डा तो खूनी असामी हैं, उसका प्रमाण भी मौजूद है और यह बात उन्होंने स्वीकार भी की है।"

मण्टगुमरी,—"लौरा! मेरा दोष नहीं है। मुझे लाचार होकर कहना पडता है, कि हम सभी लोग एक ही सांचेमें ढले हुए हैं। जैसे हम लोग हैं, वैसी ही तुम भी हो। अगर हम लोगोंने रैमण्ड़को मार डाला है, तो तुमने भी विष देकर अपने स्वामीकी हत्याकी है।"

यह बात मारग्रियोनेसके कलेजेमें चुभ गई। यथासाध्य चेष्टा करनेपर भी वे मनका भाव छिपा न सकीं। आखिर कुछ देर चुप रहकर उन्होंने कहा,—"अब हमलोगोंको एक दूसरेका हाल इतना मालूम हो गया है, कि हमलोगोंके लिये आपसमें सुलह कर लेना ही अच्छा है।"

मण्टगुमरी,—"यह बात तुमने बहुत ठीक कही। लडाई-झगडा करनेमें हम तीनों का ही नाश हो जायगा। अच्छा, अगर आपसमें सुलह हो जाय, तो तुम अपने गवाहोंका मुंह बन्द कर दोगी न?"

मारग्रियोनेस,—"अवश्य, इसमें क्या सन्देह है, पर तुम लोग भी————"

मण्टगुमरी,—"मैं भी वादा करताहूं, कि तुम्हारे केलि-भवनकी बात कभी किसीसे न कहूंगा और यह भी किसीको न मालूम होने दूंगा, कि मारकिसको मौत किससे हुई है।"

अब फरनण्डाके साथ खूब घनिष्ठता दिखाकर मारग्रियोनेसने पूछा,—"तुम्हारी क्या राय है, फरनण्डा? सुलह करनेपर राजी हो न?"

फरनण्डा,—"इञ्जिनीका यह कहना बहुत ही ठीक है, कि लड़ाई-झगड़ा करनेमें हम लोगोंका विनाश निश्चय है। मैं अपनी ओरसे कहती हूं, कि अब मैं तुमसे जरा भी नाराज नहीं हूं। तुमने जैसे हम लोगोंकी परीक्षा की थी, वैसे ही हम लोगोंने भी तुम्हारी परीक्षा करली, इसलिये हम लोग बराबर हैं। अगर तुम लोग इजाजत दो, तो मैं एक बात कहूं। उसपर यदि तुमलोग राजी हो जाओ, तो हम लोगोंका सुलहनामा और भी पक्का हो जाय।"

पहले तो अर्ल और मारग्रियोनेस दोनों ही एक साथ बोल उठे, कि "अच्छा कहो" पर फिर मानो फरनण्डाके मनकी बातको समझकर दोनों एक दूसरेकी ओर देखने लगे।

यह देख लेडी होल्डरनेसने कहा,—"आह! तो तुम लोग मेरे मनकी बात समझ गये हो, मेरी समझमें तो यह पथ हम लोगोंके लिये सबसे अच्छा है। मारकिसकायरका जो हिस्सा आप-रने मुझे देनेकी राय दी है, वह मुझे मिल जावे और जहांतक हो सके, जल्द ही लेडी-वेलिण्डन लेडी-मण्टगुमरी बन जाय।"

यह सुन अर्लके मनकी अवस्था बदल गई। मारग्रियोनेसके ऊपर उनका जो क्रोध हुआ था, वह दूर हो गया। विशेषतः इस समय उसी केलि-मन्दिरमें बैठे रहनेके कारण उनके मनमें कोमल

भाव उदय हो उठा। वे हंसकर कहने लगे,—"लौरा। याद है न, एक दिन इसी कमरेमें तुमने मुझे सुन्दर दूतजिनी कहकर कितना प्यार किया था ————"

मारग्रियोनेस,—"और मैंने यह भी तो कहा था, कि मैं भी नितान्त कुरूपा नहीं हूं। अगर तुम मेरी उस बातको झूठी बड़ाई न समझो————"

मगरगुमरी,—(बड़े प्यारसे मारग्रियोनेसका हाथ पकड़कर) "लौराको तो मैं बराबर ही परम सुन्दरी कहता आया हूं।"

फरनवड़ा,—"तब क्या पूछना है? जब दोनों आदमी दोनोंकी प्रशंसा करते हो, तो फिर दोनोंके एक हो जानेमें क्या अड़चन है?"

अब अर्लके मुखपर सम्मतिसूचक भाव देखकर मारग्रियोनेसने कहा,—"मुझे कुछ भी उज्र नहीं है।"

इसके बाद आलिङ्गन द्वारा दोनोंने इस अपूर्व सम्मिलनकी बात पकी करली। अब जिस स्त्री-रत्नने जहर देकर अपने स्वामीको मार डाला था, उसीके लवके साथ भाईकी हत्या करनेवाले पुरुष-पुङ्गवका लव मिल गया। और इस अद्भुत सम्मिलनकी गवाह हुई एक नरघातिनी बड़े घरकी लेडी।



एक सौ सात परिच्छेद।

बदला।

गत परिच्छेदको घटनायें जिस दिन घटो थीं, उसके दूसरे ही दिन आठ बजे मेलमथ 'नाइट्स-ब्रिज' नामक पुलको पारकर हाइड पार्कको तरफ जा रहा था। दो दिन पहले जब एजवर रोडमें मिष्टर मोगलसके साथ उसकी मुलाकात हुई थो और उस वक्त वह जैसे भले आदमियोंकेसे कपडे पहने हुए था, आज भो वैसे ही कपडे पहने हुए था। पर उसका मुँह पहलेसे भो विवर्ण हो गया था। जिसके देखनेसे मालूम होता था, कि वह इस समय कोई बडे ही दु साहस का कार्य्य करने जा रहा है।

धीर गम्भीर चालसे हाइड-पार्कको पारकर वह पार्क-लेनके पास पहुंचा ही था, कि वेष्टएण्डको घडोमें नौ बजनेका शब्द हुआ। अब पार्कके फाटकके पास खडा होकर वह कुछ सोचने लगा, इतनेमें उसका बडा लडका जेम्स वहां आ पहुंचा।

उसे देख मेलमथने खुश होकर कहा,—"अच्छा हुआ जो तुम आ गये। तुम्हें देखकर मैं बहुत खुश हुआ हूं। मेरे मनमें कुछ सन्देह हो रहा था।"

शायद पाठकोंको याद होगा, कि इस लडकेको उम्र तेरह वर्षसे कुछ अधिक थो। इस समय वह भो साफ सुथरे कपडे पहने था। उसने पूछा,—"क्यों, क्या हुआ है, बाबा?——"

मेलमथ,—"क्या हुआ है, सो तो समझमें नहीं आता, पर जियट-को कुछ आशङ्का हो रही है। हम लोगोंमें जो एक अवलम्बन जिया है, उसमें तो पग पगपर विपद भरी है। शायद इसोसे एक आशङ्का मन फैसा तो हो उठता है। तुम्हारे भाई विलिम कहां हैं?"

जेम्स,—"यहीं है—उसी अब-ष्ट्रीटके किञ्चिन-केनूमें। वहां उन लोगोंको उसके कितने ही लड़के लड़कियां भरी हैं। और किञ्चिन भी यह भी भला आदमी है।"

मेलमथने इच्छापूर्वक ही अपने बाल बच्चोंको किञ्चिन-केनूमें रख दिया था, पर इस समय न मालूम उसके मनमें क्या खयाल उठा, कि वह कांप उठा और बोला,—"उसने इसी बीचमें तुम लोगोंको अच्छी तालीम दे दी है, क्यों? अच्छा, जाने दो इस बातको। अब यह बताओ, कि खबर क्या है?"

जेम्स,—"तुमने जो दो पिस्तौल खरीदनेको कहा था, उन्हें खरीद लाया हूं।"

मेलमथ,—"पेड़की आड़में चलकर दोनों पिस्तौलें दे दो। मैं कह नहीं सकता, कि इस वक्त मुझे कितनी खुशी हासिल हुई है।"

जेम्स,—(पिताका रङ्ग-ढङ्ग देख और कुछ घबराकर) "बाबा! पिस्तौल लेकर क्या करोगे? रातभर तुम रहे कहां?"

यह सुन मेलमथका मुंह स्याह हो गया। उसने कहा,—"पिस्तौल लेकर क्या करूंगा, यह तुम क्यों पूछते हो? जरा सोचनेसे हो तो यह बात तुम्हें मालूम हो सकती है। तुम अभी लड़के हो सही, पर उस अनाथालयमें मैंने तुम्हें जो शिक्षा दी है, उसका मर्म शायद तुमने हृदयङ्गम कर लिया है, और अगर नहीं किया, तो क्या तुम अपने बापकी बुराईकी बात भूल गये हो? और क्या यह भी तुम्हें याद नहीं है, कि कब्रसे तुम्हारी मा बदला लेनेके लिये बार बार चिल्लाकर कह रही है?"

जेम्स,—(कांपकर) "नहीं बाबा। मुझे सब याद है।"

मेलमथ,—"तब फिर? मुझे तो ऐसा मालूम होता है, कि तुम डर गये हो?"

जेम्स,—"डर गया हूं।—कभी नहीं। चाहे जैसे हो, मैं तुम्हारी बुराई और माकी मृत्युका बदला लेनेके लिये हमेशा तय्यार हूं।"

मेलमथ,—"और उस छोटी लड़कीके साथ उस बदमाश डाकरने जैसा कुव्यवहार किया है, उसके लिये कुछ भी न करोगे?"

जेम्स,—"हां उसका बदला भी लेना ही होगा। और सुयोग भी उपस्थित हो गया है। नौ बज गये हैं। थर्टनके लड़केको लेकर दाई अभी आती ही होगी।"

मेलमथ,—"तुम्हें ठीक मालूम है, कि दाई रोज उसे लेकर यहां आती है?"

जेम्स,—"मैंने लगातार कई दिनोंतक उसका पीछा किया है। और मैं तो तुमसे पहले ही कह चुका हूं, कि नौ दसके बीचमें दाई रोज ही उसे हवा खिलानेके लिये यहां लाती है।"

मेलमथ,—"हां, कहा तो है। अच्छा, अगर आज वह आवे, तो लड़केको छीनकर एकदम किंचिन-लेनमें भाग जाना। वहां जो लड़कियां हैं, उसे उनके हवाले कर देना और तुम उसके बाप माकी तरह होकर रहना। सब तरहके दुष्कर्म-दुराचार उसको सिखा देना, जिसमें पहलेसे ही वह चोरी करना सीख जाय। अगर वह जीता रहे, तो दस वर्षकी उम्रतक उसे उसके बाप माका नाम न बताना। थर्टन उसके लिये बहुत चेष्टा करेगा। इनाम देनेका इश्तिहार देगा, कागजोंमें विज्ञापन छपवावेगा, गलो और सड़कोंपर प्लेकार्ड लगवा देगा, अनेक कायड़ करेगा, पर सावधान! किसी तरह मेरी बातको न टालना, अगर टालोगे, तो तुम्हारे ऊपर मेरा भयानक शाप पड़ेगा।"

जेम्स,—(डरकर) "बाबा! ऐसा क्यों कहते हो? मैं प्रतिज्ञा करता हूं, कि तुम जो कहोगे, वही करूंगा। तुम्हारा हुक्म मानना

उपदेश भी उलङ्घन न करूंगा और उस लड़कीका भी बदला चुका लूंगा।"

मेलमथ,—"जेम्स! अब ठीक तुमने मेरे लड़के जैसी ही बात कही है। निठुर निर्दय डाक्टरने मेरी निरीह बच्चीको लेकर क्या किया? एक बोतलमें भरकर उसे आलमारीमें रख दिया है न! उसने समझा, कि बच्चीकी मा भीख मांगती फिरती थी और किसी बड़े आदमीके दरवाजे पर गिरकर पेटकी ज्वालासे मर गई है, इसलिये वह जो चाहे, बच्चीको लाशके साथ कर सकता है। गरीब दुःखियोंका कष्ट ही क्या? जो हो, इसका बदला लेना ही होगा। जो कहता हूं, सो सुनते हो न? कुछ समझते हो?"

जेम्स,—"समझता क्यों नहीं। डाक्टरकी लड़कीको उड़ा, भिखमङ्गेकी तरह बनाकर अन्तमें उसे पक्का चोर कर देना होगा——"

मेलमथ,—"फिर जब वह दश बारह वर्षका हो जावे वा जब तुम यह समझलो, कि दुष्कर्म उसकी रग रगमें घुस गया है, तब उससे कह देना कि वह मेफेयरके भयङ्कर डाक्टर थर्टनका लड़का है।"

जेम्स,—(हंसता हुआ) "हां, फिर यदि वह अपने बाप माके पास जाना चाहे तो खुशीसे जाय। अच्छा बाबा! दो पिस्तौल लेकर क्या करोगी? किस कामके लिये——"

मेलमथ,—"एक तो प्रिन्सके लिये। क्योंकि वही हम लोगोंके दुःख दुर्दशाकी जड़ है——"

जेम्स,—"और दूसरी?"

मेलमथ,—(सोचता हुआ) "और दूसरी? जेम्स! तुमसे कहनेमें क्या हर्ज है? अब तुम्हें ही अपने भाई बहिनको देखना होगा। तुम्हारे सिवाय उन लोगोंकी खबरदारी करनेवाला और कोई नहीं है।"

इस बातसे मर्म्माहत होकर जेम्स अपने पिताके पैरों पर गिरना ही चाहता था, कि उसने उसे बीच हीमें पकड़ लिया। इसपर वह चिल्ला कर बोल उठा,—"नहीं, नहीं, तुम इस तरह हम लोगोंको छोड़कर जाने न पाओगे ?"

अब उस नर राक्षसने भौंहें टेढ़ीकर वज्रगम्भीर स्वरसे कहा,— "तुम्हारे इस तरह विकल होनेसे तो न बनेगा। तुम्हें साहस करना चाहिये। अब खेल-कूद करने और माया ममता दिखानेका समय नहीं है। हम लोगोंके शिरपर बड़ा भारी बोझ लदा है। चाहे जैसे हो, बदला लेना ही होगा। कदम पीछे देनेसे बन नहीं सकता। अब बताओ, तुम क्या करोगे, पीछे हट जाओगे, या————"

जेम्स,—"नहीं बाबा। मैं पीछे कदम धरनेवाला नहीं हूं। माकी दुर्दशाकी बात मेरे मनमें चुभी हुई है। अहा! मेरे मुँहकी तरफ देख देखकर मा कितना रोई थी। मेरी आखोंके सामने उन्होंने कितने कष्टसे प्राण त्याग किया था। वह सब मुझे अच्छी तरह याद है। अब मुझे असुर जैसा साहस और सिंह जैसा बल हो गया है। अब तुम मुझे कमजोर नहीं कह सकते।"

अब सादर पुत्रका हाथ पकड़कर मैलमथ कहने लगा,—"बेटा! तुमसे ऐसी ही आशा है। अच्छा, तुमने मुझसे अभी पूछा था न, कि कलकी रातमें मैं कहां और किस तरहसे था? यह देखो——"

इतना कहकर मैलमथने आग्नेय पदार्थ विशेषसे भरी हुई एक सोडावाटरकी बोतल निकाल कर दिखा दी।

जेम्स,—(बोतलको हाथमें लेकर) "इसमें क्या है बाबा?"

मैलमथ,—"देखो, तुम्हारी मा जिन बड़े आदमीके दरवाजेपर गिरकर मर गई है, उस मकानके पास अभी अभी आना जिस दिन देखूंगा, कि वहां कुछ नाच रंग हो रहा है, इसी।-

बोतलको खिड़कीकी राहसे भीतर फेंक देना। फिर देखोगी, कि कैसा मजा होता है। उसी वक्त आमोद-प्रमोद, और हंसी-ठट्ठेकी जगह रोना-धोना पड़ जायगा। पर देखना, बोतल फेंककर फिर उस जगह जरा भी न ठहरना, जान लेकर भाग जाना। समझते हो न?"

जेम्स,—(बोतल लेकर गम्भीर स्वरसे) "हां, समझ गया। हम लोग जो कुछ करना चाहते हैं, उससे समाजकी नींव तक हिल उठेगी। अच्छा बाबा। प्रिन्सके साथ कब क्या करोगे?"

प्रिन्सका नाम सुनते ही मेलमथ जल उठा। फिर घोर घृणाके साथ वह कहने लगा,—"प्रिन्स अभी कुछ दिन विण्डसरमें रहनेको कह गया है। अगर आज यष्टनकी लड़कीका काम मजेमें हो जाय, तो कल मैं विण्डसर चला जाऊंगा, फिर देखना, कि चौबीस घण्टेके अन्दर ही अन्दर सारे इङ्गलैण्डमें कैसी हलचल मचा देता हूं। जिस समय यह बात फैल जायगी, कि ब्रिटिश सिंहासनका उत्तराधिकारी इस संसारसे उठ गया,—मनुष्य-कुलको वह और कलङ्कित नहीं कर सकता, उस समय देखना, कि कैसी धूम मच जायगी। मैंने तो यही इरादा कर रखा है। शायद अब तुमसे और मुझसे कभी मुलाकात भी न होगी।"

जेम्स,—(मृदु गम्भीर स्वरसे) "तो क्यों बाबा! यह काम करना ही होगा?"

मेलमथ,—"हां, जरूर ही करना होगा। तो क्या तुम प्रिन्सको छोड़ देनेकी राय देते हो?"

जेम्स,—"नहीं, सो तो नहीं कहता।"

मेलमथ,—"अवश्य ही तुम मुझे फांसीकी तख्तीपर ही देखना चाहते?"

जेम्स,—"भगवान् ऐसा कभी न करें।"

मिलमथ,—"यदि मिस्सका काम तमाम कर दूं, तो मेरे लिये एक पथके सिवाय और दूसरा कोई पथ नहीं है।"

जेम्स,—"बाबा! अब अन्तिमबार मुझे अपना हाथ दो, क्योंकि मैं तो अब तुम्हें इस संसारका आदमी नहीं समझता।"

अब पिता पुत्र दोनों करुण-दृष्टिसे एक दूसरेको ओर देखने लगे। उस समय उन लोगोंको ऐसा मालूम होने लगा, मानो दोनोंका मन कुछ कोमल हुआ जाता हो, इसके बाद दोनोंने हाथ छोड़कर अपना अपना मुंह फेर लिया।

इसी समय एक औरत एक पांच वर्षके सुन्दर बच्चेको लिये बागके अन्दर घुस आई। वह धाय थी और डाक्टर थर्ष्टनके यहां नौकरी करती थी। मिलमथ और उसके पुत्रका यही विश्वास था, कि वह थर्ष्टनका अपना ही लड़का है, पर बात ऐसी नहीं थी। असलमें वह बालक राजकुमारी सोफिया और जनरल्ल गार्थके गुप्त प्रणयका फल स्वरूप था।

वह लड़का धायकी गोदमें सुखसे सो रहा था और धाय धीरे धीरे बागमें टहल रही थी। उसे कुछ भी मालूम न था, कि उसके पीछे पीछे एक आदमी और एक लड़का आरहा है। टहलती टहलती राह छोड़कर वह एक पेड़के नीचे बेञ्चपर जा बैठी। अब एकबार चारोंओर देखकर जब मिलमथ और उसके लड़केने यह निश्चय कर लिया, कि इधर उधर पासमें कोई आदमी नहीं है, तो दोनों पिता-पुत्र बेधड़क उस धायके पास चले गये। फिर मिलमथने धाड़काकर उससे कहा,—"देखो, तुम्हें किसी तरहका डर नहीं है। तुम चुपचाप इस लड़केको मुझे दे दो।"

यह सुन धाय पहले तो अवाक हो गई, फिर बड़े आग्रहके साथ उस लड़केको अपनी गोदमें छिपाकर वह भयभीत दृष्टिसे उस नर-राक्षसको ओर देखने लगी।

बोतलको खिड़कीकी राहसे भीतर फेंक देना। फिर देखोगे, कि कैसा मजा होता है। उसी वक्त आमोद-प्रमोद, और हंसी-ठट्ठेकी जगह रोना-धोना पड़ जायगा। पर देखना, बोतल फेंककर फिर उस जगह जरा भी न ठहरना, जान लेकर भाग जाना। समझते हो न ?"

जेम्स,—(बोतल लेकर गम्भीर स्वरसे) "हां, समझ गया। हम लोग जो कुछ करना चाहते हैं, उससे समाजकी नींव तक हिल उठेगी। अच्छा बाबा। प्रिन्सके साथ कब क्या करोगे ?"

प्रिन्सका नाम सुनते ही मेलमथ जल उठा। फिर घोर घृणाके साथ वह कहने लगा,—"प्रिन्स अभी कुछ दिन विण्डसरमें रहनेको कह गया है। अगर आज थर्ष्टनकी लड़कीका काम मजेमें हो जाय, तो कल मैं विण्डसर चला जाऊंगा, फिर देखना, कि चौबीस घण्टेके अन्दर ही अन्दर सारे इङ्गलैण्डमें कैसी हलचल मचा देता हूं। जिस समय यह बात फैल जायगी, कि ब्रिटिश सिंहासनका उत्तराधिकारी इस संसारसे उठ गया,—मनुष्य-कुलको वह और कलङ्कित नहीं कर सकता, उस समय देखना, कि कैसी धूम मच जायगी। मैंने तो यही इरादा कर रखा है। शायद अब तुमसे और मुझसे कभी मुलाकात भी न होगी।"

जेम्स,—(मृदु गम्भीर स्वरसे) "तो क्यों बाबा! यह काम करना ही होगा ?"

मेलमथ,—"हां, जरूर ही करना होगा। तो क्या तुम प्रिन्सको छोड़ देनेकी राय देते हो ?"

जेम्स,—"नहीं, सो तो नहीं कहता।"

मेलमथ,—"अवश्य ही तुम मुझे फांसीकी तख्तीपर लटकते भी नहीं देखना चाहते ?"

जेम्स,—"भगवान् ऐसा कभी न करें।"

मेलमथ,—"यदि प्रिन्सका काम तमाम कर दूँ, तो मेरे लिये एक पथके सिवाय और दूसरा कोई पथ नहीं है।"

जेम्स,—"बाबा! अब अन्तिमबार मुझे अपना हाथ दो, क्योंकि मैं तो अब तुम्हें इस संसारका आदमी नहीं समझता।"

अब पिता पुत्र दोनों करुण-दृष्टिसे एक दूसरेकी ओर देखने लगे। उस समय उन लोगोंको ऐसा मालूम होने लगा, मानो दोनोंका मन कुछ कोमल हुआ जाता हो, इसके बाद दोनोंने हाथ छोड़कर अपना अपना मुँह फेर लिया।

इसी समय एक औरत एक पाच वर्षके सुन्दर बच्चेको लिये बागके अन्दर घुस आई। वह धाय थी और डाक्टर थर्नकी यहां नौकरी करती थी। मेलमथ और उसके पुत्रका यही विश्वास था, कि वह थर्नका अपना ही लड़का है, पर बात ऐसी नहीं थी। असलमें वह बालक राजकुमारी सोफिया और जनरल वार्थके गुप्त प्रणयका फल स्वरूप था।

वह लड़का धायकी गोदमें सुखसे सो रहा था और धाय धीरे धीरे बागमें टहल रही थी। उसे कुछ भी मालूम न था, कि उसके पीछे पीछे एक आदमी और एक लड़का आरहा है। टहलती टहलती राह छोड़कर वह एक पेड़के नीचे बेंचपर जा बैठी। अब एकबार चारोंओर देखकर जब मेलमथ और उसके लड़केने यह निश्चय कर लिया, कि इधर उधर पासमें कोई आदमी नहीं है, तो दोनों पिता-पुत्र बेधड़क उस धायके पास चले गये। फिर मेलमथने चाड़ककार उससे कहा,—"देखो, तुम्हें किसी तरहका डर नहीं है। तुम चुपचाप इस लड़केको मुझे दे दो।"

यह सुन धाय पहले तो अवाक हो गई, फिर बड़े आग्रहके साथ उस लड़केको अपनी गोदमें छिपाकर वह भयभीत दृष्टिसे उस नर-राक्षसकी ओर देखने लगी।

बोतलको खिडकोकी राहसे भीतर फेंक देना। फिर देखोगे, कि कैसा मजा होता है। उसी वक्त आमोद-प्रमोद, और हंसी-ठट्ठेकी जगह रोना-धोना पड जायगा। पर देखना, बोतल फेंककर फिर उस जगह जरा भी न ठहरना, जान लेकर भाग जाना। समझते हो न ?"

जेम्स,—(बोतल लेकर गम्भीर स्वरसे) "हां, समझ गया। हम लोग जो कुछ करना चाहते हैं, उससे समाजकी नींव तक हिल उठेगी। अच्छा बाबा। प्रिन्सके साथ कब क्या करोगे ?"

प्रिन्सका नाम सुनते ही मैलमथ जल उठा। फिर घोर घृणाके साथ वह कहने लगा,—"प्रिन्स अभी कुछ दिन विण्डसरमें रहनेको कह गया है। अगर आज थर्टनके लडकीका काम मजेमें हो जाय, तो कल मैं विण्डसर चला जाऊंगा, फिर देखना, कि चौबीस घण्टेके अन्दर ही अन्दर सारे इङ्गलैण्डमें कैसी हलचल मचा देता हूं। जिस समय यह बात फैल जायगी, कि ब्रिटिश सिंहासनका उत्तराधिकारी इस संसारसे उठ गया,—मनुष्य-कुलको वह और कलङ्कित नहीं कर सकता, उस समय देखना, कि कैसी धूम मच जायगी। मैंने तो यही इरादा कर रखा है। शायद अब तुमसे और मुझसे कभी मुलाकात भी न होगी।"

जेम्स,—(मृदु गम्भीर स्वरसे) "तो क्यों बाबा ! यह काम करना ही होगा ?"

मैलमथ,—"हां, जरूर ही करना होगा। तो क्या तुम प्रिन्सको छोड देनेकी राय देते हो ?"

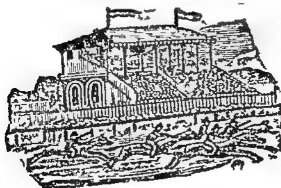
जेम्स,—"नहीं, सो तो नहीं कहता।"

मैल्मथ,—"अवश्य ही तुम मुझे फांसीकी तख्तीपर लटकते भी नहीं देखना चाहते ?"

जेम्स,—"भगवान् ऐसा कभी न करें।"

आखिर धायको चैतन्य देखकर मेलमथ कहने लगा,—"देखो,अब तुम अपने मालिकके पास जाकर कहदो, कि जिसे तुमने ह्वाइट चैपलके कङ्गालखानेमें रोगियोंको कोठरीमें देखा था और जिसे पागलखानेमें भेज दिया था या जिसको लडकोंको बोतलमें भरकर अपने डाक्टरखानेमें रख छोडा है, वही आदमी तुम्हारे लडकेको उडा ले गया है। और उसे यह भी समझा देना, कि वह अपने लडकेको फिर पानेके लिये चाहे जितनी कोशिश और खर्च करे, कभी मिल नहीं सकता। जिन लोगोंके हाथ वह बच्चा पड गया है, वे लोग उसे कभी छोडनेके नहीं। पर जब वे लोग यह समझ लेंगे, कि अब वह दुष्कर्मोंमें पक्का हो गया है, तब उसे उसके बाप माके पास जानेको इजाजत दे देंगे।"

धायके दिलपर उसकी बातका कैसा असर हुआ, यह देखनेके लिये मेलमथ वहां जरा भी न ठहरा। अपनी बात खतम कर वह फौरन रफूचक्कर हो गया।



अब पाकेटसे पिस्तौलको कुछ बाहर निकाल कर मेलमथने फिर कहा,—"देखो, मेरी बात मान लो। अधिक कुछ कहनेका समय नहीं है। तुम कुछभी न डरो, लड़केको चुपचाप मेरे हवाले कर दो।"

पिस्तौल और नर राक्षसका रंग-ढंग देखकर धाय बेसुधसी हो गई। फिर क्या था, चट उसको गोदसे बच्चेको लेकर मेलमथने अपने लड़केको दे दिया।

उस निरीह बच्चेके मुँहकी ओर देखकर जेम्स कातरता सहित बोल उठा,—"बाबा। क्या यह काम न करनेसे नहीं चल सकता?"

मेलमथका हृदय पत्थरसे भी कठिन था। उसने वज्र गम्भीर स्वरसे कहा,—"जरा अपनी छोटी बहिनकी बात याद करके तो देखो।"

यह सुन जेम्सका वह भाव दूर हो गया। साथ ही बोल उठा,—"हा बदला तो लेना ही होगा।"

मेलमथ,—"जेम्स। अब अपनी माका नाम स्मरणकर सौगन्द खाओ, कि जिस तरह मैंने बैर चुकानेकी बात कही है, तुम ठीक उसी तरह काम करोगे; दया वा दुःख करनेका कोई काम नहीं है।"

अब जेम्सके मनने फिर पलटा खाया। उसने दृढ़ स्वरसे कहा,—"अच्छा, मैं माका नाम स्मरणकर सौगन्द खाता हूं।"

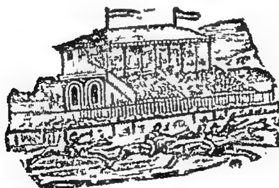
मेलमथ,—"बस, हो गया। अब अपनी और हमारी यही आखिरी मुलाकात समझो।"

"बस यही आखिरी मुलाकात है, बाबा!" कहकर जेम्स वहांसे चल पड़ा।

कुछ देरके बाद जब धायका होश-हवास दुरुस्त हुआ, तो एक बार उसने चारों ओर नजर दौडाई; पर न तो उसने अपनी गोदके बच्चेको ही देखा और न उस लड़केको ही देखा। केवल उस निठुर दुर्दान्त नर-राक्षसको अपने सामने खड़े पाया।

आखिर धायको चैतन्य देखकर मेलमथ कहने लगा,—"देखो,अब तुम अपने मालिकके पास जाकर कहदो, कि जिसे तुमने ह्वाइट चेपलके कङ्गालखानेमें रोगियोंको कोठरीमें देखा था और जिसे पागलखानेमें भेज दिया था या जिसको लडकोको बोतलमें भरकर अपने डाक्टरखानेमें रख छोडा है, वही आदमी तुम्हारे लडकेको उडा ले गया है। और उसे यह भी समझा देना, कि वह अपने लडकेको फिर पानेके लिये चाहे जितनो कोशिश और खर्च करे, कभी मिल नहीं सकता। जिन लोगोंके हाथ वह बच्चा पड गया है, वे लोग उसे कभी छोडनेके नहीं। पर जब वे लोग यह समझ लेंगे, कि अब वह दुष्कर्मोंमें पक्का हो गया है, तब उसे उसके बाप माके पास जानेको इजाजत दे देंगे।"

धायके दिलपर उसकी बातका कैसा असर हुआ, यह देखनेके लिये मेलमथ वहा जरा भी न ठहरा। अपनी बात खतम कर वह फौरन रफूचक्कर हो गया।



एकसौ आठ परिच्छेद ।

आखिरी मुलाकात ।

जिस दिनकी बात गत परिच्छेदमें लिखी गई है, उसके दूसरे दिन प्रायः दोपहरके समय राजकुमारी अमोलिया विण्डसर कैसलसे निकल कर पैर बढ़ाती हुई बागके अन्दर जा रही है।

जिस दिन पहले पहल हमने इस राजनन्दिनीका परिचय पाठकोंको दिया था, उस दिन इसकी कैसी सुन्दरता थी और आज कैसी अवस्था तथा दुर्दशा है! इन कई दिनोंके बीचहीमें देखते देखते यह अपूर्व परिवर्त्तन हो गया है।

इसकी यह दुर्दशा किसने की? किस चिन्ता और अनुतापने इसे ऐसी अवस्था पर पहुंचा दिया? जो हृदय केवल प्रेमामोदमें निमग्न रहनेके लिये सृजा गया था, वही आज निदारुण कीटकी भोग्य वस्तु क्यों हो गया है।

सुनिये, पाठक! नृपनन्दिनी कुछ दिनोंसे जो सुखस्वप्न देख रही थी, आज वह टूट गया है। आज वह केवल अपने प्राणके प्रियतम रत्नको ही परित्याग करनेके लिये वाध्य नहीं हुई, बल्कि जिसे वह सुखकी प्रीति समझती थी, आज वह घोर अमङ्गलका कारण मालूम हो रही है, जिसे उसने इतने दिनोंसे स्वर्ग समझ रखा था आज वह नरक हो उठा है।

राजहंसी अमोलियाके जीवनमें अब और क्या रह गया है! क्या अब वह सुखसे जीवन धारण कर सकती है? अवश्य ही उसे धन-दौलतका अभाव नहीं है, पर उसका हृदय तो भस्म हुआ जाता है। वह बिना जाने बूझे इस प्रकार खुद जो काम कर

बैठी है, उसीके लिये तो आज उसका हृदय इस प्रकार दहक रहा है। इसके अलावा उसे यह भी मालूम हो गया है, कि उसके जन्मदाता घोर नारकी, घोर मिथ्यावादी और घोर विश्वासघातक है। उन्होंने जान बूझकर एक सरला कुलकामिनीका सर्वनाश कर डाला है। अमीलियाने ज्यों ही सुना, कि महाराजके औरस और इन्ना लाइटफूटके गर्भसे सर रिचर्ड टैमफोर्डका जन्म है, त्यों ही वह उस कागजका मर्म्म समझ गई, जिसे दिखाकर टिम मोगलुस और लेडी लेडनै महाराजाको अपनी मुट्ठीमें कर लिया था। इसीसे कहते हैं, कि राजकुमारी आज केवल अपनी ही करनीके लिये व्याकुल नहीं है, वह अपने पिता माता और भाई बहिन आदि आत्मीय स्वजनोंकी पापाचरणकी बात सोच सोचकर भी नितान्त दुःखित हो उठी है। उसकी आशा भरोसा सभी नष्ट हो गये हैं, सुतरां उसका शरीर दुर्बल और लावण्य शून्य हो जायगा, इसमें विचित्रता ही क्या है? यह देखो, उसके नेत्रोंमें अब वह ज्योति नहीं है और न गालोंमें वह लाली ही है। वह चल रही है सही, पर रह रहकर उसका सारा शरीर कांप उठता है।

जो हो, पर आज वह बागमें इसतरह टहल क्यों रही है? उस भयानक बातके जाहिर होनेके बादसे वह अकेली अपने कमरेमें इसलिये बैठी रहती थी, कि जिसमें उसकी और किसीसे मुलाकात न हो, पर आज उस कमरेको छोड़कर वह फिर बाहर क्यों निकली है? इसके उत्तरमें इतना ही कह देना काफी है, कि इस वक्त उसकी चोलीमें सर रिचर्ड टैमफोर्डकी लिखी एक चिट्ठी छिपी हुई है। उसमें उन्होंने लिखा है,—"अब मैं इङ्गलैण्डमें रहना नहीं चाहता। जिन्दगी भरके लिये देश-त्याग कर देनेका मैंने पक्का इरादा कर लिया है। अतएव केवल एकबार और तुमसे मिलनेकी मैं प्रार्थना करता हूं।"

सर रिचर्ड उस बड़े भारी बागके एक सुनसान स्थानमें खड़े खड़े अमोलियाकी राह देख रहे थे। जो दशा राजकुमारीकी थी, वही उनकी भी थी। वे भी क्षीण, मलीन और विवर्ण हो गये थे।

उन लोगोंकी आजकी यह मुलाकात, मुलाकात नहीं कही जा सकती। कारण, आज उन लोगोंके हृदयमें असीम,ज्वाला, अनन्त लज्जा और घोर ग्लानि वर्त्तमान है। अमोलिया ज्यों ही पास पहुंची, त्यों ही सर रिचर्ड बोल उठे,—"अमोलिया! यह हम लोगोंकी आखिरी मुलाकात है। मैंने सोचा, कि जब जिन्दगी भरके लिये देश छोड़कर चला जाता हूं, तब अवश्य ही तुम मुझसे मिला चाहती होगी—"

अमोलिया,—(शिर नीचा करके) "कहां जानेकी इच्छा है?"

रिचर्ड,—"सो तो मैंने अभी कुछ स्थिर नहीं किया, पर यह निश्चित है, कि अब यहा न रहूंगा। क्यों, तुम्हारी भी यही राय है न?"

अमोलिया,—(सजल नेत्रोंसे सर रिचर्डकी ओर देखकर) "हां, है। जिस देशमें इतना कष्ट मिला है, उसे छोड़ देना ही अच्छा है। जहा रहो, आनन्दसे रहो, ईश्वर तुम्हारा मङ्गल करें।"

रिचर्ड,—"मुझे पूर्ण विश्वास है, कि तुम हमेशा मुझे याद करती रहोगी और मेरे मङ्गलके लिये ईश्वरसे प्रार्थना भी करोगी। मै चाहे जहा रहूं, पर मुझे कभी नहीं भूलोगी, यही सोचकर मैं एक तरह स्थिर रह सकूंगा। पर हाय! तुम्हारी क्या दशा होगी, अमोलिया? तुमसे यह विपद कैसे सही जायगी?"

अमोलिया,—"सही तो कभी न जायगी, चिन्ता करती करती ही मैं मर जाऊंगी। रातमें चिन्ता, दिनमें चिन्ता, सोनेमें चिन्ता, जागनेमें चिन्ता, चिन्ता मेरा पिण्ड नहीं छोड़ती! क्या किया—क्या हुआ—और आगे क्या होगा? यही सोचती सोचती मैं चली जाऊंगी। अब मुझे सुख कहां? मेरी आशा भरोसा, प्रेम प्रीति

जब सभी चले गये, तब जितने दिन बचूंगी उतने दिन रोते ही काटेंगी।"

रिचर्ड,—"तुम्हारे दुःखको मैं अच्छी तरह समझता हूं। तुम्हारे इस असीम कष्टमें तुम्हें समझाना भी वृथा है, बल्कि वैसा करना मानो तुम्हारी हँसी उड़ाना है। और मेरा मन भी ऐसा खराब हो गया है, कि तुम्हें समझानेके लिये दो बात कहनेकी भी शक्ति नहीं है।"

अमीलिया,—"रिचर्ड! हम लोगोंके जखमकी दवा इस संसारमें नहीं है। यदि मैंने घोर पाप न किया होता, तो आत्मघात करके कभीकी इस कष्टसे छुटकारा पा जाती।"

रिचर्ड,—(अमीलियाकी बातसे डरकर) "अमीलिया! ऐसी बात न कहो। अच्छा आओ, अब अन्तिम बार हाथ मिलाकर कुछ देर तक टहल लें, फिर जब हम लोगोंका मन जरा शान्त हो जायगा, तो फिर एक दूसरेसे बिदा हो जायंगे।"

अब सर रिचर्डकी बांह पकड़कर अमीलिया सजल नेत्रोंके साथ कहने लगी,—"यदि मेरे मुंहसे ऐसी कोई बात निकल गई हो, जिससे तुम्हें कष्ट हुआ हो, तो उसके लिये माफ करना। पर इस समय मुझे कैसा दुःख हो रहा है, यह तुम अवश्य ही समझते होगे।"

रिचर्ड,—"अमीलिया! अभी तुमने अपनेको पापिन बताया है, पर जरा विचारकर देखो, उसमें तुम्हारा दोष ही क्या है? तुम्हारा पाप क्या है? जब तुमने मुझे आत्म समर्पण किया था, तब तो तुम्हें यह न मालूम था, कि हम लोगोंमें क्या सम्बन्ध है, इस लिये तुम कभी दोषी नहीं हो सकती।"

अमीलिया,—"हाय! तुम जिस तरह समझा रहे हो, अगर उसी तरह मैं भी अपने मनको समझा सकती, (मनको सम्हाल

और एक ओर देखकर) देखो, उस पेडके नीचे खड़ा एक आदमी हमलोगोंकी ओर देख रहा है।"

रिचर्ड,—"नहीं, क्यों देखेगा ? हम लोगोंके पीछे जासूस छोडनेकी किसीको क्या आवश्यकता है ? अच्छा चलो, देखें तो, कि माजरा क्या है ?"

अमीलिया,—"न जाने मेरा मन कैसा तो कर रहा है, मेरे मनमें कुछ शङ्का होती है।"

यह बात सुन सर रिचर्डके मनमें भी डर पैदा हो गया। तो भी मनको सम्हालकर उन्होंने कहा,—"तुम्हारा मन एकदम खराब हो गया है न, इसीसे ऐसा हो रहा है।"

अमीलिया,—"वह देखो, निश्चय ही यह हम लोगोंकी ओर ही देख रहा है। चलो लौट चलें।"

रिचर्ड,—"नहीं, बल्कि चलो आगे बढ़कर देखें, कि वह कौन है ? और उसे भेजा हो किसने है ? तुम्हें विपदस्थ देखकर तो मैं इङ्गलैण्डसे नहीं जा सकता। डर क्या है, साहस करो, अब तो उसके पास ही पहुंच गये हैं।"

अमीलिया,—"देखो, अब वह पेड़की ओटसे निकल आया, पर मानो अब वह हम लोगोंकी ओर उतना नहीं देखता। अब समझमें आया, कि मेरा भय अनर्थक ही था। जब मनुष्यका मन खराब रहता है, तब सामान्य घटनासे ही उसके मनमें अनेक प्रकारका सन्देह उठ खड़ा होता है।

सर रिचर्डने इस बातका कुछ भी जवाब न दिया। जिस आदमीको देखकर उनलोगोंके मनमें सन्देह पैदा हो गया था, अब वे लोग उसके पास ही पहुंच गये, सिर्फ कुछ ही कदमोंका फासिला रह गया। उस समय वह आदमी भी पेडकी आड़से बाहर आ दूसरी ओर देखने लगा। यह देख उन लोगोंने समझा, कि उन लोगोंका भय वृथा ही था।

उसी समय सहसा उनलोगोंकी ओर फिरकर उस आदमीने सर रिचर्डपर गोली चलाई।

यह देख अमीलिया चिल्ला उठी, साथ ही घोर आर्त्तनादकर सर रिचर्ड हैमफोर्डभी धमसे जमीनपर गिरपड़े। उनके गिरते ही राजकुमारी अमीलिया घुटनोंके बल उनके पास बैठ गई। उसी समय फिर तुरत पिस्तौलकी आवाज हुई।

अब भयसे विह्वल होकर राजनन्दिनीने हत्याकारीकी ओर देखा, तो उसेभी मरा हुआ पास ही पड़ा पाया।

* * * * *

प्राय: दश मिनटके बाद बागका माली उस ओर आया, तो देखा, कि खूनसे लथपथ एक लाश पड़ी है। उसका सिर चूर चूर हो गया है। देखनेसे यही मालूम होता था, कि मुँहमें पिस्तौलकी नली डालकर उसने आत्मघात कर लिया है। उससे कुछ दूरपर और एक पुरुष और उसके पासही एक स्त्री पड़ी हुई है। उस आदमीकी छाती परकी कमीज खूनसे तरबतर हो गई है। स्त्री मरी नहीं, पर बेहोश पड़ी है। उसे देखते ही माली पहचान गया, कि यहतो राजकुमारी अमीलिया है।

उसी समय कैसलसे कुछ आदमी आकर अमीलियाको उठा ले गये। कुछ देरके बाद जब उसे होश हुआ, तो धीरेधीरे उस भयानक घटनाकी बातें याद हो आईं।

घटना गुरुतर थी, इसलिये उसे एकदम छिपा रखना असम्भव था, पर यह बात किसीको भी मालूम न हुई, कि हत्याकाण्डके समय राजकुमारी अमीलिया वहां मौजूद थी। लोगोंने यही समझा, कि सर रिचर्ड हैमफोर्ड बागमें टहल रहे थे, उसी समय किसीने आकर उन्हें गोली मार दी और उसके बाद मारने वालेने खुद भी आत्मघात कर डाला। गोलीकी चोटसे उसका चेहरा ऐसा बिगड़ गया था, कि कोई उसे पहचान न सका।

सर रिचर्डकी लाश विण्डसर-गिर्जेमें ही गाड़ी गई। उनके हत्याकारीकी अन्त्येष्टि-क्रिया विधिपूर्वक नहीं हुई। रातके वक्त उसकी लाश पासहीकी सड़कके किनारे गाड़दी गई।

इस शोचनीय घटनाकी असल बात पाठक अवश्य ही समझ गये होंगे। पाठक अवश्य जान गये होंगे, कि यह आत्मघाती नरहन्ता जेम्स मेलमथके सिवाय और कोई नहीं था। उस दुर्दान्त नर-राक्षसने प्रिन्सके धोखेमें सर रिचर्डको गोली मारदी।

एकसौ नौ परिच्छेद।

नारी-रूपमें दानवी।

जिस दिन और जिस समय पूर्ववर्णित घटनायें घटीं थीं, ठीक उसी दिन और उसी समय लार्ड और लेडी होल्डरनेस अपने कावेण्डिस स्क्वेयरवाले मकानमें बैठे कोई गहरी सलाह कर रहे थे।

स्त्री पुरुष दोनों एकही आसनपर बैठे थे। फरनन्दाके हाथमें एक अखबार था। भय या शङ्का तो दूर रही, उसे देखनेसे साफ मालूम होता था, मानो वह जयोल्लाससे उल्लसित हो रही है, पर उसके स्वामीकी अवस्था कुछ औरही थी। उनको देखनेसे स्पष्ट मालूम होता था, कि उनका मन सुखी नहीं है और कोई भयानक आशङ्का उन्हें सता रही है। वे बेचारे बड़ी भारी विपदमें पड़ गये हैं। एकतो उनकी स्त्री पूर्णयुवती थी ही, तिसपर वह प्रबला थी। सुतरां लार्ड होल्डरनेस अपनी स्त्रीके क्रोध और तिरस्कारसे उतना नहीं डरते थे, जितना उसके व्यङ्ग वचन और तानेसे भय खाते थे। स्त्रीकी बातोंपर मुग्ध होकर उन्होंने दुष्कर्म तो कर डाला, पर अब हमेशा सशङ्कित और चिन्तित रहते हैं। जो हो, इस समय वे अपनी निर्भीक स्त्रीका मुख देख कुछ साहसी बन बैठे हैं।

कुछ देर दोनों स्त्री पुरुष चुपचाप बैठे रहे ; आखिर अहङ्कारकी दृष्टिसे स्वामीकी ओर देखकर फरनण्डाने कहा,—"क्यों वाल्टर! मैंने जो जो उपाय बताये हैं, वे तुम्हारे मनमें बैठते हैं न? पर तुम्हारा मुँह तो अब भी उदास ही बना है———"

लार्ड होल्डरनेस,—(कातरता सहित) "फरनण्डा! मुझे और कुछ न कहो। क्या करूं, मैं अबभी मनको ठीक नहीं कर सकता। डर मेरा पीछा नहीं छोड़ता। पर यह दशा भी हमेशा न बनी रहेगी। आंधी-तूफानके मिट जानेपर शायद मैं फिर सुखी हो सकूंगा,—फिर मजे उड़ा सकूंगा।"

फरनण्डा,—"तुम अबभी आंधी तूफानकी बात क्या कहते हो?"

होल्डरनेस,—"नहीं, मैं अधिक तो और कुछ नहीं चाहता, मैं सिर्फ यही चाहता हूं, कि डरके जो कुछ कारण हैं, उनके दूर हो जानेपर फिर यह हालत न रहेगी।"

फरनण्डा,—"समझती हूं। विपद टल जानेपर डर तुम्हारा पीछा छोड़ देगा, यह मैं खूब जानती हूं। वाल्टर! धन्य है तुम्हारा साहस।"

होल्डरनेस,—"फरनण्डा! और क्यों ताना मारती हो? तुम्हारी ही भलाईके लिये तो दुष्कर्म करके मैं विपदमें पड़ गया हूं—"

फरनण्डा,—"उसमें तुम्हारा कुछ लाभ नहीं था क्या?"

होल्डरनेस,—"फोर्ट ष्टोटकी धायको मारते समय मैंने तुम्हारी जो सहायता की थी, उसमें मेरा क्या लाभ था?"

यह बात सुन फरनण्डाकी आंखोंसे आग निकलने लगी, उसने कड़ककर कहा,—"तुम्हारा कुछभी लाभ न था? अपनी स्त्रीकी रक्षा करनेसे तुम्हें कुछ भी लाभ नहीं हुआ क्या?"

फरनण्डाका शरीर अति सुन्दर, अति रमणीय था, पर उसके भीतर घोर हलाहल भरा हुआ था। देखनेमें सुन्दर होनेपर भी

काली नागिनके छू लेनेसे प्राण विनाश हो जाता है। उस नारीरूपा काली-नागिनकी ओर डरसे देखकर लार्ड होल्डरनेसने कहा,—"हुआ क्यों नहीं—हुआ क्यों नहीं।"

जब उसने देखा, कि स्वामी पराजित हो गये हैं, तब वह बोली,—"डडलीकी जान लेनेसे दो मतलब हासिल हुए हैं। एक तो जिस बातके जाहिर होनेसे मेरा सर्वनाश हो जाता, वह बात हमेशाके लिये दब गई है। दूसरे जैसी हालतमें वह खून किया गया है, उससे वह अपराध अर्थर इटनके ऊपर ही जा पड़ा है।"

होल्डरनेस,—"सो तो ठीक है, पर कल जब ओल्डबेलीके दौरेमें अर्थरका मुकद्दमा खड़ा होगा, तब कहीं सब प्रमाण हम लोगोंके विरुद्ध ही खड़े हो जायं, तो क्या होगा?"

फरनण्डा,—"आह! अब वैसी कोई सम्भावना नहीं है। जरा इस कागजको देखो, सिर्फ कैरोलाइनसे ही हम लोगोंको डर था, पर जब वह परलोक सिधार गई है, तो अब डरका कोई कारण नहीं है।"

होल्डरनेस,—"पर विचारकर देखो, मेरे ऊपर सन्देह हो चाहे न हो, किन्तु तुम्हारे ऊपर अर्थरका कुछ सन्देह अवश्य है, इसमें कुछ भी सन्देह नहीं। इसीसे कहता हूं, कि अगर न्यूगेट-जेलमें ही अर्थरसे मिलकर कैरोलाइन सब बातें कह गई हो तो—"

यह बात सुन फरनण्डा एकदम घबरा उठी, पर तुरत ही मनको सम्हालकर कहने लगी,—"उन लोगोंमें मुलाकात हुई होगी, यह तो किसी तरह सम्भव नहीं दिखाई देता। यदि वैसा होता, यदि कैरोलाइन और अर्थरमें मुलाकात हुई होती, तो उसका जिक्र अवश्य इस अखबारमें छप जाता और अब तक हम लोग गिरफ्तार भी हो जाते।"

यह सुन लार्ड होल्डरनेस मारे डरके कांप उठे,—"जब तक इस छोकरे इटनका मुकद्दमा

तबतक हम लोग निश्चिन्त नहीं हो सकते। भगवानकी कृपासे और दो दिन अच्छी तरह कट जायं, तो समझूं, कि विपद टल गई।"

इसपर फरनण्डाने गम्भीरता पूर्वक कहा,—"हां और दो दिनोंमें जो कुछ होना होगा, हो जायगा। या तो हम लोग निश्चिन्त होकर सुख पूर्वक जिन्दगी हो बितावेंगे और नहीं तो मर जायंगे।"

स्त्रीकी ऐसी बात सुनतेही लार्ड होल्डरनेस कांप उठे। उन्होंने कहा,—"मर जायंगे, यह क्या कहती हो?"

फरनण्डा,—"कहती यही हूं, कि यदि सचमुच ही कोई विपद आती दिखाई देगी, तो पहलेही काम तमाम कर डालना होगा।"

होल्डरनेस,—(भय सहित) "क्या आत्महत्या करके?"

फरनण्डा,—"और नहीं तो क्या? क्या तुम इसे पसन्द नहीं करते? फांसी पड़ना अच्छा लगता है क्या?"

फांसीका नाम सुनते ही बेचारे लार्ड होल्डरनेसका होश हवास उड़ गया। वे थरथर कांपते हुए कहने लगे,—"हाय भगवान! कैसी आफत है! चारों ओर एकहीसा दीखता है। अच्छा फरनण्डा! तुम्हारी समझमें तो डरकी कोई बात नहीं है न? तुम्होंने अभी कहा है, कि भयका कोई कारण नहीं है, फिर तुम इतना डरती क्यों हो? साफ साफ कहो तो,—क्या तुम्हारे मनमें यह विश्वास होता है, कि अर्थर इटन अपनेको दोनों खूनोंके इलजामसे बचाकर सारा दोष हम लोगोंके मत्थे मढ़ देगा?"

फरनण्डा,—"मैं तो तुमसे पहले ही कह चुकी हूं, कि जहां-तक मुझे विश्वास है, हम लोगोंपर विपद आनेकी कोई सम्भावना नहीं है। पर जैसा तुम कहते हो, यह बात मुझे भी स्वीकार करनी पड़ती है, कि कैरोलाइनके साथ अर्थर इटनकी मुलाकात होने पर बहुत कुछ निर्भर करता है। अर्थरके विरुद्ध जो कुछ प्रमाण

मिले हैं, उनमें छुरीवाला प्रमाण ही सबसे जबर्दस्त है। अर्थरके दौरा सुपुर्द होनेके समय मुवाइमेका जैसा रंग था, अगर अबभी वैसाही हो, तो उसके सजा पानेमें कोई शक नहीं है।"

अब लार्ड होल्डरनेसके मनमें आशंकाके नये नये कारण उठने लगे। उन्होंने कहा,—"तुम जिस छुरीकी बात कहती हो, क्या वह उसकी कोई कैफियत न दे सकेगा? अच्छा मानलो, कि जिस दुकानदारकी दुकानसे मैंने वह छुरी खरीदी थी, वही आकर अदालतमें हाजिर होजाय—"

फरनण्डा,—"यह कैसे हो सकता है? जब तक कोई उसे खोज न लावे, तब तक वह आपही कैसे आसकता है? और तुमने जो छुरी खरीदी थी, उसके किसी फलमें नाम तो नहीं खुदा था?"

होल्डरनेस,—"सो तो नही था, पर और एक बात है।"

फरनण्डा,—"क्या?"

होल्डरनेस,—"अच्छा तुमजो छुरीकी बात कहती हो, तो क्या अर्थर उसकी कोई माकूल कैफियत नहीं दे सकता? गारदमें बैठे बैठे उसने सारी घटनाओं और सब बातोंको अच्छी तरह सोच-विचार कर याद कर लिया होगा। क्या उसे यह न याद होगा, कि हम लोग अपनी शादीके बाद तुरतही उससे हैनोवर-स्क्वयरमें मुलाकात करने गये थे?" *

फरनण्डा,—"इस बातको अभी वह न भूला होगा?"

होल्डरनेस,—"कैसे भूल सकता है? अगर बात ऐसीही है, तो यह भी उसे निश्चय ही याद होगा, कि जब तुम अकेली उसके पास बैठी थीं तब मैं बहाना करके उसकी लाइब्रेरीमें चला गया था। अच्छा, अगर यह बात उसे याद होजाय, तो यह खयाल कर लेना, कि मैं ही उसके सोनेके कमरेकी दराजके भीतर उस छुरीके फलकी

* देखो दूसरा खण्ड—११६ परिच्छेद

रख आया था, असम्भव नहीं है। और जो आदमी छिपकर छुरीके टूटे हुए फलको दूसरेके दराजमें रख सकता है, वह उसकी मूठमें "डबल्यू॰ डी॰" दो अक्षर भी खोद सकता है, ऐसा खयाल कर लेना बहुत सहज है।"

अब खड़ी होकर फरनण्डाने कहा,—"तुम बहुत डर गये हो। इतना अधिक डरजानेके कारण ही तुम इस तरह खोद खोदकर बातें निकाल रहे हो।"

इसी समय एक नौकरने आकर कहा, कि एक आदमी आया है और अभी आप दोनों आदमियोंसे मुलाकात करना चाहता है।

इसपर फरनण्डाने निःशङ्क चित्तसे कहा,—"जाओ, उसे इस कमरेमें ले आओ।"

नौकरके चले जानेपर फरनण्डाने देखा, कि उसके स्वामीका चेहरा मारे डरके जर्द हो गया है और वे थरथर कांप रहे हैं, यह देख उन्हें बगलवाले कमरेमें ठेलकर उसने गम्भीरतापूर्वक कहा,—"वाल्टर, उस कमरेमें चले जाओ। अगर देखूंगी, कि सचमुच ही भयका कारण है, तो जो करना होगा, मैं खुद करलूंगी। और यदि भयका कोई कारण न हो, केवल सन्देह ही हो, तो तुम्हारा चेहरा देखनेसे वह सन्देह पक्का हो जायगा।"

स्वामीको बगल वाले कमरेमें भेज फरनण्डाने खिड़कीके पास जाकर देखा, कि एक भयङ्कर आदमी मकानके ठीक सामने खड़ा है और उससे कुछ दूरपर वैसा ही एक दूसरा आदमी इधर-उधर टहल रहा है, उस दूसरे आदमीसे कुछ ही दूरके फासलेपर और एक तीसरा आदमी लेम्पके खम्भेके सहारे खड़ा हुआ है।

यह माजरा देख फरनण्डाका कलेजा दहल उठा। उसे विश्वास हो गया, कि सारी आशा मट्टीमें मिल गई। उसके पतिकी आशङ्का ही ठीक हुआ चाहती है। फरनण्डा स्वभावसेही निडर

मिले हैं, उनमें छुरीवाला प्रमाण ही सबसे जबर्दस्त है। अर्थरके दौरा सुपुर्द होनेके समय मुकद्दमेका जैसा रंग था, अगर अबभी वैसाही हो, तो उसके सजा पानेमें कोई शक नहीं है।"

अब लार्ड होल्डरनेसके मनमें आशंकाके नये नये कारण उठने लगे। उन्होंने कहा,—"तुम जिस छुरीकी बात कहती हो, क्या वह उसकी कोई कैफियत न दे सकेगा? अच्छा मानलो, कि जिस दुकानदारकी दुकानसे मैंने वह छुरी खरीदी थी, वही आकर अदालतमें हाजिर होजाय—"

फरनण्डा,—"यह कैसे हो सकता है? जब तक कोई उसे खोज न लावे, तब तक वह आपही कैसे आसकता है? और तुमने जो, छुरी खरीदी थी, उसके किसी फलमें नाम तो नहीं खुदा था?"

होल्डरनेस,—"सो तो नहीं था, पर और एक बात है।"

फरनण्डा,—"क्या?"

होल्डरनेस,—"अच्छा तुमजो छुरीकी बात कहती हो, तो क्या अर्थर उसकी कोई माकूल कैफियत नहीं दे सकता? गारदमें बैठे बैठे उसने सारी घटनाओं और सब बातोंको अच्छी तरह सोच-विचार कर याद कर लिया होगा। क्या उसे यह न याद होगा, कि हम लोग अपनी शादीके बाद तुरतही उससे हैनोवर-स्क्वायरमें मुलाकात करने गये थे?" *

फरनण्डा,—"इस बातको अभी वह न भूला होगा?"

होल्डरनेस,—"कैसे भूल सकता है? अगर बात ऐसीही है, तो यह भी उसे निश्चय ही याद होगा, कि जब तुम अकेली उसके पास बैठी थीं तब मैं बहाना करके उसकी लाइब्रेरीमें चला गया था। अच्छा, अगर यह बात उसे याद होजाय, तो यह खयाल कर लेना, कि मैं ही उसके सोनेके कमरेकी दराजके भीतर उस छुरीके फलकी

* देखो दूसरा खण्ड—११६ परिच्छेद

होल्डरनेस,—"मैंने सब सुना है ?"

फरनण्डा,—"खैर, जो कुछ सुना है, उससे अवश्य ही समझ गये होगे, कि यह शख्स कानिष्टबल है। इसके सिवाय और भी कई आदमी बाहर मौजूद हैं। यह लोग हम लोगोंको गिरफ्तार करनेके लिये ही आये हैं।"

होल्डरनेस,—"तो आओ, अब इस संसारसे कूचकर दें। हाय ! मेरी दुःखिनी लड़कियोंकी क्या दशा होगी——"

फरनण्डा,—"अब बेफायदा रोने-धोनेसे क्या लाभ ?" देखो समय नहीं है——"

होल्डरनेस,—"ठीक कहती हो, अभी न मरनेसे कुछ दिनोंके बाद बुरी तरह मरना पड़ेगा। अच्छा, किस उपायसे——"

इसपर छातीसे दो छोटी छोटी शीशियां निकालकर फरनण्डाने कहा,—"यह देखो, मैं इस समयके लिये हमेशा तय्यार रहती थी, और मैं ही क्यों, तुम्हारा भी बन्दोबस्त कर रखा था।"

फरनण्डाकी दी हुई शीशीको लेकर लार्ड होल्डरनेसने कहा,—"अब अन्तिम समय उपस्थित है। आओ, एकबार छातीसे लगजाओ और एक चुम्मा देदो। हाय ! यदि तुमने मुझसे वह पाप कर्म न कराया होता, तो हम लोगोंके दिन कैसे सुखसे कटते। अब हम लोग मृत्युको आलिङ्गन करनेके लिये तय्यार हैं, आज तुम मेरी आंखोंमें बहुतही सुन्दर जंच रही हो फरनण्डा।"

इतना कह और उस काली नागिनको छातीसे लगाकर लार्ड होल्डरनेस बार बार उसे चूमने लगे, पर स्वामीके अन्तिम आलिङ्गनसे निकालकर फरनण्डा कहने लगी,—"बस वाल्टर ! यही समय है। अब देर करनेका वक्त नहीं है। और अभी हम लोगोंमें साहस भी है।" इतना कहकर फरनण्डा सोफापर बैठ गई। उसके बाद लार्ड होल्डरनेस भी उसकी बगलमें जाबैठे।

और साहसी थी, इसलिये आगन्तुकसे मिलनेके लिये तय्यार होगई।

इसी समय नौकर उस आदमीको लेकर कमरेमें आ पहुंचा। नौकरको जानेका हुक्म देकर फरनण्डाने आगन्तुककी ओर देखा, तो उसे मालूम हो गया, कि यह पुलिसका आदमी है। उस समय वह कर ही क्या सकती थी। उसने साहस करके पूछा,—"किस कामके लिये आये हो?"

आगन्तुक,—"आपसे एक जरूरी कामके बारेमें कुछ कहना है, और अगर लार्ड होल्डरनेस मकानपर हों, तो इस समय उनका इस जगह हाजिर रहना बहुत ही जरूरी है——"

फरनण्डा,—"क्या नौकरने नहीं कहा, कि वे मकान ही में हैं?"

आगन्तुक हमारा पूर्व परिचित, बो-ष्ट्रीटका पुलिस अफसर था। उसका नाम क्रौली था। उसने बहुत जमाना देखा था, इसलिये अपने काममें वह बड़ा ही होशियार था। फरनण्डाको इस तरह निडर बातचीत करते देख वह अवाक हो गया। आखिर उसने जवाब दिया,—"जीहां, कहा तो है।"

फरनण्डा,—"अच्छा, अब अपना काम बताओ।"

आगन्तुक,—"सच तो यह है, कि काम अच्छा नहीं है। लार्ड होल्डरनेस आ जायं, तो आप दोनोंके सामने ही सब कह दूं।"

"अच्छा तो बैठो, मैं लार्ड होल्डरनेसको बुला लाती हूं।" इतना कहकर फरनण्डा धीरे धीरे बगलवाले कमरेमें चली गई और भीतरसे उसने दरवाजा बन्द कर लिया।

फरनण्डा और क्रौलीमें जो बातचीत हुई, दरवाजेके पीछे छिपकर लार्ड होल्डरनेसने सब सुन लिया था। कोई उपाय न देख वे अत्यन्त घबरा उठे थे। कमरेमें जा और उनकी यह दशा देख फरनण्डा बहुत खुश हुई और सादर उनका हाथ पकड़कर धीरेसे बोली,—"सर्वनाश उपस्थित है।"

होल्डरनेस,—"मैंने सब सुना है?"

फरनण्डा,—"खैर, जो कुछ सुना है, उससे अवश्य ही समझ गये होगे, कि यह शख्स कानिष्टबल है। इसके सिवाय और भी कई आदमी बाहर मौजूद हैं। यह लोग हम लोगोंको गिरफ्तार करनेके लिये ही आये हैं।"

होल्डरनेस,—"तो आओ, अब इस संसारसे कूचकर दें। हाय! मेरी दुःखिनी लड़कियोंकी क्या दशा होगी———"

फरनण्डा,—"अब बेफायदा रोने-धोनेसे क्या लाभ?" देखो समय नहीं है———"

होल्डरनेस,—"ठीक कहती हो, अभी न मरनेसे कुछ दिनोंके बाद बुरी तरह मरना पड़ेगा। अच्छा, किस उपायसे———"

इसपर छातीसे दो छोटी छोटी शीशियां निकालकर फरनण्डाने कहा,—"यह देखो, मैं इस समयके लिये हमेशा तय्यार रहती थी, और मैं ही क्यों, तुम्हारा भी बन्दोबस्त कर रखा था।"

फरनण्डाकी दी हुई शीशीको लेकर लार्ड होल्डरनेसने कहा,—"अब अन्तिम समय उपस्थित है। आओ, एकबार छातीसे लगजाओ और एक चुम्मा देदो। हाय! यदि तुमने मुझसे वह पाप कर्म न कराया होता, तो हम लोगोंके दिन कैसे सुखसे कटते। अब हम लोग मृत्युको आलिङ्गन करनेके लिये तय्यार हैं, आज तुम मेरी आंखोंमें बहुतही सुन्दर जंच रही हो फरनण्डा।"

इतना कह और उस काली नागिनको छातीसे लगाकर लार्ड होल्डरनेस बार बार उसे चूमने लगे, पर लार्डके अन्तिम आलिङ्गनसे निकलकर फरनण्डा कहने लगी,—"बस यान्टर! यही समय है। अब देर करनेका वक्त नहीं है। और अभी हम लोगोंमें साहस भी है।" इतना कहकर फरनण्डा सोफापर बैठ गई। उसके बाद लार्ड होल्डरनेस भी उसको बगलमें जाबैठे।

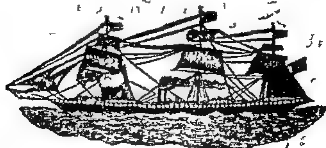
अपनी स्त्रीका ऐसा अद्भुत साहस देख लार्ड होल्डरनेसने भी हिम्मत बांधकर कहा,—"आओ, हम लोग एक साथ ही पियें।"

इसके बाद दोनोंने एक दूसरेकी ओर देखते हुए अपनी अपनी शीशीको मुँहसे लगा दिया।

उधर बगलवाले कमरेमें बैठा हुआ क्रोली लार्ड और लेडी होल्डरनेसकी राह देख रहा था, पर अचानक धमाकेकी आवाज सुनकर वह चौंक उठा। यह धमाका आदमीके गिरनेका सा था। उसे सुनतेही क्रोलीके मनमें चोर बैठ गया, साथ ही वह समझ गया, कि खैरियत नहीं है।

इस खयालके होते ही क्रोली चट उठ खड़ा हुआ और दरवाजे को खोलकर कमरेके अन्दर जा पहुँचा। वहां पहुँचकर उसने जो भयानक दृश्य देखा, उससे वह अवाक रह गया। उसने देखा, कि सोफापर फ़रनफ़ो बेसुध पड़ी है, उसका सिर नीचे लटक रहा है, और उसके पास ही गलीचेके ऊपर लार्ड होल्डरनेस हाथ पैर फैलाये पड़े हैं। दोनोंको प्राणवायु निकल गई है।

उसी जगह दो खाली शीशियां भी पड़ी हुई थीं। उन्हें देखते ही क्रोली समझ गया, कि मृत्युका आलिङ्गन करनेके लिये विषकी सहायता ली गई है। इसी समय अपराधिनी फ़रनफ़ोने मिसेस लिण्डलीके बनाये "वारिसका दोस्त" नामक विषको अन्तिम बार काममें लिया था।



परिशिष्ट ।

ऊपर लिखी घटनाके दूसरे दिन ओल्डबेली अदालतमें आनरेबल अर्थर हटनका मुकद्दमा पेश हुआ । बो-ष्ट्रीटके मजिष्ट्रेटकी इजलासमें इस मुकद्दमेका जैसा रङ्ग था, इस अदालतमें पहुंचते ही उसने कुछ दूसरा रङ्ग पकड़ लिया । अर्थर हटनके कौंसिलोंने अपने, मुअक्किल और फरनण्डाकी पूर्व सम्बन्धका विस्तारपूर्वक वर्णन किया— अर्थरका फरनण्डाको फुसलाकर उसका धर्म नष्ट करना, बदला लेनेके लिये फरनण्डाका अर्थरको जगह देना, उसका मौतकी किनारे पहुंच जाना फोर-ष्ट्रीटकी धायके यहांसे अर्थरको अकस्मात् विष और उसके तोड़का नुसखा मिलजाना, मिष्टर ब्रैडफोर्डका विषकी जांच करना, डडलीकी फरनण्डाको मदद करनेके समय पकड़ना, और माफ कर देना, फिर लेडी होल्डरनेस होजानेके बाद फरनण्डाका अपने पतिके साथ अर्थरके मकानपर जाना और पिछली बातोंको भूलकर आगेके लिये दोस्ती करलेनेका प्रस्ताव करना,—इन सब बातोंका बयान कौंसिलोंने अच्छी तरह कर दिया । इसके बाद उसने फोर-ष्ट्रीटकी धायके वहां फरनण्डा और कैरोलाइन वाल्टर्सकी जान पहचान होनेका जिक्र किया । यह जिक्र खासकर यह दिखलानेके लिये किया गया था, कि फरनण्डा अपने लड़केको मारडालनेके जुर्ममें शरीक हुई थी । इसके बाद उसने यह दिखाया, कि विलियम डडली और मिसेस लिण्डलीका खून करनेमें फरनण्डाका क्या उद्देश्य था । फिर उसने यह कह कर अपनी बहस खतम की, कि लार्ड और लेडी होल्डरनेसका पासघात हो इस बातका पक्का प्रमाण

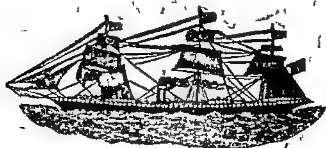
अपनी स्त्रीका ऐसा अद्भुत साहस देख लार्ड होलूडरनेसने भी हिम्मत बांधकर कहा,—"आओ, हम लोग एक साथ ही पियें।"

इसके बाद दोनोंने एक दूसरेकी ओर देखते हुए अपनी अपनी शीशीको मुँहसे लगा दिया।

उधर बगलवाले कमरेमें बैठा हुआ कौली लार्ड और लेडी होलूडरनेसकी राह देख रहा था, पर अचानक धमाकेकी आवाज सुनकर वह चौंक उठा। यह धमाका आदमीके गिरनेका सा था। उसे सुनतेही कौलीके मनमें चोर बैठ गया, साथ ही वह समझ गया, कि खैरियत नहीं है।

इस खयालके होते ही कौली चट उठ खड़ा हुआ और दरवाजेको खोलकर कमरेके अन्दर जा पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने जो भयानक दृश्य देखा, उससे वह अवाक रह गया। उसने देखा, कि सोफापर फरनण्डा बेसुध पड़ी है, उसका शिर नीचे लटक रहा है, और उसके पास ही गलीचेके ऊपर लार्ड होलूडरनेस हाथ पैर फैलाये पड़े हैं। दोनोंको प्राणवायु निकल गई है।

उसी जगह दो खाली शीशियां भी पड़ी हुई थीं। उन्हें देखते ही कौली समझ गया, कि मृत्युका आलिङ्गन करनेके लिये विषकी सहायता ली गई है। इसी समय अपराधिनी फरनण्डाने मिसेस लिण्डलीके बनाये "बारिसका दोस्त" नामक विषको अन्तिम बार काममें लिया था।



परिशिष्ट ।

ऊपर लिखी घटनाके दूसरे-दिन ओल्डबेली अदालतमें आनरेबल अर्थर हटनाका मुकद्दमा पेश हुआ । वो-ष्ट्रीटके मजिष्ट्रेटके इजलासमें इस मुकद्दमेका जैसा रङ्ग था, इस अदालतमें पहुंचते ही उसने कुछ दूसरा रङ्ग पकड़ लिया । अर्थर हटनके कौंसिलीने अपने, मुवक्किल और फरनण्डाके पूर्व सम्बन्धका विस्तारपूर्वक वर्णन किया— अर्थरका फरनण्डाको फुसलाकर उसका धर्म नष्ट करना, बदला लेनेके लिये फरनण्डाका अर्थरको जगह देना, उसका मौतके किनारे पहुंच जाना फोर-ष्ट्रीटकी धायके यहांसे अर्थरको अकस्मात् विष और उसकी तोड़का नुसखा मिलजाना, मिष्टर ब्रैडफोर्डका विष-की जांच करना, डडलीको फरनण्डाको मदद करनेके समय पकड़ना, और माफ कर देना, फिर लेडी होल्डरनेस होजानेके बाद फरन-ण्डाका अपने पतिके साथ अर्थरके मकानपर जाना और पिछली बातों को भूलकर आगेके लिये दोस्ती करलेनेका प्रस्ताव करना,—इन सब बातोंका बयान कौंसिलीने अच्छी तरह कर दिया । इसके बाद उसने फोर-ष्ट्रीटकी धायके वहां फरनण्डा और केरोलाइन वाल्टर्सकी जान पहचान होनेका जिक्र किया । यह जिक्र खासकर यह दिखलानेके लिये किया गया था, कि फरनण्डा अपने लड़केके मारडालनेके जुर्ममें शरीक हुई थी । इसके बाद उसने यह दिखाया, कि विलियम डडली और मिसेस लिण्डलीका खून करनेमें फरनण्डाका क्या उद्देश्य था । फिर उसने यह कह कर अपनी बहस खतम की, कि लार्ड और लेडी होल्डरनेसका आत्मघात ही इस बातका पक्का प्रमाण

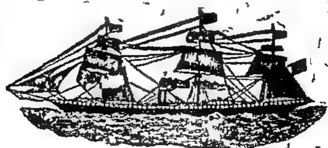
अपनी स्त्रीका ऐसा अद्भुत साहस देख लार्ड होल्डरनेसने भी हिम्मत बांधकर कहा,—"आओ, हम लोग एक साथ ही पियें।"

इसके बाद दोनोंने एक दूसरेकी ओर देखते हुए अपनी अपनी शीशीको मुँहसे लगा दिया।

उधर बगलवाले कमरेमें बैठा हुआ क्रौली लार्ड और लेडी होल्डरनेसकी राह देख रहा था, पर अचानक धमाकेकी आवाज सुनकर वह चौंक उठा। यह धमाका आदमीके गिरनेका सा था। उसे सुनतेही क्रौलीके मनमें चोर बैठ गया, साथ ही वह समझ गया, कि खैरियत नहीं है।

इस खयालके होते ही क्रौली चट उठ खड़ा हुआ और दरवाजेको खोलकर कमरेके अन्दर जा पहुंचा। वहां पहुंचकर उसने जो भयानक दृश्य देखा, उससे वह अवाक रह गया। उसने देखा, कि सोफापर फरनण्डा बेसुध पड़ी है, उसका शिर नीचे लटक रहा है, और उसके पास ही गलीचेके ऊपर लार्ड होल्डरनेस हाथ पैर फैलाये पड़े हैं। दोनोंको प्राणवायु निकल गई है।

उसी जगह दो खाली शीशियां भी पड़ी हुई थीं। उन्हें देखते ही क्रौली समझ गया, कि मृत्युका आलिङ्गन करनेके लिये विषकी सहायता ली गई है। इसी समय अपराधिनी फरनण्डाने मिसेस लिण्डलीके बनाये "वारिसका दोस्त" नामक विषको अन्तिम बार काममें लिया था।



परिशिष्ट ।

ऊपर लिखी घटनाके दूसरे दिन ओल्डबेली अदालतमें आनरेबुल अर्थर इटनका मुकद्दमा पेश हुआ । बो-ष्ट्रीटके मजिष्ट्रेटके इजलासमें इस मुकद्दमेका जैसा रङ्ग था, इस अदालतमें पहुंचते ही उसने कुछ दूसरा रङ्ग पकड़ लिया । अर्थर इटनके कौंसिलीने अपने, मुवक्किल और फरनण्डाके पूर्व सम्बन्धका विस्तारपूर्वक वर्णन किया—अर्थरका फरनण्डाको फुसलाकर उसका धर्म नष्ट करना, बदला लेनेके लिये फरनण्डाका अर्थरको जगह देना, उसका मौतके किनारे पहुंच जाना फोर-ष्ट्रीटकी धायके यहांसे अर्थरको अकस्मात् विष और उसके तोड़का नुसखा मिलजाना, मिष्टर ब्रेडफोर्डका विष-की जांच करना, डडलीको फरनण्डाकी मदद करनेके समय पकड़ना, और माफ कर देना, फिर लेडी होल्डरनेस होजानेके बाद फरन-ण्डाका अपने पतिके साथ अर्थरके मकानपर जाना और पिछली बातों-को भूलकर आगेके लिये दोस्ती करलेनेका प्रस्ताव करना,—इन सब बातोंका बयान कौंसिलीने अच्छी तरह कर दिया । इसके बाद उसने फोर-ष्ट्रीटकी धायके बहां फरनण्डा और कैरोलाइन वाल्टर्सकी जान पहचान होनेका जिक्र किया । यह जिक्र खासकर यह दिखलानेके लिये किया गया था, कि फरनण्डा अपने लड़केके मारडालनेके जुर्ममें शरीक हुई थी । इसके बाद उसने यह दिखाया, कि विलियम डडली और मिसेस लिण्डलीका खून करनेमें फरनण्डाका क्या उद्देश्य था । फिर उसने यह बात कह अपनी बहस खतम की, कि लार्ड और लेडी होल्डरनेसका आत्मघात ही इस बातका पक्का प्रमाण

है, कि उन्हीं दोनोंने मिलकर वे दोनों खून किये थे, जिनके जुर्ममें आनरेब्‌ल अर्थर इटन अबतक जेलमें पड़े सड़ रहे हैं। इसके बाद मिस्टर अँडफोर्डकी गवाही हुई। उन्होंने जहर और उसके तोड़की जांच करनेकी बात स्वीकार की। फिर एक दुकानदार बुलाया गया। उसने टूटी हुई छुरीको पहचान कर कहा, कि इसे मैंने एक रईसके हाथ बेचा था। इतना कहकर उसने उस रईसके डीलडौल और चेहरे-मोहरेका बयान किया। उस बयानसे यह बात अच्छी तरह साबित हो गई, कि वह खरीददार लार्ड होलडरनेस ही थे। बस इस गवाहके बाद ही कौंसिलीने अपना वक्तव्य समाप्त कर दिया, जिसके प्रभावसे हाकिमने आनरेब्‌ल अर्थर इटनको बेलाग छोड़ दिया।

इस जगह यह कह देना अत्यन्त आवश्यक है, कि कैरोलाइन वाल्टर्सने न्यूगेट-जेलमें कैरोटी पील, मेगसमैन और बिग बेगरमैनकी जो बात-चीत सुनी थी और जिसे उसने अर्थर इटनसे कह दिया था उसका कोई जिक्र नहीं किया गया। इसका कारण यही था, कि एकतो अर्थर इटनके मुकद्दमेसे उसका कुछ सम्बन्ध न था, और दूसरे उन बातोंको खोलकर उन्होंने फरनण्डाका मुँह और भी काला करना उचित न समझा।

अर्थर इटनका मुकद्दमा खतम हो जानेके बाद मेगसमैन और बिग बेगरमैनका मुकद्दमा पेश हुआ। उन दोनों पर समुद्रमें डाका डालने और खून करनेका जुर्म लगाया गया था। वाटकिन्स और ग्रैहली जो इन दोनों बदमाशोंके साथ ही रायल जार्ज नामक जहाजपर काम करते थे, सरकारी गवाह बना दिये गये। उनके अलावा फायर फ्लाई जहाजके बचे हुए माझी पाल विलिङ्गटनका इजहार लिया गया। इन तीनोंके इजहारसे दोनों बदमाशों पर मुकद्दमा अच्छी तरह साबित हो गया, इसलिये अदालतसे उन्हें फांसीकी सजा मिली पर इन दोनों बदमाशोंने उस सजाकी कोई परवाह न की, क्योंकि

उन लोगोंको विश्वास था, कि कैरोटो मोस और गैलोज विडोने प्रिन्स-आफ-वेल्ससे जो माफीका परवाना लिखा लिया है, उसके पेश करते ही फांसोको सजा रद्द करदी जायगी।

पाठकोंको शायद याद होगा, कि मिष्टर रिगडेनके आफिससे लार्ड फ्लोरिमेलके कागजोंके उडजानेके बाद कैरोलाइन वाल्टर्सने उनके पास लिख भेजा था, कि होर्सलौडाउनमें शराबखाना रखनेवाली मेरी प्राइस नाम्नी औरतके कहनेसे ही अलफ्रेडने कागजोंको चुरा लिया है। रिगडेन ऐसे आदमी न थे, जो किसी बुराईका बिना बदला लिये चुप रह जाते। अलफ्रेडने उनकी आंखमें धूल झोंककर कागजोंको उड़ा लिया था, इससे वह उसपर बहुत ही नाराज थे। कैरोलाइनकी चिट्ठी पाकर रिगडेनने प्राइस और उसके शराबखानेके बारेमें थोड़ी सी तहकीकात की। उसके बाद वे सीधे बो-ष्ट्रीटवाली पुलिस-अदालतमें चले गये और यह नालिश ठोंक दी, कि होर्सलौडाउनके वेगर्स-टाफके रहनेवाले वा वहांके जानेवाले कुछ आदमियोंके बहकानेसे अलफ्रेडने उनकी गहरी रकमपर हाथ फेर दिया है, असलमें यह बात सच न थी, और सच बात वे कहही कैसे सकते थे? क्योंकि लार्ड फ्लोरिमेलके कागज तो कुछ इमानदारोंके साथ उनके हाथ लगेही न थे। जो हो, उनकी नालिशके मुताबिक अलफ्रेड और मेरी प्राइसके नाम वारण्ट जारी हो गया, और उसके तामीलका भार क्रौलीको दिया गया। जिस दिन मैगूसमैन और वेगरमैनका मुकद्दमा ओल्डबेली अदालतमें समाप्त हुआ, उसी दिन रातके वक्त क्रौलीने वेगर्स-टाफपर धावा कर दिया। अलफ्रेड और मेरी प्राइस दोनों गिरफतार कर लिये गये। उनके कुछ और ऐसे आदमी भी गिरफ्तार हुए, जिनकी तलाश पुलिस बहुत दिनोंसे कर रही थी। उन लोगोंके नाम ये थे,—गैलोज-विडो, ग्रिग्स, माइक्स पजलोक, डिक ट्रम्मर और किचिन मैंगू। इसके सिवाय मकानकी रत्ती रत्ती

तलाशी ली गई, जिससे चोरीका बहुतसा माल बरामद हुआ। इस मालके साथ साथ वह परवानाभी मिला, जिसे कैरोटीपोलने अपने बाप और मैगसमैनको रिहाईके लिये प्रिन्स-आफ-वेल्ससे धमकाकर लिखा लिया था।

अकस्मात् इस तरह गिरफ्तार होजानेका, गैलोजविडो और कैरोटीपोलको बहुतही रंज हुआ। दोनोंने क्रौलोको बहुत आजू-मिन्नत की और डराया धमकाया भी, पर मुराद हासिल न हुई। वेगर्स-ष्टाफमें जितने आदमी कैद किये गये थे, सबके सब जेलमें पहुंचा दिये गये।

उसी रातको प्रिन्सका लिखा हुआ परवाना उनके पास वापिस भेज दिया गया। इसके कुछ ही दिनों बाद क्रौलो सालाना साढे चार हजार रुपयेकी जगहपर एक जेलका गवर्नर बना दिया गया।

इस जगह हम यह भी कहदेना चाहते हैं, कि जिस रातमें पुलिसने वेगर्स ष्टाफपर धावा किया, उसी रातमें ग्रैफटन-ष्ट्रीटमें एक भयानक काण्ड हो गया। लार्ड मण्टगुमरीके मकानसे सटा हुआ एक रईसका मकान था। उस वक्त उसमें जलसा हो रहा था। खूब चहल-पहल और धूम-धाम मची हुई थी। उसी समय लार्ड मण्ट-गुमरी लेडी वेलेण्डनसे मुलाकात करके अपने घर आ रहे थे। उस मकानके सामने आकर, जो रोशनीसे जगमगा रहा था और जिसके अन्दर गाने बजानेकी सुरीली आवाजें निकल रही थीं, मण्टगुमरीने साफ सुथरे कपड़े पहने एक लड़केको खडे देखा। उस वक्त तो उन्होंने इस बातका कुछ खयाल न किया, क्योंकि वे अपनी फुफेरी बहिन फ्लोरेन्स और उसके खामीके आत्म-घातकी बात सुनकर सोचमें डूबे हुए थे, पर प्रायः आध घण्टेके बाद जब उन्होंने अपने बैठकखानेकी खिड़कीसे झांककर बाहर देखा, तो उस वक्त भी उस लड़केको उसी जगह खड़े पाया। इस बातसे उनके मनमें यह सन्देह उठा, कि

हो न हो, इस लड़केकी नीयत कुछ बुरी है। इस सन्देहके उठते ही वे चट बाहर चले आये और उस लड़केके पास जाकर पूछा, कि तू यहां क्या करता है? वह लड़का उन्हें देख एकदम घबरा उठा और अपने कोटके पाकेटमें किसी चीजको छिपाने लगा। यह देख मण्टगुमरीका सन्देह और भी बढ़ गया और उसका हाथ पकड़कर पूछने लगे, कि बता, वह कौन सी चीज है। उधर यह लड़का लार्ड मण्टगुमरीके पञ्जेसे निकलनेके लिये छटपटाने लगा। नतीजा यह हुआ, कि वह चीज लड़केके हाथसे छूटकर जमीनपर गिर पड़ी। साथ ही धड़ाकेकी एक भयानक आवाज हुई, जिसे सुन जलसेवाले मकानके मेहमान और मण्टगुमरीके नौकर-चाकर दौड़ पड़े। उनलोगोंने आकर देखा, कि आस-पासके मकानोंकी खिड़कियोंके शीशे चूर चूर हो गये हैं और मण्टगुमरी तथा वह लड़का दोनों बेजान पड़े हुए हैं। उन लोगोंकी देहसे खूनकी धारा बह रही है और चेहरा बेतरह बिगड़ गया है। लोग दोनोंको उठाकर मकानके अन्दर ले गये और डाक्टरको बुलाकर दिखाया सुनाया, पर सब चेष्टा व्यर्थ हुई। इस तरह लार्ड मण्टगुमरी उस नर-राक्षसके लड़केके साथ परलोक सिधार गये।

सजा पानेके कुछ देर बाद जोसेफ वारेन और ष्टिफेन प्राइसकी सारी उम्मीदें मट्टीमें मिल गईं। जिस परवानेपर भरोसा कर अब तक वे लोग लापरवाह थे, वह उनके हाथसे निकल गया और फरनण्डो तथा लार्ड मण्टगुमरी भी, जिनको डरा धमकाकर वे लोग अपनी मददपर खड़ा कर सकते, यमपुरी सिधार गये। लाचार उन लोगोंने अपने भाग्यपर ही भरोसा किया और यथा समय फांसीपर लटका दिये गये।

फौजीने जिन आदमियोंको बेगर्स-ष्टाफमें कैद किया था, उनको उनके कुसूरके मुताबिक मुनासिब सजा मिल गई और रिगडेनके

हलफ लेकर बयान करनेपर अलफ्रेडको दो वर्षको सजा दी गई। उधर रिगडेन जबतक जीते रहे, तबतक अपने काममें मशगूल रहे।

किञ्चिन ग्रेएडके सजा पा जानेपर भी किञ्चिन-केनको कोई हानि नहीं हुई, क्योंकि सिक्सटर साल और ओल्ड ब्लोक, वगैरहकी कोशिशसे चोरी बदमाशीका काम जारी रहा और सिक्सटर साल तथा ओल्ड ब्लोकके दिन सुख-चैनसे कटते गये। नर-राक्षस मैलमथके दोनों लडके भी उन्हीं बदमाशोंके दलमें भर्ती हो गये थे और उन लोगोंने अपनी बदमाशीसे अच्छा नाम हासिल कर लिया था। डाक्टर यष्टैनकी धायकी गोदसे जो लडका छीन लिया गया था, वह सिक्सटर सालकी निगरानीमें रख दिया गया था, इससे चोर बदमाश और खानगियोंके बीचमें रहकर वह भी इस फनमें खूब पक्का हो गया।

पाठकोंको याद होगा, कि राज-तन्त्रके पक्षपाती मारक्किस सेएटक्रय, मारक्किस बेलोई और डिउक विलेवेल फ्रान्ससे भागकर इङ्गलैण्ड चले आये थे। कुछ दिनोंके बाद जब लाभेएडीके आदमी फिर राज-तन्त्रकी प्रतिष्ठा करनेके लिये बलवा करनेको तय्यार हुए, तो प्रिन्स और मिष्टर पेजने जोश दिलाकर ऊपर लिखे तीनों आदमियोंको बलवेमें शामिल होनेके लिये भेज दिया और इधर इस बातकी खबर फ्रेञ्च-गवर्नमेएटको कर दी, इससे लाभेएडीमें पहुंचते ही वे तीनों पकड़कर मार डाले गये। इस चालबाजीसे प्रिन्स मारक्किस क्रयका कर्ज चुका देनेसे, बच गये, डिउक विलेवेलकी अमानतवाली रकम उनके पास ही रह गई और मारक्किस बेलोई तथा मिसेस फिजके गुप्त प्रेमका बदला भी चुक गया।

बदनसीब विलेवेलके डिउकने पेजकी मारफत छः लाख रुपया प्रिन्सके यहां अमानत रख दिया था। ठीक इतना ही रुपया प्रिन्सको और मिष्टर मोगलूसका पावना भी था, यानी तीन लाख तो

उस दस्तावेजके लिये, जो प्रिन्सने ष्टैमफोर्ड-मेनरमें, टिम मोगल्सको लिख दिया था और ठीक इतनी ही रकम उस हैण्डनोटके चुका देनेके लिये, जिसे लार्ड डेसबोरोने मोगल्सको बख्शीशके तौरपर दे दिया था। इस तरह सहसा धनी होकर मोगल्स बड़े आरामसे वेष्ट एण्ड महल्लेमें रहने लगा। कुछ दिनोंके बाद अखबारोंमें यह खबर निकली, कि मिष्टर मोगल्सने अन्धकारमें पड़े हुए एजमोरके मारक्विसके पदके लिये दावा किया है। चूंकि इसका कोई उज्रदार न खड़ा हुआ, इसलिये खुशमिजाज रँगीले मोगल्सको वह पद मिल गया। इसके बाद जल्द ही उसने लेडी लिटीशिया लेडसे शादी कर ली। और फिर तो उनलोगोंके दिन बड़े आराम-चैनसे कटने लगे।

उधर- मिष्टर पेजने प्रिन्सको जो कुछ खिदमत की थी, उसके पुरस्कार स्वरूप उसके लिये इस शर्तपर सालाना दो सौ पाउण्डका-बन्दोबस्त कर दिया गया, कि वह राजधानीसे कमसे कम सौ मीलके फासले पर किसी शहरमें जा बसे। इसमें उसे कोई तकलीफ न हुई। वह खुशीसे राजी हो गया और बाथ नामक स्थानमें जाकर सुखसे रहने लगा।

मिसेस ब्रेसकी दाई हैरियेटपर जो मिष्टर शमलेके खूनमें शामिल होनेका जुर्म लगा था, उसमें उसे रिहाई मिल गई, पर उसकी तन्दुरुस्ती बहुत खराब हो गई थी, इसलिये न्यूगेट-जेलसे छुटकारा पानेके कुछ दिन बाद ही वह परलोक सिधार गई।

वेलेण्डनकी मारशियोनेस बुढ़ापेतक जीती रहीं और अपनी जिन्दगी उसी तरह विधवाकी काली पोशाक और गुप्त भोग विलासमें काटती रहीं। भोग-विलासमें उन्हें उनकी विश्वासी दाई मारगरेट और दोनों नोकर रिचर्ड तथा मिसनसे बड़ी सहायता मिलती रही। ये दोनों नोकर जिनका जिक्र हम इस किस्से में मौके मौके पर कर

वीर-पद्यरत्न

इसमें निम्न लिखित वीर-वीराङ्गनाओंकी शिक्षाप्रद वीर जीवनियां खड़ी बोलीकी सुन्दर कविताओंमें लिखी हैं, जिन्हें पढ़कर भुजाएँ फड़कने लगती हैं और भारतकी प्राचीन झलक आँखोंके सामने आ जाती है। कितने ही चित्र भी दिये गये हैं।

(१) महाराणा प्रताप।	(१६) वीर-क्षत्राणी किरणदेवी।
(२) वीर बालक राम, लक्ष्मण	(१७) „ „ वीरमती वा वीरा
(३) „ „ राम, कृष्ण।	(१८) „ „ रानी दुर्गावती।
(४) „ „ लवकुश।	(१९) „ „ कर्मदेवी, कर्णावती
(५) „ „ अभिमन्यु।	कमला देवी।
(६) „ „ बभ्रुवाहन।	(२०) वीर-माता 'सुमित्रा'।
(७) „ „ आल्हा, ऊदल।	(२१) „ 'कुन्ती'
(८) अभयचन्द, निर्भयचन्द।	(२२) „ 'अलूपी'
(९) अभयसिंह रणजीतसिंह।	(२३) „ 'रेणुका'
(१०) वीर-क्षत्राणी-तारा।	(२४) „ 'विन्दुला'
(११) „ „ पद्मा।	(२५) „ 'देवलदेवी'
(१२) „ „ कलावती।	(२६) वीर-पत्नी 'रायमती
(१३) „ मीराबाई।	(२७) „ 'जसमा'
(१४) „ „ कर्मदेवी।	(२८) „ 'नीलदेवी'
(१५) सरदारबा और रूपादे।	(२९) „ 'कमला'

यह पुस्तक स्त्री, पुरुष बूढ़े, बच्चे, सभीके पढ़ने योग्य है, और सभी समाजोंके लोग इसके द्वारा आदर्श शिक्षा पा सकते हैं। मूल्य सुन्दर सुनहरी जिल्द बंधी पुस्तकका सिर्फ ३) रुपया।

आर० एल० वर्मन एण्ड को०,

(पुस्तक विभाग) ३७१, अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

शोणित-तर्पण

सत्य घटनापूर्ण सचित्र जासूसी उपन्यास।

सन् १८५७ ई०के जिस भयानक "गदर" (बलवे) ने एक ही दिन, एक ही समय और एक ही लग्नमें सारे "भारतवर्ष" में प्रचण्ड विद्रोहाग्नि फैला दी थी, जिस गदरने अपनी भीषणतासे बड़े बड़े प्रतापी वीरोंके दिल दहला दिये थे, जिसने दिल्ली, कानपुर बिठूर, मेरठ, काशी और बक्सर आदिको सुविशाल 'समर-क्षेत्र' में परिणत कर दिया था, जिसने भारत-सरकारकी अधिकांश देशी फौजोंको विद्रोही बना दिया था, जिस भारतीय प्रचण्ड विद्रोहानलकी विकट हुङ्कारने सुदूर व्यापी "इङ्गलैण्ड" में भी भयानक हलचल मचा दी थी, जिस गदरके खूं खारनेता—नानाराव धुन्धुपन्त, फरासीसी डाकू रावर्ट मैकेयर, तांतिया टोपी,



कुंवरसिंह और करीम आदि दुष्टोंने हजारों निरीह अङ्गरेज आबाल-वृद्ध-वनिताओंके खूनसे अकलङ्क भारत भूमिको सकलङ्क बना दिया था, उसी प्रसिद्ध "गदर" या "सिपाही विद्रोह" का इसमें पूरा हाल दिया गया है। साथ ही गदर सम्बन्धी सुन्दर सुन्दर ७ चित्र देकर इस उपन्यासकी सुन्दरता और भी बढ़ा दी गयी है। दाम सिर्फ २) है।

हत्याकारी कौन है ?

नामकी भीषणता ही इस उपन्यासका अद्भुत रहस्य प्रकट कर रही है। इसके विषयमें केवल यही कह देना बस होगा, कि यह ही अनूठा रहस्यमय सचित्रजासूसी उपन्यास है। इसमें २ चित्र भी दिये गये हैं। घटनाकी पेचीदगी और मन लहालोट हो जाता है। दाम सिर्फ ।=) आना।

आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०, ३७१

भीषण डकैती

रहस्यमय सचित्र जासूसी उपन्यास।

यह उपन्यास बङ्ग साहित्यके गौरवस्तम्भ, जासूसी उपन्यासोंके एक मात्र कर्णधार श्रीयुत् 'बाबू पांचकौड़ी दे'की विचित्र लेखनीका सजीव प्रतिबिम्ब है। इसमें "मिटर रौटलेंड" नामक एक अमेरिकन जासूसकी अपूर्व कार्रवाइयों का ऐसा सुन्दर चित्र खींचा गया है, कि पुस्तक एकबार उठाकर फिर छोड़नेको इच्छा ही नहीं होती। इस उपन्यासके प्रत्येक परिच्छेद, प्रत्येक पृष्ठ, प्रत्येक पैराग्राफ, प्रत्येक पंक्ति और प्रत्येक शब्दमे दिलचस्पी और मनोरंजकता कूट कूटकर भरी गयी है। साथ ही सुन्दर सुन्दर चित्र भी दिये गये हैं। इसमें इस उपन्यासकी प्रधान नायिका 'मिसेस तोराब' का एक ऐसा अपूर्व तिनरङ्गा चित्र दिया गया है, कि देखते ही मन हाथसे निकल जाता है। दाम सिर्फ १॥) है।



चालाक चोर

(ऐन्द्रजालिक घटनापूर्ण जासूसी उपन्यास।)

पाठक! इसमें विलायतके एक ऐसे भयानक चोरकी कार्रवाइयोंका हाल लिखा गया है, जो बड़े धुरन्धर जासूसोंकी आखोंमें धूल डालकर दिन दहाड़े उनके देखते लाखों रुपयेका माल उड़ा ले जाता था। उसकी चोरियोंसे एकबार सारा इङ्गलैंड दहल उठा था और सब लोग उसे ऐन्द्रजालिक चोर समझने लगे थे। दाम केवल १।) रु०

खूनी औरत

इसमें एक डाक्टरके मेसमेरिजम वा भौतिक-विद्याका वर्णन ऐसी विचित्रतासे किया गया है कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। दाम सिर्फ १)

आर० एल० वर्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।

जासूसी चक्कर

रहस्यमय सचित्र जासूसी उपन्यास।

लेखकने इस उपन्यासमें बम्बईकी पारसी समाजका बड़ा ही विचित्र रहस्य खोला है। कुछ दिन हुए बम्बईमें 'हरमसजी' नामक एक धनाढ्य पारसी सज्जनके खजानेमें विचित्र ढंगसे एकलाखकी चोरी हो गयी, साथ ही खुली सड़कपर भाड़ागाड़ीमें एक पारसी युवक जानसे मार डाला गया। इन दोनों घटनाओंको लेकर बम्बईमें बड़ी हलचल पड़ गयी। खून और चोरीके इल्जाममें "रुस्तमजी" नामक एक पारसी गिरफ्तार हुआ। इन दोनों घटनाओंकी जांचके लिये सर्कारकी ओरसे बड़े बड़े ४ जासूस छोड़े गये। जांच धूमधामसे होने लगी, फिर कैसे चार दश जासूसोंने सुन्दरी 'रतनबाई'की सहायतासे पता लगाया,



कैसे निरपराध रुस्तमजीने अदालतसे छुटकारा पाया, कैसे नकली विवाहके समय, भीषण व्यक्ति बर्नीरको गिरफ्तार किया गया, आदि घटनायें इस खूबीसे लिखी गयी हैं, कि बिना समाप्त किये पुस्तक छोड़नेकी इच्छा ही नहीं होती। खून, चोरी जाल, जुआ-चोरी, प्रेम, फजीहत सभी बातें दिखलाई गयी हैं। हाफटोनके ५ चित्र भी हैं। मूल्य २)

महेन्द्रकुमार

ऐय्यारी और तिलिस्मका अनूठा उपन्यास।

ऐय्यारी और तिलिस्मी खेलोंसे भरा हुआ, आश्चर्य्य व्यापारों और लोम-हर्षण घटनाओंसे डूबा हुआ यह अनूठा उपन्यास पढ़ने ही योग्य है। इस उपन्यासमें ऐसी ऐसी ऐय्यारियां खेली गयी हैं, कि पढ़कर पाठक फड़क उठेंगे। इस उपन्यासके पढ़ते समय पाठकोंका खाना, पीना, सोना, बैठना तक भूल जायगा। इतना होनेपर भी १००० पेजके बड़े पोथेका

नराधम

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें एक मित्र द्रोही डाक्टरकी स्वार्थ-परताका बड़ा ही सुन्दर खाका खींचा गया है। डाक्टरका मित्रकी स्त्रीसे गुप्त प्रेमकर अन्तमें उसका खून करना, अपनी दूसरी प्रेमिकासे खूनकी बातचीत करते समय डाक्टरके मित्रका छिपकर सुनना और फिर उसे धमकाना, डाक्टर और उसकी प्रेमिकाका मित्रको धोखा देकर फांसीपर लटकाना, मित्रकी लाश का एकाएक गायब हो जाना, दो चोरोंका डाक्टरको भेद खोल देनेका भय दिखलाकर धमकाना, डाक्टरका एकको भट्टीमें झोंककर मार डालना। मुरदा लाशका एकाएक जिन्दा हो जाना, आदि ऐसी आश्चर्यजनक बातें लिखी गयी हैं, कि पढ़कर रोंगटे खड़े हो जाते हैं। ५ चित्र भी हैं। दाम १)



डाक्टर साहब

सचित्र जासूसी उपन्यास।

इसमें लण्डनके विख्यात नामा अस्त्र-चिकित्सक, अद्भुत क्षमताशाली 'डाक्टर यू' की उस भीषण रसायन-विद्याका चमत्कार है, जिसके द्वारा वह बातकी बातमें जिन्देको 'मुर्दा' और मुर्देको 'जिन्दा' बनाकर अपना घृणित मतलब गांठ लेता था। इस डाक्टरके गुप्त अत्याचारोंसे सारा इङ्गलैण्ड दहल उठा था और इसे लोग "जादू-विद्या" "भूत-विद्या" आदि समझने लगे थे। अन्तमें वहांके विलक्षण शक्तिशाली सुप्रसिद्ध जासूस 'मिष्टर ब्लेक' ने किस प्रकार उसका रहस्य-भेदकर उक्त 'डाक्टर यू' को गिरफ्तार किया है, वह पढ़नेही योग्य है। इन घटनाओंके सुन्दर सुन्दर दो चित्र भी दिये गये हैं। दाम सिर्फ ।) है।

पुतलीमहल

ऐय्यारी और तिलिस्मका भयङ्कर उपन्यास।

कुंवर चन्द्रसिंहका अपने ऐय्यार हीरासिंहके साथ शिकार खेलने जाकर "पुतलीमहल" नामक तिलिस्ममें गिरफ्तार हो जाना, तिलिस्मकी बहुत सी कोठरियोंको तोड़ना, तिलिस्मी दारोगाको भाञ्जीका राजकुमार पर मोहित हो जाना, राजकुमारकी खोजमें उनके और चार ऐय्यारोंका तिलिस्ममें पहुंचना, तिलिस्मो शैतानका एकाएक जमीनसे पैदा होकर राजकुमार गौरहको 'तिलिस्म जालन्धर' में कैद कर देना। राजा वीरेन्द्रसिंहका मायापूरपर चढाई करना। दोनों ओरकी बेशुमार फौजोंकी भयानक लड़ाइयां। राजा वीरेन्द्रसिंहकी विजय, कुमारके ससुर देवसिंहपर दुश्मनोंकी चढ़ाई, घनघोर संग्राम। किलेके पिछले हिस्सेका एकाएक उड़ जाना। नदीके बीचोबीच लड़ाई होना, इत्यादि पढ़कर आप हैरान होजायंगे। दाम १।।

महाराष्ट्र-वीर

ऐतिहासिक उपन्यास।

यदि आप महाराष्ट्र-कुल भूषण छत्रपति शिवाजी और सम्राट औरङ्गजेब-का इतिहास प्रसिद्ध भीषण संग्राम देखा चाहते हों, यदि आप महाराज शिवाजीके कैद होने और विलक्षण ढङ्गसे किलेसे निकल भागनेका अद्भुत समाचार जानना चाहते हो, यदि आप महाराष्ट्र-रमणियोंकी वीरता, बुद्धिमत्ता और धार्म्मिकताका आदर्श चरित्र पढ़ना चाहते हों, यदि आप औरङ्गजेबके दर्बारका गुप्तरहस्य जानना चाहते हों और यदि आप इतिहास तथा राजनीतिकी गूढ़ और रहस्यजनक बातें सुनना चाहते हों, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। दाम सिर्फ ।।।) आ०

मायामहल

ऐय्यारी ढङ्गका अनूठा उपन्यास।

इसमें स्त्री पुरुषोंकी अपूर्व ऐय्यारियों, आश्चर्य जनक तिलिस्मातों, भयानक लड़ाइयों और पवित्र प्रेमका बड़ा ही सुन्दर चित्र खींचा गया है, ।।।)

काला कुत्ता

सचित्र जासूसी उपन्यास।

एक दुराचारी, स्वार्थलोलुप मनुष्य सर्व्वसाधारणमें भूतोंका भय प्रचिलकर एक खूं खार कुत्ते द्वारा किस चालाकीसे तीन तीन खून कर डाले और जासूसने उसे किस प्रकार कुत्ते सहित ठीक मौकेपर गिरफ्तार किया, इसका बड़ा ही रहस्यजनक मामला इस उपन्यासमें अङ्कित किया गया है। दाम सिर्फ ॥) आना।

जासूसी पिटारा

इसमें बड़े ही रहस्य जनक ५ जासूसी उपन्यास है—(१) बजारमहल, (२) फूल-वेगम, (३) विचित्र जौहरी, (४) असली हनारकी चोरी, "स्त्री है वा राक्षसी?" दाम ॥) आना।

दारोगाका खून

सचित्र जासूसी उपन्यास।

काशी जैसी पवित्र भूमि में भी कैसे कैसे कुकर्म्म, जाल, जूआचोरी, खून और डकैतीके काम होते है, यही बात इस उपन्यासमें दिखाई गयी है। इस उपन्यासके पढ़नेसे आपको मालूम होगा, कि वेश्याओंकी बाहरी सुन्दरता और उपरी प्रेमकी पराकाष्ठा-कहातक हो सकती है। यदि आप काशी जैसे तीर्थकी कुछ रहस्यजनक बातें जानना चाहे, तो इसे अवश्य पढ़ें। चित्र भी दिया गया है। दाम ॥) आना।

बनारसी दुपट्टा

लैली-मजनू, शीरी-फरहाद और हीर-राझाकी भांति गुलरू-जरीनाका प्रेम भी बड़ा ही पवित्र हुआ है। यदि प्रेमके समुद्रमें गोते खाना हो, तो इस उपन्यासको अवश्य पढ़िये। यह ऐतिहासिक उपन्यास है और इसमें एक लोमश युवका वर्णन बड़ी ही मजेदारीसे किया गया है। दाम ।) आ०

आर० एल० वर्म्मन एण्ड को०, ३७१ अपर चीतपुर रोड, कलकत्ता।